श्रीराजमाला

(त्रिपुर राजन्यवर्गों का इतिवृत्त)

तृतीय लहर

TRIPURA
ETIHAS, KALA,
SANSKRATI

अनुवादक व लेखक
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
अलका त्रिपाठी
E_Mail - aktripathi.tripura@gmail.com
Fone - 8762396880

Shri Rajmala /श्रीराजमाला
Tripur Rajanyavargi ka Etivratta (त्रिपुर राजन्यवर्गों का इतिवृत्त)
Tratiya Lehar/तृतीय लहर.

Publisher : Self / E-Book – PDF

Key Words
इतिहास, त्रिपुरा, त्रिपुरा इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन राजमाला, श्रीराजमाला,
Shri Rajmala TRIPURA, ETIHAS, ETIHAAS, KALA, SANSKRATI, PARYATAN

Translator / Editor ARVIND KUMAR TRIPATHI
ALKA TRIPATHI

Typeset ARVIND KUMAR TRIPATHI
ALKA TRIPATHI

Font used Hindi/ Devnagari - Kruti Dev 010, Size - 14
English – Arial, Size - 10

Print PDF format, Other format available on request
Self-Publishing (No publisher)
E_Mail - aktripathi.tripura@gmail.com
Phone - 8762396880

Price Rs 00/-, Free, निःशुल्क, मुक्त, स्वतन्त्र
ISBN 978-93-5493-345-5
Book Title : SRIRAJMALA - TRATIY BHAG

लेखक



अरविन्द कुमार त्रिपाठी, DIG (Retired)
पुत्र स्वर्गीय आचार्य श्री भगवान दास त्रिपाठी
शिक्षा– विज्ञान परास्नातक(भौतिकी), शिक्षा स्नातक
सेवारत कोर्स व प्रशिक्षण (कुल 24),
सी सु ब द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवा
पदक व अलंकरण

E_Mail - aktripathi.tripura@gmail.com
Fone - 8762396880

विज्ञान परास्नातक(भौतिकी), शिक्षा स्नातक के पश्चात अध्यापन कार्य करते हुए 1987 में सीमा सुरक्षा बल में सहायक समादेष्टा (Assistant Commandant) के पद पर प्रवेश कर उप महानिरीक्षक के पद से लगभग 33साल का सफल कार्यकाल पूर्ण कर अगस्त 2019 में सेवानिवृत्त हुए।

सेवा कार्यकाल में 1993 ई में त्रिपुरा में पहला पदस्थापन हुआ। सेवा काल में लगभग 11वर्ष त्रिपुरा में रहा और इसी संक्रमण में त्रिपुरा इतिवृत्त, समस्त जनजातियों पर विस्तृत अध्ययन कर लेखन कार्य भी किया।



अलका त्रिपाठी
शिक्षा परास्नातक(हिन्दी),
स्नातक(हिन्दी व संस्कृत)
शिक्षा स्नातक व M. Phil.

प्रकाशित पुस्तकें
श्रीराजमाला : प्रथम भाग
श्रीराजमाला : द्वितीय भाग
श्रीराजमाला : तृतीय भाग
श्रीराजमाला : चतुर्थ भाग
और अन्य पुस्तकें

Key Words

lok, kala, geet,git, chitra, chitra kala, song, sahitya, business, byapar vyapaar, krashi, backward, pichhadapan, akal, sukha, femanin, kanluage, boli, idiom, kavat, muhavare, natya, nratya, vadya, kahani, folk, gahane, story,newspaper, club, bhavan, kile, durg, nehru,subhash, bose, aazad chandra shekhar, gandhi, pandit,

banda, history etihas, Itihas, Bhaugolic, Bhaugolik, jal, nadi, bandh Dam, Minral, Soil, Mitty, Talab, Mohal, muhalle, mandir, Cencus, Animal, bird, pakshi tree, shrub, herbs, forest, arthik, Economic,Agricultural, kheti, Mahua, chirongi,tourism, paryatan
Ammend

तृतीय लहर–01

श्री राजमाला

(त्रिपुर राज्य वर्ग का इतिवृत्त)

तृतीय लहर

सटीक और सचित्र

पंडितप्रवर स्वर्गीय गंगाधर सिद्धांतवागीश द्वारा रचित

श्री कालीप्रसन्न सेन विद्याभूषण द्वारा कृत
सम्पादित

"यथा प्रहलादनाच्चन्द्रः प्रतापात्तपनो यथा।
तथैव सौहभुदन्वर्थो राजा प्रकृतिरंजनात्"।।

रघु

राजधानी अगरतल्ला– त्रिपुरा राज्य

राजमाला कार्यालय द्वारा प्रकाशित
1341 त्रिपुराब्द

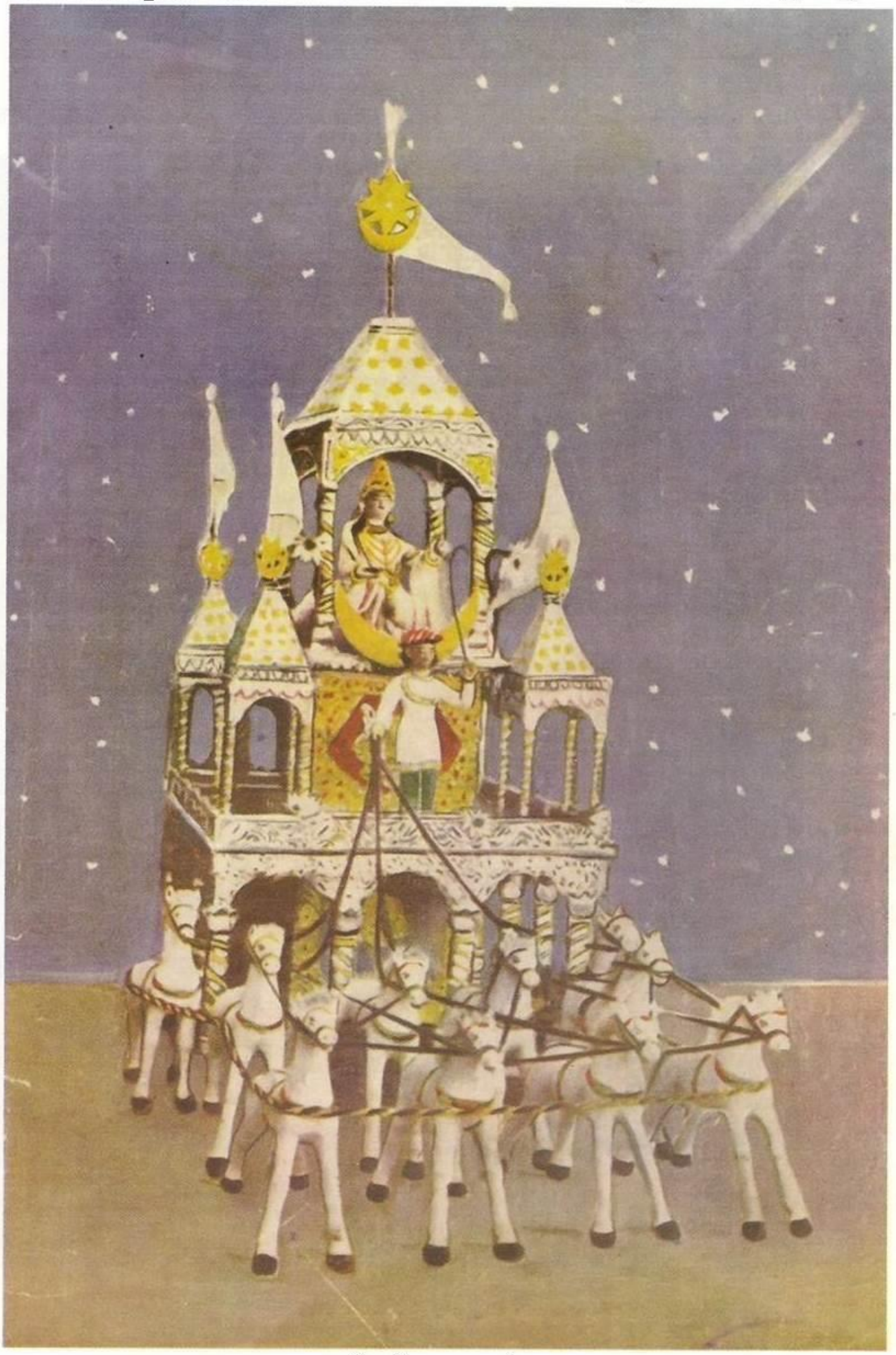
....

राजधानी अगरतला
स्टेट प्रेस – श्री युगेशचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा मुद्रित।

त्रिपुरा राज्य

तृतीय लहर–02

चित्र तृतीय लहर–2



श्री श्री चन्द्रमा देव

सामुद्रं वैश्यमात्रेयं हस्तमात्रेयं सिताम्बरं। श्वेतं द्विबाहुं वरदं दक्षिणं सगदेतरम्
दशाश्वं श्वेत पद्मास्थं विचिन्तोय्माधिदैवतम्। जलप्रत्यधिदैवबन्ध सूर्यास्यमाहबयेत्तथा

तृतीय लहर–03

चित्र तृतीय लहर–3

राजमाला तृतीय लहर पृष्ठ संख्या – मुख पृष्ठ



राजमाला प्रचार के अनुष्ठाता

स्व. महाराज वीरेन्द्रकिशोर माणिक्य

<u>तृतीय लहर–04</u>

निवेदन

सर्वनियंता श्री भगवान की अपार करूणा से राजमाला की तृतीय लहर प्रकाशित हुई। पहले ही कहा गया है, राजमाला का संपादन का कार्य आगे बढ़ने के साथ–साथ क्रमशः इस कार्य में अधिकतर जटिलता अनुभूत हो रही है। राजमाला तृतीय लहर के साथ पारिपार्श्विक इतिहास का गहरा संबन्ध रहा है, पर इसके साथ बहुत से विषय हैं जिनका पार्श्ववर्ती स्थानों के इतिहास के साथ सामन्जस्य की रक्षा बड़ा ही कठिन कार्य है। इस कार्य में चेष्टा की कोई त्रुटि नहीं हुई, समय भी ज्यादा ही लगा है, तथापि भ्रम–त्रुटि के हाथों से बच पाया हूँ, ऐसा नहीं कह सकता। हमारी अक्षमता ही इसका एक मुख्य कारण है, ऐसा कहा जा सकता है। कई ऐतिहासिक ग्रन्थों की खबर मिलने पर भी हम उन्हे नहीं ला सके। इनमें ''बाहारी स्थान'' का नाम विशेष रूप से उल्लेख योग्य है। उसे पाने पर ऐतिहासिक घटनाओं की विशुद्धता के बारे में बहुत माने में हम निश्चिन्त हो सकते थे। हमारे इस काम की कठिनता की विशेष रूप से विवेचना कर सुधी समाज हमारी हर तरह की त्रुटियों के लिए हमें क्षमा प्रदान करें, यही विनम्र प्रार्थना कर रहा हूँ।

राजमाला के द्वितीय लहर की रचना महाराज अमर माणिक्य के आदेशानुसार हुई थी। इसके बाद महाराज गोविन्द माणिक्य और उनके पुत्र महाराज रामदेव माणिक्य की अनुज्ञा से राजपुरोहित और सभापण्डित स्वर्गीय गंगाधर सिद्धान्तवागीश के द्वारा राजमाला की तृतीय लहर की रचना हुई। महाराज अमर माणिक्य के पश्चात् राजधर माणिक्य, यशोधर माणिक्य और कल्याणमाणिक्य, तीनों राजाओं ने राजमाला की कलेवर वृद्धि के लिए किसी तरह की चेष्टा नहीं की। कल्याणमाणिक्य के पुत्र महाराज गोविन्द माणिक्य, अमर माणिक्य के संगृहीत अंश के बाद के विवरण(अमर माणिक्य, राजधर माणिक्य, यशोधर माणिक्य और कल्याणमाणिक्य) के संग्रह–कार्य में व्रती जुटे हुए थे और गोविन्द माणिक्य के पुत्र महाराज रामदेव माणिक्य के शासन काल में यह कार्य संपन्न हुआ है। यह राजमाला रचना कार्य के तीसरे प्रयास का फल है। तृतीय लहर के रचयिता का स्थूल विवरण ग्रन्थ के पहले ही मध्य मणि में स्थित है। राजमाला का यह अंश अढ़ाई सौ साल का प्राचीन इतिहास है। इस लहर के द्वारा एक साथ साहित्य और इतिहास की आलोचना का आनन्द दोनों ही उपभोग किए जा सकते हैं।

पहले की दो लहरों की तरह इस लहर के संपादन में भी पाँच पाण्डुलिपियों की सहायता ली गयी है। पाण्डुलिपियों को विशेष सावधानी के साथ आपस में मिला कर पाठोद्धार किया गया है। जिन जगहों में पढ़ने में अनैक्यता देखी गयी है, उसका पाठान्तर पादटीका में दिया गया है। बंगला राजमाला के अलावा संस्कृत राजमाला, राजरत्नाकर, कृष्णमाला, श्रेणीमाला, चम्पक विजय, और त्रिपुर वंशावली प्रभृति हस्तलिखित ग्रन्थ समूहों की यथा साध्य आलोचना की गई है। इसके अलावा दूसरे जिन ग्रन्थों की सहायता ली गई है, पीछे की सूची में उनका नाम दिया गया है। उन ग्रन्थों के प्रणेता और प्रकाशकों के, यहां हम, चिर ऋणी हैं।

पहले के कार्य में जिन महाशयों की सहायता मैने ली थी, इस बार भी उन सभी ने अपनी अत्यधिक सहायता के द्वारा मुझे धन्य किया है।

तृतीय लहर—05

श्रीश्रीयुत् महाराज माणिक्य बहादुर के प्राइवेट सेक्रेटरी दीवान साहब श्रीयुत् कमला प्रसाद दत्त एम. ए., बी.एल., एफ. इ. एस., एम. आर. ए. एस. महाशय के तत्वावधान में यह खण्ड संपादित हुआ। इन कार्यो के सुनिर्वाह के लिए हमेशा यत्नवान रहे हैं। ढ़ाका म्यूजियम के सुयाग्य क्यूरेटर श्रद्धास्पद श्रीयुत् नलिनीकान्त भट्टशाली एम. ए. महोदय ने नाना तरह के इतिहास घटित आवश्यकीय संवादों को प्रदान कर हमें विशेष अनुगृहीत किया है। कलकत्ता विश्वविद्यालय के अध्यापक पूज्यपाद महामहोपाध्याय श्रीयुत् गुरूचरण तर्क–दर्शनतीर्थ त्रिपुरा राज्य के उदयपुर विभाग के मजिस्ट्रेट व कलेक्टर श्रीयुत् कुन्ज बिहारी चक्रवर्ती एम. ए., भूलूआ परगना के अन्तर्गत बिहिर ग्राम निवासी सुहृदय श्रीयुत् महिमचन्द्र चक्रवर्ती विद्याभूषण, त्रिपुरा जिला के बूड़ीचंग निवासी श्रद्धेय श्रीयुत् पूर्णचन्द्र भट्टाचार्य, चाकला रोशनाबाद दक्षिण विभाग के असिस्टेन्ट मैनेजरी आफिस के मुन्शी श्रीयुत् विपिन बिहारी भट्टाचार्य इत्यादि अनेक महाशयों से बहुत से तथ्य संग्रह में मुझे काफी सहायता मिली है। चाकला मध्य विभाग के डिप्टी मैनेजर श्रीयुत् प्रमोदारंजन भट्टाचार्य बी.ए. महाशय, ने कल्याणपुर के विलुप्त मंदिर का फोटो दे कर बड़ी मदद की है। उदयपुर और अमरपुर में स्थित प्राचीन कीर्तियों के चित्र और विवरण दे कर अमरपुर के भारप्राप्त कार्य_कारक प्रीति–भाजन श्रीयुत् जयसिंह देवबर्मन बी.ए. महोदय और उदयपुर के नायब स्नेहास्पद श्रीयुत् कालाचाँद देवबर्मन ने मुझे विशेष सहायता प्रदान की है। इस लहर के प्रूफ संशोधन के कार्य में मेरे सहयोगी स्नेहभाजन श्रीमान महेन्द्रनाथ दास से विशेष सहायता मिली है। इसके अलावा और जिन लोगों ने सहायता की है, उनका नामोल्लेख न कर सकने का मुझे खेद है।

यहां एक बात अगर उल्लेख न करूं तो मुझे कृतघ्न होना पड़ेगा। राजमाला के संपादन कार्य में हस्तक्षेप करने के पहले परलोकगत श्रद्धा–भाजन महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री एम. ए., सी. आई., ई., महोदय के साथ इस विषय पर बहुत से प्रसंगों को लेकर आलोचना करने का विशेष सुयोग मिला था। उस समय वे ढ़ाका नगरी में रह रहे थे। उनकी उपदेश पूर्ण मूल्यवान वाक्यावली कार्य क्षेत्र में मेरी पथ प्रदर्शक रही है। राजमाला का संपादन कार्य समाप्त कर ऐसे उपकारी महत् व्यक्ति के कर कमलों में अर्पण नहीं कर सकने का असहनीय क्षोभ जीवन में कभी दूर नहीं होगा। त्रिपुरा के भूतपूर्व मंत्री स्वर्गीय रायप्रसन्न कुमार दास गुप्त बहादुर बी. ए. महोदय का नाम यहां उल्लेख योग्य हैं। वे राजकार्य में नियोजित रहते हुए भी राजमाला के संपादन कार्य में सदा मुझे उत्साहित करते रहे हैं। राजकार्य से अवसर प्राप्त होने के बाद भी शेष जीवन तक इस कार्य के बारे में हमेशा खोज ख़बर लेते कभी नहीं भूले। उन्हे कार्य संपादन कर जो दिखा न सका, इसके लिए मैं बहुत ही अनुतप्त हूँ। इन दोनों महत् आत्माओं की सद्गति हो, परम् कारूणिक परमेश्वर के यहाँ मनसा–वाचा कर्मणा से प्रार्थना करता हूँ।

'हस्ती विज्ञान' शीर्षक निबन्ध में सन्निवेशित विवरण संग्रह के लिए त्रिपुरेश्वर के पिलखाना के अभिज्ञ कर्मचारी श्रीयुत् बसन्त लाल सिंह, श्रीयुत् महेन्द्रलाल सिंह और श्रीयुत् बाबर अली हाजारी से यथेष्ट सहायता मिली है। इसके अलावा स्वयं दो बार 'हस्ती खेदा' के कार्य संपादन में जो सामान्य अभिज्ञता अर्जन किया है, वह भी इस निबन्ध में प्रयुक्त हुआ है। किन्तु ग्रन्थ के

तृतीय लहर—06

आयतन वृद्धि के भय से, बहुत से जरूरी विवरण इच्छानुरूप संयोजन में बाधा स्वरूप कर, इसका उल्लेख नहीं कर सका। अतः यह सबके लिए तृप्तिकर होगा, ऐसी आशा नहीं की जा सकती।

राजमाला तृतीय लहर में जिन व्यक्तियों का और जगहों का नामोल्लेख है, उन सभी का परिचय या विवरण संग्रह करना इस समय बड़ा ही दुरूह विषय में बदल गया है। सेनापतियों के नामों का पता लगाना मुश्किल हो गया है। रणगिरि नारायण, रणभीम नारायण, गजझम्प नारायण, वीरझम्प नारायण, शत्रुमर्दन नारायण, समरवीर नारायण इत्यादि नामों से वे परिचित थे। ये सभी प्रकृत नाम नहीं हैं बल्कि उपाधि हैं।(ये उपाधियां कार्य तत्परता के लिए दरबार से प्रदान की गई थी।) उन दिनों नामों के अलावा उपाधियों से ही वे विख्यात थे। इस समय उनकी उपाधियों को छोड़ दूसरा परिचय या वंश विवरण प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है। जगहों के नामों में काल प्रवाह से बहुत से नाम बदल गऐ हैं या विलुप्ति के बाद अब उनके प्रकृत विवरण संग्रह करने में बाधाएं आ गई हैं। इसी वजह से स्थानों के सम्यक विवरण संग्रह करना एक असाध्य विषय बन गया है।

तृतीय लहर के प्रचार कार्य में मुद्रा_यंत्र लेकर नितान्त ही असुविधा में पड़ना पड़ा। इसके लिए इस कार्य में नाना तरह के बाधा विघ्न और काल विलम्ब हुआ है। भगवान की अपार करूणा से एवं श्रीश्रीयुत् महाराज माणिक्य बहादुर की सदय दृष्टि और कर्तृपक्ष की सहानुभूति से हर तरह से बाधा विघ्नों को अतिक्रम कर तृतीय लहर जन—समाज में प्रकाशित हुई। इसी तरह अवशिष्टांश प्रकाश करने में समर्थ होने पर कृतार्थ धन्य होउंगा। श्री भगवान इस कार्य में सहाय हों, —यही एकमात्र प्रार्थना है।

अगरतला —	राजमाला कार्यालय	श्री कालीप्रसन्न सेन
रास पूर्णिमा	— 1341 त्रिपुराब्द	

तृतीय लहर–07
चित्र तृतीय लहर–7

राजमाला– राजमाला
तृतीय लहर – मुखपत्र

चित्र

लिखाई अस्पष्ट

<u>तृतीय लहर–08</u>

प्रमाण पंजी

जिन ग्रन्थों से तृतीय लहर संपादन कार्य में प्रमाण या उपादान गृहीत हुए हैं, उनकी सूची

संस्कृत ग्रंथादि

अग्नि पुराण	प्रायश्चित्तेन्दु शेखर(काशीनाथ)
अंगीर संहिता	वन्हि पुराण
अनन्त संहिता	बरेन्द्र ब्राह्मण कुलपंजी
अमर कोष	वायु पुराण
आदित्य पुराण	बाल्मिकि रामायण
कर्म लोचन	विष्णु पुराण
कामन्दकीय नीतिसार	वीर मित्रोदय
कायस्थ कुलदीपिका	वृहन्नन्दिकेश्वर पुराण
कालिका पुराण	वृहत् पराशर
काली पुराण	वृहत् संहिता
कुलार्णव	वृहत् सामुद्रिक
कूर्म पुराण	ब्रह्म पुराण
गरुड़ पुराण	ब्रह्मवैवर्त पुराण
गौरगणोद्देश दीपिका	भविष्य पुराण
चाणक्य नीति	भविष्य बह्माण्ड पुराण
जलाशयोत्सर्ग तत्व	भाव प्रकाश
तन्त्र चूड़ामणि	मठ प्रतिष्ठा तत्व
तंत्र सार	मत्स्य पुराण
दान कमलाकर	मनु संहिता
दान सागर	मलमास तत्व
दिग्विजय प्रकाश	महाभारत(मूल)
देवी पुराण	मार्कण्डेय चण्डी
द्विरूप कोष	मार्कण्डेय पुराण
नीति मयुख	मेरू तन्त्र
पद्म पुराण	मोहिनी कोष
प्रायश्चित्त तत्व(रघुनन्दन)	याज्ञवल्क्य संहिता
प्रायश्चित्त विवेक(शूलपाणि)	युक्ति कल्पतरू

तृतीय लहर–9

योगयात्रा	शब्दरत्नावली
योगसार	शुक्र नीति
राजनिर्घण्ट	शुद्धि तत्व
राजवल्लभ	सद्वैद्य कुल पंजिका
राजमाला(संस्कृत)	साधन माला
राजरत्नाकर(हस्त लिखित)	सूत संहिता
लक्ष्मण काण्ड(हिमाद्रि)	हरिभक्तिविलास
शब्दकल्पद्रुम	हारित संहिता
शब्दरत्नाकर	क्षितीश वंशावली

बंगला ग्रन्थादि

अम्बष्ठ सम्पादिका(गोपालकृष्ण कवीन्द्र)	फरिदपुर का इतिहास(आनन्दनाथ राय)
उदयपुर विवरण(ब्रजेन्द्रचन्द्र दत्त)	बंग का जातीय इतिहास(नगेन्द्रनाथ बसु)
काछाड़ इतिवृत(उपेन्द्रचन्द्र गुह)	बाकला(रोहिनीकुमार सेन)
कायस्थ कलिका	बांगला का इतिहास(राखालदास बन्दोपाध्याय)
कृष्ण माला(हस्त लिखित)	बांगला का पूरावृत्त(परेशनाथ बन्दोपाध्याय)
गौर लेख माला(रमानाथ चन्द)	बार भूईया(आनन्दनाथ राय)
चट्टग्राम का इतिहास(पूर्णचन्द्र चौधरी)	विचित्रा(वैशाख 1335)
चन्द्रद्वीप का राजवंश(ब्रजसुन्दर मित्र)	विजया पत्रिका
चंडी(कविकंकण मुकुन्दराम)	विश्व कोश(नगेन्द्रनाथ बसु)
चम्पक विजय(हस्त लिखित–सेख मनोहर)	वैद्यकुल पंजिका
जगन्नाथपुर का इतिहास	भारती(फाल्गुन, 1299)
ढाका का इतिहास(यतीन्द्रमोहन राय)	भूलुया का इतिहास
तरप का इतिहास(सैयद अब्दुल अकबर)	मयनामती के गान(दुर्लभ मल्लिक)
तबकात–इ–नासेरी(मीनहाज–अनुवाद)	मयनामती के गान(भवानी दास)
त्रिपुर वंशावली(द्विज बंगचन्द्र) हस्तलिखित	मयमनसिंह गीतिका(दिनेशचन्द्र सेन)
त्रिपुरा की स्मृति(श्रील श्रीयुत बड़ठाकुर बहादुर)	मयमनसिंह का इतिहास(केदारनाथ मजुमदार)
त्रिपुरा का प्राचीन इतिहास(शीतलचन्द्र चक्रवर्ती)	यशोहर खुलना का इतिहास(सतीशचन्द्र मित्र)
नव्य भारत(1314)	राजमाला(हस्त लिखित, राजा बाबू की बाड़ी)
प्रकृतिबाद अभिधान(रामकमल विद्यालंकार)	राजमाला(कैलाशचन्द्र सिंह)
प्रवासी(1326 प्रथम खण्ड)	राजमाला(प्रथम व द्वितीय लहर)
प्राचीन राजमाला(हस्त लिखित)	रामचरित(संध्याकर नन्दी)

तृतीय लहर–10

रियाज–उस्–सलातिन(अनुवाद–रामप्राण गुप्त)	श्रेणीमाला(हस्त लिखित)
शिलालिपि संग्रह(चन्द्रोदय विद्याविनोद)	संद्वीप का इतिहास(राजकुमार चक्रवर्ती और आनन्दमोहन दास)
श्री धर्ममंगल(घनराम)	साहित्य(वैशाख1301, कार्तिक 1319)
श्री धर्ममंगल(माणिक गांगुली)	सुबर्णग्राम क इतिहास(स्वरूपचन्द्र राय)
श्रीहट्ट दर्पण(मौलवी मुहम्मद अहमद)	सेक शुभोदय(हस्तलिखित)
श्री हट्टेर इतिहास(अच्युत चरण चौधुरी)	

अंग्रेजी ग्रंथादि

AIN-I-AKBARI VOL II (Col H. S. JARRETT)
AKBARNAMA (ELLIOT)
AKBARNAMA (N. BEVERIDGE)
ANALYSIS OF THE RAJMALA (J.A.S.B. VOL XIX)
ASIATIC RESEARCHES VOL XIV (WILFORD)
ASSAM DISTRICT GAZETTEERS VOL II (SYLHET)
BARAH BHUYAS OF BENGAL (J. WISE) J.A.S.B. No. 3-1874)
CATALOGUE OF THE BUDHIST MSS (BENDALL)
ELLIOT'S HISTORY VOL VI
GEOGRAPHY & HISTORY OF BENGAL (BLOCHMANN)
HACKLYT'S VOYAGES - VOL II
HISTORY OF BENGAL (STEWART)
HISTORY OF BAKARGANG (N. BEVERIDGE)
HISTORY OF MANIPUR
HISTORY OF TRIPURA(E. F. SANDYS)
HISTORY OF THE RITUALS RURAL BENGAL
INDIAN ANTI QUARY-VOL IV
JOURNAL ASIATIC SOCIETY OF BENGAL
OXFORD HISTORY OF INDIA - (V. A. SMITHS)
PAPER No. 798 DATED 1st JUNE 1883
PROC. ASIATIC SOCIETY OF BENGAL - 1877
REPORT FOR THE SEARCH OF SANSKRIT - MANU SCRIPTs - 1895-1900
STATISTICAL ACCOUNTS OF ASSAM VOL II (SYLHET-HUNTER)
STATISTICAL ACCOUNTS OF DACCA, FARIDPUR & BACKERGUNG (HUNTER)

तृतीय लहर—11

पूर्वाभाष

राजमाला के पाण्डुलिपि विषयक विवरण राजमाला प्रथम व द्वितीय लहर के सम्पादन कार्य में जिन पाँच पाण्डुलिपिओं की सहायता ली गई थी, उन लिपियों पर अवलम्बन करके ही तृतीय लहर संपादित हुई है। इन सभी पाण्डुलिपियों में एक दूसरे के साथ अनेक स्थलों पर वर्ण विन्यास में एक्य नहीं है। प्रत्येक ग्रन्थ के नकल करने वालों ने अपनी—अपनी अभिज्ञता या प्रवृत्तियों के अनुसार वर्ण प्रयोग किया है। अधिकतर इन ग्रन्थों में कहीं—कहीं परस्पर पाठ का तारतम्य दिखाई दिया है। यह भी नकल करने वालों का हस्त—कौशल सा प्रतीत होता है। इनमें अपने—अपने अवलम्बित ग्रन्थों के शब्द विशुद्ध रूप से उद्धार करने की अक्षमता के अनेक स्थलों पर विकृत रूप के निदर्शन भी कम नहीं है। इन्हीं सब कारणों से वर्ण विन्यास के विषय में उन पाण्डुलिपियों पर निर्भर न रह कर जहां तक संभव हो सका है, विशुद्ध वर्ण विन्यास का प्रयोग करने पर बाध्य होना पड़ा है। निरूपाय हो कर इस तरह का आचरण जरूरी हैं, यह कार्य सुधी समाज के यहां मार्जनीय होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। जहां पर पढ़ने में वैषम्य मिला है, पाद टीका में उसका पाठान्तर प्रदान किया गया है।

तृतीय लहर रचना के लिए अनुकूल समय राजमाला तृतीय लहर ईस्वी सप्तदश सदी में रचित हुआ है। यह सदी बंग भाषा के विशेष उन्नति की सदी रही है। बंग भाषा के इतिहास की आलोचना करने पर पता चलता है, कि ईस्वी बारहवीं से ही साम्प्रदायिक धर्म विरोध के फलस्वरूप भाषा के इस शुभ युग की सूचना हुई थी। इस सदी में काना हरिदत्त ने मनसा—मंगल की रचना के जरिए बंग भाषा के जिस युगान्तर की जो सृष्टि की है, साहित्य के क्षेत्र में वह चिर स्मरणीय है।

नारायण देव का मनसा मंगल और मानिक दत्त का चण्डी काव्य तेरहवीं सदी का उल्लेख योग्य साहित्य संपदा है। पूर्व कथित काना हरिदत्त को ही इनका पथ प्रदर्शक कहा जायेगा। चौदहवीं सदी में जिन महापुरूषों ने बंग—साहित्य भंडार में श्रेष्ठ रत्नों का दान किया है, उनमें चण्डी दास का कृष्ण कीर्तन और पदावली, विद्यापति की पदावली, कृत्तिवास की रामायण, संजय कवि का महाभारत इत्यादि कुछ समुज्वल रत्नों का नाम विशेष रूप से उल्लेखयोग्य हैं। विजय गुप्त, मुक्ताराम सेन, गोविन्द राम बन्दोपाध्याय, कवि रूपराम, कवीन्द्र परमेश्वर, द्विज अभिराम, श्रीकर नन्दी, मालाधर बसु प्रभृति बहुत से व्यक्ति पन्द्रहवीं सदी के उल्लेखयोग्य कवि हैं। ये लोग मनसा मंगल, चण्डी काव्य, धर्म मंगल और महाभारत इत्यादि रचनाओं के द्वारा बंग—वाणी को जिस अमूल्य भूषण से संजोए हैं, वह साहित्यानुरागी व्यक्तियों को ज्ञात है। द्विज वंशीबदन, षष्ठीवर और गंगा दास सेन का मनसा मंगल, माणिक गांगुली का धर्ममंगल,

<u>तृतीय लहर–12</u>

शंकर कवीन्द्र, द्विज मधुकंठ और घनश्याम दास का रामायण, काशी राम दास, माधवाचार्य, कविचन्द्र और घनश्याम दास प्रभृति का महाभारत एवं गोविन्द दास, ज्ञानदास और बलराम दास इत्यादि वैष्णव कवियों की सुललित पदावली षोड़ष शताब्दी की श्रेष्ठ देन है।

इसके बाद सप्तदश शताब्दी की बात है। इस सदी में केतकादास क्षेमानन्द, जगज्जीवन घोषाल, द्विज कमललोचन प्रभृति असंख्य कवियों ने मनसा मंगल, चण्डी काव्य, धर्ममंगल, रामायण, महाभारत, कृष्ण–मंगल इत्यादि असंख्य ग्रंन्थों द्वारा बंग–भाषा की पुष्टि विधान की है। इस सदी के अवदानों से कृष्णदास का भक्तिमाल, नरहरि चक्रवर्ती का भक्ति–रत्नाकर, अकिंचन दास का जगन्नाथ बल्लभ, बलराम दास व घनश्याम दास प्रभृति की पदावली की कथाएं विशेष रूप से उल्लेख योग्य हैं। इस सदी में त्रिपुरा में भी साहित्य चर्चा में एक संवेदनशीलता आई थी। गोविन्द माणिक्य के आदेशानुसार देबाइ पंडित की अनुदित बृहन्नारदीय पुराण इत्यादि ग्रन्थ ही इसके विशेष परिचायक हैं। इस समय राजमाला की तृतीय लहर की रचना के लिए काल स्त्रोत जो विशेष अनुकूल था, यह आसानी से समझा जाता है।

तृतीय लहर का ऐतिहासिक मूल्य राजमाला तृतीय लहर का यथेष्ट ऐतिहासिक मूल्य है। किसी किसी जगह समय निर्धारण में कुछ व्यतिक्रम भी दिखाई देते हैं। संभवतः घटनाओं के बहुत दिनों के पश्चात् इसके बारे में उस विवरण का लिपिबद्ध होने की वजह से इस तरह की त्रुटियां हो गयी हैं। इस लहर में दी गई परिपार्श्विक ऐतिहय्–इंगितों की चर्चा मध्य मणि में देने की चेष्टा की गई है, और इस चेष्टा का फल सुधी जनों के यहां विचारणीय है।

वंशावली विषयक आलोचना राजमाला द्वितीय लहर में त्रिपुरेश्वरों की वंशावली सूची संयोजित की हुई है। उस समय इस वंशावली के विषय में निवेदन किया गया था –

"इस कार्य में बहुत से कष्ट झेलने पड़े और समय भी ज्यादा लगा है। किन्तु बहुत परिश्रम करने के बावजूद भी महाराज कल्याणमाणिक्य के पूर्व राजन्यवर्ग के शाखा प्रशाखाओं का विवरण प्राप्त नहीं हो सका। इस समय उनका विवरण प्राप्त करना नितान्त ही असंभव प्रतीत होता है। संगृहीत अंश भी पूर्ण या निर्भूल हुआ है, यह भी दृढ़ता के साथ नहीं कहा जा सकता। "

कार्यतः यही हुआ है। अनुसंधान की त्रुटियां और नाना तरह की प्रतिकूल घटनाओं की व़जह से द्वितीय लहर में प्रदत्त तालिका में कुछ उल्लेख योग्य व्यक्तियों का नाम बाद में आ गया है और कुछ दूरवर्ती इलाके के व्यक्तियों का नाम(जो वंश तालिका में सन्निवेशित करने की जरूरत नहीं थी) सन्निवेशित हो गया है। जहां तक संभव हुआ, सतर्कता के साथ इन सभी त्रुटियों को सुधार कर यहां संशोधित वंशतालिका प्रदान की गयी है। द्वितीय लहर में संयोजित वंशावली के बदले इनका व्यवहार ही आवश्यक है। संशोधन के फलस्वरूप उक्त दोनों वंशतालिकाओं में ज्यादा फर्क नहीं है।

<u>तृतीय लहर–13</u>

त्रिपुर वंशावली
(संशोधित)

(नामों के बाईं ओर दिए गए अंक राजाओं के क्रमिक संख्याओं के ज्ञापक हैं।)

1 ⇩ चन्द्र	21⇩ पुरूरवा(दूसरा)
2 ⇩ बुध	22⇩ विवर्ण
3 ⇩ पुरूरवा(1)	23⇩ पुरूसेन
4 ⇩ आयु	24⇩ मेघवर्ण
5 ⇩ नहुष	25⇩ विकर्ण
6 ⇩ ययाति	26⇩ बसुमान
7 ⇩ द्रुहयु(2)	27⇩ कीर्ति
8 ⇩ ब्रभु	28⇩ कनीयान
9 ⇩ सेतु	29⇩ प्रतिश्रवा
10⇩आनर्त्त(आरब्ध या आरद्वान)	30⇩ प्रतिष्ठ
11⇩ गांधार	31⇩ शत्रुजित(शक्रुजित)
12⇩ धर्म(घर्म)	32⇩ प्रतर्दन(3)
13⇩ धृत(घृत)	33⇩ प्रमथ
14⇩ दुर्मद	34⇩ कलिन्द
15⇩ प्रचेता	35⇩ क्रम(क्रथ)
16⇩ पराचि(शतधर्म)	36⇩ मित्रारि
17⇩ परावसु	37⇩ बारिवर्ह
18⇩ पारिषद	38⇩ कार्मुक
19⇩ अरिजित	39⇩ कलिंग(कालांग)
20⇩ सूजित(असुजित)	40⇩ भीषण

....

(1) ये पिता के द्वारा प्रयाग पार प्रतिष्ठान नगरी में प्रतिष्ठित हुए। इसे वर्तमान में 'झूसी' के नाम से जाना जाता है।

(2) ये पिता के द्वारा अभिशप्त और निर्वासित होकर पैतृक राजधानी प्रतिष्ठान नगर परित्याग कर दूर गंगा के सागर संगम स्थल पर सगरद्वीप स्थित कपिला आश्रम गए और वहीं पर राज्य विस्तार किया।

(3) ये सगरद्वीप के राजपाट से कछाड़ जाकर ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे एक नवराज्य की प्रतिष्ठा में व्रती हुए। इन्हीं के प्रयास से किरातों को परास्त कर वर्तमान त्रिपुरा राज्य की स्थापना हुई।

तृतीय लहर–14

41⇩ भानुमित्र	44⇩ चित्रायुध
42⇩ चित्रसेन(अघ चित्रसेन)	45⇩ दैत्य
43⇩ चित्ररथ	46⇩ त्रिपुर (1)

46⇨47⇩त्रिलोचन(2)

दृकपति(वीरसेन) काछाड़ राजा, 48दाक्षिण, दक्ष, द्रुमायु, द्रवीण, दृष्टघ्नो, भृगु, दुर्धर, द्रुह, दुष्मायु, दैविरी, दम्प

49⇩ तयदाक्षिण(तैदाक्षिण)	67⇩ श्रीमान(श्रीमन्त)
50⇩ सुदाक्षिण	68⇩ लक्ष्मीतरू
51⇩ तरदाक्षिण	69⇩ रूपवान(तरलक्ष्मी)
52⇩ धर्मतरू(धर्मतर)	70⇩ लक्ष्मीवान(माई लक्ष्मी)
53⇩ धर्मपाल	71⇩ नागेश्वर
54⇩ सुधर्मा(सुधर्म)	72⇩ योगेश्वर
55⇩ तरबंग	73⇩ नीलघ्वज(ईश्वर फा)(3)
56⇩ देवांग	74⇩ बसुराज(रंगखाइ)
57⇩ नरांगित	75⇩ धनराज फा
58⇩ धर्मागंद	76⇩ हरिहर(मुचं फा)(4)
59⇩ रूक्मागद	77⇩ चन्द्र शेखर(माईचोंग फा)
60⇩ सोमागंद(सोनागंद)	78⇩ चन्द्र राज(ताभुराज या तरूराज)
61⇩ नौयुगराय(नौगयोग)	79⇩ त्रिपली(तरफनाइ)
62⇩ तरजुंग	80⇩ सुमन्त
63⇩ राजधर्मा(तरराज)	81⇩ रूपबस्त(श्रष्ठ)
64⇩ हामराज	82⇩ तरहोम(तरहाम)
65⇩ बीरराज	83⇩ हरिराज(खा हाम)
66⇩ श्रीराज	84⇩ काशीराज(कतर फा)

(1) इन्हीं के समय से त्रिपुरा राज्य की नींव सुदृढ़ हुई है। इन्होने ही त्रिपुरा नाम का प्रवर्तन किया।

(2) इनके ज्येष्ठ पुत्र दृगपति ने काछाड़ में मातामह का राज्य पाया और द्वितीय पुत्र दाक्षिण ने त्रिपुरा का सिंहासन अधिकार किया।

(3) इनके ही समय में त्रिपुरेश्वरों ने 'फा' उपाधि ग्रहण किया।

(4) इसी समय से राजाओं में कुछ लोगों ने हालाम भाषा के एक एक उपनाम ग्रहण करना शुरू किया। वर्तमान राजवंशो के अधिपत्य विस्तार के पहले त्रिपुरा में हालाम जाति का प्रभुत्व था। राजन्य वर्गो के हालाम भाषा का नाम ग्रहण करने का और इस भाषा के प्रचलन का यही एक कारण है।

85⇩ माधव(कालातर फा)	91⇩ देवराज
86⇩ चन्द्रराज(चन्द्र फा)	92⇩धूसरांग(दुराशा या धराईश्वर)
87⇩ गजेश्वर	93⇩बार कीर्ति(बीरराज या बीराज)

88⇩ वीरराज(द्वितीय)	94⇩ सागर फा
89⇩ नागेश्वर(नागपति)	95⇩ मलयचन्द्र
90⇩ शिखिराज(शिक्षराज)	

96 सूर्य नारायण(सूर्यराय)
⇩

98 बीर सिंह(चराचर)
⇩
99 सुरेन्द्र(हाचुंग फा या आचं फा)
⇩
100 विमार
⇩
101 कुमार
⇩
102 सुकुमार
⇩
103बीर चन्द्र(तैछ राव या तक्ष राव)
⇩
104 राज्येश्वर(राजेश्वर)

106 तैछंफां(तेजंफा)
⇩
107 नरेन्द्र
⇩
108 इन्द्रकीर्ति
⇩
109 विमान(पाइमाराज)
⇩
110 यशो राज

97 इन्द्र कीर्त्ति
(आचंग फनाइ या उतंग फनी)

105⇩नागेश्वर
(क्रोधेश्वर या मिछली राज)

111 बंग(नबांग)
⇩
112 गंगा राय(राज गंगा)
⇩
113चित्र सेन(सूर्य राय या छाक्रुराय)
⇩
114 प्रतीत
⇩
115मारिचि(मिछली/मालछि या मरूसोम)
⇩
116 गगन(शकुथ)
⇩
117कीर्ति(नवराज या नवराय)
⇩
118हिमति(युझारू फा या हमतारफा)
⇩
119राजेन्द्र(जंगीफा या जनक फा)
⇩
120 पार्थ(देवराज या देवराय)
⇩
121 सेबाराय(शिवराय)
⇩
122किरीट(आदि धर्म फा,
दानकुरू फा, डूंगुर फा या हरिराय)(1)
⇩

---

(1) इनके सम्पादित ताम्रशासन में धर्म पा नाम लिखा है

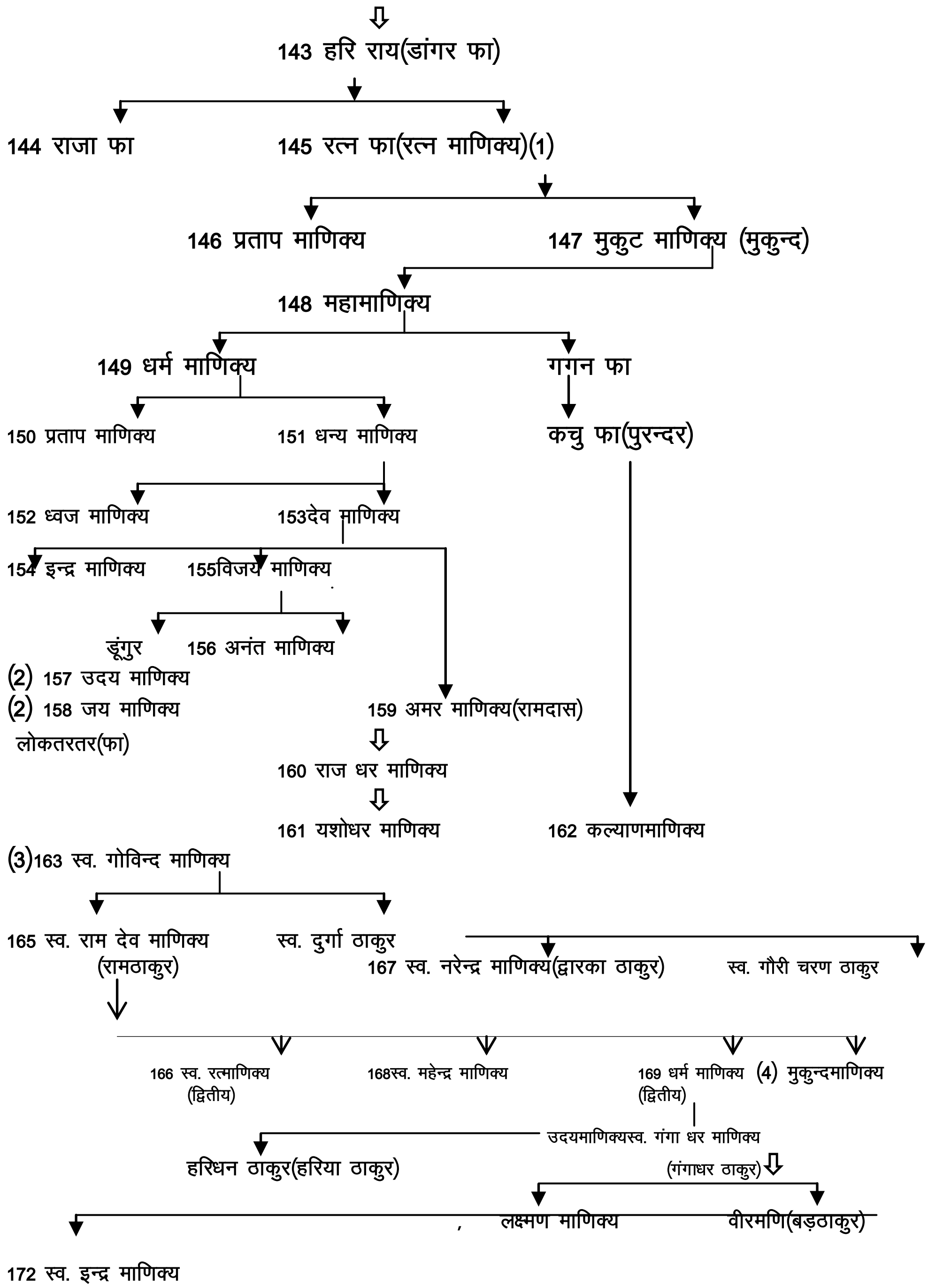
⇩
123राम चन्द्र(खारूं फा या कुरूंगु फा)
⇩

125 ललित राय | 124नृसिंह(छें फनाइ या सिंहफणी)

⇩
126 मुकुन्द फा(कुन्द फा)
⇩
127 कमल राय
⇩
128 कृष्ण दास
⇩
129 यशो राज(यश फा)
⇩

131 साधु राय | 130 उद्धव(मोचं फा)

⇩
132 प्रताप राय
⇩
133 विष्णु प्रसाद
⇩
134 बाणेश्वर(बाणीश्वर)
⇩
135 बीरबाहु
⇩
136 सम्राट
⇩
137 चम्पकेश्वर(चाम्पा)
⇩
138 मेघराज(मेघ)
⇩
139 धर्मधर(छेकां छाग)
⇩
140कीर्तिधर(छेंथुम फा या सिंहतुंग फा)
⇩
141राज सूर्य(आचं फा या कुंज होम फा)
⇩
142 मोहन(खिचुं फा)
⇩



(1) इसी समय से त्रिपुरेश्वर गण माणिक्य उपाधि ग्रहण कर रहे हैं। इसके बाद राजकुमारों के भीतर किसी किसी की 'फा' उपाधि दिखाई देती है।

(2) 157 158 क्रमिक संख्या वाले राजा भिन्न वंशीय हैं।

(3) इनके सौतेले भाई छत्र माण्क्यि (नक्षत्र राय) को राजत्व प्रदान करके आराकान गये थे। छत्र माण्क्यि की मृत्यु के बाद पुनः सिंहासन ग्रहण कियाथा। इनकी कीर्ति कनिका लेकर ''राजर्षि और विसर्जन'' रचित हुआ है।

(4) 169 संख्यक राजा धर्ममाणिक्य के बाद, छत्रमाणिक्य के वंशज मुसलमान शसन कर्ता से सनन्द ग्रहण करके ''जगतराम माणिक्य'' नाम ग्रहण किया था लेकिन वह सिंहासन अधिकार में समर्थ नहीं सके। कुछ कुमिल्ला में जमींदार रहे।

तृतीय लहर–18

चित्र तृतीय लहर–18

चित्र

A3Rajmala foto final JPG (Tratiya Lehar 18-2)

<u>तृतीय लहर–19</u>

वंशावली की बात जब कहना ही पड़ा, तब राजवंश के अलावा दूसरे दो प्रसिद्ध वंशधारा की बातें भी यहां उल्लेख करना संगत जान पड़ता है। राजमाला प्रथम लहर के 194 पन्ने पर लिखा गया है। :–

"रत्न माणिक्य के लक्षणावती में रहते हुए तीन बंगाली भद्रमहोदयों के साथ उनका परिचय हुआ। उनमें एक चिकित्सक जो वैद्यवंश संभूत और धन्वन्तरी गोत्र के जयनारायण सेन थे और दूसरे ये दो कायस्थ जाति के थे। + + + + महाराज रत्न माणिक्य राजदण्ड धारण करने के बाद इन तीनों को अपने राज्य में ले आए। + + + + तृष्णा परगना के अंर्तगत बातिसा निवासी वैद्यों ने इस समय राज चिकित्सक का पद प्राप्त किया था।"

बातिसा के वैद्यवंश प्रथम लहर के सम्पादन के समय बहुत सी जगहों में पत्र लिखकर भी बातिसा के वैद्यवंश वैद्यों का वंश विवरण संग्रह करने में समर्थ नहीं हो सका। इस समय त्रिपुरा राज्य के उदयपुर विभाग के वर्तमान मजिस्ट्रेट और कलेक्टर श्रद्धास्पद श्रीयुत् कुंजबिहारी चक्रवर्ती, एम.ए., बी.एल महाशय अनुग्रह पूर्वक महाराज रत्न माणिक्य के लाए हुए जयनारायण सेन का वंश परिचय सूची के साथ–साथ अनेक विषयों का विवरण प्रदान किया है। इसके विश्लेषण से यह जाना जाता है कि जयनारायण सेन, महाराज रत्नमाणिक्य की कृपा से राजवैद्य का पद प्राप्त कर पैतृक आवास यशोहर जिला के अंतर्गत बेन्दा गाँव परित्याग कर त्रिपुरा में आ बसे। उनके उत्तर पुरूष यादवेन्द्र सेन और यादवेन्द्र के पुत्र धन्वंतरी सेन महाराज विजय माणिक्य के शासन काल में विशेष प्रभावशाली राजवैद्य थे। राजमाला द्वितीय लहर में उल्लेख है। :–

"धन्वंतरी नारायण पिता यादु वैद्य।

राजमाला –द्वितीय लहर 63 पृष्ठ

यहां पर यादवेन्द्र को "यादु वैद्य" के नाम से आख्यात किया गया है। उनके पुत्र धन्वंतरी सेन के 'नारायण' उपाधि थी। यह उपाधि त्रिपुरा के सामन्त, सेनापति और चतुर्दश देवता के पूजक को छोड़ दूसरे के प्रति प्रयुक्त होने का दृष्टांत अति विरल है। नारायण उपाधि को मद्दे–नज़र रखते हुए इस विषय में विवरण संग्रह कर्ता ने भ्रमवश धन्वंतरी को त्रिपुरा जाति का कहा है एवं अन्य सूत्र के अभाव में हमने भी वही ग्रहण किया है (राजमाला द्वितीय लहर 256/262 पृष्ठ)। कुंज बाबू ने इस वंश का प्रकृत विवरण प्रदान कर हमें विशेष उपकृत और भ्रांत पथ से प्रत्यावर्तित किया है। वर्तमान काल में तिष्णा परगने के अंतर्गत बातिसा गांव में और दाँड़रा परगने के अंतर्गत स्वल्प मादारी गांव में जो धन्वंतरी गोत्र के वैद्य निवास कर रहे हैं, वे लोग पूर्वोक्त यादवेन्द्र सेन के (यादुवैद्य के) वंशज हैं। इस वंश की वंश पत्रिका के साथ विशेष विवरण राजमाला चतुर्थ लहर मे यथास्थान पर सन्निवेशित की जायेगी।

तृतीय लहर–20

बातिसा का विश्वास वंश और एक आलोच्य विषय है – बातिसा का विश्वास वंश। महाराज रत्नमाणिक्य ने लक्षणावती से जिन सभी सुयोग्य व्यक्तियों को लाकर राज कार्य में नियोग किया था, उनमें पंडित राज अन्यतर व्यक्ति थे। काटोया के अंतर्गत काटादिया गांव में उनका घर था। ये शाण्डिल्य गोत्रज ''वाद्यघटी गाई'' थे। त्रिपुरा में आकर पण्डितराज ने उच्च राज कर्मचारी का आसन अलंकृत किया। इनके वंशधर भी राजदरबार में प्रतिष्ठावान एवं विश्वस्त थे। इन्हें प्राप्त ''विश्वास'' उपाधि ही इसका ज्वलंत प्रमाण है।

कुंज बाबू इस वंश के उत्तर पुरूष हैं। वे पण्डितराज से गणना में अधस्तन ग्यारहवाँ पुरूष हैं। इन्होने कृपा कर बातिसा का वैद्यवंश के विवरण की तरह अपने वंश का सवृतांत इतिहास के साथ वंश सूची प्रदान कर हमारी बहुत सहायता की है। इसी पर आधारित इस वंश का विवरण चतुर्थ लहर में यथास्थान देने का संकल्प है।

राज्य के सीमा परिवर्तन का स्थूल विवरण प्राचीन त्रिपुरा राज्य जिस तरह गौरवमय था, उसी तरह सुविशाल भी था। हिमालय की तराई से लेकर बंगाल की खाड़ी तक विशाल प्रदेश, एक समय इस राज्य के अंतर्गत था। उस समय उत्तर आराकान त्रिपुरा के शासनाधीन था, इस तरह के प्रमाण भी मिलते हैं। पश्चिम में सुन्दर वन तक, पूर्व में मणिपुर, राज्य की पश्चिमी सीमा और ब्रह्मदेश के भी कुछ अंश त्रिपुरा राज्य में थे। इस समय त्रिपुरेश्वर 'सम्राट' उपाधि के सम्पूर्ण अधिकारी थे।

यहां पर और एक बात का उल्लेख करना बहुत जरूरी प्रतीत हो रहा है। राजमाला में उल्लेख मिलता है कि त्रिपुरेश्वर युझार फा के पुत्र जांगे फा ने नाना स्थानों पर चतुर्दश देवताओं की पूजा की थी। इस प्रसंग में लिखा है :–

33

' जांगेफा नामेते तार पुत्र होइलो राजा।	'नाम जांगेफा उनका पुत्र हुआ राजा।
नाना स्थाने गिया करे चद्दोदेव पूजा।।	नाना स्थानों पर किया चतुर्दश पूजा।।
फेनी नदीतीरे आर मोहरीर तीरे।	फेनी नदी और मोहरी के तीर।
देशेर पश्चिमे पूजे लक्ष्मीपति धारे	देश का पश्चिम पूजे लक्ष्मीपति धीर
पूर्वदिके पूजे आद्ये अमरपुरेते।	पूर्वदिशा पूजें पहले अमरपुर में।
चतुर्दश देव पूजे दृढ़ भक्ति मते।। '	चतुर्दश देव पूजें दृढ़ भक्ति में।। '
राजमाला प्रथम लहर 53 पृष्ठ	राजमाला प्रथम लहर 53 पृष्ठ

उद्धृतितांश का – ''पूर्वदिके पूजे आद्ये अमरपुरेते'' इस वाक्य को अवलम्बन मानकर कोई–कोई यह भी कहता है, कि ब्रह्मदेश की राजधानी अमरावती नगरी में चतुर्दश देवताओं की पूजा की गई थी एवं वहां तक त्रिपुरा राज्य का विस्तार था। ब्रह्म राज्य का कुछ अंश त्रिपुरा राज्य के अधीन रहने पर भी उस राज्य की राजधानी

<u>तृतीय लहर–21</u>

तक त्रिपुरा के राजाओं का शासन था, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। त्रिपुरा की प्राचीन राजधानी उदयपुर से पूरब की ओर अवस्थित "अमरपुर" अब तक विद्यमान है। इसका नाम महाराज अमर माणिक्य के द्वारा ही रखा गया था, इस तरह का विश्वास सभी को है और हम भी यही विश्वास करते आ रहे हैं। पूर्वोक्त चतुर्दश देवताओं की पूजा महाराज अमर माणिक्य ने बहुत पहले की थी और उस समय वर्तमान अमरपुर का नामकरण नहीं हुआ था। इसीलिए कुछ लोगों की धारणा है कि राजमाला कथित अमरपुर को ब्रह्मदेश की राजधानी समझते हैं। किन्तु ब्रह्मदेश की राजधानी 'अमरावती' नाम भी ज्यादा प्राचीन नहीं है। राज्य के भीतर वर्तमान अमरपुर को महाराज अमर माणिक्य ने त्रिपुरा राज्य की राजधानी स्थापित की थी, यह बात भी सत्य है, किन्तु इस जगह का अमरपुर नामकरण उन्हीं के द्वारा और उन्हीं के नामानुसार हुआ है। पहले से ही यह नाम प्रचलित था, इस विषय में कुछ सन्देह भी दृष्टि गोचर होता है। महाराज उदय माणिक्य के द्वारा रांगामाटी का 'उदयपुर' नामकरण होने की कथा राजमाला में स्पष्ट रूप से लिपिबद्ध है, लेकिन अमरपुर नामकरण के बारे में राजमाला में कहीं दिखाई नहीं देता। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से ही अमरपुर नाम रहना कोई विचित्र बात नहीं है एवं महाराज जांगे फा ने इसी जगह पर चतुर्दश देवताओं की अर्चना की थी अथवा और किसी जगह का नाम अमरपुर रहा होगा और काल–प्रभाव से वह नाम विलुप्त हो गया। यह अनुमान सिद्ध होने पर भी एकमात्र राजमाला के पूर्वोक्त वाक्य के ऊपर निर्भर कर ब्रह्म राज्य की राजधानी में त्रिपुरा की विजय घोषणा करने का साहस हमारे पास नहीं हैं। उस राज्य का कुछ अंश त्रिपुरा के अधीन रहने की बात तो पहले ही हमने स्वीकार किया है एवं राजमाला के प्रथम लहर में सन्निविष्ट 4 नम्बर मानचित्र के पर्यालोचना से भी यह बात हृदयंगम हो सकती है। राजमाला के उद्धृत वाक्य से फेनी नदी, मोहरी नदी और लक्ष्मीपति हाकर नाम के साथ अमरपुर के नाम का भी उल्लेख मिलता है। फेनी नदी के द्वारा इस समय राज्य की दक्षिण सीमा निर्धारित होती है। मोहरी नदी और लक्ष्मीपति अब भी राज्य की सीमा के भीतर हैं। इस से ज्ञात होता है कि इन सभी जगहों की तरह अमरपुर, राजधानी उदयपुर के करीब ही कहीं रही होगी।

मुसलमानों के आक्रमण और विजय के फलस्वरूप विशाल त्रिपुर राज्य क्रमशः क्षीण होता जा रहा है। इतिहास के आलोचना से ज्ञात होता है कि इस राज्य की पश्चिम सीमा बहुत पहले ही ध्वस्त होकर मेघना नदी के किनारे तक राज्य की स्थिति बनी रही। तेरहवीं ई सदी के बाद से ही त्रिपुरा की समभूमि क्रमशः मुसलमानों के हाथों जाने लगी। समतल क्षेत्रों में जो भूभाग त्रिपुरा के अधीनस्थ सामंत या जमींदारों के अधिकार में थे, राजमाला तृतीय लहर के अंतर्गत घटनाओं का समसामयिक काल में उनका मुसलमानों के द्वारा अधिकृत होकर कई जमींदारियों में विभक्त होना और नाना व्यक्तिओं के हाथों में बँट जाने का वर्णन है। जो अंश साक्षात त्रिपुरेश्वर के हाथों में था,

<u>तृतीय लहर–22</u>

वह जमींदारी सूत्रों के द्वारा राज्य का अंगीभूत होकर रह गया है। इस बारे में विशद विवरण राजमाला चतुर्थ लहर में मिलेगा। राजमाला द्वितीय लहर के समय राज्य की सीमा कहां तक फैली थी एवं तृतीय लहर के समय वह सीमा कहां तक विलुप्त हो गई है, इस बारें में संयोजित मानचित्र के पर्यालोचना द्वारा जाना जायेगा।

चट्टग्राम की आलोचना से यह तथ्य उभरता है कि कुछ क्षेत्रिय राजाओं के राजत्व के बाद दामोदर देव नामक चन्द्रवंशीय एक राजा का शासन जब चल रहा था तभी त्रिपुरेश्वर ने उस राज्य को जीता और उसे त्रिपुरा राज्य में समेट लिया। इसके बाद यहाँ मघ और मुसलमानों के द्वारा वह प्रदेश बार–बार आक्रान्त और विजित होने के बावजूद भी कभी–कभी वह जीता गया और कभी कभी हस्त–च्युत भी होता रहा। इस तरह बार–बार होता रहा। महाराज विजय कुमार माणिक्य के राजत्व के अवसान के साथ–साथ अंग्रेज पर्यटक राल्फ फिच सप्तग्राम से चट्टग्राम तक गए थे उन्होने भी वहां जाकर इस अवस्था को देखा(1) किन्तु राजमाला तृतीय लहर के समय कुछ दिनों तक यह प्रदेश त्रिपुरा के अधीन नहीं था। महाराज अमर माणिक्य के शासन काल में आराकान राजा के द्वारा चट्टग्राम विजित होने के समय से ही ये सभी अंचल त्रिपुरा राज्य के हाथों से निकल जाने की शुरूआत हो गई थी। बाद में मुसलमानों के हाथों में यह प्रदेश चला गया। किसी–किसी के मतानुसार मुसलमान शासन के आखिरी दिनों तक चट्टग्राम त्रिपुरा के हाथ से पूर्ण रूप से नहीं निकल गया था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के दीवानी पाने के बाद यह भूभाग प्रकृत रूप से इनके हाथों आ गया था। ईस्ट इंडिया कम्पनी 1760 ई. में दीवानी प्राप्त करने बाद ही शाह आलम बादशाह 1765 ई. के 12 अगस्त को करमान द्वारा उसे स्वीकार किया गया था। चट्टग्राम तो इसके पहले से ही मुसलमानों के हाथों में था, इसका प्रमाण भी मिलता है। अतएव शेषोक्त मत के बारें में स्थिर सिद्धान्त पर पहुंचना असंभव विषय है। महाराज यशोधर माणिक्य के शासन काल में मघ वाहिनी के साथ त्रिपुरा का एक युद्ध हुआ था। यह युद्ध कहाँ हुआ था और उसका नतीजा क्या हुआ था, इसके बारें में कोई जानकारी नहीं मिलती है। प्रकृत रूप से महाराज अमर माणिक्य के बाद चट्टग्राम पर त्रिपुरा के आधिपत्य का कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता किन्तु फिलहाल जिस प्रदेश को पार्वत्य चट्टग्राम कहा जाता है वह इसके बाद भी बहुत दिनों तक त्रिपुरा राज्य का ही एक अंश था।

---

(1) **From satagam I travelled by the country of the King of Tippara with whom the Mogen have almost continual warres. The Mogen which be of the kingdome of Recon and Rame, be stronger than the king of Tippara. So that chatigan or Portogrando, is often times under the king of Recon-**

Ralph Fitch.

चित्र

A3Rajmala foto final JPG (Tratiya Lehar 23-1)

<u>तृतीय लहर–24</u>

भुलुया राज्य (नोआखाली) को लेकर बार–बार विप्लव होने पर भी राजमाला तृतीय लहर के शेष समय तक यह राज्य त्रिपुरा का सामंत राज्य के रूप में ही चला आ रहा था। भुलुआ के राजागण बार बार विद्रोही हो कर भी उस समय त्रिपुरा का अनुगत्य अस्वीकार करने में समर्थ नहीं हो सके। किन्तु तृतीय लहर का समय अतीत होते ही वह भूखंड मुगल साम्राज्य के अधीन हो गया।

कछाड़ राज्य जब सम्पूर्ण स्वाधीन था, त्रिपुरेश्वर महाराज प्रतीत और कछाड़ राज्य के बीच जो सन्धि हुई, उसके द्वारा उभय राज्य के बीच सीमा निर्धारित हुई थी(1)। विदेशी ऐतिहासिकों ने भी इस सीमा के निर्धारित होने की चर्चा की है(2)। इसके बाद यह राज्य त्रिपुरा की अधीनता स्वीकार करने पर बाध्य हो गया था। कहा जाता है, सत्रहवीं सदी के प्रारंभ में वर्तमान कछाड़ जिले के उत्तर में द्विग्वर्ती भूभाग के एक राजा ने त्रिपुरेश्वर की कन्या से विवाह करके कछाड़ जिले को दहेज रूप में प्राप्त किया था(3)। इसके बाद से ही कछाड़ राज्य त्रिपुरा के हाथों से निकल गया। ई0 सन् सत्रहवीं के प्रारम्भ में महाराज यशोधर माणिक्य ने राजत्व किया था। किसी राजा ने अपनी कन्या और जमाई को इस तरह का दहेज दिया था, त्रिपुरा के इतिहास में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। चाहे जिस सूत्र का भी हवाला क्यों न दिया जाय कछाड़ बहुत पहले से ही त्रिपुरा के हाथों से निकल गया था, यह एक हकीकत है। जयन्तीया राज्य भी बहुत पहले से ही कछाड़ की तरह पृथक हो गया था।

श्रीहट्ट प्रदेश ई. 1734 में मुसलमानों के हाथों विजित होने के बावज़ूद भी उनका शासन प्रतिष्ठित होने में वहाँ बहुत समय लगा था। इस विजय के पश्चात् भी उस अंचल में त्रिपुरा का प्रभाव क्षुण्ण नहीं हुआ। ई. चौदहवीं सदी तीसरे चरण में पुनः वह प्रदेश मुसलमानों के हाथों में चला गया। इसके बाद से ही त्रिपुरा और अहोम लोगों से पुनः–पुनः आक्रान्त होने के फलस्वरूप मुसलमान शासनकर्ताओं को सर्वदा व्यस्त रहना पड़ता था। कामरूप के अधिपति नरनारायण के सैन्याध्यक्ष चिलाराय के द्वारा श्रीहट्ट विजय के कुछ ही दिनों बाद (ई. 1581, 1503 शकाब्द में महाराज अमर माणिक्य ने पुनः श्रीहट्ट जय किया और वहाँ के शासन कर्ता को कारारूद्ध करके कर प्रदान के लिए मजबूर कर दिया था।(4) अमर माणिक्य के श्रीहट्ट विजय के अवसर पर वहाँ एक स्तंभ का निर्माण किया था जिसका अर्द्ध–भंग रूप का परिचय मिलता है। यथा –

'श्रीहट्टेर मुनारा उच्च अर्द्ध भांगा छिल।
अर्थात श्रीहट्ट की उच्च मीनार आधी टूटी हुई थी।
अमर माणिक्य खंड 10 पृष्ठ

---

(1) राजमाला प्रथम लहर 46–47 पृष्ठ
(2) **Hunter's Bengal & Assam Vol VI P.264**
(3) **Aitchinson's Treatise P.213**
(4) **Geography & History of Bengal (H. Blockmann)**
J.A.S.B-1873 P.216

तृतीय लहर–25

"मुनारा" मीनार शब्द का अपभ्रंश है। श्रीहट्ट के इतिहास में हमें देखने को मिलता है,

"उच्च स्तंभ को मीनार कहते हैं। वर्तमान शहर के उत्तर दिशा में एक उच्च शिलाखण्ड दिखाई देता है। इसे मीनार का टील्हा कहा जाता था। (साधारण आदमी इसे मनारायेर टिला कहते हैं।)।"

श्रीहट्ट का इतिहास दूसरा भाग दूसरा खंड प्रथम अध्याय 5पृ

संभवतः इस मीनार या स्तंभ को ही राजमाला लेखक ने मुनारा कहा है। मनाराय और मुनारा शब्द में यथेष्ठ सादृश्य है। ये दोनों शब्द 'मीनार' शब्द का रूपातंर ही समझा जाता है।

अमर माणिक्य के विजय के बाद किस समय यह प्रदेश त्रिपुरा राज्य के हाथों से निकल गया, इसका पता नहीं लगता। मुसलमान शासकों के शासन विवरणी के आलोचना से पता चलता है कि इस प्रदेश में त्रिपुरा का आधिपत्य ज्यादा दिनों तक नहीं रहा। राजमाला तृतीय लहर के समय इस इलाके में मुसलमान शासन प्रतिष्ठित हुआ था।

श्रीहट्ट प्रदेश, लाउड़, बानियाचंग, तरप, जयन्तीया, गौड़ (श्रीहट्ट शहर के साथ) इटा और प्रतापगढ़ आदि खण्ड राज्यों में बँटे हुए थे और ये त्रिपुरा के सामंत राज्यों में गिने जाते थे। इनमें –

लाउड़ राज्य यह राज्य श्रीहट्ट जिला के पश्चिमांश को लेकर बना हुआ था। लाउड़ पहले प्रागज्योतिष के अधिपति भगदत्त के शासनाधीन में था– इसका प्रमाण भी मिलता है। उनके वंश की समाप्ति के बाद बारहवीं सदी में विजय माणिक नामधारी कोई हिन्दू राजा यहां राज करते थे। ये त्रिपुरेश्वर विजय माणिक्य से अलग व्यक्ति थे। इनकी राजधानी जगन्नाथ पुर में थी। श्रीहट्ट के इतिहास से पता चलता है कि शकाब्द 1113 में मुद्रित एक रौप्य मुद्रा आविष्कृत हुआ है। ये ब्राह्मण जाति के थे। इनके वंश के कितने राजाओ ने यहां राजत्व किया है, इसका पता नहीं चलता। इसके बाद दिव्य सिंह नाम के एक ब्राह्मण राजा के अस्तित्व का पता चलता है। इसके बाद केशव नाम के किसी ब्राह्मण राजा के द्वारा यह राज्य शासित हुआ था। केशव के कई पुरूषों के बाद लाउड़ राज्य बानियाचंग अधिपति गोविन्द खाँ के अधीन चला गया। लाउड़ के राजवंशीय जयसिंह द्वारा राज्य के उद्धार के लिए दिल्ली जाकर जिस तरह निहत हुए थे और उस समय लाउड़ राज्य की क्या स्थिति थी, वह ग्रंथ के 108–112 पृष्ठ में दिया गया है। सम्राट के दरबार में गोविन्द खाँ को प्राणदण्ड का आदेश हुआ था, लेकिन दैवानुकल्प से उनकी प्राण रक्षा हुई थी। इससे वे मुसलमान धर्म करने पर मजबूर हो गए थे। इसके बाद लाउड़ का कुछ अंश गोविन्द खाँ को एवं बाकी पूर्ववर्ती राजवंश को हस्तगत हुआ। लाउड़ राज्य के ऊपर त्रिपुरा का जो प्रभाव था, वह राज्य मुसलमानों के

तृतीय लहर–26

हस्तगत होते ही विलुप्त हो गया। साथ–साथ हबीब खाँ के द्वारा गोविन्द सिंह की मृत्यु और लाउड़ राज्य ध्वंस हो गया।

बानियाचंग इस राज्य का विवरण ग्रंथ भाग 106–112 पृष्ठ पर दिया गया है। महाराज अमर माणिक्य के समय तक इस राज्य के ऊपर त्रिपुरा के आधिपत्य का परिचय मिलता है। त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के बाद त्रिपुर राज्य की उत्तर और दक्षिण सीमा क्रमशः म्लान होती गई। इसी समय बानियाचंग भी मुसलमानों के हाथों चला गया।

तरप तरप राज्य के पहले से ही त्रिपुरा राज्य की वश्यता स्वीकार करने पर भी महाराज अमर माणिक्य के शासन काल में वहाँ के मुसलमान शासनकर्ता, त्रिपुरेश्वर के अबाध्य होने पर, उन्होंने तरप राज्य पर आक्रमण कर विजित किया। इस ग्रंथ के 148–153 और 338 पृष्ठ में मूल विवरण प्रदान किया गया है। तरप प्रदेश महाराज अमर के शासन काल तक त्रिपुरा के अधीन रहने पर भी श्रीहट्ट के साथ–साथ यह पूर्ण प्रदेश भी मुसलमानों के शासनाधीन में चला गया।

जयन्तीया राज्य वर्तमान श्रीहट्ट जिला के उत्तर पश्चिमांश को लेकर जयन्तीया राज्य फैला हुआ था। यह राज्य बहुत ही प्राचीन राज्य है। जैमिनी भारत में जयन्तीया को "नारीदेश" कहा गया हैं। इस राज्य का इतिहास कोई संक्षिप्त इतिहास नहीं है, यहां पर कुछ आलोचना करने की सुविधा नहीं है। जयन्तीया राज्य सम्पूर्ण स्वाधीन होने पर भी त्रिपुरेश्वर विजय माणिक्य के शासन काल में जयन्तीया राज त्रिपुरा राज्य की वश्यता स्वीकार करने पर बाध्य हुआ था। इस बारे में राजमाला द्वितीय लहर के 160–162 पृष्ठ पर लिखा गया है, इसलिए यहाँ उसका पुनरूल्लेख नहीं किया गया। उसी समय से जयंतीया–पति त्रिपुरेश्वर के प्रभाव को स्वीकार करते आ रहे थे, किन्तु नाना कारणों से बहुत पहले से यह सम्पर्क सूत्र छिन्न होने पर त्रिपुरा के सामंत श्रेणी में जयन्तीया राज्य का नामोल्लेख नहीं किया गया है।

गौड़ या श्रीहट्ट इस राज्य का विवरण इस ग्रंथ भाग के 339–340 पेज पर उल्लेख किया गया है। राजमाला तृतीय लहर के समय इस राज्य पर से त्रिपुरा का प्रभाव खत्म हो गया।

इटा राज्य इस राज्य की अवस्था ग्रंथ भाग के 340– 344 पेज पर मिलेगा। राजमाला तृतीय लहर के समय से कुछ समय पहले इस राज्य पर से त्रिपुरा का प्रभाव खत्म हो गया।

प्रतापगढ़ इस भूभाग के विषय में त्रिपुरेश्वर का साक्षात् हाथ था। राजाओं में किसी किसी का कुछ समय के लिए अवस्थान का प्रमाण भी मिलता है। यद्यपि इस इलाके में त्रिपुरेश्वरों के वास भवन का भग्नावशेष

विद्यमान है। इसके पश्चात् भिन्नवंशीय राजाओं ने भी यहाँ पर शासन किया और इसके भी प्रमाण मिले हैं। श्रीहट्ट विजय के समय यह राज्य भी त्रिपुरा के हाथों से निकलकर मुस्लिम शासनाधीन हो गया। राजमाला तृतीय लहर के समय तक यह प्रदेश त्रिपुर राज्य का अंग था।

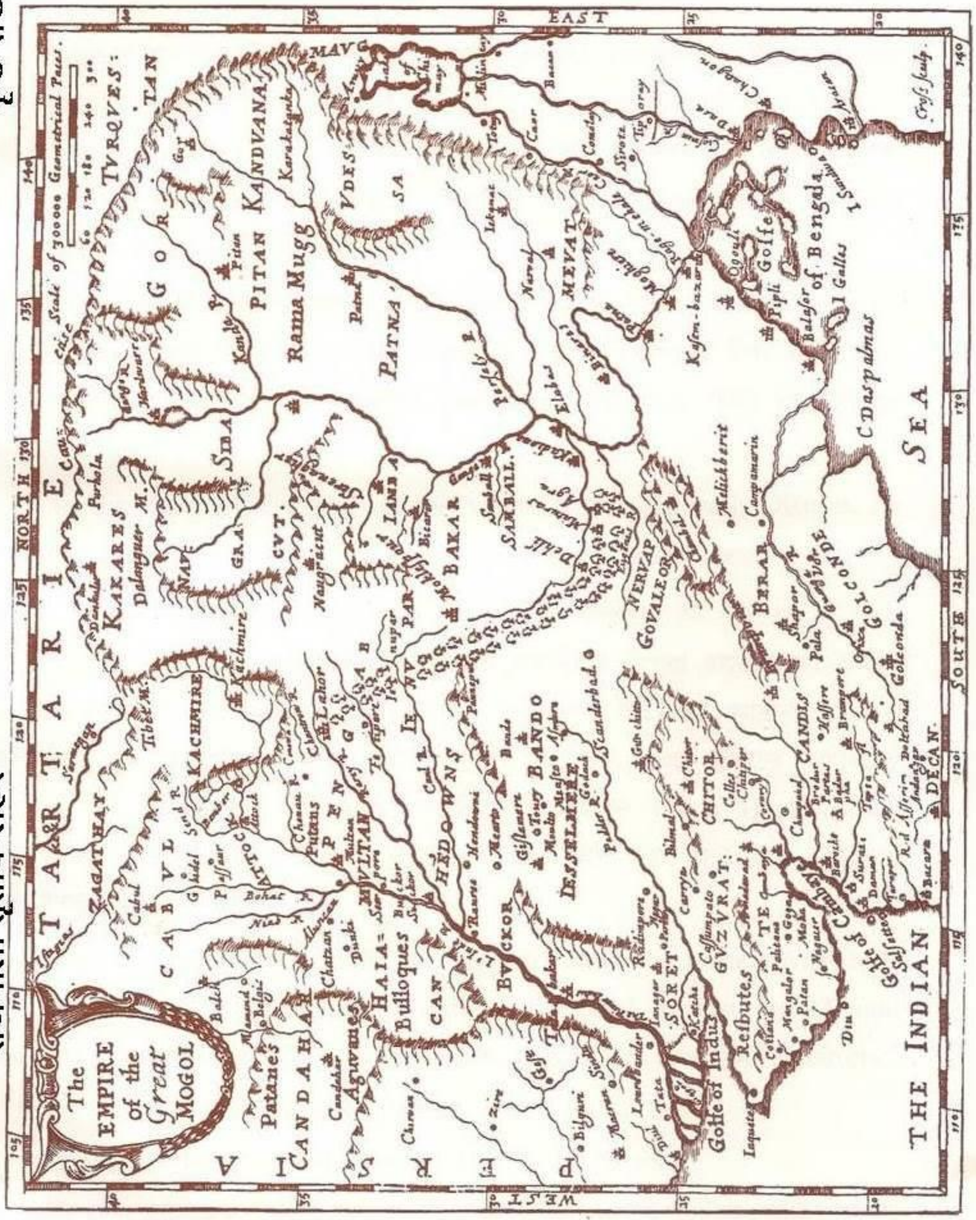
जैसे पहले कहा गया है परिवर्तन निवर्तन के फलस्वरूप राजमाला तृतीय लहर में लिपिबद्ध घटनाओं के समय त्रिपुर राज्य की सीमा बिखरकर जिस रूप में खड़ी थी, पहले के संयोजित मानचित्र के विश्लेषण से उसे अच्छी तरह समझा जा सकता है। वह मानचित्र वर्तमान प्रचलित नक्शे की सहायता से आँका गया है। बंगाल की खाड़ी का अवस्थान एवं उसके तटीय स्थानों की नियमित परिवर्तनशील अवस्था और नदियों के गति परिवर्तन इत्यादि विविध कारणों से बंगदेश के अभ्यन्तरीण स्थानों का भी हमेशा परिवर्तन हुआ है। फारसी भ्रमणकारी जाँन बेपटिस्ट टेवरनियर के (**John Baptista Tavernier**) के भ्रमण वृतांत में दिए गए मुगल साम्राज्य के मानचित्र (उत्तरापथ)से ज्ञात होता है कि तीन सौ साल पहले बंगाल की खाड़ी की अवस्था जैसी थी, वर्तमान समय में उसमें काफी परिवर्तन आए हैं। अविरत परिवर्तन के फलस्वरूप राजमाला तृतीय लहर में दी गई घटनाओं से उस समय बंगदेश का अवस्थान और अवस्था कैसी थी, यह निर्णय कर पाना दुःसाध्य है। मुख्यतः इसीलिए आधुनिक मानचित्र की सहायता लेने पर मजबूर हो गया। टेवरनियर के मानचित्र में राजमाला तृतीय लहर की समसामयिक अवस्था की एक झलक दिखाई देती है।

त्रिपुरा के हस्तच्युत प्रदेशों में कौन–कौन से स्थान, कब इस राज्य के हाथों से निकल गए, इस विषय में किसी स्थिर सिद्धांत पर पहुंचना एक दुरूह मसला है। एक–एक जगह बार–बार त्रिपुरा के अधीनता में आए और फिर हस्तच्युत भी हो गए और फिर कब से मुसलमान शासकों के अधीन हो गए, इसका निर्णय करना कठिन है। मानचित्र बनाते समय जहाँ तक संभव हो सका, इन सभी पारिपार्श्विक अवस्थाओं को मध्य–ए–नजर रखते हुए इसके विश्लेषण में किसी तरह यत्न की त्रुटि नहीं हो पाई है। किन्तु इस विषय में अनेक जगहों पर इतिहास नीरव है। इसलिए हमारी प्रचेष्टा फलवती हुई है, यह बात साहस के साथ नहीं कह सकता।

त्रिपुरा का शौर्य और स्वाधीनता की अवस्था मुसलमान शासन काल में त्रिपुर राज्य की अवस्था जैसी थी, उसकी आलोचना से ज्ञात होता है कि पठान शासन काल में त्रिपुरा का शौर्य और राजनैतिक गौरव अमोघ था। मुगलों के समय आत्मद्रोहिता, राजपरिवार के अनधिकारी व्यक्तिओं की राज्य हड़पने की लालसा और उस लालसा को चरितार्थ करने के लिए मुसलमानों की सहायता लेने के लिए नानाविध अवैध उपायों की सहायता लेना इत्यादि कारणों से राज्य का गौरव कुछ माने में कम हुआ था।

तृतीय लहर–**28**

चित्र (3)



দিল্লীর শাসনের প্রাচীন চিত্র।

<u>तृतीय लहर–29</u>

इस समय सामयिक रूप से राजा और राज्य की नाना तरह की दुर्गति घटने के निदर्शन भी मिलते हैं। किन्तु किसी भी समय कोई भी शक्ति राज्य की स्वाधीनता पर दखलंदाज नहीं कर सकी। त्रिपुर इतिहास और मुस्लिम इतिहास परित्याग कर एक मात्र अंग्रजों की उक्तिओं की आलोचना करने से भी इस विषय में ज्वलंत प्रमाण मिलेंगे। अंग्रेजों के राजत्व में भी त्रिपुरा की स्वाधीनता पर कोई हस्तक्षेप नहीं हुआ। इसका भी प्रमाण मिलता है। अंग्रेज लेखकों की कुछ उक्तियां राजमाला के द्वितीय लहर में प्रदान की गई हैं। पहले और इस समय की अवस्था की आलोचना के अभिप्राय से पुनः यह, उनका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है।

साम्राज्ञी एलिजाबेथ के शासन काल में राल्फ फिच (**Ralph Fitch**) राजदूत के रूप में चीन सम्राट के दरबार में भेजे गए थे। उन्होने ई. 1585 बंग देश के ऊपर से होकर जाते समय, त्रिपुरा की जिस अवस्था के दर्शन किए थे, **Sir Harry Johnston** ने इसे नीचे लिखे शब्दों में व्यक्त किया है।

"In the delta of Ganges, on the verge of the Tipperah District, he found the people not yet subdued by the Mughal Emperors."

Pioneers in India P. 163

इन उक्तिओं से पता चलता है, ई. सोलहवी सदी में त्रिपुरा राज्य गंगा के <u>ब–द्वीप</u> अर्थात गंगा के डेल्टा तक विस्तृत था एवं प्रबल प्रतिद्वन्द्वी मुगल साम्राज्य का प्रतिनियत आक्रमण को प्रतिहत करके अपनी स्वाधीनता गौरव को अक्षुण्ण रखने में समर्थ हुए थे। राल्फ फिच के आगमन के प्रायः अर्द्ध सदी के पश्चात् (1652ई में) पीटर हेलिन (**Peter Heyleyn**) ने इस राज्य के बारे में जो कुछ कहा है, उसका भी यहाँ उल्लेख करना संगत जान पड़ता है। उन्हीं की उक्ति :–

"Here is also the Kingdom of Tippura, naturally fenced with hills & mountains and by that means hitherto defended against the Mongul Tartars, their bad neighbours, with whom they have continual quarrels."

Bengal Past & Present (Oct 1907) India
Intra & Extra Gangem P.P. 50-51

इस उक्ति से पता चलता है कि त्रिपुरा राज्य सुरक्षित था और पर्वत प्राचीर से घिरा हुआ होने की वजह से दुर्दान्त मुगल वाहिनी के आक्रमण से अपने को बचाए रखा। किन्तु हमेशा उनसे लड़ते हुए ही अपनी स्वाधीनता को बरकरार रखना पड़ता था। यह सत्रहवीं सदी के मध्य–भाग की कहानी है। प्रबल पराक्रमी मुगल साम्राज्य के साथ प्रतियोगिता की रक्षा करना उस समय इतना सहज नहीं था। इस वाक्य के द्वारा त्रिपुरा के शौर्य–वीर का प्रकृष्ट परिचय हम पाते हैं।

तृतीय लहर–30

करमंडल उपकुल के ओलन्दाज गवर्नर, वानडिन ब्रोके **(Vanden Broucke)** ने जो लिखा है, उससे भी स्पष्ट भाषा में त्रिपुरा की स्वाधीनता को स्वीकार किया गया है। यह महाराज कल्याणमाणिक्य के शासन काल की कथा है। उस गवर्नर ने लिखा है।

"The countries of Oedapur and Tipera are sometimes Independent, sometimes under the Great Mogul and sometimes even under the King of Arakan"

Vanden Broucke

अठारहवीं सदी मे मेजर चार्ल्स स्टूयार्ट प्रणीत बंगला के इतिहास में भी त्रिपुरा के स्वाधीनता की घोषणा की गई है। स्टूयार्ट साहब की उक्ति का मूल मर्म है– मुसलमानों के बाहुबल से त्रिपुरा लुण्ठित और विजित होने पर भी प्रकृत रूप से इसकी स्वाधीनता विलुप्त नहीं हो सकी। त्रिपुरेश्वर स्वाधीन छत्र धारण और स्वनामांकित मुद्रा का प्रचलन कर रहे थे। त्रिपुरेश्वर ने मुरसिदकुली खाँ की विक्रम कहानी सुनकर उन्हे हाथी और गजदंतादि उपढ़ौकन प्रदान किया था। उस विनिमय के फलस्वरुप नवाव, त्रिपुरेश्वर को ''खेलात'' प्रदान किया था। तभी से हर साल नवाब और त्रिपुरेश्वर के बीच इसी तरीके से उपहार और ''खेलात'' आदि का आदान–प्रदान बराबर चलता रहा।(1)

यह आदान प्रदान कोई बाध्यता मूलक नहीं था। बन्धुत्व के संरक्षण के उद्देश्य से ही इस तरह का आदान प्रदान होता था। किन्तु इससे त्रिपुरेश्वर रत्नमाणिक्य का मानसिक दौर्बल्य सूचित होता था, यह बात बिना कहे रहा नहीं जाता। अतएव 1714 ई. में महाराज धर्म माणिक्य (दूसरे) सिंहासन पर बैठे। इनके शासन काल में बंगाल के नवाब के द्वारा

....

(1) **The Rajas of Tipperah Cooch Behar and Assam whose countries, although they had been overrun by the Mahammedan arms, had never been perfectly subdued and who therefore continued to spread the umbrella of Independence and to stamp the coin in their own names, were so impressed with the idea of the power and abilities of Moorshud Cooly Khan that they forwarded to him valuable presents, consisting of elephants, wrought and unworught ivory, musk, amber and various other articles, in token of their submission, in return for which the Nuwab sent them Khelaats or honorary dresses, by the receipt and putting on of which they acknowledged his superiority. This interchange of presents and compliments became an annual customs during the whole time of his government, without either party attempting to recede from or advance beyond, the implied line of conduct.**

Stewart's History of Bengal – Sect VI P.P. 421-422
(Bangabasi Edition)

तृतीय लहर–31

त्रिपुरा राज्य पर आक्रमण हुआ और समतल क्षेत्र पर विजय हुई। दूसरे युद्ध में महाराज धर्म, विजय प्राप्त करके हारे हुए प्रदेश का उद्धार करने पर भी, इस समय दोनों पक्षों में जो सन्धि हुई, उसके फलस्वरूप एकमात्र नूरनगर परगने के लिए त्रिपुरेश्वर को सालाना पच्चीस हजार मुद्रा कर देने पर मजबूर होना पड़ा था, किन्तु मुगल सम्राट के आदेश से यह कर नहीं देना पड़ा। यह रूपया सामरिक जागीर के नाम से छोड़ दिया गया। इस बारे में जो निदर्शन पाया जाता है वह नीचे दिया गया है।

"The son of Ram Manik Raja zeminder of Tipperah for a while appears to have been wholly shaken of the Mogul yoke virtually, being only liable to a nominal tribute of 25,000 Rupees for the perganah of Noornagar, which at the same time, was entirely remitted to himself, in the form of a military Jaigeer from the Court of Delhi.

Grant's view of Revenues of Bengal,
(Fifth Report P.P. 395-96)

इस राज्य के विषय में राजपुरूषों को कभी कभी अद्भुत कार्य करते देखा गया है। महाराज कृष्णकिशोर माणिक्य के राजत्व काल में (ई. 1834 में) चट्टग्राम के कमिश्नर ने इस मर्म का गवर्नमेन्ट के समक्ष एक रिपोर्ट किया कि त्रिपुरा राज्य ब्रिटिश राज्य का एक अंश विशेष है, अतएव इसे खास दखल में लाया जाय। लार्ड आँकलैण्ड बहादुर ने सम्यक अवस्था की आलोचना कर त्रिपुरा स्वाधीन राज्य होने के नाते कमिश्नर के प्रस्ताव को खारिज कर दिया। उनके आदेश में लिखा गया था।

The Raja has an Independent Hill Territory that your Propositions for its resumption are totally inadmissible..

Government letter to the Commissioner of
Chittagong Dtd 27th December 1838.

इसके द्वारा त्रिपुरा की स्वाधीनता स्पष्ट भाषा में स्वीकृत हुई है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा **"Statistical Papers Relating to India"** नामक ग्रंथ संग्रह किया गया। वह ई. 1853 में जन समाज में प्रचाारित किया गया है। कलकत्ता विश्वविद्यालय के अध्यापक पूज्यपाद महामहोपाध्याय श्रीयुक्त गुरूचरण तर्क–दर्शनतीर्थ महाशय ने उस ग्रंथ से त्रिपुर राज्य का अंश संग्रह कर श्रीश्रीयुत महाराज माणिक्य बहादुर के यहाँ प्रदान किए थे। श्रीश्रीयुत ने कृपा परवश होकर उसे राजमाला आँफिस को अर्पण किया था। उस ग्रंथ के 22 पेज पर त्रिपुरा की स्वाधीनता को

मुक्त कंठ से स्वीकारा गया है। महा महोपाध्याय महाशय के संग्रहीत विवरण को नीचे दे रहे है।

NATIVE STATES

Name - Tipperah

Locality - Eastern India, adjacent to Burmah

Area in square miles -7,632

Nature of connection with British Government – Independent.

Remarks - This District is hilly much covered with jungle and very thinly inhabited.

ई.1870 के चार मई के दिन (Pioneer) पायोनियर पत्रिका में त्रिपुरा के अक्षुण्ण स्वाधीनता की बात का उल्लेख कर जो बातें कही गई हैं, वह राजमाला के द्वितीय लहर के पूर्वाभाष में प्रदान किया गया है। यहाँ पर इसका पुनरूल्लेख नहीं किया गया है। मेकेंजी साहब ने भी मुक्त कंठ से त्रिपुरा के स्वाधीनता की घोषणा की है।(1)

इस विषय पर यहाँ पर और आलोचना करना असंभव हैं। जिन बातों का यहाँ उल्लेख किया गया हैं उसके द्वारा ही त्रिपुरा की स्वाधीनता का आभास मिलेगा। इस राज्य का और एक अम्लान गौरव यह है कि नाना तरह के विप्लव के जालों में फंसते हुए भी त्रिपुर राजशक्ति ने किसी के यहाँ नत मस्तक से संधि सूत्र में अपने को आबद्ध नहीं किया। इसके प्रमाण के लिए भी हम खुद अंग्रेजों की उक्ति पर निर्भर कर सकते हैं। 1862 ई. में मुद्रित "**Treaties Engagements and Sunnuds**" नामक ग्रंथ (**vol 1 P-77**) में लिखा है–

"The British Government has no treaty with Tipperah"

एक मात्र बाहुबल पर ही त्रिपुरा की स्वाधीनता की रक्षा हो रही थी। राजमाला द्वितीय लहर की आलोचना में इसका स्पष्ट प्रमाण मिलेगा। सुदूर अतीत बातों को छोड़कर भी ई सोलहवीं सदी की अवस्था के प्रति दृष्टिपात करने से भी इस राज्य के शौर्य वीर्य का परिचय मिलेगा। ई तेरहवीं सदी से ही इस राज्य के प्रति मुसलमान शक्ति के बढ़ते हुए कदम भी सोलहवीं सदी तक कुछ भी नहीं कर सके। सत्रहवीं सदी में मुगल शक्तियों को त्रिपुरा में अड्डा जमाने का सुयोग भी मिला, किन्तु फिर भी उस समय भी राज्य की कोई क्षति नहीं हुई। अठारहवीं सदी में मुगल, राज्य की क्षति करने में समर्थ हुए थे। इसकी सूचना ई. 1909 में प्रकाशित **Memoranda on Native States in India** नामक ग्रंथ के 354–55 के पन्नों में विस्तार से लिखा गया हैं। बाहुल्य भय से उसकी उद्धृति नहीं की गई।

---

(1) **North East Frontier of Bengal P.561**

तृतीय लहर–33

प्रदत्त विवरण के द्वारा मुस्लिम शासन काल में त्रिपुरा की स्वाधीनता और शौर्य कैसा था? यह जाना जायेगा और अंग्रेजों के समय की स्थिति की भी जानकारी होगी। अंग्रेजों के राजत्व में इस राज्य की हालत उत्तरोत्तर जिस तरह बदलती रही है, उसकी आलोचना हम यथा समय करेंगे।

बाणेश्वर के बारें में कुछ बातें

राजमाला प्रथम लहर के रचयिता पण्डित प्रवर बाणेश्वर और शुक्रेश्वर थे। ये दोनो भाई श्रीहट्ट के निवासी थे। यह बात प्रथम लहर के मध्य–भाग में कही गई है। फिलहाल सुहृदय श्रीयुत् नीलकृष्ण राय चौधुरी महाशय ने विश्वेश्वर भागवताचार्य प्रणीत 'जितेन्द्रिय मुक्त रामकृष्ण पाठक का जीवन चरित्' ग्रंथ से एक बाणेश्वर का विवरण संग्रह किया है। और इस बाणेश्वर और राजमाला के रचयिता बाणेश्वर को अभिन्न व्यक्ति समझकर नीलकृष्ण बाबू ने इस विषय पर हमें तथ्य प्रदान किया है। और उन्हीं के सौजन्य से उस जीवनी ग्रंथ की भी आलोचना करने की सुविधा मिली है।

उस ग्रंथ में बाणेश्वर के बारे में जो विवरण दिया गया है उसका असल मर्म यह है कि गौतम वंशीय गंगाकुमार या वैष्णवानन्द मिश्र यवन उत्पीड़न के डर से कान्यकुब्ज से कोटालीपारा के इलाके में जाकर रहने लगे। इनके वंशज हृदयानन्द आचार्य को ढाका के भीखनलाल पारक ने कोटालीपारा के इलाके से लाकर मन्दार गाँव में कुछ ब्रह्मोत्र भूमि देकर बसाया था। हृदयानन्द के पुत्र रामकृष्ण न्यायपंचानन, रामकृष्ण के रामजीवन न्यायवागीश और यादव विद्यालंकार नाम के दो पुत्र थे। यादव विद्यालंकार के राघवेन्द्र वैद्याचार्य, बाणेश्वर पाठक और रामशरण चक्रवर्ती नाम के तीन पुत्र थे। इसी बाणेश्वर को ही राजमाला की रचयिता कहकर नीलकृष्ण बाबू ने परिचय दिया है। बाणेश्वर अपना निवास स्थान त्यागकर कामाख्या पहुंचे और यहाँ पर ग्यारह सालों तक योग साधना में रत रहे। कहा जाता है कि हर पार्वती के दर्शन प्राप्त कर वे सिद्ध पुरूष हुए थे। इसके बाद उन्होंने देश लौटकर असाधारण विद्या और योग बल से प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होने इस समय के दक्षिण विक्रम पुर के राजनगर निवासी महाराज राज बल्लभ सेन राय राइया की पत्नी के षट् पंचमी व्रत के उपलक्ष्य में व्रत–कथा पाठ और उसकी व्याख्या कर विशेष पांडित्य के साथ पुराण पाठ द्वारा राज दरबार में विशेष प्रतिपत्ति प्राप्त किया था।

राजमाला के रचयिता बाणेश्वर के साथ इस बाणेश्वर के नाम में एकता पाई जाती है और उन्होने एक लम्बे अर्से तक कामाख्या में निवास किया था। इसीलिए नीलकृष्ण बाबू इन्हे राजमाला के रचयिता समझते रहे। आपात् दृष्टि में इस तरह की धारणा कोई अमूलक भी नहीं मानी जायेगी। किन्तु उनके पितामह को ढाका के भीखन लाल पारक ने आश्रय प्रदान किया था और उन्होने महाराज राज बल्लभ सेन की पत्नी को व्रत कथा

सुनाई थी। वह बाणेश्वर और महाराज धर्म माणिक्य के समय के (ई पन्द्रहवीं सदी) बाणेश्वर अभिन्न नहीं हो सकते। नीलकृष्ण बाबू की यह धारणा गलत होने पर भी उन्होने स्वतः प्रवृत्त होकर राजमाला सम्पादन की सहायता करने की मानसिकता के खातिर जिस सहृदयता का परिचय दिया है वैसा हमारे भाग्य में अब तक संभव नहीं हुआ है, इसके लिए नीलकान्त नीलकृष्ण बाबू का हम सर्वान्तःकरण से धन्यवाद ज्ञापन करते हैं।

यहाँ पर कहने योग्य और भी बहुत सी बातें थीं और इसकी आलोचना करने से पूर्वाभाष की कलेवर वृद्धि संगत नहीं जान पड़ती। आवश्यकता पड़ने पर परवर्ती लहर में यहाँ तक संभव आलोचना की जायेगी।

श्री कालीप्रसन्न सेन

<u>तृतीय लहर–35</u>

सूची पत्र

<u>तृतीय लहर–36</u>

<u>तृतीय लहर–37</u>

<u>तृतीय लहर–38</u>

चित्र सूची

मानचित्र

श्री राजमाला

(तृतीय लहर)

विषय – अमर माणिक्य से कल्याणमाणिक्य तक विवरण

वक्ता – पंडित–प्रवर गंगाधर सिद्धांतवागीश।

श्रोता – महाराज गोविन्दमाणिक्य
महाराज रामदेवमाणिक्य

रचनाकाल – ई. सप्तदश सदी का शेष भाग।

तृतीय लहर 01

ॐ सरस्वत्यै नमः
श्री राजमाला
तृतीय लहर
मंगलाचरण

वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।
आदावंते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते।।

प्रस्तावना

श्रीलश्री गोबिन्द माणिक्य पूण्यवान अति।	श्रीलश्री गोविन्द माणिक्य अति पुण्यवान।
ताहान तनय राम माणिक्य नृपति।।	तत् तनय नृप राम माणिक्य महान।।
सिद्धांतवागीश(1) द्वार पंडित पूरातन।	सिद्धांतवागीश(1) द्वार पंडित पुरातन।
ताहाने सम्बोधि राजा बोलिल तखन।।	निरखि उन्हे राजा करें संबोधन।।
जय माणिक्या बधि पूर्ब राजा यत।	जय माणिक्या पूर्व जितने नृपगण।
बंश श्रेणी राजमाला आछए लिखित।।	वंश श्रेणी आदि हैं राजमाला में कथन।।
तार पोरे यत राजा होइछे त्रिपुराते।	हुए पूर्व जितने भी त्रिपुरा नरपति।
तार सबार कि बा कीर्ति कहत आमाते।।	कहो मुझे उन सभी की थी कैसी कीर्ति।।
सिद्धांतवागीश कहे कोरो अबधान।	सिद्धांतवागीश कहें राजन करो अवधान।
जाहादेखी शुनियाछि बोलिब आख्यान।।	जो देखा या सुना है कहूंगा आख्यान।।

(1) सिद्धांतवागीश का परिचय परवर्ती टीका में मिलेगा।

तृतीय लहर 02

अमर माणिक्य खण्ड

जय माणिक्य राजा बधिल यखन।(1)	जय माणिक्य को जब किया निधन।(1)
अमर माणिक्य राजा बोइसे सिंहासन।।1	अमर माणिक्य राजा बैठा सिंहासन।।1
अमराबती महादेवी सति पतिमति।	अमरावती महादेवी सती पतिमति
तान गर्भे चारिपुत्र योग्यबान अति।। 2	गर्भजात उनके चार सुत योग्य अति।।2
राजदुर्लभ नारायण, राजधर धीर।	राजदुर्लभ नारायण, राजधर वीर।
अमर दुर्लभ नारायण, युझार सिंह बीर।।3	अमर दुर्लभ नारायण, युझार सिंह वीर।।3
चारि पुत्र नृपतिर पदबी नारायण।	नृप चार पुत्र यदवी नारायण।
सिंहासने बसे राजा अति सुशोभन।। 4	सिंहासना रूढ़ राजा अति सुशोभन।।4
पात्र मित्र मंत्रीगण रहे आगुसारि।	मात्र मित्र मन्त्रीगण रहे धरी अग्रसारि।
दुई पार्श्वे सैन्य सेना रहे अस्त्र धारी।।5	उभय पार्श्व सेना रहे अस्त्रधारी।।5
चतुर्दश देब बरे त्रिपुरार राजा।	चतुर्दश देव पूजें त्रिपुरा महाराजा।
राजा होइया धर्म चले ताके सहे प्रजा।।6	राजा से धर्म चले उसे सहे सारीप्रजा।।6
अमर माणिक्य राजा छिलो पुण्यबान।	अमर माणिक्य राजा महा पुण्यवान।
अमर सागर खनिबारे कोरे अनुष्ठान।।7	अमर सागर खनन हेतु करें अनुष्ठान।।7
मंत्री दुर्लभादि पुत्र छिलो बर्तमान।	मंत्री दुर्लभ आदि पुत्र वर्तमान।
मंत्रीबर्ग बिराजित(2) आदेश सेई स्थान।।8	मंत्री वर्ग बिराजित (2) आदेश वही स्थान।।8
अमर सागर दीघी बिस्तार कोरिया।	अमर सागर तालाब किया विस्तार।
खनाइबो बंग देशी दाड़ी(3) सब दिया।।9	खनाऊंगा बंग देशी(3) दाड़ीभर मार।।9

---

1. जय माणिक्य को वध करके अमर माणिक्य के राजा होने का विवरण द्वितीय लहर में दिया गया हैं।

2. मंत्रीबर्ग बिराजित –प्राचीन काल में राजा गण मंत्रिओं को लेकर प्रकाश्य दरबार में राज कार्य की परिचालना करते थे। त्रिपुरा के सनद और ताम्रशासन इत्यादि में ''कारकबर्ग बिराजते'' या ''कारकनबर्ग बिराजते'' वाक्य का व्यवहार चलता आया है। इसका ही अर्थ है ''मंत्री बर्ग बिराजित''। वर्तमान काल में ब्रिटिश गर्वणमेंट ने जो ''मंत्री सभाधिष्ठित'' **(Viceroy in Council)** शब्द का व्यवहार किया है उपरोक्त शब्द भी उसी के अनुरूप है।

3. दाड़ी –मृत्तिका खनने वालों को दाड़ी और उनके सरदारों का माझी नाम से बुलाया जाता था। चट्टग्राम और नोयाखाली प्रभृति इलाके में अभी भी ''माझी'' शब्द का व्यवहार है।

तृतीय लहर 03

राजार आदेश पाइया मंत्रीबर्ग कातो।	राजादेश पाकर मंत्री वर्ग सभी।
दीर्घिका खनने दाड़ी निखिलो सम्मतो।।(4)	खनन हेतु दाड़ी लागि लिखा पत्र तभी।। (4)
त्रिपुरा राजार आमोल बंगदेश जतो।	त्रिपुरा राज्याधीन बंग देश में जितने।
सब जमींदार प्रति दाडी लय कोतो।।	प्रति जमींदार दाड़ी मिले कितने।।
सेई मतो दाड़ी सब आसिलो तखन।	उसी तहत दाड़ी सभी आए तभी वहाँ।
अमर सागर दीघी(5) खोनिते आरंभन।।	अमर सागर जलाशय(5) खनन था जहाँ।।
आर दिन अमर माणिक्य राजा बोले।	कहा अगले दिन अमर माणिक्य राजन।
दीर्धिका खनिते दाड़ी केबा कोतो दिले।।	किसके कितने दाड़ी कहो हेतु खनन।।
सुबुद्धि नारायण हरिशचन्द्र तनय।	सुबुद्धि नारायण हरिश्चन्द्र तनय।
नृपति के संबोधिया कोहिछे निर्णय।।	नृपति सम्बोधि तब कहा निर्णय।।
बिक्रमपुर जमींदार चान्दराय नाम।	जमींदार विक्रमपुर नाम चान्दराय नाम।
सात शतो दाड़ी दिछे कार्य अनुपाम।।	सात सौ दिया दाड़ी कार्य अनुपम।।
बाकलार बसु दिछे सप्त शतो जन।	बाकला बसु दिया सप्तशत जन।
सईले गोयाल पाड़ा गाजी सप्तशत जन।।	सले गोयाल पाडा गाजी सप्तशत जन।।
भावालिया जमींदार दिछे हाजार जन।	जमींदार भावालिया एक हजार जन।
अष्टग्रामे दिछे दाड़ी पंचशत जन।।(6)	अष्ट ग्राम दिया दाड़ी पंच शत जन।।
बानियाचुंगेर दाड़ी आर पंच शत।	बानिया चुंग के हैं और पंचशत।
रण भावाल दाड़ी सहस्त्र सन मत।।	रण भावयाल दाड़ी हैं सहस्त्र ।।
सराइल इछा खाँ दिलो सहस्त्र जन।	इछा खाँ सराइल ने दी है सहस्त्र जन।
भुलूया दियाछे दाड़ी हाजार आपन।।	भुलूया ने दी है दाड़ी हजार स्वजन।।

---

(4) तालाब खनन के लिए दाड़ी (कुली) प्रेरण के लिए सम्मति पाने हेतु अर्थात कुली प्रेरण के लिए सभी को पत्र दिया गया।

(5) अमर सागर– यह विशाल जलाशय उदयपुर में है। यह महाराज अमर माणिक्य की एक समुज्जवल कीर्ति है। अमरपुर में इनके द्वारा खनन किया गया एक सागर, अर्थात विशाल जलाशय है

(6) पाठातंर –अष्टग्राम दिछे दाड़ी सप्त श तखन।। यह पाठ विशुद्ध नहीं है। कुल अंको को जोड़ कर देखने से पता चलता है कि पंचशत ही अभ्रांत है। प्राचीन राजमाला मे भी यही लिखा है यथा

"अष्टग्रामें दिछिलेक पंचशत पत्ति (अर्थात अष्टग्राम ने पाँच सौ कुलिओं की व्यवस्था की थी)

सप्त हाजार एक शत दाड़ीर निकाश।	सप्त सहस्त्र एक शत दाड़ी को निकाश।
कविचन्द्र पुत्रे(6) कोहे सुबुद्धि विश्वास।।	कविचन्द्र पुत्र(6)कहे सुबुद्धि विश्वास।।
केहो भोये केहो प्रीते केहो मान्ये दिलो।	कोई भय कोई प्रीति कोई मान्य वश।
बारो बांगालाय(7)दिछे तरपे(8)ना दिलो।।	बारह बंगला(7) दिया, तरप न दिया बस।।(8)
ए कोथा सुनिया राजा बोड़ो क्रोध होइलो।	सुनते ही राजा हुए क्रोधान्वित।
राज्येर निकटे राज्य आमा ग्लानि कोइलो(9)।।	पड़ोसी ने ही आज हमारी कर दी ग्लानी बर्द्धित।।(9)
राजधर राजपुत्र युद्धे नियुजिलो।	राजधर राज पुत्र युद्ध नियोजित।
बाइस सहस्र सेना तान संगे दिलो।।	बाइस हजार सेना उसके साथ आयोजित।।
जिकुआ ग्रामेते सैन्य कोठ बान्धि रोइलो।	जिकया ग्राम जहाँ सेना पड़ाव डाला।
मुछे लस्कर सैद्धि राम ताते धरा गेलो।।	सिद्धिराम मुछे लस्कर ने दोनो को पकड़ डाला।।
पिता पुत्र दुइजन पिंजरे भरिया।(10)	पिता पुत्र दोनों ही भरे पिंजरा में।(10)
उदयपुरे लइया गेलो त्वरित कोरिया।।	उदयपुर लाए गए त्वरित गति में।।
चन्द्र दर्प नारायण, चन्द्र सिंह आर।	चन्द्रदर्प नारायण, चन्द्र सिंह और।
छत्रजित नाजीर समर भीम जार।।	छत्रजित नाजीर समर के भीम।।
सौर राष्ट्र नारायण रणे एका गोनी।	सौर राष्ट्र नारायण रण में एक ही है नाम।
समर प्रताप नारायण खड़गते बाखानी।।	समर प्रताप नारायण का खड्ग में बखान।।

---

(6) सुबुद्धि नारायण का पूर्व पृष्ठ में ''हरिश्चन्द्र तनय'' और पुनः यहाँ पर ''कविचन्द्र पुत्र'' कहा गया है। इससे सुबुद्धि के पिता का प्रकृत नाम निर्णय करना सन्देहास्पद हो सकता है। हरिश्चन्द्र की कविचन्द्र उपाधि थी। प्राचीन राजमाला के आलोचना से इसका पता चलता है। उसमें लिखा गया है–

सुबुद्धि नारायण से जे विश्वास प्रधान।
सर्व शास्त्रे विशारद दस अबधान।।
अनर्गल कबि हरिश्चद्रेर नन्दन।
कहिबारे लागिल दाड़ीर बिबरण।।

(अर्थात, सुबुद्धि नारायण सबसे ज्यादा विश्वासी थे। सभी शास्त्रों के ज्ञाता थे। अनर्गल (लगातार) कविता कह सकते थे हरिश्चन्द्र नन्दन। दाड़ी के (कुली) बारे में कहने लगे।)

(7) बार बांगला – बारह भूइयाँ के द्वारा शासित बंग देश का बारह विभाग।

(8) तरप –श्रीहट्ट के अंतर्गत एक परगना। प्राचीन काल में यह एक स्वतंत्र राज्य था।

(9) कोइलो – किया।

(10) प्रतिपक्ष द्वारा पकड़ा जाने पर उसे पिंजराबद्ध अवस्था में राज दरबार में उपस्थित करने का नियम था। राजमाला के द्वितीय लहर में इसका विवरण मिलता है।

तृतीय लहर 05

रणगिरि नारायण अशेष प्रताप।	रणगिरि नारायण अशेष प्रताप।
रण भीम नारायण शत्रुर संताप।।	रण भीम नारायण शत्रु संताप।।
रणयुझार नारायण रणे महाबीर।	रणयुझार नारायण रण में महावीर।
बीरझंप नारायण विक्रम शरीर।।	वीरझंप नारायण विक्रम शरीर।।
गजझंप नारायण थाके साबोहित।	गजझंप नारायण रहते साथ सदा।
पिता पुत्र बीरदर्प कोरेन बिहित।।	पिता–पुत्र वीरदर्प करें, कहें शौर्यगाथा।।
सैन्य समें चलिलेक अर्जुन नारायण।	सैन्य साथ चले अर्जुन नारायण।
हरिचक्र नारायण विक्रम परायण।।	हरिचक्र नारायण बिक्रम परायण।।
गजसिंह नारायण सिंह पराक्रम।	गजसिह नारायण सिंह पराक्रम।
त्रिविक्रम नारायण रणे कोरे श्रम।।	त्रिविक्रम नारायण करें रण श्रम।।
प्रताप सिंह नारायण बीर आगुसारी।	प्रताप सिंह नारायण सिंह पराक्रम।
शत्रुमर्दन नारायण बिक्रमे केशरी।।	शत्रुमर्दन नारायण विक्रम केशरी।।
चन्द्रहास नारायण देखिते सुन्दर।	चन्द्र हास नारायण देखत सुन्दर।
सुप्रताप नारायण दर्प बहुतर।।	सुप्रताप नारायण दर्प अतितर।।
हिंगल नारायण होइतन नाम आर।	हिंगल नारायण था नाम एक और।
रणसिंह नारायण रणे शोभा जार।।	रण सिंह नारायण रण शोभा चहुंओर।।
आशाबंत नारायण बीरसिंह सार।	आशावंत नारायण बीर सिंह सार।
समर बीर नारायण प्रताप अपार।।	समर वीर नारायण प्रताप अपार।।
एइ सब सेनापति रणे विचक्षण।	ये सभी सेनापति रण विचक्षण।
जार भये कम्पे नित्य बंग सेनागण।।(11)	काँपे नित्य जिनके भय बंग सैन्यगण।।(11)
इत्यादि कोरिया तारा शत सेनापति।	इसी तरह जुटे आन शत सेनापति।
त्रिपुरेर सैन्य चले राजधर संगति।।	त्रिपुर की सेना चले राजधर संगति।।
बांगालीर सेनापति आर कोतो जन।	बंगाली सेनापति और कितने ही जन।
ताहाते प्रधान चले प्रताप नारायण।।	प्रताप नारायण चले उनमें प्रधान।।
दुई हाजार ढालि चले नूपूर पोरिया।	दो हजार ढाली चले घुँघरू पहन।
जाठी खड़्ग चर्म धारी धनुर्बाण लोइया।।	चले जाठी खड्ग चर्मधारी लिए घनुर्बाण।।

---

(11) इस समय भी त्रिपुरा का दोर्दण्ड प्रताप था। बंगेश्वर के साथ समर क्षेत्र में अनेक बार त्रिपुरेश्वर की शक्ति परीक्षा हो चुकी थी।

तृतीय लहर 06

गरूड़ नारायणे(12) करे गरूड़ेर ब्युह(13)।
राजधर नारायण सैन्येर समूह।।
गरूड़ाकृति एक ब्युह निर्माइलो।
जेइ स्थाने जेइ योद्धा सेइ स्थानो दिलो।।
चंचु देशेते दिलो एक सेनापति।
दुइ सेनापति कोरे मस्तकेते स्थिति।।
ग्रीबा निर्माइलो तार शत सेना दिया।
उदर निर्माण ताते सैन्य अपेक्षिया।।
हस्ती घोड़ा सेइ स्थाने दिलेक बिस्तर।
दुइ सेनापति तथा रहे निरंतर।।
ताहार सहित सैन्य रहिलो निर्जने।
स्थाने स्थाने अश्व गज करिलो संस्थाने।।

गरूड़ नारायण(12) रचें गरूड़ व्यूह(13)।
राजधर नारायण मध्य सैन्य समूह।।
गरूड़ा कृति एक व्यूह रचाया।
जहाँ जिसे, वहाँ उसे सजाया।।
चोंच जहाँ खड़ा वहाँ पर सेनापति में एक।
सुशोभित हैं सेनापति दो, व्यूह मस्तक देख।।
ग्रीवा बनाया शत सैन्य लगाकर।
उदर निर्माण उसका सैन्य सजाकर।।
हस्ती घोड़ा वहाँ खडे बहुतेरे।
सेनापति दो वहाँ रहें निरंतर।।
उन संग सैन्य रही निर्जन।
ठौर ठोर पर किया अश्व गज संस्थान।।

....

(12) यह सेनापति गरूड़ व्यूह रचना में पारदर्शी थे, इसलिए गरूड़ नारायण उपाधि प्राप्त किए थे।

(13) राजाओं के युद्ध के समय स्थान भेद से और आवश्यकतानुसार सैन्य विन्यास करने को व्यूह कहा जाता है। शब्द रत्नाकर में लिखा है

समग्रस्य तू सैन्यस्य विन्यासः स्थान भेदतः।
स व्युह इति विख्यातो युद्धेषु पृथिवीभूजाम्।

महाभारत, अग्निपुराण, शुक्रनीति, नीति मयूख, कामन्दकीय नीति, मनुसंहिता इत्यादि नाना ग्रंथो में व्यूह रचना का विवरण लिखा गया है। दंड, भोग, मंडल, असंहत, शकट, बराह, मकर, गरूड़, पद्म, वज्र, श्येन, शुची, अर्द्धचन्द्र, सर्वतोभद्र इत्यादि बहुत से व्यूहों की कथा ऊपर लिखे ग्रंथों में मिलता है। यहाँ पर उनकी सम्यक आलोचना असंभव हैं। एक मात्र गरूड़ व्यूह की ही बात यहाँ कही गई है। मनुसंहिता के मतानुसार–

दण्ड ब्युहेन तन्मार्गं यायात्तू शकटेन वा।
बराह मकराभ्यां या शुची वा गरूड़ेन वा।।
यतश्च भयमाशंकेत् ततो विस्तारयेद्वलम्।
पद्मेन चैव व्युहेन निविशेत सदा स्वरम्।।

मनु 7/187–8

युद्ध यात्रा के समय सामने या पीछे भय का कारण होने पर गरूड़ व्यूह रचना करने की व्यवस्था है। अग्नि पुराणोक्त दश विधि व्यूहों में सबसे पहले गरूड़ व्यूह रचना का उल्लेख है।

महाभारत, भीष्म पर्व के 56 अध्याय की आलोचना से ज्ञात होता है कि द्वितीय दिवस के कुरुक्षेत्र युद्ध में वीराग्रगण्य भीष्म देव ने गरूड़ व्यूह की रचना की थी।

तृतीय लहर 07

दुइ सेनापति दुइ पदेर ऊपर।	दो सेनापति दो पद उपर।
राजधर सैन्य समे माझे शशधर।।	राजधर सैन्य सह मध्य शशधर।।
एइक्रमे चलिलेक श्रीहट्ट युद्धेते।	यही भाँति चले श्रीहट्ट युद्ध की ओर।
नौका पथे चलिलेक इछा खाँ सहिते।।	चले नाव पथ इछा खाँ संग सहचर।।
अमर माणिक्य आज्ञा पाइया तखन।	अमर माणिक्य आज्ञा पर तक्षण।
इछा खाँ सहिते चले बंग सेना गण।।	इछा खाँ साथ चले बंग सेना गण।।
शुरमा उजाइया नौका श्रीहट्टेते गेलो।	पहुँची सेना श्रीहट्ट नावों से शूर चले।
फते खाँ पाठान संगे पूर्बे युद्ध दिल।।(14)	फते खाँ पठान संग जंग छिड़ गया पहले(14)।।
पंचशत घोटक सैन्य पाठान कर्कश।	पंचशत अश्वारोही पठान कर्कश।
समर बिजयी सैन्य बान्धिया तर्कश।।(15)	समर विजयी सैन्य बाँधे अपने तर्कश(15)।।
युद्ध हेतु सैन्य सब शुर्मा पार होइलो।	युद्ध हेतु सभी सेनाएं शुरमा पार हुई।
गोधा रानी ग्रामें गिया युद्ध आरंभिलो।।	गोधा रानी गाँव जहाँ पर पहले मची लड़ाई।।
अल्प पाठान सैन्य त्रिपुर बहुतर।	अल्प पठान और त्रिपुर विशाल।
हस्ती दिया पाठान सैन्य मारये बिस्तर।।	लगा मारने पठान हाथी पद–तल डाल।।
बान्ताउ नामे हस्ती महा बेगबान।	बान्ताउ नाम हस्ती एक महा वेगवान।
हस्ती बेगे शत्रु सैन्य गेलो नाना स्थान।।	हस्ती वेग देखि भीत सैन्य भागे दूर स्थान।।
ऐराजित नारायण जातीये त्रिपुर।	एराजित नारायण जातीय त्रिपुर।
सेइ गज कंधे(16) छिलो जेना मत्तशुर।।	वही गज स्कन्धारूढ (16) जैसे मत्तशूर।।

---

(14) इस समय सैयद मूसा के पुत्र सैयद आदम नामक कोई एक मुसलमान तरप का अधिपति था। तरप के शासक गण दिल्ली सम्राट के साथ सम्पर्क स्थापित करने पर भी प्रत्यक्ष रूप से ये लोग त्रिपुरेश्वर के प्रभाव की कभी उपेक्षा नहीं कर सके। आदम के अमर सागर खनन हेतु मजदूरों को न भेजने से अमर माणिक्य ने तरप आक्रमण किया था। इस समय सैयद आदम ने कोई उपायान्तर न देख श्रीहट्ट के पठान शासक के यहाँ आश्रय ग्रहण किया। इस लिए पठानों के साथ त्रिपुरेश्वर का युद्ध हुआ था। त्रिपुर वाहिनी ने अल्प प्रयास में ही युद्ध जीत लिया और मुसलमान शासनकर्ता फते खाँ को बन्दी बना लिया था। इस समय मुछे लस्कर और सैद्धिराम नामक दो व्यक्तिओं को भी पकड़ा गया था। मुछे लस्कर को सैयद आदम के लड़के रूप में ही जाना जाता है। क्योंकि आदम मुसलमान शासन कर्ता के शरणापन्न होने पर त्रिपुर वाहिनी के हाथों उनका पुत्र पकड़ा गया था, इतिहास के आलोचना से यह बात जानी जाती है। कैलास बाबू की संगृहिता राजमाला द्वितीय भाग, छह अघ्याय और श्रीहट्टेर इतिहास द्वितीय भाग, द्वितीय खण्ड पंचम अघ्याय देखा जा सकता है।

(15) तर्कश – जिन।

(16) कंधे – स्कन्धे।

तृतीय लहर 08

पंचशत सोवार छिलो पाठान दुर्बार।	पंच शत सवार थे पठान दुर्दांत।
ताहाके टोयाय(17) हस्ती मारिते सोवार।।	दौड़ाया(17) हाथी, करने सवारों का अंत।।
चारि पार्श्वे वेष्टित जे पाठान सत्वर।	चारों ओर वेष्टित हुए पठान सत्वर।
तीरेते सर्वांग भेदे गज कोलेबर।।	तीरों से सर्वागं भेदते गज–कलेवर।।
त्रिपुर सेनाये युद्ध देखाय ताहाय।	त्रिपुर सेनाएं दर्शाई युद्ध भयावह।
एक हस्ती कोरे रण ऐराबत(18) प्राय।।	एक हस्ती करे रण ऐरावत(18) तरह।।
ताजि तूरकी घोटक(19) सोबारेर गण।	ताजी तुरकी अश्वारूढ(19) थे सवार सभी।
हस्तीके बिन्धिलो तीरे सोकोले तोखोन।।	हाथी को छेदा तीरों से उन सभी ने तभी।।
माहुतेर आंगा जिरा(20)कबच(21)भेदे तीरे।	भेदने लगी तीर अंग(20) रक्षा कवच(21) महावत के।
तिलमात्र छिद्र नाही सोकोल शोरिरे।।	तन पर नहीं कहीं चिन्ह बिन्दु महावत के।।
मध्यान्ह सोमये युद्ध दुइदण्ड छिलो।	मध्यान्ह काल युद्ध रहा केवल दो घंटों तक।
श्रम युक्त माहुतेर पिपासा जन्मिलो।।	प्यासा श्रम कातर महावत रणभूमि बीच घंटो तक।
हस्ती खाड़ा कोरि कोहे पाठानेर स्थान।	हस्ती रोक कहा माहुत ने पठानों के उस स्थान।
जल तृष्णा बहु होइछे स्थिर नहे प्राण।।	जल तृष्णा से हूँ कातर स्थिर नहीं प्राण।।
पाठाने बोलिलो माहुत मिलो आमा स्थान।	कहा पठान, महावत तुम अभी हमारे स्थान।
मिलिले जल दिबो पाइबा सन्मान।।	पानी मिले, और मिले सम्मान।।
हस्ती बोइठाइया माहुत कोरे जलपान।	बैठाकर हस्ती को महावत ने किया जलपान।
हस्तीके खावयाय जल कोरिया सन्धान।।	हाथी को भरपेट पिलाया कर जल का सन्धान।।
माहुतेरे एइ लोभ देखाय पाठान।	महावत को यह लोभ जताया दुष्ट पठान।
सुवर्ण रजत वस्त्र देखाइ विद्यमान।।	स्वर्ण रजत वस्त्र दिखाया कुटिल भरी मुस्कान।।

---

(17) टोयाय – झोक बैठाना या दौड़ाना

(18) ऐराबत – यह हाथी श्वेत वर्ण की हे ओर इसके चार दाँत हैं। समुद्र मंथन के समय इसकी उत्पति हुई। यह हाथी देवराज इन्द्र का वाहन है। विष्णु पुराण में लिखा है–

''इत्युक्ता प्रययौ विप्रो देवराजोऽपि तं पुनः
आरूहैयरावतं ब्रम्हण प्रययावमरावतीम्।।'' विष्णु पुराण 1/9/25

(19) ताजि तुरकी घोटक – तुरक देशीय बलवान घोड़ा।

(20) आंगा जिरा – अंग रक्षक या अंगरखा। युद्ध के समय शरीर रक्षार्थ पहनने कपड़े (कुर्ती)

(21) कवच – वर्म। स्वर्ण, रौप्य, ताम्र अथवा लौह द्वारा वर्म तैयार किया जाता था। युद्ध के समय अंग रक्षार्थ इसका व्यवहार होता था।

तृतीय लहर 09

हाथी समे(22) मिलिले सेइ सब दिबो।	हाथी साथ(22) आने पर ये सभी दे दूंगा।
सकल प्रधान तोके एखने कोरिबो।।	सबमें प्रधान तुझे तक्षण करूंगा।।
एबोलिया पाठान सब माहुतके बोले।	ये बातें सारी पठान ने कहा माहुत को।
जल पाने ऐराजितेरे श्रम दूर होइले।।	जल पान से हुआ श्रम दूर मिलीराहत ऐरावत को।।
उलटिया हस्ती टोयाय पाठानेर उपर।	पलट दौड़ाया हाथी पठानों के उपर।
बेगेते हस्तिनी जाय सैन्येर भीतर।।	वेगवान हस्तिनी दौड़ी सेना के भीतर।।
राजधर नारायण माहुतेर माथे।	माहुत के साथ बैठे राजधर नारायण।
इनाम(23) बान्धिया दिलो सेइ तो युद्धेते।।	बाँध दिया उन्होने ही जंग में इनाम(23)।।
पोरेते पाठान सभे एकत्र होइया।	हो गए बामें पठान सभी इकठ्ठे।
चलना नामेते हस्ती सैन्य आगे गिया।।	चलना नाम हाथी आया सेनाओं के आगे।।
युद्धु करे पाठान सब समर माझार।	युद्ध करें पठान सभी रणांगन अपार।
ताहा देखि क्रोध होय राजधर कुमार।।	यह देख क्रुद्ध हुए राजधर कुमार।।
राजधरे चन्द्रबाण(24) लोइलो सत्वर।	राजधर ने चन्द्रबाण(24) तान दिया सत्वर।
दस चन्द्रबाण एड़े(25) पाठान उपर।।	दस चन्द्रबाण छूटे(25) पठानों के उपर।।
चन्द्रबाण प्रज्जवलित हूहूंकारे जाय।	करता हूंकार छूटा प्रज्वलित चन्द्रबाण।
दैबगति चन्द्रबाण पोड़े हस्ती गाय।।	दैवगति चन्द्रबाण छूटा गजदेह संधान।।
हस्तीये चीत्कार दिया सैन्य मध्ये पोड़े।	चिग्धाड़ हस्ती मध्य जहाँ सैन्य सारे।
भंग दिल पाठान सैन्य प्राण भय डरे।।	रण–भंग दे भगे पठान प्राण भय मारे।।
युद्धे भंग दिया गेलो पाठान सकल।	रण–भंग पठान भागे टिक न सके वहाँ।
सुरमा दक्षिण बन्दे(26) राजसैन्य बल।।	सुरमा दक्षिण सीमा(26) मध्य राजसैन्य जहाँ।।
सेइ स्थाने गड़ बान्धि राजधर नारायण।	वहीं गढ़ मोची बाँधे खढे राजधर नारायण।
भयेते पाठान सैन्य करिलो मिलन।।	भीत पठान सैन्य ने किया वहीं मिलन।।
फते खाँ सहिते पाठान शरणागत होय।	फते खाँ के साथ पठान हुए शरणागत।
सेइ तो समरे राजधर युद्धे कोरे जय।।	यही तो राजधर हैं जिन्होने युद्ध लिया जीत।।

(22) समे – सहित, सह।
(23) इनाम – पुरूस्कार
(24) चन्द्रबाण– चन्द्राकृति फल युक्त तीर।
(25) एड़े – छोड़ा गया, फेंकना।
(26) दक्षिण बन्द– दक्षिण सीमा के अंतर्वर्ती।

तृतीय लहर 10

तारपर राजधर श्रीहट्टेते गेलो।	श्रीहट्ट गए इसके बाद वीर राजधर।
आदि नामे(26) एक दीधि सेइस्थाने दिलो।।	आदि नाम(26) से खनाया एक तालाब वहां पर।।
श्रीहट्टेर मुनारा(27) उच्च अर्ध भांगा छिलो।	श्रीहट्ट का उच्च स्तंभ(27) या आधा टूटा हुआ।
श्रीहट्ट बिजयी बोलि मोहर मारिलो।।	श्रीहट्ट विजयी कह कर मोहर वहाँ लगाया।।
पनर श चारि शाक पौष मास शेषे।	पन्द्रह सौ चार शक पौष माह अंत।
माधेर पनर दिने फते खाँ लोइया आसे।।	माध के पन्द्रह दिन लाया फते खाँ को संग।।
राजधर चलिलो दुलाली ग्राम पथे।	राजधर चले दुलाली गाँव की राह।
इटा ग्राम होइया ऊनकोटि (28) तीर्थे।।	इटा गाँव होकर चले तीर्थ उनकोटि(28) की चाह।।
स्नान दान कोरे तथा राजधर नारायण।	स्नान दान किए वहाँ राजधर नारायण।
उदयपुर चलिलेक कोरि शुभक्षण।।	उदयपुर चले फिर देखि शुभक्षण।।
सात दिन होइलो पथे आइसे राजधानी।	सात दिन बीता पथ में आए राजधानी।
फते खाँ पठान संगे राजधर आपनी।।	फते खँ पठान संग लाया राजधर अपने।।
उदयपुर चले फिर देख शुभ क्षण।।	उदयपुर चले फिर देख शुभ क्षण।।
फते खाँ राजार संगे साक्षात कोरिलो।	किया साक्षात फते खँ ने वहाँ राजासंग
महाराज फते खाँ के बहुआ आश्वासिलो।।	महाराज ने दिया फते को बहु आश्वासन
दयावंत नारायण राजार जामाता।	जमाइ नृपति के दयावंत नारायण।
तार बामें इछा खाँ के बोसाइलो (29) तथा।।	उनकी बाई ओर बैठाया(29) फते का सम्मान।।

---

(26) पाठान्तर (क) राजधर नारायण श्रीहट्टेते गेलो।
आदि नाम से दीधि दिया होम कराइलो।। प्राचीन राजमाला
(ख) राजधर नारायण श्रीहट्टे गेलो।
आदि राजधर नामे दीर्धिका दिलो।।
राजाबाबू की राजमाला।

इससे यह पता चलता है कि खने गए पोखरे का नाम था "आदि राजधर सागर"। यह जलाशय अब भी है और सेनापति (बाद में राजा) राजधर की विजय घोषणा कर रहा है।

(27) मुनारा– स्तंभ।

(28) उनकोटि तीर्थ – यह तीर्थ कैलाशहर विभाग में स्थित है। राजमाला पहली और द्वितीय लहर में इसका विवरण दिया गया है।

(29) पाठांतर – शुभ दिने मिलाइलो फते खाँ पाठान।
हस्ती घोड़ा दिलो राजा बोसिबारे स्थान।।
दयावंत नारायण प्रधान जामाइ।
तार पाछे बोसिबारे दिलेक देखाई।।

उपरोक्त पाठ में "इछा खां" लिखा गया है उनकी जगह में "फते खां" होगा। लिपिकार ने प्रमादवश ऐसा किया है।

तृतीय लहर 11

एइमते कोतो दिन राजधानी छिलो।	इसी तरह राजधानी में रहा कुछ दिन और।
अमर माणिक्य तारे सन्माने राखिलो।।	अमर माणिक्य ने भी रखा सादर अपने ठौर।।
पंचास घोटक राखे योगाने ताहार।	पचास अश्व सदा सवारी तत्पर।
सेनापति संगे बोइसे मान्य फते खाँर।।	सेनापति साथ बैठे फतेखां मान्यवर।।
एक हस्ती पंच घोड़ा नाना बस्त्र दिया।	एक हस्ती पाँच अश्व नाना वस्त्रों साथ।
फते खाँ बिदाय कोरे मर्यादा कोरिया।।	फते खाँ को विदा किये मान सहित महाराज।।
उदयपुर होते खाँ श्रीहट्टे आसिलो।	उदयपुर से खाँ जब श्रीहट्ट आया।
सेइ काले मुछे लस्कर छाड़िया जे दिलो।।	मुछे लस्कर को तभी छोड़ दिया।।
सेइ कालेते अमर माणिक्य नृपति।	उस समय अमर माणिक्य त्रिपुरा अधिपति।
बंगेर सकल प्रजा बश होइलो अति।।	सारी बंग प्रजा ने वश्यता जताई प्रणति।।
चौद्द श उनशत शके अमरदेब राजा।	चौदह सौ निन्यानवे शक अमरदेव राजा।
पनर श शके भुलूया आमल कोरे महातेजा।।	पंद्रह सौ शक भुलूया राजा महातेजा।।
दुर्लभ नारायण नाम सुर जमींदार।	दुर्लभ नारायण नाम सुर जमिंदार।
नृप मान्ये बोसे से जे भुलूया माझार।।	नृप सम बन बैठा भुलूया दरबार।।
पूर्व पुरूष तार त्रिपुर संगे मिले।	पूर्व पुरूष थे उसके त्रिपुर राज साथ।
सेइ नाहि मिले उदय माणिक्य राज्यकाले।।	वही नहीं मिला कभी उदय माणिक्य राज।।
उदय माणिक्य होइलो राजबंश बधि।	उदय माणिक्य हुआ नृप, कर वध राजवंश।
दुर्लभ नारायण नामिलिलो अहंकारबादी।।	दुर्लभ नारायण नहीं मिला अहंकार वश।।
राजवंश मारिया तुमि उदय माणिक्य।	राजवंश वध कर तुम उदय माणिक्य।
आमिओ भुलूया राजा तुमि समकक्ष।।	मै भी भुलूया राज हूँ तब समकक्ष।।
दूत मुखे सुनि उदय माणिक्य क्रोध होइलो।	दूत मूंह सुनकर उदय माणिक्य हुआ क्रुद्ध।
कोरिते ना पारे किछु यूझिबार बल।।(30)	कुछ भी न कर सका तैयारी हित युद्ध(30)।।
अमर माणिक्य राजा जखोने होइलो।	अमर माणिक्य हुआ राजा जब।
दुर्लभ नारायण प्रति नृपति लिखिलो।।	दुर्लभ नारायण को लिखा पत्र तब।।
अहंकारे पूर्ण से जे भुलूया माझार।	अहंकर वश वह बैठा भुलूया दरबार।
नृपतिर पत्र उत्तर लिखे पुनर्बार।।	नृपति पत्रोतर वह लिखा पुर्नवार।।

---

(30) पाठांतर में है – हेनो सुनि उदय माणिक्य क्रोधे ज्वले।
कोरिते नापारे किछु जूझे गौड़ बोले।।

तृतीय लहर 12

विजय माणिक्य राजार जमिदार आमि।	विजय माणिक्य राजा के जमींदार हैं हम।
से राजार बड़ुआ होइया राजा होइला तुमि।।(31)	उस राजा का बड़ूया होकर अब राजा बने हो तुम(31)।।
तार पत्र समे आसि कोहिलेक दूत।	पत्र के साथ सारी बातें आकर कह दिया दूत।
ताहा सुनि नरपति क्रोधे अद्भुत।।	सुनते ही उसकी बातें सारी राजा हो उठे क्रुद्ध।।
सेइ क्षणे आज्ञा दिलो ससैन्ये साजिते।	तक्षण ही दिया आदेश ससैन्य सजधज की।
छत्रिस हाजार सैन्य चलिलो युद्धेते।।	चली छत्तीस हजार कतार उस फौज की।।
आपोने चलिलो राजा चारि पुत्र संगे।	स्वयं चले नृप चार तनय के साथ ।
भुलूया चलिलो राजा युद्धे मनोरंगे।।	भुलूया चले नृप युद्ध करने हित मन में हर्ष अपार।।
सिंहसरब नारायण उजिर प्रधान।	सिंह सदृश चले नारायण बजीर प्रधान।
छत्र नाजिर नृप–शाला जानेन सन्धान।।	छत्र नाजीर नृप–साला जाने सन्धान।।
शुभक्षणे नरपति चलिलो जखन।	देखि चले नरपति शुभक्षण।
जाइते पोथेते नृपे देखिलो स्वपन।।	देखा पथ में स्वप्न विलक्षण।।
अभया देबीये(32) स्वप्ने नृपतिके कहे।	कहा स्वप्न में नृपति से देवि(32) अभया ने।
देबि पूजा दिया युद्ध जय कोरो ताहे।।	दे पहले ही देवि पूजा, जीतो रण क्षण में।।
पूजा दिया नरपति भुलूआते गेलो।	नृपति गए भुलूआ, देकर देवि पूजा।
भूलूआ लूठिल सैन्ये जेबा जेइ पाइलो।।	जिसे जहाँ जो मिला भुलूआ को सेना ने लूटा।।
दुर्लभ राय तीन शतो घोटक सैन्य लोइया।	तीन सौ अश्वारोही लेकर आया दुर्लभ राय।
पाठान चाकर राखि जूझिलो आसिया।।	रखकर पठान नौकर रण में कूदा धाय।।
नृपतिर सैन्य ताके घिरिलो सत्वर।	राज सेना ने आकर सबको घेर लिया सत्वर।
भंग दिलो पाठान सैन्य घोड़ार उपर।।	भाग चली पठान सेनायें घोड़ो पर चढ कर।।
एक द्विज चड़े तार हस्तिर उपर।	एक द्विज चढ़ कर आए अपनी हस्ती पर।
दुर्लभ राय ज्ञाने मारे, मरे द्विजबर।।	दुर्लभ राय भ्रमवंश होकर मार दिया द्विजवर।।

---

(32) पाठांतर विजय माणिक्येर जमिदार आमि।
बड़ूया आछिला तान आपनेहो तुमि।।

सेनापतिओं में नाना तरह की उपाधिओं में "बड़ूआ" उपाधि भी प्रचलित थी। महाराज अमर पहले सेनापति (बड़ूआ) पद पर नियुक्त थे। बाद में राजत्व प्राप्त किया।

(33) खंडल परगना के अंतर्गत शिलनीया नदी के किनारे अब भी अभया देवी विद्यमान है। शिलनीया के उत्तरांश में इसी देवी के नामानुसार अभया नदी नाम की एक नदी है। उदयपुर से भुलूया जाने के राह में यह देवायतन है।

तृतीय लहर 13

नृपति सुनिलो पोरे ब्रह्म बध होइछे।	सुना नृपति ने जब ब्रह्म हत्या की बात।
अज्ञात प्रायश्चित(33) नृपति कोरिछे।।	नृपति ने कर डाला अज्ञातप्रायश्चित(33)।।
भुलूआ जये राजा बाकलाते गेलो।	बाकला गए नृप पश्चात भुलूआ विजय के।
कन्दर्प राय जमींदार बाकलाय बोधिलो।।	प्राण लिए बाकला के जमींदार कन्दर्प राय के।।
तथाये महाराजा हरिष होइया।	महाराजा को वहाँ पर हर्ष हुआ अगाध।
लूठिलो बाकला राज्य ससैन्य साजिया।।	लूटा बाकला को सजी सेना के साथ।।
गो, मोहिष, मनुष्य कोतो बहु लूठा गेलो।	गाय, भैंस, मनुष्य को भी लूटा जी जान से।
एइ सब बिक्रयेते राजा आदेशिलो।।	बेचने उन्हे राजाज्ञा हुई बड़ी शान से।।
गो मुल्य चारि पण(34) छाग दुई पण।(35)	गाय का चार पण,(34) बकरी के दो पण।(35)
मनुष्येर मुल्य होइलो एक एक काहण।।(36)	मनुष्य का मूल्य हुआ एक एक काहण(36)
श्रीहट्टेर सैन्य जतो संगे गियाछिलो।	श्रीहट्ट से साथ गए जो जत्था था सेना का
लूठेर मनुष्य निते नृपे आदेशिलो।।	लूटे हुए लोगों को राजाज्ञा हुई ले जाने का।।
राजार तनय राजदुर्लभ नारायण।(37)	राजा के तनय राज दुर्लभ नारायण(37)।
तार संगे सेनापति दुर्लभ नारायण।।	उनके साथ सेनापति दुर्लभ नारायण।।

---

(33) महर्षि आंगीरा के मत से प्रायश्चित की निम्नलिखित व्याख्या मिलती है।

"प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते।
तपोनिश्चय संयुक्तं प्रायश्चितमितिस्मृतं।"

प्रायस शब्द का तप और चित शब्द का निश्चय कहा गया है। तपोनिश्चययुक्त होने पर उसे प्रायश्चित कहा जाता है।

हारित के मत से– "प्रयतत्वाद्वोपचितमृशुभं नाषयतीति" अर्थात शुद्धि द्वारा संचित पाप नाश होता है इसलिए उसे प्रायश्चित कहते हैं।

पापों के प्रकार भेद से शास्त्रों में निम्न तरह के स्वतंत्र प्रायश्चित का विधान मिलता है। अनिच्छाकृत क्षत्रिय द्वारा ब्रह्म वध के प्रायश्चित स्वरुप चौबीस वार्षिक व्रत अथवा 360 धेनुदान एवं असमर्थ होने पर 1080 काहण (अर्थात एक रूपया को एक काहण) मूल्य की कौड़ी दान की व्यवस्था है। इसकी दक्षिणा 200 गौ अथवा 200 काहण कौड़ी दान का निर्देश है।

शूलपाणि के "प्रायश्चित विवेक" "रधुनन्दन का प्रायश्चित तत्व" और काशीनाथ के "प्रायश्चितेन्दु शेखर" इत्यादि ग्रंथों में प्रायश्चित के विषय में विस्तृत विवरण और व्यवस्थादि का वर्णन हैं।

(34) चारिपण (चारपण) चार आना, बीस गण्डो में एक पण, एक पण और एक आना समान है। ये उस समय का हिसाब है जब कौड़ी को भी मुद्रा में शामिल किया गया था। पहले चार पैसे से एक आना और सोलह आने से एक रूपया होता था। अब तो एक सौ पैसे से एक रूपया होता है।

(35) दुई पण (दो पण) दो आना।

(36) एक काहण अर्थात 16 पण या एक रूपया।

(37) पाठांतर – "प्रधान तनय राज बल्लभ नारायण" "राजदुर्लभ" के बदले "राज वल्लभ" लिखा गया है। यह भ्रमवश ही हुआ है।

तृतीय लहर 14

बहु सैन्य संगे दिया थाना राखे तथा।(38)	बहुसेना रखकर थाना(38) बनाया वहाँ।
नृपति फिरिया आइसे राजधनी यथा।।	नृपति लौटे अपनी राजधानी जहाँ।।
पनेरो श शके अमरसागर आरंभन।	पनरह सौ शक में शुरू अमरसागर खनन।
तीन वर्षे सागर खना होइलो समापन।।	तीन साल में हुआ अमर सागर समापन।।
जेइ दिन नाग यष्टि जलेते गाड़िलो।	गाड़ा जलाशय में जिस दिन नाग यष्टि।
सेइ दिने नृपति सागर उत्सगिलो।।	सागर को तक्षण समर्पण किया मान कृत्तष्टि।।
तार पोरे महाराजा ब्राह्मण आनिया।	इसके बाद राजा ने ब्राह्मणों को बुलाया।
भूम्यादि षोड़श दान दिलो उत्सर्गिया।।	भूम्यादि षोड़श दान विधिवत उन्हे दिया।।
महाबाक्य(39) कोरे राजा जलाशये गिया।	जाकर जलाशय में नृप ने महावाक्य (39) किया।
प्रस्तरे निर्माइलो मठ धर्म उद्देशिया।।	धर्मादर्श हेतु मठ पत्थरों से बनाया।।
जगन्नाथ स्थापित कोरिलो सेइ मठे।	कर दिया उस मठ में स्थापित जगन्नाथ।
नृत्य गीत महोत्सब कोरे बहु ठाटे।।	नृत्य गीतादि करे महोत्सव के साथ।।
चतुर्दश ग्राम भूमि उत्सर्गिया दिलो।	कर दिया उत्सर्ग चौदह ग्राम मठ के नाम।
तदबधि चौद्द ग्राम(40) नाम तार होइलो।।	हो गया तभी से उसका नाम चौदहग्राम(40)।।
बारोमासे बारो यात्रा+ कोरिलो उत्सब।	बारह महीने बारह यात्रा+ से किया उत्सव।
मासे मासे भोजन कोराय द्विज सब।।	हर महीने भोजन किए द्विज सब।।
दुई शत भट्टाचार्य राजार सभाते।	दो सौ भट्टाचार्य थे उस राज सभा में।
नाना शास्त्र आलापन आछिलेक ताते।	नाना शास्त्रों का विवेचन था उस में।।
तुलापुरूष कोरे राजा धर्म अबतार।	तुलापुरूष निर्वाचन करें नृप धर्म अवतार।
महादेबी कल्पतरू होइलो समिभ्यार।।(41)	महादेवी कल्प तरू हुआ समभिव्याहार(41) ।।
अन्यान्य बहुबिध दान छिलो ताते।	अन्यान्य बहुविध थे नाम दान के।
पाप पूण्य संगे जाय राजार मोनेते।।	जाता साथ पाप पूण्य, नृप माने।।

---

(38) इस उक्ति से समझा जाता है कि अमर माणिक्य ने वाकला राज्य में थाना की प्रतिष्ठा की थी। लेकिन यह बात सही नहीं है। भुलूया में थाना बनाया गया था। बाद के वर्णन में इसकी पुष्टि होती है।

भुलूयार थानाते राज दुर्लभ छिलो।
लोना जले व्याम होय नृपति आनाइलो।।

(39) महाबाक्य – प्रतिष्ठा और दानादि कार्य में उत्सर्ग वाक्य को महावाक्य कहा जाता है। महावाक्य का भिन्न अर्थ भी है, यहाँ पर उसका उल्लेख देना व्यर्थ है।

(40) चौद्द ग्राम एक परगना में बदल गया है। यह परगना कुमिल्ला नगरी से दक्षिण की ओर दस कोस की दूरी पर है। यह त्रिपुरेश्वर की जमींदारी में है।

\+ यात्रा – एक तरह का खुला नाटक।

(41) समिभ्यार– समभिव्याहार अर्थात एक साथ।

तृतीय लहर 15

एइ भाबि महाराजा पुण्येतेहि मति।	थी इसी तरह पूण्य में ही महाराजा की मति।
त्रिपुर वंशेते जन्म राखिलेक ख्याति।।	जन्म त्रिपुर वंश में रखी एक अपूर्व ख्याति।।
आर एक उपस्थित होइलो से समय।	और एक उस समय हुआ उपस्थित।
राजपुत्र राजबल्लभेर ब्याम होय।।(42)	राजपुत्र राज बल्लभ हुए रोग भयभीत(42)।।
भुलूयार थानाते राजबल्लभ छिलो।	राजबल्लभ था जहाँ थाना भुलूया।
लोना जले व्याम होय नृपति आनाइलो।।	नमकीन जल से हुआ रोग राजा ने बुलाया।।
यशोधर नारायण थानाते राखिलो।	रखा थाना में यशोधर नारायण।
तार संगे रणदुर्लभ राजपुत्र छिलो।।	साथ उसके रहे राजपुत्र रणदुर्लभ महान।।
तार कोतो दिन परे बंगेते उत्पात।	इसके कुछ दिन बाद हुआ बंग में उत्पात।
दिल्लीर उमरा(43)सैन्य आइसे अकस्मात।।	दिल्ली से उमरा(43) सेना आई अकस्मात।।
भंग दिलो इछा खाँ सराइल होइते।	सराइल होते हुए भागा तभी इछा खाँ।
नृपति साक्षाते आइसे मेहेरकुल पथे।।	मेहेरकुल पथ से आया राजा के यहाँ।।
शुभ दिने इछा खाँए मिले नृप स्थान।	शुभ दिन देख इछा मिला नृपति से।
जोड़ हस्ते कहिलेक राजा बिद्यमान।।	हाथ जोड़ कहा नृप सम्मुख आनति से।।
दिल्लीर उमरा जतो सराइल आइसे।	दिल्ली के उमरा सराइल आये हों जितने।
राज सैन्य दिया रक्षा करह विशेषे।।	राज सैन्यों से रक्षा करो देश की अपने।।
इछा खाँर काकु बाक्य सुनिया नृपति।	इछा खाँ के विनय भरे वचन सुन नृपति।
ताहार बाक्येते स्नेह जन्मिलेक अति।।	उमड़ा अपार स्नेह हूठ में उनके अति।।
इछा खाँय चाहे फौज(44) नृपतिर स्थान।	इछा खाँ ने मांगा सैन्य(44) नृपति के यहाँ।
मंत्री सबे ना कहे जे राजा विद्यमान।।	न कह सके मंत्रीगण नृपति थे जो वहाँ।।
स्वभाबे बांगाली जाति आप्त कर्मे दृढ़।	स्वभावतः बंगाली जाति सदा दृढ़ आप्त कर्म लेकर।
राजारानी प्रति भक्ति कोरिलेक बड़।।	राजा रानी को भक्ति की उसने जी भरकर।।
ताज खाँ बाज खाँ नामे दुइ सरदार।	ताजखाँ और बामखाँ थे दो बड़े सरदार।
तार स्थाने इछा खाँय जिज्ञासे बिचार।।	उनकी जगह इछा खाँ ने पूछा राज दरबार।।

---

(42) राज बल्लभ शब्द भूल है। यहाँ राजदुर्लभ होगा।

(43) उमरा – धनी। यहाँ पर सम्राट के अधीनस्थ उमराहों के सेना की ओर ही इशारा किया गया हैं। उमरा लोग सम्राट की सहायता के लिये सेनाओं का गठन और रक्षा करते थे। जरूरत पड़ने पर सम्राट के लिए उन्हे नियोग करते थे। इन सेनाओं के खर्च को वहन करने के लिए जागीर स्वरूप भूसम्पत्ति की व्यवस्था होती थी।

(44) फौज – सेना

तृतीय लहर 16

कि मते पाइबो आमि राज सैन्य गण।	किस तरह मिलेंगी मुझे राज सेनाएं।
किमोते देशेते आमि जाइबो एखन।।	देश अपने कैसे अभी खाली लौट जाएं।।
ताज खाँ बाज खाँ ताहे बोलिलो तखन।	समझाया तक्षण ताज खाँ और बाज खाँ उसे।
उजिर संगे प्रीति कोइले पाइबा सैन्य गण।।	बजीर संग प्रीति बिन मिले राज सैन्य कैसे।।
इछा खाये सेइ काले मने बिबेचिलो।	इछा खाँ ने सोचा अपने मन में तक्षण।
महारानी प्रति सेइ मातृ सम्बोधिलो।।	महारानी को किया उसने मातृ संबोधन।।
रानी स्तन धौत जल इछा खाँ खाइलो।	स्तन धोया महारानी ने, इछा खाँ जल किया पान।
राजा रानी पुत्र तुल्य ताके स्नेह कोइलो।।	राजा रानी ने पुत्र तुल्य किया स्नेह प्रदान।।
सेइ कारण होइलो इछा खाँर तोरे।	यही कारण हुआ मुख्य इछा खाँ को लेकर।
इछा खाँ मचलन्दानि(45) ख्याति दिलो पोरे।।	मचलन्दानी(45) ख्याति पाई इछा खाँ ने आकर।।
इछा खाँर प्रति रानी राजाते कोहिलो।	महारानी ने कहा नृप से इछा खाँ संलाप।
महाराजा सैन्य दिते ताके आदशिलो।।	आदेशित किया नृप ने देने सैन्य की बात।।
पंच हस्ती दस घोड़ा पंच बस्त्र(46) दिलो।	पंच हस्ती दस घोडे पंच वस्त्र(46) का दान।
इछा खाँ मचलन्दानि इनाम पाइलो।।	इछा खाँ को फिर और मिला मचलन्दानी इनाम।।
बाहान्न हाजार सैन्य इछा खाँ संगे आर।	बावन हजार सैन्य चली इछा खाँ के सम्मान।
सिंह सरब उजीर संगे सैन्य समिभ्यार।।	सिंह तरह वजीर चले करने महा संग्राम।।
तदबधि इछा खाँर मचलन्दानि ख्याति।	तब से ही इछा खाँ की फैली मचलन्दानी ख्याति।
सैन्य समे बिदाय होइया गेलो शीघ्र गति।।	सैन्य साथ हुए बिदा चले शीघ्र गति।।
सराइले गिया सैन्य रहिलो तखन।	सराइल पहुंच सेना द्वारा डेरा वहाँ
बंग सैन्य तत्व पाइया भंग सेइ क्षण।।	बंग सैन्य तत्व पाकर भागी जहाँ तहाँ।।
एइ बार्ता नृपति के लिखे इछा खाँय।	यह वार्ता नृपति को लिखा इछा खाँ ने।
महाराजा तुष्ट होइलो एइ जे वार्ताय।।	तुष्ट महाराजा ने इछा के गुण को बखाने।।
तार पौर आर छिलो बिधिर लिखन।	इसके बाद और कुछ विधि लेखन
राजपुत्र मृत्यु राजबल्लभ नारायण(47)।।	राजपुत्र की मुत्यु नाम था राज बल्लभ नारायण(47)।।

(45) मचलन्दानी – यह मुसलमान शासन काल की प्रचलित उपाधि है। साधारणतः शासन कर्ताओं को यह उपाधि प्रदान की जाती थी। बंग के द्वादश भौमिकों में इछा खाँ को यह उपाधि मिली थी। उस समय त्रिपुर राज्य में इस मचलन्दानी उपाधि का प्रचलन हुआ था। इसमें मुसलिम नवाबों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह एक तरह का अनुकरण है, इसमें सन्देह नहीं।

(46) पंच वस्त्र – पाँच कपड़े – इसमें भी मुसलिम प्राधान्य की झलक दीख पड़ती है। (1) पगड़ी (2) चापकान या अचकन (3) सदरिया (4) इजार या पायजामा (5) रूमाल – यही पंच वस्त्र विशेष सम्मान के साथ ''खेलात'' दिया जाता था।

(47) राज बल्लभ नहीं राज दुर्लभ होगा।

तृतीय लहर 17

अमर माणिक्य राजा शोके अचेतन।	अमर माणिक्य राजा शोकाकुल अचेतन।
पोरे युवराज कोरे राजधर नारायण।।	पश्चात् युवराज हुए राजधर नारायण।।
तार पोरे महाराज शिकारेते गेलो।	शिकार हेतु नृप ने किया गमन।
रण दुर्लभ नारायण कोइलाते पाठाइलो।।	कैला भेजा नृप ने दुर्लभ नारायण।।
पुत्र शोके महाराज भाबे मोने मन।	पुत्र शोकातुर महाराज ने सोचा अपने मन में।
कोइलागढ़ होइया सराइल शिकार गमन।।	कैलागढ़ होकर सराइल गये शिकार करने।।
राजा संगे चले सब सैन्य सेनापति।	राजा साथ चले सभी सैन्य सेनापति।
दाउदपुरे नौका पथे चले शीध्रगति।।	दाउदपुर की ओर चली नाव शीघ्र गति।।
दाउदपुर घाटे गिया नौका लागाइलो।	दाउदपुर घाट पर नाव रूकी जाकर।
दाउदपुर जमिदार से धाटे मिलिलो।।	दाउदपुर जमींदार मिले यहीं आकर।।
तदवधि मिलन घाट नाम तार ख्याति।	तभी से मिलनघाट नाम की फैली ख्याति।
दाउदपुर थाकि शिकार कोरिलो नृपति।।	दाउदपुर रहकर शिकार किए नृपति।।
तितास पार होइया राजा सराइले गेलो।	तितास पार होकर राजा का हुआ सराइल गमन।
सराइल बेयाल्लिस ग्राम अरण्य बहु छिलो।।	सराइल बयालीस गाँव में थे बहुत से वन।।
बेड़िलो अनेक जन्तु ताहार माझार।	घेरा अनेक जीव–जन्तु को वहीं के बीच वन में।
महिस, भाल्लुक, ब्याध्र, मृगेर शिकार।।	भैंसा, भालू, बाघ और मृग मारा वहीं क्षण में।।
शिकार कोरिलो राजा ताहार माझार।	शिकार किया नृप ने इसी वन में आकर।
नाना जन्तु मारिलेक चतुर्दश हाजार।।	नाना जीव जन्तु मारा संख्या चौदह हजार।।
पनेरो श एक शाक मृगया कोरिछे।	पन्द्रह सौ एक शाक मृगया किया।
सेई बने बसाइते (48) राजधर चाहिछे।।	इसी वन में चाहा बसाना(48) राजधर ने जन पद।
बिजय माणिक्याबधि अरण्य सेई स्थान।	विजय माणिक्यावधि घना अरण्य था तबतक।।
राजधर के दिलो राजा कोरिया फरमान।।(49)	राजधर को दिया राजन ने जारी कर फरमान(49)।
कोइलागाड़ि सीमाना(50) बेयाल्लिस तपानाम।	कोयला गाड़ा सीमा में (50) निर्धारण बयालिस तपा नाम।।
राजधरे बसाईलो त्रिपुरार धाम।।	राजधर ने बसाया वहाँ त्रिपुरा का एक धाम।
अमर माणिक्य राजा शिकार कोरिया।	अमर माणिक्य नृप ने किया शिकार
पुनरपि देशे आइलो सर्ब सैन्य लोइया।।	लौटकर आए देश सैन्य सहित सम्मान।।

---

(48) उस जंगल को आबाद करके मनुष्यों के रहने योग्य बनाने के लिए राजधर ने प्रार्थना की।

(49) फरमान – आज्ञापत्र

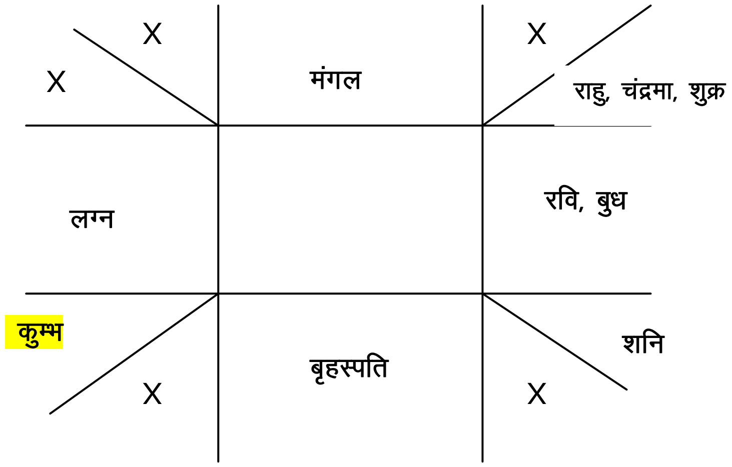
(50) पहले सीमा को अक्षुण्ण रखने के लिए भूगर्भ में कोयले को गाड़ कर चिन्ह रखा जाता था। अब भी यह नियम प्रचलित है।

तृतीय लहर 18

पनेरो श एक शक समय जखन।	पंद्रह सौ एक शक अब हुआ दिनमान।
राजधरेर पुत्र यश जन्मिल तखन।।	राजधर तनय यश का तब हुआ जनम।।
राजधरेर पुत्र जन्मे माघ मास शेषे।	पुत्र जन्मा राजधर का महीना माघ अंत।
शुभ लग्न दुई प्रहर रात्रि अवकाशे।।	शुभ लग्न दो प्रहर रात्रि का एकांत।।
ताहार कुष्ठिर फल लिखिलो सकल।	पंडितों ने लिखा कुंडली का पूर्ण फल।
कर्कट लग्नेते जन्म मेषेते मंगल।।	जन्म कर्क लग्न में और मेष में मंगल।।
मकरेते रबि बुद धनुते शनि बल।	मकर में रवि बुध धनु में शनि बल।
तुलाते बृहस्पति कुम्भेते चन्द्र स्थल।।	तुला में बृहस्पति कुंभ में चन्द्र स्थल।।
कुम्भेते शुक्र रहे दृष्टिना कोरिलो बहु।	कुंभ में शुक्र रहें दृष्टि न किया बहु।
अष्टमेते रहे जार चन्द्र शुक्र राहु।।(51)	अष्टम में रहें जिसके चन्द्र शुक्र राहु(51)।।
एई सब योगे जन्म होयेतो जाहार।	इन सभी योगों में होता जन्म जिसका।
च्छेद योग(52)जानिओ जे निश्चय ताहार।।	च्छेद योग(52) जान लेना निश्चय है उसका।।
मंगल आछिलो मेषे होय राज योग।(53)	मंगल आता मेष में होता राजयोग।(53)
बाईस बत्सर तार होइबो राज्य भेग।।	बाइस साल होगा उसका केवल राज्य भोग।।
यशोधर जन्मपत्री कथन सुनिलो।	यशोधर ने सुना जन्मपत्री का कथन।
नाके काने मुखे किछु छेदन कोरिलो।।(54)	नाक कान मुख में कुछ किया छेदन(54)।।
महामाणिक्येर पुत्र गगन फा आर।	महामाणिक्य का पुत्र गगन फा कहाया।
तान वंशे कुचु फा नाम होइलो ताहार।।	उनके वंश में कुचुफा नाम उसका हुआ।।

---

(51) इस हिसाब से राशि चक्र बनाने पर उसका निम्नलिखित रूप होगा–



(52/53) च्छेद योग और राज योग का विवरण राजमाला द्वितीय लहर की टीका में दिया गया हैं।

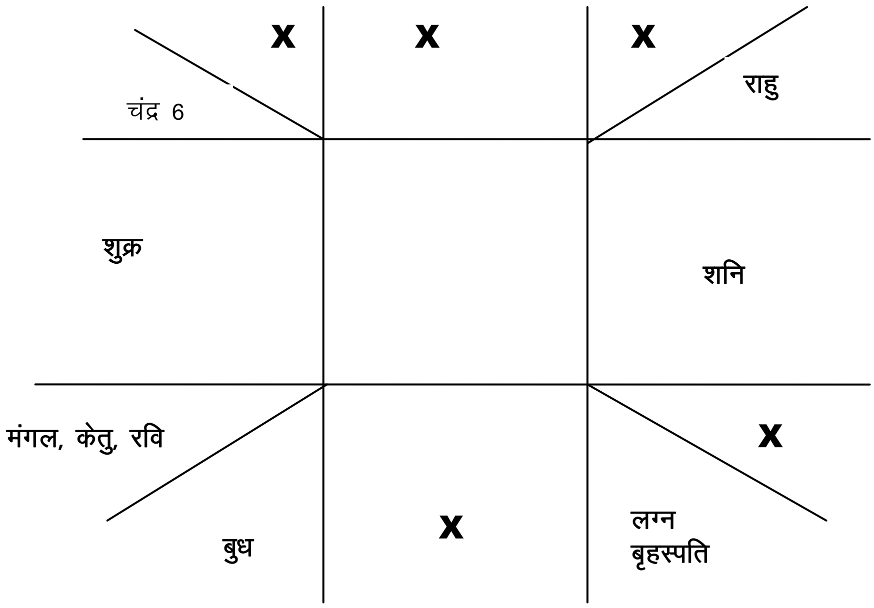
(54) कुंडली में छेद योग रहने से उस दोष प्रशमन के लिए नाक, कान इत्यादि का सामान्य छेदन किया गया।

तृतीय लहर 19

ताहार ज्येष्ठ पुत्र बीर राय नामेते।	वीर राय नाम पुत्र था उनका ज्येष्ठ।
ताहार कनिष्ठ भगिनी जूझार माँ पोरेते।।	बाद में बनी जूझार माँ थी उनकी ही भगिनी कनिष्ठ।।
ताहार कनिष्ठ भाई दुर्लभ नाम जार।	उसका कनिष्ठ भाई दुर्लभ नाम जिसका।
ताहार कनिष्ठ भ्राता कल्याण नाम तार।।	फिर उसका कनिष्ठ भाई कल्याण नाम इसका।।
पनेर श दुई शक भाद्र मास ताते।	पन्द्रह सौ दो शक भादों में आकर।
कल्याण देवेर जन्म कैलागड़ ताते।।	कल्याण देव का जन्म हुआ कैलागढ़ जाकर।।
यशोधर जन्म होते अष्टमास पर।	यशोधर के जन्म से अष्टमास पश्चात्।
कल्याण देबेर जन्म होइयाछे तत्पर।।	कल्याण देव का जन्म हुआ है निर्विवाद।।
भाद्रमास दिबा दुइ प्रहर अभिजित।	भाद्रमास दिवा पहर दो का समय।
दुई मूहुर्ते ते जन्म होइछे निश्चित।।	दो मूहुर्त में जन्म हुआ है निश्चय।।
लग्नेते छिलेक बिछा ताते बृहस्पति।	वृश्चिक लग्न में बैठे बृहस्पति।
मकरेते शनि कुंभ राहु राज स्थिति।।	मकर में शनि, कुंभ में राहु, राज स्थिति।।
आद्रा मिथुन चन्द्र शुक्र कर्कटेर।	मिथुन में आद्र, कर्कट में शुक्र चन्द्र।
रबि संगे मंगल जे आछिलो सिंहरे।।	रवि मंगल दोनो से शुशोभित सिंह।।
स्व क्षेत्रे एका सौम कन्याय छिलो बुध।	अकेले सोम, कन्या में बुध।
केतु छिलो सिंह माझे नबग्रह बिध।।	सिंह स्थित केतु, नवग्रह नवग्रह विध।।
तृतीय शनिर ऋक्ष क्षेत्र कर्म स्थान।	तृतीय स्थान शनि स्थिति क्षेत्र कर्म स्थान।
लग्ने तार बृहस्पति राजयोग जान।।	लाग्निक बृहस्पति राजयोग ज्ञान।।
कर्म स्थाने राहु ग्रह आशी वर्ष जीब।	कर्म स्थान राहु ग्रह, अस्सी वर्ष जीवन।
उनचल्लिस वर्षे तान राज्य भोग होईबो।।(55)	उनचल्लिस वर्ष उनका राज्य भोग हुआ।।(55)

---

(55) इस हिसाब से राशि चक्र बनाने पर उसका निम्नलिखित रूप होगा–



तृतीय लहर 20

रक्त वर्ण दुई हस्त मध्ये उर्द्धरेखा।	रक्त वर्ण दोनो हाथ, बीच उर्द्ध रेखा।
मध्यम अंगुली सीमा रेखा जाय देखा।।	मध्यम अंगुली तक फैली सीमा रेखा।।
हस्तेर आंगुल छोटो नख छोटो होय।	हस्तांगुली छोटी सी, नाखुन भी था छोटा।
तर्जनी ताहार छोटो ग्रासे कष्ट नोय।।	तर्जनी भी छोटी सी, ग्रासालुदन नहीं बाधा।।
आर विलक्षण वाम हस्तेर अंगुली।	और बिलक्षण थी वामांगुली।
मध्यम अंगुली होईते अनामिका बली।।	मध्यमा से अनामिका थी कुछ बली।।
ध्वज रेखा हस्तेते त्रिकोण दण्ड समें।	ध्वज रेखा हाथों में साथ त्रिकोण दण्ड।
मध्यम अंगुली जिनि रेखा छिलो क्रमें।।(56)	मध्यमा अंगुली तक फैली रेखा अखण्ड।।(56)
अपूर्व बृष स्कन्ध बृष पृष्ठ जेनो।	अपूर्व वृष स्कन्ध वृष पृष्ठ जैसा।
कमनीय सम अंग कामदेब हेनो।।	कमनीय सभी अंग कामदेव ऐसा।।
उच्च दीर्घ हनु गंड किछु पुष्ट छिलो।	उच्चदीर्घ हनुगंड थोड़ा सा पुष्ट ।
दीर्घ ललाट नासा स्थुल दीर्घ होईलो।।	पुष्ट नासा और था ललाट चौड़ा सा।।
पदतले चिन्ह आर अन्य हने(57) भिन्न।	पदतल चिन्ह थे दुसरे से भिन्न(57)।
वृद्धांगुष्ठ हृस्व अति सुलक्षण चिन्ह।।	वृद्धांगुष्ठ हृस्व अति सुलक्षण चिन्ह।।
पदेर तर्जनी दीर्घ बृद्धांगुष्ठ जिनि।	चरण अंग तर्जनी दीर्घ, वृद्धागुष्ठ छोटा।
उर्द्धरेखा दुई पदे अछिलो अमनि।।	उभय पदतल सुशोभित थी उनकी उर्द्ध रेखा।।
ध्वज ब्रज्रांकुश चिन्ह छिलो पदतले।	ध्वज ब्रज्राकुंश चिन्ह था उनके पदतल।
अति सूक्ष्तर होए पर्बकर स्थले।।	अति सुक्ष्मतर था उनके पर्ब का स्थल।।
ब्रह्मरन्ध्रे नाहि केश नितम्ब शोभन।	ब्रह्मरन्ध्र नहीं केश नितम्ब शोभन।
स्व हस्तेत चारि हात दीर्घजे आपन।।(58)	स्वहस्त से चार हाथ दीर्घ था बदन।।(58)
अतिबृद्ध रण दुर्लभ कैलागढ़े छिलो।	अतिवृद्ध रण दुर्लभ थे कैला गढ़।
थानादारी कर्मे तारे नृपे नियोजिलो।।	थानेदारी दी नृप ने किया कर्म में सुदृढ़।।

(56) इस राशि चक्र का फलादेश सामुद्रिक शाखा की आलोचना से जाना जा सकता है। यहां इस बारे में विस्तृत आलोचना करना असंभव है।

(57) बंगला में ''हने'' का अर्थ हिन्दी में ''से'' प्रयोग से है। जैसे यहाँ ''अन्य हने'' का अर्थ होगा ''दूसरे से'' या ''अन्य से''। यह प्राचीन बंगला प्रयोग है।

(58) रतिरम्भसी शुक्रसारता द्विगुणाचाष्टशतैः पलैर्मितिः।
परिमाण मथास्य षडयुता नवतिः सम्परिकीर्तिताबुधैः।।

मर्म– हंस पुरूष जल विहारासक्त, शुक्रसार विशिष्ट एवं उसका गुरूता अष्टशत का द्विगुण पल अर्थात 1600 पल परिमित है। उनकी देह की दैर्ध्य का परिमाण 96 अंगुल है। अर्थात चार हाथ है पण्डित वर्गो के द्वारा इस विषय में ऐसा ही कहा गया है।

तृतीय लहर 21

कल्याण देबेर सेई मातामह होय।	कल्याण देव का हुआ वही मातामह।
कैलागड़े जन्म कल्याण सेई तो समय।।	कैलागड़ में जन्मा कल्याण उस समय।।
सेई काले रणदुर्लभ देखे कन्या सुत।	उन्हीं दिनो रणदुर्लभ ने देखा कन्या सुत।
दौहित्र देखिया तुष्ट होईलो अद्भुत।।	तुष्ट हुए देख दौहित्र अद्भुत।।
जन्म पत्री लिखाइया देखिलो शोभन।	जन्मपत्री लिखाया, देखा शोभन।
दैवग्य निषेधे ताके बोलिते कखन।।	दैवेज्ञ निषेध, न कहना कथन।।
कल्याण देबेर माता हाम्थारमा नाम।	कल्याण देव माता हाम्थारमा नाम।
कुचु फा ताहार पिता ज्ञान अनुपाम।।	कुचुफा उसके पिता ज्ञान गुण धाम।।
पुरन्दर आर नाम ताहार जे छिलो।	और एक नाम उसका जो था पुरन्दर।
तुलसी धाटेते तार गंगा प्राप्ति होइलो।।	तुलसी तल पर अपनी देह छोड़ा नृपवर।।
हाम्थारमा हाम्थार फा नामे जे होइछे।	हाम्थारमा हामथार फा नाम जो हुआ।
कौतुकेते राजधर ए नाम राखिछे।।	कौतुक वश राजधर ने नाम रख दिया।।
दुर्लभ कल्याण राय दुई शिशु काले।	दुर्लभ कल्याण राय दोनो को शिशु बेला।
मातामह दुर्लभ राय ताके जिज्ञासिले।।	मातामह दुर्लभ राय ने पूछा देख अकेला।।
तोमा दुई जना शिशु कि खाइते मोने।	तुम दोनो शिशु क्या चाहते हो खाना।
जाहा इच्छा दिबो आमि बोलो आमा स्थाने।।	जो इच्छा दूंगा मैं कहो द्विधा बिना।।
रण दुर्लभे कहे हंस पाइले खाई।	रण दुर्लभ ने हंस मांगा हित अपने भोजन।
कल्याणे बोले आमि दुग्ध जेनो चाई।।	केवल दुध मुझे चाहिए कहा था कल्याण।।
दुर्लभ नारायण ताहा सुनिया हासय।	दुर्लभ नारायण विंहसे सुन कथन।
हंसमान दुग्धमान दुई नाम राखय।	रखा, दो नाम ,हंसमान, दुग्धमान।।
आर सब शिशुगने नाना खेला खेले।	और सभी शिशु खेलें नाना विध।
कल्याणे शिब विष्णु पूजे खेले धुले।।	कल्याण शिव विष्णु पूजे धूलखेल रत।।
कल्याण देबेर बयस पंच बत्सर छिलो।	कल्याण देव हुए केवल वर्ष पंच।
रण बल्लभ नारायण(59)कैला मृत्यु होइलो।	रण बल्लभ नारायण(59) का कैलागढ़ में प्रयाण।।
पोरे कल्याण देब आइसे उदयपुर।	पश्चात् कल्याण देव आया उदयपुर।
चैत्रे मदनोत्सव(60) होइलो प्रचुर।।	चैत्र महीना मदनोत्सव(60) हुआ भरपूर।।

---

(59) रण दुर्लभ नारायण होगा।

(60) भविष्य पुराण के श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर संवाद में वर्णित है– विश्व विजयी मदन, महादेव जी का योग भंग करते समय उनके कोपानल से भष्म होने पर उन्हे पुनः जीवित करने के लिए गौरी ने प्रार्थना किया। शंकर जी ने उत्तर में कहा, "प्रिय, मेरे कोपानल से दग्ध होने पर उसका फिर से जन्म असंभव है। फिर भी मै वर्ष में एक दिन मात्र निरुपण कर देता हूं

तृतीय लहर 22

मदन त्रयोदशी यात्रा(61) उत्सब काले।
पूर्बदिके अमर माणिक्य मठखला गेले।।
चतुर्दोले चढ़े राजा प्रचण्ड शरीर।
चतुर्दोल शोभियाछे देखिते सुधीर।।
कल्याण देब के सिखाय मासि पिसिगन।
राजार चौदोले जल सिचिते तखन।।
पंच बत्सर बालक कल्याण दिब होय।
राजार चौदोले जल सिंचे से समय।।
देखिया अमरदेब हासिते लागिलो।
काहार बालक बोलि नृपे जिज्ञासिलो।।
कुचुफार पुत्र बलि कहे सर्बजन।
मासि पिसि कल्याण के निलसेई क्षण।।
तारपर जेनो होइलो सुनो महाराज।
बिधि नियोजित कर्म होइलेक काज।।
फुलकोयड़ी छडा नाम ताहार निकट।
तारतीरे दुई बृक्ष आछिलेक बट।।
सेई स्थाने दुई बृक्ष बहुकाल होय।
ताते बास कोरि भूते उद्वेग कोरोय।।
दिबारात्र चारि पाँच भूत होइया मेला।
उलट पलट होइया बृक्षे कोरे खेला।।
दुर्गोत्सव चण्डी पाठे एक द्विजबर।
छाग माँस लोइया जाय आपनार घर।।
तहा देखि भूते बोले सुनह ब्राह्मण।
छाग मांस किछु दाव कोरिते भक्षण।।
बिप्र बोले दिते नारि राजार ये बाटा(62)
ताहाके खाइते चाव तुमि दुष्ट बेटा।।

मदन त्रयोदशी यात्रा(61) उत्सव के क्षण।
पूर्व ओर अमर माणिक्य मठखोला आगमन।।
चतुर्दोलि चढ़े राजा विशाल शरीर।
चतुर्दोलि सुशोभित देखते सुधीर।।
मौसी और बुआएं सिखाती देव कल्याण।
राज चतुर्दोलि जल सिचन उसी क्षण।।
पंच बरस का बालक कल्याण देव।
राजा चतुर्दोलि जल सींचे उस समय।।
देख उसे आई अमर देब को हंसी।
किसका यह बालक पूछा हंसी खुशी।।
कुचुफा का पुत्र कहे दिया परिचय।
मौसी और बुआएं ले गई उस समय।।
उसके बाद जैसे हुआ सुनो महाराज।
विधि नियोजित कर्म हुआ काज।।
फुल कोयड़ी एक सोता था वहाँ।
दो बट वृक्ष तट पर खडे थे जहाँ।।
दोनो वृक्ष सोता तट पर थे बहुत पुराने।
कई भूत थे उन्हीं पर लगे लोगों को सताने।।
रात दिन चार पाँच भूत एक साथ मिलकर।
उलट पलट वृक्ष पर आपस में खेल भयंकर।।
दुर्गोत्सव पर चंडी पाठ करके एक द्विजवर।
छाग मांसे ले चले अपने घर।।
देख उन्हे कहा भूत सुनो हे ब्राह्मण।
छाग मांस कुछ दो हमे करने का भक्षण।।
कहा विप्र ने, दे न सकूंगा राजा का यह दान।(62)
उसे चाहते करना भक्षण दुष्ट भूत बेटा।।

उसी दिन अनंग सशरीर आर्विभूत होगा। वह दिन है बसंत ऋतु शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि।" उसी समय से उसी तिथि में मदन पूजा और मदनोत्सव आरंभ शुरू हुआ हे। इस उत्सव को बसन्तोत्सव भी कहते हैं। यह उत्सव एक समय भारत के सर्वत्र विशेष आडम्बर के साथ मनाया जाता था। काल के प्रभाव से अब वह लुप्त हो गया है।

(61) यात्रा– बंगाल में या पूर्वांचल में यात्र उस नाटक को कहते है जो बिलकुल खुले मंच पर होता है। इसके चारों ओर लोग बैठते हैं और बीच में मंच होता ह।

(62) राजार बाटा– (राजा की ओर से बांटा गया) इसी को उस समय बंगला में राजार बाटा कहा जाता था।

बेटा बंगाल में समवयस्को द्वारा दी जाने वाली एक गाली

तृतीय लहर 23

भूतगणे बले ताके शुनह ब्राह्मण।	भूतगण बोले सुनो हे ब्राह्मण।
चण्डीपुथि तोर हाते रक्षार कारण।।	चण्डी पुस्तक हाथ तुम्हारे, रक्षा का कारण।।
मांस चाहिलो भूते बिप्रे नाही दिलो।	मांस चाहते भूत, विप्र ने नहीं दिया।
स्वभाव ब्राह्मण गौड़(1) मांस लोभी छिलो।।	मांस लोभी स्वभाव गौड़(1) ब्राह्मण का।।
पथेर पथिक यत सेइ पथे जाय।	उस रास्ते जो पथिक जाता।
बट बृक्षे थाकि भूते ताहाके लड़ाय।।	बट बृक्षे का भूत उससे लड़ता।।
राजार कणिष्ठ पुत्र युझार नारायण।	राजा का छोटा पुत्र युझार नारायण।
सेइ बृक्ष निकटे बाड़ि करिछे सृजन।।	निकट उसी बृक्ष के घर बनाया।।
अमर माणिक्य गिया से बाड़ि देखिलो।	अमरमाणिक्य गये उस घर को देखने।
भालो पुरी हईछे बोलि नृपे प्रशंसिलो।।	बहुत सुन्दर प्रासाद प्रशंसा बोले नृप।।
सेइ बृक्ष थाके भूत सकले कहिलो।	उस बृक्ष में रहते भूत, सभी बोले।
राजाय भूतेर कथा मनेते स्मारिल।।	भूत कथा, राजा मन में स्मरण।।
अमर माणिक्य राजा कहिलो तखन।	अमर माणिक्य राजा बोले वहां।
बिजय माणिक्य राजा नृपती यखन।।	बिजय माणिक्य राजा थे यहां का।।
यशपुर होते आमि गोप ग्रामे आसि।	यशपुर होते हम गोप ग्राम आए।
सन्धार समय हइलो भय नाहि बासि।।	सन्ध्या समय हुआ, कोई भय नहीं।।
बिंशति बत्सर छिलो आमार बयस।	बीस साल उम्र थी हमारी।
किछु भय नाही राखि बिषम साहस।।	कोई भय नहीं, था बिषम साहस।।
सेई बृक्ष हने भूत आईसे आमा आगे।	उस बृक्ष के भूत आये हमारे आगे।
पथ चापि(2) रहिलेक आमा अग्रभागे।।	पथ रोक(2) खड़े रहे हमारे आगे।।
देबतार नाम आमि लइलो तखन।	देबता का नाम लिया हमने तभी।
तथापिह भूते पथ ना छाड़े तखन।।	फिर भी भूत पथ ना छोड़े वहां।।
खड़ग चर्म आछिलेक आमार हस्तेते।	खड़ग चर्म थे हमारे हाथ।
खड़ग्ाघात करिलाम भूत शरिरेते।।	खड़ग्ाघात किया भूत शरीर पर।।
दुइ खण्ड़ होइया भूत पड़े पृथिवीत्।	दो खण्ड़ हुआ भूत पड़ा पृथ्वी पर।
धोरा काक रूपे पड़े आमार बिदित्(3)।।	धर काक रूप उड़ा हमें पता(3)।।

---

(1) ब्राह्मण गौड़ – गौड़ के ब्राह्मण

(2) पथ चापि – पथ रोककर

(3) भूत को वध करने से, उनका मृतदेह काक का आकार धारण करते हैं, इस प्रवाद वाक्य ने पूर्व–बंग में प्राचीन काल से विशेष प्रसिद्धि लाभ किया है।

तृतीय लहर 24

तोखने मारिछे भूत कोहिलो कारण।	मार रहा है भूत कहा तभी कारण।
किछु बाधा न जन्मिलो खड़गे सेइक्षण।।	बाधा कोई जन्मी नहीं खड्ग से तक्षण।।
एसब बोलिया राजा दिलो अनुमति।	यह सब कहकर नृप ने दी अनुमति।
दुई बृक्ष काटिया पाड़िलो शीघ्रगति।।	काटो दोनो वृक्ष अतिशीघ्र गति।।
खनिया फेलिलो सब वृक्ष मूल भाटी।	खनन करके भारी वृक्ष जड़ से उठाया।
जतेक पथिक लोक चले परिपाटी।।	पथिक चले निश्चित नहीं प्रेत छाया।।
काटियाछे सेई बृक्ष भूत छाड़ि गेलो।	काट दिया यह वृक्ष प्रेत छोड़ भागे।
कि कोरिते पारे भूत राज धर्म बोलो।।	क्या कर सकता भूत राज धर्म के आगे।।
बृक्ष मूल खनिते गर्त होइलो बिस्तर।	वृक्ष मूल खनन पर हुआ गर्त बिस्तर।
ताहाते उठिलो जल जेनो सरोबर।।	फूट निकली जल धारा जैसे हो सरोवर।।
फुलकुँवरी छोड़ा संगे ताते बोहे स्रोत।	फुलकंवरी सोता साथ उसमें बहे स्रोत।
नृप सबे नरबलि दित अद्‌भूत।।	सभी नृप नर बलि देते थे अद्‌भुत।।
हंस डिम्ब पुष्प दिया पूजा ताते होय।	हंस डिम्ब पूष्प से पूजा होती तय।
त्रिपुर देवड़ाई पूजे प्रभात समय।।	त्रिपुर देवड़ाई पूजें प्रभात समय।।
सेई स्थानेर दूई बृक्ष काटाए नृपति।	वृक्ष दोनों वहां के कटाया नृपति।
पोरे नृप कर्णे रोग जन्मिलेक अति।।	पश्चात् नृप कर्ण में रोग जन्मा अति।।
महाकष्ट पाय राजा जीबन संशय।	महा कष्ट भोगे राजा जीवन संशय।
बैद्‌येर चिकित्साय राजा भालो नाहि होय।।	व्यर्थ वैद्‌य चिकित्सा हुई नृप स्वस्थ नहीं होये।।
रोगेर आधाते राजार कष्ट बोडो होइलो।	रोग के आधात से नृप को कष्ट हुआ महा।
सिंहासने बसिबार राजधर आसिलो।।	सिंहासनारूढ होने राजधर आया वहाँ।।
हस्ती धोड़ा साजाडया सर्ब सैन्य लोइया।	हस्ती अश्‍व भैंस ले सारी सेना गण।
युझार सिंह बोले ताते नृप सम्बोधिया।।	युझार सिंह ने किया तब नृप सम्बोधन।।
खड़ग हस्ते कारि युझार बोलिलेक रोषे।	खड्ग हस्त धारण कर सरोष युझार ने कहा।
पिता मृत्यु नोहे भाई राजा होइते आसे।।	बिना पिता मृत्यु, भाई नृप होने आया।।
राजार निकटे एक गृहेर स्तंभ बड़ो।	नृप के यहाँ एक गृह स्तंभ भी है बड़ा।
क्रोधे खढ़गाघाते युझार ताहातेई दड़ो।।	क्रोध वश खड्ग धात उसी पर पड़ा।।
सेइ आधाते स्तंभ काटा गेलो चतुर्थांश।	उसी प्रचण्ड खड़गाघात स्तंभ कटा चतुर्थांश।
शब्द गेलो नृप कर्णे जेन बाजे कांशो।।	शब्द गया नृप कर्ण में, जैसे बजे कांस्य।।
ताहा देखि नरपति बिस्मय होइलो।	यह देख नरपति हुए विस्मित।
दुई भाई होबे बिरोध तखने जानिलो।।	दो भ्राता में होगा विरोध, समझे तभी निश्चित।।

तृतीय लहर 25

ये बोलिया नरपति बिबेक जन्मिया।	यह कह नृप का जाग्रत हुआ विवेक।
उठिया बोसिलो राजा सिंहासने गिया।।	जा बैठा सिंहासन पर, लेकर एक नव बोध।।
तार पोरे राजधर फिरि जाय धरे।	इसके बाद राजधर लौटा अपने धर।
बिबेक जन्मिलो राजार मृत्यु इच्छा कोरे।	जागा विवेक राजा की मृत्यु कामना पर।।
सेई काले भूत प्रेत अप देवगण।	उस समय भूत प्रेत अप देवता गण।
जन्माइलो मिथ्या कथा कोहे सर्बजन।।	फैलाया अफवाहें कहें जन साधारण।।
शोयाशत शिशुगण नौकाते भोरिया।	सवा सौ बच्चों को नावों में भरकर।
डूबाइया मारिबो फुलकुंवरी छोड़ा निया।।	डूबा दूंगा फुलकंवरी सोते में लाकर।।
तोबे भालो होवे राजा जानिओ निश्चय।	तब जाकर अच्छा होगा, सुनो राजा यह निश्चय।
कानाकानि कोरे सोबे पाय महाभय।।	कानाफूसी करने सभी मन में महाभय।।
निश्चय ना पाय ताते कोन जने काय।	कोई न कह सका, किसने कहा यह।
नगरे बाजारे होइलो आकुल ह्रदय।।	नगर बाजार में हुए सभी आकुल ह्रदय।।
अमंगल कथा सबे होइलो उदयपुर।	अमंगल की बातें सभी कहें उदयपुर।
उदयपुर उलटिबो लोक जाबे दूर।।	उलट जायेगा उदयपुर लोग जायेंगे दूर।।
राजार बाड़ीते व्याध्रे मनुष्य मारिबो।	बाध मारेगा मनुष्य, आकर राजा के घर।
श्रृगाल कुकुरे सबे नरमांस खाइबो।।	सियार कुत्ते भक्षेंगे नरमांस आकर।।
उदयपुर राजधानी जले पूर्ण होइबो।	होगी राजधानी उदयपुर जल पूर्ण।
आड़ाई शोतो मनुष्य गरू वाँचिया रहिबो।।	ढाई सौ मनुष्य गौ रहेंगे सम्पूर्ण।।
तारपर कोतो दिने आर राजा होइबो।	कितने ही दिनो बाद कोई होगा राजा।
सेई राजा राजबंशकुल उद्धारिबो।।	वही राजवंश का होगा उद्धाता सुखी होगी प्रजा।।
जन्म होइछे शिशु लुकाइया आछे।	हुआ है जन्म वह शिशु है कहीं छिपकर।
चौत्रिस बत्सर पोरे राजा होइबो पाछे।।	चौंतीस साल बाद राजा होगा आकर।।
ये सब प्रसंग होय नगरे बाजारे।	यही प्रसंग होने लगा नगर और बाजार।
भये त्रस्त होइया सबे कहे परस्परे।।	भयत्रस्त होकर सभी कहते परस्पर।।
राजधानी जले पूर्ण होइबो जानिलो।	राजधानी जल पूर्ण होगी सुना सभी ने।
कदली गाछेर भोर(63) सकले बान्धिलो।।	कदली वृक्ष काट डोंगा बनाया बहुतों ने।।(63)
मिथ्या कथा उदयपुरे जन्में प्रतिदिन।	उदयपुर झूठी बातें फैलती प्रतिदिन।
सर्बलोक भयातुर जानिया प्रबीण।।(64)	सभी लोग भयातुर यह घटना प्रवीण।।(64)

....

(63) भोर— (भूर) भेला यहाँ प्राचीन बंगला के स्थानीय भाषा में केले के वृक्ष से बनाए गए डोंगे को मोर कहा गया है। इसे लोग मेला भी कहते हैं। कई केले के वृक्ष को एक साथ बांधने पर वह पानी में लकड़ी की तरह तैरता है। इसे बनाना भी आसान है।

(64) प्रवीण— यहां प्रवीण का बृहत या बडी घटना के अर्थ में लिया गया हैं।

तृतीय लहर 26

जार जो बालक राखे दूर स्थाने निया।
गुप्त कोरि राखे ताके कुटुम्ब आश्राइया।।
ए सब बृतांत सुने कल्याण देब माता।
कल्याण निया राखे यथा आपन भ्राता।।
गामारिया किल्लाय थाके कल्याण मातुल।
गामारी लस्करी काजे कोरे अप्रतुल।।
अन्नमांस सदाकाल तार पाके होय।
उष्ण थाकिते से जे भोजन कोरय।।
कुत्सित प्रकृति तार सिकदारी चाला। (65)
प्रातःकाले बोइसे खाइते होय बहु बेला।।
मद्यबिने जल सेई ना पिये कोखने।
अन्य जने जल खाइते किलाय भोजने।।
सुनामा कन्या तार जामाई पाठान राय।
श्वशुर निकटे अन्न बोसि सेई खाय।।
अन्न मांस खाइया जल तृष्णा होइलो तान।
श्वशुर साक्षाते तोखन जलकोरे पान।।
जामातार जलपान देखिया श्वशुर।
क्रोधे पंच किल मारे जेन मत्तशूर।।
अन्न खाइते जल खाइले जामाता।
तोमा होते आमा कर्म ना होबे सर्वथा।।
खाइते बिलम्ब ताके बोले जेई जन।
कल्याण मातुले गाली देय तत्क्षण।।
  राजधानीर बालक लुकाइलो सोबे।
दूत मुखे नृपतिये सुनिलेक तोबे।।
मिथ्या कथा जन्माइलो केबा नृपे बोले।
धरिया आनह ताके जेस्थाने पाइले।।

अपने बालकों को रखने लगे दूर।
कुटुम्ब आश्रय उसे रखे छिपाकर।।
ये सभी बाते सुनी कल्याण देव माता।
कल्याण को रखा जैसे हो उनका भ्राता।।
गामारिया किले रहते मातुल कल्याण।
गामारी लस्कर में कार्यरत ससन्मान।।
अन्न मांस पकता सदा जहाँ रसोई इनकी।
गर्म रहते भोजन की आदत थी उनकी।।
कुत्सित प्रकृति थी उनकी और सिकदारी चाला(65)।
प्रातः बैठता करने भोजन चढ़ जाती बेला।।
मदिरा छोड़ कभी भी जल नहीं पीता।
दूसरे को जल पीते देख भोजन पर पीटता।।
सुनामा कन्या उसकी जामाई पाठान राय।
श्वशुर निकट बैठा भोजन करने आय।।
हुई जल तृष्णा उसे अन्न मांस खाकर।
श्वशुर सन्मुख जल पिया वहीं पर सत्वर।।
करते जलपान उसे देखा अपने सन्मुख।
क्रोधान्वित हो मारा पाँच मुक्के जैसे मत्तशूर।।
अन्न भोजन के बाद जलपान यहाँ करने पर।
तुमसे मेरा काम नहीं होने का अब रहने पर।।
करते भोजन हो रही देर, कहने पर।
कल्याण मातुल देता गाली उसे तत्पर।।
  राजधानी के सभी बालकों को रखा छिपाकर।
दूत मुंह सुना नृपति ने यह विचित्र खबर।।
पूछा नृपति ने किसी ने की यह मिथ्या कथा।
लाओ पकड़ जहाँ मिले उसे नहीं छोड़ना।।

---

(65) चाला– चाला शब्द का अर्थ यहां है चाल–चलन और व्यवहार। मुसलमान शासन काल में सिकदार उपाधि छोटे छोटे शासकों को दी जाती थी विशेष रूप से जो लोग अत्याचारी दाम्भिक होते थे। बंग देश में उस समय गुलामों को सन्मान प्रदर्शन के लिए सिकदार सम्बोधन की प्रथा थी। यह उन उपाधि धारियों के शासन कर्ताओं के प्रति घृणा प्रदर्शन करने और गुलामों के प्रभाव का परिचायक था। त्रिपुरा में भी यह उपाधि प्रचलित थी।

तृतीय लहर 27

आरोग्य होइया राजा दान धर्म कोरे।	हो आरोग्य राजा लगे दान धर्म करने।
राज कार्य कोरे नृपे ताहार जे पोरे।।	राज्य कार्य करते तत्पश्चात् अपने।।
राम माणिक्य राजा पुनः जिज्ञासिल।	राम माणिक्य राजा ने पूछा पुनः वहाँ।।
पोरे अमर माणिक्य कि कर्म कोरिलो।।	अमर माणिक्य ने और क्या किया वहाँ।।
सिद्धांतवागीश कहे करो अबधान।	सिद्धांतवागीश कहा, सुनो हे राजन।
रसांगरे युद्धे राजा करे अनुष्ठान।।	रसांग युद्ध हित नृप करे अनुष्ठान।।
शुभ दिन शुभ क्षण कोरिलो तखन।	तब शुभ दिन और देखा शुभ क्षण।
युद्धेर सेनापति होइलो राजधर नारायण।।	युद्ध सेनापति हुए राजधर नारायण।।
ताहार कनिष्ठ अमर दुर्लभ नारायण।	उनके कनिष्ठ अमर दुर्लभ नारायण।
ताहाकेई सेनापति कोरिलो राजन।।	उसे ही सेनापति बनाया राजन।।
चन्द्रदर्प चन्द्रसिंह पदबी नारायण।	चन्द्रदर्प चन्द्रसिंह पदवी नारायण।
छत्रजित नाजिर रणे चले सेई क्षण।।	छत्रजित नाजिर चले उसी क्षण।।
द्वादश बांगाला सैन्य चलिलो सहिते।	द्वादश बंगला सैन्य चली साथ साथ।
सर्ब सैन्य लोइया गेलो रसांग युद्धेते।।	सारी सेना लेकर गया रसांग युद्ध स्थल।।
फेरागींर सैन्य चले नौकाए भरिया।	फेरागि की सेना चली नावों लदकर।
तुष्ट होइलो अमरदेब सैन्य देखिया।।	तुष्ट हुए अमर देव सेनाओं को देखकर।।
चाटिग्रामें गिया सैन्य शीघ्र उत्तरिलो।	चटगाँव में शीघ्र उतरी जाकर।
कर्णफुली बाँध दिया सैन्य पार होइलो।।	कर्ण फुली बाँध दी, सेना पार हुई आकर।।
राम्बु आदि कोरी राज्य छय थाना लय।	राज्य ने किया अधीन राम्बु आदि छह थाना।
देयांग उड़िया राज्य लोइते आशय।।	उड़िया राज्य देवांग को भी चाहा था लेना।।
राज सैन्य मंत्रणा जे राम्बु थाना बोसि।	राज्य सेना ने किया मंत्रणा बैठ राम्बु थाना।
हेन काले मघ सैन्य युद्ध दिलो आसि।।	इसी क्षण मघ(मग) सैन्य का हुआ अचानक आना।।
त्रिपुरार सैन्य देखी मघे बासे भय।	त्रिपुरा सैन्य देख मघ मन छाया भय।
फेरागिंर सैन्य संगे मघेते मिलय।।	फेरागि सैन्य मिलकर मघ संग किया उसे निर्भय।।
फेरागिंए राजा थाना छाड़े सेई क्षण।	फेरागिं ने राज थाना छोड़ दिया तक्षण।
मघे आसि सर्व थाना लोइलो तखन।।	आकर किया कब्जा सभी थाना मघ गण।।
चारि दिगे रसद बन्द कोरे मघगण।	चारों ओर से रसद आना किया बन्द मघों ने।
त्रिपुरार सैन्ये रसद ना पाय तखन।।	न पाया रसद कहीं से भी त्रिपुरा सेना ने।।
त्रिपुरार सैन्य सब रहिते ना पारे।	टिक न सकी त्रिपुर वाहिनी वहाँ रसद बिना।
भंग दिलो त्रिपुर सैन्य समर माझारे।।	रण भंग किया समर मध्य त्रिपुरा सेना ने।।

तृतीय लहर 28

अन्न कष्टे बहु सैन्य पथे पथे मरे।	अन्न कष्ट से बहु सैन्य मरी राह में।
चाटिग्रामे आसे सैन्य बहु कष्टे तरे।।	बहु कष्ट झेल सेना आई चटगाँव में।।
राजपुत्र सैन्य समे अन्न कष्ट पाइलो।	राजपुत्र ने सैन्य साथ अन्न कष्ट भोगा।
घोगां आलु(1) घोगीं मोड़ा(2) नाम होइलो।।	घोंगी मोड़ा(2) नाम पड़ा खाकर आलु(1) घोंगा।।
सेई स्थान छाड़ि आइसे कर्णफुली।	वह स्थान छोड़ फौज आई कर्णफुली।
मघ सैन्य पाछे पाछे आसिलो सकलि।।	मघ सैन्य पीछे पीछे आई चली।।
घोपा पाथरेर पथे कर्णफुली पार।	घोपा पाथर की राह हुई कर्णफुली पार।
मघ सैन्य पाछे पाछे आसे मारिबार।।	मघ सैन्य पीछे पीछे करने आई मार।।
अन्न खाइते नदी पारे जार गौन होइलो।	नदी तीर अन्न खाते जिसने देर कर दी होते पार।
सेई लोक सब मघे पथे संहारिलो।।	उनका मघ सेनाओं ने पथ में किया संहार।।
चाउल खाई(3) नदी पार होइलो शीघ्र गति।	चावल खा(3) नदी पार किया जिसने शीघ्र गति।
सेई सब जन प्राण होइलो अब्याहति।।	उन प्राणों को ही मिली अब्याहति।।
ए सब जानिया पोरे त्रिपुरार सेना।	सुना इन बातों को जब त्रिपुरा की सेना।
पथे पथे चौकी बोसे राखे आर थाना।।	राह राह में बैठी चौकी और लिया सब थाना।।
प्रातः काले मघ सैन्य सेई पथे आसे।	प्रातः काल मघ चली आई उस राह।
त्रिपुरार सैन्य मघ काटये विशेषे।।	त्रिपुर सेना ने काटा उन्हे, गूंजी उनके आह।।
भंग दिलो मघ सैन्य देश उद्देषिया।	भाग चली मघ सैन्य अपना देश जहाँ।
अमर दुर्लभ पाछे धाबमाने गिया।।	अमर दुर्लभ धाए पीछे, भागी जिस राह वहाँ।।
प्रताप नारायण अमर दुर्लभ संगें।	प्रताप नारायण थे अमर दुर्लभ के संग।
सुरराष्ट्र नारायण तीन जाय रंगे।।	सुरराष्ट्र नारायण तीनों गये एक रंग।।
अमर दुर्लभ मित्र प्रताप नारायण।	अमर दुर्लभ के मित्र थे प्रताप नारायण।
घोटकेते चाडी मघेर पश्चाते गमन।।	अश्वारोही होकर मघ के पीछे किया गमन।।
तीन शोयार मघ सैन्य कटितेछे पाछे।	तीन सवार मघ सैन्य का करने लगे संहार।
प्राण भये मघ सैन्य भंग दिते आछे।।	प्राण भय कातर मघ सैन्यों में मचा हाहाकार।।
सात गड़ तीन बीर लोइलेक पुनि।	सात गढ़ तीन वीरों ने फिर से किया उद्धार।
दुई प्रहर बेला होइलो फिरिलो तखोनि।।	दोपहर बेला पर लौटे तीनों घुड़सवार।।
राजधर संगे छिलो जतो सैन्य रण।	राजधर के साथ गई सेना अगनन।
सहस्रेक मघ मारिछिलो सेई रण।।	सहस्र मघ सेना का वध किया था इस रण।।

---

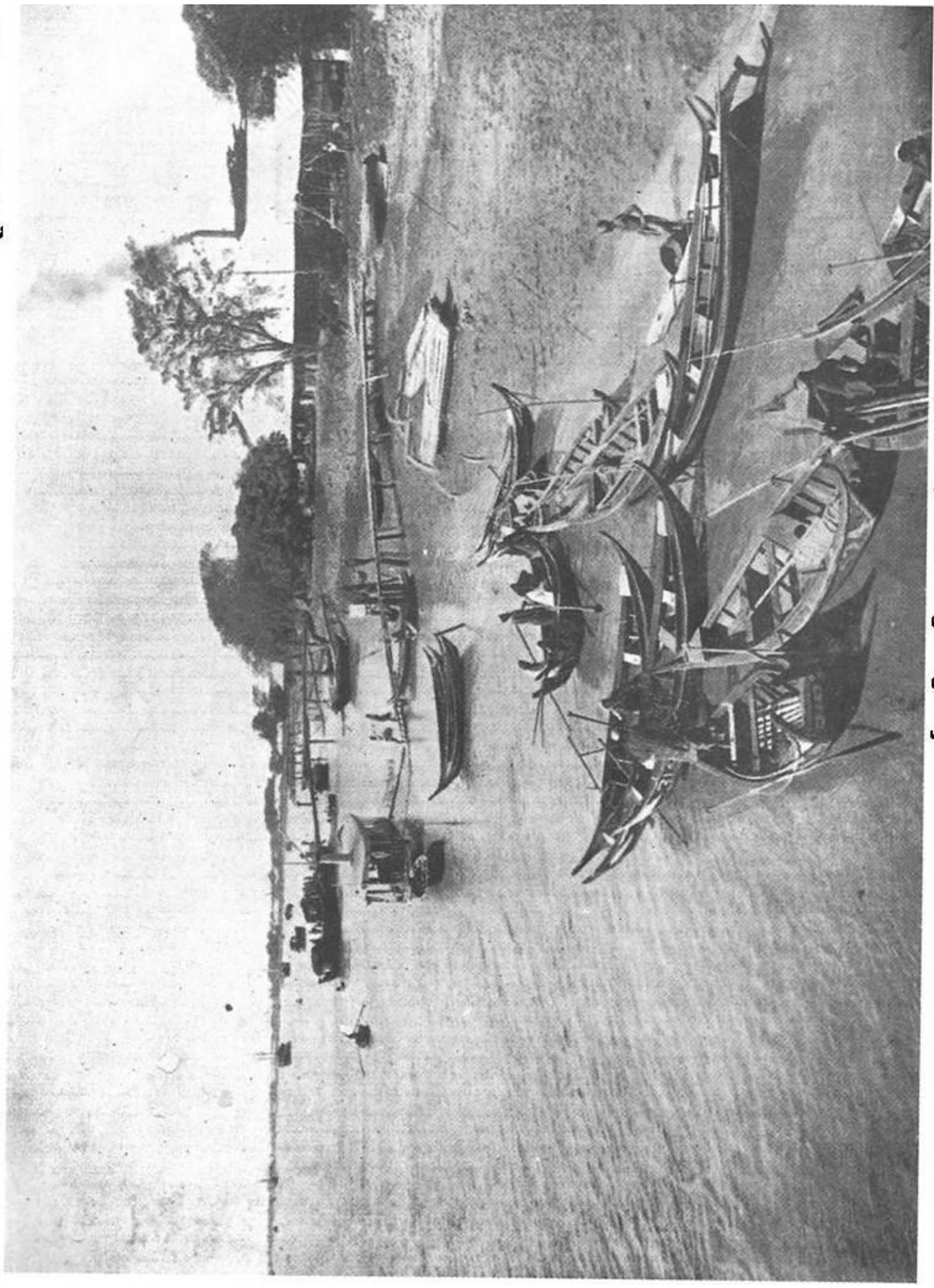
(1) घोंगा आलु– पहाडी जातियों के जूम पहाड़ियों पर जन्में एक तरह का कन्द।
(2) घोंगा आलू खाने की जगह को घोंगीमुड़ा के नाम से पुकारा गया।
(3) खाई – खाकर।

तृतीय लहर 28

तृतीय लहर–28

पृष्ठ संख्या – 28

राजमाला तृतीय लहर



कर्णफुली नदी का एकांश – चट्टग्राम

तृतीय लहर 29

मघ सैन्य पाछे पाछे राइपुर गिछे।
दिबाकर अस्त जाय अल्प बेला आछे।।
दुई शोयार गेलो अमर दुर्लभ सने।
दिबाकर अस्त जाय न आसिलो केने।।
चिंतायुक्त होइलो राजधर नारायण।
आगु बाड़ि चाहे गिया सर्ब सैन्य गण।।
मुंड सब बिचारिया चाहे रण माझे।
त्रिपुर मुंड नहि देखे युद्धेर समाजे।।
भावित होइया सैन्य धन्द लागे मने।
नृपतिके कि बोलिबो भाबे सैन्य गणे।।
अमर दुर्लभ राजपुत्र कि होइलो जानि।
तार संगे दुई शोयार ना आसिलो पुनि।।
संध्या काले देखे शोयार आसे तीन जन।
रक्तेते भूषित अंग ना चिने तखन।।
दूर थाके सैन्य सबे डाकिया जिज्ञासे।
कुशले आसिलो तारा बोलिलो विशेषे।।
राजधर नारायण आगुबारि निलो।
तुष्ट होइया सर्ब सैन्ये शिविरेते गेलो।।
अश्व होते राजपुत्र तखने नामिलो।
रक्त समे हाते खड़्ग ताते ना खसिलो।।
उष्ण जल दिया तारा हस्त पाखालिलो।
तीन शोयारेर हस्तेर खड़्ग खसाइलो।।
राजपुत्र कहिलेक युद्ध विवरण।
सैन्य सबै सुनिया जे आनन्दित मन।।
मघ पराजय सुनि मगघ राजाय।
उड़िया राजा नामे दूत तखने पाठाय।
दूते आसि कहिलेक राजधर स्थाने।।
समुख बत्सरे युद्ध होबे तोमासने।।
एई तत्व राजस्थाने लिखे राजधर।
समुख बत्सरे युद्ध होबे परस्पर।।

मघ सेना पीछे पीछे गए राइपुर।
अल्प बेला रह गई दिवावसान नहीं दूर।।
दो सवार गए अमर दुर्लभ के साथ।
होने को है अस्त दिवाकर क्यों नहीं लौटे आप।।
चिंतायुक्त हुए तब राजधर नारायण।
आगे बढ़कर लगे देखने सभी सैन्य गण।।
मुंड देखने लगे चारों ओर रण मध्य।
त्रिपुर मुंड नहीं देखा जहाँ हुआ भयानक युद्ध।।
भई चिन्ता मन में द्वन्द्व फैला मन में।
क्या कहेगें नृपति को आशंका उभरी मन में।।
अमर दुर्लभ राज पुत्र का क्या कौन जाने।
साथ उनके दो सवार लौटे नहीं ठिकाने।।
संध्या समय देखा सवार आते तीनों जन।
रक्त भूषित अंग, उनके जाता नहीं पहचान।।
दूर से ही सैन्य सभी का पूछा कुशल क्षेम।
कुशल पूर्वक हैं सभी ने कहा उनसे सप्रेम।।
राजधर नारायण आगे बढ़कर लाए।
तुष्ट होकर सभी सैन्य अपनी शिविर छावनी आए।
अश्व से राजपुत्र उतरे उसी क्षण।
रक्त रंजित खड्ग हस्त, न खिसका तक्षण।।
उष्ण जल से उन्होने किया हस्त प्रक्षालन।
तीन सवारों का खड्ग खसाया खुश मन।।
राज पुत्र ने कहा तब युद्ध का विवरण।
सैन्य सभी ने सुना हुआ आनन्दित मन।।
मगध राजा ने सुना जब मघ का पराजय।
उड़िया राजा नाम दूत को दिया यहाँ पठाय।
कहा दूत ने आकर राजधर के सम्मुख।।
अगले वर्ष तुम संग होगा भयानक युद्ध।।
यह तत्व राज स्थान पर लिखा राज धर ने।
अगले वर्ष युद्ध होगा आमने सामने।।

तृतीय लहर 30

अमर माणिक्य राजा एई पत्र पाइया।	अमर माणिक्य राजा यह पत्र पाकर।
ताहार उत्तर पत्र पाठाय लिखिया।।	इसका उत्तर भेजा लिखकर।।
जे सब लिखिछो तुमि एई तत्व सार।	जो कुछ लिखा है तुमने ऐसा तत्व सार।
दुर्गोत्सव निकट होईलो आईसो पुनर्बार।।	दुर्गोत्सव है निकट आओ पुनर्बार।।
तोमार युद्धेते पाइले मघ धरि आनो।	तुम्हारे युद्ध हित मघ मिले तो पकड़ लाना।
भवानी पूजाते ताके दिबो बलिदान।।	बलि भवानी पूजा में दूगाँ, लेकर उन्हे आना।।
नृपतिर एई पत्र शीघ्रगति पाय।	नृपति का महापत्र शीघ्र गति पाया।
राज धर नारायण असिलो त्वराय।।	राज धर नारायण तुरन्त वहाँ आया।।
ससैन्ये आसिया देखादिलो राजधर।	ससैन्य आकर मिले राजधर।
नृपतिये पुत्र देखि हरिष अंतर।।	देख तनय नृप हुआ हर्ष अंतर।।
जेमते समर छिलो राजधरे कहे।	कैसा समर था कहा राजधर ने सविस्तार।।
सुनिया नृपति तुष्ट होईलेक ताहे।।	सुन तुष्ट हुए नृप उपजा हर्ष अपार।।
श्रमयुक्त पुत्र और सेनापति गण।	श्रमयुक्त पुत्र और सेनापति गण।
बिदाय दिलेक राजा जार जे भवन।।	विदा किया नृप ने गये सभी जिसका जहाँ भवन।।
आनन्देते गेलो तारा जार जेई घर।	आनन्दित हो वे गये निज निज घर।
तारपर अमंगल राज्येते बिस्तर।।	इसके पश्चात् होने लगा अमंगल हर ओर।।
नगरे बाजारे काँदे कुकुर श्रृगाल।(1)	नगर बाजारों में रोने लगे कुत्ते सियार।(1)
ग्रामेर देवता काँदे निशि दिबाकाल।।(2)	ग्राम देवता रोवें दिन रात हर बार।।(2)

---

(1) प्रविशंति यदाग्राममारण्या मृग पक्षिणः।
अरण्यं यांति वा ग्राम्याः स्थलं यांति जलोद्भवाः।
स्थलजाश्च जलं यांति घोरं वाशन्ति निर्भयाः।
राजद्वारे पुरद्वारे शिवा चाप्यशिवप्रदा।।
दिवारात्रिंचरा वापि रात्रावपि दिवाचराः।
ग्राम्यास्तयजन्ति ग्रामंच शून्यतां तस्य निर्दिशेत्।।

मत्स्य पुराण अध्याय 237/1–3श्लोक

अर्थात वन्य मृग पक्षिगण जब ग्रामों में प्रवेश करने लगते हैं और ग्राम्य मृग पक्षिगण जब अरण्य में प्रवेश करते है, जीव निबह स्थानों में आश्रय लेते है, स्थलचर प्राणी जब जल में प्रवेश करते हैं, अशुभ शंशी शिवा आदि सभी राजद्वार और पूर्वद्वारे निर्भय पूर्वक घोर शब्द करते हुए घूमने लगें, निशाचर प्राणि दिन में निकलने लगें और दिवाचर प्राणि यदि रात को निकलने लगें और ग्राम्य पशु जब ग्राम परित्याग करने लगें तो समझना चाहिए कि ग्राम जगहीन हो जायेगा।

अग्नि पुराण के 231 अध्याय में इस बारे में उल्लेख मिलता है।
शिवा अर्थात सियारीन का नगर में प्रवेश करके घोर रव अर्थात शोर करने के कुफल के बारे में उपर लिखे श्लोक में वर्णन है। बृहत संहिता के 90 अध्याय के प्रथम श्लोक में है–

श्वभि श्रृगालाः सदृशाः फलेन" – अर्थात फल के विषय में श्रृगाल सभी कुत्ते के समान हैं।

(2) "देवतार्चाः प्रनृत्यन्ति वेपन्ते प्रज्वलन्ति च।
वमन्त्यग्निं तथाधूमं स्नेहं रक्तं तथा वसाम्।। "

तृतीय लहर 31

उल्कापात होय(1) नित्य भूमि कम्पवान।(2)	उल्कापात होवे(1) नित्य भूमि कम्पवान।(2)
जगन्नाथ मठे काँदे देखे विद्यमान।।	जगन्नाथ मठ में रोयें प्रत्यक्ष विद्यमान।।
बलभद्र चक्षु होईते जलधारा बहे।	बलभद्र की आँखों से जलधारा बहे।
ब्राह्मणे पूछिले बस्त्रे मुछा नाहि रहे।।	ब्राह्मण पोंछें वस्त्र से पर भीगा ही रहे।।

....

आरटन्ति रूदन्त्येताः प्रस्विद्यन्ति हसन्ति च।
उतिष्ठन्ति निषीदन्ति प्रधावन्ति धमन्ति च।।
भुंजते विक्षिपन्ते वा कोष प्रहरण ध्वजान्।
आवामुंखा वै भवन्ति स्थानात् स्थानं भ्रमन्ति च।।
एवमाद्या हि दृश्यन्ते विकाराः सहसोथ्यिताः।
लिगांयतन विप्रेषु तत्र वासं न रोचयेत्।।
राज्ञो वा व्यसनं तत्र स च देशो विनश्यति।।

मत्स्यपुराण 230 अध्याय, 1–5 श्लोक।

अर्थात देव प्रतिमाओं के नृत्य करने से कम्पित या प्रज्वलित होने से, अग्नि, घूम, स्नेह रक्त, मेद या चर्बी जातीय कुछ वमन करने से, विचरण या रोदन करने से, घर्माक्त(पसीना) होने से, हँसने, उठने, बैठने या दौड़ने से, भीती प्रदर्शन या भोजन करने से, कोष, प्रहरण, ध्वज इधर उधर होने से, नीचे की ओर मुंह लटकाने से, एक स्थान से दूसरे स्थान गमन करने से, लिंग आयतन बढ़ने से या विप्र में सहसा यही सभी विकार उपस्थित होने से वहाँ निवास नहीं करना चाहिए। इन सभी विकारों का फल यातो राजा को भयानक विपदा का सामना करना पड़ता है या राज्य विनष्ट हो जाता है।

(1) बृहत संहिता पढ़ अध्याय के आठवें श्लोक में भी यह विषय वर्णित है।

अम्बरमध्याद्बहेव्या निपतन्तयो राज राष्ट्र नाशाय।
वंभ्रमती गगनोपरि विभ्रममाख्याति लोकस्य।।
संस्पृती चन्द्राकौ तद्विसृभावा स भूप्रकम्पा च।
परचक्रागम नृप वध दुर्भिक्षा वृष्टि भय जननी।।

बृहत संहिता 33 अध्याय, 11–12 श्लोक

ममार्थ– नानारूपिणी उल्काएँ आकाश मार्ग से निरन्तर भ्रमण करते आकाश से गिरती है। ये राजा और राज्यनाश के कारण है और लोगों को इस विषम परिस्थिति की सूचना देती है। चन्द्र और सूर्य को स्पर्श करके उनसे निकली हुई किंवा भूमिकम्प समन्वित उल्कापात होने पर चक्रागम, नृपवध, दुर्मिक्ष, अनावृष्टि या भयजनक परिस्थिति की सूचना होती है।

उक्त संहिता 33 अध्याय, दसवें श्लोक में एक वर्णन मिलता है। जिसमें उल्लेख है कि कभी कभी उल्कापात शुभ प्रदर्शन भी प्रदान करता है।

(2) बृहत संहिता 32 अध्याय में भूमिकम्प के जो विवरण मिलते है, उसकी आलोचना से यह ज्ञात होता है कि पृथक पृथक नक्षत्रों में भूमि कम्प का देश विदेश में अलग अलग फल होता है। कुछ नक्षत्रों के मान को लेकर एक एक वर्ग की गणना की जाती है। यथा वायव्य मण्डल,

तृतीय लहर 32

ब्रह्मदश्ये(1) देबघरे चुपि दिया चाय।	ब्रह्मदैत्य(1) देव घर में झाँकता चुपके से।
पूजक ब्रम्हण सभे मने भय पाय।।	पूजक ब्राह्मण सभी भयभीत हुए मन से।।
हेनो मते अमंगल बहुतर होईलो।	इस समय अमंगल की रही न कोई सीमा।
विधातार नियोजित माघ मास छिलो।।	विधाता का ही नियोजित था माघ का महीना।।
फाल्गुने ते बार्ता आईसे कल्मिगढ़ होइते।	फाल्गुन में कल्मिगढ़ से आई एक वार्त्ता।
मघ राजा सेकान्दर सा असिलेक ताते।	मघ राजा सिकन्दर वहाँ आया कठोरता।
चाटिग्रामे मघ सैन्य सेईक्षणे आइसे।	चाटि ग्राम मघ सेना आई उसी क्षण।
एई बार्त्ता पाइया राजा बोलिलेक रोषे।।	यह वार्ता सुन नृप ने कहा सरोष तक्षण।।
सेई दिने सर्ब सैन्य युद्धेते पाठाय।	उसी दिन सारी सेना भेजा युद्ध हित।
राजधर नारायण सेनाधिप ताय।।	राजधर नारायण को किया सेनाधिप।।
अमर दुर्लभ राजपुत्र रणे नियोजित।	अमर दुर्लभ राजपुत्र रण में नियोजित।
सेई सेनापति होईलो युद्धेते बिहित।।	वहीं सेनापति हुआ समरागंन हित।।
युझार सिंह नाम आर राजार तनय।	युझार सिंह नाम और राज तनय।
सेई चलिलेक युद्धे कोरिते बिजय।।	चला समर भूमि कर लौटने विजय।।
नृपतिये बोले युझार क्रोध भालो नोय।	नृपति ने कहा युझार अच्छा नहीं क्रोघ।
शत्रु आसे जुझिबारे धैर्य ए समय।।	शत्रु आते जूझने को यहाँ धैर्य ही प्रतिरोध।।
हेनो मते पुनिपुनि(2) निषेधे(3) राजाय।	इस तरह पुनः पुनः निषेधा नृप ने।
जूझार सिंह महा क्रोध ना माने कोथाय।।	जूझार सिंह महा क्रोध कोई बात ही ना माने।।

हौतभूज वर्ग, आग्नेय वर्ग, सुरपति या ऐन्द्र वर्ग और वारूण बर्ग। इनके प्रत्येक वर्ग के भूमि कम्प में शस्य, जल और वनौषधि क्षय, पीड़ा, अवनीपाल और गणपतिओं का विध्वंस इत्यादि स्वतन्त्र स्वतन्त्र फल होता है। इनमें आग्नेय वर्ग में भूकम्प का फल नीचे प्रदान किया जाता है–

"आग्नेयेऽम्बुदनाशः सलिलाशय संखयोनृपति बैरम्।
दद्रू विचर्चिका ज्वर विसर्पिकाः पाण्डु रोगश्च।।
दीप्तौयसः प्रचण्डाः पीड्यंते चाश्मकांग बाह्लीकाः।
तंगन कलिंग बंग द्राविड़ाः शबराश्चनेकविधाः।।

बृहत संहिता 32 अध्याय 14–15 श्लोक

ममार्थ– आग्नेय वर्ग में भूकम्प होने से मेघनाश, जलाशय शोषण, राजद्वेष एवं दद्रु विचर्चिका(खुजली रोग), ज्वर, विसर्पिका(घाव इत्यादि) और पाण्डु रोग होता है। इसके अलावा दीपृतेजा और प्रचण्ड अमूलक, अंग, बाहलीक, तंगन, कलिंग, बंग और द्राबिड़ देश और नाना श्रेणी के शबर गण पिड़ित होते है।

---

(1) प्रेत योनि प्राप्त ब्राह्मण को ब्रह्मदैत्य कहा जाता है। ब्रह्मदश्य शब्द भी इसी का अपभ्रंश है।

(2) पुनि पुनि– बंगला भाषा में पुनि पुनि हिन्दी पुनः पुनः शब्द का ही पर्याय है।

(3) निषेधे – निषेध करता है।

तृतीय लहर 33

साजिया चलिलो जूझार निज सैन्य समे।(1)	सजकर चले जूझार निज सैन्य साथ(1)।
काल पूर्ण होईलो तार कि कोरे विक्रमें।।	जब काल पूर्ण हुआ तो क्या करे विक्रम आज।।
शुभ क्षणि कोरि राजा विदाय कोरिलो।	शुभ क्षण बनाकर नृप ने किया विदा।
तीन पुत्र समे मन्त्री युद्धे पठाइलो।।	तीन पुत्र साथ मन्त्री भेजा युद्ध बिना द्विधा।।
जार जे उचित इनाम बस्त्र अलंकार।	जिसका जो इनाम वस्त्र आदि अलंकार।
नृपतिये दिलो ताके जे मत व्यभहार।।	दिया नृप ने जिससे जो व्यवहार।।
तार पर राजधर कोरि जोड़ हाता।	पश्चात् राज धर ने जोड़ा दोनों हाथ।
कोरिलेक निवेदन राजार साक्षात।।	किया निवेदन स्वयं राज साक्षात।।
एक दीधि खोनियाछि राजार आज्ञाते।	एक तालाब किया खनन राजाज्ञा पर।
कालि उत्सर्गिया दीधि जाइबो युद्धेते।।	माँ काली को उत्सर्ग तालाब जाऊगाँ समर।।
ताहासुनि नृपतिये बोलिलो तत्पर।	यह सुन कहा नृप ने उन्हे तुरन्त।
बिलम्बेते कार्य नाहि चलह सत्वर।।	जाओ युद्ध सत्वर मत करो विलम्ब।।
पुन राजधर बोले नृपतिर स्थान।	पुनः राज धर ने कहा नृपति के आगे।
पुष्कर्णी उत्सर्गी कल्य जाइबो त्वरमान।।	पुष्कारिणी उत्सर्ग कर कल जाना है आगे।।
सैन्य जाउक आजि आमिह जाबो पोरे।	सैन्य जाये आज मैं जाऊँगा इसके बाद।
चारिदण्ड मध्ये दीधि उत्सर्गि सत्वरे।।	चार दण्ड मध्य जलाशय कर उत्सर्ग पश्चात्।
नृपतिये अनुमति कोरिलो तोखन।	नृपति ने किया अनुमोदन जब जाकर तक्षण।
जय ध्वज संग चले राज धर नारायण।।	जय ध्वज साथ चले राज धर नारायण।।
युद्धे पाठाये राजा पुत्र सकलेरे।	भेज समर में नृप पुत्रादि सभी को।
दीधि उत्सर्गिया गेलो राज धर पोरे।।	तालाब उत्सर्ग कर गए राज धर तभी तो।।
युद्ध स्थाने राज सैन्य गड़ बन्धि आछे।	युद्ध स्थल पर राजसना गढ़ बन्धन कर थी खडी।
सैन्य समे राज धर साबहिते पाछे।।	सैन्य समैत राज धर आए, पीछे से कौन अड़ी।।
सुनिया सेकान्दर सा बोलिलो दूतेरे।	सुनकर वह सिकन्दर बोले अपने दूतों से।
अति शीघ्र दूत जाव राज सैन्य तरे।।	अतिशीघ्र जावो दूतराज सेना सपूतों में।।
राजपुत्र युद्धे आइलो देखिबो विशेष।	राजपुत्र आया है रण में देखेगें उसे विशेष।
हस्ति दंत टोप नेह आमार सन्देश।।(2)	हस्तीदंत का मुकुट ले जाओ दो सन्देश।(2)

---

(1) समे –सहित

(2) सन्देश– वार्त्ता। पहले जमाने में विशेष व्यक्तियों के यहाँ जब कोई वार्त्ता प्रेरण किया जाता था तो उस समय नाना तरह के उपढ़ौकन इत्यादि दिया जाता था। यहाँ पर गजदन्त निर्मित मुकुट भेजा गया था।

तृतीय लहर 34

सैन्य चर्च्चिबा(1) तुमि कोतेक आसिलो।
ए बोलिया पत्र समे दूत पठाइलो।।
दंतटोप पत्र समे आसिलेक दूत।
राज सैन्य दूते आसि देखे अद्‌भुत।।
तीन भाई बोसियाछे राज पुत्र गण।
असंख्य राजार सैन्य ना जाय गनन।।
अश्व गज बहुतर सैन्य स्थाने स्थान।
सेई काले दूत गेलो सभा विद्‌यमान।।
पत्र टोप दिया दूत कोहिलो संवाद।
टोप निते तीन भाइयेर इच्छानुबाद।।(2)
राज धरे लोईलो टोपना पत्र आर भाई।
जूझार सिंह उष्म(3) होईलो टोप नाहि पाई(4)।।
युझार सिंह बोलिलेक मोनेर जे रोसे।
श्रृगालेर मते मघ मारिबो विशेषे।।
सहस्रेक दंतटोप पाइबो ताहार।
दूतके बोलिया दिलो एमतो प्रकार।।
चट्टग्राम गेलो दूत त्वरित गमन।
सेकान्दर स्थाने कहे ए सब कथन।।
सुनिया सेकेन्दर साहा बहु क्रोध होईलो।
युद्ध कोरिबार तरे सैन्य सजाइलो।।
त्रिपुर सैन्यते बहु घोटक सवार।
सम्मुखेते मघे युद्ध ना कोरे ताहार।।
बन पथे मघ सैन्य युद्धे चलिलेक।
बने युद्ध होईलो सवार नाहि चलिबेक।।
राज धर नारायण रहिछे गड़ते।
चरे आसि जानाइलो ताहार साक्षाते।।
मगध नृपति रणे आइलो वन पथे।
तुमि सब(5) बोसियाछो कोन हेतु ताते।।

अनुसंधान कर देखो कितनी सेना आई है।
यह कह कर नृप ने पत्र सह दिया दूत पठाया।।
हाथी का मुकुट पत्र साथ आया उनका दूत।
राज सैन्य आ देखा उसने लगा उसे अदभुत।।
तीनो भाई राज गण हैं बैठे एक साथ।
असंख्य राज सैन्य अनगिनत खड़ी है। आज।।
अश्व गज बहुतेरे सेना फैली यहाँ वहाँ हर स्थान।
उसी समय गया दूत जहाँ सभा विद्‌यमान।।
पत्र मुकुट देकर दूत ने कहा नृप का संवाद।
मुकुट लेत तीनों भ्राताओं ने किया इच्छानुबाद।।(2)
राजधर ने लिया मुकुट पत्र दूसरे भाई।
जूझार सिंह हुआ कुपित(3) उसने मुकुट नहीं पाई(4)।।
कहा युझार मन रोष भरा सहन सका यह।
मघ मारूगाँ सियार सम दिया तुरन्त कह।।
सहस्र दंत टोप पाऊँगा जहाँ पर।
कह दिया दूत सन्मुख इस तरह वहाँ पर।।
चट्टग्राम गया दूत त्वरित गमन।
सिकन्दर से कहा यह सारा कथन।।
सुनकर बातें सेकेन्दार साहा किया बहुत क्रोध।।
सजाया अपनी फौज करने को महा युद्ध।।
त्रिपुर सैन्य में थे बहुत से अश्वरोही।
सन्मुख समर में शायद ही बँचे कोई।।
वन की राह मघ सैन्य युद्ध होति चली।
वन युद्ध में अश्वारोही नहीं होगी बली।।
राज धर नारायण थे अपने गढ़।
चर आकर कहा उनसे दोनों हाथ जोड़।
मगध नृपति रण में वन पथ आया।
तुम सभी(5) बैठे हो किस हित यहाँ।।

---

(1) चर्च्चिबा –अनुसंधान करोगे।
(2) इच्छानुवाद –पुनः पुनः करना।
(3) उष्म –कुपित
(4) नाहिपाई– न पाकर
(5) तुमि सब– तुम सभी लोगे

तृतीय लहर 35

सुनिया युझार सिंह चलिलेक रणे।	सुनकर युझार सिंह चला रण में।
सेनापति मन्त्री सबे निषेधे तखने।।	सेनापति मन्त्री रोका सभी ने उसे ।।
आमा गड़े युद्धे आसे मगध राजन।	मेरे गढ़ में युद्ध करने आया मगध राज।
गड़े थाकि कोरि युद्ध जाबो कि कारण।।	गढ़ में रह युद्ध होगा क्यों जाना है आज।।
आजि दिबा बड़ो युद्ध होइबे निश्चित।	आज दिवस बड़ा युद्ध होगा निश्चित।
आगु होइया जाई केनो ताहा अनुचित।।	आगे बैठकर क्यों जायें यह अनुचित।।
छत्र नाजिर युझार सिंहेर मातुल।	छत्र नाजिर युझार सिंह के मातुल।
मन्त्री सबे युझार के बुझाय अतुल।।	मन्त्री सभी युझार को समझाये अतुल।।
युझार कहे मातुल तुमि युद्धे भय पाव।	युझार कहे मातुल तुम्हें युद्ध से है डर।
मातुलानीर बस्त्र पोरि घरे तुमि जाव।।	मामी का वस्त्र पहन तुम जाओ अपने घर।।
क्षत्रिय वंशे जन्मिआछो मरिते बासो भय।	क्षत्रिय वंश में जन्म, मरने का है भय।
शंख वस्त्र पोरि घरे जाव ए समय।।	शंख–चूड़ि पहन कर जाओ इस समय।।(अ)
राजधरेर घोड़ा नामेते बृन्दाबन।	राजधर का घोड़ा जिसका नाम वृन्दावन।
युझार सिंह चाहे घोड़ा युद्धेर कारण।।	युझार सिंह चाहे घोड़ा युद्ध के कारण।।
राज धरे बोले भाई चड़ोतुमि निया।	राजधर ने कहा भाई तुम चढ़ो उसे लेकर।
तोमा जय मंगल हस्ती आमि चड़ि गिया।।	तुम्हारा जय मंगल हाथी मैं चढता है जाकर।।
एक दन्त हस्ती छिलो अति श्रेष्ठतर।	एक दंत हस्ती था अति श्रेष्ठतर।
अनुरोधे युझार सिंह दिलेन तत्पर।।	अनुरोध सुन युझार सिंह दिए तत्पर।।
तुला भरा आंगा जिरा(1) ताहार उपर।	तुला भरा आंगा जिरा(1) उसके उपर।
हाजारमेखि(2) पोरि लेक युझार तत्पर।।	हजारमेखि(2) पहना युझार होकर तत्पर।।
कनक रचित सिरस्त्रान दिलो माथे।	कनक रचित सिरस्त्रान दिया सिर पर।
विचित्र भूषण अंगे चड़े घोटकेते।।	विचित्र भूषण अंग चढ़ा अश्व पर।।
खड़ग् चर्म तर्कश धोरिलो अनुक्रमें।	खड्ग चर्म तर्कश किया फिर धारण।
आगु होइया चलो युझार निज सैन्य समे।।	आगे आगे चला युझार ससैन्य करने रण।।
बत्सर पँचीस बयस युझार नारायण।	वयस पचीस वर्ष युझार नारायण।
मन्त्री वाक्य ना मानिया चलिलेक रण।।	मन्त्री वाक्य नहीं माना, चला करने रण।।

---

(1) आंगा जिरा– इसे 'जिरा' भी कहते है। यह पारस्य/पारसी भाषा का शब्द है विशुद्ध शब्द है 'जेरा'। युद्ध के पोशाक को जेरा कहते हैं। अंग रक्षार्थ एक विशेष प्रकार का कुर्ता।

(2) हाजारमेखि– यह पारसी शब्द है। जरी का सूक्ष्म(कारु) कार्य से युक्त यह कुर्ता केवल युद्ध के अवसर ही व्यवहार किया जाता है।

(अ) बंगाल प्रान्त में और बंगालियों में या इस पूर्वाचंल के राज्यों में शंख की बनी हुई एक तरह चूड़ी जिसे सधवा औरतें ही पहनती हैं।

तृतीय लहर 36

सैन्येर पश्चाते चले राजधर नारायण।	सैन्य पीछे चले राज धर नारायण।
अमर दुर्लभ चलिलेक लोईया सैन्य गण।।	अमर दुर्लभ चले लेकर सैन्य गण।।
राज धर एक दन्त गजेर पृष्ठेते।	राज धर एक दन्त गज पृष्ठ पर।
अमर दुर्लभ रणे चलिलो अश्वेते।।	अमर दुर्लभ चले रण अश्व पर।।
युझार सिंह मने छिलो पर्वत लंघिया।	युझार सिंह सोचा मन में पर्वत लाँघकर।
मयदान सन्मुखे कोरि युद्ध कोरे गिया।।	मैदान सन्मुख करें युद्ध जाकर।।
जे काले मगध सैन्य आसिबे मयदाने।	जिस काल मगध सैन्य आये मैदान।
अश्व सैन्य समे युझार काटिबो तखने।।	अश्व सैन्य साथ युझार काटें तक्षण।।
एतो भावि राजपुत्र तखने चलिलो।	इतना सोच राजपुत्र चला तभी लड़ने।
प्रहरेक रात्रि छिलो तथा उत्तरिलो।।	प्रहर एक रात रहे उतरा वहाँ सामने।।
सैई काले मघ सैन्य तथाते रोहिया।	उसी समय मघ सेना वहाँ चली आई।
गड़ बान्धिया तारा तथाते आछिलो।।	गढ़ रच पहले ही थी वहाँ पर छाई।।
हेनो मते मघ सैन्य तथाते रहिया।	बाकी सभी मघ सैन्य रहकर वहाँ।
चारि हजार सैन्य पूर्वे देखा दिले गिया।।	चार हजार सैन्य पहले दिखायी दी यहाँ।
ताहा देखि रसिलेक युझार सिंह बीर।	यह देख गुस्सा हुए युझार सिंह वीर।
अश्व सैन्य लोइया काटे मघ सैन्य सिर।।	अश्व सैन्य लेकर काटें मध्य सैन्य सिर।।
छिन्न भिन्न हाईलो सब मगधेर सेना।	छिन्न भिन्न हुई सारी मघ की सेना।
भंग दिया मघे गेलो आपनार थाना।।	रण भंग कर मघ गये अपना थाना।।
काटिते काटिते जाय नृपति नन्दन।	काटते काटते बढ़ें आगे नृपति नन्दन।
मगध खेदाइया(1) काटे गड़ेर सदन।।	मगध खदेड़(1) काटे गढ़ का सदन।।
सेई काले बोलिलेक युझार सिंह बीरे।	उस समय कहा युझार सिंह वीर ने।
शीघ्र हस्ती आनो मघ गड़ भांगि बारे।।	शीघ्र हस्ती लाओ मघ गढ़ को है तोड़ने।।
आसिते आसिते हस्ती मघ गड़े गेलो।	आते आते हस्ती मघ लौट गए गढ़।
सैन्य समे राजधर तत्पर आसिलो।।	सैन्य साथ राज धर आया हो तत्पर।।
मघ गड़ भांगि बारे सब सैन्य जाय।	मघ गढ़ तोडने को गई सैन्य सभी।
ताहा देखि मघ सैन्य बडो भय पाय।।	देख इसे मघ सैन्य भयभीत हुई तभी।।
अग्नि अस्त्र(2) मघ सैन्ये बहुतर छाडे।	अग्नि अस्त्र(2) मघ सैन्य छोड़े बहुतेरे।
बन्दुकेर गुलिये बहु त्रिपुर सैन्य मरे।।	बन्दूक की गोलियों से बहु त्रिपुर सैन्य मरे।।

(1) खेदाइया – खदेड़कर।
(2) अग्नि अस्त्र – बन्दूक।

तृतीय लहर 37

त्रिश हाजार बन्दूक मघ गड़े छिलो।	तीस हजार बन्दूकें थी मघ गढ़ में।
गुल्ली घाते बृक्ष पत्र किछु ना रहिलो।।	गोली से पत्ते कुछ न रहे गये वृक्ष पर ।।
दैबयोगे जय मंगल हस्तीर कपाले।	दैवयोगवश जय मंगल हस्ती के सिर।
एक गोल्ला घाते हस्ती ताते क्रोधे ज्वले।।	गोली लगी हस्ती को क्रोधेत्मत हुआ गम्भीर।
सेई काले युझार बोले राजधर भाई।	उस समय कहा युझार राज धर भाई।
तोमार हस्ती बोईठाव आमि हस्ती पोरे जाई।।	बैठाओ तुम्हारे हस्ती मैं बैठूगाँ जाई।।
राज धरे बोईठाय हस्ती चड़ये यूझार।	राज धर ने बैठाया हस्ती चढ़े युझार।
घोड़ा छाड़ि हस्ती चड़े दैबेर संचार।।	अश्व छोड़ हस्ती चढ़े दैवश संचार।।
हाजारमेखि पोइरे(1) युझार कनक रचित।	हजारमेखि(1) पहना युझार कनक रचित।
ब्याघ्र हेनो देखि हस्ती उठिलो त्वरित।।	व्याघ्र तरह देखि हस्ती उठा त्वरित।।
गोल्ला घाते हस्तीर जे क्रोध बाड़ियाछे।	गोली घाव से हस्ती का बढ़ा भयानक क्रोध।
युझार चड़िते हस्ती उठिलेक रोषे।।	चढ़ते युझार उठा हस्ती सरोष बीच युद्ध।।
हस्तीर दड़िते धरि रहिलो युझार।	हस्ती का रस्सा पकड़ रहा युझार।
लटकिया(2) रोईलो हस्तीर पदेर माझार।।	लटक रहा(2) हस्ती पद के उपर।।
मारिलो हस्तीये लाथि बुकेर ऊपर।	मारा लात हाथी ने छाति के उपर।
सेई घाते पड़े बीर पथेर अन्तर।।	उसी आघात से गिरा वह राह पर जाकर ।।
सेई पथे सेई गज भये भंग दिलो।	उसी राह वही गज भय वश भाग लिया।
हस्ती पद बूके ठेकि युझार मरिलो।।	हस्ती पद वक्ष पर आया, युझार मरण वरण किया।।
भाई बोले राज धरे डाके बारे बारे।	बार बार भाई कहकर राज धर बुलाए।
अंकुश(3) ना माने हस्ती कि कोरिते पारे।।	अंकुश(3) न माने हाथी अब क्या हो।।
पथेर उपर उच्चे मघ सैन्य छिलो।	पथ के उपर उँची जगह थी मघ सेना।
हस्ती परे राज धर के सेलेते हानिलो।।	हस्ती उपर राज धर कोशेल से हाना।।
उरूते लागिया हाना पिछलिया जाय।	जाँघ में लगा हाना और फिसल गया।
पेटेते लागिया हाना रक्त बोहे ताय।।	लगा पेट में फिर खून बहता गया।।
राजा होईबार तरे अछिलो कपाल।	राजा हाना मारा उसके कपाल।
एई मर्माधाते सेई बाँचिलो से काल।।	इस मर्मघात पर भी बच गया तत्काल।।

---

(1) पोइरे – पहन लिया
(2) लट किया – झूल गया
(3) अंकुश –डांगस, हाथी चलाने का लोहे का एक डण्डा

तृतीय लहर 38

भंग दिलो राज सैन्य सागर प्रमाण।	भाग खड़ी हुई राज सैन्य सागर प्रमाण।
पाछे पाछे मघ सैन्य आसे त्वरमान।।	पीछे पीछे मघ सैन्य आती त्वरमान।।
युझार सिंह पोड़ियाछे पथेर मझार।	युझार सिंह पड़ा है पथ मझधार।
मघ सैन्ये काटि निलो मस्तक ताहार।।	मघ सैन्य ने काट लिया सिर ।।
चन्द्र सिंहेर पुत्र छिलो छोटो राय नाम।	चन्द्र सिंह तनय जिसका छोटो राय नाम।
युझार सिंह सहित मरिलो संग्राम।।	युझार सिंह साथ मरा इस संग्राम।
युझार सिंह मित्र से जे अति बलवान।	युझार सिंह मित्र वह जो अति बलवान।
मित्र स्नेहे युद्ध से जे कोरिलो से स्थान।।	मित्र स्नेह वश युद्ध किया उस स्थान।।
शतावधि मघ से जे स्वहस्ते मारिलो।	शताविधि मघ वह मारा स्वहस्त।
सेई दिन तार सम केहो ना जूझिलो।।	उस दिन उसके सामने न कोई आया वीर मस्त।।
युझार सिंह मस्तक देखे सेकेन्दर साहा।	युझार सिंह का देख सिर सिकन्दर साहा।
तिरस्कार कोरिबोले भालो नहे एहा।।	तिरस्कार किया कहा अच्छा नहीं हुआ।।
राजपुत्र मारिबारे ना होय उचित।	राजपुत्र को मारना न हुआ उचित।
सजीब आनिता यदि आमार बिदित।।	जीते जी पकड़ लाते यदि मेरे सामने सहित।।
तार पिता अमर माणिक्य राज स्थान।	पिता उनके अमर माणिक्य हैं राज स्थान।
युझार के पठाईताम कोरिया सन्मान।।	युझार को मैं भेजता करके सन्मान।।
एमत दारूण कर्म न होय उचित।	ऐसा दारूण कर्म है, नहीं उचित।
सेनागणे गालिदिल सभार बिदित।।	गाली दी सेनाओं को राज सभा बीच।।
तारपोरे पत्र लिखे नृपतिर स्थाने।	इसके बाद पत्र लिखा नृपति के यहाँ।
मघ राजा सेकेन्दार बिनय तखने।।	मघ राजा सिकन्दर विनय करे वहाँ।।
राजपुत्र पोड़े रणे नामते जुझार।	राजपुत्र खेत रहे जिसका युझार है नाम।
आमि आज्ञा नाहि कोरि बधिते ताहार।।	मैने आज्ञा दी नहीं वध करने इस संग्राम।।
राम्बु छकरूआ छिलो आदम बादसाय।	राम्बुछकरूआ था आदम बादशाह।
तोमा स्थाने रहे गिया कोरिया सहाय।।	तुम्हारे यहाँ रह रहा है तुम हो सहाय।।
ताहाके बन्धिया पाठाव आमार विदित।	बाँध उसे भेजो शीघ्र मेरे यहाँ।
तोबे आमा संगेते तोमा होबे बहु प्रीत।।	तभी बहु प्रीत होगी इसके बदले जहाँ।।
मघ दूते पत्र लोईया आसे त्वरमान।	मघ दूत पत्र लेकर आया शीघ्र ही।
राजधर स्थाने पत्र दिलो युद्ध स्थान।।	राजधर को पत्र दिया युद्ध स्थल पर ही।।
युद्धे भय पाइलो तारा राज सैन्य गण।	युद्ध भय से त्रस्त हुई राज सैन्य सारी।
पृष्ठ भंग दिया जाय त्रिपुर सेई क्षण।।	पृष्ठ भंग दिया सभी ने ग्लानि हुई भारी।।

तृतीय लहर 39

एई तत्व उदयपुरे तीन दिने गेलो।	यह तत्व उदयपुर पँहुचा तीन दिन बाद।
युद्ध भंग सुनि नृप बहु क्रोध होईलो।।	नृप हुए क्रुद्ध सुन युद्ध भंग संवाद।।
युझार सिंहेर सेबक युद्ध होने आसे।	युझार सिंह सेवक आया छोड़ युद्ध भूमि।
युझार सिंहेर मृत्यु नृपे कहे(1) शेषे।।	युझार सिंह मृत्यु नृप से कहा(1) सिर धुनि।।
जेई मते युझार सिंह पोड़िलेक रण।	जैसे ही युझार सिंह गिरे युद्ध भूमि।
जेनो मोते युद्धे भंग त्रिपुरार गण।।	त्रिपुरा फौज रण भंग दे, भागी छोड़ जमीन।।
एई वार्त्ता सुनि राजा शोके अचेतन।	यह वार्ता सुन राजा शोक अचेतन।
राज अन्तःपुरे क्रन्दन करे सर्ब जन।।	राज अन्तःपुर में क्रन्दन करे सर्वजन।।
आपने चलिलो राजा युद्धेर कारण।	स्वयं चले राजा करने वहाँ रण।
शोकेते बिह्बल ताते चलिलेक रण।।	शोक विह्वल राज चले तक्षण।
राजा बोले पूर्व राजा आमल जखन।	राजा बोले पूर्व राजाओं का जब था शासन।
बहु युद्ध कोरि राज्य राखीछि आपन।।	बहु युद्ध करके राज्य रखा हूँ मैं स्वयं।।
आपन राजत्व काले पराभब होईलो।	अपने राज्य में हुआ यह पराभव।
राज्य धन पुत्र आमि राखिते नारिलो।।	राज्य धन पुत्र रक्षा न हुआ संभव।।
युद्ध स्थाने गिया राजा शिबिरेते गेलो।	युद्ध स्थान जाकर राजा गए सैन्य छावनी।
भंग सैन्य त्रिपुरेर सकल आसिलो।।	युद्ध भंग सेना लौटी मन में भरी ग्लानि।।
पुत्र शोके महाराजा भावे मने मन।	पुत्र शोक ग्रस्त राजा सोचे मन ही मन।
राजधर के जिज्ञासिलो युद्ध विवरण।।	राजधर से पूछा पूर्ण युद्ध विवरण।।
आदि अन्त सब कोया कोहे राजधरे।	आदि अन्त सारी बातें कही राजधर ने।
राजा बोले युझार सिंह कार्य नष्ट कोरे।।	कहा नृप ने राजधर से कार्य नष्ट कर दिया युझार ने।।
पोरे राजा पाठानेर माहिना बुझाय।	बाद में राजा ने पठानों को समझाया उनका वेतन।
भंग दिलो जतो सैन्य आश्वासे राजाय।।	रण भंग किया जिन सेना नृप को दिया आश्वासन।।
नृपति बोलिया दिलो जेनो मत विधि।	कहा नृप ने बुला सबको रण नीति विधि।
चन्द्रदर्प बान्धे गड़ सैन्यके सम्बोधि।।	चन्द्रदर्प गढ़ सजाये सैन्यों को सम्बोधी।।
जतेक सवार आछे कोरिया पयान।(2)	जितने सवार किये रण भूमि प्रयाण(2)।
कोठेते रहिलो राजा जानिया सन्धान।।	कोठे पर रहे राजा करके सन्धान।।
तीन दिन पोरे मघ इछापुरा आइसे।	तीन दिन बीते मघ इछा पुरा आए।
दुई प्रहर बेला युद्ध होयेतो विशेषे।।	दो प्रहर युद्ध हेतू रण क्षेत्र गए।।

---

(1) नृपे कहे— राजा ने कहा

(2) पयान— प्रयाण

तृतीय लहर 40

दुई सहस्र पाठान सवार राजार।	दो हजार पठान राजा के सवार।
रणे आगु होईलो मघ सेन्य मारिबार।।	आगे बन्द रण क्षेत्र मघ वध हित इस बार।।
प्रताप नारायण आदि सेनापति गण।	प्रताप नारायण आदि सेनसपति गण।
अश्व चड़ि गैलो तारा कोरिवारे रण।।	अश्वारूढ़ हुए सभी करने को रण।।
राज सैन्य युद्ध स्थाने रहे सबहित।	राजसैन्य युद्ध स्थल रही तैयार।
दुई सहस्र मघ सैन्य होईलो उपस्थित।।	दो हजार मघ सेना आई इस बार।।
पाठान सकले जाय मारिबार क्रोधे।	पठान सभी धावें मारने वश क्रोध।
अधिक आसुक मघ मंत्रीये निषेधे।।	अधिक आएँ मघ कह मन्त्री का निषेध।।
पोरे दुईलक्ष मघ आसिलेक रण।	पश्चात् दो लाख मघ आये करने रण।
पाठानेर सैन्यगण स्थगित तखन।।	पठान सेनाएँ स्थगित हो गई तक्षण।।
सेई काले मन्त्री कहे घोड़ा छाड़ो आगे।	उसी क्षण मन्त्री ने कहा घोड़ा छोड़ो आगे।
जाबत मघेर सैन्य गड़े नाहि लागे।।	सारी मघ सेना आई गढ़ त्यागे।।
पाठाने गालिते(1) बोले मंत्रीये(2) बर्बर।	पठानों को दी गाली(1) कहा मन्त्री(2) ने बर्बर।
किमते छाड़िबो घोड़ा मघ बहुतर।।	कैसे छोड़े घोड़ा मघ सेना है अपार
जे काले मारिबो मघ ताते निषेधिला।	जब चाहा था मारने मघ, मन्त्री तब रोका।
एखन मघ बहु सैन्य ताते विधि दिला।।	अभी मघ भारी सैन्य अब समर में झोंका।।
आमा सब बधिबारे तोमा इच्छा होईलो।	हमें वध हित तुम्हारी अब हुई।
ए बोलिया पाठान सब पृष्ठभंग दिलो।।	यह बोल पठान सेना रण भंग कर गई।।
बृद्ध त्रिपुर जतो रणेर माझारे।	वृद्ध त्रिपुर सेना थी जितनी युद्ध के मैदान में।
पाठान सकले ताके हाते हाते धरे।।	जाकर उनके हाथों को पकड़ी सेना सभी पठान।
अलंकार तारा सबेर निलेक पाठाने।	पठानों ने उन सभी का छीन लिया अलंकार।।
राज सैन्य हाहाकार होईलो तखने।।	राज सैन्य के बीच तभी फैला हाहाकार।।
कोठ मध्ये नरपति भाबये आपन।	कोठे पर बैठे नरपति सोच रहे अपने मन।
बिना युद्धे सैन्य भंग दैबेर घटन।।	बिना युद्ध सैन्य भंग यह है देब अघटन।।
गर्जिया तर्जिया आईसे मघ सैन्य गण।	गरज तरज आई मघ सेना गण।
नृपतिर भय नाहि राज सैन्य गण।।	नृपति को भय नहीं है राज सेना गण।।
ताहा देखि नरपति भावित अन्तर।	यह देख नरपति भावित अन्तर।
चौदलेते उदयपुरे आसिलो तत्पर।।	चारों दल के साथ लौटे उदयपुर तत्पर।।

---

(1) गालिते – गाली देकर।

(2) मंत्रीये – मन्त्री को(मन्त्री ने नहीं)

तृतीय लहर 41

राजधानी गिया राजा कहे मन्त्री स्थान। राजधानी जाकर नृप ने मन्त्री कहा बुलाकर।
कौड़ी पुंज राखो आनि आमा विद्यमान।। कौड़ी रखो यहाँ जहाँ से भी हो लाकर।।
उदयपुरे आसि मघ किछु ना पाइबो। उदयपुर आकर मघ को नहीं मिलेगा कुछ भी।
धनहीन बोलि आमा मघेते कहिबो।। धनहीन मुझे कहेगें यहाँ समझे वे तुच्छ भी।।
राजार आज्ञाय कौड़ी आने सेई क्षण। राजाज्ञा पाकर कौड़ी आई तक्षण।
कौड़ी पुंज राखिलेक राजार भवन।। कौड़ी पुंज को रखा अन्दर राजभवन।।
महाराजा रानी संगे भंग सेई क्षण। राजा रानी साथ चले उसी क्षण।
राजधानी प्रजा भंग जार सेई मन।। राजधानी छोड़कर गया प्रजा जिसका जैसा मन।।
डोमघाट पथे राजा अरण्येते गेलो। डोमघाट की राह गये गहन बन।
सेई स्थाने गिया राजा गोपोने रहिलो।। जाकर वहाँ राजा ने अड्डा डाला गोपन।।
एथा सेकेन्दार साहा ससैन्ये सहित। इधर सेकेन्दार साहा आया लेकर सेना।
उदयपुर आसिलेक जानिया विहित।। उदयपुर आया लूटने की आस।।
राजपुरी आसिलेक लूटिबार आस। राजपुरी आया वह लूटने की लेकर आस।।
राजपुरी शून्य देखे होईलो नोईराश। देख शून्य राजपुरी हुआ मन निराश।
राजा प्रजा शून्य उदयपुर देश।। राजा प्रजा शून्य उदयपुर देश।।
धनेर कारणे मघे कोरये उद्देश। मघ सब मिलकर करे धन का उद्देश।
पोरे सेकेन्दार साहा धन ना पाइया।। पश्चात् न पाकर धन सेकेन्दार साहा ।।
दुई जन देवड़ाई(1) पाइलो बन विचारिया।। पाया दो पूजक(देवड़ाई)(1)विचरण करे वन में।
सेकेन्दार साहा बोले देवड़ाई स्थाने। सेकन्दार साहा पूछे पूजक, कहा पूजा स्थान।
धन देखाइले राजा कोरिबो एखाने।। धन दिखा देने से हम राजा का देगें मान।।
मघ वाक्य सुनि देवड़ाई धन देखाईलो। मघ की बात सुन पूजक ने छिपा धन दिखलाया।
सेई क्षण देवड़ाईके राजा ख्याति दिलो।। उसी क्षण पूजक को "राजा" ख्याति दिया।।
ताहा देखि कोहिलेक आर जे देवड़ाई। इसे देख कहा जो पूजक था एक और।
आर धन देखाइबो यदि राज्य पाई।। और धन दिखलाउँगा यदि राज्य मिले सिर मौर।।
धन लोभे मघ राजे दिलो ताके फांकि। धन लोभ में मघ राजा ने दिया उसे धोखा।
सेई क्षणे राजा कोरे देवडाइ डाकि।। उसी क्षण बनाया उसे राजा अपने पास बुलाकर।
दुई देवड़ाई राजा होईलो धन देखाईया। दोनों पूजक को दिया राजपद पाकर कुछ और।
सेकेन्दारे निलो धन देबडाई फाँक दिया। सेकेन्दर ने लिया धन देकर धोखा देबडाई को।।

---

(1) देवड़ाई– त्रिपुरा के देवता के पुरोहित का कहते हैं। इसका विवरण प्रथम लहर में वर्णित है।

तृतीय लहर 42

दुई देवड़ाई बादाबादि मघे पाय धन।	दोनों पूजकों का द्वन्द्व मघ को मिला धन।
राज धने सेकन्दार हर्षित मन।।	राजधन पाकर सेकान्दार हर्षित मन।।
पनेरो दिवस मघ छिलो राजधानी।।	पन्द्रह दिन रहा मघ राजधानी।।
कुड़ा मघी नाम एक सरदार जानि।	कुड़ा मघी नाम था सरदार नामी।
ताहार सहित सैन्ये राखिया विस्तर।।	उसके साथ रखकर सैन्य अपार।।
उदयपुर होने जाय साहा सेकान्दार।	उदयपुर से चला गया साहा सेकान्दार।।
पनर श दश शके चैत्र मास ताते।	पन्द्रह सौ दस शक का चैत का महीना।
प्रथमे आसिला मघ उदयपुरेते।।	पहले घुसा था मघ उदयपुर की सीमा।।
मघ राजा सेकेन्दार रसांगेते गेलो।	मघ राजा सेकेन्दार गया रसांग क्षेत्र।
अमर माणिक्य स्थाने पत्री जे लिखिलो।।	अमर माणिक्य को लिखा है एक पत्र।।
आदम साहाके राजा पाठाव त्वरित।	आदम साहा को राजा भेज दो त्वरित।
तबे तोमा संगे आमा होबो बहु प्रीत।।	तभी तुम्हारे साथ होगी मेरी प्रीत।।
सेकान्दार साहा स्थाने नृपे लिखे पुनि।	सेकेन्दार साहा को नृप ने लिखा एक खत।
शरणागत आदम साहा ना दिबो कोखनी।।	आदम साहा को नहीं दूगाँ है वह शरणागत।।
क्षत्रिय वंशेते जन्म होईछे आमार।	क्षत्रिय वंश में जन्म हुआ है मेरा।
तुमि मघ कि जानिबा आमा व्यवहार।।	तुम हो मघ, क्या पता फर्ज क्या हमारा।।
दैबयोगे एक पुत्र युद्धेते मोरिछे।	दैब योग से एक पुत्र रण में रहा खेत।
आर दुई पुत्र आमा प्रधान जे आछै।।	और दो पुत्र हमारे हैं अब भी जीवित।।
ताहा दुई तोमा युद्धे मरे कदाचित।	ये दो तुम संग मरें यदि कदाचित।
तथापि आदम आमि ना दिबो निश्चित।।(1)	तो भी आदम को न दूगाँ यह निश्चित(1)।।
राजार निष्ठुरवाणी सुनि मघ दूते।	राजा की निष्ठुर वाणी सुना मघ दूत।
सेई क्षणे गेलो दूत रंसाग त्वरिते।।	तक्षण गया दूत रसांग की ओर।।
अरण्य होइते राजा तेतोइया ते गेलो।	अरण्य से निकले राजा गये तेतोइया।
राज्य भ्रष्ट होइया राजा से स्थाने रोहिलो।।	राज्य भ्रष्ट होकर राजा यहीं आया।।
सेई काले कुचक्र एक होइलो कथन।	उसी समय कुचक्र का हुआ एक कथन।
छत्रजित नाजिर नामे दैबेर घटन।।	छत्रजित नाजिर नामक दैविक अघटन।।
पूर्व कुले गिया नाजिर कुकी राजा होईबो।	पूर्व कुल जाकर नाजिर होगा कुकी राजा।
जतेक त्रिपुर प्रजा तार संगे निबो।।	उसके साथ जायेगी सारी त्रिपुर प्रजा।।

....

(1) आदम साहा –रसांग के सामन्त राजा थे। रसांग के अधिपति सिकन्दर साहा के साथ उसका मनोमलिन्य हो गया और उसने आकर त्रिपुरेश्वर का आश्रय ग्रहण किया।

तृतीय लहर 43

कुकिर छाम्बुलदेश पाठ निर्माइया।	कुकी का छाम्बुल देश करेगा वह निर्माण।
अमर माणिक्य स्थाने लोके कहे गिया।।	अमर माणिक्य से सब जाकर कहते यह आश्वासन।।
ताहा सुनि महाराज बहु क्रोध होइलो।	यह सुन महाराज को हुआ भयानक क्रोध।
दुई शत सेनाय नाजिर धोरिया आनिलो।।	दौ सौ सेना भेज उसे लाया कसकर बाँध।।
नाजिर देखिया राजा बोलिलेक ताते।	नाजिर देख कहा राजा ने उससें।
एई मुखे राजा होइबा छाम्बुल राज्येते।।	इस मुँह राजा होगें छाम्बुल में कैसे।।
नाजिर पायेते निगड़ दिलो सेई क्षण।	नाजिर के पैरों में बाँधा तभी जंजीर।
बहुल प्रहरी दिया नाजिर रक्षण।।	बहुत प्रहरी रख दिया जहाँ पड़ा नाजीर।।
दुई दिन छत्र नाजिर निगड़े राखिलो।	दो दिन से छत्र नाजिर के पैरों में जंजीर।
अमरावती रानी स्थाने नृपे जिज्ञासिलो।।	अमरावती रानी ने पूछा, राजा से होकर गम्भीर।।
तोमा भाई छत्र नाजिर बड़हि दुरन्त।	भाई तुम्हारा छत्र नाजिर बड़ा ही दुर्दान्त।
कुकि राजा होइते चाय लोइया सामंत।।	होना चाहता कुकि राजा वह लेकर सामन्त।।
महादेबी बोले कहि सुनो महाराज।	महादेवी तब बोली सुनों बात महाराज।
भ्राता नाजिर आमार कुमन्त्रणा काज।।	भ्राता नाजिर का है कुमन्त्रणा का काज।।
राज्य भ्रष्ट आमा दिगेर होइलो जखन।	राज्य भ्रष्ट जब हुआ हमारा अब की बार।
भाई सम्बोधिया आमि कहिलो तखन।।	भाई सम्बोधन कर कातर स्वर में बारम्बार।।
चलिते ना पारि आमि गहन कानन।	नहीं चल सकती मैं चँहू ओर गहन वन।
आमाके धरिया चलो जे स्थाने राजन।।	मुझे पकड़ चलो ले जहाँ है राजन।।
मुखभंगी कोरि नाजिर आमा गालि दिलो।	कर विकृत मुख भंगीमा नाजिर ने मुझे दी गाली।
आामा पुत्र युझार तार बाक्य ना सुनिलो।।	मेरा पुत्र जुझार, उसकी बात न सुना रण स्थली।।
राज्य भ्रष्ट होईलो तोमा सेई जे कारण।	राज्य भ्रष्ट हुआ तुम्हारा उसी कारण।
तोमाके धरिया भग्नि निबो कोन जन।।	तुम्हें पकड़ भग्नि ले चलेगा कौन।।
सहौदर होइया नाजिर आमा फेलि गेलो।	सहोदर होके भी नाजिर छोड़ मुझे आया।
तार सम दुष्ट नाहि देखि कोनो काल।।	ऐसा दुष्ट देखा मैने कहीं नहीं पाया।।
आमा सब मारिले जे से होइबो राजा।	हमें मार सकने पर होगा वही तो राजा।
पुत्र सब खेदाइया शासिबेक प्रजा।।	पुत्रों को खदेड़ शासन करेगी सारी प्रजा।।
नाजिर बधिते आज्ञा दिलो महारानी।	नाजिर वध करने की आज्ञा दी, महारानी।
रानी अनुरोध राजा छाड़ाय तखनि।।(1)	राजा ने उपेक्षा की अनुरोध रानी की।।

---

(1) महादेवीर बाक्ये राजार होइलो क्रोध।	महारानी के वाक्य से राजा को हुआ क्रोध।
मारिबारे इच्छा होइलो तेजी उपरोध।।	मारने की इच्छा हुई तीव्र था उनका उपरोध।।

तृतीय लहर 44

नाजिरेर कथा सुनि नृप क्रोध अति।
छत्र नाजिर बधे आज्ञा चन्द्रसिंह प्रति।।
चन्द्रसिंहे निवेदिलो उचित ना होय।
नाजिर नृपेर श्यालक मने बासि भय।।
पोरे आज्ञा कोरे आगु नारायण तोरे।
छत्र नाजिर काट निया मनु नदी तीरे।।
आगुयाने कहे नाजिर रानी भाई होय।
ताहाके काटिले रानी बधिबे निश्चय।।
क्रोध होइलो महाराजा तार वाक्य सुनि।
चन्द्रदर्पेते आदेश होइलो तखनि।।
आज्ञामात्र चन्द्रदर्पे ना कोरिलो ब्याज।(1)
छत्र नाजिर लोइया गेलो मनु तीर माझ।।
स्नान तर्पन कोरे नाजिर मनु नदी तीरे।
राम राम बोलि स्कन्ध पातये सत्वरे।।
मारिलो खड़गेर घात स्कन्ध छेद होइलो।
नृपतिर आज्ञा लोइया दाह कर्म कोइलो।।
भ्रातृ शोके पुत्र शोके रानीर क्रन्दन।
ताहा सुनि नृपतिर स्थिर नहे मन।।
राज्य भ्रष्ट होइया राजा अनुशोच कोरे।(2)
मरिबार इच्छा राजा भाबे निरन्तरे।।
महारानी सम्बोधिया कहिलो राजन।
जीबनेर कार्य नाहि चलह एखन।।
रानी बोले एमत वाक्य ना होय उचित।
मृत्यु इच्छा कोरे यदि होय प्रायश्चित।।
नृपे बोले जन्मिले मृत्यु आछे तार संगे।
अपमान पाइले शत्रु हासिबेक रंगे।।
युझार सिंह पुत्र कामोद काव नाम।
ताहा के देखिले शोक बाड़े अनुपाम।।(3)

नाजीर की बातें सुन क्रुद्ध महाराज अति।
छत्र नाजिर वधाज्ञा चन्द्र सिंह प्रति।।
चन्द्र सिंह ने निवेदन किया यह उचित न होगा।
नाजिर नृप श्यालक मेरे मन में भय व्यापा।।
पश्चात् आज्ञा अग्रणी नारायण को करें।
छत्र नारायण नाजिर काट ले जा मनु नदी तीरे।।
अगुयान कहें नाजीर है रानी के भ्राता।
काटे उन्हे रानी वधेगी साहस नहीं आता।।
क्रोध हुए महाराज सुनकर उनकी चाल।
चन्द्रदर्प को हुआ आदेश पालन को तत्काल।।
आज्ञा मात्र चन्द्रदर्प किया न विलम्ब(1)।
छत्र नाजीर ले गया मनु तीर अविलम्ब।।
स्नान तर्पन किया नाजीर मनु नदी तीर।
राम राम कहकर स्कन्ध झुकाया हो नत सिर।।
मारा खड्ग की घात स्कन्ध हुआ अलग धड़ से।
नृपति आदेश पर दाह कर्म किया।।
भ्रातृ और पुत्र शोक वश रानी का क्रन्दन।
यह सुन नृपति का नहीं स्थिर मन।।
राज्य खोकर राजा करे अनुशोचना।(2)
मरने की इच्छा जागी चाहत नहीं जीना।।
महारानी को बुलाकर कहा राजन।
जीवन का अब काम नहीं चलो अब उस धाम।।
कहा रानी ने इस तरह का वाक्य नहीं उचित।
मृत्यु इच्छा करने से यदि होवे प्रायश्चित।।
कहा नृप ने जन्म से ही मृत्यु तो है संग।
अपमान होने से शत्रु हँसेगें करके रंग।।
युझार सिंह पुत्र कामोद काव जिसका नाम।
उसे देखने पर शोक होता है अनुपम(3)।।

---

(1) ब्याज – बिलम्ब, छल। यहाँ पर विलम्ब होगा। हिन्दी में विलम्ब दिया गया है।
(2) अनुशोच – अनुशोचना। अतीत के बारे में चिन्ता
(2) अनुपाम – अनुपम अर्थ में जिसकी उपमा नहीं है।

तृतीय लहर 45

एई मते बैशाख ज्यैष्ठ आषाड़ तीन मास।	इसी तरह बैशाख, जेठ, आषाड़ तीन मास।
शोकेते बिह्बल राजा छाड़्ये निश्वास।।	शोकविह्वल राजा सदा लेते दीर्घ श्वास।।
दिबा शिबा कोरे रब(1) उल्कापात होय।(2)	दिन में ही बोले सियार(1), होता उल्कापात(2)।
अमंगल होबे राज्ये लोक सबे कोय।।	अमंगल होगा राज्य में फैली ऐसी बात।।
हस्ती घोड़ा चक्षु होइते धारा बहे जल।	हस्ती, अश्वों के आँखों से बहे अश्रु जल।
आचम्बित महाबायु होइलो प्रबल।।	अचानक ही महा वायु हो उठा प्रबल।।
चन्द्र सूर्य पतन राजा देखिलो स्वपनेते।(3)	चन्द्र सूर्य पतन राजा देखा स्वप्न में(3)।
नबदण्ड़ क्षत्र भांगि पोड़े पृथिवीते।।(4)	नव दण्ड छत्र टूटा गिरा पृथ्वी में(4)।।
मोनेते व्याकुल राजा कुस्वपन देखिया।	मन में व्याकुल राजा कुस्वप्न देखकर।
कोथा जाबो कि कोरिवो रहे बिमर्शिया।।	जाउँ कहाँ क्या करूँ ? विमर्ष सोच सोच कर।।
अन्यान्य जतो राजा आमाके सेबिछे।	दूसरे जितने राजाओं ने की है मेरी सेवा।
आमार बिपदे तारा हरिषेते आछे।।	मेरे विपद में हर्ष उन्हे है कुछ भी नहीं किया।।

---

(1) सर्वदिक्षशुभा दीप्ता विशेषेणान्य शोभना।

पुरे सैन्येऽपसव्या च कष्टा सूर्योमुखी शिवा।। बृहत् संहिता अष्टम अध्याय 4श्लोक

अर्थात– हर ओर का दीप्त स्वर अशुभकर होता है विशेषतः दिवा भाग में एवं सेनाओं पर और नगर में दक्षिण की ओर सूर्यमुखी शिवा कष्टप्रद होता है।

सियार के अस्वाभाविक शब्द को दीप्त स्वर कहते हैं।

(2) उल्कापात का फल पहले ही दिया जा चुका है। द्वितीय लहर 70पृ में है।

(3) चन्द्र सूर्य का पतन स्वप्न में देखने का जो फल होता है। वह नीचे दिया जा रहा है

''शत्रुध्वजाभी पतनं पतनं शशि सूर्यायो।

दिव्यान्तरीक्ष भौमानामुत्पातानांच दर्शनम्''

\+ + + +

''क्रीड़ा पिशाच–क्रव्याद–वानरर्क्षनरैरपि।

परादभि भवश्चैव तस्माच्च व्यसनोद्भवः''।

मत्स्य पुराण 242 अध्याय 9व13 श्लोक

अर्थात– शंख, ध्वज, चन्द्र और सूर्य का पतन एवं दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम उत्पात दर्शन, + + + पिशाच, राक्षस, बानर और भालु एवं मनुष्यों के साथ क्रीड़ा और दूसरे से पराजय स्वप्न में दिखायी देने पर विपदा उपस्थित होती है।

(4) छत्र और दण्ड भंग का स्वप्न में देखना राजा व राज्य को विपदा का संकेत है। राष्ट्र के लिए यह घोर अमंगल की सूचना है।

ब्रम्हवैवर्त्त पुराण के गणेश खण्ड के 33 और 34 अध्याय में एवं देवी पुराण के 22 अध्याय में एवं अन्याय शास्त्र ग्रन्थों में स्वप्न के विषय में विस्तृत विवरण दिया है। विस्तार भय से आलोचना नहीं कर सका।

तृतीय लहर 46

ना जाइबो राजधानी निश्चय कोहिलो।
जे कोरिलो सुख भोग ताहा भालो होइलो।।
आषाड़ मासेते राजार काल उपस्थित।
सभा होइते गेलो राजा गृहेते त्वरित।।
महादेबी सम्बोधिया कहेन राजन।
राजधर अभिषिक्त कोरि एइक्षण।।
मनुनाम महानदी होइलो पृथिबीते।
वाचस्पति तीर्थचिन्तामणी गृहन्तेते।।
बड़वक्र नदी होय मनुर सगंम।
ताते स्नान दान कोइले होय पूण्यतम।।
बड़बक्र मनु संगम मृत्यु जार होय।
चन्द्रलोके जाय सेई प्रमाण निश्चय।।(1)
मनु स्नान कोरिले जे महा पूण्य होय।
रानी स्थाने महाराजा तीर्थ फल कोय।।
रानी प्रबोधिया राजा सभाते आसिलो।
पात्र मित्र सबाइके नृपे आश्वासिलो।।
आषाड़ मासेर बृष्टि नदी पूर्ण अति।
नौका खेलिते फाकी बोलिलो नृपति।।
साजाइया अनेक नौका राजार साक्षात।
नाना बाद्य सुललित बजिलेक तात।।
चतुर्दोले चड़ि राजा नौकाते गमन।
बाद्य ताले नौका चले हरषित मन।।
छय दण्ड पथ मनु नदी उजाइया।
प्रस्राबेर इच्छा राजा तटे उठे गिया।।
मनु नदी तीरे एक बृहत् शिला छिलो।
सेई स्थाने नरपति प्रस्राबेते गेलो।।

नहीं जाउँगा राजधानी किया यह निश्चय।
किया जो सुख भोग क्या वही हुआ है उदय।।
आषाढ़ मास राजा का हुआ काल उपस्थित।
सभा से गये राजा गृह में त्वरित।।
महादेवी को सम्बोधित करके कहा राजन।
राजधर को अभिसिक्त करूँगा इसी क्षण।।
मनु नामक महा नदी हुई है पृथ्वी पर।
वाचस्पति तीर्थ चिंतामणी सम धरती पर।।
बरबक्र नदी और जहाँ मनु का संगम।
वहाँ स्नान दान करने से होता है पूण्यतम।।
बरबक्र मनु के संगम पर मृत्यु जिसकी होय।
चन्द्रलोक में जाता वह शास्त्र प्रमाण है निश्चय (1)।।
मनु स्नान करने से महापुण्य जो होता है।
रानी से महाराजा तीर्थ फल कहता है।।
रानी को दे प्रबोध राजा आये सभा में।
पात्र मित्र सबको समझाया अपने पूण्य प्रभा में।।
आषाढ़ महीने की वर्षा नदी पानी से पूर्ण।
नौका से खेलते जायेगें पानी कर विदीर्ण।।
सजाकर नाव अनेक राजा के हित उस काल।
नाना वाद्य बज उठे वहाँ यात्रा का वक्त तत्काल।।
चतुर्दोलि चढ़े राजा किया गमन नौका से।
हर्षित मन वाद्य ताल चले जल नौका से।।
छह दण्ड पथ मनु नदी स्रोत के तरफ गति।
पेशाब करने नृप उतरे तीर नदी।।
मनु नदी के तीर एक वृहत शिला को देख।
वहीं पर गये लधुशंका, मिटे न विधि का लेख।।

---

(1) समुद्रस्योत्तरे देशे ततो मनुनदी स्मृतः।
यं गत्वापि महाराजन् पित्वा पानीयमुत्तमं।।
मनुनद्यां महाराज बरबक्रेन संगमं।
तत्र स्नात्वा नरोयाति चन्द्रलोक मनुत्तमः।।

वायु पुराण

तृतीय लहर 47

गोपोने नियाछे राजा आफिंग तखन।
सेई स्थाने नृपे कोरे आफिंग भक्षण।।
नौका खेलि नरपति घरे आइसे पुनि।
दुई प्रहर रात्रि पोरे काल नृपमणि।।
राजधरे तत्व सुनि आसिलो तखन।
अमर दुर्लभ राजपुत्र ना छिलो भुबन।।
कुमार कुमारी पौत्र दौहित्र जतो जन।
मृत राजा बैष्ठित जे कोरोये क्रन्दन।।
स्नान कराइया राजा चौदेले राखिलो।
अमरा देबिये स्नान पोरेते कोरिलो।।
सेई रात्र वीणा यन्त्र त्रिपुरार गीत।
दोगरि सारंग बाजे बंशी सुललित।।
सेई रात्र एई मते गत होईलो निशि।
प्रातः काले देखिलेक सर्ब सैन्य आसि।।
पात्र मित्र गण यतो मिलिया प्रभाते।
राजधर राजा कोरे यथा विधि मते।।
छत्र दण्ड आरंगि धरे शिरो परे।
सुललित बाद्योद्यम होइलो राजपुरे।।
हस्ती अश्व सैन्य जतो अछिलो योगान।
नृपतिके प्रणमिलो सिंहासन स्थान।
राजधर माणिक्य राजा बोइसे सिंहासने।
मृत राजा दहिबारे आज्ञा सेई क्षणे।।
सुबर्ण जड़ित बस्त्र पोइराय राजन।
आगर चन्दन दिया अंगेते लेपन।।
रामनाम लिखिलेक शरीरेर माझ।
चतुर्दोले बोइसे रानी कोरि बहु साज।।
नृप संगे महारानी सहगामी चले।
चरण धरिया रोदन करोये सकले।।
पुत्र पौत्रादि रोदन देखि महारानी।
रोदन देखिये दया जन्मिलो तखनि।।

साथ छिपाकर ले गये थे अफीम।
वहीं स्थान राजा ने भक्षण किया अफीम।।
नौका खेल नरपति आए लौट घर पर।
दो प्रहर रात बीते नृप मरे सुरपुर।।
राजधर सुनकर यह आये तक्षण।
अमर दुर्लभ राज पुत्र नहीं थे भुवन।।
कुमार कुमारी पौत्र दौहित्र जो भी थे स्वजन।
मृत राजा के पास बैठ करते क्रन्दन।।
स्नानोपरान्त राजा को चौदौल पर रखा।
अमरा देवि ने किया स्नान दृश्य है अनोखा।।
उसी रात वीणा यन्त्र पर त्रिपुरा का गीत।
दोगरि सुरंग बजे बंशी सुललित।।
वह रात इसी तरह बीत गई जागते।
प्रातः काल सभी सैन्य देखने आई रोते।।
पात्र मित्र गण आये सभी एक साथ।
राजधर को राजा किया विधिवत प्रयास।।
छत्र दण्ड मुकुट धरे सिर पर।
सुललित वाद्य यन्त्र बजा राजपुर।।
हस्ती अश्व सेना थे खड़े थे वहाँ।
नृपति प्रणाम किया सिंहासन के यहाँ।
राजधर माणिक्य राजा बैठे सिंहासन।
मृत राजा के दाह कर्म हित किया आज्ञा प्रदान।।
सुवर्ण जड़ित वस्त्र पहराये राजा को।
अगर चन्दन का प्रलेप स्वजन को।।
राम नाम लिखा देह के उपर।
चतुर्दौलि में बैठी रानी सज धज कर।।
नृप साथ महारानी चली सहगामी होने।
चरण पकड़ सभी रोयें न सके सहने।।
पुत्र पौत्रादि का रूदन देखकर महारानी।
दया उपजी मन में उनकी देख सभी को रोनी।।

तृतीय लहर 48

ताहा सबे दिते धन रानीर आशय।	उन सभी को धन देना था रानी का आशय।
धन दिले राजधरेर किबा मने होय।।	धन देने से क्या हो राजधर के मन में उदय।।
ए सब चिंतिया रानीर आदेश तखन।	यह सोच हुआ तब रानी का आदेश।
अमर दुर्लभेते दिलो तीन सिन्दुक धन।।	अमरदुर्लभ को दिया तीन सन्दूक धन अशेष।।
पौत्र दौहित्र जतो अछिलेक ताते।	पौत्र दौहित्र जितने भी थे वहाँ।
जने जने दिलो धन ता सभार हाते।।	सबको दिया धन हाथों हाथ जहाँ।
राजधर राजा बोले रानीर बिदित।	राजधर ने कहा तब रानी के सन्मुख।
राजधन आमा सत्व बाटा(1) अनुचित।।	राजधन में सत्व है मेरा बटवाँरा(1) है अनुचित।।
ता सुनि अमराबती कोहिलो तखन।	सुनकर बातें उनकी अमरावती ने कहा।
तोमाके दियाछि राज्य ताके दिलो धन।।	तुमको दिया राज्य और धन उन्हे दिया।।
ताहा सुनि नरपति किछु न बोलिलो।	यह सुन नरपति हो गये खामोश।
चतुर्दोल चालाइते नृपे आदेशिलो।।	चतुर्दोलि उठाने का दे दिया आदेश।।
हस्ती घोड़ा बाण(2) डंका(3) कोरिया साजन।	हस्ती घोड़ा बाण(2) डंका(3) का कर साधन।
छत्र आरंगि निशान राजार भूषण।।	छत्र, अगंरखा, निशान है राजा का भूषण।।
मृत राजा लोइया चले मनु नदी तीरे।	मृत राजा को लेकर चले मनु नदी के तीर।
चिता खनिया राखे श्मशानेर पोरे।।	चिता बनाकर रखा श्मशान के बाद शांत गम्भीर।।
शमशानेते महारानी दान दिते मने।	श्मशान में महारानी ने किया मन स्थिर दान।
बहु यत्ने एक द्विज पाइलो तखने।।	बहु यत्न से द्विज एक मिला उस स्थान।।
यथोचित दान धर्म रानीये कोरिया।	रानी ने किया यथोचित दान धर्म का पालन।
चिता प्रवेशिते जाय हरि नाम लोइया।।	चिता प्रवेश करने से पहले लिया हरि नाम।।
प्रदक्षिण कोरि रानी चिता प्रवेशिलो।	प्रदक्षिण कर रानी ने चिता में किया प्रवेश।
सेई काले हरि ध्वनि लोकेते कोरिलो।।	हरि ध्वनि सबने किया हुआ करूण प्रवेश।।
मुखाग्निर कर्म कोरे अमर दुर्लभ।	अमर दुर्लभ ने किया मुखाग्नि का काम।
शुभ क्षणे जन्म तार वंशेर बल्लभ।।	शुभ क्षण में जन्मा है वह वंश का सुनाम।।
सेई काले महाराजार अग्नि कार्य होय।	उस समय महाराज का हुआ दाह कर्म।
पतिब्रता महारानी पतिलोके जाय।।	पतिव्रता पतिलोक गई पालन कर धर्म।।
यथा विधि श्राद्ध द्रव्य कोरे आयोजन।	यथा विधि श्राद्ध द्रव्य लगे करने आयोजन।
राजा रानीर श्राद्ध कोरे राजपुत्र गण।।	राजा रानी के श्राद्ध करें राजपुत्र गण।।

---

(1) बाटा— भाग करना।
(2) यहाँ बाण का अर्थ है पताका, बाणा।
(3) डंका —नगाड़ा, भेरी।

तृतीय लहर 49

लोकबादे नाजिर बधे कोरि अबिचार।	फैला लोकोपवाद नाजीर वध हुआ अविचार।
अमर माणिक्य मृत्यु लोकेते प्रचार(1)।।	अमर माणिक्य मृत्यु हेतु यहीं हुआ प्रचार।।(1)
राजधर्मे लिखिया छे बिचार राजार।	लिखा राज धर्म में राजा का विचार।
अबिचार कोरे राजा पतन पुनर्बार।।	अविचार करे राजा पतन होगा पुर्नवार।।

राजधर माणिक्य खण्ड	राजधर माणिक्य खण्ड
राम माणिक्य राजा सिद्धांतवागीश स्थाने।	राम माणिक्य राजा गए सिद्धांतवागीश के पास।
राजधर राज्य प्रजा शासिलो केमने।।	राजधर ने शासन किया किस विधि।।
सिद्धांतवागीश कहे सुनो महाराज।	सिद्धांतवागीश कहे सुनो महाराज।
राजधर राजा होइया जे कोरिछे काज।।	राजधर राजा हुआ जिसने किया काम।।
जेई स्थाने राजधर होइलो नरपति।	जिस स्थान का राजधर हुआ नरपति।
सेई छड़ा नाम घरे राज धर ख्याति।।(2)	उस स्थान का नाम हुआ, राजधर ख्याति।।(2)
राजधानी छाड़ा राजा विषादित मन।	राजधानी छोड़ा राजा विषादित मन।
पितृ मातृ शोक भावे राज्येर कारण।।	पितृ मातृ शोक हुआ राज्य के कारण।।
सेई काले एक प्रजा उदयपुर हने।	उस समय एक प्रजा उदयपुर से आयी।
नृपति साक्षाते आसि कहे सेई क्षणे।।	नृपति के सामने आया उसी क्षण।।
मगले(3) छाड़िया गेलो उदयपुर देश।	मग(3) छोड़ गया उदयपुर देश।
शुभ वार्ता पाइया राजा हरिष विशेष।।	शुभ वार्ता मिला राजा हरिष विशेष।।
भ्रातृ मंत्री पुत्र सेना मंत्रणा कोरिया।	भ्रातृ मंत्री पुत्र सेना से मंत्रणा किया।
शुभ दिने चले राजा हर्षित होइया।।	शुभ दिन चले राजा हर्षित हुआ।।

---

(1) मिथ्या घटना के उपर निर्भर कर राजा ने छत्रनाजिर का अन्याय पूर्वक वध करवा दिया। इसी पाप से अमर माणिक्य की मृत्यु हुई है, इस तरह का एक पवाद उठा था।

(2) राजधर छड़ा– पहाड़ी जातिओं के द्वारा अपभ्रंश होकर "राजधर छड़ा" "राजा छुड़ा" और इसक बाद राताछड़ा नाम हो गया मध्यमणि का विवरण देखिए।

(3) पाठातंर–

वार्ता कोइलो गिया से जे कतो भक्ति करि।	वार्ता जाकर कहा उसने इतनी भक्ति करके
मगधे छाडिया गेलो उदयपुर नगरी।।	मगध चले गये उदयपुर नगरी छोड़ के।।

मूलतः मगधे शब्द के बदले मगले लिखा गया है। यह लिपिकार का प्रमाद है। मघ को मगध कहने के बहुत से दृष्टान्त राजमाला में मिलते हैं। मघ को किसी भी जगह मगल नहीं कहा गया है।

तृतीय लहर 50

भाद्रेर प्रथम छिलो कृष्ण पक्ष ताते।	भादों की पहली तिथि कृष्ण पक्ष का काल।
उदयपुर चले राजा महारण्य पथे।।	उदयपुर चले राजा महारण्य पथ तत्काल।।
पर्वतेर जुम(1) धान्य पाके सेई काल।	पर्वत के खेत(1) में धान्य पकने का काल।
नाना फूल फल होय जुमेर माझाँर।।	नाना फूल फल होते जूम खेतों में हर साल।।
खुटि मूड़ा बामे कोरि ध्वज नगर पथे।	खुटि मुड़ा को बाँये रखा ध्वज नगर के पथ पर।
बिशालगड़ होइया चले डोम घाटि ताते।।	विशालगड़ से चले डोम घाटी से होकर।।
उदयपुर आसि राजा प्रवेशिलो पुरी।	उदयपुर आकर राजा प्रवेश पुरी में।
सेलामबाडी बाद्य बाजे(2) जयध्वनि करि।।	सेलाम बाड़ी वाद्य बजे(2) जयध्वनि नगरी में।।
राजधर माणिक्य राज्य शासे सेई क्षण।	राजधर माणिक्य करें राज्य शासन।
सर्बप्रजा आन्नदित थाके अनुक्षण।।	सभी प्रजा आन्नदित प्रतिपल प्रतिक्षण।।
विष्णुमन्त्रेते दीक्षा छिलो महाराज।	विष्णु मन्त्र के लिए दीक्षा थे महाराजा।
परम वैष्णव साधु ना हिसंये प्रजा।।	परम वैष्णव साधु सम थे, न हिंसे कभी प्रजा।।
साधुर चरित्र राजार बैष्णव आचार।	साधु चरित्र था राजा का वैष्णव का आचार।
पात्र मित्र सैन्य वश कोरे आपनार।।	पात्र मित्र सैन्य सभी वश में, द्वारा व्यवहार।।
प्रातः स्नान कोरे सदा पूजये गोपाल।	प्रातः स्नान करे पूजें सदा गोपाल।
पंच पात्र अन्नदान कोरे सदा काल।।	पंच पात्र अन्न दान करते प्रातः काल।।
सार्बभौम बिरिचिं नारायण दुई जन।	सार्ब भौम, विरिंचि नारायण थे दो जन।
राज पुरोहित तारा शास्त्रे विचक्षण।।	राजपुरोहित थे वे दोनो, शास्त्रों में विलक्षण।।
एक पात्र चन्ताई(3) जे पाये अन्नदान।	एक पात्र चन्ताई(3) पाये उनसे अन्नदान।
दुई पुरोहिते पाये दुई अन्न स्थान।।	दोनो पुरोहित पावें दो अन्त स्थान।।
आर दुई पात्र अन्न अन्य द्विजे पाइछे।	और दो पात्र अन्न अन्य द्विज को मिलता।
कपिलार(4) ग्रास राजा प्रतिदिन दिछे।।	कपिला(4) धेनु को ग्रास प्रतिदिन राजा देता।

---

(1) जुम –त्रिपुर आदि पहाड़ी जातिओं का कृषि क्षेत्र। जुम कृषि उपज में कर प्रणाली बाद में मध्य मणि में लिखि गई है।

(2) राजा को सलाम करने के समय, त्रिपुर जातीय वादक द्वारा ''सेलाम बाड़ी'' या हिन्दी में सलाम घर में से ही वाद्य बजाने का नियम था।

(3) चन्ताई – पहाड़ी जाति के पुरोहित को चन्ताई कहा जाता था और अब भी यही कहा जाता है।

(4) कपिला – कामधेनु। इसकी उत्पत्ति का विवरण दिया जाता है–

''दक्षस्यतनया याभूत् सुरभिर्नाम नामतः।
गबां माता महाभागा सर्वलोकोपकारिणी।।

तृतीय लहर 51

पोरे राजा मन्त्री लोइया सभाते बोइसय। राजा मंत्रियों को ले राज सभा बैठते।
भोजन कोरे राजा दुई प्रहर समय।। दो प्रहर दिवस समय भोजन कर लेते।।
एई मत राजधर्म छिलो नृपतिर। इस तरह राजधर्म पालन करते नृपवर।
शांत दांत महाराजा प्रजा राखे स्थिर।। शांत दांत महाराजा प्रजा राखे स्थिर।।
भागवत नित्य राजा कोरेन श्रवण। भागवत नित्य राजा करते श्रवण।
आनन्द ह्रदय राजा पुलकित मन।। आनन्द ह्रदय राजा पुलकित मन।।
दुई शत भट्टाचार्य सभाते राजार। दौ सौ भट्टाचार्य थे राज सभा में उनके।।
समाइ स्थाने जिज्ञासिया कोरे व्यवहार।। पूछ सभी से चलते थे स्वच्छ ह्रदय थे उनके।।
राजा बोले मानब जन्म होय कि ना होय। राजा बोले मानव जन्म, पता नहीं पुनः होगा।
अहर्निशि हरि–कीर्तन सुनिबो निश्चय।। अहर्निश हरि कीर्तन निश्चय ही है सुनना।।
नृपतिर वाक्य सुनि भट्टाचार्य सबे। नृपति का वाक्य सुन सभी भट्टाचार्य।
सार्बभौम आदि जतौ कहिलेन तबे।। सार्व भौम आदि सबने कहा यह यर्थात।।
जे बोलिला महाराजा अयुक्त ना होय। यह कहकर महाराज जैसे न हो अयुक्त।
हरि–कीर्तनेते सर्ब पाप होय क्षय।। हरि कीर्तन से होगें सभी पापों से विमुक्त।।
एखने उचित नहे हरि संकीर्तन। अभी यह उचित नहीं हरि संकीर्तन।
बृद्ध होइले हरि कीर्तन सुनिबा राजन।। वृद्ध होने पर हरि कीर्तन सुनोगे राजन।।
सार्ब भौम वाक्य जबे नृपति सुनिलो। सार्व भौम वाक्य जब सुना नृपति ने।
बिनय कोरिया राजा कोहिते लागिलो।। विनय सहित राजा लगे कहने।।
मृत्यु होइले हरिपद पाय जेई जन। मृत्यु पश्चात् हरिपद पाया जो जन।
बहुकाल पृथिबीते किबा प्रयोजन।। बहु काल पृथ्वी में उससे क्या प्रयोजन।।
एई मने कोरि राजा आरम्भे कीर्तन। यह सोच राजा आरम्भ किया संकीर्तन।
शुभ दिने संकल्प होईलो आबाहन।। शुभ दिन देख संकल्प ले किया आवाहन।।
रात्रि दिबा अहर्निशि हरिर कीर्तन। दिवा रात्रि अहर्निश हरि संकीर्तन।
कीर्तनीया आष्ट जन पाइछे बेतन।। कीर्तनिया आठ जनों को मिला वेतन।।

....

तस्यान्तु तनया यज्ञे कश्यपात्तु प्रजापतेः।
नाम्ना सा रोहिणी शुभ्रा सर्वकामदुधा नृनाम्।।
तस्यां यज्ञे शुर सेनाद्दसो रातित पोज्जवलात्।
कामधेनुरिति ख्याता सर्वलक्षण संयुता।।

कामधेनु की सेवा, कामधेनु का दान इत्यादि पुण्य कर्मो के फल वन्हि पुराण, कालिका पुराण बाल्मीकी रामायण, महाभारत एवं दान सागर इत्यादि ग्रन्थों में दिया गया है।

तृतीय लहर 52

कीर्तनीया बरात काउया बासा(1) घाटे।	कीर्तनियों का था काउया बासा(1) घाट।
बेतन पाइया कीर्तन कोरे परिपाटे।।	वेतन पाकर कीर्तन करते दिन प्रहर आठ।।
सम्बत्सर पितृ श्राद्ध कोरे महाराज।	सम्बत्सर पितृ श्राद्ध करें महाराज।
अहोरात्र कीर्तन होय राजगृह माझ।।	अहोरात्र कीर्तन का राज गृह साज।।
दश द्विज श्राद्ध काले गोपाल मंत्र(2) जपे।	दस द्विज श्राद्ध काल में गोपाल मंत्र(2) का करे जाप।
जाबत समापन होय श्राद्धेर समीपे।।	जप समापन होता श्राद्ध के समीप।।
श्राद्ध समापिया राजा उठये जखन।	श्राद्ध समापन कर राजा उठे जिस क्षण।
ब्राह्मनेते दिछे दान प्रति जने जन।।	ब्राह्मणों को दिया दान जन प्रति जन।।
ब्राह्मण भोजन होइले राजार भोजन।	ब्राह्मण भोजनोपरान्त राजा का भोजन।
दक्षिणादि दिया बिदाय कोरे द्विजगण।।	दक्षिणादि देकर विदा करें सभी द्विज गण।।
एई मते राजधर्म कोरे राजधर।	इस तरह राजधर्म करें राजधर।
पुत्रबत प्रजापालन कोरे निरन्तर।।	पुत्रवत प्रजा पालन करें निरन्तर।।
क्रमे क्रमे महाराजा ज्ञानेर विशेष।	क्रमशः महाराज हुए ज्ञान में विशेष।
दान धर्म कोरिबारे मन्त्रीते आदेश।।	दान धर्म करने हेतू दिया मन्त्री को आदेश।।

---

(1) काउया बासा नामक बनकरघाट के समीप कीर्तनियों के वेतन लेने की व्यवस्था की गई थी। वहीं से इन्हें वेतन मिलता। वर्तमान में इस नाम की कोई जगह नहीं है। सम्भवतः नाम बदल गया है।

(2) गोपाल मन्त्र– नंद नंदन श्री कृष्ण के बाल्यावस्था का नाम गोपाल है। श्री कृष्ण ने गोपाल के स्वरूप के विषय में व्यास देव को जो कहा था उसे ही गोपाल नाम का गुरूत्व एवं महात्म्य की उपलब्धि हो सकती है। श्री भगवान ने कहा है–

गोपाल मुनयः सर्वे बैकुण्ठानंद मूर्तयः।

पद्म पुराण – पाताल खण्ड़।

श्राद्ध काल में धर्म शास्त्र एवं पुराणोतिहास की आलोचना करना शास्त्र सम्पन्न कार्य है। यथा–

"स्वाध्यायां श्रावयेदेषां धर्मशास्त्राणि चैव हि।
इतिहास पुराणानि श्राद्ध कल्पांश्च शोभनान्।। "

कूर्म पुराण 21 अध्याय।

मत्स्य पुराण में भी इस विषय में उल्लेख है। एतद्नुसार श्राद्ध मंड़प में श्रीमद्भागवत गीता एवं विराट पर्व का पाठ करने की व्यवस्था भी है। वैष्णवों के श्राद्ध काल में श्री श्री नाम संकीर्तन एवं गोपाल मंत्र जप करना श्राद्ध का अंगीभूत कार्य है। पद्म पुराण, तन्त्र सार, अनन्त संहिता, हरि भक्ति विलास, गौर गणोपदेश दीपिका इत्यादि ग्रन्थों में गोपाल और द्वादश गोपाल के स्वरूप और गोपाल मन्त्र का उल्लेख है।

तृतीय लहर 53

महादान(1) कोरिबार कोरे आयोजन।	महादान(1) करने हेतू किया आयोजन।
तुला पुरूष(2) आदि दान कोरे सेई क्षण।।	तुला पुरूष(2) आदि दान करे उसी क्षण।।
आर जतो कोरे दान बलिबेक कोतो।	और जितने दान हुए कहूँ कहाँ तक।
द्विज गणे दिलो दान यथा विधि मतो।।	द्विजों जो दिया दान यथा विधिवत्।।
नृत्यगीत संकीर्तन महोत्सव होय।	नृत्य गीत संकीर्तन का हुआ महोत्सव।
विष्णु मंदिर दिते राजार मनेर आशय।।	विष्णु मंदिर निर्माण राजा इच्छा का उदभ्व।।
निर्मिलो मंदिर एक विचित्र आकार।	हुआ निर्माण मंदिर एक विचित्र आकार।
विष्णु प्रीते उत्सर्गिलो स्वहस्ते राजार।।	विष्णु प्रीत्यर्थ उत्सर्ग किया हर्ष अपार।।
दीधि पुष्करिणी राजा दिलो स्थाने स्थान।	दीर्धिका, पुष्करिणी राजा ने बनवाया कई स्थान।
बाग बगिचा पुष्पेर कोरिलो उद्यान।।	बाग बगीचा और फूलों का किया उद्यान।।

---

(1) महादान तुला पुरूषादि षोडस दान को महादान कहा जाता है। हेमाद्रि के दान खण्ड़ के मतानुसार नीचे दिये गये सोलह प्रकार के दान को महादान कहा जाता है।

"आद्यन्तु सर्व दानानां तुलापुरूष संगितम्।
हिरण्यगर्भदानचं ब्रम्हाण्डः तदनन्तरम्।।
कल्प पादप दानंच गो सहस्रन्तु पंचमम्।
हिरण्य कामधेनुश्च हिरण्याश्वस्तथैव च।।
पंचलांगलकं तद्वद्धरादानन्तथैव च।
हिरण्याश्व रथस्तद्वद्धेमहस्तिरथस्तथा
द्वादशं विष्णुचक्रंच ततः कल्पलतात्मकम्।।
सप्तसागर दानंच रत्नधेनुस्तथैव च।
महाभूत घटस्तद्वत् षोड़शः परिकीर्तितः।।

मलमास तत्वघृत मत्स्य पुराण।

1. तुला पुरूष दान 02. हिरण्य गर्भ 03. ब्रह्माण्ड दान 04. कल्प पादप दान 05. गोसहस्रदान 06.हिरण्य कामधेनु दान 07.हिरण्याश्व 08. पंचलांगलक 09. धरादान 10. हिरण्याश्व रथ 11. हेम हस्ति रथ 12. विष्णु चक्र 13. कल्पलता 14. सप्त सागर दान 15. रत्न धेनु 16. महाभूत घट दान– यही षोड़स प्रकार के महादान हैं।

कूर्मपुराण के मतानुसार निम्न लिखित दस दान को महादान कहा जाता है–

"कनकाश्वतिला गाबो दासीरथ महीगृहाः।
कन्या च कपिला धेनुर्महादानानि बै दश।। "

मलमास तत्वघृत कूर्मपुराण।

01. कनक	02.अश्व	03. तिल	04. गो 05. दासी
06. रथ	07. मही	08. गृह	09. कन्या

10. कपिला धेनु। इस दसों प्रकार के दानों को भी महादान कहा जाता है।

(2) तुलापुरूष– अपनी देह के तुल्य वजन का स्वर्ण, रोप्यादि दान करना। द्वितीय लहर 59पृ में पादटीका में इस विषय में विशद विवरण मिलेगा।

तृतीय लहर 54

एई मते सुखे भोगे कोतो दिनो जाय।
गौड़ैश्वरे नृप बार्ता सेई काले पाय।।
अमर माणिक्य स्वर्ग प्राप्ति पोरे।
तान पुत्र राज धर नृप अभ्यंतरे।।
बहुतर मस्त हस्ती आछये राजार।
घोटक बहुल नृपरे संख्या नाहि तार।।
बहु सैन्य धन रत्न आछये बिस्तर।
ब्राह्मणेते दान राजा कोरे निरन्तर।।
एहा सुनि गौड़ेश्वर चमकित मन।
कि मते काड़िया निब राज हस्ती धन।।
बहु सैन्य पठाइलो उदय नगरी।
द्वादश बांगला दिलो सैन्य सम्भ्यारी।।
एई मते गौड़ सैन्य कोरिया साजन।
कैलागड़े युद्ध जन्य आसिलो तखन।।
युद्ध वार्ता पाइया राजा सैन्य नियोजिलो।
सेनापति चन्द्रदर्प युद्धेते रहिलो।।
बहु सैन्य लोइया चन्द्रदर्प नारायण।
कैला गड़े गिया कोरे युद्ध आरम्भन।।
नृपतिर सैन्य दैखि गौड सैन्यगण।
भय युक्त गौड़ सैन्य कि कोरिबे रण।।
पृष्ठ भंग गौड़ सैन्य दिलो अकस्मात्।
राज सैन्य धाबमान ताहार पश्चात्।।
राजधर माणिक्य राजा अति पूण्यबान।
बिना युद्धे गौड़ सैन्य भंग दिलो स्थान।।
गौड़ सैन्य दूर कोरि चन्द्रदर्प आइसे।
गौड़ सैन्य कहे प्राण बाँचिलो विशेषे।।
चन्द्रदर्प आसि बोले नृपेर साक्षात।
गौड़ सैन्य दूर कोरि आसिलो पश्चात्।।
जे मते कोरिलो युद्ध सब विवरण।
कैला गड़े थाना राखि आसिछे एखन।।

इस तरह सुख भोगते बीते कितने दिन।
नृप वार्ता इस समय पँहुची गौड़ेश्वर पास।।
अमर माणिक्य स्वर्ग सिधारने के बाद।।
उनका पुत्र राजधर राजा हुआ पश्चात्।।
बहुत से मस्त हस्ती हैं उनके पास।
अश्व बहुतेरे नृप की संख्या उनकी अशेष।।
बहु सैन्य धन रत्न है उनके पास अपार।
ब्राह्मणों को दान करते नित्य बारंबार।।
यह सुन गौड़ेश्वर का चमकित मन।
सोचा कैसे हड़पूँ मैं राज हस्ती धन।।
बहुत सी सेना भेजी उदय नगरी।
द्वादश बंगला ने दिया सैन्य भारी।।
इस तरह गौड़ सेना का करके संयोजन।
कैला गढ़ में युद्ध हेतू फौज गई उसी क्षण।।
युद्ध वार्ता पाकर राजा ने किया सैन्य संयोजन।
सेनापति चन्द्रदर्प रहे सेना के संचालन।।
विशाल सेना लेकर गये चन्द्रदर्प नारायण।
कैला गढ़ में करने गये भीषण रण।।
नृपति की सेना देख गौड़ सेना गण।
भय युक्त हुई गौड़ सैना करे कौन रण।।
पृष्ठ प्रदर्शन किया गौड़ सेना ने अकस्मात्।
राज सैन्य धावमान हुई उनके पश्चात्।।
राजधर माणिक्य राजा अति पूण्यवान।
बिना युद्ध गौड़ सेना कर गई पलायन।।
गौड़ सैन्य खदेड़ चन्द्रदर्प लौट आए।
गौड़ सैन्य ने कहा प्राण लेके लौट आए।।
चन्द्रदर्प ने आकर कहा राजा के यहाँ।
गौड़ सैन्य भगा दिया हमने वहाँ।।
जिस तरह से किया युद्ध सभी विवरण।
कैलागढ़ में थाना रखकर दिया संरक्षण।।

तृतीय लहर 55

चन्द्रदर्प नारायण कोरे निवेदन।	चन्द्रदर्प नारायण करें निवेदन।
ताहा सुनि नरपति हरषित मन।।	सुन बातें उनकी नृप का हुआ हर्षित मन।।
राजधरमाणिक्य राजा पूण्य आख्यायन।	राजधरमाणिक्य राजा पूण्य आख्यान।
तानकाले दुर्भिक्ष जे ना छिलो कखन।।	उनके रहते हुए दुर्भिक्ष नहीं हुआ उस क्षण।।
विष्णु पारायण राजा राजधर्म(1) मति।	विष्णु भक्ति परायण राजा राजधर्म(1) मति।
अधर्म नाहिक कभु ताहान सुख्याति।।	अधर्म कभी नहीं हुआ, थी उनकी सुख्याति।।
तान काले प्रजा सब धर्म परायण।	उनके समय प्रजा सभी थी धर्म परायण।
प्रजा सबे कोरे धर्म जार जेई मन।।	प्रजा सभी पालती जिसका जैसा मन।।
नाना सुखे प्रजा सब बंचे सेई काल।	नान सुख से प्रजा रही उस काल।
प्रजार ना कोरे दण्ड सुखे गेलो भाल।।	प्रजा को न देते दण्ड रखते थे खुशहाल।।
एई रूपे द्वादश बत्सर यदि होय।	इसी तरह जब द्वादश वर्ष जब बीत गया।
काल पूर्ण होइलो राजा बुझिलो निश्चय।।	काल पूर्ण हुआ ऐसा राजा के मन आया।।
प्रतिदिन प्रदक्षिण बिष्णुर मंदिर(2)।	प्रतिदिन विष्णु मंदिर(2) प्रदक्षिण।
विष्णु पादोदक ग्रहण(3) होय नृपतिर।।	रोज करते थे विष्णु पादोदक(3) ग्रहण।।

(1) राजधर्म– राजा का धर्म या कर्तव्य। राजनीति के अनुसार प्रजा का पालन करने से ही राज धर्म की रक्षा होती है। मन्वादि विधि शास्त्र ग्रन्थों में एवं महाभारत के शान्ति पर्व में, काली पुराण के 85 से 86 अध्याय में, पद्म पुराण, स्वर्ग खण्ड के 138 अध्याय में राजधर्म विषयक अनेक बातें है। यहाँ पर उनकी आलोचना असम्भव भी है।

(2) प्रदक्षिणा –देवता प्रदक्षिणा के विषय में शास्त्रीय व्यवस्था नीचे दी जा रही है–

"प्रदक्षिणां ये कुर्वन्ति भक्तियुक्तेन चेतसा।
न ते यमपुरं यान्ति यान्ति पूण्यकृतां गतिम्।।
षस्त्रिः प्रदक्षिणं कुर्यात् साष्टागंक प्रणामकम्।
दश्वाश्वमेघस्य फलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।

हरि भक्ति विलास।

अर्थात– भक्ति युक्त चित से देवता का प्रदक्षिण करने से उनका कभी भी यमपुर दर्शन नहीं होता। तीन बार प्रदक्षिण और साष्टांग प्रणाम करने से दस अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।

हरि भक्ति विलास में देवता प्रदक्षिण विषयक और भी अनेक तथ्य हैं। इसके अलावा कालिका पुराण के 71 अध्याय में, तन्त्र सार ग्रन्थ में एवं कर्मलोचन प्रभृति ग्रन्थों में देवता प्रदक्षिणा की प्रणाली और उसके फल का विशद् वर्णन मिलता है।

(3) पादोदक चरणामृत का दूसरा नाम है पादोदक। देवता के पादोदक ग्रहण का अमोघ फल का वर्णन नाना शास्त्रों में मिलता है। पद्म पुराण के अनुसार–

"हृदिरूपं मुखे नाम नैवेद्यमुदरे हरेः।
पादोद्कचं निर्माल्यं मस्तके यस्य सोऽच्युतः। "

पद्म पुराण उत्तर खण्ड 100 अध्याय।

अर्थात– जिसके हृदय में हरिरूप जागरूक है, मुख में नाम, उदर में नैवेद्य और पादोदक है एवं मस्तक में निर्माल्य है वह स्वयं अच्युत स्वरूप है।

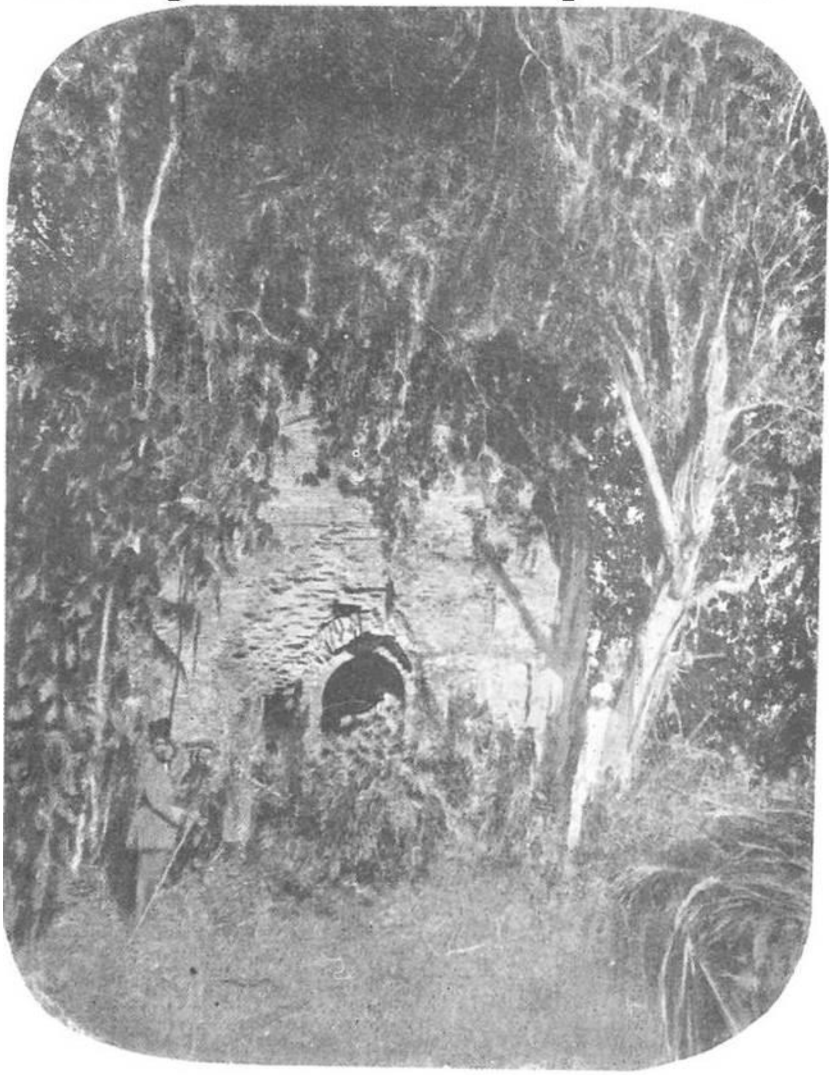
तृतीय लहर 56

महाराजा पूण्यबान छिलो अतिशय।	थे महाराजा पूण्यवान महा।
विष्णु गृहे गैलो राजा से तो समय।।	विष्णु गृह गए राजा उस समय वहाँ।।
विष्णु पादोदक बहु कोरिया भक्षण।	विष्णु पादोदक का किया पान।
प्रदक्षिण कोरे राजा आनन्दित मन।।	प्रदक्षित करे राजा आनन्दित मन।।
प्रदक्षिण कोरे राजा नाचिते नाचिते।	प्रदक्षिण करें राजा घूमते घूमते।
भाबेते बिह्बल राजा होइलेक ताते।।	भाव विह्वल राजा प्रदक्षिण करते।।
गोमती नदीर तीरे विष्णुर आलय।	गोमती नदी तीर जहाँ विष्णु मंदिर।
भावेते बिह्बल होइया राजा नदीते पड़ोय।।	गिरे नदी में राजा विह्वल भाव गम्भीर।।
राम नाम लोइया राजा नदीते पतन।	राम नाम लेकर राजा का नदी में पतन।
देह त्याग होय राजा बैकुंठे गमन।।	देह त्याग राजा का हुआ बैकुंठ गमन।।
राजपुत्र यशोधर आर मंत्रीगण।	राजपुत्र यशोधर और मन्त्रीगण।
मृत राजा बेष्ठित सब कोरोये क्रन्दन।।	मृत राजा, बैठे सभी करे क्रन्दन।।
स्नान कोराइया राजा चतुर्दोले राखे।	स्नान करा राजा को चतुर्दोलि रखा।
राज आभरण शोभे राम नाम लिखे।।	राज पर आभरण शोभे राम नाम लिखा।।
सर्व सैन्य बैष्ठित चले नृपति लोइया।	सभी सैन्य बैठे चले, नृप को लेकर।
बैकुण्ठ पुरेते(1) नृप संस्कार कोरिया।।	बैकुण्ठपुर(1) में नृप का संस्कार किया।।
दाह संस्कार पोरे आइसे सर्वजन।	दाह संस्कार के बाद आए सभी जन।
यथाविधि कोरिलेक श्राद्ध आयोजन।।	यथा विधि किया श्राद्ध आयोजन।।
सार्वभौम भट्टाचार्य द्वारेर पंडित।	सार्वभौम भट्टाचार्य थे द्वार पंडित।
शास्त्रे विचक्षण सेई राजपुरोहित।।	शास्त्र विचक्षण वही थे राज पुरोहित।।
ताहार आदेश क्रमे श्राद्ध आयोजन।	उनके आदेश से हुआ श्राद्ध आयोजन।
यथाविधि कोरिलेक द्रव्य संगठन।।	यथा विधि किया द्रव्य संगठन।।
राजपुत्र यशोधर श्राद्ध आरंभिल।	राजपुत्र यशोधर ने किया श्राद्ध का आरम्भ।
यथाविधि क्रमे दान प्रत्येके कोरिलो।।	सभी को दान किया यथा विधि क्रम।।

स्कन्द पुराण, नृसिंह पुराण एवं हरि भक्ति विलास आदि ग्रन्थों में पादोदक का बड़ा महात्मय वर्णन किया गया है। विस्तार भय से इसका वर्णन यहाँ नहीं हो सका।

(1) उदयपुर राज परिवार के समाधि क्षेत्र को बैकुण्ठपुर नाम से पहचाना जाता है।

तृतीय लहर–56



महाराज राजधर माणिक्य का विष्णु मन्दिर

तृतीय लहर 57

भूम्यादि षोड़श दान(1) कोरे विधि मोते।
बृषोत्सर्ग(2) हस्ती घोड़ा दान बहु ताते।।
एईमते राज–श्राद्ध होइलो समापन।
ब्राह्मण विदाय कोरे दिया बहु धन।।
राजा हीन राज्य प्रजा रहिवे केमने।
राजा बिने राज्य स्थिर ना होय कोखने।।
मन्त्री लोइया राज सैन्य कोरोये मन्त्रणा।
कोतो दिने राजा हाबे कोरोये गणना।।

भूम्यादि षोड़श दान(1) किया विधिवत।
वृषोत्सर्ग(2) हस्ती घोड़ा बहु दान रीतिवत।।
इसी तरह राज श्राद्ध हुआ समापन।
ब्राह्मण विदा करें देकर बहु धन।।
राजा हीन राज्य प्रजा रहे कैसे अभी।
राजा बिना राज्य स्थिर न रहता कभी।।
मन्त्री लेकर राज सैन्य करें मन्त्रणा।
कितने लगेगें राजा बनने, करे गणना।।

यशोधर माणिक्य खण्ड

नृपतिरपुत्र यशोधर नारायण।
मंत्री कहे ताके राजा कोरिबो एखन।।
पनर श तेरो शक होइलो जखन।
राजधर राजपुत्र होइलो राजन।।
तान पुत्र यशोधर होइलेक राजा।
पात्र मित्र मंत्री बश करे सैन्य प्रजा।।

यशोधर माणिक्य खण्ड

नृपति पुत्र यशोधर नारायण।
मंत्री कहे उन्हे राजा करना है इसी क्षण।।
पन्द्रह सौ तेरह शक हुआ जिस दिन।
राजधर नामक पुत्र राजा हुए उसी क्षण।।
उनके पुत्र यशोधर फिर हुए राजा।
पात्र मित्र मंत्री वश करे सैन्य प्रजा।।

---

(1) शुद्धि तत्व के अनुसार भूमि, आसन, जल, वस्त्र, दीप, अन्न, ताम्बुल, छत्र, गंध, माला, फल, शया, पादुका, धेनु, हिरण्य और रजत ये सभी वस्तुएँ षोड़श दान में आती है।

(2) मृत व्यक्ति की आत्मा के कल्याण कामना से श्राद्ध स्थल पर जिन चीजों दान इत्यादि क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं उनमें वृषोत्सर्ग को एक प्रधान क्रिया के रूप में माना गया है।

शुद्धि तत्व के अनुसार – अशौचांताद्वितीयेऽह्नि अस्यनोत्सृज्यते बृषः।
न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा दत्तैर्श्राद्ध शतैरपि।।

अर्थात– अशौचांत के दूसरे दिन जिसके उद्‌देश्य हेतु वृष उत्सर्ग नहीं किया गया हो, उसके उद्‌देश्य से सैकड़ो श्राद्ध करने से भी उसकी निष्कृति नहीं है। अर्थात जिस प्रेत के लिए वृषोत्सर्ग नहीं किया जाता है उसकी प्रेत लोक में गति होती है। एक मात्र वृषोत्सर्ग ही स्वर्ग प्राप्ति का उपाय है। बिना ब्याई गाय उत्सर्ग करना उचित है। शास्त्र में वृष या बत्सत्तरी(बछिया) का लक्षण भी दे दिया गया है।

शुद्धि तत्व, वृषोत्सर्ग तत्व, मत्स्य पुराण पृभति ग्रन्थों में वृषोत्सर्ग का फल, कार्य प्रणाली और अन्यान्य विवरण दिया गया है।

तृतीय लहर 58

शिष्टेर पालन कोरे दुष्टेर संहार।
पितृ पितामह क्रमे बैष्णव आचार।।
राज राज्ये प्रजा सबे सुखेते बांचिलो।
राज उपद्रब नृपेर किछु नाहि छिलो।।
पुत्रबत पालन प्रजा कोरे आपन।
सुख्याति होइलो राजार मधुर बचन।।
  एई मते कोतो दिन बंचिलो राजन।
तार पोरे जेबा होइलो कहिबो एखन।।
होसन साहा नामे छिलो मघ नरपति।
यश माणिक्य संगे बहु छिलो प्रीति।।
मघ सने प्रीति राजार होइलो जखनि।
राज्य उपद्रब प्रजार घुचिलो तखनि।।
  पूर्बे भुलुयार राज्य राजार आमल।
यश माणिक्यावधि ना मिले सकल।।
भुलुयार जमींदार गन्धर्ब नारायण।
सुर बंशे जन्मतार अति विचक्षण।।
यशमाणिक्य राजा चिंतिलो तखन।
भुलुया नाहि मिले किसेर कारण।।
बहु सैन्य निजु जिलो भुलुयार रणे।
भुलुयाते युद्ध जय होइलो सेई क्षण।।
पराजय होइया गन्धर्ब नारायण।
नृपति साक्षाते आसी मिलिलो तखन।।
भुलुयार राज्य लुटे जतो सैन्य गण।
भुलुया राजेते जन ना राखे तखन।।
एई मोते राज्य आमल कोरे दिने दिने।
यश माणिक्य राजा सर्ब सैन्य सने।।
पात्र मित्र सेना राजा कोरोए पालन।
दान धर्म कोरिबारे होइलेक मन।।
प्रासाद पुष्कर्णी दिधी दिलो स्थाने स्थान।
विष्णुप्रीते उत्सर्गिलो होइया दिब्य ज्ञान।।

शिष्ट का पालन करे दुष्टों का संहार।
पितृ पितामय क्रमे वैष्णव आचार।।
विभिन्न राज्यों में प्रजा रही सभी सुख से वंचित।
राज उपद्रव नृप के यहाँ हुई नहीं अब तक।।
निज पुत्र की तरह करें प्रजा का पालन।
सुख्याति फैली लेकर नृप के मधुर बचन।।
  इसी तरह कुछ दिन आपदा वंचित रहे राजन।
इसके बाद जो हुआ कहता हूँ इस क्षण।।
होसन साहा नामक था एक मघ नरपति।
यश माणिक्य साथ थी बहु प्रीति।।
मघ साथ राज प्रीति हो गई जब से।
राज्य उपद्रव प्रजा का रूक गया तब से।।
  पहले भुलुया का राज्य राजा के समय।
यशमाणिक्य से किसी विधि न मिला।।
भुलुया का जमींदार गन्धर्व नारायण।
सुर वंश में जन्मा है उनका अति विचक्षण।।
यश माणिक्य राजा तब सोचा अपने मन।
भुलुया नहीं मिला है हमें, क्या कारण।।
बहुत सैन्य का किया संयोजन रण में।
भुलुया के साथ रण हुआ उस क्षण।।
पराजित होकर गंधर्व नारायण।
नृपति के साथ आकर मिला उसी क्षण।।
भुलुया का राज्य लुटी सेनाएँ।
भुलुया राज्य में न रखा अपना जन राजा ने।।
इसी तरह राज्य शासन करें दिनो दिन।
यश माणिक्य राजा से खुश सभी सैन्य गण।।
पात्र मित्र सेना राजा करते थे पालन।
दान धर्म करने में लगा उनका मन।।
प्रासाद पुष्कर्णी जलाशय दिया हर स्थान।
विष्णु प्रीत्यर्थ उत्सर्ग किया पाया दिव्य ज्ञान।।

तृतीय लहर 59

पनेरो श चौब्बीस शके(1) यश राजा होइलो।	पन्द्रहसौ चौबीस(1) शक में राजा हुए यश।
जेनो मत नाम राजा सेई ख्याति होईलो।।	तथा नाम तथा ख्याति फैला दिया यश।।
तार पर मघ राजा होसन साहा सने।	इस पर मघ राजा होसन साह संग।
तार संगे बैरी–भाव जन्मिलो तखने।।	उसके साथ बैरी भाव जन्मा उसी क्षण।।
ए सब बृतान्त सकल कहिते बिस्तार।	ये सभी वृतान्त कहने को सविस्तार।
संक्षेपे कोहिलो जाहा किछु जाहा ब्यबहार।।	कहा संक्षेप जो कुछ हुआ था व्यवहार।।
हेनो मते एकबिंश बत्सर बंचिलो।	इसी तरह बीता उनका इक्कीस साल।
यश माणिक्य राजार राज्य भोग होइलो।।	यश माणिक्य राजा का गुजरा भोग काल।।
बिधातार नियोजित दैबेर घटन।	विधाता का नियोजित दैव का घटन।
दिल्लीश्वर साहासिलिम सुनिलो तखन।।	दिल्लीश्वर शाह सलीम ने सुना विवरण।।
त्रिपुर राजार हस्ती घोटक बहुतर।	त्रिपुर राजा के यहाँ हैं हस्ती घोड़े अनगिनत।
दूत मुखे सुने साहासिलिम सत्वर।।	दूत मुख सुना शाह सलीम विधिवत्।।
फते जंग नबाब युद्धेते चले रंगे।	फते जंग नबाब चले भरा युद्ध रंग।
प्रधान उमरा दुई दिलो तार संगे।।	प्रधान उमराह दो चले उनके संग।।
इस्पिन्दार नुरूल्या नामे युद्ध सेनापति।	इस्पिन्दार नुरूल्या नाम हुए युद्ध सेनापति।
सैन्य संगे चले फतेजंगेर संहति।।	फते जंग के साथ चली उनकी संहति।।
दिल्ली होते सैन्य सब ढाकाते आसिलो।	दिल्ली सैन्य सभी ढाका आ गयी।
द्वादश बांगाला सैन्य संगेते लोइलो।।	द्वादश बंगला सेना को भी साथ लाई।।
फते जंग नवाब ढाकाते रहिलेक।	फते जंग नवाब रह गया ढाका में ही।
इस्पिन्दार नुरूल्या सैन्य पाठाइलेक।।	इस्पिन्दार नुरूल्या भेजा सैन्य तुरन्त ही।।
तार संगे बंग सैन्य पाठाय सेई क्षण।	उसके साथ बंग सैन्य भेजा उसी क्षण।
उदयपुरे आसि तारा करिबारे रण।।	उदयपुर करने आई सैन्य महारण।।
दुई भाग होइया सैन्य चलिलो तखन।	दो भागों में बँटकर सेना चली उसी दम।
इस्पिन्दार सैन्य समे कैलाते गमन।।	इस्पिन्दार सेना साथ किया कैला में गमन।।
मृजा नुरूल्या खाँ चले सैन्येर सहित।	मिर्जा नुरूल्या खाँ चले सेना साथ।
मेहेरकुलेर पथे होइया हरषित।।	होकर हर्षित चले मेहेरकुल के पथ।।
दुई पथे दुई सैन्य थाना कोरि रहे।	दो राहों से दो सेनाएँ चली घेरे थाना।
यशमाणिक्य तत्व पाइलेक ताहे।।	यश माणिक्य सारी बातों को तभी सुना।।

---

(1) यहाँ समय निर्धारण को लेकर राजमाला के रचियता किंवा नकल कर करके भ्रम हुआ है। मध्यमणि में इस विषय को लेकर आलोचना की जायेगी।

तृतीय लहर 60

आपनार सैन्य राजा आनिया साक्षात।	अपनी सेना राजा ने कर दिया उपस्थित।
दुई भाग कोरि सैन्य पाठाय पश्चात्।।	दो भागों में कर विभक्त भेजा पश्चात्।।
चण्ड़ीगडे कोतो सैन्य छकड़िया कोतो।	चण्ड़ीगढ़ सेना रही, अश्व गाड़ी भी कितनी।
दुई भागे पाठाय सैन्य नृपतिर जतो।।	दो भागों में भेजा सैन्य नृपति की थी जितनी।।
सेनापति दुई भाग कोरे सेई क्षण।	सेनापति भी दो भागों में बाँटा उसी क्षण।
दुई गड़े रहिलेक सेनापति गण।।	दोनों गढ़ में सेनापति रहे दोनों जन।।
हेनो मते राज सैन्य गड़े रहे गिया।	इसी तरह राज सेना जाकर रही गढ में।
सेई काले नृप दूत दिलो पाठाइया।।	उसी समय नृप ने दूत भेजा शत्रु गढ़ में।।
पत्र लिखिलो राजा मगलेर स्थान।	पत्र लिखा राजा ने मुघलों के संस्थान।
कि कार्ये आसिछो लिखो आमा विद्यमान।।	किस कार्य आये हो यहाँ लिख भेजो तत्क्षण।।
राजपत्र पाइया से जे मगले लिखिलो।	राज पत्र पाकर मुघलों ने लिखा तुरन्त।
दिल्लीश्वरे तोमा स्थाने आमा पाठाइलो।।	दिल्लीश्वर ने तुम्हारे पास भेजा यहाँ पर्यन्त।।
जतो हस्ती आछये जे तोमा निज स्थान।	जितने हाथी हैं यहाँ तुम्हारे स्थान।
सकल पाठाव मोके होइया भजमान।।	भेजो सभी हमारे यहाँ होकर नत भजमान।।
नहे राजा आसिया मिलहो एई स्थान।	नहीं तो राजा आकर मिलो मुझे इस स्थान।
दिल्लीश्वरे बोलियाछे ए सब विधान।।	दिल्लीश्वर ने समझाया मुझे है यही विधान।।
दूते आसि ए सकल राजाते कोहिलो।	आकर दूत ने सारी बातें कहा राजा से।
यश माणिक्य सुनि ताहा बहु क्रोध होइलो।।	यश माणिक्य ने सुना क्रोध फूटा आनन से।।
हस्ती नाहि दिबो आमि ना जाबो कखने।	हस्ती मैं न दूगाँ मैं न जाउँगा कभी भी।
तोमरा चलिया जाव यथा इच्छा मने।।	तुम सभी जाओ मन चाहे जहाँ भी।।
ए सब बोलिया दूते राजाय पाठाय।	यह सब कहकर राजा ने भेजा फिर से दूत।
दूत जाइया मगलेते सकल जानाय।।	जाकर दूत मुघलों से बोला स्पष्ट रूप से बहुत।।
दूत कथा सुनि मगल क्रोध होय अति।	सुनकर बातें दूत मुख से मुघलों का क्रोध अपार।
सैन्य समे युद्ध तरे चले शीघ्र गति।।	सेना साथ युद्ध हित चले करने शत्रु संहार।।
दुई सैन्य कोरे युद्ध अति घोरतर।	दोनों सेनाएँ करे युद्ध अति घोर।
त्रिपुर मगल सैन्य पोरे बहुतर।।	त्रिपुर मुघल लडें करे आपस में शोर।।
त्रिपुर मगल सैन्य कोरे हानाहानि।	त्रिपुर मुघल सेना करे हाना हानी।
आप्तपर भेद नाहि दुई जे बाहिनी।।	अपना पराया नहीं भेद दो है वाहिनी।।
अपार मगल सैन्य संख्या नाहि तार।	अपार मुघल सेना संख्या गिनी न जाय।
भंग दिलो त्रिपुर सैन्य युद्धेर माझार।।	रणभंग किया त्रिपुर सैन्य ने युद्ध के बीच।।

तृतीय लहर 61

यश माणिक्य राजा छिलो उदयपुरे।
भंग दिया जाय सैन्य राजार गोचरे।।
सैन्य भंग देखि होय नृप चमकित।
युद्ध वार्ता सुनि राजा होइलो भावित।।
भंग दिया गेलो राजा गहन पर्वते।
से काले मगल आसे उदय पुरेते।।
छकड़ियार पथे इस्पिन्दार सेनापति।
उदयपुर आसिलेक अति शीघ्रगति।।
उदयपुर सर्व प्रजा भंग सेई काल।
जार जेई स्थाने गेलो भाबिया विशाल।।
उदयपुर आसि मगल किछु ना पाइया।
ग्रामे ग्रामे फिरे मगल धन बिचारिया।।
धन न पाइया मृजा(1) नुरूल्याय ताते।
राजार उद्देश्ये चर पाठाय पर्बते।।
गहन कानने चर राज उद्देश तरे।
पर्बत माझारे राजा पाइलो तत्परे।।
राजतत्व पाइया नुरूल्या सेनापति।
राजारे धरिते सैन्य पाठाय शीघ्र गति।।
गहन कानने राजा सैन्य विवर्जित।
मगलेर सैन्य गिया होइलो उपस्थित।।
युद्ध दिते सैन्य नाहि नृपति सहित।
भंगदिते नाहि पारे रानी समुदित।।
मगलेर सैन्ये राजा धरे सेई स्थान।
उदयपुर अनिलेक कोरिया सन्धान।।
नुरूल्याय मंत्रणा जे कोरे बहुतेरे।
कोतो दिन राजा राखे सेई उदयपुरे।।
यश माणिक्य लोइया चलिलो ढाकाते।
इस्पिन्दार नुरुल्याय स्व– सैन्य सहिते।।
मगलेर कोतो सैन्य रहे सेई स्थान।
उदयपुर रोहिलेक कोरिते सन्धान।।

यश माणिक्य राजा थे उदयपुर।
राजा के सामने ही चली सैन्य भागकर।।
आवाक हुए देख भंग सैन्य अपने ही सामने।
युद्ध वार्ता सुन नृप लगे फिर सोचने।।
भाग चले नृप जा छिपे गहन पर्वत।
उसी समय आये मुघल राजधानी उदयपुर।।
छकड़िया के पथ से होकर इस्पिन्दार सेनापति।
आ गया उदयपुर अति शीघ्र गति।।
उदयपुर की सारी प्रजा भागी उसी क्षण।
जिसे जहाँ मिला स्थान गया सोच परिणति विशाल।।
उदयपुर आकर मुघल कुछ नहीं पाया।
लगे घूमने गाँव गाँव धन के सिलसिला।।
धन न पाकर मिर्जा(1) नुरूल्या ने वहाँ।।
राजा के लिए चर भेजा पर्वत था जहाँ।।
गहन कानन में राजा को ढूँढता रहा चर।
पर्वत के बीच राजा को पाया तत्पर।।
राजा को पाकर नुरूल्या सेनापति।
पकड़ लाने को भेजा सैन्य शीघ्र गति।।
गहन कानन में राजा था सैन्य विवर्जित।
तभी मुगल सेना जाकर हुई उपस्थित।।
युद्ध हित सेना हीन थे तब नृपति।
भाग नहीं सके रानी यहीं थी नियमित।।
मुघलों की सेना ने पकड़ा नृप उसी स्थान।
उदयपुर ले आया करके सन्धान।।
नुरूल्या करे सबसे बहु मंत्रणा।
कब तक रखे राजा को उदयपुर अंगना।।
यश माणिक्य को लेकर चला ढाका के पथ।
इस्पिन्दार नुरूल्या चला ससैन्य साथ साथ।।
मुघलों की कितनी ही सेना रही उस स्थान।
उदयपुर ही रह गई करने धन संधान।।

---

(1) मृजा – मिर्जा

तृतीय लहर 62

ढाकाते नृपति लोईया जोखनेते गेलो।
फतेजंग नबाबेर दरशन होईलो।।
फतेजंग नबाब से जे ओति दुराचार।
नरपति पठाईलो निकटे बादशार।।
बादसाहा सिलिम नाम दिल्लीर ईश्वर।
नृपति के समादर करे बहुतर।।
नृपति के सम्बोधिया कोहिलेन साहा।
तोमार समिपे हस्ती आछिलेक जाहा।।
तोमार जे धन रत्न सैन्य बहुतर।
राज्ये जाईया आमा स्थाने पाठाओ सत्वर।।
बादशाहर अनुमति सुनि यशोधर।
प्रोनामिया बादशाह के दिलेन उत्तर।।
आमा धन जन रत्न सकल तोमार।
तोमार सैन्येते राज्य लूटिछे आमार।।
किबा अपराध आमा होय तोमा स्थान।
राज्ये ना जाइबो आमि पाईया अपमान।।
आमार जे शेष काल होईलो एखन।
राज्ये जाईया कि कोरिबो नाहि रत्न धन।।
तीर्थाश्रमे जाई आमि देहो अनुमति।
तीर्थवास कोरि आमि पाई अव्याहोति।।
राजार बचन सुनि दिल्लीर ईश्वर।
नृपति के बिदाय जे दिलेन सत्वर।।
बादशार अनुमति पाईया राजन।
काशीबासे गेल राजा लोईया परिजन।।
काशीबास कोरे राजा हरषित मन।
विश्वेश्वर अन्नपूर्णा करे दरशन।।
गंगा स्नान कोरे राजा मनिकर्निकाते।
सर्ब देब दरशन रानीर सहिते।।
कत काल काशी बास कोरिया नृपति।
प्रयाग होईया चोले मथुराते गति।।

ढाका में नृपति लेकर गये जब।
फते जंग नबाब के दर्शन हुए तब
फते जंग नबाब थे बडे दुराचारी।
नरपति को भेजे बादशाह के निकट।।
बादशाह सलीम नाम थे दिल्ली के ईश्वर।
नृपति का समादर करे बहुतर।।
नृपति को सम्बोधित कर कहने लगे साहा।
तुम्हारे निकट हस्ती आया जो वहाँ।।
तुम्हारा जो धन रत्न सैन्य बहुतर।
राज्य जाकर हमारे स्थान भेजो सत्वर।।
बादशाह के अनुमति सुनि जशोधर।
प्रणाम करके बादशाह ने दिये उत्तर।।
मेरा धन रत्न सभी हैं तुम्हारे।
तुम्हारे सैन्य से राज्य लूट गये हमारे।।
किया हो अपराध मेरा है तुम्हारे स्थान।
राज्य न जायेगे हम पाकर अपमान।।
मेरा जो शेष काल हुआ अब।
राज्य जाकर क्या होगा न है रत्न धन।।
तीर्थाश्रम गये हम, दो यह अनुमति।
तीर्थ वास करे हम पाये अव्याहति।।
राजा के वचन सुन दिल्ली के ईश्वर।
नृपति को विदा कर देगें हम तड़ित।।
बादशाह के अनुमति पाकर राजन।
काशी में वास लिया परिजन।।
काशी वास करके राजा हर्षित मन।
विश्वेश्वर अन्नपूर्णा के किये दर्शन।।
गंगा स्नान करके राजा माणिकर्णिका मे।।
सर्व देव दर्शन दिये रानी के सहित में।।
बहु दिन काशी बास कर नृपति।
प्रयाग जाकर गये मथुरा में गति।।

तृतीय लहर 63

मथुराधामेते नृप गेलो सेईक्षण।	मथुरा धाम में नृप गये उसी क्षण।
बृन्दाबन उपबन गिरीगोबर्धन।।	वृन्दावन के उपवन गिरि गोवर्धन।।
नाना तीर्थ भ्रमे राजा रानीर सहित।	नाना तीर्थ भ्रमण किये राजा रानी सहित।
बृन्दाबन बास करे होईया आमोदित।।	वृन्दावन में वास किये होकर हर्षित।।
यशमानिक्य राजा अति पून्यबान।	यश मानिक राजा के अति पूण्यवाण।
बहुकाल बास कोरे बृन्दाबन स्थान।।	बहु दिन वास करे वृन्दावन स्थान।।
बृद्ध होईलो नरपति जोराये पीड़ित।	वृद्ध होकर नरपति हुए बहुत पीड़ित।
बाहात्तर बर्ष बयश होईलो समूदित।।	बहत्तर वर्ष में होकर समुदित।।
रात्र दिन भाबे राजा श्रीकृष्णचरन।	रात दिन सोचे राजा श्री कृष्ण चरण।
शरीर त्याजिया चरन पाइबो केमन।।	शरीर त्याग कर कैसे मिलेगें चरण।।
कालपूर्न नृपतिर होईलो घटन।	कालपूर्ण नृपति हुए घटन।
शिरेते बेदना ज्वर होईलो राजन।।	सिर में वेदना ज्वर हुए राजन।।
तिन दिन छिलो ज्वर राजार तखन।	तीन दिन ज्वर जब राजा के थे।
बृन्दाबन पाइलो राजा बईकुन्ठे गमन।।	वृन्दावन मिले राजा बैकुण्ठ में हुए गमन।।
यशमानिक्य स्वर्ग होईलो मथुराते।	यश मानिक स्वर्ग हुए मथुरा में।
यथाविधि संस्कार होईलेक ताते।।	यथा विधि संस्कार हुए जिसमे।।
श्राद्धादि महोत्सब कोरे यश रानी।	श्रद्धाधि महोत्सव करके यश रानी।
पृथिबीते तान ख्याति रहिलो एखोनि।।	पृथ्वी में उनकी ख्याति रहे जानि।।
यशमानिक्य राजा होईलो समापन।	यश मानिक राजा हुए समापन।
तारपोरे जेबा होईलो त्रिपुर भूबन।।	उसके बाद हुऐ त्रिपुर भुवन।।
यशमानिक्य राजा जे काले नियाछिलो।	यश मानिक राजा जिस समय में लिये।
प्रधान त्रिपुरगन नाना स्थाने गेलो(1)।।	प्रधान त्रिपुर गण नाना स्थान में गये(1)।।
जार जे लक्ष्या लक्ष्य जाय सेई स्थान।	जो जिस लक्ष्य में लक्ष्य लिए उस स्थान।
पर्बते रोहिलो केहो कोरिया सन्धान।।	पर्वत में रहा कोई करके संधान।।
जतो किछु रहे प्रजा उदयपुरेते।	जितना भी कुछ प्रजा थे उदयपुर में।
मगलेर सैन्ये लूटे ना पारे थाकिते।।	मगल के सेना लूट नहीं पाये वहीं पे।।
पापिष्ठ मगल जाति दुष्ट दुराचार।	पापिष्ठ मगल जाति दुष्ट और दुराचार।
धर्म्म कर्म्म निषेधिलो नगरे राजार।।	धर्म कर्म मना किये नगर में राजा के।।

(1) यशोधर मानिक के मुसलमान गण धृत कर लेने के पश्चात् उदयपुर के प्रधान प्रधान व्यक्ति लोग विभिन्न स्थान पर चले गये।

तृतीय लहर 64

चतुर्दश देब पूजा निषेधे यबन।
कालिका देबीर पूजा कोरिलो बारन।।
अमर सागर आदि जतो सरोबर।
जान कटिया सुखाय मगल बर्ब्बर।।
जतो धन आछिलेक उदयपुर देश।
सरोबरे लुकाइछे जानिया विशेष।।(1)
ऐई मत अथान्तर(2) करेन मगल।
उदयपुर प्रजा जतो होईलो बिकल।।
राजा शून्य राज्ये होइलो अमंगल जतो।
त्रिपुर राज्येर प्रजा भावे अबिरत।।
राज पात्र मन्त्री सब नाना स्थाने रोहे।
कि मते होइबो राजा चिन्तित जे ताहे।।
एई मत अराजक आडाई बत्सर।
मगले साधये राज्य राजा देशान्तर।।
दोईबेर विचित्र गति बूझन ना जाय।
सेई काले देव चक्र होईलो उपाय।।
उदयपूर राज्ये जतो मगलेर सेना।
दिने दिने मरे सैन्य नाहिक गणना।।
सेई काले मगल सेना चिन्तये बिस्तर।
कि मते बाँचिबो प्राने जाईया स्थानान्तर।।
उदयपुर छाडिया मगल गेलो सेइ क्षण।
मेहेरकुलेते जाईया रहे सर्बजन।।
मगले छाडिया गेलो सुने सर्बजन।
तखने आसिलो प्रजा आनन्दित मन।।
राज पात्र मन्त्री जतो आर सेनापति।
जार जेई पूरी आइसे आनन्दित अति।।
राजा शुन्य राज्य जन थाका नाहि जाये।
आरक्षक गाब(3) तेन नाना दिगे धाय।।

चतुर्दश देव पूजा निषेध किया यवन ।
कालिका देवी की पूजा न करें विशेष।।
अमर सागर आदि जितने सरोवर।
नाले काट सुखाये मुगल बर्ब्बर।।
जितने धन रत्न थे उदयपुर के देश।
सरोवर में छुपाये लेकर कर विशेष(1)।।
इसी मत से अत्याचार(2) करने लगे मुगल।
उदयपुर के प्रजा जितने होने लगे विकल।।
राजा शून्य से राज्य में फिर अमंगल एक बार।
सोचे त्रिपुर राज्य के प्रजा यही बारम्बार।।
राज पात्र मंत्री सब नाना स्थान में गये।
कैसे बनेगें राजा यह चिन्तित सब हुए।।
इसी तरह अराजक हुए ढाई वर्ष।
मुगल ने सम्भाला राज्य, राजा हुए देशान्तर।।
दैव्य के विचित्र गति समझा न जाये।
उसी काल देव चक्र का हुआ उपाय।।
उदयपुर राज्य के जितने मुगल सेना।
दिन दिन मरे सैन्य नहीं थे कोई गणना।।
उसी काल में मुगल सेना चिन्तन किये विस्तर।
किस मत से बचे प्राण से जाये स्थानान्तर।।
उदयपुर छोड़कर मुगल गये उसी क्षण।
मेहेरकुल में जा कर रहे सर्वजन।।
मुगल छोड़ गये सुने सर्वजन।
तभी आये प्रजा आनन्दित मन।।
राज पात्र मंत्री जितने और सेनापति।
जो जिसके पुरी में हुए आनन्दित अति।।
राजा शून्य राज्य में जब रहने नहीं पाये।
रक्षक बिना गोरु(3) तब नाना दिशा में जाये।।

---

(1) सरोवर के धन रत्न छुपाने के लिए मुगल गण नाला काट कर समस्त सिंचाई करते थे

(2) अथान्तर अत्याचार, उपद्रव

(3) गाब – गोरु

तृतीय लहर 65

यश माणिक्य राजा मथुरा गमन।	यश माणिक्य राजा का मथुरा गमन।
राज्ये नाहि आसिबेक जानिलो तखन।।	नहीं आयेगें अपने राज खबर मिली तक्षण।।
राजपुत्र पौत्र नाहि, नाहि राज भ्राता।	राज पुत्र पौत्र नहीं, नहीं राज भ्राता।
काहाके कोरिबो राजा जानिया सर्वथा।।	किसे करें राजा जानकर ही सर्वथा।।
सेनापति मन्त्रीगण चिंतित तखन।	चिंतित हो उठे सभी सेनापति मन्त्रीगण।
काहाके कोरिबो राजा ना देखे लक्षण।।	किसे करूँ राजा नहीं मिलता लक्षण।।
महामाणिक्य वंशे कल्यान नाम ख्याति।	महामाणिक्य वंश में कल्याण की है ख्याति।
यशधर काले कैलागड़े सेनापति।।	यशधर के समय थे कैलागढ़ सेनापति।।
कोरिछे अनेक युद्ध सेई मतिमान।	किया है अनेक युद्ध वह मतिमान।
सेई राज्ययोग्य होय देखो विद्यमान।।	वही राज योग्य है विद्यमान वर्तमान।।

———

कल्याण माणिक्य खण्ड

ए सब चिंतिया सेना पात्र मित्र गण।	यह सब सोच सेना पात्र मित्र गण।
कल्याण नाम सेनापति बसे सिंहासन।।	कल्याण नाम सेनापति को बैठाया सिंहासन।।
राज भट्टाचार्य आदि जतेक पंडित।	राज भट्टाचार्य आदि जितने थे पंडित।
अभिषेक कोरे राजा संगे पुरोहित।।	अभिषेक करें राजा संग पुरोहित।।
छत्र आरंगी धरे शिरेर उपर।	छत्र आरंगी धरे उनके सिर पर।
दरिया त्रिपुरा वाद्य वाजिलो सत्वर।।	दरिया त्रिपुरा वाद्य बजा सत्वर।।
पात्र मित्र सेनापति सेलाम कोरिलो।	पात्र मित्र सेनापति ने किया उन्हे नमन।
राजपुर माझे मंगल ध्वनि रब होइलो।।	राजपुर में हुआ मंगल ध्वनि का गुंजन।।
कालिकाप्रसाद नाम राज पाट हाती।	कालिकाप्रसाद नाम राज पट हाथी।
सेई काले गज परे चढिलो नृपति।।	उस समय गजारूढ़ हुए नरपति।।
बुलनि(1) कोरोये राजा नगर भ्रमण।	शोभा यात्रा से किया नृप ने नगर भ्रमण(1)।
वितरण कोरे राजा जतो रत्न धन।।	वितरण करे राजा बहुत से रत्न धन।।
जतेक आसिलो द्विज धन रत्न दिलो।	जितने थे द्विज सबको धन दिया।
पात्र मित्र वस्त्रादिते सकल तुषिलो।।	पात्र मित्र सभी को वस्त्र वितरण किया।।

(1) बुलनि– चाल, नगर भ्रमण, शोभा यात्रा

तृतीय लहर 66

पनरे सो सातचाल्लिस शके राजा होइलो।	पन्द्रह सौ सैंतालीस शक हुए वे राजा।
शुभ दिने महाराजा मोहर मारिलो।।	शुभ दिन देख महाराजा ने मोहर छापा।।
शिव लिंग लिखिलेक मोहर पृष्ठेते।	शिवलिंग लिखा मोहर के पीठ में।
आर पृष्ठे निज नाम राजार ए हाते।।	दूसरी ओर से स्वनाम अंकित किया पृष्ठ में।।
परम धार्मिक राजा विष्णु परायण।	परम धार्मिक राजा विष्णु भक्ति परायण।
सर्वेन्द्रिय जित सदगुण आचरण।।	सर्वेन्द्रिय सद्गुण पूर्व आचरण।।

अथ श्लोकः

राजाभवद्विष्णुपरायणो वै शरद्धिमांशोः कुलसंभवश्च।
अभेदधर्मः किल कल्पवृक्षः कल्याणमाणिक्यमहीमहेन्द्रः।।

तथार पयार	तथार पयार
महाराजा होइलेन विष्णु परायण।	महाराजा हुए विष्णु भक्ति परायण।
चन्द्रवंशे जन्म शरच्चन्द्रेर किरण।।	चन्द्र वंश में जन्में शरद चन्द्र किरण।।
धर्मतुल्य राजा सेई दाने कल्प वृक्ष।	धर्म तुल्य राजा दान हित कल्प वृक्ष।
कल्याणमाणिक्य छिलो प्रथिबीते मोक्ष।।	कल्याणमाणिक्य थे धरातल के मोक्ष।।
कल्याणमाणिक्य राजा अति पूण्यवान।	कल्याणमाणिक्य राजा अति पूण्यवान।
पात्र मित्र बश कोरे कोरिया सन्मान।।	पात्र मित्र को वश करें करके सम्मान।।
अन्य देशे गियाछिलो सैन्य सेनापति।	दूसरे देश में गये थे सैन्य सेनापति।
से सकल आसिलेक सुनिया सुख्याति।।	वे सभी लौटे सुनकर सुख्याति।।
केहो के कोरिलो बश निज बाहु बले।	किसी को किया वश निज बाहु के बल से।
केहोरे कोरिलो बश प्रीति कुतुहले।।	किसी को किया वश प्रीति कौतूहल से।।
प्रधान जतेक पात्र मंत्री सेनापति।	प्रधान थे जितने भी पात्र मंत्री सेनापति।
जार जेई निज कार्ये नियोजे नृपति।।	जो जिस योग्य था किया नियोग नृपति।।
पर्बतिया कुकी प्रजा आइसे सेई क्षण।	पहाड़ी कुकी प्रजा आई उसी क्षण।
घोटक गोबय वस्त्र लोइया तखन।।	घोड़ा गौ वस्त्र लेकर तत्क्षण।।
थाल घोंग गजदंत आनिलो तखन।	थाल घोंघ गजदंत ले आए तभी।
नाना भेंट लोइया आइसे नृपति सदन।।	नाना भेंट लेकर आये नृपति सदन।।
नृपति के भेंट तारा दिलो सेई क्षण।	नृपति को भेंट दिया उसी क्षण।
इनाम पाइलो तारा बस्त्र आभरण।।	इनाम मिला सभी को वस्त्र आवरण।।
पूर्वाविधि चतुर्दश देवता संस्थान।	पहले जैसे किया चतुर्दश देवता संस्थान।
अष्टधातुर देवता छिलेन निर्माण।।	अष्ट धातु के देवता किया था निर्माण।।

तृतीय लहर 67

चतुर्दश देवता मूर्ति गठाय नृपति।
सुवर्ण रजत ताते मनोहर अति(1)।।
देबेर प्रतिष्ठा राजा कोरे सेई क्षण।
पूजे चतुर्दश देब हरषित मन।।
गब आदि मेष छाग नाना बलिदान।
नैबेद्यादि् अन्न ब्यंजन जेमत विधान।।
सेई काले महाराजार स्वप्नेते आदेश।
कालिका देबीए स्वप्न देखाय विशेष।।
आमा सेबा कष्ट होय जलेर कारणे।
जलाशय देबराजा आमा सन्निधाने।।
रात्रिकाले महाराजा देखये स्वप्न।
प्रभाते कहिछे राजा स्वप्नेर कथन।।
ब्राह्मण पंडित स्वप्न व्याखान कोरिलो।
सिद्धांतवागीश आदि जतो द्विज छिलो।।
हरिष होइया नृप कहे सेई क्षण।
पुष्पकर्णी खनिते आज्ञा कालीर सदन।।
बास्तु पूजा पोरे पुष्पकर्णीर आरम्भन।
उदयपुर कालिकार समीपे तखन।
जलाशय उत्सर्गिल विधान तत्पर।।
पुष्कर्णीर नाम राखे कल्याण सागर।(2)
गबय महिष छाग बलि उपहार।
यथा विधि पूजा कोरे देबी कालिकार।।
नाना विधि अन्न व्यंजन परमान्न आर।
कालिकार भोग दिल विधि अनुसार।।

चतुर्दश देवता मूर्ति गठाया नृपति ने।
सुर्वण रजत मंड़ित कराया मनोहर अति(1)।।
देवों की प्रतिष्ठा राजा ने किया उसी क्षण।
पूजन किया चतुर्दश देव हरषित मन।।
गौ आदि का दान नाना छाग बलिदान।
नैवेद्यादि अन्न व्यंजन जैसा था विधान।।
उसी समय महाराज को हुआ स्वप्नादेश।
कालिका देवी ने स्वप्न दिखाया विशेष।।
मेरी सेवा में होता है कष्ट जल के कारण।
जलाशय बना दो राजा मेरे सन्निधान।।
रात्रि में देखा राजा यह विचित्र स्वप्न।
प्रभात समय कहा सबसे स्वप्न का कथन।।
ब्राह्मण पंडित ने किया स्वप्न का व्याखान।
सिद्धांतवागीश आदि जितने थे द्विज गण।।
सहर्ष कहा नृप ने सबसे उसी क्षण।
पुष्वकर्णी खनन की आज्ञा काली के सदन।।
वास्तु पूजा पश्चात् शुरू तालाब का खनन।
उदयपुर काली के समीप उसी क्षण।
जलाशय उत्सर्ग किया शास्त्र के विधान।।
जलाशय नाम रखा कल्याण सागर(2) तत्क्षण।
गौ का दान महिष छाग बलि उस काल।
यथा विधि किया पूजन काली का तत्काल।।
नाना विधि अन्न व्यंजन परमान्नया और।
माँ काली का भोग दिया विधि अनुसार।।

---

(1) अष्ट धातु की प्राचीन मूर्ति, मूर्तिओं को रजत और सुवर्ण मंड़ित किया गया था। मूर्ति गढ़ने बात सच नहीं है।

(2) यह दीर्घिका अर्थात जलाशय त्रिपुर सुन्दरी देवी के मंदिर के करीब पूरब की ओर है। इसकी लम्बाई 224 गज और चौड़ाई 160 गज है। राजमाला प्रथम लहर के 127 पृष्ठ में इस सरोवर का विवरण प्रदान किया गया है।

तृतीय लहर 68

कालिकार मठ चूड़ा मघे भांगिछिलो।	कालिका का मठ चूड़ा भंग मघो ने किया।
पुनर्बार महाराजा निर्माण कोरिलो।।	पुनः उसका महाराजा ने किया निर्माण।।
अमर सागर आदि जतो सरोबर।	अमर सागर आदि थे जितने सरोवर।
जान कटिया मघे सुखाय तदन्तर।	नाला काटा मघों ने सुखाया था तदन्तर।।
सेई जान बद्ध राजा कोरिलो तत्पर।	वह नाला बन्द किया राजा ने हो तत्पर।
निजालय निर्माइलो परम सुन्दर।।	निजालय का निर्माण किया परम सुन्दर।।
प्रतिदिन दान धर्म करे नृपवर।	प्रतिदिन दानधर्म करते नृपवर।
विप्रेते दान दिया भोजन तत्पर।।	विप्रों को दे दान भोजन करें तदन्तर।।
प्रजाके पालन कोरे दया बहुतर।	प्रजा का पालन करें दया से भरपूर।
प्रतिष्ठा कारणेलय राजा अल्प कर।।	प्रतिष्ठा हित लें अल्प कर राजा बहादुर।।
एई सब सुख्याति होईलो नाना देश।	यह सुख्याति फैली चारों देश विदेश।
ताहाते आसिलो प्रजा जानिया विशेष।।	यह सुन प्रजा लौट आई अपने देश।।
जतेक ब्राह्मण छिलो निज अधिकारे।	जितने ब्राह्मण थे अपने अधिकार।
जार जेई योग्य बृत्ति दिलो नृपबरे।।	जिसकी जैसी योग्यता दिया वृत्ति नृपवर।।
नृपेर प्रधान पुत्र गोबिन्द नारायण।	प्रधान पुत्र नृप के थे गोविन्द नारायण।
ताहार कनिष्ठ जगन्नाथ नारायण।।	उनके कनिष्ठ थे जगन्नाथ नारायण।।
मध्यमा रानीर गर्भे जन्मे आर सुत।	मध्यमा रानी के गर्भ जन्मे और एक सुत।
नौगतर(1) नाम तार सुनिते अद्भुत।।	नौगतर(1) नाम उनका सुनने में अद्भुत।।
कनिष्ठा रानीते जन्मे दुई सहोदर।	कनिष्ठा रानी से जन्मे दो सहोदर।
यादब राज बल्लभ नाम ताहार अन्तर।।	यादव राज बल्लभ उनका अन्तर।।
पुत्र पौत्र दौहित्र कुटुम्ब बहुतर।	पुत्र पौत्र दौहित्र कुटुम्ब बहुतर।
सबेर पालन कोरे धर्म नृपबर।।	सबके पालन करे धर्म नृपवर।।
त्रिपुर भूम आचरंग दक्षिण सीमाना।।	त्रिपुर भूमि आचरंग दक्षिण सीमाना।।
तारपोरे रागांमाटी करिलो आपना।	इसके पश्चात् रंगामाटी किया अपना।
उदयपुर पूर्ब उत्तर कोने आचरंग।।	उदयपुर पूर्व उत्तर कोने में आचरंग।।
त्रिपुर राजार थाना जाने सर्ब बंग।।	त्रिपुर राजा का थाना को जाने सारा बंग।।
उदयपुर जखने मगले लोइलो।	उदयपुर जब मुघलों ने लिया।
रणजित सेनापति आचरंगे गेलो।।	रणजीत सेनापति आचरंग गया।।

(1) नौगतर– यह 'नक्षत्र' नाम का अपभ्रंश है।

तृतीय लहर 69

आचरंगे गिया से जे नरपति होईलो।
निज बाहुबले सेई प्रजारे शासिलो।।
सेई स्थाने थाकिया जे राज्य भोग कोरे।
आचरंग रंजितेर मृत्यु होइलो पोरे।।
तार पुत्र लक्ष्मी नारायण होइलो नरपति।
राजा होइया राज्य शासे सेई महामति।।
एई मत कोतो दिन छिलो सेई स्थाने।
कल्याणमाणिक्य राजा दूतमुखे सुने।।
राजा बोले आमा राज्ये लक्ष्मीनारायण।
राज्यास्पद कोरे सेजे आमा विड़म्बन।।
एमत बोलिया राजा मंत्रीते आदेश।
धरिया अनिते ताके आचरंग देश।।(1)
राजार प्रधान पुत्र गोविन्द नारायण।
ताके सम्बोधिया नृप बोलिलो तखन।।
रणजीतेर पुत्र होय लक्ष्मीनारायण।
ससैन्ये धरिया ताके आनह आपन।।
बहु सैन्य लोइया जाव तोमार संगति।
प्रधान जतैक आछे सैन्य सेनापति।।
पितृ आज्ञा सुनिया गोबिन्द नारायण।
राज आज्ञा शिरोधार्य कोरिलो तखन।।
राजार साक्षाते से जे बिदाय होईया।
शुभ क्षणे राजपुत्र चलिलो साजिया।।

आचरंग जाकर वह नरपति हुआ।
निज बाहु बल से प्रजाशासन किया।।
रहकर वहीं वह करे राज भोग।
आचरंग में ही पश्चात् हुआ मृत्यु भोग।।
उसका पुत्र लक्ष्मी नारायण हुआ नरपति।
राजा बन राज्य शासन करे वह महामति।।
इसी तरह कितने ही दिन रह उस स्थान।
दूत मुँह सुने राजा माणिक्य कल्याण।।
कहा राजा ने मेरे राज्य में लक्ष्मीनारायण।
राज्य शासन करे वह यह कैसा विड़म्बन।।
इसतरह कहकर राजा ने दिया मंत्री को आदेश।
पकड़ लाओ उसे जहाँ आचरंग देश।।(1)
प्रधान पुत्र नृप थे गोविन्द नारायण।
नृप उसे देख कहा करके सम्बोधन।।
रणजीत तनय नाम है लक्ष्मीनारायण।
ससैन्य पकड़ उसे लाओ तत्क्षण।।
बहु सैन्य जाओ साथ तुम्हारे।
प्रधान जितने हैं सेनापति और है हमारे।।
पितृ आज्ञा सुनकर गोविन्द नारायण।
राजाज्ञा किया शिरोधार्य उसी क्षण।।
राजा से विदा लेकर चले उसी क्षण।
शुभ मर्हूत देख चले राजपुत्र करने रण।।

दीर्घ त्रिपदी

राजार आदेश पाइया, सर्व सैन्य साजाईया
चलिलेक गोबिन्द नारायण।
राजपुत्र युद्धे चले, नाना विधबदय् भाल`
शब्द उठे गगन मण्डल।।
विचित्र कबच पोइरे, शिरेते आरंगी धरे
अस्त्र सब लोइलो बहुबिध।

दीर्घ त्रिपदी

राजा का पाकर आदेश, सर्वसैन्य सजाया
चले गोविन्द नारायण।
राज पुत्र युद्ध चले, नाना विध बादय् बजे
शब्द उठे गगन मण्डल।।
विचित्र कवच पहन, सिर पर आरंगी धारण
अस्त्र लिया साथ बहुविध।।

---

(1) आचरंग देश – आचरंग देश से

तृतीय लहर 70

गज बाजी सैन्य संगे देखिते जे मनोरंगे
सैन्य सेना चलिलो बिस्तर
सैन्य जतो आगु होइया, आचरंग उददेशिया,
युद्धे चले आनन्दित मन।
पंचदस सेनापति, विक्रमें अद्‌भुत अति
नाना अस्त्र धारण ताहार।
शेल शूल खड़ग जाठी, हाते धरे परिपाटी
बहु सैन्य चलिलेक रणे।
राजपुत्र अस्त्रधारी, गज आरोहण कोरि
चलिलेक सैन्येर माझार।
विचित्र पताका ध्वज, बहु अश्व कोतो गज,
रणे चले भयंकर अति।
गिरि नदी गुहा पथ, लंघिया जे महासत्त
पथ कोरे पर्वत काटिया
उच्च नीच पथ करि, लंघिया बहुल गिरि
थरे थरे सैन्येर गमन।
सर्वसैन्य आनन्दित, किछु मात्र नाहि भीत,
राजा सैन्य चलियाछे रुपे।
एक मास एइ मते, जाइते होइलो पथे,
आचरंग गिया उत्तरिलो।
श्री गोबिन्द नारायण, संगे जतो सैन्य गण
गड़ कोरे आचरंग पथे।
आचरंग पथे गड़, वार्ता सुने परस्पर
तत्व पाय लक्ष्मी नारायण।
पात्र मित्र मंत्री तार, परस्पर युक्ति सार
कि कोरिबो एई तो समय।
कल्याणमाणिक्य राजा, शासितेछे सर्व प्रजा,
ताते आमि अपराधी नर।
राजपुत्र आसे रणे, बहु भय पाई मने,
तार सने युद्ध अनुचित

गज बाजी सैन्य संग, देखते मनोहारी ढंग
चली सेना विशाल घनेरे।।
फौज सभी आगे बढ़ी, आचरंग लक्ष्य चढ़ी,
चले युद्ध आनन्दित मन।
पंचदस सेनापति, विक्रम अद्‌भुत अति
किया नाना अस्त्र धारण।
शेल शूल खड्‌ग लाठी, हस्त धारण कर लौहदण्डी
विशाल सेना चली करने रण।
राजपुत्र अस्त्रधारी, गज आरोहन किया
चले मध्य सैन्य गण।
विचित्र पताका ध्वज, अनेक अश्व और गज,
चले करने भयंकर रण।
गिरि नदी गुहा पथ, लाँध दिया राजा
राह करे पर्वत को कर विदीर्ण
उँच नीच पथ धरि, लाँघकर बहुल गिरि
दल बद्ध सैन्य का गमन।
सभी सैन्य आनन्दित, बिन्दु मात्र नहीं भीत
राज सैन्य चली इस रुप।
एक माह इसी तरह, चलती रही इसी राह
पहुँची जाकर आचरंग।
श्री गोविन्द नारायण, साथ सभी सैन्य गण
गढ़ बनाया आचरंग पथ पर।
आचरंग पथ पर गढ़, वार्ता सुनी परस्पर
लक्ष्मी नारायण ने सुना हो तत्पर।
पात्र मित्र सभी, परस्पर युक्ति किया तभी
करना है क्या बस यही तो समय
कल्याणमाणिक्य राजा शासन करते सारी प्रजा
मैं हूँ एक अपराधी नर तनय।
राजपुत्र आए रण, भय समाया है मन,
उनके साथ युद्ध अनुचित

तृतीय लहर 71

युद्धे जय ना पाइबो, ताते अपराधी होइबो,
राजपुत्रे प्राणेते बधिबे
भंग दिते मने लय, युद्ध दिते कोरि भय,
पात्र मंत्री कहे बिबेचिया।
लक्ष्मी नारायण वाणी, मन्त्री सुनि कहे पुनि,
जाहा बोलो ताहा मिथ्या नाय।
राज्य छड़ि भंगदेय, सर्व सैन्य संगे नेय,
रहो गिया अरण्य माँझार।
बिलम्बेर नाहि काज, सुन कहि महाराज
ए समये भंग से उचित।

पयार

एतेक कहिल यदि पात्र मित्रगण
आपनेह विवेचिल लक्ष्मी नारायण।।
युद्ध न कोरिया भंग लक्ष्मी नारायण।
तार संगे भंग दिल जतो प्रजागण।।
भंग दिया जाय तारा गहन कानन।
तिन दिनेर पथे गिया रहिलो तखन।।
एथाय गोबिन्द देब युद्ध सज्जा अति।
आचरंग पथे गड़ सैन्येर संगति।।
लक्ष्मी नारायणे भंग दूते जे कहिलो।
सुनिया गोबिन्ददेव अति क्रोध होइलो।।
सेई काले गढ़ छाडे नृपति नन्दन।
अरण्ये उददेश कोरे लक्ष्मी नारायण।।
पंच सेनापति संगे सैन्य कोतो जन।
गड़ते रखिया गेलो गोविन्द नारायण।।
सेई पथे लक्ष्मी नारायण भंग दिया गेलो।
सेई पथे गोबिन्द देव ससैन्ये चलिलो।।
जथाते रहिछे राजा लक्ष्मी नारायण।
तथा गिया उत्तरिला राज सैन्य गण।।

नहीं होगी युद्ध विजय, अपराधी होउगाँ निश्चय
प्राण वध राजपुत्र करेगा निश्चित।
रण भंग देते चाहे मन, युद्ध करते भय भीषण
पात्र मंत्री कहे करके विवेचन।
लक्ष्मी नारायण वाणी, मंत्री सुने कहे पुनः
कहे मंत्री मिथ्या नहीं आपका संभाषण।
राज्य छोड़ भाग जाओ, सर्व सैन्य साथ लाओ,
रहो जाकर मध्य वन
विलम्ब अब किस काज, सुनों कहूं महाराज
इस समय उचित पलायन।

पयार

इतना कहे जब पात्र मित्र गण।
स्वयं भी सोचा लक्ष्मी नारायण।।
बिना युद्ध भागा लक्ष्मी नारायण।
उसके संग चले भाग सभी प्रजागण।।
भाग कर पँहुचे वे गहन कानन।
तीन दिनों तक पथ गया रहा वहीं।।
यहाँ गोविन्द देव भी युद्ध सज्जा अति।
आचरंग पथ पर गढ़ रही सैन्य संगति।।
लक्ष्मी नारायण भागा कहाँ जाकर दूत।
सुनकर गोविन्द को हुआ अति क्रोध।।
उसी क्षण गढ़ छोड़ा नृपति नन्दन।
अरण्य उद्देश्य चले लक्ष्मी नारायण।।
पंच सेनापति साथ सभी सैन्य गण।
गढ़ में रखकर गए गोविन्द नारायण।।
जिस राह लक्ष्मी नारायण भाग गया वन।
उसी राह चले ससैन्य गोविन्द नारायण।।
जहाँ पर रह रहा लक्ष्मी नारायण।
वहीं जाकर उतरे सभी राज सैन्य गण।।

तृतीय लहर 72

सर्ब सैन्य गिया तथा चौदिगे बेष्टन।
सैन्य समे धरा गेलो लक्ष्मी नारायण।।
लक्ष्मी नारायण लोइया आइसे आचरंग।
सर्व सैन्य आनन्दित गोबिन्द देव संग।।
लक्ष्मी नारायण धन रत्न जतो छिलो।
हस्ती घोड़ा आदि कोरि सब काड़ि लोइलो।।
एक सेनापति आचरंगेते राखिया।
सैन्य समे लस्करी काजेते नियोजिया।।
एई मोते आचरंग जिनिलो तखन।
सैन्य समे आसिलो गोबिन्द नारायण।।
सर्व सैन्य संगे लोइया राजार नन्दन।
प्रणाम कोरिलो गिया नृपति चरण।।
युद्ध विवरण कहे गोबिन्द नारायण।
ताहा सुनि नरपति हरषित मन।।
लक्ष्मी नारायण होय नृपति नन्दन।
मर्यादा कोरिया ताके रखिलो तखन।।
तार परे जेबा होइलो कहि नरपति।
मगलेर सने युद्ध होइलेक अति।।
यशमाणिक्य राजा मथुरा गमन।
कल्याणमाणिक्य राजा त्रिपुर भुवन।।
लोक मुखे बादसाहाय एई तत्व पाय।
मुर्शिदाबाद नबाबेत पत्रिका पाठाय।।
मुर्शिदाबादेर नबाब दुरन्त प्रकट।
परवाना लिखिलेक राजार निकट।।
कल्याणमाणिक्य राजा त्रिपुर नृपति।
बादसाहा नजराना पाठाइते हाती।।
सहस्रादि घोटक जे सैन्य समभ्यार।(1)
कामान बन्दूक बहु सैन्येते अपार।।

सारी सेना गयी वहाँ किया चारों ओर वेष्टन।
सेना साथ पकडा गया लक्ष्मी नारायण।।
लक्ष्मी नारायण लेकर आया आचरंग।
सभी सेना आनन्दित गोविन्द देव संग।।
धन रत्न लक्ष्मी नारायण का जो कुछ भी था।
हस्ती घोड़ा आदि सभी छीन लिया।।
एक सेनापति को आचरंग रख दिया।
सेना साथ लश्कर को काम नियोजित किया।।
इस तरह आचरंग को जीता उस क्षण।
सैन्य साथ लौट आए गोविन्द नारायण।।
सभी सेना साथ ले नृपति नन्दन।
प्रणाम किया आकर नृपति चरण।।
युद्ध विवरण कहे गोविन्द नारायण।
सुनकर सभी बातें नृप हर्षित मन।।
लक्ष्मी नारायण था नृपति नन्दन।
समर्यादा रखा उसे करके यतन।।
इसके बाद क्या हुआ सुनो नरपति।
मुघल साथ युद्ध हुआ भयानक अति।।
यश माणिक्य राजा का हुआ मथुरा गमन।
कल्याणमाणिक्य राजा त्रिपुर भुवन।।
लोक मुख बादशाह ने यह खबर पाया।
मुर्शिदाबाद नबाब तुरन्त पत्र दिया।।
मुर्शिदाबाद के नबाब थे तुरन्त प्रकट।
परवाना लिखा राजा को तुरन्त।।
कल्याणमाणिक्य राजा त्रिपुर नृपति।
बादशाह को नजराना देते हाथी।।
सहस्रादि अश्व सेना के साथ।(1)
कामान बन्दूक साथ सेना अपार।।

---

(1) समभ्यार– समभिव्यवहार अर्थात साथ

तृतीय लहर 73

सैन्य समे परवाना नृपतिर प्रति।	सैन्य साथ परवाना नृपति के प्रति।
बार बंगला सैन्य पाठाय ताहार संगति।।	बारह बंगला सेना भेजा उसकी संगति।।
चर्मेर कामान बहु सैन्येर सहित(1)।	चर्म कामान था बहुत सेनाओं के साथ।(1)
एकावाजे(2) फाटेकामान शत्रु होय भीत।।	आवाज(1) कर फटे कमान शत्रु होते भयभीत।।
कैला गड़े नृपतिर पूर्व पर थाना।	कैलागढ़ में नृपति का था एक पूर्व थाना।
कमला सागर पाड़े बादशाही सेना।।	कमला सागर तट खडी बादशाही सेना।।
कल्याणमाणिक्य राजा युद्ध वार्ता पाय।	कल्याणमाणिक्य राजा को मिली युद्ध वार्ता
गोविन्द देव संगे लोइया युद्धे राजा जाय।।	गोविन्द देव साथ लेकर युद्ध गये राजा।।
दुई सैन्ये धोर रण होइलो सेई क्षण।	दोनों सेनाओं में घोर रण हुआ उस क्षण।
कामानेर गोला परे गड़ेते राजन।।	कामान गोला लगा पड़ने गढ़ जहाँ थे राजन।
सेई गोला हाते लोइया गोबिन्द युवराज।	उस गोले को लिया हाथ गोविन्द युवराज।
नृपतिके देखाइलो सर्व सभा माझ।।	दिखाया नृपति को सभा मध्य आज।।
दारूण कामान गोला गड़े आसि पड़े।	भयानक गोला आ गिरे गढ़ के उपर।
किमते कोरिबो युद्ध रणेर माझारे।।	कैसे करूँ युद्ध अब रण क्षेत्र अब की बार।।
युबराज वाक्य सुनि नृपति कहिलो।	युवराज वाक्य सुन कहा नृपति ने।
बहु युद्ध कोरियाछि भीत नाहि छिलो।।	बहु युद्ध किया हूँ भय न किया मन में।।
कखने शत्रुर संगे ना कोरिछि प्रीति।	कभी भी शत्रु के साथ किया नहीं प्रीति।
शत्रु संगे करो प्रीति जेई तोमा मति।।	शत्रु साथ करो प्रीति करो जैसी मति गति।।
तोया मने जाहा लय ताहा करो तुमि।	मन में आये जो भी उसे करो तुम।
आजि होते अस्त्र त्याग कोरिलाम आमि।।	आज से धर्नुबाण छोड़ रहे हम।।
राजगुरू स्थाने राजा कोहे विवरण।	राज गुरू सामने राजा कहे विवरण।
धर्नुबान समर्पिल श्री गुरू चरण।	धर्नुबाण सौंप दिया श्री गुरू चरण।
मगल राजार सैन्य घोरतर रण।।	मुगल राज सैन्य करे घोरतर रण।।
मगलेर सैन्य रणे भंग सैई क्षण।।	मुघल राज सैन्य भाग चली उसी क्षण।।
कल्याणमाणिक्य राजा आनन्दित मन।	कल्याणमाणिक्य आनन्दित मन।
पात्र मित्र दुई पार्श्वे बोईसे सिंहासन।।	पात्र मित्र बैठे दोनो ओर राजा सिंहासन।।

(1) चमड़े की कमान– उस जमाने में एक इस तरह की कमान थी जिससे बारूद भरकर आग लगने पर भयानक शब्द के साथ वह फट जाती थी। शत्रु को आतंकित करने के लिए इसका प्रयोग होता था। गाजीनामा ग्रन्थ में भी चमड़े के कमान की चर्चा दी गई है।

(2) एकावाजे –एक आवाज के साथ फट जाना।

तृतीय लहर 74

पात्र मित्र सम्बोधिया आदेशे राजन।	पात्र मित्र सभी को आदेशा राजन।
युबराज कोरिते गोबिन्द नारायण।।	युवराज है करना गोविन्द नारायण।।
लग्नाचार्य सहिते जे सिद्धांतवागीश।(1)	लग्नाचार्य साथ जो थे सिद्धांतवागीश।(1)
शुभ दिन कोरिलेन चाहिया(2) ज्योतिष।।	शुभ क्षण किया देखकर ज्योतिष।।(2)
शुभ क्षणे उत्सब कोरिलो अति साज।	शुभ क्षण में उत्सव का हुआ बहुत साज।
सेई काले गोबिन्द देब होईलो युबराज।।	उसी वक्त गोविन्द देव हुए युवराज।।
युबराज होइलो पुत्र हरिष राजार।	युव राज हुआ पुत्र राज का हर्ष अपार।
युबराज स्थाने राज्य काजे दिलो भार।।	युवराज को सौंपा राज कार्य भार।।
तदन्तरे महाराजा कल्याण नृपति।	तदन्तरे महाराजा कल्याण नृपति।
महादान कोरिबार आनन्दित मति।।	महादान करने की हुई उनकी मति।।
धर्मेर जे अंश राजा धर्म परायण।	धर्म का अंश सदा राजा धर्म परायण।
प्रथमे कोरिलो तुलापुरूष आपन।।	पहले दिया तुला पुरूष स्वयं उस क्षण।।
यज्ञ होम कोरिलेक ब्राह्मणेर गणे।	यज्ञ होम किये सभी ब्राह्मण गण।
तुलाते बोसिलो राजा धर्मेर आसने।।	तुला पर बैठे राजा धर्म का आसन।।
अलंकार बस्त्र समे तुलाते बोसिलो।	अलंकार वस्त्र साथ बैठे तुला दण्ड।
आर दिगे धन रत्न परिमित दिलो।।	दूसरी ओर परिमित रखा धन रत्न।।
तुला होते नामिया उत्सर्गे सेई क्षण।	तुला से उतर उत्सर्ग किया उसी क्षण।
तिन हस्ती पंच घोड़ा दान बितरण।।(3)	तीन हस्ती पाँच घोड़ा दान वितरण।।(3)
सिद्धांतवागीश भट्टाचार्य शिरोमणी।	सिद्धांतवागीश शिरोमणि भट्टाचार्य।
बस्त्र अंलकार ताके दिलेक तखनि।।	वस्त्र अंलकार करके दिया उन्हे साज।।
हस्ती ऐक दिलो ताके ससज्ज कोरिया।	हस्ती एक दिया उन्हे करके सुसज्जित।
मेहेरकुले ग्राम एक दिलो उत्सर्गिया।।(4)	मेहेरकुल में ग्राम एक दिया उत्सर्ग।।(4)

....

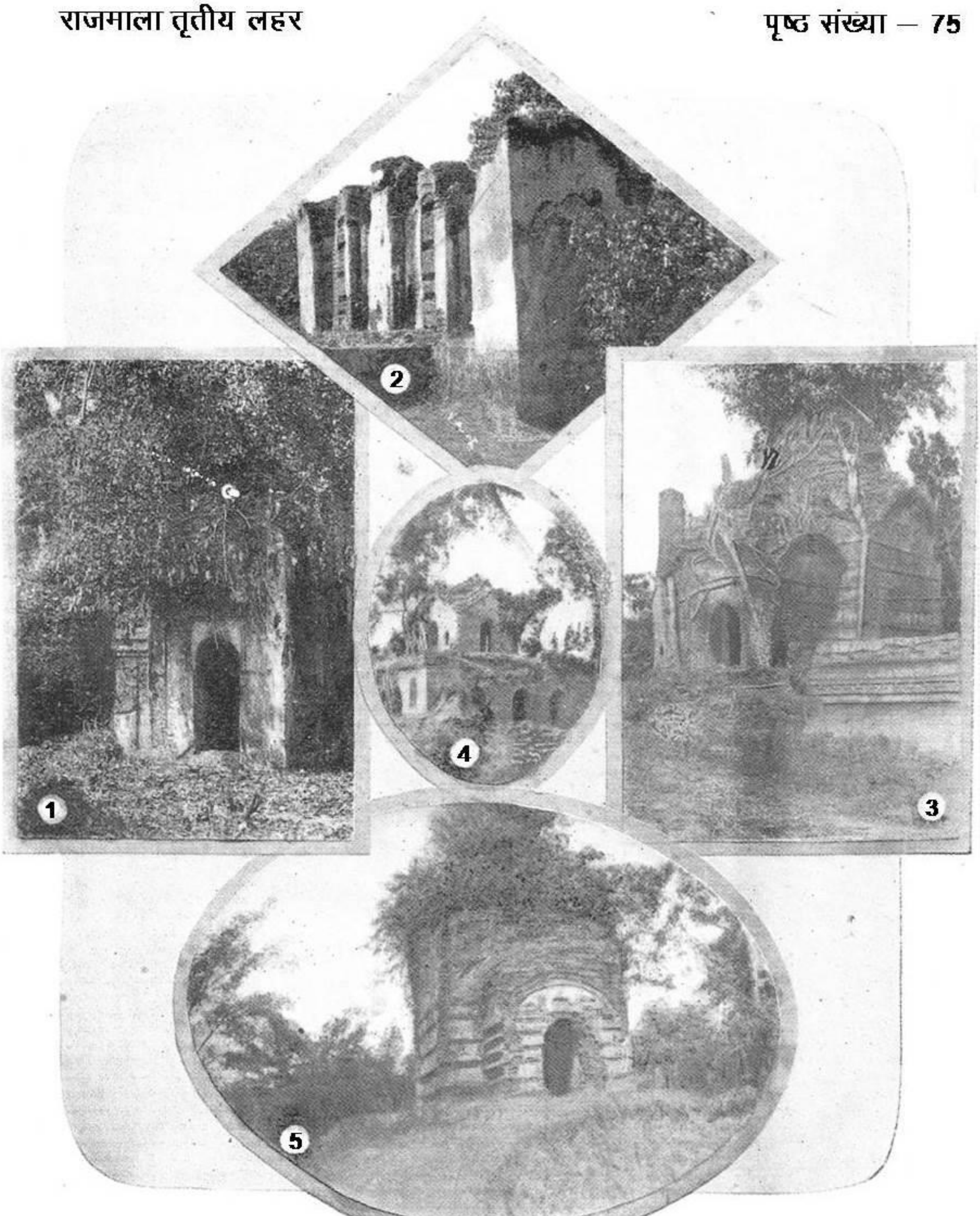
(1) सिद्धांतवागीश– ये सभा पण्डित तथा राज पुरोहित थे। राजमाला की आलोच्य लहर उन्हीं की रचना है। हस्ती दान ग्रहण करके ये समाज में निन्दित भी हुए थे। इनका विस्तृत विवरण मध्यमणि के प्रारम्भ में मिलेगा।

(2) चाहिया –देखकर।

(3) हस्ती और अश्व दान का फल नन्दी पुराण, वन्हि पुराण और शुद्धि तत्व ग्रन्थों में मिलता है। उसका एक श्लोक यहाँ दिया जा रहा है।

"योऽश्वं रथं गजं वापि ब्राह्मणे प्रतिपादयेत्।
स शत्रुस्य वशेललोके शत्रुतुल्यो यूगान् दश।
प्राप्यान्ते चैव मनुष्यं राजा भवति बुद्धिमान।।
–शुद्धितत्वम।

(4) इस भूमि दान का विवरण मध्यमणि में दिया गया है।



महाराज कल्याण माणिक्य द्वारा निर्मितमन्दिर समूह
(1) धर्ममठ (2) विष्णु मन्दिर के भग्नावशेष (3) द्वितीय विष्णु मन्दिर
(4) दोलमन्च (5) दुर्गा मन्दिर

तृतीय लहर 75

तुलापुरूष कीर्ति होइलो बिस्तर।	तुलापुरूष कीर्ति हुई चारों ओर।
सेई कीर्ति गेलो राजार देश देशान्तर।।	वह कीर्ति फैली राजा की देश देशान्तर।।
सेई काले आसे द्विज नाना देश होते।	उस समय आते द्विज नाना देश होकर।
नृपति करये दान उदय पुरेते।।	नृपति करते दान बैठकर उदयपुर।।
पंच दस सहस्र आसिछे द्विज गण।	पंच दस सहस्र आये द्विज गण।
याचक कांगाली जतो न छिलो गणन।।	याचक कंगाली जितने आए नृप स्थान।।
तुलार यतेक धन ब्राह्मणेते दिलो।	तुला का जितना धन था ब्राह्मणों को देना।
संतुष्ट होइया द्विज निज स्थाने गेलो।।	संतुष्ट हो द्विज गण लौटे अपने स्थान।।
महादान पोरे कोरे यथाविधि मते।	महादान किया बाद में यथाविधि शास्त्रमत।
सवत्सा कपिलाधेनु(1) उत्सर्गिला ताते।।	सवत्सा कपिला(1) धेनु किया उत्सर्ग।।
बानारस मथुरा आर सेतुबन्ध देश।	बनारस, मथुरा सेतुबन्ध देश।
उड़िस्या आदि जतो द्विज आसिलेक शेष।।	उड़िसा आदि से द्विज गण आये विशेष।।
केहो हस्ती केहो घोड़ा सुवर्णादि दान।	कोई हस्ती अश्व कोई कोई सुवर्णादि दान।
द्विज सब संतर्पिल(2) जे मत विधान।।	नृप ने तृप्त किया द्विजों को जहाँ जैसा विधान।।
सिंह द्वार समीपेते मनोरम स्थान।	सिंह द्वार समीप था एक मनोरम स्थान।
इष्टक पासाने मठ कोरिछे निर्माण।।	ईंट पत्थरों से मठ का किया निर्माण।।
चन्द्रगोपीनाथ मूर्ति(3) चाटि ग्रामे छिलो।	चन्द्र गोपी नाथ मूर्ति(3) थी चट गाँव।
अमर माणिक्य काले मघे निया छिलो।।	अमर माणिक्य काल में किया था मघ ने अपहरण।।
सेई देव चट्टल होइते आनिया तखन।	वह देव मूर्ति चट गाँव से लाया तत्क्षण।
सेई मठे स्थापे विष्णु कोरिया अर्चन।।	उसी मठ कर स्थापित किया फिर विष्णु अर्चन।।
सेई मठ वामपासे आर मठ दिया।	उस वाम पार्श्व और मठ बनाया।
उत्सर्ग कोरिलो राजा धर्म उद्देशिया।।	उत्सर्ग किया राजा स्वधर्म रक्षा किया।।
धर्म मठ नाम नृप राखिलो ताहार।	धर्म मठ नाम नृप ने रखा उसी दिन
पनर स बाहात्तर शके मठेर प्रचार।।	पन्द्रह सौ बहत्तर शक मठ का उद्घाटन।।
श्लोक एक मठ द्वारे लिखिलो तखन।	श्लोक एक मठ के द्वार लिखा उसी क्षण।
ताहार निकटे गृह जगत मोहन।।	उसी के समीप गृह अपना जगत मोहन।।

---

(1) कपिला – कपिला शब्द का अर्थ कामधेनु के लिए है। दूध देने वाली गाय को भी कपिला कहा जाता है। यथा– कपिला गो विशेषः (इति हेमचन्द्र)
सा तु स्वर्ण वर्णा (इति पुराणाम्)

(2) सन्तर्पिल का यहाँ अर्थ होता है तृप्त करना।

(3) चन्द्रगोपीनाथ विग्रह महाराज उदयमाणिक्य के द्वारा चन्द्रपुर गाँव में स्थापित किया था। राजमाला द्वितीय लहर के 68 पृष्ठ में दिया गया है।

तृतीय लहर 76

कोतेक ब्राह्मण बृद्ध निज राज्ये छिलो।	जितने थे अपने राज्य में ब्राह्मण।
ताहा सबे दिया धन तीर्थ कोराइलो।।	उन्हे कराया तीर्थ देकर दान धन।।
निजपुर समुखेते छिलो एक स्थान।	सामने ही था एक सुन्दर सा स्थान।
विष्णुर आलय ताते कोरोये निर्माण।।	विष्णु आलय किया वहाँ निर्माण।।
दोल मंच निमाईलो तार पूर्बे दिगे।	दोल मंच पूर्व की ओर किया फिर निर्माण।
दुर्गा गृह निमाईलो सन्निकट भागे।।	करीब ही किया दुर्गा गृह स्थान।।
कल्याणमाणिक्य राजा पूण्य व्यय हेतू।	कल्याणमाणिक्य पूण्य व्यय हेतू।
धर्मेते बान्धिलो राजा भबसिंधु सेतू।।	धर्म में बाँधा राजा भव सिंधु सेतू।।
प्राणी मात्र विष्णु ज्ञान कोरेन नृपति।	प्राणी मात्र विष्णु ज्ञान करें नृपति।
विष्णु परायण राजा धर्मे छिलो मति।।	विष्णु परायण राजा धर्म में मति।।
बृद्ध होईलो नरपति ज्वर छिलो ताते।	वृद्ध हुए नरपति इस पर था ज्वर घात।
वायुते कम्पित देह होईलो अकस्माते।।	हवा से कम्पित देह हो गया अकस्मात।।
एई मते तीन दिन मोहित राजन।	इसी तरह तीन दिन मोहाछन्न राजन।
औषध प्रयोगे रोग न होय बारन।।	औषध प्रयोग से भी न हुआ प्रशमन।।
पनेरो श बिरासी शक ज्यैष्ठ मास शेषे।	पन्द्रह सौ बयासी शक ज्यैष्ठ का मास।
मासेर सप्तम दिन थाके अबकाशे।।	माह का सप्तम दिन रहा अवशेष।।
मंगल बासर तिथि कृष्णा नबमीते।	मंगल बासर तिथि कृष्णा नवमी।
तीन दण्ड रात्रि गते राज स्वर्ग ताते।।	तीन दण्ड रात्रि गते गये स्वर्ग छोड़ भूमि।।
पात्र मित्र सेनापति राज सैन्य गण।	पात्र मित्र सेनापति राज सैन्य गण।
राजपुरी असिलेक त्वरित गमन।।	राजपुरी आये सभी कर त्वरित गमन।।
निर्जन होईछे सब राजपुरी लोक।	निर्जन हुए सभी राजपुरी लोग।
क्रन्दन कोरेय तारा पाइया महा शोक।।	क्रन्दन करें सभी पाकर महाशोक।।
कुमार कुमारी रानी शोकेते विह्वल।	कुमार कुमारी रानी सभी शोक विह्वल।
राज अंतःपुर मध्ये क्रन्दनेर रोल।।	राज अन्तःपुर मध्य क्रन्दन का रोल।।
स्नान कोराईया राजा चतुर्दोल माझे।	स्नान कराकार राजा को रखा चतुर्दोलि मध्य।
दिब्य अंलकार बस्त्र भूषित जे साजे।।	अंलकार वस्त्र भूषित देह हुआ दिव्य।।
सुगन्धि चन्दन कोइलो शरीरे लेपन।	सुगन्ध और चन्दन का किया देह लेपन।
पुष्पमाला पोइराइया राम नाम लिखन।।	पुष्प माला पहराया किया राम नाम लेखन।।
सेई रात्र जागरण सकल रहिलो।	वह रात बिताया सभी ने जागकर।
रजनी प्रभात दिबा बुधबार होईलो।।	रजनी प्रभात हुई दिवस बुधवार।।

तृतीय लहर 77

प्रभात समये पात्र मंत्री सेनागण।	प्रभात समय पात्र मित्र सेनागण।
गोबिन्द देब युबराज बोसे सिंहासन।।	गोविन्द देव युवराज बैठे सिंहासन।।
बाजिल सेलाम बाडी नृपतिर रीति।	बजा वाद्य, सलामबाडी राजा की यह रीत।
सेईकाले गोबिन्द मणिक्य नृप ख्याति।।	उस समय से गोविन्द मणिक्य की हुई नृप ख्याति।।
पात्र मित्र सेनागण प्रण मिल ताते।	पात्र मित्र सेनागण प्रणाम किया उन्हे
नगरे नागरि मंगल कोरिलो बिहिते।।	नगर में नागरी में मंगल किया विधिवत।।
गोविन्द देव नृपतिर आदेश पाइया।	गोविन्द देव नृपति का पाकर आदेश।।
बैकुण्ठपुरेते चले(1) मृत राजा लोइया।।	चले बैकुण्ठपुर(1) लेकर मृत राजा का अवशेष।।
चितापरे मृत राजा राखे सेई क्षण।	चिता पर चढे मृत राजा वहीं उसी क्षण।
काष्ठसमे घृत देय आगर चन्दन।।	काष्ठ सह घृत देय आगर चन्दन।।
नृपतिर पुत्र जगन्नाथ नारायण।	नृपति के पुत्र जगन्नाथ नारायण।।
मुखागिन कोरिलो राजार सेई महाजन।।	मुखाग्नि किया नृप का वही महाजन।।
विधि मोते कोरे श्राद्ध गोविन्द नृपति।	विधिवत किये श्राद्ध गोविन्द नृपति।
नाना राज्य होते द्विज आसिलेक अति।।	नाना राज्य से आए द्विज फैली उनकी कीर्ति।।
बेष्ठित होईया बोसे यतो द्विज गण।	बेष्ठित हो बैठे सभी द्विज गण।
श्राद्धेते बोसिलो राजा ब्राह्मण अर्चन।।	श्राद्ध हित बैठे राजा किया ब्राह्मण अर्चन।।
तिल सुवर्ण दान षोड़स होय पोरे।	तिल सुवर्ण दान षोड़श दान पश्चात्।
कांचन पुरूष(2) दान विचित्र शय्या(3) कोरे।।	कांचन पुरूष(2) दान करें शय्या(3) विचित्र।।
तार पोरे महादान छिलो आरभंन।	इसके बाद महादान करना था प्रारम्भ।
सवत्सा कपिला आदि गोदान कोरेन।।	सवत्सा कपिला गोदान का किया शुभारम्भ।।

---

(1) बैकुण्ठपुर –श्मसान क्षेत्र

(2)/(3) कांचन पुरूष –सुवर्ण निर्मित पुरुषाकृति। विलक्षणा –सज्जा विशेष, इसको विचित्र सज्जा कहते हैं। श्राद्ध के उपलक्ष में ये सब दान विशिष्ट दान के रुप में माना जाता है। शास्त्रीय व्यवस्था निम्न है।

अशौचान्ताद्दातिऽहिनी शय्यां दद्याद्विलक्षणाम्।
कांचनं पुरूषं तद्वत् फल पुष्प समन्वितम्।।
सं पूज्य द्विज दाम्पत्यं नानाभरण भूषणैः।
वृषोत्सर्गश्च कर्तव्यो देया च कपिला शुभा।।

मत्स्य पुराण

"द्विज दम्पतिं पूजयित्वा कांचनं प्रेतप्रतिकृति रुपं पुरुषां फलवस्त्रयुक्तं शय्यामारोप्य भूषित द्विज दम्पतिभ्यां शय्यां दद्यात"

शुद्धितत्वम्

तृतीय लहर 78

तार पोरे दस अश्व सुसज्ज सहित।	इसके बाद दस अश्व करके सुसज्जित।
सप्तहस्ती सजाइलो विचित्र भूषित।।	सात हाथी सजाया विचित्र भूषित।।
नृपति कोरेन दान पितृ स्वर्ग तरे।	नृपति करें दान पितृ स्वर्ग हित।
प्रति हस्ती शत मुद्रा दक्षिणा समभ्यारे।।	प्रति हस्ती शत मुद्रा दक्षिणा सहित।।
जगन्नाथ आदि कोरि राजार तनय।	जगन्नाथ आदि सभी नृपति तनय।
बृषोत्सर्ग आदि दान कोरे से समय।।	वृषोत्सर्ग दान आदि करें उस समय।।
ब्राह्मण पंडित बिदाय कोरे सेई क्षण।	ब्राह्मण पंडित विदा करे उस क्षण।
दक्षिणा सहिते दान दिलेक राजन।।	दक्षिणा सहित दान किये राजन।।
श्राद्ध सम्पूर्ण कोरे गोविन्द नृपति।	श्राद्ध सम्पूर्ण करे गोविन्द नृपति।
ज्ञाति गोत्र भोजन कोराय ताते अति।।	ज्ञाति गोत्र भोजन करायें वहाँ अति।।
आशी वत्सर राजार बयक्रम छिलो।	अस्सी वर्ष थी राजा की उम्र।
सात्रिश बत्सर नृप राजत्व कोरिलो।।	नृप ने राजत्व किया सैतीस एक क्रम।।
सेई शके अभिषेक गोविन्द नृपति।	उसी शक में अभिषेक हुआ गोविन्द नृपति।
श्राद्ध पोरे कोरिलेन मोहरे राजख्याति।।	श्राद्ध पश्चात् किया शहर में राजख्याति।।
त्रिपुरेर बंशे जतो पूर्व राजागण।	त्रिपुर वंश में जितने थे पूर्व राजागण।
कल्याणमाणिक्याबधि होइलो समापन।।	कल्याणमाणिक्यावधि हुआ समापन।।
राम माणिक्य राजा सुनिलो तखन।	राम माणिक्य राजा ने सुना उस क्षण।
सिद्धांतवागीश कहे कोरि समापन।।	सिद्धांतवागीश कहे करके समापन।
———	———
इति राजमालायां तृतीय खण्डे	इति राजमाला तृतीय खण्ड
राम माणिक्य जिज्ञासा कथनं	राम माणिक्य जिज्ञासा कथन
सिद्धांतवागीश प्रत्युतरं समाप्तं।।	सिद्धांतवागीश प्रत्युतर समाप्त।।

श्रीराजमाला

तृतीय लहर मध्यमणि

(टीका)

तृतीय लहर 80

तृतीय लहर की मध्यमणि

(टीका)

वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।
आदावन्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते।।

ग्रन्थ भाग में सन्निवेशित समस्त विषयों का विवरण पाद टीका में देने की सुविधा न होने पर, उन अनुलिखित विषयों का स्थूल मर्म यहाँ पर दिया जा रहा है। ग्रन्थ के संसृष्ठ अंश के साथ इसे मिलाने पर सारे प्रसंग आसानी से समझ में आ जायेगें ऐसी हमारी आशा है।

राजमाला तृतीय लहर और उसके रचनाकार विवरण

महाराज धर्म माणिक्य के आदेश से सभासद बाणेश्वर और शुक्रेश्वर के द्वारा राजमाला के पहली लहर की रचना हुई थी। ग्रन्थ का यह अंश पाँच सौ साल पुराना है। द्वितीय लहर महाराज अमर माणिक्य के शासनकाल में(साढ़े तीन सौ साल पहले) की रचना है। वृद्ध सेनापति रणचतुर नारायण के आदेश से इस अंश का विवरण दिया गया है।

इसके पश्चात् महाराज गोविन्द माणिक्य के राजत्व काल में उन्हीं के आदेश से राजमाला के तृतीय लहर के रचित होने की घटना को सभी जानते हैं। किन्तु इस लहर में दिये गये विवरण से जाना जाता है कि गोविन्द माणिक्य के पश्चात् उनके ही पुत्र महाराज राममाणिक्य ने इस लहर की रचना कराई थी। राजमाला की उक्ति यहाँ दी जाती है।

श्रीलश्रीगोविन्दमाणिक्य पूण्यबान अति	श्रील श्री गोविन्द माणिक्य पूण्यवान अति
ताहार तनय राम माणिक्य नृपति।।	उनके पुत्र राम माणिक्य नृपति।।
सिद्धांतवागीश द्वारपंडित पुरातन।	सिद्धांतवागीश द्वारपंडित पुरातन।
ताहाने संबोधि राजा बलिलो तखन।।	उन्हे संबोधित कर राजा बोले वहां।।
जयमाणिक्याबधि पूर्व राजा जतो।	जय माणिक्य से पूर्व राजा जितने।
बंशश्रेणी राजमाला आछये लिखित।।	बंशश्रेणी राजमाला में लिखित।।
तार पोरे जतो राजा होई छे त्रिपुराते।	उसके बाद जितने राजा हुए त्रिपुरा में
ता सबार किबा किर्ति कहत आमाते।।	उन सब की क्या कीर्ति कहो हमें।।
सिद्धांतवागीश कहे कर अबधान।	सिद्धांतवागीश कहे कर अबधान।
जहा देखि सुनियाछि बोलिबो आख्यान।।	जहां जो देखा सुना वर्णन करुंगा आख्यान।।

अर्थात श्री गोविन्द माणिक्य राजा बहुत ही पूण्यवान हैं, जिनके सुपुत्र राम माणिक्य राजा हुए। उनके यहाँ सिद्धांतवागीश जैसे द्वार पंडित थे जो बहुत ज्ञान वृद्ध थे। उन्हे देखकर उनके प्रति सश्रद्धा सम्बोधन से राजा ने कहा। जय माणिक्य जितने भी पूर्व राजा हुए हैं, वंश श्रेणी इत्यादि राजमाला में लिखी गई है। इसके बाद भी जितने राजा त्रिपुरा में हुए हैं उनकी क्या क्या कीर्तियां है। मुझे सुनाइये। ''सिद्धांतवागीश ने कहा हे राजन आप सुनिये। मैने जो कुछ भी सुना है, देखा है उन आख्यानों का वर्णन करूंगा।''

तृतीय लहर 82

यह तृतीय लहर का प्रारम्भिक वाक्य है। इस लहर के उपसंहार में है।

त्रिपुरेर वंशे जतो पूर्ण राजागण।	त्रिपुर वंश में पहले जितने भी थे नृप गण।
कल्याणमाणिक्याबधि होइलो समापन।।	कल्याणमाणिक्य तक किया समापन।।
राममाणिक्य राजा ने सुनिलो तखन।	राम माणिक्य राजा ने सुना पूर्ण विवरण।
सिद्धांतवागीश कहे करि समापन।।	सिद्धांतवागीश ने कहा और किया समापन।।

अन्त में लिखा है– ''इति राजमालायां तृतीय खण्डे राम माणिक्य जिज्ञासा कथनं सिद्धांतवागीश प्रत्युत्तरं समाप्तं। ''

इस सभी वाक्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ राज राम माणिक्य के आदेशानुसार सिद्धांतवागीश उपाधिधारी प्राचीन द्वार पंडित द्वारा राजमाला की तृतीय लहर की रचना हुई है। इसके अलावा कुछ लोगों का मानना है कि राम माणिक्य के पिता गोविन्द माणिक्य के निर्देशानुसार इस लहर की रचना हुई है। इस बारे में पहले भी कह चुका हूँ। इसके अतिरिक्त और एक प्रसंग इस सन्दर्भ में और इसी धारणा की पुष्टि करता है। इसके पहले भी दानों लहरों की गहराई से आलोचना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि महाराज धर्म माणिक्य के अनुज्ञा से रचित प्रथम लहर में उनके पूर्वज राजाओं का विवरण दिया गया है। महाराज अमर माणिक्य के आदेशानुसार रचित द्वितीय लहर में उनके पहले के राजाओं का वर्णन मिलता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस राजा के आदेश से जिस खण्ड की रचना हुई है, उसमें उनका अपना कोई वर्णन नहीं है। पहले की दो लहरों की पद्धति को अवलम्बन करके ही तृतीय लहर की भी रचना हुई, इस तरह की धारणा असंगत नहीं है। इस लहर में अमर माणिक्य से लेकर गोविन्द माणिक्य के ठीक पहले के राजा कल्याणमाणिक्य तक केवल चार राजाओं का वर्णन लिपिबद्ध किया जा सका है। इस लहर की रचना में महाराज गोविन्द का कार्य था, यह प्रमाण इस ग्रन्थ के आलोचना से स्पष्ट होता है कि उनके पुत्र राम माणिक्य के शासन काल में यदि इसकी रचना होती तो इस लहर में गोविन्द माणिक्य का वर्णन परित्यक्त नहीं होता। राजमाला का चतुर्थ लहर इस राजा के विवरण से आरम्भ हुआ है।

राजा बाबू के घर में सुरक्षित राजमाला से जो विवरण प्राप्त होता है। वह और भी स्पष्ट है। उसके कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं–

''दुर्जय खण्ड बोलिया पुस्तक नाम राखे।	दुर्जय खण्ड पुस्तक नाम रखा।
श्रीधर्ममाणिक्य होइते राजा ताते लिखे।।''(1)	श्रीधर्ममाणिक्य से आगे के राजा उसमें लिखे।।

अर्थात दुर्जय खण्ड उस पुस्तक का नाम रखा गया जिसमें श्री धर्म माणिक्य से लेकर राजाओं को उसमें लिखा है।

---

(1) राजमाला के द्वितीय लहर का अंश है।

तृतीय लहर 83

सेइ पुस्तक पोरे गोबिन्द देब पाइलो।	वह पुस्तक बाद में गोबिन्द देब पाए।
ताहार पोरे राजा पुस्तक गाँथिलो।।	उसे राजा ने पुस्तक में बांधा।।
गोबिन्द माणिक्य राजा बड़ो पुण्यबान।	गोबिन्द माणिक्य राजा बड़ा पुण्यवान।
पूर्ब पूर्ब राजा सबेर सुनिलो बाखान।।	पूर्व राजाओं का सभी ने सुना बखान।।

अर्थात यह पुस्तक बाद में गोविन्द देव को मिली। इसके बाद राजा ने पुस्तक के पन्नों का ग्रन्थन किया। गोविन्द माणिक्य बड़े ही पुण्यवान थे जिन्होने पहले के सभी राजाओं की गुण गाथा का श्रावण किया।

इन सारी हालातों की आलोचना से यह समझा जाता है कि महाराज गोविन्द माणिक्य के समय इस लहर की रचना हुई और उसके आत्मज राम माणिक्य के समय समाप्त हुई। इसी वजह से गोविन्द माणिक्य का विवरण इसमें परित्यक्त है। श्रोता की जगह राम माणिक्य का नाम ही लिया गया है। इसके अतिरिक्त पहले के दोनों मतों के सामंजस्य की रक्षा के लिए दूसरी युक्ति परिलक्षित होती है।

पहले की गई उद्धृति के विवरण से पता चलता है कि सिद्धांतवागीश उपाधि युक्त द्वारपंडित के द्वारा इस लहर की रचना हुई है। रचियता का नाम अथवा परिचय सूचक कोई विवरण राजमाला में नहीं है। स्थानीय प्राचीन व्यक्तिओं के द्वारस्थ होकर और प्राचीन पंडित समाज का आश्रय ग्रहण करके भी इनका परिचय योग्य कोई भी विवरण नहीं मिला। नाना तरह के उपायों का अवलम्बन द्वारा कवि के परिचय प्राप्त करने में बार बार अकृत कार्य हो रहा था, इसी समय एक दिन संध्या के बाद एक वृद्ध ब्राह्मण देवता अगरतल्ला में महाराज कुमार श्रीयुत नरेन्द्र किशोर देव बर्मन बहादुर के बैठक खाने में उपस्थित हुए। उनका नाम था श्रीयुत पूर्णचन्द्र भट्टाचार्य। मैं उनके आगमन से पहले से ही कुमार बहादुर के सदन में उपस्थित था। आगन्तुक व्यक्ति को कुमार बहादुर पहले से ही पहचानते तो थे किन्तु विशेष परिचय से अनभिज्ञ थे। मुझसे इसके पहले इनसे कभी मुलाकात नहीं हुई थी।

कुछ देर तक बातचीत होने के बाद प्रसंगवश ''मै राजमाला सम्पादन का कार्य कर रहा हूँ'' सुनकर आगन्तुक ने आग्रह के साथ पूछा, ''राजमाला के तृतीय खण्ड रचियता का विवरण क्या आपको मिला है ? यह खण्ड मेरे प्रपितामह गंगाधर सिद्धांतवागीश की रचना है।'' भट्टाचार्य महाशय की बात जैसे दैव वाणी की तरह प्रतीत होती थी। कुछ देर तक स्थिर दृष्टि से उनके चेहरे की ओर मैं देखता रहा। जिनके बारे में तथ्य संग्रह का कोई सूत्र ही जहाँ मुझे नहीं मिल रहा था। वहाँ भगवान की अपार दया से उन्हीं का वंशधर आज अप्रत्याशित रूप से घर में उपस्थित है। इस घटना से हर्ष और विस्मय की सीमा नहीं रही। कुमार बहादुर ने विस्मय से कहा ''इस तरह का अभावनीय योग भगवान की कृपा सापेक्ष ही है।'' साथ में छोटा सा एक खाता और पेन्सिल थी। कवि का परिचय उसी समय मैने लिख लिया। विस्तृत विवरण प्रदान के लिए भट्टाचार्य महाशय से हमने विशेष अनुरोध किया और फिर उन्होने विस्तृत विवरण प्रदान कर मुझे अनुग्रहीत किया है। इसी पर आधारित कवि का संक्षिप्त विवरण प्रदान किया जा रहा है।

तृतीय लहर 84

भारद्वाज गोत्रीय डिंसाई श्रोत्रिय वंश सभूंत विभूति उपाघ्याय राढ़ देश निवासी थे। उनका क्रम अधस्तन पुरूषत्रय – सदानन्द पाठक, परमानन्द आचार्य और श्रीमंत आचार्य राढ़ देश में ही रह गये थे। श्रीमंत के यहाँ रामचन्द्र और रामकृष्ण नाम के दो पुत्र थे। इनमें ज्येष्ठ रामचन्द्र राढ़ देश त्यागकर पद्मा तीरवर्ती चन्द्र प्रताप में जाकर रहने लगे। किन्तु यहाँ पर रहना एक पुरूष से अधिक काल तक स्थायी नहीं हो पाई। रामचन्द्र के पुत्र रघुनाथ वाचस्पति और विश्वनाथ भट्टाचार्य चन्द्रप्रताप की आवास भूमि परित्याग कर त्रिपुरेश्वर के आश्रय में, मेहेरकुल परगने में आकर रहने लगे। रघुनाथ बूडिचंग गाँव में और विश्वनाथ श्रीचाइल गाँव में आ गये थे।

पूर्णचन्द्र भट्टाचार्य महाशय के मत से, इन भ्रातृ युगल ने त्रिपुरेश्वर यशोधर माणिक्य के राजत्व काल में त्रिपुरा में आगमन किया था। किन्तु इसका कोई निर्भर योग्य प्रमाण नहीं मिलता। राजमाला तृतीय लहर के रचियता गंगाधर सिद्धांतवागीश, पूर्वोक्त रघुनाथ वाचस्पति के पुत्र थे। कल्याणमाणिक्य के पूर्व में त्रिपुर दरबार में गंगाधर का अस्तित्व नहीं मिलता हैं। वे कल्याणमाणिक्य के द्वार पंडित एवं राजपुरोहित थे। राजमाला की आलोचना से यही माना जाता है। कल्याणमाणिक्य के द्वारा युवराज नियोग के समय(1) एवं तुला पुरूष दान इत्यादि पात्रिक मंगल जनक कार्यानुष्ठान(2) के समय सिद्धांतवागीश की उपस्थिति देखी गई है। कल्याणमाणिक्य के पश्चात् महाराजा गोविन्द माणिक्य के राजत्व काल में 1081 त्रिपुराब्द तदनुसार 1593 शकाब्द में एक ताम्र शासन द्वारा, सिद्धांतवागीश के पिता रघुनाथ वाचस्पति को सात द्रोण भूमि ब्रह्मोत्तर प्रदान किया गया था। उक्त वाचस्पति महाशय के अधस्तन वंश श्रीयुत विपिन चन्द्र भट्टाचार्य महाशय के सौजन्य से इस ताम्र फलक का दक्षिणार्द्ध मिला है। वामार्द्ध विनष्ट हो जाने के कारण संग्रह नहीं हो सका। मिले हुए अंश से एक विवरण अवश्य मिलता है। सनद दाता के नाम का अंश विनष्ट होने पर भी

....

(1)

पात्र मित्र सम्बोधिया आदेशे राजन।	पात्र मित्र सभी को आदेशा राजन।
युबराज कोरिते गोबिन्द नारायण।।	युवराज है करना गोविन्द नारायण।।
लग्नाचार्य सहिते जे सिद्धांतवागीश।	लग्नाचार्य साथ जो थे सिद्धांतवागीश।
शुभ दिन कोरिलेन चाहिया ज्योतिष।।	शुभ क्षण किया देखकर ज्योतिष।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड74पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड74पृ

अर्थात अपने पात्र मित्रों को बुलाकर राजा ने आदेश दिया कि गोविन्द नारायण को युवराज पद पर भूषित किया जायेगा। सिद्धांतवागीश ने लग्नाचार्य इत्यादि देखकर ज्योतिष विचार के अनुसार एक शुभ दिन निर्धारित किया।

(1)

सिद्धांतवागीश भट्टाचार्य शिरोमणी।	सिद्धांतवागीश शिरोमणि भट्टाचार्य।
बस्त्र अंलकार ताके दिलेक तखनि।।	वस्त्र अंलकार करके दिया उन्हे साज।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड74पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड74पृ

अर्थात सिद्धांतवागीश भट्टाचार्य शिरोमणि को उसी समय वस्त्र अंलकार इत्यादि प्रदान किया गया। ''

तृतीय लहर 84

तृतीय लहर–**84**



सिद्धान्त वागीश के पिता रघुनाथ वाचस्पति को प्राप्त ताम्रशासन

तृतीय लहर 85

सनद के शकांक एवं ''श्री राम सत्य'' मोहर द्वारा यह जो महाराज गोविन्द माणिक्य का सम्पादित है, इसे अनायास ही समझा जाता है। सनद का पाठ नीचे दिया जा रहा है।(सनद बंगला भाषा में है। और उसका हिन्दी रूपान्तर दिया जा रहा है)

विष्णु (श्री राम सत्य जय) (श्री राम सत्य)

... विषम समर विजयी महामहोदयी राज नामा देशोह।
.........त। राजधानी हस्तिनापुर सरकार उदयपुर परगने
.... ज विजयपुर व मौजे जगतपुर हासिलात पूर्व पाँच द्रो
..........सात द्रोण भूमि स्वर्गीय प्रीते बम्होत्तर श्री रघुनाथ वाचस्पति
.... म तुलिया परम सुखे भोग करौकेन एहार पाँचाप
.... याब्दा : 1594 सन् 1081 तें 7 फाल्गुन। (1)(2)
.... 1 कार्तिक

इन सभी विवरणों से यह साफ दृष्टिगोचर होता है कि रघुनाथ वाचस्पति कल्याणमाणिक्य के शासनकाल में ही त्रिपुरा में आये थे। यही संभावना ही अधिक है। इसके पहले अगर वे आये भी होगें तो भी कल्याणमाणिक्य के शासन काल में ही राजदरबार में उनके पुत्र गंगाधर ने प्रतिपत्ति हासिल कर ली थी।

महाराज कल्याणमाणिक्य ने तुला पुरूष दान के उपलक्ष्य में तीन हाथी और पाँच अश्वों का दान किया था। इस समय सिद्धांतवागीश ने भी एक हस्ती लेना स्वीकार किया था। इस विषय पर राजमाला में मिलता है–

तुला होते नामिया उत्सर्गे सेई क्षण।	तुला से उतर उत्सर्ग किया उसी क्षण।
तिन हस्ती पंच घोड़ा दान बितरण।।	तीन हस्ती पाँच घोड़ा दान वितरण।।
सिद्धांतवागीश भट्टाचार्य शिरोमणी।	सिद्धांतवागीश शिरोमणि भट्टाचार्य।
बस्त्र अंलकार ताके दिलेक तखनि।।	वस्त्र अंलकार करके दिया उन्हे साज।।
हस्ती ऐक दिलो ताके ससज्ज कोरिया।	हस्ती एक दिया उन्हे करके सुसज्जित।
मेहेरकुले ग्राम एक दिलो उत्सर्गिया।।	मेहेरकुल में ग्राम एक दिया उत्सर्ग।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड74पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड74पृ

अर्थात ''तुला पुरूष दान के समय तुला से उतरकर उत्सर्ग करना शुरू किया। तीन हाथी और पाँच अश्वों का दान वितरण किया। सिद्धांतवागीश भट्टाचार्य, जो ब्राह्मणों में श्रेष्ठ माने जाते थे, उन्हे उसी समय राजा ने वस्त्र और अलंकार इत्यादि का दान किया। सुसज्जित करके एक हस्ती का भी दान किया। इसके अलावा मेहेरे कुल के एक गाँव को भी उन्हे दान स्वरूप प्रदान किया। ''

हस्ती प्रतिग्रह के फलस्वरूप सिद्धांतवागीश, समाज में विशेष रूप से निगृहीत हुए थे। तिल कांचन दान ग्रहीता की तरह हस्ती प्रतिग्राही ब्राह्मण, शास्त्र के अनुसार निन्दित एवं

....

(1) 1081 त्रिपुराबद में 1593 शक होगा। यहाँ पर 1594 लिखा गया है।
(2) दो तारीखों के अंकित होने के कारण को विवरणों के साथ आलोचना किया जायेगा।
(3) इस भूमि दान का कोई निदर्शन संग्रह नहीं किया जा सका है।

तृतीय लहर 86

पतित हो जाते हैं, इसलिए अग्रदानी ब्राह्मणों को छोड़ कर दूसरे ब्राह्मण यह दान ग्रहण नहीं करते। हस्ती प्रतिग्राही ब्राह्मण के बारे में शास्त्र की व्यवस्था है।

"ब्राह्मणः प्रतिगृहीयाद्वुत्तार्थं साधुतस्थथा।
अव्यश्वमापि मातंग तिल लोहाश्ंच वर्जयेत्।।

ब्रह्म पुराण।

अन्यत्र मिलता है। – "हस्तिकृष्णाजिनादय़ास्तु गर्हिता ये प्रतिग्रहाः।
सद्विप्रस्तान्न गृणहियुर्गह्नन्तस्तु पतन्तिते।।"

वृहत पराशर

इसलिए सिद्धांतवागीश हस्ती दान ग्रहण के फलस्वरूप समाज में निन्दित हुए थे। उने वंशधर भी इस निन्दा से सम्यक रूप से भी निस्तार नहीं पा सके।

सिद्धांतवागीश, उनके पिता के समय से ही त्रिपुरा में रहने से भी अल्प समय में ही स्थानीय प्रभाव उनके उपर कितना प्रधान्य फैल सका था, एक मात्र भाषा की आलोचना करने से ही स्पष्ट रूप से वह हृदयगम् होगा। प्राचीन राजमाला में कवि द्वारा व्यवहृत भाषा का कुछ निर्देशन यहाँ दिये जा रहे हैं:–

1. हेन काले भूत बेटा आइलो मोर आगे।
पथ चापिया रोइलो देखिया ना भागे।।
2. अन्न खाइते जल खाइले निर्बली जामाई।
तुमि छाड़ होइते आर कि होबे कामाई।।
3. राज पुत्रेर मुन्डु देखि सेकेन्दार साहा।
आविष्कार कोरिया बोलिए आहा आहा।।
4. मघेर भंगेते तोरे धरिबेक कोने।।
5. आज्ञामात्रे चन्द्रदर्प ना कोइलो दिरंग।।
6. जतो धर्म कोरिलेक कोहिबाम कोतो।। इत्यादि।

उद्धृत वाक्यों में निम्नलिखित शब्दों का त्रिपुरा में प्रचलन था। वर्तमान काल में भी अनेक शब्द व्यवहार होता है। प्रत्येक शब्द का अर्थलिपि किया गया हैं। इन वाक्यों में कुछ प्राचीन बंगला के शब्द है। जो केवल स्थानीय लोग ही यहाँ बोलते है। अर्थात सिद्धांतवागीश की कविता में उन भाषाओं का प्रभाव है। दूसरे अर्थ में उन पर स्थानीय भाषा का काफी प्रभाव था।

पथ चापिया– पथ रोककर, कामाई– उर्पाजन या कार्य साधन,
आविष्कार का यहां अर्थ है आक्षेप। कोने– कौन या कौन व्यक्ति।
दिरंग– देर। कोहिबाम– कहूँगा।

तृतीय लहर का सारा भाग इस तरह के शब्दों से परिपूर्ण है। प्रादेशिक भाषा समाज के उपर किस तरह अपना प्रभाव जमाती है, इस लहर की भाषा की आलोचना करने से उसके ज्वलन्त उदाहरण मिलेगें।

श्रीयुत पूर्ण चन्द्र भट्टाचार्य महाशय ने एक विस्तृत वंशावली हम लोगों को प्रदान किया है। उनमें एक मात्र रघुनाथ वाचस्पिति की वंशधारा यहाँ संयोजित की गई है। बाहुल्य भय से दूसरी वंश धाराओं का वर्णन परित्याग किया गया है।

तृतीय लहर 86

A3Rajmala foto final JPG (Tratiya Lehar 86-2).JPG

तृतीय लहर 87

पहले कहा गया है, राजमाला तृतीय लहर की रचना महाराज गोविन्द माणिक्य और उनके आत्मज रामदेव माणिक्य के शासन काल में हुई है। अतएव इस लहर का प्राचीनत्व निर्धारण अगर करना हो तो रामदेव माणिक्य के राजत्वकाल को जानना आवश्यक है। चाकला रोशनाबाद सेटेलमेन्ट अफसर मिस्टर जे जी कमिंग(**J.G. Comming I.C.S.**) त्रिपुरा के इतिहास प्रेणता मिस्टर ई एफ सेडिंस (**E. F. Sandys**) और राजमाला संग्राहक स्वर्गीय कैलाशचन्द्र सिंह महाशय इत्यादि के निर्धारण के अनुसार एवं ''त्रिपुर की वंशावली'' किताब के मतानुसार महाराजा रामदेव माणिक्य ने ईस्वी सन् सतरहवीं सदी के अन्त में राज्य शासन किया था। राजमाला की आलोचना से भी यही प्रमाण मिलता है। उल्लिखित एतिहासिक गणों में इस विषय में मत वैषम्य परिलक्षित होने से धारण योग्य नहीं है। इन सभी वाक्य में मिलता है, राजमाला आलोच्य खण्ड अढ़ाई सौ वर्ष पहले रचित हुआ था।

राजमाला की पहले वाली दोनों लहरों की तरह इस लहर में भी राजाओं के इतिव्रत के अलावा दूसरे विषयों का विवरण ज्यादा नहीं मिलता। शासन नीति, समाज नीति, कृषि और वाणिज्य नीति इत्यादि राज्य की अवस्था परिज्ञापक विवरण इनमें बहुत ज्यादा नहीं है। राजाओं का जो कुछ विवरण सन्निविष्ट हुआ है, वह भी नितांत संक्षिप्त ही है। अनुशंगिक रूप से इसमे जितने एतिहासिक तथ्य की इंगित मिलती है, उसका भी विश्लेषण करने पर उसकी सहायता से बहुत से प्राचीन तथ्य उद्धार किये जा सकते है। यह खण्ड पुरातत्वानुसन्धित्सु एवं साहित्यानुरागी व्यक्तिओं का आदरणीय हो उठेगा, ऐसी आशा की जा सकती है।

अमर माणिक्य और अमर सागर

महाराज अमर माणिक्य ने 1499 शकाब्द में राज्य लाभ किया।(1) सिंहासन प्राप्ति के बाद उनका प्रथम कार्य था –अमर सागर नाम सुविशाल व्यापी का खनन करना। इस तरह के कार्य त्रिपुरेश्वरों के लिए नूतन या वैचित्रमय नहीं है। महाराज अमर के पहले और बाद में उनके राजाओं ने ही विस्तीर्ण तडाग आदिओं की प्रतिष्ठा द्वारा पूण्य और यश अर्जन किया है। किन्तु अमर सागर खनन कार्य का एक विशेषत्व यह है कि इसे जलाशय प्रतिष्ठा न कहकर राजसूय यज्ञ कहना असंगत नहीं होगा। पूर्व बंग और आसाम प्रदेश के उस समय के प्रधान प्रधान राजा और जमींदारों को इस खनन कार्य के सम्पादन के लिए मृतिका खननकारी लोगों को भेजने के लिए बाध्य किया गया था। जिस व्यक्ति ने जितना मजदूर भेजा था, राजमाला में उसका एक हिसाब भी दिया गया है। उस समय त्रिपुरा अंचल में मृतिका खनन कारियों को ''दाड़ी'' एवं

---

(1)

चौद्द श उनशत शके अमरदेब राजा।	चौदह सौ निन्यानवे शक अमरदेव राजा।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 11पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 11पृ

तृतीय लहर 88

उनके सरदारों को ''माझी'' कहा जाता था। राजमाला में लिखित दाड़ी की सूची नीचे दी जा रही है। इसका विवरण हम पहले भी दे आये हैं। फिर भी बंगला में लिखित उन पंक्तियों को हम पुनः यहाँ दे रहे हैं।

बिक्रमपुर जमींदार चान्दराय नाम।	जमींदार विक्रमपुर नाम चान्दराय नाम।
सात शतो दाड़ी दिछे कार्य अनुपाम।।	सात सौ दिया दाड़ी कार्य अनुपम।।
बाकलार बसु दिछे सप्त शतो जन।	बाकला बसु दिया सप्तशत जन।
सईले गोयाल पाड़ा गाजी सप्तशत जन।।	सले गोयाल पाडा गाजी सप्तशत जन।।
भावालिया जमींदार दिछे हाजार जन।	जमींदार भावालिया एक हजार जन।
अष्टग्रामे दिछे दाड़ी पंचशत जन।।	अष्ट ग्राम दिया दाड़ी पंच शत जन।।
बानियाचुंगेर दाड़ी आर पंच शत।	बानिया चुंग के हैं और पंचशत।
रण भावाल दाड़ी सहस्त्र सन मत।।	रण भावयाल दाड़ी हैं सहस्त्र ।।
सराइल इछा खाँ दिलो सहस्त्र जन।	इछा खाँ सराइल ने दी है सहस्त्र जन।
भुलूया दियाछे दाड़ी हाजार आपन।।	भुलूया ने दी है दाड़ी हजार स्वजन।।
सप्त हाजार एक शत दाड़ीर निकाश।	सप्त सहस्त्र एक शत दाड़ी को निकाश।
कविचन्द्र पुत्रे कोहे सुबुद्धि विश्वास।।	कविचन्द्र पुत्र कहे सुबुद्धि विश्वास।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड3–4पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड3–4पृ

राजा बाबू के घर पर रक्षित ग्रन्थ का पाठ कुछ भिन्न है। उसमें दिया गया है–

''सहस्र पदाति संगे ससज्ज कोरिया।
इछा खां मछलन्द आली दिछे पाठाइया।।
चान्द राय जमींदार बिक्रमे केशरी।
सप्तशत प्रमाणे दियाछे से दाड़ी।।
बाकलार बसु दिछे सप्तशत जन।
भूष्णारा दियाछे दाड़ी ततो जन।।
भावअली दिछे इछा खाँर अनुमति।(1)
अष्टग्रामें पंचशतो सुनह नृपति।।
बानिया चोंगेते दिछे दाड़ी पंचशत।
रण भावआलिया दिछे दुई पंचशत।।
सराइल भुलुआ दिछे हाजार हाजार।
सकले दियाछे दाड़ि जतो जमींदार।।

उक्त दोनों पाठों में कुछ पार्थक्य परिलक्षित होता है। इसके अलावा प्राचीन राजमाला का पाठ उक्त दोनों पाठों से कुछ भिन्न है। नीचे हम उसे भी दे रहे हैं।

सहस्र परिमाण दाड़ि सुसज्य कोरिया।

---

(1) अनुमति– यहाँ पर अनुरूप अर्थ होगा।

तृतीय लहर 89
इछा खाँ मचलन्दाली दिछे पाठाइया।।
चान्द राय श्रीपुर विक्रमपुर हने।
शप्तशत दाड़ि से जे दिलेन्त आपने।।
बाकलार बसु दिछे शप्तशत जन।
सलोई गोयाल पाड़िया गाजी दिलो ततो जन।।
भाव आलिया दिछे इछा खाँयेर अनुमति।
अष्ट ग्रामे दिछिलेक पंच शत पर्ति(?)।।
बानिया चोंगे दियाछिलेक आर पंच शत।
रण भवआले आर पंच पंच शत।।
सराइल भुलुआए दिछे सहस्र सहस्र।
आर जतौ भौमिके दियाछे कोरि मिश्र।। ''

उपर के तीन पाठों में कुली की संख्या एवं कुली प्रदान करने वालों के नाम के विषयक के किसी किसी अंश में अनैक्य दिखाई दिया है। इस बारे में आलोचना की आवश्यकता है।

कुलीदाता	सम्पाद्य किताब के अनुसार कुली की संख्यां	राजा बाबू घर में रखी हुई किताब के अनुसार कुली संख्या	प्राचीन राजमाला के हिसाब से कुली की संख्या
चाँदराय	700	700	700
बाकला के बसु	700	700	700
गोयाल पाड़ा के गाजी	700	0	700
भावआल	1000	1000	1000
अष्टग्राम	500	500	500
बानिया चंग	500	500	500
रण भावयाल	1000	1000	1000
सराइल(इछा खाँ)	1000	1000	1000
भुलुया	1000	1000	1000
इछा खाँ मसनद आली	0	1000	1000
भूष्णा	0	700	0
योग	7100	8100	8100

हमारी सम्पाद्य किताब की अपेक्षा अन्य दोनों किताबों में एक हजार अधिक दिखाई देती हैं। सम्पाद्य किताब में और प्राचीन राजमाला ग्रन्थ में गोयाल पाड़ा के गाजी के सात सौ कुली देने की बात लिखी गई है। राजा बाबू घर में जो ग्रन्थ है उसमे गोयाल पाड़ा का कोई उल्लेख नहीं है। भूष्णा के जमींदार के जमींदार ने सात सौ कुली दिया है, ऐसी बात लिखी गई है। दूसरे ग्रन्थों में इसका उल्लेख नहीं है। भूष्णा के एक

समय त्रिपुरा के अधीन रहने का प्रमाण भी है। महाराज विजय माणिक्य ने प्रधान सेनापति दैत्य नारायण के हत्याकारी माधव को भूष्णा के लस्कर पद पर नियुक्त किया था।(1) तथापि प्राचीन राजमाला की भाषा सर्वाधिक निर्भर योग्य है। उसमें जब भूष्णा का उल्लेख नहीं है। तब राजा बााबू के घर में रखी हुई ग्रन्थ का पाठ प्रक्षिप्त ही समझा जायेगा। यहाँ पर गोयाल पाड़ा की जगह भूष्णा का लिख देना कोई विचित्र बात नहीं है।

राजा बाबू के घर के ग्रन्थ में और प्राचीन राजमाला में यह उल्लेख मिलता है कि ईशा खाँ मसनद अली एक हजार एवं सराइल के ईशा खा ने एक हजार कुली प्रदान किया था। हमारी सम्पादित ग्रन्थ में केवल सराइल के ईशा खाँ का नाम है। इन्होने भी त्रिपुरेश्वर से मसनद अली उपाधि प्राप्त की थी। इसी वजह से दोनों ईशा खाँ को अभिन्न समझ राजमाला के नकल ने एक मात्र ईशा खाँ का नाम ही उल्लेख किया है, देखकर ऐसा लगता है। ऐसा होने पर अर्थात दोनों ईशा खाँ यदि कुली प्रदान करते कुली की संख्या 7100 न होकर 8100 की होती, ऐसा कहा जा सकता है। किन्तु यह संख्या भी विशुद्ध नहीं लगती। प्राचीन राजमाला में कुली दाताओं के नामोल्लेख का हिसाब प्रदान करने के बाद लिखा गया है। – आर जतो भौमिके दिया छे कोरि मिश्र।। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राजमाला में जिनका नामोल्लेख है, इसके अलावा भी दूसरे जमींदारों से भी कुली प्राप्त किया गया था। इनकी संख्या पाने का कोई उपाय नहीं है।

अमर सागर का खनन 1500 शकाब्द में आरम्भ होकर तीन सालों में खत्म हुआ था।(2) यह ईसवी 1600 सदी के शेष पद की घटना है। इस समय जिन लोगों ने कुली प्रदान द्वारा इस कार्य में सहायता किया था, उनका संक्षिप्त विवरण प्रदान करना संगत सा जान पड़ता है। नीचे हम दे रहे हैं।

चाँद राय ईसवी सन् सौलह सौ सदी में चाँद राय और केदार राय नामक भ्रातृ युगल विक्रमपुर के मुकुट मणि स्वरूप अविर्भूत हुए थे। दोनों भाईयों में चाँद राय बड़े थे। ये जाति में कायस्थ, घृत कौशिकी गौत्रीय दे वंश में जन्मे थे। इनके अधस्तन पुरूष निमराय विक्रमपुर में आकर रहने लगे।

---

(1) ई कोथा सुनिया राजा सत्य निर्बन्धिलो।
भूष्णा राज्ये जे तोमा लस्कर कोइलो।।
प्राचीन राजमाला

अर्थात यह बात सुनकर राजा ने सत्य निर्णय किया और कहा कि भूष्णा राज्य में तुम्हें लस्कर बनाया गया।(इससे यह प्रमाण होता है कि भूष्णा राज्य त्रिपुरा के अधीन था।)

पनेरो श शके अमरसागर आरंभन।	पनरह सौ शक में शुरू अमरसागर खनन।
तीन वर्षे सागर खना होइलो समापन।।	तीन साल में हुआ अमर सागर समापन।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 14पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 14पृ

अर्थात– 1500 शकाब्द में अमर सागर का खनन कार्य प्रारम्भ हुआ और तीन साल में सम्पन्न हुआ।

यहीं पर आकर उन्होने वास स्थान के लिए गाँव बसाना शुरू किया। किसी किसी के मत से ये लोग कर्नाटक देश से आकर और फिर किसी किसी के मत से मुर्शिदाबाद के अधीन कर्ण सुवर्ण से निमराय ने विक्रमपुर में आगमन किया था। मतांतर में सेन राजाओं के शासन काल में उनके स्वदेशी निमराय को विक्रमपुर में लाकर आश्रय प्रदान किया था। इन सभी प्रवादों में किसमे सच्चाई है, यह कहना मुश्किल है।

पहले ही कहा गया है। ये भातृ युगल ई0 सन् सौलहवीं सदी में जन्में थे। काली गंगा के तीरवर्ती श्रीपुर में इनकी राजधानी स्थापित हुई। सौन्दर्य और सम्मृद्धि के गौरव में उस समय श्रीपुर हर ओर से श्री सम्पन्न के एक प्रसिद्ध नगर में परिणत हुआ था। विदेशी परिब्राजक भी इस जगह को देखने लायक बताते थे। भ्रमणकारी राल्फफिच इस जगह को देखकर लिख गये है–

"From Bacla I went to Sreepur which standeth upon the river Ganges. The King is called cadry. They are all here about rebels against their King Zelalddin Echebar."

इस समय बंग के कुछ भूम्याधिकारी समवेत भाव से दिल्ली की अधीनता को छिन्न कर स्वाधीन भाव से शासन दण्ड परिचालिना के लिए दृढ संकल्प हुए थे।

इसने यशोहर के स्वनाम धन्य राजा प्रतापादित्य, चन्द्रद्वीप के कन्दर्प नारायण राय, विक्रमपुर के चाँद और केदार राय, भुलुया के लक्ष्मणमाणिक्य, भूष्णा के मुकुन्द राय, भावयाल के फजल गाजी, खिजिर पुर के ईशा खाँ, मसनद अली एवं चाँद प्रताप के चाँद गाजी का नाम विशेष रूप से उल्लेख योग्य है। ये लोग उस समय बारह भुईयाँ में परिगणित हुए थे इनका स्वदेश उद्धारसाधन के लिए लगे हुए थे यह सत्य है, किन्तु शेष समय तक उस संकल्प की रक्षा नहीं कर पाए। कुछ स्वदेश द्रोही विश्वासघातक प्रलोचना से उनका सारा संकल्प व्यर्थ हो गया। ये लोग परस्पर एक दूसरे से उपर प्रमुखत्व स्थापन के लिए व्यस्त हो उठे। इसके फलस्वरूप सर्वनाश का मूल आत्म कलह की सूचना हुई। इसके विषमय फलस्वरूप सभी को ध्वंस के पथ पर अग्रसर होना पड़ा था।

चाँद राय और केदार राय के प्रतिष्ठित कोटिश्वर शिव विग्रह के पुजारी को गोष्ठीपति श्रोत्रिय श्रेणी में युक्त करने की कोशिश की पर उनके ही अमात्य विशुद्ध श्रोत्रिय वंशज श्रीमंत खाँ ने घोरतर आपत्ति की। राजाज्ञा से उस देवल ब्राम्हण को श्रोत्रिय कहकर स्वीकार करने के लिए श्रीमंत मजबूर तो हुए पर इसके फलस्वरूप राजा एवं राजश्री के प्रति उनके मन में भयानक आक्रोश ने जन्म लिया इसके बाद से ही वे प्रतिहिंसा को चरितार्थ करने के लिए प्रच्छन्न रूप से सदा सर्वदा सुयोग की प्रतीक्षा में लगे रहे।

एक समय खिजिर पुराधिपति ईशा खाँ मसनद अली ने बन्धु भाव से केदार राय के भवन में अतिथ्य ग्रहण किया। इस उपलक्ष्य से बहुत बड़ा समारोह का आयोजन किया गया था। किन्तु विधाता की विडम्बना से यह अतिथ्य ही इनके भयानक शत्रुता का कारण था।

तृतीय लहर 92

चाँद राय की बाल विधवा कन्या सोनामणि उस समय पूर्ण युवती थी। उसके असाधारण रूप लावण्य की ख्याति सारे देश में फैली थी। ईशा खाँ ने चाँद राय के भवन में रहते समय एक दिन अकस्मात सोनामणि को देखा। यह दर्शन ही बंग के अदृष्ट परिवर्तन का कारण होकर सामने आया।

ईशा खाँ ने राजधानी में जाकर ही चाँद राय और केदार राय के यहाँ दूत प्रेरण कर सोनामणि को प्राप्त करने का अभिप्राय व्यक्त किया। हिन्दु विधवा का महात्म्य मुसलमानों को बोधगम्य नहीं है कि कैसे हिन्दु विधवा की पवित्रता की रक्षा होती है। यह भी मुसलमानों की बुद्धि से परे है। खास तौर से उस समय कुछ हिन्दू नरपति अपनी कन्या या बहन को मुसलमान सम्राट को सौंपकर अपने को धन्य समझते थे। इन्हीं सभी कारणों से ईशा खाँ ने सोचा था कि चाँद राय आदि उनके इस प्रस्ताव को सानन्द स्वीकार करेगें। किन्तु इसका विपरीत फल हुआ। चाँद राय ने ईशा खाँ के प्रस्ताव से अवगत हो कर ही दूत को खदेड़कर खिजिर के विरूद्ध युद्ध घोषणा कर दिया। उन्होने ही सबसे पहले केला गछिया दुर्ग को आक्रमण और विध्वस्त कर दिया था। ईशा खाँ ने उपयान्तर न देखकर त्रिवेणी दुर्ग में आश्रय लिया। राय भ्रातृ द्वय द्वारा वह दुर्ग भी आक्रान्त एवं खिजिर को लूट लिया। ईशा खाँ विपत्ति को देखकर परित्राण पाने की चिन्ता करने लगे।

इस समय श्रीमंत खाँ चाँद राय के साथ युद्ध क्षेत्र में उपस्थित थे। अपने अन्दर संजोई हुई दुरभिसन्धि को भलीभूत करने कर उपयुक्त समय सोच गोपन रूप से ईशा खाँ के साथ साक्षात किया। आपस में परामर्श से स्थिर हुआ कि श्री मंत चाहे जैसे भी हो सोनामणि को ईशा खाँ के हाथों में सुपुर्द करेगा। इस कार्य के लिए ईशा खाँ श्री मंत को बहुत से पारितोषिक प्रदान करने के लिए प्रतिश्रुति बद्ध हुआ। इसे बाद श्री मंत खाँ चाँद राय और केदार राय के अगोचर में श्रीपुर में जाकर प्रकाश किया। ''राय आदि दोनों भाई शत्रु द्वारा अवरूद्ध हो चुके हैं, ईशा खाँ सोनामणि को प्राप्त करने के लिए शीघ्र ही श्रीपुर पर चढाई करेगा।'' इस संवाद से सभी विचलित हो उठे। राजरानी राज्य से अधिक अपनी विधवा कन्या की सुरक्षा के लिए अधिक व्याकुल हो उठी। श्री मंत ने परामर्श दिया, सोनामणि को लेकर राजधानी त्याग करना ही उचित है। चाँद राय का प्रधान आमात्य वैद्य जातीय(अम्बष्ठ विप्र, जिसे कही कहीं अम्बष्ठ कायस्थ भी कहा जाता है लेकिन शास्त्रानुसार ये अम्बष्ठ विप्र है।) रघुनन्दन चौधरी ने इस प्रस्ताव पर कान न देकर राजधानी और राज्य परिवार की रक्षा की व्यवस्था करने लगा। श्री मन्त ने इस प्रस्ताव में असफल होकर पुनः रानी के यहाँ प्रस्ताव रखा। सोनामणि फिलहाल उसके ससुराल चन्द्रद्वीप में रखा जा सकता है। रानी ने इस प्रस्ताव को अतिसंगत मान लिया और इसे कार्यान्वित करने के लिए व्यग्र हो उठी। आमात्य रघुनन्दन बहुत कोशिश के बाद भी रानी का मत परिवर्तन न कर सके।

मजबूरन राज कन्या को जल पथ से प्रेरण करने का सिद्धान्त लिया गया। पापात्मा श्रीमंत उसका रक्षक निर्वाचित होकर साथ गया। यह दुर्वृत्त सुयोग पाकर सोनामणि को चन्द्रद्वीप के बदले सुवर्णग्राम में ले जाकर ईशा खाँ को अर्पण किया।(1) इस दुर्घटना का संवाद पाकर चाँद राय क्षोभ से और घृणा से अधीर हो उठे। उन्हाने युद्ध का भार अपने भाई को देकर श्रीपुर लौट आए एवं अपनी ईष्ट देवी के प्रत्यादेश से केदार राय को युद्ध से प्रतिनिवृत होकर लौट आने के लिए दूत को भेजा। केदार अग्रज के आदेशानुसार क्षुण्ण मन से अपनी फौज के साथ राजधानी श्रीपुर लौट आये। दुहिता की अवस्था एवं राज्य का परिणाम की चिन्ता से चाँद राय अल्प काल में ही बीमार हो पड़े। बाद में यही रोग ही उनके लीला अवस्थान का कारण हो गया।

केदार राय

चाँद राय के परलोक गमन के बाद उनके कनिष्ठ भ्राता केदार राय विपुल विक्रम के साथ राज्य शासन में प्रवृत्त हुए। सन्द्वीप का अधिकार लेकर उन्हे मुगल वाहिनी एवं आराकन के मघ शक्ति के साथ बार बार लड़ाई में लिप्त रहना पड़ा सन्द्वीप के अधिपत्य रक्षा के निमित्त उन्होने असाधारण वीरत्व का प्रदर्शन किया था। इतिहास के पन्ने पन्ने में जिसका जिक्र है।

चाँद राय की मानव लीला का संवरण करने के कुछ ही दिनो पश्चात् भारत सम्राट महामति अकबर का परलोक गमन हो गया। इसके बाद केदार राय के शासन काल में अकबर के ज्येष्ठ पुत्र सलीम "जहाँगीर"(विश्व विजयी) नाम ग्रहण कर साम्राज्य के अधीश्वर बने(1605 ई0)। बंग के भौमिकगण राजकर्मचारिओं के असंगत व्यवहार से उब कर मुसलमानों के शासन श्रृखंल के उन्मोचन के लिए पहले ही कोशिश कर रहे थे। जहाँगीर ने साम्राज्य प्राप्ति के कुछ ही दिनों पश्चात् शेर अफगान की घृणित उपायों से हत्या कर उसकी पत्नी मेहरुन्निसा को बेगम के रूप में स्वीकार करने से बाद बादशाह के प्रति जमींदारों की अधिक अश्रद्धा ही प्रगट होने लगी। इन लोगों ने समवेत रूप से शक्ति संग्रह के लिए संकल्प लिया था, किन्तु इसे वे कार्यान्वित न कर सके। कुछ स्वदेश द्रोही कूटचक्रिओं की प्ररोचना से विभ्रान्त होकर जमींदारों ने मिलकर शक्ति संचय करना तो दूर कर बात ठहरी, पारस्परिक आत्म कलह से क्रमशः कमजोर पड़ने लगे। यह हम पहले भी बता चुके है।

---

(1) सोनामणि के ईशा खाँ के हस्तगत होने का विषय **Journal of Asiatic Society of Bengal Vol XL III, Part I P. 202** में मिलेगा।

तृतीय लहर 94

इस समय दिल्लीश्वर, भौमिक समाज को दमन करने के उद्देश्य से अम्बराधिपति राजा मान सिंह को बंग के शासनकर्ता पद से नियुक्त किये।(1605 ई0)। मान सिंह ने प्रथमतः राजमहल में राजधानी स्थापना किया था। बाद में ढाका में स्थानान्तरित किया गया। इस समय ढाका का नाम ''जहाँगीर नगर'' रखा गया था।

भौमिक गण के मध्य भेद जन्म देने के लिए निमित्त मान सिंह ने विशेष चेष्टा की थी। चाँदराय के सर्वनाश के मूल श्रीमंत खाँ तथा स्वदेशद्रोही भवानन्द मजूमदार इत्यादि कतिपय व्यक्ति उनके सहाय हुए। इन्हीं की सहायता से अनेक गुप्त विवरण तथा सैन्य चलाने के खोज इत्यादि विषय से अवगत होने के बाद मान सिंह ने युद्ध घोषणा कर भूंया या राज लोगों के निकट दूत भेजने को बोला। कोई कोई मान सिंह के प्रलोभन में बाध्य होकर या तो भय से अभिभूत होकर आनुगत्य स्वीकार करने लगे। ईशा खाँ बहुत पूर्व ही भूंया लोगो का संग त्याग कर मुगलों के शरणपात्र हुए थे। महाराज प्रतापादित्य, राजा केदार राय, राजा मुकुन्द राय तथा चाँद गाजी को छोड़ अन्य सभी ने एक एक करके मान सिंह के निकट आत्म समर्पण किया।

मान सिंह, 1606 ई0 में महाराज प्रतापादित्य के विरुद्ध दण्डायमान हुए। दोनों के बीच घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रताप ने असाधारण वीरत्व प्रदर्शन किया यह सत्य है। परन्तु शेष तक मान सिंह की जय हुई। प्रतापादित्य धृत होकर पिंजरे में बन्द अवस्था में मुसलमान के हस्तगत हुए। अतः इसके बाद भूष्णा आक्रमण तथा मुकुन्द राय को विध्वस्त करके मुगल वाहिनी विक्रमपुर की तरफ अग्रसर होने लगे।

प्रथम बार मुगल सेनापति किलमिक को श्रीपुर आक्रमण के लिए प्रेरण किये गये। केदार राय के हाथ पराजित तथा बन्दी होने पर मान सिंह स्वयं युद्ध क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। वे विक्रमपुर के सीमान्त में छावनी करके एक गुच्छ जंजीर तथा एक तलवार सहित केदार राय के निकट दूत प्रेरने कर, कहा– केदार राय जंजीर ग्रहण करने के पूर्व दिल्ली का अनुसरण स्वीकार करे तो उसे अस्त्र धारण नहीं करने दिया जायेगा। यदि युद्धभिलाषी होकर तलवार ग्रहण करे तो तब मुगल वाहिनी के प्रबल आक्रमण से उसको दबोच देना होगा। उसके साथ एक पत्र भी दिया उसमें संस्कृत बंगला तथा हिन्दी भाषा मिश्रित निम्नोक्त वाक्य लिखे थे।

''त्रिपुर, मघ, बंगाली, काक, कुली, चाकालि
समस्त पुरुष मेतत् भाग जाओ पलायी।
हय–गज–नर–नौका कंपित बंग भूमिः
विषम समय सिंहो मानसिंहः प्रयाति।

तृतीय लहर 95

यह पत्र, श्रृंखल और तलवार पाकर केदार राय का वीर ह्रदय विक्षुब्ध हो उठा। मान सिंह के पत्र के जबाब में उन्होने लिखाः–

भिनत्ति नित्यं कविराज कुम्भं विभर्तिवेगं पवनातिरेकं।
करोतिवासं गिरिराज श्रृगें तथापि सिंहः पशुरेवनान्यः।।(1)

इस पत्र को दूत के हाथों में देकर कहा, तुम्हारे प्रभु को कहना कि मैंने उनकी तलवार को ग्रहण किया है। हम दोनों के बीच एक के अस्त्राघात से दूसरे का मस्तक स्कन्धच्युत न होने तक इस तलवार को विश्राम नहीं मिलेगा।

इसके बाद उभय पक्ष में भयानक संग्राम शुरू हुआ। सात दिनों तक अविराम युद्ध के पश्चात् विजय लक्ष्मी मान सिंह की अंकशायिनी हुई। केदार राय भयानक रूप से जख्मी हालात में पकड़े गये। इसके कुछ ही क्षणों के बाद बन्दी बनाकर मान सिंह के सामने लाए गए। इसके कुछ ही क्षणों के बाद उन्हे पंचतत्व की प्राप्ति हुई। भगवान ने उनकी पूण्यमय आत्मा को भावी दुर्गति के हाथों मुक्त कर दिया। इस युद्ध में केदार राय ने पाँच सौ रणतरी एवं बहु संख्यक पदातिक और अश्वारोही वाहिनी के साथ रण क्षेत्र में पदार्पण किया था। अकबर नामा ग्रन्थ में इस युद्ध का जो विवरण मिलता है। उसका कुछ अंश यहाँ पर दिया जा रहा है–

Raja Man Singh * turned his alttention towards Kaid Rai of Bengal who has collected nearly 500 Vessels of war and had laid seige to Kilmak, the Imperial Commander in Srinagar, Kilmak held out, till a body of troops was sent to his aid by the Raja. These finally overcame the enemy and after a furious cannonade took Kaid Rai prisoner who died of his wounds soon after.**

Akbornama Page 116.

इस युद्ध में विक्रमपुर की गौरव रवि हमेशा के लिए अस्त हो गया। चाँद और केदार राय की अतुल कीर्ति मंडित श्रीपुर सर्वग्रासिनी पद्मा के गर्भ से विलीन हो गया। कारू कार्य किया हुआ शीशे का दरवाजा केदार माँ का तालाब, राजमहल के मठ इत्यादि जो कीर्ति चिन्ह अवशिष्ट थे उनमें राजबाडी मठ का नाम उल्लेख योग्य है। जिन लोगों ने पद्मा अथवा मेघना की राह से जलपथ होकर यातायात किया है, उन्होने इस मठ को अवश्य देखा है। महाराज राजबल्लभ सने राय रायान बहादुर का कीर्ति स्तम्भ मठ और मंदिर समूह पद्मा नदी द्वारा विध्वस्त व पद्मा में विलीन होने के उपरान्त यह मठ विक्रमपुर का शेष कीर्ति चिन्ह स्वरूप अपना सिर उपर उठाये खडा था। कीर्ति ग्रासिनी पद्मा की वक्र दृष्टि

(1) वैद्य जातीय(अम्बष्ठ विप्र) विश्वनाथ सेन, चाँद और केदार राय के मुंशी पद पर थे। यह पत्र उन्हीं की रचना है। इस विषय में प्रमाण नीचे दिया जा रहा है।

चाँद राय केदार राय विक्रमपुर शासक।
बुरी वंशी विश्वनाथ तत् पत्र लेखक।।

अम्बष्ठ सम्पादिका – गोपाल कृष्ण कवीन्द्र द्वारा

अर्थात चाँद राय और केदार राय विक्रमपुर के शासक थे। बुरी वंशज विश्वनाथ उनके पत्र के लेखक हैं।

अनेक बार इस पर पड़ी है। अन्त में बंगाब्द 1330 के भादों महीने की 22 तारीख को उसे भी ग्रास करके विक्रमपुर को कीर्ति विहीन कर दिया है। विक्रमपुर के प्राचीन गौरव का जो कुछ भी निदर्शन रह गया था अब वह भी समाप्त हो गया।

यह मठ केदार राय के मातृ–श्मशान क्षेत्र में बनाया गया था। इसके निर्माण कार्य निर्माता राज मिस्त्री एवं मठ के चूडा भंग होने के बारे में बहुत सारी किम्वदंतियां प्रचलित है। यहाँ पर उनकी आलोचना अनावश्यक है। यह मठ प्रायः अस्सी फुट उँचा था। नीचे का बेड़ प्रायः 120 फुट और दीवार का बेड़ अर्थात स्थूलता 11 फुट था। मठ में एक ही द्वार, एक मात्र प्रकोष्ठ वाला था जो ईंट का बना हुआ था और जिसमें बहुत ही सुन्दर नक्कासी की गई थी। पहले इसके भीतर शिवलिंग स्थापित होने का प्रमाण मिलते हैं। मेजर जेम्स रेनल, डाक्टर टेईलार एवं डाक्टर वाइज प्रभृति प्रत्नतात्विक गणों ने इस मठ के बारे में अपने ग्रन्थ में उल्लेख किया है। गवर्नमेन्ट के पूर्त विभाग के रिपोर्ट में भी इसका उल्लेख मिलता है।

इस बारे में एक विषय का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। विश्व कोष ग्रन्थ में चाँद राय के विवरण में लिखा गया है–

''ईसा खाँ ने चाँद राय की राजधानी को आक्रमण कर उनकी कन्या सोनाई या स्वर्ण मयी को जाकर विवाह किया था?''

यह प्रवाद सही प्रतीत नहीं होता। इससे पहले केदार राय के बारे में लिखा गया है कि वे 1692 ई0 में श्रीपुर में राजत्व करते थे। संभवत उनके अग्रज चाँद राय इस समय के कुछ पहले वहाँ राज्य करते थे। किन्तु आईने–ई–अकबरी का पाठ करने से यह पता चलता है कि 1598 ई0 में ईशा खाँ की मृत्यु हुई। इस समय चाँद राय का जन्म हुआ था या नहीं इसमे ही सन्देह है। इसलिए ईशा खाँ के द्वारा चाँद राय की कन्या को ग्रहण करने का प्रसंग ही असम्भव है। ''

विश्व कोश 6 भाग 209 पृष्ठ।

दूसरी जगह केदार राय के प्रसंग में लिखा गया है–

''केदार राय सन्द्वीप के करीब श्रीपुर के राजा थे। 1692 ई0 में ये राजा शासन करते थे। इस समय जब मुगलों ने बंगला देश पर कब्जा कर लिया, तब सन्द्वीप केदार राय के अधीन था। *** आराकान के राजा पुर्तगीजों को खदेड़ने के लिए एक दल नौसेना भेजा था। केदार राय ने भी श्रीपुर से एक सौ कोषा नौका रणतरी भेजा था।

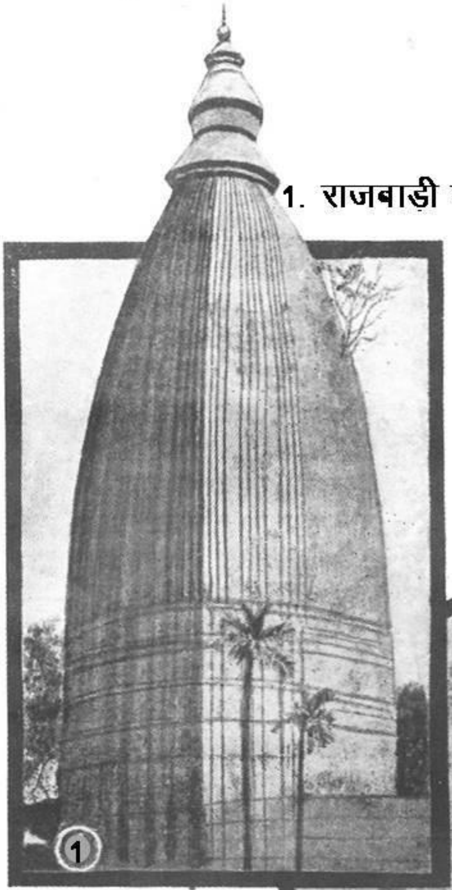
''विश्वकोष चतुर्थ भाग 469 पृष्ठ।

केदार राय को 1692 ई0 में राजत्व करने की बात किस सूत्र से ग्रहण की गई है। विश्वकोष में इसका कोई उल्लेख नहीं है। वस्तुतः विश्वकोष में वर्णित सन्द्वीप की लड़ाई और केदार राय की सजी हुई एक सौ कोषानौका की सहायता प्रदान 1692 ई0 की घटना नहीं है। यह घटना 1602 ई0 में घटी थी।(1) और भी

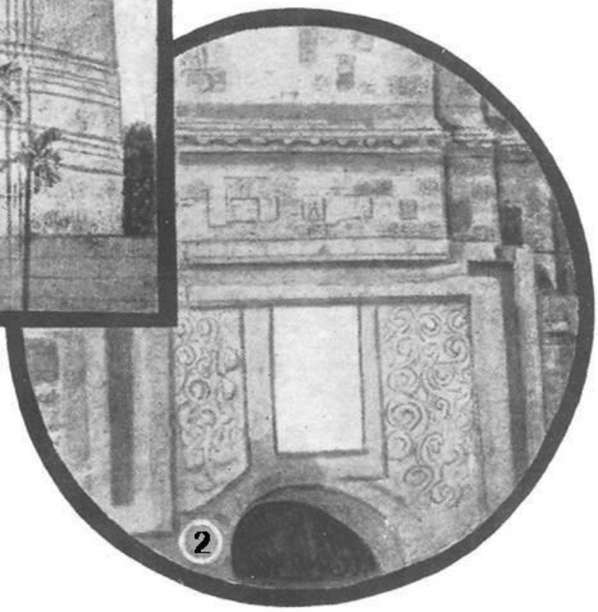
---

(1) सन्द्वीप का इतिहास – छटवाँ अध्याय 36– 37 पृष्ठ।

1. राजबाड़ी का मठ – विक्रमपुर



2. मठ के अग्रभाग में कारूकार्य



देखा गया है, ईशा खाँ के साथ राय परिवार के मन मुटाव होने से पहले उन लोगों ने स्वदेश और स्वाधीनता के लिए सम्वेत रूप से युद्ध किये थे। केदार राय और ईशा खाँ ने 1602 ई0 में दल बद्ध होकर मुगल सम्राट के विरूद्ध युद्ध घोषणा की थी।(1) फतेजंगपुर नामक जगह पर यह युद्ध हुआ था। मुगल सेनापति राजबहादुर ने प्रतिपक्ष के पराक्रम से अतिष्ठ होकर और भी सेना भेजने की प्रार्थना की थी। इसके बाद मान सिंह ने ससैन्य युद्ध क्षेत्र में उपस्थित होकर केदार राय को पराजित किया था। किन्तु इस बार उनकी स्वाधीनता के उपर हस्तक्षेप नहीं किया गया। इसके बाद केदार राय 1606 ई0 में मान सिंह के साथ लड़ाई में हार कर बन्दी हालत में मौत के मुँह में समा गए। इससे यह प्रमाण हो जाता है कि 1692 ई0 में वे कैसे राजत्व कर सकते हैं। जबकि 1606 में ही उनकी मौत हो चुकी थी।

इससे यह स्पष्टतः प्रतिपन्न होता है कि ईशा खाँ मसनद अली और राय राजागण समकालीन थे। एवं इसमें चाँद राय की कन्याा को लेकर विवाद होना आदि घटनाएँ असम्भव नहीं है।

इसी चाँद राय और केदार राय ने अमर सागर के खनन के लिए त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य को सात सौ कुली देकर सहायता की थी। त्रिपुरेश्वर के साथ इस परिवार का सौजन्य था। त्रिपुरेश्वर की कुकी और त्रिपुर सेनाओं के द्वारा इन्हें बराबर मदद मिलती रही है। इसके काफी प्रमाण भी मिलते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राय परिवार ने सौहार्द वश ही त्रिपुरेश्वर को कुली देकर सहायता की थी, यही जाना जाता है।

बाकला

अमर सागर के खनन कार्य में बाकला के 'बसु' वंशीय राजा से सहायता प्राप्त होने की कथा राजमाला में मिलती है। यहाँ पर बाकला राज्य और राजाओं के बारे में एक संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

'बाकला' बाखरगंज का प्राचीन नाम है। यह नाम किस समय का है। यह निर्णय करना असाध्य है। बाकला एक स्वतन्त्र राज्य था। इसकी विस्तृति भी खूब कम नहीं थी। 'दिग्विजय प्रकाश बिबृति' ग्रन्थ में बाकला वर्णन मिलता है–

मेघना नदि पूर्बभागे पश्चिमे च बलेश्वरी।
इन्दिल पुरी यक्षसीमा दक्षिणे सुन्दरं बनं।।
त्रिंशत् योजन विमितो सोमकान्तोद्रि बर्जितः।
सोमकांते च द्वौ देशौ विख्यातौ नृपशेखर।।
जम्बुद्वीपः पश्चिमे च स्त्रीकारो हि तथोत्तरे।
बाकलाक्ष्यो मध्य भागे राजधानी समीपतः।।

---

(1) अकबरनामा(इलियट का अनुदित)(116 पृष्ठ)

तृतीय लहर 98

भावार्थ– पूर्व की ओर मेघना नदी, पश्चिम में बलेश्वरी, उत्तर सीमा में इदिलपुर एवं दक्षिण में सुन्दर वन। इसके बीच गिरि विहीन सोमकांत है। जिसकी लम्बाई है 30 योजन। सोमकांत में दो जनपद हैं– पश्चिमांश में जम्बुद्वीप एवं उत्तर में स्त्रीकार है और मध्य भाग में 'बाकला' राजधानी है।

बाकला का नामान्तर है चन्द्रद्वीप। चन्द्रद्वीप के नामकरण के बारे में कुछ किंवदन्तियां हैं। किन्तु इसमें कौन सी ग्रहण योग्य है, यह कहना बहुत ही मुश्किल है। बाहुल्य भय से इन सभी किवंदन्तिओं की आलोचना से विरत रहना ही संगत है। 'भविष्य ब्रह्मखण्ड' नामक संस्कृत ग्रन्थ के 13 अध्याय में चन्द्रद्वीप का उल्लेख आता है उसमें द्वीप की विस्तृति का जो वर्णन आता है उसकी आलोचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक समय वर्तमान खुलना, बाखरगंज एवं फदिरपुर जिला के कुछ अंश बाकला चन्द्रद्वीप के अन्दर ही थे। 'द्विग्विजय प्रकाश बिबृति' ग्रन्थ में चन्द्रद्वीप की सीमा नीचे लिखे विवरण से स्पष्ट हो जाती है–

पूर्वे मधुमती सीमा पश्चिमे च इछामती।
वादा भूमि दक्षिणे च कुश द्वीपोहिचोत्तरे।।
समंतात् मासमार्गस्य शासकोऽहम् महीपतिः।।

बाकला–चन्द्रद्वीप के प्राचीन इतिहास के उद्धार का कोई उपाय नहीं है। सेन वंश के राजत्व काल के पहले की किसी भी घटना की बात जानी नहीं जा सकी। **N Beveridge** प्रभृति बारवर गंज के इतिहास के प्रणेता के लोग भी इस विषय में कोई सिद्धान्त नहीं ले सके। किसी किसी का अनुमान है कि प्राचीन काल में सेन राजाओं के अधीनस्थ सामन्त राजाओं के द्वारा ये सारे अंचलों का शासन कार्य चलता था। लेकिन इसका भी कोई निर्भर योग्य प्रमाण नहीं है।

डाक्टर वाइज साहब के मतानुसार सेन वंशीय बल्लाल सेन के पौत्र दनौजामाघव (1) चन्द्रद्वीप के प्रथम राजा थे। ''चन्द्रद्वीपेर राजवंश(चन्द्रद्वीप का राजवंश) के प्रणेता स्वर्गीय ब्रज सुन्दर मित्र एवं विश्व कोश सम्पादक प्राच्य विद्यार्णव श्रीयुक्त नगेन्द्रनाथ बसु महाशय आदि ने इस सिद्धान्त को समीचीन मान लिया गया है। इसी दनौजामाधव ने मुसलमान और अंग्रेज ऐतिहासिकों ने उन्हे दनुज, दनौजा, धिनुज राय, नोजा, नौजा इत्यादि बहुत से नामों से अभिहित किया है। यह तो हुआ नाम विभ्राट की बात। किसी किसी के मत से विश्व रूप सेन के पुत्र और किसी ने उन्हे लक्ष्मण सेनात्मज सदासेन के ये पुत्र है(2)। पुनः किसी किसी मतानुसार ये लक्ष्मण सेन के पुत्र थे।(3) आज तक इसकी भी शेष मीमांसा नहीं हो पाई है।

....

(1) **This is probably the same person as Dhinaj Madhub who is believed to have a grandson of Ballal Sen J.A.S.B. 1874 Page 83**

(2) **Journal of Asiatic Society of Bengal Vol LXV Part- I Page 32**

(3) बंगला का पुरावृत्त 321 पेज

पहले के व्यक्तिओं के मतानुसार, दनुज माधव सुवर्ण ग्राम के सिंहासन पर अधिष्ठित थे। बाद में चन्द्रद्वीप में जाकर उन्होने नवीन राज्य की प्रतिष्ठा की। श्रृद्धेय अध्यापक श्रीयुत निखिल नाथ राय महाशय का भी यही मत है। किन्तु इस विषय में भी घोर मतान्तर दिखायी देता है। फरिदपुर के इतिहास प्रणेता पूज्यपाद श्रीयुत आनन्द नाथ राय महाशय ने इस बारे में जो कुछ कहा है, उसका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है।

जिस तरह आदिशूर का नामान्तर वीर सेन मानकर एक प्रमाण के स्थान को विशुद्ध कर लिया गया है। उसी तरह भी ''दनुज मावाधा'' को ''दनुज मर्दन'' मानकर चन्द्रद्वीप के राज सिंहासन पर उपवेशन कराने में भी कम अनुष्ठान नहीं किया गया। कारण चन्द्रद्वीप का राज वंश कायस्थ दे वंश है। बल्लाल सेन के नाम के पीछे इस देव उपाधि को सयुंक्त कर इतने दिनों तक खूब लिखाई पढ़ाई चली थी। बाद में एक बारगी वे लोग विक्रमपुर के जीर्ण सिंहासन का परित्याग कर बाकला के नये सिंहासन पर जाकर बैठ गये। इसके अलावा लेखक महाशय गण यदि घृत कौशिकी गोत्रीय दे उपाधिधारी चाँद राय और केदार राय को सेन वंशीय कहकर परिचय प्रदान करते तो वह अधिक संगत प्रतीत होता।

फरिदपुर का इतिहास प्रथम खण्ड 28 पृष्ठ।

इतिहास की आलोचना से यह जाना जाता है कि सेन वंशीय दनुज माधव सुवर्ण ग्राम के राज्य शासक थे। मुसलमान एतिहासिक ''जई वरणी'' स्वरचित, ''तारिख–ई–फिरोज शाही'' ग्रंथ में उल्लेख किया है कि दनुज माधव के सुवर्ण ग्राम के राजत्व काल में(1280 ई0) सम्राट बुलबन ने तुग्रल खाँ को दमन करने के लिए बंग देश में आगमन किया था। उस समय सम्राट के जलपथ के अभियान के बारे में इन्होने काफी सहायता की थी। ''रियाज–उस–सलातीन'' ग्रन्थ में भी इस बारे में उल्लेख है। जो लोग इस दनुज माधव को चन्द्रद्वीप के प्रथम राजा कहते हैं उनके मत से सम्राट बुलबन के आक्रमण के अगले बीस साल के बीच दनुज माधव ने सुवर्ण ग्राम के राज पाट को परित्याग कर चन्द्रद्वीप में जाकर नये राज्य की प्रतिष्ठा की थी। 1280 ई0 में बुलबन के आगमन की कथा पहले ही कही गई है। इस मत के विरूद्धवादी ढाका के इतिहास प्रणेता स्नेहास्पद श्रीमान यतीन्द्र मोहन राय महाशय ने जो कुछ कहा है। वह यहाँ आलोचना योग्य है।

यदि यह मान लिया जाय कि यह दनुज राय ने ही 1300 ई0 में(तिब्बतीय ग्रन्थकार तारानाथ के मत से भी 1300 ई0 में सेन वंश का राज्य खत्म हुआ) बुलबन के आक्रमण के बीस साल बाद चन्द्रद्वीप में राज्य प्रतिष्ठा किया था तब भी सन या पुरुष के हिसाब से गणना करने से नितान्त असंगति होता है। क्योंकि देखा जाता है कि बुलबन के आक्रमण के समय दनुज राय 25 साल के थे। इसलिए 1255 ई0 में वे भूमिष्ठ हुए थे, ऐसा मान लेना पड़ेगा। चन्द्रद्वीप के दनुज माधव के अधस्तन छटवें पुरूष परमानन्द का आईन–इ–अकबरी में उल्लेख मिलता है। इसमें लिखा है, अकबर के राजत्व के 29

तृतीय लहर 100

साल में अर्थात 1585 ई0 में बाकला में(चन्द्रद्वीप) जलप्लावन हुआ था, उस समय परमानन्द राय अल्प वयस्क युवराज थे। अगर ऐसा है तो 1585–1255= 330वर्ष छटवें पुरूष में अथवा प्रतिपुरुष में 55 साल की कल्पना करनी होगी।

ढाका का इतिहास दूसरा खण्ड 11 अध्याय 430–431 पृ

दनुज मर्दन के बारे में दूसरे मतवाद का असद्भाव नहीं है। इसका एक प्रमाण नीचे दिया जा रहा है–

बख्तियार खिलजी जब बंगलादेश आक्रमण करके प्रबल वेगरूप से पूर्व बंग की ओर आगे बढ़ रहे थे, अनुमान है, उस समय बाकला चन्द्रद्वीप के दनुज मर्दन राय की बंशावली अथवा निकट सम्पर्कीय ज्ञाति कुटुम्ब गणों ने इधर उधर कई जमींदारी की सृष्टि किये थे। बाद में इसी जमींदारी के सृष्टि कर्ता गण अपने अपने गृह विच्छेद, समाज विरोध इत्यादि नाना कारणों से नाना सम्प्रदायों में बँट गए। दनुज मर्दन राय बंगज कायस्थ थे और ये सभी छोटे जमींदार भी बंगज कायस्थ श्रेणी युक्त थे।

भारती, फाल्गुन, 1299

फरिदपुर इतिहास प्रेणता महाशय भी इसी मत के पक्षपाती हैं। उन्होने कहा है–

''हमारा अनुमान है, जिस समय चाँद राय और केदार राय के पूर्वजों ने विक्रमपुर आगमन किया था, मुकुन्द राय के पूर्वजों ने भी उस समय पूर्व बंग में आगमन किया था। विक्रमपुर के राय राजगण, चन्द्रद्वीप के राय राजगण और फतेयाबाद के राय राजगण सभी 'दे' उपाधिकारी कायस्थ थे। हमारे विवेचना से इन तीनो राजवंश के मूल पुरूष एक ही व्यक्ति होगें।''

फरिदपुर का इतिहास प्रथम खण्ड 63 पृष्ठ

ये सभी वाक्य अनुमानिक होते हुए भी अयौक्तिक नहीं है। चन्द्रद्वीप के राजवंश बंगज कायस्थ थे, यह अवितर्कित सत्य है। बल्लाल सेन को इस समय क्षत्रिय या कायस्थ कहने पर भी, पहले वे वैद्य(अम्बष्ठ विप्र) ही थे।(1) यहाँ पर चन्द्रद्वीप राज्य के प्रतिष्ठाता दनुज मर्दन को बल्लाल का वंशधर न कहकर चाँद राय आदि की तरह एक वंशीय कहकर उल्लेख करना युक्ति संगत है।

....

(1) ''ततो बहुतियेकाले गौड़े बैद्य कुलोद्वहः।
बल्लाल सेन नृपतिरजायत गुणोत्तरः।।''
बारेन्द्र ब्राह्मण कुलपंजी।
''पुरा वैद्यकुलोद्भूत बल्लालेन महीभूजा।
व्यवस्थापि च कौलीन्यं दुहिसेनादि वंशजे।।''
सद्वैद्य कुलपंजिका।
''अथ बल्लाल अम्बष्ठ कूल नन्दनः।
कुरूतेऽति प्रजत्नेन कुलशास्त्र निरूपणं।।''
कायस्थ कुल दीपिका।

तृतीय लहर 101

राजमाला के आलोचना में बाकला राज्य में ''बसु'' वंशीय राजा का अस्तित्व मिलता है।(1) राजाओं की नाम की सूची के प्रति दृष्टिपात करने पर दिखायी देता है कि 'दे' वंश के प्रतिष्ठत बाकला राज्य दौहित्र सूत्र से बसु वंश के हस्तागत हुआ। इसके बाद कालक्रम से बसु वंश के दौहित्र, मित्र वंशीय उदय नारायण उस राज्य के राजा बने। वंश तालिका की आलोचना से इस बारे में जानकारी मिलेगी। बाकला के पहले के सभी राजा 'राय' उपाधि ग्रहण करते थे। धारावाहिक रूप से कुछ राजाओं के नाम इस सूची में दे रहे हैं।

1. दनुज मर्दन दे(राय)।
2. राम बल्लभ राय।
3. कृष्ण बल्लभ राय।
4. हरि बल्लभ राय।
5. जयदेव राय।(2)
6. परमानन्द बसु(राय) (3)
7. जगदानन्द राय।
8. कन्दर्प नारायण राय
9. रामचन्द्र राय

10. कीर्ति नारायण राय   11. बासुदेब नारायण राय

12. प्रेम नारायण राय

13. उदय नारायण मित्र(राय)(4)

14. शिव नारायण राय

---

(1) बाकलार बसु दिछे सप्त शतो जन।   बाकला बसु दिया सप्तशत जन।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 3 पृ   राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 3 पृ
(अर्थात बंगला के बसु ने सात सौ कुली दिया था उस समय जब त्रिपुरा के महाराज ने अमर सागर का खनन कार्य आरम्भ किया था)

(2) इसके बाद दे वंश के लुप्त हो जाने के बाद राज्य बसु वंश के हस्तगत हुआ।

(3) ये राजा हरिबल्लभ के दौहित्र थे। आईन–इ–अकबरी ग्रन्थ के अनुसार इनके पिता ने बलभद्र बसु ने बाकला में राजत्व किया था। किन्तु चन्द्रद्वीप के ''राज वंशावली'' और ''घटक कारिका'' प्रभृति के मतानुसार परमानन्द ही बसु वंश के प्रथम राजा थे।

(4) ये राजा बासुदेव के दौहित्र और प्रेम नारायण के भान्जे थे।

तृतीय लहर 102

14 शिव नारायण राय
15. जय नारायण राय
16. नृसिंह नारायण राय
17. बीर सिंह नारायण राय(दत्तक)
18. देवेन्द्र नारायण राय(दत्तक)

बाद में बाकला राज्य मुसलमानों के कब्जे पर जाने पर भी जमींदारी के सिलसिले में उसका अधिकांश ही राजवंश के हाथों में ही था। सदर राजस्व संग्रह की त्रुटि, कर्मचारीवर्गो की विश्वासघातकता इत्यादि नाना कारणों में उत्तरोत्तर विनष्ट हुआ है।

बाकला के बसु वंशीय राजा कन्दर्प नारायण राय एवं त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य सम सामायिक थे। राजमाला की आलोचना करने से इसके बहुत से प्रमाण मिलते हैं(1) इस विषय में जब हम तथ्यानुसन्धान करने के लिए प्रवृत्त होते हैं तो पहले ही सुन्दर ऐतिहासिक एवं सुयोग्य राजमंत्री आबुलफजल कृत 'आईन–इ–अकबरी' की बात हमारे स्मृति पटल में उभर जाती है। उस ग्रन्थ में लिखा गया है। "बादशाह अकबर के राजत्व 29(उन्नतीश) वर्ष के समय दोपहर के बाद तीन बजे भंयकर तूफान के साथ समुद्र का पानी भी बढ़ने लगा। थोड़े ही समय के बाद भंयकर समुद्री प्रल्यावान से बाकला राज डूब गया था। बाकला राजा उस समय इस भयानक आपदा को देखकर एक नाव पर सवार हुए, किन्तु आत्म रक्षा नहीं कर सके, थोड़े समय के भीतर जलमग्न होकर प्राण विसर्जन किया। राजकुमार कुछ अनुचरों के साथ एक उच्च्य देव मंदिर के चूड़ा पर चढ गये। सरदार लोग भी आस पास की उँची जगहों पर चले गए। क्रमशः लगातार पाँच घण्टे तक भारी वर्षा और तूफान की वजह से एवं वज्रपात से आस पास का ईलाका विध्वस्त हो गया। स्रोतावेग से सभी लोग बह गए। केवल पहले जिस देव मंदिर की बात कही गई है, उसे छोड़कर और कुछ भी नहीं बचा था। कोई चिन्ह नहीं रह गया था। इस दुर्घटना में प्रायः दो लाख लोगों की मृत्यु हुई थी(2)।

सम्राट अकबर 1556 ई0 में सिंहासन पर बैठे। अतः उनके राजत्व का 29वाँ वर्ष गाँठ 1584 ई0 था। ब्लाकमैन साहब ने इस घटना का समय 1585 ई0 बताया है।(3) इस समय बाकला राजा भीषण प्लावन से जलमग्न होकर मरने की बात बताई गई है।

---

(1) राजमाला तृल अमर माणिक्यखण्ड 13 पृ पर भुलुआ राज्य विजय की वर्णना में लिखा गया है–

भुलूआ जये राजा बाकलाते गेलो। बाकला गए नृप पश्चात भुलूआ विजय के।
कन्दर्प राय जमींदार बाकलाय बोधिलो।। प्राण लिए बाकला के जमींदार कन्दर्प राय के।।

(अर्थात भुलुआ राज्य जय करने के पश्चात् राजा ने बाकला राज्य गए कन्दर्प राय जमींदार को बाकला में वध किया)

(2) **Col H. S. Jarrett' Ain-i-Akbari Vol -II Page. 123**

(3) **J.A.S.B. - 1868 Dec.**

तृतीय लहर 103

चन्द्रद्वीप की राजवंशावली एवं प्राचीन 'घटककारिका' के मत से राजा जगदानन्द के शासनकाल में यह नैसर्गिक दुर्घटना घटी थी एवं वे इस प्रबल बाढ़ में चल बसे। यहाँ पर आईन–इ–अकबरी के प्रणेता ने भ्रमवश मंदिर चूड़ारोही राजपुत्र का नाम 'परमानन्द' लिखा है।(1) परमानन्द राजा जगदानन्द के पिता हैं– पुत्र नहीं। जगदानन्द के पुत्र का नाम था कन्दर्प नारायण।

जगदानन्द के परलोक प्राप्ति के बाद प्रबल पराक्रान्त कन्दर्प नारायण ने बाकला राज्य का शासन भार ग्रहण किया 1584 ई0 में। इन्होने मघ और पुर्तगीज जलदस्युओं के उपद्रव से बचने के लिए पैतृक राजधानी कचुया परित्याग कर बासुरी काठी, होसेनपुर एवं क्षुद्र काठी इत्यादि स्थानों में कुछ समय तक रहकर माधव पासा में नई राजधानी की प्रतिष्ठा की। इस स्थान पर राज भवन के भग्नावेश एवं दूसरे बहुत से कीर्ति चिन्ह अब भी विद्यमान है। उनमें पीतल का एक तोप की बात विशेष रूप से उल्लेख योग्य है।(2) परिव्राजक राल्फफिच 1586 ई0 में इन्हें बाकलों को सिंहासन पर अधिष्ठत देखा था(3)।

कन्दर्प नारायण के परलोक सिधारने के समय निर्णयपयोगी कोई भी निदर्शन संग्रह नहीं किया जा सका। फिर भी केवल यही मिलता है कि इनके मृत्यु के समय उनके पुत्र राम चन्द्र सात/आठ साल के थे। पिता के न रहने से वे ही राज्य अधिकारी हुए। इन्होने यशोराधिपति प्रतापादित्य की लड़की बिन्दुमती से शादी की थी लेकिन यह सम्पर्क खुशकर नहीं हुआ। ईसाई धर्म के याजकों में बहुत से लोग बाकला गए थे और उनमें मेलकयर फनसिक(Melchoir Fonseca) नामक व्यक्ति ने 1599 ई0 में वहाँ उपस्थित होकर कम से कम नौ साल के राजा राम चन्द्र राय को शासन कर्ता के रूप में देखा था। इससे यह अनुमान होता है कि 1599 ई0 कुछ पहले(1597 या 1598ई) कन्दर्प नारायण स्वर्गवासी हुए थे। इस अवस्था में उनका राजत्व काल 1584 ई0 से लेकर 1598 ई0 तक निर्धारण किया जा सकता है। 1584 ई0 के पहले राजा जगदानन्द बाकला के सिंहासन पर आसीन थे। दूसरे मतानुसार त्रिपुरेश्वर महाराज अमर माणिक्य ने 1577 ई0 से लेकर 1586 ई0 तक राजत्व किया था(4) व 1500 शक में(1578 ई0 में) अमर सागर का खनन कार्य आरम्भ किया था। इस समय बाकला में राजा जगदानन्द का राज्य था। अतएव महाराज अमर बाकला के राजा जगदानन्द के

---

(1) बाकला 166 पेज
(2) J.A.S.B. Vol XLIII P 207
(3) Hacklyt's Voyages Vol II P 257
(4) इसी लहर में यथा स्थान इस विषय पर आलोचना होगी।

समय से लेकर कन्दर्प नारायण के समय भी कुछ दिनों तक राजत्व किया था एवं बाकलाधिपति जगदानन्द ने अमर सागर खनन के समय कुली प्रदान कर उनकी सहायता की थी, यह भी प्रमाणित होता है।

गोयालपाडा

यह आसाम प्रदेश का एक जिला गोयाल पाड़ा है। ब्रम्हपुत्र नदी के दोनों किनारों को लेकर यह जिला फैला है। इस नदी के बाँयी ओर प्रधान नगर गोयाल पाड़ा बसा हुआ है। यह पार्वत्य प्रदेश है। पहले इस जिले का कुछ अंश कामरूप राज्य के अन्तर्गत था। इसके बाद यहाँ पर कोचों का प्राधान्य प्रतिष्ठित हुआ था। कुछ दिनों बाद अहोम लोगों के अधिकार में यह स्थान चला गया। अहोम जातियों के नामानुसार ही इस प्रदेश का नाम आसाम हुआ है। अहोमों को पराजित कर मुसलमानों ने यहाँ अपना अधिपत्य स्थापित कर लिया। इसी समय कुछ दिनों के लिए गाजी वंशीय लोगों ने यहाँ पर अपना प्रधान्य विस्तार किया था। इस वंश से ही महाराज अमर माणिक्य ने जलाशय खनन के लिए लोक बल प्राप्त किया था। सहायता करने वाले के नाम किसी सूत्र से पता नहीं मिल रहा है।

भवआल(भावआल)

वर्तमान ढाका जिले के अन्तर्गत, अरण्य संकुल में एक परगना है। यहाँ पर पाल वंशीय राजाओं ने राज्य किया था। इसी वंश के राजा शिशुपाल का कीर्ति चिन्ह अब तक दूरदूरिया, साइटहालिया, शैलाट और दीघलीर छिट आदि स्थानों में विद्‌यमान है। दीघलीरछिट में इनकी राजधानी थी। प्रवाद वाक्यों के द्वारा यह जानकारी मिलती है कि दूरदूरिया दुर्ग इन्हीं के द्वारा बनाया गया था। इसी दुर्ग में रानी भवानी नाम की पाल वंशीय एक रानी रहती थी। यह एक जनप्रवाद है। इसीलिए इस जगह को 'रानीर बाड़ी''(अर्थात रानी का घर) कहा जाता है।

बानार नदी के पश्चिम किनारे शिशुपाल के द्वारा प्रतिष्ठित समृद्ध नगर का भग्नावशेश ने अतीत के स्मृति को जागरूक कर रखा है। यह नगरी 'एक डाला' नामक दुर्ग के करीब थी। इसके कुछ ही दूरी पर दुर्गा बाड़ी शिशुपाल की और एक कीर्ति है। भावयाल के गहन वन में इनके और भी कीर्ति चिन्ह दिखायी देते हैं।

शिशुपाल को पराजित कर मुसलमानों ने भावयाल प्रदेश पर अपना कब्जा जमा लिया। डाक्टर टेईलार के मतानुसार 1200 ई0 में यह अंचल मुसलमानों के हस्तगत हुआ था, इसे सभी ऐतिहासिक स्वीकार नहीं करते। यशोहर खुलना के इतिहास प्रणेता श्राद्धेय श्रीयुत सतीश चन्द्र मित्र महाशय के मतानुसार ई0 1400 में पाल वंशीयों को खदेड़कर पलोयान शाह नाम के किसी धर्म प्रचारक

योद्धा ने भावयाल आंचल में राज्य स्थापन किया। उनके अधस्तन अष्टम स्थानीय फजल गाजी ने बंग के द्वादश भौमिकों में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया था। मान सिंह ने भौमिक समाज के उत्सारण साधनार्थ पूर्व बंग में जब अपना आगमन किया तो गाजी वंश ने सहज रूप से ही सम्राट की वश्यता को स्वीकार कर लिया(1)। किसी किसी को राय से, सेन वंश के अभ्युदय में पाल वंशजो का अधिपत्य विलुप्त हो गया था।(2)

भावयाल प्रदेश में मुसलमानों के प्रथम प्राधान्य प्राप्त करने का समय निर्धारण करना एक कठिन समस्या है। फजल गाजी सोलहवीं सदी के अन्त में भावयाल और उसके आस पास कुछ परगनों में अपना शासन दण्ड स्वाधीन रूप से चला रहे थे– इसका वर्णन इतिहास में मिलता है। उनका अधिपत्य बूड़ी गंगा के उत्तर किनारे से लेकर गारो पहाड़ तक फैला था। ईशा खाँ मसनद अली सरकार बाजुहा (2) और सरकार सोनारगाम का अधिपत्य प्राप्त करने के बाद फजल गाजी को उनका अनुगत्य स्वीकार करना पड़ा था। फजल गाजी महाराज अमर माणिक्य के समकालीन शासनकर्ता थे। इन्होने अमर सागर के खनन कार्य में एक हजार मिट्टी खनने वाले लोगों को भेजकर सहायता की थी।

———————

अष्टग्राम

यह स्थान वर्तमान मयमन सिंह जिला के अन्तर्गत जयनसाही परगना के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध स्थान है। यह स्थान साधारणतः जयनसाही अष्टग्राम के नाम से प्रख्यात है। पश्चिम मयमन सिंह में महाराज बल्लाल सेन के बढ़ते प्रभाव के समय पूर्व मयमन सिंह कामरूप राज्य के अन्तर्गत था। इतिहास यही बताता है। कालक्रम से कामरूप राज्य छोटे छोटे खण्डों में विभक्त हो गया और भिन्न भिन्न वंशो के अधीन हो गया। इसी सुयोग का फायदा उठाकर पूर्व मयमन सिंह की वन भूमि में कुछ छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गए। कोच, हाजो और गारो आदि पहाड़ी जातियां इन राज्यों की अधिकारी हुई। जंगल बाड़ी, खालिया जूरी, मदनपुर, सुसंग, बोकाईनगर और गड़ दलिपा आदि स्थानों में इनका लीला क्षेत्र स्थापित हुआ। इसी तरह से पूर्व मयमन सिंह क्रमशः कामरूप के शासन से मुक्त होने के बाद उसके कुछ अंश को ब्राह्मण और क्षत्रिय प्रभृति आर्यों ने असभ्य जातियों के हाथों से छीन लिया था। काल क्रम से मयमन सिंह का समग्र भाग मुसलमानों को हस्तगत हो गया।

....

(1) **Elliot's History Vol VI p. 105 and J. A. S. B. Vol XLIII, 1874.PP199-201**

(2) मयमन सिंह का इतिहास तृतीय अध्याय 18 पृष्ठ।

(3) टोडर मल्ल द्वारा 1582 ई0 में ''वासील तुमार जमा'' (**Rent Roll**) तैयारी के समय सरकार बाजुहा की सृष्टि हुई। होसन साह के शासन काल में यह प्रदेश ''नछरत साही'' के नाम से जाना जाता था और इस समय यह भूभाग जिला मयमन सिंह के नाम से परिचित है। टोडरमल ने इसे ही सरकार बाजुहा नाम से आख्या प्रदान किया था।

तृतीय लहर 106

होसेन साह के शासन काल में इस अंचल में मुसलमानों का अधिपत्य संस्थापित हो गया था।

मुसलमानों के शासनकाल में पूर्व मयमन सिंह 'सरकार बाजुहा' के नाम से जब परिचित हुआ तब जयनसाही अष्टग्राम इसके अन्तर्गत था। ईशा खाँ मसनद अली के राज्य शासन के समय यह स्थान उनके अधीनस्थ फते खाँ नाम के व्यक्ति के शासनाधीन था। ईशा खाँ के परलोक सिधारने के बाद यही फते खाँ ने अपने पहले से कब्जे में किये गये भूभाग पर अपनी स्वाधीनता कायम कर ली। अष्टग्राम से पाँच सौ कुली भेजकर अमर सागर के खनन कार्य में जिस फते खाँ ने सहायता की थी, सम्भवतया ये वही फते खाँ थे।

बानिया चंग

यह श्रीहट्ट जिला का एक प्रसिद्ध परगना था। पहले ब्राह्मण राजा के द्वारा यह प्रदेश शासनाधीन था। इस राज्य के प्रतिष्ठाता का नाम था केशव मिश्रा। मिश्रा राज्य के पूर्व पुरूषों का परिचय नहीं मिलता है। लोक कथाओं के अनुसार केशव मिश्रा वाणिज्य के उद्देश्य से जल पथ से यहाँ पँहुचे थे। अपने साथ वे एक पत्थर की काली मूर्ति लेकर आए थे। उनकी नाव एक विशाल ताल में घुस गई और चारों ओर अनन्त जल ही जल दिखाई देता था। कहीं पर स्थल न दिखायी पड़ने पर देवी की दैनिक पूजा में व्याघात पड़ने से मिश्र महाशय अस्थिर हो उठे। दैव अनुग्रह से संध्या के पहले चारों ओर पानी के नीचे एक भूखण्ड पाकर प्रसन्न चित्त से वहीं पर उन्होने देवी की पूजा अर्चना समाप्त की। पूजा के अन्त में विग्रह को नाव में दोबारा चढ़ाने की उन्होने बहुत चेष्टा की, लेकिन सफल नहीं हो सके। किसी सूरत में मूर्ति टस से मस नहीं हुई। अन्त में मिश्र महाशय वहीं पर रहने के लिए मजबूर हो गये। केशव के कोई एक बनिया एवं चंग जाति के नाविक भी थे। यह बनिया और चंग की दोनों उपाधियों को मिलाकर बानिया चंग नाम पडा। आसाम डिसट्रिक्ट गेजेटीयर में इस बारे में उल्लेख मिलता है।

"A Merchant, who was travelling with a crew of Chung or Namasudra boatmen, anchored in the haor over the site on which the village was subsequently built. An image of Goddess Kali was in the boat. XXX The water gradually disappeared, as they do at the present day on the cessation of the rains and a village was founded by the pious merchant.

Allen's Assam District Gazetteers Vol II (Sylhet) chap II. P 26

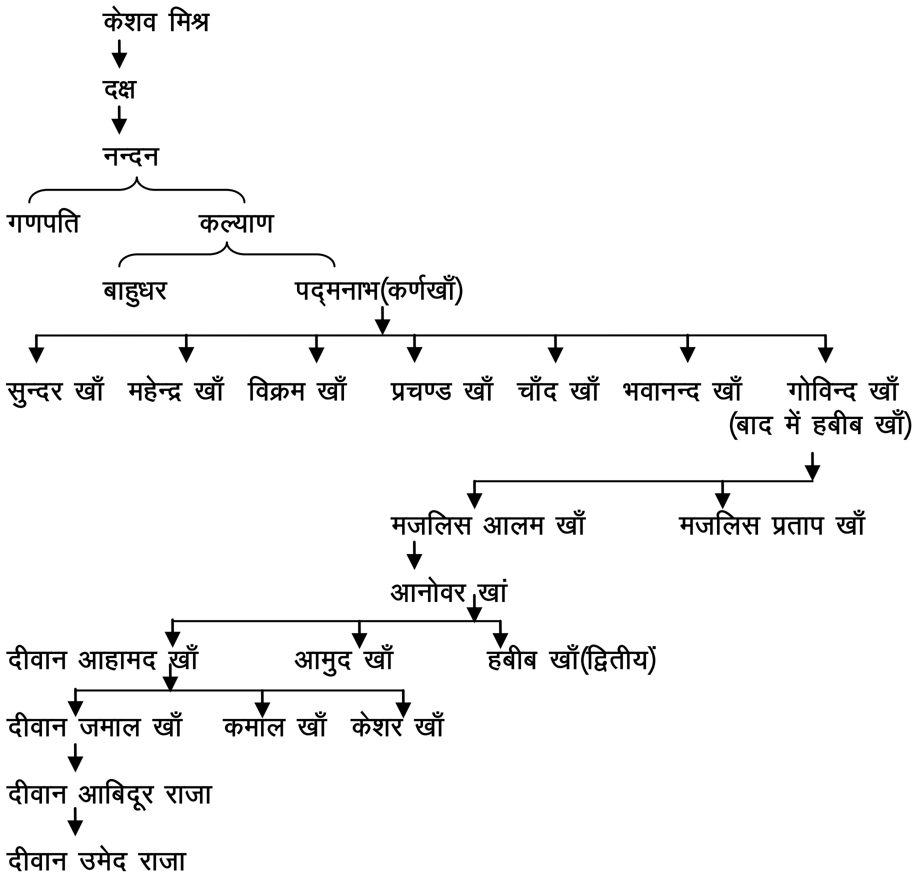
बंगला साल 1314 में(अर्थात 1307 ई0) में नव्य भारत पत्रिका में एवं श्रीहट्ट का इतिवृत्त द्वितीय भाग, तृतीय खण्ड, द्वितीय अध्याय में इस विषय का उल्लेख है। इसका मामार्थ पूर्वोक्त विवरण के अनुरूप है। ''बानिया चंग नाम की उत्पत्ति के बारे में और भी कुछ जन श्रुतियां हैं, लेकिन उपर कथित प्रवाद ही सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है और सरकारी कागजात में भी इसका उल्लेख मिलता है।(1)

....

(1) **Paper No 798, Dated 1st June 1883.**

उस समय शक्तिशाली और साहसी व्यक्ति के लिए किसी नए राज्य की प्रतिष्ठा करना कोई कठिन कार्य नहीं था। अशासित जंगलो से भरा भूभाग का अप्रसिद्ध जनपद समूह एक दफे हथिया लेने पर उसमें बाधा पहुँचाने वाला कोई नहीं था। इस तरह का सुयोग पाकर ही वाणिज्य व्यवसायी केशव मिश्रा, बानिया चंग आकर बिना बाधा के ही राज्य स्थापन कर सके थें। ये कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मण थे। कान्यकुब्ज से आये थे– ऐसा सुनने में आता है। इन्होने विभिन्न जाति के स्वदेशी लोगों को लाकर यहाँ नये राज्य की स्थापना की थी।(1)

केशव मिश्रा के पूर्वजों का कोई परिचय नहीं मिलता। उसके पश्चात् कुछ वंशधरों का नाम यथा क्रम से नीचे दिया जा रहा है। बाहुल्य भय से पूर्ण वंश सूची प्रदान नहीं दी जा सकी है–



---

(1) **Allen's Assam District Gazetteers Vol II (Sylhet) chap II. P 26**

केशव मिश्रा के अधस्तन चतुर्थ स्थानीय पद्‌मनाभ, पराक्रमशाली विद्‌यानुरागी एवं दानशील थे। अपने सदगुणों के लिए उन्होने ''कर्ण खाँ'' उपाधि प्राप्त किया था। पद्‌मनाभ के पुत्रों में सबसे छोटे गोविन्द खाँ प्रबल प्रतापी हो उठे थे। उन्हाने अपने ज्येष्ठ भ्राताओं की उपेक्षा कर स्वयं पितृ राज्य के अधिकारी हुए। उस समय बानियाचंग की सीमा करीब के जगन्नाथ पुर राज्य के साथ जुड़ी हुई थी। जगन्नाथ पुर के राजा जय सिंह(नामान्तर में गोविन्द सिंह) बानियाचंग के राजा गोविन्द खाँ के समसामायिक थे।

इस समय सुप्रसिद्ध लाउड़ का राज्य बानियाचंग और जगन्नाथ पुर के सन्निकट था। लाउड़ के राजवंश की समाप्ति पर इस आरक्षित राज्य के उपर खासिया जन जातियों का अदम्य अत्याचार चलता रहा। प्रजाओं ने इस भयानक अत्याचार से बचने के लिए दोर्दण्ड प्रताप वाला बानियाचंग राज्य में आकर आश्रय लिया। गोविन्द खाँ ने इस सुअवसर पर खासियाओं को विताडित कर सुविस्तीर्ण लाउड़ राज्य पर अपना अधिकार कायम कर लिया।

जगन्नाथ पुर के इतिहास में उल्लेख है कि इस समय लाउड़ और जगन्नाथ पुर के राजवंशीय लोग अविभक्त रूप से राज्यभोग कर रहे थे। दिल्ली के दरबार में लाउड़ के राजा ही परिचित थे और उनके ही नाम से अविभक्त दोनों राज्यों से राजस्व दिया जाता था। जगन्नाथ पुर के राजा दिल्ली के दरबार में सम्पूर्ण अपरिचित थे।

बानियाचंग अधिपति गोविन्द खाँ के लाउड़ राज्य अधिकार करने के साथ साथ जगन्नाथ पुर की अधिकृत भूमि भी उनके हाथ लगी। लाउड़ राज्य सम्पूर्ण स्वाधीन था। लाउड़ के राजा के उपर मुगल साम्राज्य के सीमान्त रक्षा के दायित्व अर्पित रहने की वजह से इस पर कोई कर नहीं रखा गया था।(1) जो कुछ सामान्य कर लाउड़ के राजा के नाम निर्धारित था, उसे जगन्नाथ पुर के राजा को ही वहन करना पड़ता था। यह बानियाचंग राजा के हस्तगत होने के बाद जगन्नाथ पुर के राजा इससे वंचित थे। अतः सम्राट का राजस्व देने के लिए वे ही मजबूर थे। यही वजह थी कि वे जगन्नाथ पुर के राजा, गोविन्द खाँ के विरोधी हो उठे। किन्तु विपुल विक्रम भय से उनके सामने जाने का उनका साहस नहीं हुआ। बहुत चिन्ता के बाद जय सिंह(गोविन्द सिंह) दिल्ली दरबार में उपस्थित होकर

....

(1) **Laur ceased to be independent, the Rajas submitted to undertake the defence of the frontier but did not pay revenue."**

Hunter's Statistical Accounts of Assam. Vol II (Sylhet) Page 92

तृतीय लहर 109

गोविन्द खाँ के अधिकृत बानियाचंग के साथ साथ लाउड़ राज्य का अधिकार पाने के लिए प्रार्थी हुए। इस विषय में जगन्नाथपुर के इतिहास में मिलता है।

बिरक्त होईया तिनि कोरिला निश्चित।	बिरक्त होकर उसने किया निश्चित।
सम्पत्ति होईते तारे कोरिबो बंचित।।	सारी सम्पत्ति से उसे करुंगा वंचित।।
गोबिन्देर अनिष्टेते कोरि दृढ पण।	गोबिन्द के अनिष्ट हेतु किया दृढ प्रण।
चलिला से हृष्ट मने नवाब भवन।।	चले वह हृष्ट मन से नवाब भवन।।
बोले एक निवेदन कोरि तब काछे।	बोले एक निवेदन करु।
आमि आर गोबिन्देर जतो भूमि आछे।।	मेरी और गोबिन्द की जितनी भूमि।।
सर्बस्व आमारे देव सनन्द कोरिया।	सर्बस्व मुझे दो सनन्द करके।
आमि एका सव कर दिबो पाठाइया।।	मैं सब कर दूंगा भेज।।

अर्थात विरक्त होकर उन्होने यह निश्चित किया कि सम्पत्ति से उसे मैं वंचित करूँगा। गोविन्द के अनिष्ट करने के लिए मैं दृढ प्रण करता हूँ। इसके बाद वे हृष्ट मन से नबाव के भवन की ओर चले। नबाव के यहाँ जाकर उन्होने कहा कि मैं आपसे एक निवेदन कर रहा हूँ कि मेरे पास और गोविन्द के पास जितनी सम्पत्ति है वह सारी सम्पत्ति आप लिखित सनद देकर मुझे दे दें और मैं अकेला ही सभी कर आप भेजा करूँगा।

जय सिंह के(नामान्तर गोविन्द सिंह) आवेदन को सुनकर सम्राट को लाउड़ के बारे में सब कुछ ज्ञात हो गया। इसके बाद प्रतिवादी गोविन्द खां को दिल्ली आने के लिए उनके पास दूत भेजा। वे जब तक नहीं आते हैं तब तक आवेदनकारी जय सिंह को दिल्ली में ही रहने का आदेश हुआ। वे विचार प्रार्थी होकर भी नजर बन्द कैदी की तरह रहने लगे।

गोविन्द खाँ ने जब दूत के मुँह से सम्राट के आदेश को सुना तो कोपाविष्ट होकर कठोर पदाघात से दूत की इह लीला ही समाप्त कर दी। आने वाली विपदा की आंशका से वे सुदृढ मिट्टी की चहार दीवारी के द्वारा बानियाचंग नगर के चारों ओर को घेरा और सुरक्षित किया।

गोविन्द की इस तरह की घृष्टता सम्राट के दरबार में उपेक्षित होने की बात नहीं थी। कुछ ही दिनों में इन्हें पकड़ कर ले जाने के लिए दिल्ली की फौज वहाँ पहुँच गई। किन्तु गोविन्द सिंह के पराक्रम के यहाँ फौज अपना सिर नहीं उठा रही थी। सेनापति ने समझ लिया कि इसे सम्मुख समर में जीवितावस्था में पकड़ पाना असम्भव है। इसके अलवा उसे वध करने के लिए भी वे आदिष्ट नहीं है। इस तरह की संकटापन्न अवस्था में सेनापति ने कूटनीति का अवलम्बन किया। किन्तु चिन्तन के बाद उन्होने युद्ध स्थगित रखकर जौहरी के वेश में नाव लेकर आजमिरगंज में उपस्थित हुआ। गोविन्द खां, मणि क्रय के निमित्त बणिक की नौका पर उपस्थित होने पर उन्हे उसी अवस्था में पकड़ कर बन्दी बना लिया गया। यथा समय वे दिल्ली में ले जाये गये और सम्राट के आदेश का उल्लघंन करने के अपराध में उन्हे प्राण दण्ड का आदेश हुआ।

इस घटना से जय सिंह(नामान्तर गोविन्द) ने देखा कि अनायास उनके अभीष्ट सिद्ध का रास्ता साफ हो रहा है। वे हर्षोत्फुल हृदय से गोविन्द खाँ के प्राण दण्ड के दिन की प्रतीक्षा करने लगे। दीर्घ काल तक दिल्ली में रहते हुए

लाउड़ के राजा के नाम से ही वे परिचित हो उठे थे एवं साधारण लोग उन्हे जय सिंह नाम के बदले गोविन्द सिंह नाम से ही अवगत थे। (1)

गोविन्द खाँ के प्राण दण्ड का दिन आ गया। घातक विचारप्रार्थी गोविन्द सिंह को पहले से ही पहचानता था। उसने सोचा कि यही व्यक्ति वहाँ योग्य है। उसने गलती से उसे ही वध कर दिया। जय सिंह का गोविन्द नाम ही उसके हत्या का कारण बना। इसी को कहते हैं "नाम ही नाम यम का काम"। गोविन्द खाँ के सभा पंडित मुरारी विशारद दिल्ली में रहकर राज कर्मचारियों को सन्तुष्ट करके अपने प्रभु के प्राण रक्षा की चेष्टा कर रहे थे। इस दैवदुर्विपाक से उनके ह्रदय में आशा का संचार हुआ।

इस भ्रान्ति मूलक वध की वार्ता सम्राट के कानों में पँहुंची। मंत्रीयों ने समझाया। ऐसा विभ्राट ईश्वर की इच्छा के अलावा और क्या हो सकता है। इस हालत में गोविन्द खाँ को प्राण दण्ड के आदेश से मुक्ति दिलाना ही समीचीन है। सम्राट ने समझा कि यही खुदा की इच्छा है। मुसलमानों के शासनकाल में इस तरह के बहुत से बड़े बड़े अन्याय भी खुदा की इच्छा समझकर सम्पन्न किये जाते थे। जय सिंह ने संपत्ति के लोभ से प्रार्थी भाव से सम्राट दरबार में जाकर प्राण लेने के बदले में अपना प्राण ही गँवाया। यह घातक की त्रुटि नहीं खुदा की इच्छा है। इसके अलावा और कुछ कहा नहीं जा सकता।

सम्राट के आदेश से गोविन्द खाँ का प्राण दण्डादेश से तो बच गये किन्तु अपने जीवन के बदले जाति और धर्म को विसर्जन देना पड़ा(1)। ब्राह्मण संतान गोविन्द खाँ सम्राट की कृपा से इस्लाम धर्म में दीक्षा लेकर हबीब खाँ के नाम से अपने घर लौटे। जय सिंह अर्थात गोविन्द सिंह की मृत्यु के पश्चात् इन्होने लाउड़ और बानियाचंग राज्य का सनद प्राप्त कर लिया था। उनकी पत्नी ब्रह्मचर्य व्रतावलम्बन कर स्वतन्त्र रूप से रहने लगी। हबीब खाँ अधिकांश समय लाउड़ में ही रहने लगे थे। बानियाचंग बहुत कम समय ही रह पाते थे।

जय सिंह के कनिष्ठ भ्राता का नाम विजय सिंह था, अग्रज के निधन की वार्ता सुन अत्यन्त दुखी हुए। विजय ने मन में सोचा गोविन्द खाँ के चक्रान्त से ही यह दुर्घटना हुई है। इसके उपरान्त हबीब खाँ ने भ्रातृ शोक सन्तप्त विजय को समस्त

....

(1) जय सिंहेर दुई नाम छिलो प्रकाशित। जय सिंह के दो नाम थे प्रकाशित।
गोविन्द बोलिया ताके अनेके जानित।। गोविन्द नाम से जाने अनेक ।।
जगन्नाथ पुर का इतिहास जगन्नाथ पुर का इतिहास

अर्थात जय सिंह के दो नाम था। सभी उसे गोविन्द के नाम से ही जानते थे।

The last Hindu king of Laur, called Gobinda, was for some cause, summoned to Delhi and there become a Mahammadan.

Hunter's Statistical Accounts of Assam. Vol II (Syllet)

सम्पत्ति के अधिकार से विच्युत करके और अधिक संकट में डाल दिया। विजय सिंह ने कोई उपाय न देख पैतृक सम्पत्ति के उद्धार के लिए दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। बहुत कोशिशों के बावजूद उन्होने लाउड़ राज्य के अर्द्धांश पर अधिकार का सनद हासिल कर लिया था। किन्तु प्रबल प्रतापी हबीब खाँ ने उन्हे सुचाग्र भूमि नहीं दी।

कोई उपाय न देख विजय ने दोबारा दिल्ली का आश्रय प्रार्थी होने का संकल्प किया हबीब खाँ ने सोचा एक बार जाति और धर्म को जलांजली देकर धन प्राण की रक्षा हुई है। बारम्बार सम्राट के आदेश को अमान्य करने से सब कुछ खो देना भी कोई अचरज की बात नहीं होगी। उन्हे भारी चिन्ता हुई। इसी समय कवि बल्लभ नामक किसी संभ्रात व्यक्ति की मध्यस्थता में दोनों विवादों का अन्त होकर मीमांसा हो गई। इस मीमांसा के फलस्वरूप विजय सिंह हबीब खाँ की अधीनता स्वीकार कर (छः आना)एक तिहाई से कुछ कम अंशों के हकदार हुए। यह ईसवी सन् सतरह सौ के आखिरी दिनों की घटना है।

हबीब खाँ और विजय सिंह के बीच यह आपसी मीमांसा ज्यादा दिन स्थायी नहीं रही। कुछ दिनों के पश्चात् दोनो की राज्य सीमा को लेकर दोबारा झगड़े की शुरूआत हुई। विजय सिंह को जाति भ्रष्ट करने के लिए हबीब खाँ सचेष्ट हुए। विजय ने उनके इस प्रस्ताव को घृणा के साथ ठुकरा दिया। उनके पुत्र के साथ विजय सिंह की कन्या के विवाह का एक प्रस्ताव आया और विजय सिंह ने इस प्रस्ताव की घृणा के साथ उपेक्षा की और सुकौशल के साथ हबीब खाँ के अनिष्ट की चिन्ता में जुट गये।

इसके बाद हबीब खाँ के दिये गये विवाह प्रस्ताव पर अपनी कपट सम्मति जाहिर कर विजय, उसके पुत्र मजलिस आलम को निमन्त्रण कर अपने घर ले आए। आलम की गुप्त हत्या करना ही इस निमन्त्रण का असली उद्देश्य था। विजय की कन्या आलम को देखकर उसके रूप लावण्य पर मुग्ध हो गई एवं चोरी से उसे इस आसन्न विपदा से आगाह कर भागने की व्यवस्था कर दी। इसी वजह से उस समय आलम के प्राणों की रक्षा हुई थी। हबीब खाँ ने पुत्र मुँह से सारी बातें सुन, विजय के वध के लिए कृत संकल्प हो उठे। एक दफे विजय सिंह मृगया के लिए जंगल में गये हुए थे। इधर हबीब खाँ के तैनात किए हुए गुप्त घातक ने उनकी हत्या कर दी। उसी क्षण हबीब खाँ सेना के साथ वहाँ पँहुच विजय सिंह का घर लूट लिया। विजय के दोनों बालक पुत्र प्राण भय से वहाँ से भाग गए। इसके कुछ दिनों के पश्चात् चचेरे भाई के दोनों बालकों के साथ सम्पत्ति लेकर विवाद उठ खडा हुआ। इसी गृह विवाद के फलस्वरूप जगन्नाथपुर राज्य का अस्तित्व विलुप्त हो गया।

इसी बीच हबीब खाँ की संस्थापित लाउड़ की राजधानी को हदात् (अकस्मात्) खासिया सरदारों के हाथ आक्रान्त हुई। इस आकस्मिक आक्रमण से नगर को रक्षा करने का सुयोग ही नहीं मिला। खासिओं के पाशविक अत्याचारों के फलस्वरूप बहुत से लोग मौत घाट उतर गये।

बहुत से लोगों की सम्पत्ति की ममता त्याग भागकर किसी तरह प्राणों की रक्षा हुई। तब से ही लाउड़ जन शून्य होकर धीरे धीरे गहन वनों में बदल गया। लाउड़ के जंगलों में एक दुर्ग का भग्नावेश अब तक दिखाई देता है। यह बानियाचंग की हवेली के नाम से विख्यात हैं। कहावत है कि इसी दुर्ग को मजलिस आलम के पुत्र(हबीब खाँ के पौत्र) अनवर खाँ के द्वारा खासियाओं के अत्याचारों को रोकने के लिए बनाया गया था। इसी अनवर खाँ के समय ही बानियचंग राज्य मुसलमानों के हस्तगत हुआ था। किन्तु उस समय भी उन लोगों की प्रभाव–प्रतिपत्ति काफी थी। अनवर खाँ को नबाव के दरबार से 'दीवान' की उपाधि मिली थी। अनवर खाँ के अधस्तन चौथे स्थानीय दीवान उमेद राजा भी संभ्रात जमींदारों में गिने जाते थे। इसके बाद ही क्रमशः अधोपतन की शुरूआत हुई। यही है बानियाचंग का स्थूल विवरण।

अमर सागर खनन के समय बानियाचंग के राजा ने 500 मजदूर द्वारा महाराज अमर माणिक्य की सहायता की थी। बानियाचंग के राजाओं का काल निर्णय करने का कोई सूत्र न पाकर किस राजा के द्वारा मजदूरों को देकर सहायता पँहुचाई गई थी, यह कहना सम्भव नहीं हो सका। गोविन्द खाँ(बाद में हबीब खाँ) ईसवी सतरह सौ के शेष क्षणों में वर्तमान थे, यही केवल जानकारी में आया है। इसके पहले के राजाओं के बारे में काल ज्ञापक कोई भी विवरण नहीं मिलता है। महाराज अमर माणिक्य ने ई0 सौलह सौ के अन्त में दीर्घिका खनन कराया था। यह बानियाचंग के राजा गोविन्द खाँ के सौ साल पहले की घटना है। साधारणतः तीन पुरूषों में एक शताब्दी की गणना होती है। उस हिसाब से गोविन्द खां के पूर्ववर्ती (तृतीय पुरुष) राजा नन्दन का नाम मिलता है। यही बानियाचंग राज्य के प्रतिष्ठाता केशव मिश्रा के पौत्र थे। राजा नन्दन महाराज अमर माणिक्य के समकालीन थे एवं इन्होने ही अमर सागर खनन के लिए मजदूर प्रदान किया था, यह कहा जा सकता है।

———————

रण भावआल

यह प्राचीन भावआल राज्य का अंश विशेष है। भावआल के साथ यह अंश भी पाल वंशीय राजाओं के शासनाधीन था। पाल वंश का घ्वंस एवं मुसलमानों के अभ्युत्थान के बाद सौलह सौ सदी के शेष भाग में ही पलोयान शाह के अधस्तन वंशीय फजल गाजी भावआल राज्य के अधीश्वर हुए थे। इस समय दौलत गाजी चौआर नामक कोई मुसलमान ने रण भावआल पर अपना अधिकार जता लिया। ये ढाका नगरी के कोई संभ्रात व्यक्तिओं ने किस उपाय से उन्होने रण भावआल पर अपना प्राधान्य स्थापित किया था इसकी जानकारी नहीं मिलती। इस आंचल में ईशा खाँ मसनद अली का प्रभाव फैलने के फलस्वरूप फजल गाजी को उनका आनुगत्य स्वीकार करना पड़ा था। इस समय सम्भवतः दौलत गाजी ने ईशा खाँ की अधीनता के बन्धन से उन्मुक्त होने की ताकत नहीं थी।

भावआल प्रदेश पठान शासक के अधिकार में जाने के साथ साथ रण भावआल तालुक में बदल गया। इसके बाद इस प्रदेश का कई बार बन्दोबस्त का कार्य सम्पादित और राजस्व का परिमाण बदलता रहा है। ईष्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में रेजा खाँ के द्वारा एक दफे इसका राजस्व निर्धारित हुआ था। उस समय रण भावआल ''आलेप सिंह'' परगना के अधीन था। इस बन्दोबस्त में रण भावआल का राजस्व 14,173 रूपये ठहराया गया था। 1195 सन में राटेन साहब ने जो बन्दोबस्त किया, उनमें 3 भागों में विभक्त रण भावयाल का राजस्व 12,854 रू निर्धारित हुआ था। इस खजाना के परिमाण में इसके बाद कई दफे ह्रास वृद्धि की गई थी।

ई0 सन् 1836 में सैनिक विभाग से खदेड़े गये मंगल सिंह ने विद्रोही होकर भावआल के ईलाके में नाना तरह के अत्याचार शुरू किया। इस समय रण भावआल के तालुकदार अब्दुल हाफिज के ऋण अदा करने में सारी सम्पत्ति का नीलाम हुआ। तालुकदार के पक्ष में नीलाम खरीददार की सम्पत्ति दखल लेने में बाधाएँ आने पर दोनों पक्षों में भयंकर दंगा हुआ था। इस गोलमाल के समय तालुकदार कलिमन्नेछा बर्मी के तालुकदार लुत्फुल्लार के शरणागत हुए। मंगल सिंह को वश में लाकर कार्य उद्धार के लिए लुत्फुल्लार ने उसे आर्थिक सहायता की थी। यह अर्थ पाकर मंगल सिंह और भी उद्दीप्त हो उठा। उसने एक बड़ा सा डाकुओं के गिरोह की सृष्टि कर नरहत्या व लूट द्वारा भावआल प्रदेश को जर्जरित कर दिया। उसे दमन करने के लिए ब्रिटिश सरकार का बहुत सा समय लगा था। सेसन जज के विचार में उसे आजीवन द्वीपान्तर वास का आदेश हुआ।

मंगल सिंह को पकड़ने के पश्चात् उसके भाई गुलजार सिंह ने भी अपना गिरोह बना कर बहुत से अत्याचार शुरु किये थे। 1838 ई0 में गवर्नमेंट ने उसे पकड़ कर कारारूद्ध किया था।

इसके बाद भावआल के अधिवासियों को ठगी, उपद्रव, नीलकर के अत्याचार आदि बहुत से अत्याचारों का सामना करना पड़ा था।

अमर सागर के खनन कार्य में रण भावआल से महाराज अमर माणिक्य ने एक हजार मजदूर हासिल किया था। षोड़स शताब्दी के अन्त में(भावआल फजल गाजी के शासन काल में) दौलत गाजी चौआर रण भावआल के अधिपति थे। इसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। फजलगाजी और दौलत गाजी दोनों समकालीन थे। यह दौलत गाजी चौआर ने ही मजदूर देकर अमर माणिक्य की सहायता की थी। यही प्रमाण होता है।

सराइल

सराइल इस समय त्रिपुरा जिला का एक सुबृहत और समृद्ध परगने में बदल गया है। प्राचीन काल में यह प्रदेश त्रिपुरा राज्य के अन्तर्युक्त था। इस अंचल में

(हिन्दी अनुवादक – जिस समय पंड़ित प्रवर स्वर्गीय गंगाधर सिद्धांतवागीश ने इस ग्रन्थ की रचना की थी, उस समय सराइल त्रिपुरा में ही था। राजमाला कार्यालय से स्व0 कालीप्रसन्न सेन विद्याभूषण महोदय ने जब इस राजमाला का सम्पादन किया, उस समय भी सराइल त्रिपुरा में ही था। केवल सराइल ही नहीं, बहुत से राज्य और सामन्तों की जमींदारी भी त्रिपुरा में ही थी। देश विभाजन के पश्चात् त्रिपुरा राज्य छोटा हो गया। इस समय ये राज्य बंगला देश में रह गए हैं।)

तृतीय लहर 114

मुसलमानों के शासन प्रर्वतन के बाद सराइल के कुछ अंश को उन लोगों के द्वारा ''सतर खण्डल'' नाम से जाना गया। अब तक वह नाम विलुप्त नहीं हुआ। उस समय मुसलमानों के अधिकृत भूभाग को छोड़कर सराइल का अवशिष्टांश त्रिपुर राज्य का शासनाधीन था। ई0 1009 से ई0 1035 के मध्यवर्ती काल में उत्तरोत्तर समग्र सराइल परगना मुगल सम्राट के अधीन हो गया।

त्रिपुरेश्वर अमरमाणिक्य के शासन काल में सराइल प्रदेश ईशा खाँ नाम के एक व्यक्ति के शासनाधीन था। इनके पूर्वजों का परिचय नहीं मिल रहा है। कैसे उन्होने सराइल पर अपना अधिपत्य विस्तार किया था। यही निर्णय करना दु:साध्य है। केवल इतना ही जानने में आया है कि ये त्रिपुरा के सामन्तो में गिने जाते थे और कोई युद्ध इत्यादि जब होता था तो त्रिपुरा का पक्ष लेकर लड़ाई में शामिल होते थे। इनके किसी विपदा में भी त्रिपुरेश्वर भी यथोचित सहायता करते थे। अमर माणिक्य के द्वारा तरप राज्य आक्रमण के समय ईशा खाँ ने बंगाली सैन्य दल बल के साथ योगदान किया था। राजमाला में उल्लेख है–

अमर माणिक्य आज्ञा पाइया तखन।	अमर माणिक्य आज्ञा पर तक्षण।
इछा खाँ सहिते चले बंग सेना गण।।	इछा खाँ साथ चले बंग सेना गण।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 7पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 7पृ

अर्थात अमर माणिक्य का आदेश पाकर इछा खाँ के साथ बंग सेना चलने लगी–

तरप का युद्ध (ई0 सन् 1582) 1504 शक में हुआ था। इसके कुछ ही दिनों पश्चात् हठात् दिल्ली की फौज ने आकर सराइल पर आक्रमण के लिए तैयार हो गई। ईशा खाँ इस विपद की आशंका से भाग गये। मुसलमानों ने सराइल के करीब ही अपनी छावनी डाली। द्वादश भौमिक के दमन के लिए ही सम्राट अकबर के प्रधान सेनापति तथा बंग के शासनकर्ता मान सिंह का इस समय पूर्व बंग में आगमन हुआ था। सम्भवतः उनके सेनाओं के द्वारा ही त्रिपुरा का कोई कोई अंश उपद्रुत हुआ होगा।

ईशा खाँ मेहेरकुल के पथ से उदयपुर जाकर महाराज अमर माणिक्य के शरणपात्र हुए। त्रिपुरेश्वर ने उन्हे सादर ग्रहण किया था। ईशा खाँ की एक मात्र प्रार्थना थी–

दिल्लीर उमरा जतो सराइल आइसे।	दिल्ली के उमरा सराइल आये हों जितने।
राज सैन्य दिया रक्षा करह विशेषे।।	राज सैन्यों से रक्षा करो देश की अपने।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 15पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 15पृ

अर्थात दिल्ली के सभी उमराह इत्यादि आए हैं और मुझे राज सैन्य देकर विशेष रूप से सहायता किजिए।

महाराज सैन्य प्रदान कर सहायता देने के लिए तैयार हो गए। किन्तु यह सम्मति को कार्य से परिणत करने में बहुत देर हो गई। ईशा खाँ को हर समय दरबार में प्रवेश करने का शुभ अवसर नहीं मिल रहा था। वे मंत्रियों को सन्तुष्ट करने में सदा लगे रहते थे। किन्तु दुर्भाग्यवश कोई भी उनकी इस नई विपदा की बात राजदरबार में सूचित नहीं करता था। राज पारिषदों की उदासीनता और अवज्ञा का भाव देखकर ईशा खाँ ने वह रास्ता छोड़कर

तृतीय लहर 115

एक नया पंथ अवलम्बन किया– वे जब समझ गये कि आत्मपरायण पारिषद वर्ग द्वारा कार्योद्धार होने की कोई आशा नहीं है। तब उपयान्तर न देखकर– इछा खाँ ने सोचा–

इछा खाये सेइ काले मने बिबेचिलो।	इछा खाँ ने सोचा अपने मन में तक्षण।
महारानी प्रति सेइ मातृ सम्बोधिलो।।	महारानी को किया उसने मातृ संबोधन।।
रानी स्तन धौत जल इछा खाँ खाइलो।	स्तन धोया महारानी ने, इछा खाँ जल किया पान।
राजा रानी पुत्र तुल्य ताके स्नेह कोइलो।।	राजा रानी ने पुत्र तुल्य किया स्नेह प्रदान।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 16पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 16पृ

अर्थात उस समय इछा खाँ ने मन में सोचा और महारानी को माँ कहकर सम्बोधन किया। रानी का स्तन धोया हुआ जल इछा खाँ ने पान किया और महारानी ने उसे पुत्र तुल्य स्नेह किया।

इस घटना से इछा खाँ राजा और राजमहिषी की अपार कृपा पात्र बने। उन्हे दरबार से 'मसनद अली' उपाधि एवं पाँच हाथी और दस अश्व के साथ राजदत्त सम्मान सूचक परिच्छद प्रदान किया। उनका राज्य निष्कन्टक के लिए सिंह सरब(सर्व) वजीर की देख रेख में बावन हजार सेना भेजी गई। राज सैन्य के सराइल में पँहुचते ही सभी मुसलमान अपनी छावनी समेटकर भाग खडे हुए। ईशा खाँ का शासित प्रदेश बिना युद्ध के ही उपद्रव से मुक्त हो गया।

स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय ने अमर माणिक्य के प्रसंग में ईशा खाँ के विषय में जो लिखा है। उसका मूल यह है कि 1019 त्रिपुराब्द में अर्थात ई0 सन् 1609 बंग के शासनकर्ता इस्लाम खाँ ढाका नगरी में राजधानी बनाकर त्रिपुरा को आक्रमण करने पर महाराज अमर माणिक्य ने विपक्ष का गतिरोध करने के लिए ईशा खाँ को भेजा था। उस समय महारानी ने उस सेनापति को अपना पादोदक प्रदान करके उत्साहित करने की बात को कैलाश बाबू ने कहा है(1)। इस युद्ध की बात इतिहास में नहीं है। विशेषकर अमर माणिक्य ई0 सन् 1577 ईसवी से 1586 ईसवी तक राजत्व किया था। इस्लाम खाँ ने ईसवी सन् 1608 मन्तातर में ईसवी सन् 1609 बंगला की सूबेदारी हासिल कर ढाका नगरी में अपनी राजधानी स्थापित की थी। अतएव महाराज अमर माणिक्य के परलोक सिधारने के पश्चात् इस्लाम खाँ का बंग में शासन सत्ता पर अधिकार प्राप्त की बात सही लगती है। इस अवस्था में अमर माणिक्य और इस्लाम के बीच लड़ाई होने की बात असम्भव ही लगती है।

अमर माणिक्य के शासन काल में सराइल की अधिकांश भूमि जंगलों से भरी पड़ी थी। महाराज अमर ने 1501 शक में इन घने जंगलों में बाघ, भालू, भैंसो, हिरण इत्यादि नाना प्रकार के प्रजाति के पशुओं का शिकार किया था। इस अभियान में राजकुमार राजधर देव(बाद में राजधर माणिक्य) भी थे। उन्होने इस भूमि को पिता की अनुमति से आबाद करके 'बैयाल्लिस' नामक ऐक समृद्ध नगर बसाया था। इस समय भी सराइल के कुछ अंशों को इसी नाम से जाना जाता है।

1009 से 1035 त्रिपुराब्द (1599 ई0 सन् से लेकर 1625 ई0 सन्)**(CHECK YEAR)** के बीच सराइल का समग्र भूभाग क्रमशः मुगल सम्राज्य के अधीन हो गया था। इसके कुछ दिनों की अवस्था के बारे में

---

(1) कैलाश बाबू की राजमाला द्वितीय भाग 6अध्याय 71 पृ

कुछ पता नहीं चलता। ईशा खाँ मसनद अली के वंशधर दीवान मजलिस गाजी को इस परगना की जमींदारी हासिल कर स्वयं शासन करने के भी निदर्शन मिलते हैं। उस दीवान साहब के वंशधर गण इस समय भी सराइल के कुछ भूभागों पर अपना कब्जा कर भोग रहे हैं। इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि दीवान मजलिस गाजी के पहले भी ईशा खाँ के वंशज ही सराइल के जमींदार थे। किन्तु ईशा खाँ और मजलिस गाजी के मध्य काल में कितने पुरूष हुए हैं, इसका पता नहीं लगा। दीवान मजलिस गाजी से लेकर सिलसिलेवार वंश सूची मिलती है। इसी वंश के दीवान नूर मुहम्मद के पुत्र दीवान नाछिर मुहम्मद का त्रिपुरेश्वर रामदेव माणिक्य से सराइल के कुछ अंशों में दान के प्राप्त करने की बात जन श्रुतिओं पर आधारित है। राम माणिक्य खण्ड में उसका ब्यौरा दिया जायेगा। स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महोदय के संग्रह को अवलम्बन कर दीवान वंश का संक्षिप्त सूची हम यहाँ दे रहे हैं।

- दीवान मजलिस गाजी
  - दीवान मजलिस साहाबाज
    - दीवान नूर माहाम्मद
      - दीवान नाछिर माहाम्मद
        - दीवान साहा माहाम्मद
          - दीवान लतीफ माहाम्मद
            - दीवान नजर माहाम्मद
              - दीवान नजमउद्दीन अली
                - दीवान जाफर अली (पुत्र)
                  - दीवान नबाव अली
                    - दीवान नागर अली
                - दीवान सुल्तान माहाम्मद (जामाता)
                  - दीवान माहाम्मद हद्दी
                    - दीवान मेन्दी अली
                      - दीवान मछलन्द अली
                        - दीवान मनहर अली
                        - दीवान छमदद अली
              - दीवान बक्स अली
                - दीवान फते अली
                  - दीवान खाजे अली
                    - दीवान नूर अली
                      - दीवान आबुल हाकिम
                    - दीवान जोहर अली
                  - दीवान साहाबाज अली

तृतीय लहर 117

सम्राट औरंगजेब के शासनकाल में मघ और पुर्त्तगीज जल दस्युओं के अत्याचार निवारण के लिए बंग के शासक सायेस्ता खाँ ने नावरा(1) विभाग की स्थापना की। इस विभाग का प्रधान कार्यालय खिजिरपुर(2) में कायम किया गया था। इसके खर्च निर्वाह के लिए 112 इलाका ''उमले नावरा'' नाम को नौ विभाग के अधीन हुआ इस समय सराइल 'सतर खण्डल' भी 'नावरा' के नाम के उस भूभाग में शामिल हो गया था। काफी अरसे से बहुत से परिवर्तनों के बाद सराइल परगना वर्तमान रूप में आया है।

सराइल के अधिपति पहले के ईशा खाँ मसनद अली महाराज अमर माणिक्य के सम सामायिक थे। इसकी सम्यक आलोचना और विवरण से ही इस बारे में उपलब्धि स्पष्ट रूपेण हो जायेगी। इन्होने अमर सागर खनन के कार्य में एक हजार मजदूर प्रदान कर सहायता की थी।

भुलुया

मुहम्मद घोरी(गौरी) ने 1193 ईस्वी में थानेश्वर के करीब तिरौरी या तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज को पराभूत और हत्या करके उनके राज्य को अपने अधिकार में ले लिया। मुहम्द गौरी ने अपने क्रीतदास और सेनापति कुतुबुद्दीन को नए अधीकृत प्रदेश का शासक नियुक्त कर गजनी में लौटने के बाद से ही कुतुब स्वयं और उनके सेनापति मुहम्मद–इ–बख्तियार और उनके पुत्र मुहम्मद ने क्रमशः पूरब की ओर अफगान तक राज्य विस्तार के उद्देश्य से एक के बाद एक देश अपने अधिकार में करने लगे। इन लोगों ने क्रमशः बिहार एवं पश्चिम और उत्तर बंग पर विजय हासिल करके असम की सीमा तक मुसलमान शासन का विस्तार कर दिया। इस घोर राष्ट्र विप्लव के फलस्वरूप दक्षिण पथ तक विचलित हो उठा। उस समय मिथिला के शूर उपाधिधारी आदिशूर नाम के राजा के नवम पुत्र विश्वम्भर शूर ने मुसलमानों के भय से भयभीत हो स्वदेश परित्याग कर बंगभूमि की ओर पलायन किया। यह घटना 1125 शकाब्द अर्थात 1203 ईसवी की घटना है। इस समय लक्ष्मण सेन(3) नवद्वीप में रह रहे थे। विश्वम्भर ने

....

(1) समरतरी विभाग के सभी कार्य परिचालना के लिए एक स्वतन्त्र विभाग की प्रतिष्ठा हुई उसे 'नावरा विभाग' कहा जाता है।

(2) वर्तमान नारायण गंज के उत्तरांश का नाम खिजिरपुर था।

(3) मिनहाज अपनी रचित तबकात–इ–नासारि नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ में लछमियाँ नाम का उल्लेख किया है। बहुत से लोग लछमियाँ को 'लाक्षनेय' नाम से रूपांतरित कर लक्षण सेन के पुत्र के रूप में उल्लेख किया है। किन्तु 'शेक शुभोदया' ग्रन्थ में लछमियां को बल्लाल सेन का पुत्र कहकर उल्लेख किया है। यशोहर खुलना के इतिहास इतिहास प्रणेता महाशय ने कहा है, मुसलमानों ने लछमन अर्थात लक्ष्मण के नाम के अन्त में अवज्ञा सूचक आलेफ योग करके लछमिया किया है। लछमियां और लछमन एक ही बात है।

साहित्य –1301 बैशाख एवं यशोहर खुलना का इतिहास के दशम परिच्छेद, 1350 पृ

उनसे आश्रय प्रदान करने की प्रार्थना की। उस समय नए बलदृप्त मुसलमानों के भय से बंग के राजन्य वर्ग संत्रस्त थे। इस संकटापन्न समय में कुमार विश्वम्भर को आश्रय प्रदान करने में लक्ष्मण सेन साहस नहीं जुटा पाये। दूसरी जगह भी कोशिश करने के बावजूद भी वे कोई निरापद आश्रय नहीं जुटा पाये।

विश्वम्भर शूर कर्णाट क्षत्रिय थे। 'कायस्थ कारिकाय' में और भुलुया के इतिहास में विश्वम्भर शूर के अधस्तन सप्तम स्थानीय राजा लक्ष्मणमाणिक्य के परिचय सूचक जो कविता जोड़ी गई है। वह निम्न रूप है–

"सुन सुन महाशय, आमार जे परिचय,	"सुन सुन महाशय, हमारा यह परिचय,
मैथिल भूमेते छिलो बास।	मैथिल भूमि था बास।
ताहे पद भंग कोईलो, बंगे उपस्थित होइलो,	उसे छोड, बंगे उपस्थित हुआ,
राढ़ प्रेदेशे निवास।।	राढ़ प्रदेश निवास।।
ताहे पद भंग कोरि, भुलुया निबास कोरि	उसे छोड, भुलुया निवास किया
महाराज आदिशूरेर जर्दान।	महाराज आदिशूर के वंशज।
बात्सय गोत्र पंच प्रवर, कोरि अबधान,	बात्स्य गोत्र पंच प्रवर, ये जानो
लक्ष्मणमाणिक्य शूर एई तो आमार नाम।।	लक्ष्मणमाणिक्य शूर यही तो मेरा नाम।।

अर्थात सुनो महाशय। मेरे जो परिचय हैं उसे सुनो। मैथिल भूमि में मेरा निवास था। उसे छोड़कर बंग भूमि में मुझे आना पड़ा। मैं आदिशूर का वंशज हूँ। गोत्र मेरा वात्स्य है। पंच प्रबर वाला हूँ। लक्ष्मणमाणिक्य शूर हूँ– यही तो मेरा नाम है। "

विश्वम्भर के क्षत्रियत्व के बारे में मतभेद है। उन्हे कोई क्षत्रिय एवं कोई कायस्थ कहता है। इसके अलावा किसी किसी के मत से क्षत्रिय होने पर भी भुलुया में में आकर बंगज कायस्थ समाज में घुल मिल गए। शेषोक्त वाक्य ही सत्य है। इसके बहुत से प्रमाण भी हैं। इस वंश के क्षत्रियत्व प्रतिपादक दो चार बातें नीचे दी जा रही हैं।

1. पहले भुलुया के राज परिवार में उपबीत, उपनयन संस्कार एवं क्षात्रोचित अशौच पालन की प्रथा प्रचलित थी– यह सौ फीसदी सत्य है।

2. ये लोग बंगज कायस्थ समाज की तरह स्मार्त्त रघुनन्दन की व्यवस्था के अनुसार क्रिया कलाप सम्पादन न करके, आज भी वाचस्पति मिश्र का मत अनुसरण कर रहे हैं।

भुलुया में आने के बाद स्वदेशी और स्व जातियों के साथ यौन सम्बन्ध कायम रखना असम्भव होने पर राजा विश्वम्भर के अधस्तन पंच पुरूष स्थानीय कविचन्द्र खाँ, विक्रमपुर और बाकला, चन्द्रद्वीप के कायस्थ समाज में शामिल हो गये थे।(1) कवि चन्द्र कायस्थ समाज के उस समय के समाज पति चन्द्रद्वीप के राजा और कुलाचार्यो को वशीभूत कर बंगज कायस्थ समाज के कुलीनों के साथ अन्न भोजन का सम्बन्ध स्थापित किया। इसके बाद से ही शूर राज वंश कायस्थ समाज में प्रतिष्ठित हो गया। इस समय बिक्रमपुर बहर के

---

(1) ब्रज सुन्दर मित्र प्रणीत चन्द्रद्वीप इतिहास(बंगला में) पृष्ठ 24

तृतीय लहर 119

चौधुरिओं के पूर्व पुरूष हंस बसु और गोपाल बसु एवं चतुर मंड़ल के पाई मित्र प्रभृति कुछ कुलीन कायस्थ शुर वंश के अन्न ग्रहण करने में असम्मत होकर राज प्रसाद से भाग जाने के अपराध से कौलिन्य भ्रष्ट और कुलज श्रेणी में उतार दिये गये थे। कवि चन्द्र के पौत्र लक्ष्मणमाणिक्य, गाभा के सुविख्यात घोष वंश के पूर्व पुरूष परमानन्द घोष दस्तिदार के हाथों में अपनी कन्या का सम्प्रदान किया(1) इस परिणय के विषय में परमानन्द चन्द्रद्वीप समाज में अपदस्थ होकर भुलुया में लौट आने के लिए मजबूर हो गये थे। इस घटना से चन्द्रद्वीप के राजा के साथ लक्ष्मणमाणिक्य का मनोमालिन्य शुरू हुआ।

एक सम्प्रदाय के मत से भुलुया के राजवंश को मिथिला परित्याग के पश्चात् कुछ दिनों के लिए राढ़ देश में रहना पड़ा था। वहाँ से भुलुया आये थे। पहले जो लक्ष्मणमाणिक्य की परिचय ज्ञापक कविता दी गई है। उसकी आलोचना करने से भी इस कथन की पुष्टि होती है। बंगाल के जातीय इतिहास–राजन्य काण्ड में यही मत गृहीत हुआ है। खास तौर से इस वंश की एक शाखा राजशाही जिला के अन्तर्गत चौधुरी भवानीपुर में रह रही है। उस शाखा का एक विशाल वंश तालिका श्रीयुक्त काशीनाथ शूर चौधुरी महोदय ने छापा है(2)। उसकी आलोचना से यह जाना जाता है कि इस वंश के आदि पुरूष कवि शूर(सांमत राज) थे। वे और उनके पुत्र माधव शूर ने(महा सामंत राज) कहाँ राज्य स्थापन किया था, पता नहीं चलता। माधव शूर के पुत्र आदि शूर(जयन्त) पोण्ड्र वर्द्धन के(गौड़ के) राजा थे। इस आदिशूर के अधस्तन 15 स्थानीय राजा विश्वम्भर शूर ने भुलुया में आकर राज पाट की स्थापना की। विश्वम्भर शूर के भुलुया गमन के पहले क्रमशः शूरपूर(वर्द्धमान), सिंहेश्वर, गढ़ मन्दारण, प्रद्युम्न नगर आदि स्थानों में राजधानी के स्थापना की बात मिलती है। किन्तु मिथिलावास की कथा इस वंश पत्रिका में नहीं पाई जाती। फिर भी भुलुया के इतिहास में विश्वम्भर मिथिला से आये थे। इसका उल्लेख मिलता है। इस तरह के मत वैषम्य का कारण बताना सहज साध्य नहीं है।

यहाँ पर और एक विषय आलोचना के योग्य है। श्रीयुक्त काशीनाथ शूर चौधुरी महोदय के संकलित वंश पत्रिका में आदिशूर के(जयन्त) परवर्ती 15वें स्थान पर विश्वम्भर का नाम लिखा गया है। काशी नाथ बाबू के मत से आदिशूर का ''राजाधिराज'' उपाधि थी और पोण्ड्र वर्द्धन में(गौड़) 732 ई0 से लकर 782 ई0 तक उन्होने राजस्व किया था।

....

(1) श्रीयुत आनन्दनाथ राय प्रणीत बारह भुईयाँ 149 – 150 पृष्ठ एवं नब्य भारत चैत्र 1307।

(2) श्रीयुक्त महिमचन्द्र चक्रवर्ती विद्याभूषण महोदय के सौजन्य से यह वंश तालिका हमें मिली है।

तृतीय लहर 120

इतिहास प्रसिद्ध यज्ञ कर्ता गौड़ेश्वर आदिशूर ही जो काशी नाथ बाबू के लक्ष्य स्थल है, यह सहज ही अनुमान किया जाता है। उनके मतानुसार आदिशूर का ही राजत्व काल 732 ईसवी से लेकर 782 ईसवी(654–704 शकाब्द) था। कुलार्णव एवं बरेन्द्र कुलपंजी के मतानुसार इस निष्कर्ष की कष्ट कल्पना द्वारा सामंजस्य की रक्षा की जा सकती है, किन्तु ऐतिहासिकों ने इस तरह के मत का पोषण नहीं किया। क्षितीश वंशावली की सूची के अनुसार 999 शकाब्द में वाचस्पति मिश्र के मत से 954 शकाब्द में, भट्ट ग्रन्थ के अनुसार 994 शकाब्द में आदिशूर याज्ञिक ब्राह्मणों को बंग देश में लाया था। इन सूचिओं के निर्धारण के साथ काशी नाथ बाबू के निर्धारित शकांक में न्युन्याधिक तीन सदी का अन्तर होता है। इस हालत में गौड़ेश्वर आदिशूर एवं काशीनाथ बाबू के आदिशूर को अभिन्न कहकर परिचय देने की कोई गुंजाइश नहीं है। राजा विश्वम्भर मिथिला से आये थे, यह सर्ववादी सम्मत मत है। उनके साथ आने वाले ब्राह्मण भुलुया समाज में पहले से ही मैथिल ब्राह्मण के रूप में परिचित रहे है। आज भी उनके सभी कौलिक क्रिया कर्म मैथिल पद्धति के अनुसार ही होते हैं। भुलुया के प्रचलित भाषा में मैथिल शब्दों का अत्यधिक प्रभाव देखा जाता है।(1) ये सारे विवरण राजा विश्वम्भर के मिथिला से आगमन के पोषक प्रमाण स्वरूप ग्रहण किया जा सकता है। काशीनाथ बाबू की संकलित वंश पत्रिका में इस विषय का कोई उल्लेख न रहने पर इस वंश पत्रिका की मौलिकता के बारे में ही स्वतः सन्देह उत्पन्न होता है। भिन्न मतानुसार भुलुया में संरक्षित वंश पत्रिका में विश्वम्भर को आदिशूर का पुत्र कहकर उल्लेख किया गया है। बंग में साग्निक पंच ब्राह्मण लाने वाले आदिशूर के पुत्र का ईसवी तेरहवीं सदी में होने की बात अंसमभव सी है। खास तौर से प्राचीन और प्रवीणों के अनुसार शूर का वंश सम्पूर्ण ध्वंस हो गया था।(2) उनके क्षत्रियत्व के बारे में भी प्रबल मतवैषम्यता परिलक्षित होती है। इस अवस्था में भुलुया के राज वंश को गौड़ेश्वर आदि का आदिशूर का वंशधर कहकर निर्वाचन करना असाध्य कार्य है।

विमल यश के अधिकारी प्रबल पराक्रान्त गौड़ेश्वर आदिशूर के परिवर्ती वंशी राजन्य वर्ग कुछ दिनों तक उनका अनुकरण और अनुसरण करने में ही व्यग्र थे। इस समय बहुत से शौर्यशाली और कृति राजा 'शूर' उपाधि ग्रहण करना श्लाघ्य(प्रशंसनीय) समझते थे। महा महोपाध्याय भरत मल्लिक विचरित 'चन्द्रप्रभा' कुल पंजिका में 'लिपिशूर' का नाम मिलता है। मान्द्राज प्रदेश में तिरूमलय गिरिलिपि में दक्षिण राढ़ के अधीश्वर

---

(1) विजया पत्रिका – नोयाखालीर भाषा वैचित्र(नोयाखाली का भाषा वैचित्र) प्रबन्ध देखने योग्य है।

"आदिशूरेर वंश ध्वंस सेन वंश ताजा।
भिष्मक सेनेर क्षेत्रज पुत्र बल्लान सेन राजा।। – वैद्यकुल पंजिका।

अर्थात "आदिशूर का वंश ध्वंस हो गया और सेन वंश ताजा है। भिष्मक सेन के क्षेत्रज पुत्र बल्लाल सेन राजा हैं। "

रणशूर का नाम उत्कीर्ण हुआ है।(1) पाण्डूकेश्वर में ''ललित शूर का'' एक ताम्र शासन आविष्कृत हुआ है।(2) सन्ध्याकर नन्दी विरचित रामचरित ग्रन्थ में लक्ष्मीशुर नाम के एक राजा का उल्लेख है। नेपाल राज्य में प्राप्त एक खण्ड शिला लिपि में और एक रणशूर का नाम मिलता है।(3) राजशाही जिले के 'मादा' गाँव में दामशूर नाम के एक शुर राजा की शिलालिपि मिली है।(4) इन सभी शुर उपाधिधारिओं के विवरण से जाना जाता है कि उस समय भिन्न प्रदेशों में भिन्न वंशीय कृति पुरूष गण शूर उपाधि धारण करने के पक्षपाती थे। इससे यह समझा जाता है कि उस निति के अनुसरण के जरिए मिथिला में एक शूर वंश का अभ्युदय हुआ था और उसी वंश के विश्वम्भर शूर भुलुया में आकर एक नये राज्य की प्रतिष्ठा की थी। विश्वम्भर के पिता का नाम का, गौड़ेश्वर आदिशूर के नाम के साथ ऐक्य रहने से भूलुया राजवंश वालों को आदिशूर जयन्त का वंशधर कहकर कल्पना की गई है। इस तरह के सिद्धान्त के अलावा ऐतिहासिक सामंजस्य की रक्षा करने का और कोई पंथा ही नहीं सूझता।

विश्वम्भर के स्वदेश परित्याग के पश्चात्, राढ़ और बंग में आश्रय न मिलने से तीर्थ दर्शन की मानसिकता के वश चन्द्रनाथ पर्वत की ओर उन्होने यात्रा की। कहा जाता है कि इस अभियान में 149 नौका, दौ सौ सेना एवं बहुत से परिजन उनके साथ थे। तीर्थ क्षेत्र में प्रत्यावर्तन के समय बंगाल की खाड़ी के उत्तर पूर्व के कोने में नाविकों को दिगभ्रम हो गया। आठ दिनों तक इधर उधर पोत संचालन के पश्चात् पथ भ्रान्त नौवितान वर्तमान नौयाखाली जिला स्थित आमिशा पाड़ा के पश्चिम किनारे नावड़ि गाँव से लेकर वर्तमान सोनाईमुड़ी रेलवे स्टेशन के पश्चिम की ओर बगादिया(बकद्वीप) और भानुराइ गाँव तक फैले हुए स्थान को लेकर नव–संचित बालू के स्तर में अटक गया। स्थान अपरिचित था। सभी नाविक दिगभ्रान्त हो गए थे। माघ के महीने के गहन कुहरे से चारों ओर ढ़का था। इसे भीषण विपदा का पूर्वाभाष समझ कर विश्वम्भर भयभीत और विचलित हो उठे। वे बाराही मंत्र से दीक्षित थे। इस हठात आई हुई विपत्ति में एकाग्र चित से वे अपनी इष्ट देवी के शरणापन्न हुए।

कहा जाता है कि देवी के प्रत्यादेश से विश्वम्भर ने जलगर्भ से बाराही देवी की प्रस्तरमयी मूर्ति को निकालकर रात में ही उस विग्रह को नए निकले हुए बालू के रेत में स्थापित कर छाग बलि इत्यादि देकर पूजा अर्चना इत्यादि किए।(4) 610 सन (1203 ईसवी) की

....

(1) गौड़ लेख माला 39 पृष्ठ।

(2) **Proc. Asiatic Society of Bengal P 72, 1877**

(3) **Bendall's catalogue of the Budhist Mss.Page XIII**

(4) बंगेर जातीय इतिहास(बंग का जातीय इतिहास) राजन्य काण्ड 145 पृष्ठ।

(5) सोनाईमुड़ी रेलवे स्टेशन के करीब बगादिया(वकद्वीप) उस समय जलमग्न था। किसी किसी के मत से यहाँ पर देवी विग्रह की प्राप्ति हुई थी। फिर किसी किसी का कहना है कि पाषाणमयी मूर्ति को विश्वम्भर ने देश छोड़ने के समय साथ ले लिया था।

तृतीय लहर 122

10 माघ की घटना है। डॉक्टर वाइज इस बारे में लिखते हैं–

The exact date of this fiction is given as the 10th of magh, 610. Bengali year or A.D. 1203. The same year in which the first Mahammadan invasion of Bengal under Bakhtyar Khiliji took place. J.A.S.B. Vol- XLIII, Part- I, Page- 203.

दिग्भ्रान्त होने के फलस्वरूप विश्वम्भर देवी विग्रह का मुख पूरब की ओर स्थापित हो गया था एवं उसे पश्चिमाभिमुखी कर छाग बलि दिया गया था। सवेरा होते ही बहुत दिनों के पश्चात् सूर्य के दर्शन मात्र आनन्द से उस जगह का नाम 'भानुराइ' रखा गया। सूर्यालोक के पश्चात् दिगभ्रम हट जाने पर पता चला कि देवी का मुख पूर्वाशय हो गया है। तब सभी ने कहा है, भूल हुआ है भूल हुआ है। इस ''भूल हुआ'' शब्द से ही उस जगह का नाम पड़ा भुलुया। स्थान के नामोत्पत्ति के बारे में और बहुत से प्रवाद प्रचलित हैं। राजमाला द्वितीय लहर के 305 पृष्ठ में इस बारे में पहले ही चर्चा हो चुकी है। प्रचलित प्रवाद समूहों में उपर लिखे गये वाक्य ही अधिक प्रचलित और प्रबल है। पश्चिमाभिमुखीनी देवी मुख करके छाग इत्यादि का बलि प्रदान शास्त्रसिद्ध न होने पर भी पहले के अनुष्ठान को मद्देनजर रखते हुए मर्यादा रक्षार्थ भुलुआ के किसी किसी तांत्रिक समाज में आज तक इस नियम को अक्षुण्ण रखा गया है।

विश्वम्भर भानुराइ गाँव में अपनी आराध्या देवी मूर्ति की स्थापना के बाद इस जगह से कुछ ही दूरी पर उत्तर की ओर शिमुलिया गाँव से गढ़ परिखा से घिरे हुए राज प्रसाद का निर्माण किया एवं विभिन्न जगहों से भिन्न भिन्न जाति के लोगों को लाकर नगर की सौष्ठव वृद्धि की थी। वह गढ़ खाइ अब भी चौड़ी और गहरी है। पानी में उतरकर मछली पकड़ते समय इस गहरी परिखा से अब भी नर कंकाल निकलते रहते हैं। जन श्रुति यह है कि यहाँ पर भूगर्भ में पहले एक सुरक्षित दुर्ग था। विश्वम्भर के अधस्तन सप्तम पुरूष लक्ष्मणमाणिक्य भी कुछ दिनों तक इस राजधानी में रह चुके थे।

स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महोदय के संकलित राजमाला से भुलुया राज परिवार की वंश तालिका संग्रह करके राजमाला द्वितीय लहर में दिया गया है। वह वंश तालिका अति संक्षिप्त है और उसकी विशुद्धता के बारे में सन्देह था। इसी कारणवश विशुद्ध वंश पत्रिका के संग्रह में काफी कोशिशें भी करनी पड़ी। कुछ ही पहले भुलुया आमिशा पाड़ा निवासी श्रद्धेय सुहृद श्रीयुत महिमचन्द्र चक्रवर्ती विद्याभूषण महाशय के सौजन्य से भुलुया का ऐतिहासिक विवरण एवं राज वंशावली मुझे मिली है।

कैलाश बाबू ने भुलुया के लक्ष्मणमाणिक्य के पुत्र का नाम बलराम राय लिखा है। राजमाला में दुर्लभ नारायण मिलता है। बलराम का कहीं नामोनिशान नहीं है। उक्त वंश तालिका के प्रति सन्देह करने का यही मुख्य कारण है। खासतौर से ढाका म्यूजियम के सुयोग्य क्यूरेटर श्रद्धाष्पद श्रीयुत नलिनीकान्त भट्टशाली एम. ए. महोदय ने बलराम नाम के अस्तित्व को अस्वीकार करने पर(1), यह सन्देह और भी गाढ़ा हो गया। महिम बाबू ने इस सन्देह का निराकरण किया है। उनकी प्रेरित वंश पत्रिका में लक्ष्मणमाणिक्य के पुत्र की जगह धर्म माणिक्य, ब्रह्म या बलराम माणिक्य, विजय माणिक्य और अमर माणिक्य यह चार नाम लिखा गया है। महिम बाबू ने पत्र द्वारा यह सूचना भेजी है कि "दुर्लभ नारायण या दुर्लभ राय नाम के किसी भुलुयापति के साथ त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के बीच युद्ध नहीं हुआ। अमर माणिक्य के प्रतिद्वन्दी योद्धा दुर्लभ माणिक्य नहीं, बल्कि महाराज लक्ष्मणमाणिक्य के पुत्र जो बलराम माणिक्य ही थे।" यह स्थानीय ज्ञानी व्यक्तियों का मत है। इस जगह में लक्ष्मणमाणिक्य के पुत्र बलराम थे उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। राजमाला रचियता सम्भवतः बलराम के नाम से वाकिफ नहीं थे। उन्होने जो दुर्लभ नारायण का नामोल्लेख किया है, इसमें ऐसा लगता है कि उन्होने लक्ष्मणमाणिक्य को ही लक्ष्य करके कहा है। इसके बाद इस विषय पर आलोचना होगी। इस नाम वैषम्य के कारणों की ओर ध्यान देने का कोई मतलब नहीं है। महिम बाबू द्वारा प्रदत्त भुलुया के राजवंशावली के कुछ अंश यहाँ दिये जा रहे हैं। समस्त वंश पत्रिका बहुत विशाल और विस्तृत है। इसलिए उसे परिहार करना ही संगत है।

भुलुया की राज वंशावली

राजा आदिशूर(मिथिला में)

↓

राजा विश्वम्भर शूर।
(भलुआ के नये राज्य के प्रतिष्ठाता, राजधानी शिमुलिया)

↓

राजा गणपति | मनोहर | हेमंत अथवा श्रीपति (गंधर्वपुर) | दामोदर

राजा गणपति
↓
राजा शुरानन्द खाँ
↓
राजा विद्यानन्द खाँ (दत्त पाड़ा) | देवानन्द खाँ | श्री राम खाँ (श्री रामपुर)

....

(1) नलिनी बाबू ने लिखा है– भुलुया शब्द अग्रेंजी में बहुत समय तक भालुया या बालुया लिखा जाता था। छापने की भूल की वजह से 'बलराम' लिखा गया है। लांग साहब और कैलाश बाबू ने वही ग्रहण किया है। विचित्रा – बैशाख 1335(बंगला सन)

- श्रीराम खाँ (श्री रामपुर)
  - राजा कविचन्द्र खाँ
    - राजा राज बल्लभ (कल्याणपुर)
      - उदयमाणिक्य
      - अनन्त माणिक्य (राज माणिक्य) छत्रभंग नारायण
      - लक्ष्मणमाणिक्य(1)
        - धर्म माणिक्य
        - ब्रह्म या बलराम माणिक्य
        - विजय माणिक्य
          - राजा रूद्रराम(2)
        - अमरमाणिक्य
          - राम माणिक्य
      - गोविन्द माणिक्य
      - नरसिंह माणिक्य
    - कृपा राम
  - जयराम खाँ

राजा कविचन्द्र खाँ के पौत्र उदय ने त्रिपुरेश्वरों के साथ प्रतियोगिता कायम रखने के उद्‌देश्य से सगौरव ''माणिक्य'' उपाधि धारण किया। यही है भुलुया राज वंश की प्रथम माणिक्य उपाधि। इसके बाद कई पुरूषों तक भुलुया के राजाओं में यही उपाधि चलती रही। यहाँ तक त्रिपुरेश्वरों के नाम का अनुसरण करने के लिए भी वे व्यस्त हैं। उदयमाणिक्य, अनन्त माणिक्य, लक्ष्मण माणिक्य, गोविन्द माणिक्य, धर्म माणिक्य, विजय माणिक्य, अमर माणिक्य और राम माणिक्य आदि नामों के साथ त्रिपुरेश्वरों के नामों की एकरूपता परिलक्षित होती है। 'माणिक्य' उपाधि लेकर त्रिपुरा के साथ भुलुया का मन मुटाव बहुत दिनों तक चलता रहा और इसके फलस्वरूप भुलुया के राजाओं को कई दफे पर्युदस्त भी होना पड़ा है। फिर भी दृढ़ प्रतिज्ञ राजाओं ने आसानी से इस उपाधि को परित्याग नहीं किया।

---

(1) राजमाला में इनका नाम दुर्लभ नारायण लिखा हुआ है।

(2) इनकी पत्नी रानी शशी मुखी द्वारा बाराही विग्रह आमिशापाड़ा गाँव में स्थापित हुआ था। तब से उसी स्थान पर देवी की अर्चना चल रही है।

द्रष्टव्य– राजा विश्वम्भर वंशधर गण नोयाखाली जिला स्थित श्री रामपुर, दत्त पाड़ा, गन्धर्वपुर, कल्याणपुर, बड़हालिया, बाबूपुर, कृष्णरामपुर, महेशपुर, खलिलपुर, माईझदी गाँव में त्रिपुरा जिले के अन्तर्गत जीवनपुर, करई तली आदि गाँवों में एवं राज शाही जिले के चौघुरी भवानीपुर में रह रहे है। इनकी सभी शाखाओं की वंशावली संगृहीत है। बाहुल्य भय से यहाँ देने की सुविधा नहीं हुई।

तृतीय लहर 125

भुलुयापति राजा राजबल्लभ के पुत्र लक्ष्मणमाणिक्य उस समय द्वादश भौमिकों में एक थे। इनका जन्म हुआ था सौलहवीं ई सदी में। वे और बंग के कई भौमिक मुगल सम्राट को अस्वीकार करने से स्वाधीन हो गए थे। लक्ष्मणमाणिक्य वीर पुरूष थे। मघ, फिरिंगीं(पुर्त्तगीज) एवं मुसलमानों के साथ वे बार बार लड़ाई में लिप्त विजयी हुए थे। चन्द्रद्वीप के राजा कन्दर्प नारायण के साथ इनका मनोमालिन्य होने पर भी विक्रमपुर के चाँद राय और केदार राय के साथ काफी सद्भाव था।

इस समय मघ, फिरिंगी जलदस्युओं के उपद्रव से मेघना नदी के मुहाना के समीपवर्ती प्रदेश में एवं बंगाल की खाड़ी के आस पास का इलाका जन शून्य हो चला था। यशोहर के प्रतापादित्य, चन्द्रद्वीप के कन्दर्प नारायण और रामचन्द्र, विक्रमपुर के चाँदराय और केदार राय एवं भुलुया के लक्ष्मणमाणिक्य ने इन जलदस्युओं को दमन करके देश से अशांति को दूर करने के लिए जी जान से कोशिशें की थी। सभी इस तरह मिलकर अगर कोशिश न करते तो इन दोनो जलदस्युओं के अत्याचारों से देश की परिस्थिति और भी भयानक हो उठती। जल और स्थल दोनों तरह के डाकुओं से जन जीवन त्रस्त हो उठा था। ये डाकू गिरोह में इकक्ठे होकर नर हत्या, लूट–पाट, मनुष्य का अपहरण और दास रूप से उनके साथ बर्ताव एवं उन्हे बेचते थे। इनके अत्याचारों से देश की जो दुर्गति हुई थी, वह वर्णनातीत है।

लक्ष्मणमाणिक्य राढ़, मिथिला, विक्रमपुर और चन्द्रद्वीप इत्यादि जगहों से ब्राह्मण, वैद्य(अम्बष्ठ विप्र) और कायस्थों को लाकर अपने राज्य में प्रतिष्ठित किया। चट्टग्राम एवं त्रिपुरा से भी बहुत से भद्र परिवार आकर यहाँ पँहुचे थे। ब्राह्मणों को प्राय सभी को ही राज सरकार से यथा योग्य भू सम्पत्ति प्रदान की जाती थी। इस समय विक्रमपुर के आदर्शानुसार भुलुया समाज को उन्नीत करने के लिए राजा विशेष रूप से सचेष्ट थे। इस विषय में कृत कार्य भी हुए थे।

लक्ष्मणमाणिक्य केवल वीर थे, ऐसी बात नहीं है। वे संस्कृत भाषा के सुपंडित एवं सुकवि भी थे। उनकी रचित ''विख्यात विजय'' नाटक ''कौतुक रत्नाकर'' और ''कुबलयाश्व चरित'' नाटक का संधान भी मिलता है। ये सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा के अलंकार स्वरूप हैं। ''विख्यात विजय'' नाटक अर्जुन द्वारा कर्ण वध का उपाख्यान लेकर रचित है। भुलुया के ''भारती रंग मालय'' में अभीनीत हुआ था। इस ग्रन्थ की एक पांडुलिपि कलकत्ता ऐसियाटिक सोसाईटी के ग्रन्थागार और एक नोयाखाली जिला स्थित खिलपाड़ा निवासी पंडित श्रीयुत आनन्दचन्द्र तर्कवागीश महाशय के गृह में है। कौतुक रत्नाकर की एक पांडुलिपि ढाका यूनिवरसिटी **(Dacca University S. No 1871**) एवं और एक अगरतल्ला के राज–ग्रन्थागार में सुरक्षित है। '' कुबलयाश्व चरित'' ग्रन्थ के विषय में महा महोपाध्याय श्री युत हरप्रसाद शास्त्री महोदय ने आलोचना

की है(1)। विख्यात विजय नाटक के प्रारम्भ भाग के कुछ अंश राजमाला द्वितीय लहर के 307 पृष्ठ में दिया गया है। यहाँ पर उसका पुनरूल्लेख निष्प्रयोजन है।

लक्ष्मणमाणिक्य की अनन्त साधारण वीरत्व कहानी अभी भी लोक गाथाओं में चली आ रही है। ये समुद्र के उपकुल भाग के अधिपत्य को लेकर मघ, पुर्त्तगीज और मुसलमानों के साथ बार बार जल युद्ध में लिप्त होकर जय लाभ किए थे। लक्ष्मण चिर जीवन अपनी स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने में समर्थ रहे। चन्द्रद्वीप के राजाओं ने पुर्त्तगीज जलदस्युओं की सहायता और सहयोगिता लेकर भी, इनका कोई अनिष्ठ नहीं कर पाये। जल दस्युओं के उपद्रव निवारण एवं जल पथ से राज्य आक्रमण को प्रतिरोध के लिए लक्ष्मणमाणिक्य ने मेघना नदी और बंगाल की खाड़ी के करीब कल्याण पुर में नई राजधानी की प्रतिष्ठा करके शिमुलिया के राज भवन को परित्याग कर दिया था।

महाराज लक्ष्मण, विश्वम्भर की स्थापिता बाराही देवी के परम भक्त थे। इन्होने कल्याणपुर में राजधानी स्थापित करते समय देवी मूर्ति को आदि–पीठ स्थान से उठाकर नई राजधानी कल्याणपुर के नजदीक बाराही नाम के एक गाँव में स्थापित किया था। प्रवाद है कि देवी का स्थापित प्रथम स्वर्ण घट अब भी भानुराई गाँव में ही है। बाराही विग्रह के बारे में हम बाद में आलोचना करेगें।

सामाजिक विषय को ले कर चन्द्रद्वीपाधिपति कन्दर्प नारायण के साथ भुलुया के राजा कवि चन्द्र खाँ के साथ मनोमालिन्य होने की बात पहले ही बताई गई है। इसके अलावा समुद्र के उपकुल भाग की सीमा रेखा को उभय राज्यों में विवाद के रूप में पुरूषानुक्रम में चली आ रही थी। विशेष रूप से दीक्षा गुरू से लेकर यह विवाद और घनीभूत हो गया। हुगली जिले के बाँसबेडिया के सिद्धजीवन दिग्विजय भट्टाचार्य(नोयाखाली जिला स्थित बाबूपुर के ठाकुरों के पूर्वपुरूष) चन्द्रद्वीप के राज गुरू थे। उन्हे चन्द्रद्वीप में लाकर प्रतिष्ठित किया गया था। सिद्ध जीवन के प्रपौत्र रामरमन भट्टाचार्य ने भुलुआराज लक्ष्मणमाणिक को ईष्ट मंत्र से दीक्षित किया था। चन्द्रद्वीप के कन्दर्प नारायण के राज्यकाल में लक्ष्मणमाणिक निज गुरु को बल पूर्वक भूलुआ में लाकर पाँचपाडा गाँव में काफी भू सम्पत्ति देकर स्थापित किया। कथित है, लक्ष्मणमाणिक के अनुचर गण, गुरु राम रमन के घर, आसबाब पत्र, यहां तक वृक्षादि तक लूट कर लाये थे। ''भुलुआ लूट'' नाम के एक प्रवाद वाक्य प्रचलित है। बहुतो के अनुसार इस घटना से ही इस प्रवाद की सृष्टि हुई।

इस सूत्र से दोनों राजाओं के मध्य युद्ध सूचना हुई। कन्दर्प नारायण भुलुआ युद्ध में अनेक बार पराजित हुए। उसके परलोक गमन के बाद उसके पुत्र राजा रामचन्द्र तथा पितृ बैरी के साथ यज्ञ करने लगे।

---

(1) **Report for the search of Sanskrit Manuscripts 1895-1900,**

तृतीय लहर 127

रामचन्द्र युद्ध ने पराजित होने के बाद, लक्ष्मणमाणिक के सहित सन्धि के निमित्त कपट प्रस्ताव उत्थापन करके उसको अपने छोटे नाव में आह्वान किये। लक्ष्मण सरल चित्त से निमन्त्रण रक्षा निमित्त रामचन्द्र के नाव में गये थे। वहाँ आमोद प्रमोद का समारोह यथेष्ट था। लक्ष्मणमाणिक विमुग्ध चित्त से नर्तकी वृन्दो के नृत्य गीत उपभोग कर रहे थे। उसी समय चोरी से नाव तैराकर धीरे से मेघना के मध्य जाकर ठहराया। तभी रामचन्द्र के ईशारे से उसके प्रधान सेनापति रमाईमाल तथा अन्यान्य नियोजित किये गये व्यक्ति लोग निरस्त्र तथा निःसहाय लक्ष्मणमाणिक को अकस्मात आक्रमण कर बन्दी बनाया। इस अवस्था में वीर केशरी लक्ष्मण को चन्द्रद्वीप राजधानी से लेने के बाद निर्मम तरीके से मार डाला गया था।(1) प्रचलित कथा यह है कि लक्ष्मणमाणिक बन्दी अवस्था में विक्षुब्द चित्त से एक ताल वृक्ष के दबाव से धराशायी किये गये थे। वे जो बहुत बलशाली थे। उसके द्वारा व्यवहार में लाया गया एक मन लोहे के वजन का कवच इस बात को साक्षी प्रदान करते है। इस कवच के खण्डित अंश के कुछ काल कल्याणपुर के चौधुरी घर में था। सुना जाता है कि वर्तमान काल में जो तरिनीचरण नट्य नामक कवि के सरकार के घर में यत्लहीन रहकर नष्ट हो रहे थे। यह यत्नपूर्वक रक्षापयोगी वस्तु थे।

लक्ष्मणमाणिक्य के बाद तदीय पुत्र बलराममानिक्य ने भुलुआ के शासन भार ग्रहण किया। इन्होने कल्याणपुर परित्याग करके चरसाई गाँव में राजधानी स्थापना तथा बिहिर गाँव में एक विलास कुंज निर्माण किया। उक्त गाँव में उनके आराध्या तारामूर्ति की स्थापना किया। इस समय से भुलुआ की अवनति शुरु हुई। तत् सम्बन्धी विस्तृत विवरण तथा बलराम के परिवर्ती काल के घटनावली का इस स्थल में आलोचना करना सम्भव नहीं। यहाँ तक कहा जा सकता है कि बलराम ने पंचमकार की सेवा में अपने को ढाल लिया, पिता के वीरत्व तथा यशोराशि सम्पूर्ण रुप से विस्मृत हुआ था।

त्रिपुरेश्वर अमरमाणिक के राज्य के प्रथम भाग में लक्ष्मणमाणिक्य द्वारा भुलुआ राज्य शासित हो रहा था, समग्र अवस्था आलोचना करने से यही मिलता है

---

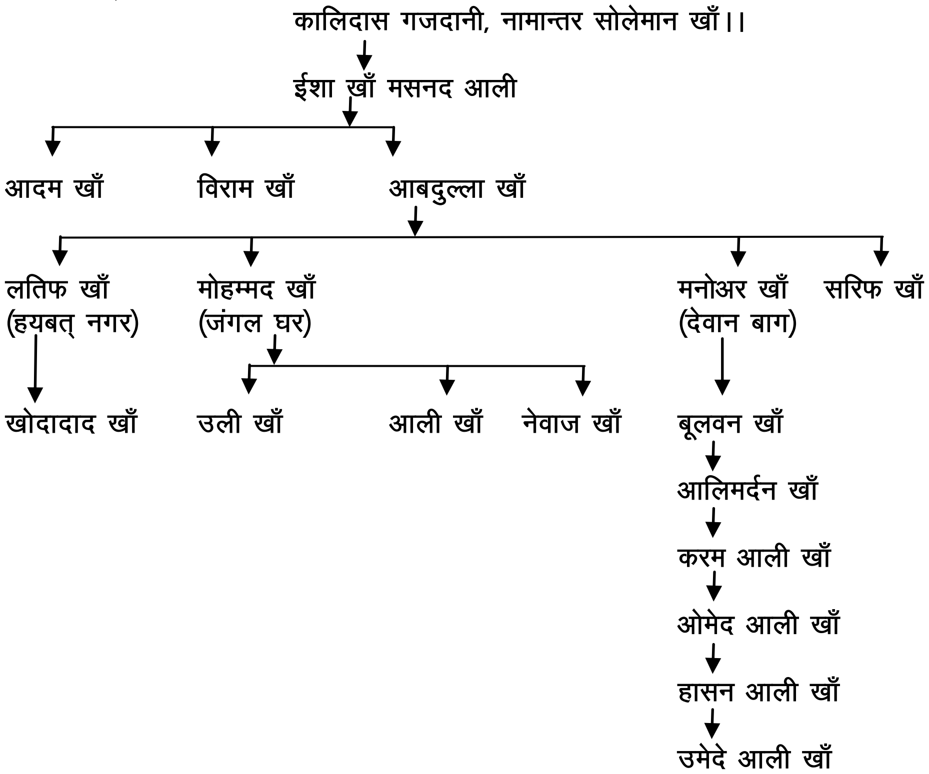
(1) चन्द्रद्वीप राजवंश'' प्रणेता स्वर्गीय ब्रज सुन्दर मित्र महाशय ने कहा था, –''रामचन्द्र ने ससैन्य युद्धार्थ भुलुआ में गमन किया। लक्ष्मणमाणिक्य यह वार्ता सुनकर क्रोधित होकर रामचन्द्र को वध करने हेतू एकागी खड्ग हाथ में लेकर उनके नाव की तरफ दौड़ लगाये। लक्ष्मण क्रोध से कूदते समय नाव में पाँव रखते समय फिसलने होने पर वे नाव के उदर में गिरे। ऐसे ही उसके हस्तपद सुदृढ रुप बन्धन करके नाव बहा दिया गया तथा उसी अवस्था में लक्ष्मणमाणिक चन्द्रद्वीप की राजधानी में लाए गये तथा रामचन्द्र द्वारा निहत हुए। ''

जाय। यह लक्ष्मणमाणिक्य ही एक सहस्र कुलि प्रदान द्वारा अमर सागर खनन काम में सहायता किये थे।

ईशा खाँ मसनदअली

अयोध्या निवासी कालिदास नामक व्यक्ति ने विषय कर्म उपलक्ष्य में पूर्व बंगाल में आवागमन किया। उनका "गजदानी" उपाधि था। उनके ज्येष्ठ भाई रामदास गजदानी बादशाह के दीवान पद में नियुक्त हुए। कथित है कि प्रति दिन एक एक करके सुवर्ण निर्मित गज(हस्ती) दान करने के कारण इन लोगों की उपाधि "गजदानी" हुई थी। उस काल में यह भातृ युगल की प्रतिपत्ति तथा प्रभाव यथेष्ठ थे।

सम्मान तथा समृद्धि वर्धन के आशा से कालिदास ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया। मतान्तर से ये मुश्किल में पड़ कर धर्मान्तर ग्रहण करने में बाध्य हुए। इब्राहिम खाँ मालेक–उल–उलमा इनके उक्त धर्म के दीक्षा दाता थे। मुसलमान होकर इन्होने सोलेमान खाँ नाम लाभ किया।(1) इनके पुत्र बंगाल के द्वादश भौमिक लोगों के अग्रगण्य ईशा खाँ मसनद अली थे। इस वंश की संक्षिप्त तालिका निम्न प्रदान किया जा रहा है।



---

(1) सुवर्ण गाँव का इतिहास –5 अः, 96 पृष्ठ

तृतीय लहर 129

ईशा खाँ ने ढाका के अन्तर्गत खिजिरपुर में आवास स्थान निर्धारण करके भवाल के फजल गाजी के जैसा एक नव राज्य प्रतिष्ठा कार्य व्यापृत हुए। इस समय ईशा खाँ प्रबल प्रतापान्वित होकर, दिल्लीश्वर के विरुद्ध में अस्त्र धारण करने में उद्धृत थे। डाक्टर वाइज ने बार भूयां लोगों के मध्य ईशा खाँ को सर्व प्रधान श्रेष्ठ शासनकर्ता के रुप में देखा था। भ्रमणकारी राल्फफिच पूर्वबंगला में आकर ईसा खां को सर्व प्रधान शासनकर्ता के रुप में देखा था। आईन–इ–अकबरी ग्रन्थ में ईशा खाँ की प्रधानता को स्वीकृत किया गया है। **J. Wise** के ग्रन्थ से कुछ अंश निम्न में प्रदान किया जा रहा है।

"The most celebrated of all the Bhueyas however, was Isa Khan Masnad Ali of Khijerpur. He is described by Abul Fazal as the Marzbon- Bhati or Governor over Lower Bengal and as the ruler over twelve great zeminders"

बिहार विद्रोहानल प्रज्वल्लित होने के समय काल में सम्राट अकबर के आदेशानुसार से राजस्व–सचिव टोडरमल बंग देश में आकर विद्रोह दमन तथा राजस्व अवधारण कार्य में प्रवृत्त हुए। इस समय ईशा खाँ सहज ही दिल्लीश्वर के अनुगत्य स्वीकार करके सरकार बाजूहा(1) तथा सरकार सोनार गाँव(2) का अधिपत्य लाभ किया था। यहाँ तक सरकार की विस्तृति सामान्य नहीं था। उत्तर पश्चिम में घोडा घाट से दक्षिण पूर्व तक समुद्र के उपकुल तक इसकी सीमा निर्धारित थी।

ईशा खाँ ने खिजिरपुर में राजधानी स्थापना करके शासन काम की स्थापना की। अपने अधिपत्य को सुदृढ़ तथा निरापद करने के अभिप्राय से त्रिवेग(3), हाजिगंज(4) तथा कलागाछिया(5) नामक स्थान में तीन दुर्ग का निर्माण तथा एकडाला(6) तथा ऐगारसिन्धु के(7) दुर्ग दरवाजे के संस्कार में मन देने लगे।

ईशा खाँ ने अपना बल बढ़ा करके, दिल्ली का राजस्व बन्द कर दिया। इस बार सम्राट ने इसको दमन करने के निमित्त सेनापति साहाबाज खाँ को बंग देश को प्रेरण किया था। साहाबाज खाँ दलबल के साथ ईशा खाँ पर आक्रमण तथा युद्ध में पराभूत होने से ईशा खाँ ने राजधानी परित्याग कर ससैन्य पलायन किया। साहाबाज खाँ ने

....

(1) सरकार बाजुहा के अन्तर्गत भूभाग होसेन शाह के शासन काल में 'नछरत साहि' नाम से तथा अंग्रेज शासन काल के जिला मयमन सिंह के नाम से अभिहित हुआ है।

(2) ढाका के वर्तमान सदर स्टेशन सरकार बाजूहा के अर्न्तभुक्त था। तद्भिन्न ढाका को अवशिष्ट भू–भाग लेकर सरकार सोनार गाँव नामकरण हुआ।

(3)–(7) पश्चात भाग में सन्निवेशित स्थान के विवरण इन सब दुर्ग के अवस्थान विषयक संक्षिप्त विवरण मिलते हैं।

समुद्र के उपकुल तक उसका अनुसरण किये थे। उसने जिस स्थान पर शिविर स्थापन किया था वह स्थान 'साहाबाजपुर' नाम से अभिहित हुआ है। यह 1585 ई की घटना है।

ईशा खाँ ने छोटे छोटे द्वीप पुंज को भ्रमण करके आत्म रक्षा किया था। इधर दिल्ली में विजय वार्ता प्रेरित हुई। ''अकबरनामा'' ग्रन्थ में साहाबाज खाँ के रण जय विवरण सन्निवेशित हुआ था। इसका मर्म यह हैः–

''रणजय संवाद मुन्सी आबुल फजल सम्राट के निकट ज्ञापन कर रहे हैंः–

''अतिशय संतोषदायक रणजय संवाद बंग देश से आया था। ईश्वर के अनुग्रह से साहाबाज खाँ ने घोडा घाट से महासागर के तीर तक जय किया था। विद्रोही प्रधान ईशा खाँ ने पराजित होकर सागर की तरफ पलायन किया था।''(1)

विजयगर्वोन्मत साहाबाज खाँ ईशा खाँ को विताडित करके निश्चिन्त मन से आमोद प्रमोद में निमग्न थे। इस वर्ष ईशा खाँ ने अकस्मात् ससैन्य मुगल सेनापति शिविर पर आक्रमण किया। साहाबाज खाँ अप्रस्तुत विधा के इस आक्रमण में बाधा प्रदान करने में समर्थ नहीं हुए। वे शिविर परित्याग कर के भागने में बाध्य हुए। इधर ईशा खाँ उसके पूर्व अधिकृत प्रदेश पर पुनराधिकार कर बैठे।

ईशा खाँ की राजधानी मुगल सेनापति द्वारा विध्वस्त होने से, वे वह स्थान परित्याग करके सुवर्ण गाँव में नयी राजधानी की स्थापना की। अंग्रेज परिब्राजक राल्फफिच ने 1586 ई0 अब्द में इस राजधानी में आगमन किया था।

ईशा खाँ पुनर्बार शक्तिसंचय में मनोनिवेश हुए तथा सरकार बाजूहा में एक दुर्ग तथा वास भवन निर्माण करने के इच्छुक हुए। इस समय कोच राजा लक्ष्मणहाजो थे, हाजरादी प्रभृति भू–भाग शासन कर रहे थे। ईशा खाँ ने इसके पराभूत तथा विताडित होकर उस स्थान में दूसरी राजधानी को स्थापना किया। यह स्थान जंगलावृत्त होने से इसका नाम ''जंगलबाडी'' रखा गया। इस राजधानी को निरापद करने के अभिप्राय से ईशा खाँ ने रंगामाटी तथा दशकाहनिया में दो नूतन दुर्ग निर्माण कार्य में हस्तक्षेप किया।

ईशा खाँ मुगल सेनापति साहाबाज खाँ के पराजित होने के बाद से दिनों दिन आत्मशक्ति वृद्धि तथा सुदृढ़ कर रहे थे। इस समय(1595 ई0) राजा मान सिंह ने भौमिक दल को दमन करने के निमित्त बंग देश में आवागमन किया। उसने पहले ही सुवर्ण गाँव की राजधानी आक्रमण तथा अधिकार किया। ईशा खाँ तब एकडाला दुर्ग में थे। मान सिंह ने डेमरा नामक स्थान में छावनी करके अल्पकाल में ही

---

(1) मयमन सिंह का इतिहास –पंचम अध्याय 54–55 पृ0।

एकडाला दुर्ग अवरोध किया। ईशा खाँ ने इस स्थान में पराभूत होकर ऐगारसिन्धु दुर्ग में आश्रय ग्रहण किया।

मान सिंह ऐगारसिन्धु आक्रमण के लिए अग्रसर हुए तो ब्रह्मपुत्र के पश्चिम किनारे ईशा खाँ के सैन्य दल के सम्मुखीन होकर युद्ध आरम्भ किया। प्रथम दिन के युद्ध में मान सिंह के दामाद को निहत करके ईशा खाँ ने जय लाभ किया। द्वितीय दिवस को संध्या तक समान ढंग से युद्ध हुआ था। विजय लक्ष्मी का किसी पक्ष को भी कृपा नहीं किया। तृतीय दिवस के युद्ध में रण क्षेत्र में मान सिंह के हस्तस्थित तलवार भग्न होने से ईशा खाँ युद्ध में निरस्त होकर मान सिंह को अस्त्र ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया। वीर हृदय के उदारता वीर को मुग्ध करते हैं। ईशा खाँ के इस प्रकार सौजन्य तथा वीरोचित उदारता दर्शन से मान सिंह अतिशय आन्नदित हुए। वे युद्ध परित्याग करके ईशा खाँ के सहित सन्धि स्थापना तथा उसको लेकर दिल्ली गमन किये। सम्राट के दरबार में ईशा खाँ सादर गृहीत तथा ''मसनद आली'' उपाधि से भूषित हुए थे। वे बादशाह के सनद द्वारा बाइस परगना के अधिपत्य लाभ करके जंगलबाडी में प्रत्यावर्तन किये।(1)

ईशा खाँ के शासनकाल के पूर्व मयमन सिंह अंचल में कोच, हाजंग आदि जाति की प्रधानता थी। ईशा खाँ ने उन लोगों को दूरिभूत करके भद्र श्रेणी के नाना जातीय हिन्दु तथा मुसलमान लोगों के बसने योग्य स्थान की स्थापना की। तद्पश्चात जो इस अंचल में शासन कर रहे थे उनमें से वर्तमान नेत्रकोना के अन्तर्गत मदनपुर को मदनकोच, सदर महकूमा स्थित बोकाइनगर का बोका कोच एवं टांगाइल महकुमा स्थित कागमारि के होरराजा का नाम विशेष प्रसिद्ध था।

ईशा खाँ के शासन प्रतिष्ठा के पूर्व भावाल के विस्तीर्ण वन भूमि में गाजी वंश का अधिपत्य प्रबल था। ईशा खाँ के अभ्युत्थान के साथ साथ गाजी वंश

....

(1) कोई ऐतिहासिक यह स्वीकार नहीं करते। उनके मत के अनुसार ईशा खाँ ने किसी समय में सम्राट अकबर के दरबार में उपस्थित या सम्राट द्वारा उपाधि लाभ नहीं किया। अकबरनामा तृतीय खण्ड में ईशा खाँ के वश्यता स्वीकार तथा उपढ़ौकन प्रदान की कथा बार बार उल्लेख रहने पर भी बेवारिज साहेब वह आग्राहय कहा था **"(In Akbar Nama Voll-III) we are told more than once of his making submission and sending presents, but he was never really subdued, and his swamps and creeks enabled him to preserve his Independence as effectually as the Aravalli Hills protected Rana Pratap of Udaipur".**

(J.A.S.B. -1904, P. 61)

इस उक्ति पर निर्भर करके कोई कोई सोचते हैं कि ईशा खाँ ने कभी अकबर के वश्यता स्वीकार नहीं की। वे यह कहते है कि हमारे पूर्व कथित सराइल के ईशा खाँ भिन्न व्यक्ति थे। इसी प्रकार ऐतिहासिक वितर्क सर्वदा ही चल रहा है। तथा अतएव यह चलेगा।

निष्प्रभ तथा ईशा खाँ के अनुगत हो गये। ईशा खाँ के पतन के साथ साथ ही(ई0 सोलह शतक शेष भाग में) गाजी वंश लोग पुनः उपस्थित होकर पूर्वोक्त जंगल में दोनो तरफ हस्त गत किया था। उत्तर में कडईबाडी, दक्षिण भाग दशकाहनिया(सेरपुर), दक्षिण में भाबल बाजू ईशा खाँ के वंश के हस्तच्युत तथा गाजी वंश के हस्तगत हुए थे।

ईशा खाँ के परलोक गमन के बाद(1) कुछ काल में ही उनके अधिकृत भू–भाग क्षुद्र क्षुद्र जमींदारी में परिणत तथा अधिकांश मुसलमान लोगो के हाथ लगे। हयबत नगर तथा जंगजबाडी के प्रभृति स्थान में मसनद अली के वंशधर लोगों का प्रभुत्व स्थित था तथा अक्षुण्ण रहा था।

यह ईशा खाँ मसनद अली ने अमर सागर की खुदाई में एक सहस्र मजुर प्रदान द्वारा त्रिपुरेश्वर को सहायता किया था।

इस क्षेत्र में एक विषय आलोचना योग्य है। कोई कोई व्यक्ति बंगाल के द्वादश भौमिक के अन्तर्भूत खिजिरपुर के ईशा खाँ मसनद अली तथा सराइल में ईशा खाँ मसनद अली के अभिन्न व्यक्ति कहकर याद करते थे। यह बात पूर्व में कहा गया है। नाम तथा उपाधि की एकरूपता ने ही इस रुप को धारण किया यही मूलभूत कारण है। समस्त विषय में आलोचना करने से यह धारणा को पोषण किया नहीं जा सकता। इस विषय में राजमाला के वाक्य पूर्व ही प्रदान किये गये है। जिसमें श्री राजाबाबू के घर में रखे पुस्तक में मिलता है। –

सहस्र पदाति संगे ससज्ज कोरिया।	सहस्र पदाति संग ससज्ज करके।
ईछा खाँ मछलन्द अली दिछे पाठाइया।।	ईछा खाँ मछलन्द अली दिया भेज।।
– – – –	– – – –
सराईल भुलुआ दिछे हाजार हाजार।	सराईल भुलुआ दिये हजार हजार।
सकले दियाछे दाडि यतो जमिदार।।	सब ने दिया दाडि जितने जमिदार।।

प्राचीन राजमाला की उक्ति भी इसी प्रकार है। उसमें मिलेगें–

सहस्र परिमाण दाडि सुसज्य कोरिया।	सहस्र परिमाण दाडि सुसज्य करके।
ईछा खाँ मछलन्द अली दिछे पाठाइया।।	ईछा खाँ मछलन्द अली दिया भेज के।।
– – – –	– – – –
सराइल भुलुआए दिछे सहस्र सहस्र।	सराइल भुलुआ दिये सहस्र सहस्र।
आर यतो भौमिक दियाछे करि मिश्र।	और जितने भौमिक दिया करके मिश्र। ''

इस स्थल में ''ईशा खाँ मछलन्द अली'' खिजिरपुर के ईशा खाँ, सराईल के ईशा खाँ के नामोल्लेख ना होने पर भी ''सराईल'' शब्द द्वारा ही समझा जाता है। पूर्वोक्त ईशा खाँ सराईल के जमींदार एक ही व्यक्ति नहीं थे। नहीं तो ईशा खाँ के

---

(1) 1599 शक में ईशा खाँ के परलोक प्राप्त हुए थे।

नामोल्लेख के बाद पुनर्बार सराईल का नाम नहीं किया जाता। हमारे सम्पाद्य पुस्तक में उभय मसनद अली के अभिन्न ज्ञान में एक मात्र सराईल के नामोल्लेख किया गया है। यह जिस परिवर्तित काल के संसोधन का फल है। जो इसके पूर्व कहा गया है।

और भी देखा जाता है कि खिजिरपुर के ईशा खाँ ने बाइस परगना में अधिपत्य लाभ किया था। मयमन सिंह के इतिहास प्रणेता स्वर्गीय केदार नाथ मजूमदार(1) तथा मयमन सिंह के गीतिका सम्पादक श्रद्धेय सुहृद डाक्टर श्रीयुक्त राय दिनेश चन्द्र सेन बहादुर(2) ने उस बाईस परगना की तालिका प्रदान किये थे। उक्त उभय तालिका में स्थान के नाम के सम्बन्ध में कुछ अन्तर होने पर भी वह एक ही स्थान के नामान्तर मात्र हैं। जो किसी तालिका में भी सराईल नाम नहीं मिलता है। यदि खिजिरपुर के ईशा खाँ तथा सराईल के ईशा खाँ अभिन्न व्यक्ति होते, तब ये सब तालिका में सराईल का नाम अवश्य रहता। इसी कारण स्पष्ट समझा जाता है कि खिजिरपुर के ईशा खाँ जिसने बाईस परगना के प्रभुत्व लाभ किया था, सराईल उनसे बाहर था तथा भिन्न व्यक्ति के अधिकृत थे।

सराईल के जमींदार लोगों की वंश तालिका जहाँ तक मिली है। उसमें दीवान मजलिस गाजी का नाम सर्वप्रथम देखा गया है। खिजिरपुर के ईशा खाँ मसनद अली के वंश के पत्रिका में यह नाम नहीं है। यह भी देखा जाता है कि खिजिरपुर के ईशा खाँ के वंशधर लोग वर्तमान काल में हयवतनगर, जंगलबाडी तथा देवानबाग नामक स्थान में सगौरव से विद्यमान हैं तथा सराईल के ईशा खाँ के वंशधर तथा सराईल भी वर्तमान में है। परन्तु सराईल के जमींदार लोग पूर्वोत्त ईशा खाँ के वंशधर लोगों के सहित कुल सम्बन्ध नहीं रखते। यदि उभय स्थान के भूमि अधिकारी लोग के पूर्व पुरुष एक ही व्यक्ति होते तब परस्पर के बीच निश्चय ही ज्ञातित्व(कुल संम्बन्ध) स्थिर रहता।

खिजिरपुर के ईशा खाँ ने सम्राट अकबर से तथा सराईल के ईशा खाँ ने त्रिपुरेश्वर अमरमाणिक्य से लेकर ''मसनद अली'' उपाधि लाभ किया था। इतिहास में यही मिलता है। खिजिरपुर के मसनद अली वंशधर लोगों के निकट सम्राट प्रदत्त उपाधि सनद ना मिलने के कारण कोई कोई सोचते है कि वे महाराज अमरमाणिक से उपाधि पाये थे तथा इस सूत्र से उभय ईशा खाँ अभिन्न कहकर सोचे जाते हैं। परन्तु अमरमाणिक के प्रदत्त उपाधि के सनद का भी सनद अनुसंधान नहीं मिल रहा है। इस रुप अवस्था में सम्राट अकबर प्रदत्त सनद के अस्तित्व को अस्वीकार

....

(1) मयमन सिंह का इतिहास– 5 अध्याय 57 पृष्ठ।
(2) मयमन सिंह गीतिका– 2य खण्ड 2य संख्या।

किया था। उभय ईशा खाँ को अभिन्न सोचना संगत कहना नहीं सोचा जा सकता। ईशा खाँ को सम्राट से नसरत साहिर के अधिकार मिलने का जो सनद मिला, वर्तमान काल में इसका अस्तित्व नहीं है।(1) इस रुप स्थान से सनद उपाधि मिलने की आशा नहीं की जा सकती। समान रुप से आलोचना करने पर उभय ईशा खाँ के मध्य प्रभाव का बहुत पार्थक्य परिलक्षित होगें। अतएव ये लोग जो स्वतन्त्र व्यक्ति थे, इसका निर्धारण करना कोई कष्टसाध्य नहीं है।

बंग्ला देश तथा असम प्रदेश के प्रधान व्यक्ति वृन्द के सहायता से जो अमर सागर खनित हुआ था पूर्व उक्त विवरण में आलोचना करने पर वह जाना जा सकता है। वर्तमान ढाका, बाखर गंज, मयमन सिंह, श्रीहट्ट, त्रिपुरा, नौवाखाली तथा कछाड आदि जिला के तद् समकालीन प्रधान व्यक्ति लोग सभी ने इस काम में महाराजा अमरमाणिक्य को सहायता दान किया था। पहले कहा गया है। –अमर सागर खनन के विषय में राजसूय यज्ञ कहना अत्युक्ति नहीं होगा। इतने सब राजा तथा जमींदार को जो मजदूर प्रदान करने के लिए बाध्य किये थे, वे असाधारण प्रभावशाली थे, ये अति सहज ही जान पडता है। परन्तु ये लोग सभी अमरमाणिक के अनुगत या करदाता थे, ऐसा नहीं है। किसी ने आनुगत्य के लिए, किसी ने प्रीति रक्षा के लिए तथा किसी ने भय प्रयुक्त के लिए सहायता प्रदान की थी जो राजमाला में मिलता है–

केहो भोये केहो प्रीते केहो मान्ये दिलो।	कोई भय कोई प्रीति कोई मान्य वश।
बारो बांगालाय दिछे तरपे ना दिलो।।	बारह बंगला दिया, तरप न दिया बस।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 4पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 4पृ

तरप, वर्तमान काल के श्रीहट्ट जिला के एक परगना में स्थापित है। पहले यह त्रिपुरेश्वर के अधिनस्थ एक खण्ड राज्य में परिगणित था। अमरमाणिक के पूर्व से ही तरप प्रदेश मुसलमान शासन के कुक्षिगत होकर रहने पर भी तरप के जमींदार गण साक्षात सम्बन्ध में त्रिपुरेश्वर के प्रभाव तथा अधिपत्य स्वीकार करते थे। परन्तु अमर सागर खनन काल में इस जमींदारी ने मजदूर प्रदान नहीं किये थे। अमरमाणिक ने तरप के जमींदार के इस अबाध्यता को उपयुक्त प्रतिफल प्रदान किया था। तद्विवरण बाद में प्रदान किया जायेगा।

....

(1) मयमन सिंह के इतिहास में मिलता है– ''सम्राट कुलतिलक अकबर शाह, मयमन सिंह के अन्तर्गत जंगलबाडी के देवान ईशा खाँ को जो सनद द्वारा ''नछरत्साहिर'' अधिपत्य प्रदान किया था, वह भी सुसंग के राजा लोगों के प्राप्त बादशाही दलिल आदि की आलोचना करने पर देखा गया है कि वर्तमान मयमन सिंह जिला तथा ढाका और पार्श्ववर्ती अन्यान्य जिला के अंश, तत्काल नछरत्साही के अन्तर्गत थे।

मयमन सिंह के इतिहास–4था अध्याय 44 पृष्ठ

इस वाक्य के आलोचना से माना जाता है कि केदारनाथबाबू ने ईशा खाँ के प्राप्त नछरत्साहिर सनन्द की आलोचना किया था।

उक्त विशाल–वापी(अमर सागर) उदयपुर नगरी के हृदय को अंलकृत करके यद्यपि महाराज अमरमाणिक की कीर्ति की घोषणा करते हैं। इसका दीर्घ 1228 गज तथा प्रस्थ 302 गज है। गर्भ 12 द्रोण 1 कानि 3 गन्डा भूमि पतित हुआ है। इस सरोवर के दीर्घ की तुलना में प्रस्त की परिसर कम इसी कारण यह देखने में अस्वाभाविक लम्बा जैसा प्रतीत होता है। यह जलाशय अभी भी बहुत गहरा है। तीन साल में इसकी खुदाई काम शेष की गई।(1)

अमरपुर में महाराज अमरमाणिक के द्वारा खुदाई की गई और एक ''अमर सागर'' है। यह उदयपुर में स्थित सरोवर के परिवर्ती काल में प्रतिष्ठित किया गया तथा पूर्वोक्त राजा और जमींदारों के सहित इस सरोवर के खनन कार्य के किसी भी रुप सम्मिलित है यह नहीं मिलता है।

वाराही विग्रह

राजा विश्वम्भर शूर द्वारा भूलुआ में वाराही विग्रह के प्रतिष्ठा के विषय में पूर्व ही उल्लेख किया गया है। इस विग्रह सम्बन्धी कुछ बातें कहना आवश्यक है।

अनेकों के मतानुसार बौद्ध सम्प्रदाय के मारिची(मारजयी) तथा हिन्दु तांत्रिक गण वाराही विग्रह से अभिन्न थे। बौद्ध तथा हिन्दु तांत्रिक गण एक मूर्ति के अपने अपने उपास्यदेव देवी के रुप में ग्रहण करने के निमित्त व्यस्त हुए थे। उभय सम्प्रदाय द्वारा किसी मूर्ति को एक ही नाम तथा किसी मूर्ति को विभिन्न नाम से अभिहित किया गया। इस समय तांत्रिक गण जिस मूर्ति को 'वाराही' नाम से ग्रहण किये थे, बौद्ध गण उसी को 'मारिची' आख्या प्रदान किये थे। अनेक स्थान में उभय मूर्ति के अवयव एकता दर्शन की यह बात असत्य कहना प्रतीत नहीं होता। परन्तु किसी किसी स्थल में अवयव विषय के थोडा सा पार्थक्य परिलक्षित होता है। बौद्ध लोगों ने मारिची मूर्ति को चतुर्भुजा, षडभुजा तथा अष्ट भुजा के रुप में ग्रहण किया था। तांत्रिक सम्प्रदाय के वाराही, सर्वत्र ही अष्ट भुजा देखा गया।(2)

देवी पुराण में वाराही का उल्लेख मिलता है। इस ग्रन्थ के मत से वाराही देवी मातृका या योगिनी विशेष, उक्त पुराण में देवी निरुक्ताध्याय उक्त हुआ है–

''बराह रुपधारी च वरोहपम उच्यते।
वाराह जननी चाथ वाराही वरवाहना।। ''

....

(1)

पनेरो श शके अमरसागर आरंभन।	पनरह सौ शक में शुरू अमरसागर खनन।
तीन वर्षे सागर खना होइलो समापन।।	तीन साल में हुआ अमर सागर समापन।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 14पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 14पृ

(2) एक ही मन्दिर में हिन्दु तथा बौद्ध लोगों के उपास्य विग्रह स्थापित रहने के निदर्शन विरल नहीं थे। जशोहर/खुलना का इतिहास अष्टम परिच्छेद, 198 पृष्ठ में दृष्टव्य है।

तृतीय लहर 136

अन्यत्र मिलता है—

"दुर्गा चण्डेश्वरी चण्डी वाराही कार्तिकी तथा।
हरसिद्धा तथा काली इन्द्रानी वैष्णवी तथा।।
भद्रकाली विशालाक्षी भैरवी कामरुपिनी।
एताः शर्वाश्च योगिन्यो भृंगारै स्नापयन्तुते।। "

मार्कण्डेय चण्डी के मत में वाराही, वारह देव के शक्तिरुपिणी। यथा।

"यज्ञावाराहमतूलं रुपं या विभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याय्यो तत्र वाराहीं विभ्रती तनूम्।। "

वृहनन्दिकेश्वर पुराणोक्त दुर्गा पूजा पद्धति में लिखा गया है—

"वाराहरुपिनिं देवीं दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धराम्।
शुभदां सुप्रभां शुभ्रां वाराहीं तां नमाम्यहम्।। "

पुराण व्यतीत तन्त्र में भी वाराही देवी का उल्लेख है। तन्त्र शास्त्र के अनुसार सती दक्ष यज्ञ में देह रक्षा करने के बाद, उनकी निम्न जबडे के दाँत पंच सागर में पतित होने से उस स्थान में महा रुद्र भैरव तथा देवी वाराही विराज कर रहे हैं। तन्त्र चूडामणि, शिवपार्वती संवाद में 51 विद्योत्पति में मिलते हैं—

"अधोदन्ते महारुद्रो वाराही पंच सागरे।। "

अब देखा जा रहा है कि हिन्दु लोगों के वाराही देवी पुराण तथा तन्त्र उभय ही शास्त्र के मत सिद्ध हैं। पौराणिक युग से ही हिन्दु समाज में वाराही की अर्चना प्रवर्तित होकर प्रतिपन्न हुआ है। तांत्रिक युग में इस पूजा का बहुत प्रचार हुआ था।

भुलुआ के अष्ट भुजा वाराही मूर्ति, एक खण्ड उत्कृष्ट—पत्थर को काटकर निर्माण किया गया इसमें कला की चतुरता काफी है। मूर्ति की गम्भीरता, प्रसन्न भाव तथा अंग सौष्ठवादि दर्शन करने पर शिल्पी की कला निपुणता का काफी परिचय मिलता है। इसमें मागधी शिल्पी के पुरुष भाव की द्योतना है। किन्तु यह गोडीय प्रणाली में निर्मित है। मूर्ति अल्हण भाव के युद्ध भेष में दण्डायमान है। शिल्पी, जो बौद्ध मतावलम्बी थे, मूर्ति के हर दृष्टिपात मात्र में ही वह हृदयंगम होता है। इस मूर्ति के पाद तथा पीठस्थ में कमल है। ध्यानी बुद्ध के निम्नस्थ कमल के अनुरुप चलचित्र में पाँच ध्यानी बुद्ध की मूर्ति उत्कीर्ण है। यह विग्रह राजा विश्वम्भर द्वारा भुलुआ में जिस अवस्था में स्थापित किया गया था जो पहले ही कहा गया था।

किसी काल में वाराही या मारिची मूर्ति अर्चना के बाहुल्य प्रचार हेतू नाना प्रदेश से उक्त मूर्ति आविष्कार हो रहे हैं। कलकत्ता में स्थित गवर्नमेन्ट चित्राशालय में 3618, 3820 और 6260 नम्बर में तीन मारिची मूर्ति रखी गई है।

यह 800—1200 ई में निर्मित तथा मागधी शिल्पी द्वारा, कहकर निर्माणित किया गया है। वरेन्द्र अनुसंधान समिति के कृपा से इस श्रेणी की एक मूर्ति अविष्कृत होने से वह रामपुर वोयालीया के चित्रशाला में रखा गया है। भुलुआ की मूर्ति के इस मूर्ति के बिलकुल सादृश्य परिलक्षित होता है।(1) पाल वंशीय प्रथम भूपति गोपाल मारिची के उपासक थे।(2) विक्रमपुर स्थित कुकुटिया और पंडितसार गाँव में कतिपय मारिची मूर्ति मिली। उसमें कुकुटिया से प्राप्त मूर्ति भुलुआ मूर्ति के सम्यक अनुरुप(3) इन सब मूर्ति के अवयव अक्षुण्ण हैं भुलुआ मूर्ति के अर्द्धभाग में कुछ अंश खण्डित है। प्रवाद वाक्य के द्वारा जाना जाता है कि काला पहाड के कर स्पर्श से मूर्ति की यह अवस्था घटी।

भुलुआ वाराही मूर्ति की पुजारी द्वारा परम्परागत निम्नोक्त ध्यान मंत्र से पूजा की जाती हैं।

"उँ वाराही अष्टभुजां त्रिनेत्रां वरदायिकां।
पाशांकुश धनुर्वानां मध्ये श्रीवदनाम्बुजां।।
दक्षकर्णे मूखं दोर्गं वामकर्णे वराहकं।
वराह वाहिनीमाद्यां सर्वकामार्थ सिद्धये।।"

यह ध्यान मंत्र विशुद्ध होना प्रतीत नहीं होता है। देवी का बीज मन्त्र "ह्रीं" आवरण देवता महारुद्र— भैरव, दुर्गा, वाराहगण, उमा, महेश्वर तथा सह—वाहन प्रतिमास्थ देवता वृन्द। इससे अधिक विवरण इस स्थल में प्रदान करने की सुविधा नहीं घटी।

बौद्धगण निम्नोद्धृत ध्यान मन्त्र में मारिची की अर्चना करते थे—

"हेमाभा शूकरारुढां तप्त कांचन भासुरां।
नील योर्द्धस्थितां(चैव) चन्द्राम्भोरुऽसंस्थितां।।
अशोक वृक्ष शाखाग्र विलझां वाम पाणिना।
विभ्रति वरदाकारं दक्षिण करपल्लवां।।
दीप्त रत्नोपशोभेन मौलिना बुद्ध शेखरा।
श्वेत वस्त्रांग नमस्यामि मारीचीं अभय प्रदां।। "

साधन माला

यह मूर्ति बौद्ध गण से हिन्दु ग्रहण करने की अपेक्षा, बौद्ध गण हिन्दु से लेने की संभावना से अधिक कहना ही सोचा गया है। बाद में बौद्ध शिल्पी द्वारा मूर्ति

---

(1) साहित्य —कार्तिक, 1319 सन। इसमें मूर्ति को विवरण तथा प्रतिकृति प्रदान किया गया है।

(2) **Indian Antiquary – Vol IV, Page- 364**

(3) ढाका का इतिहास— 2य खण्ड, 13वां अः, 497 पृष्ठ द्रष्टव्य

किस परिमाण में रुपान्तरित हुआ है तथा हिन्दु गणों ने भी निरापत्ति से वह मूर्ति ग्रहण और अर्चना किया। सम्यक अवस्था में पर्यालोचना करने से स्वतः ही हृदय में यह रुप धारण हो जाता है।

भुलुआ विजय

महाराज अमरमाणिक के अमर सागर को खनन करने में हस्तक्षेप उनके राजत्व का प्रथम कार्य है इसके पूर्व ही कहा गया है। यह कार्य आरम्भ होने के साथ ही साथ उनकी दृष्टि भुलुआ राज्य के प्रति गिरी।

भुलुआ के राजवंश त्रिपुरा राज्य के अधीन थे। परन्तु परिवर्तित काल में इसका आनुगत्य उल्लंघन करके त्रिपुरा के साथ प्रतियोगिता रक्षा करने के निमित्त सर्वदा उन लोगों को कोशिश में देखा गया। भुलुआपति उदयमाणिक्य(राजा विश्वम्भर शूर से लेकर अधस्तन सप्तम् स्थान) के त्रिपुरेश्वर गण के अनुकरण ने 'माणिक्य' उपाधि ग्रहण किया। तद्विधि इनके हृदय में प्रतिद्वन्द्विता का भाव पोषित होने लगा। इसके बाद केवल उपाधि का अनुकरण करके उनकी परितृप्तता नहीं हो सकी। त्रिपुरेश्वर गण के नाम के अनुकरण से सन्तान गण के नामकरण करने की प्रथा इस परिवार में अनेक काल चली थी।

विजय माणिक के शासनकाल तक भुलुआ के राजा द्वारा त्रिपुरेश्वर को कर प्रदान करने का एक आभास मिलता है।(1) तद्परिवर्ती काल में कर देते थे कि नहीं यह जानने का कोई उपाय नहीं है। परन्तु प्रतिवर्ष त्रिपुरा के पुण्य उत्सव काल में राजा को नजर प्रदान करने में भुलुआपति बाध्य होते थे। उनका नजर ही सर्व जगह ग्रहण किया जाता है अतएव त्रिपुरेश्वर गण के राज्याभिषेक काल में भुलुआपति गण उनके माथे पर राज टीका लगा देते थे। इन सब कार्य द्वारा समझा जाता है कि त्रिपुरा के सामन्त श्रेणी के मध्य भुलुआ राज्य सर्वोच्च आसन लाभ किये हुए थे।

महाराज धन्यमाणिक के शासनकाल तक भुलुआ राजगण त्रिपुरा के अबाध्यता के सूचक ऐसा कोई कार्य प्रकाश नहीं होता। धन्यमाणिक के पुत्र देवमाणिक कम बुद्धि तथा अन्धविश्वासी थे। अविचलित विश्वास ही राज्य के अवनति तथा राजा के मृत्यु का मूलभूत कारण था। इनके शासनकाल में भुलुआ राज्य ने ही प्रथम शिरोत्तोलन किया। तत्काल देवमाणिक ने भुलुआपति को दमन करके समुद्र के उपकुल तक अधिकार किया था। इस समय भुलुआ राजा कौन थे,

....

(1) भुलुआ के राजा ने त्रिपुरेश्वर के अमर माणिक्य को लिखा था।

विजय माणिक्य राजार जमिदार आमि।	विजय माणिक्य राजा के जमींदार हैं हम।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 12पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 12प

तृतीय लहर 139

बहुत कोशिश के बाद भी निर्धारण नहीं किया जा सका। भुलुआ राज गण के समय निर्धारण उपयोगी किसी भी रुप से निर्भर योग्य प्रमाण नहीं मिल रहा है।

बाद में उदयमाणिक्य के राज्याभिषेक काल में भुलुआ के राजा टीका प्रदान करने में असहमत हुए। उदयमाणिक्य पूर्व से ही सेनापति थे। अपने जामाई अनन्त माणिक्य का वध करके उन्होने त्रिपुरा का सिंहासन अधिकार किया। इन्होने धर्मविगर्हित कार्य द्वारा राज्य लाभ किया यह सत्य परन्तु अयोग्य तथा चरित्रहीनता हेतु राज्य को बहुत अनिष्ट किया। उनके समय में चटगाँव का आधिपत्य, मुसलमानों के हस्तगत हुए। उदयमाणिक्य राजवंशीय नहीं थे। इसलिए चिरवश्य भुलुआ राजा ने इसको अग्राहय किये थे। इस सम्बन्ध में राजमाला में लिखा गया है–

दुर्लभ नारायण नाम सुर जमींदार।	दुर्लभ नारायण नाम सुर जमिंदार।
नृप मान्ये बोसे से जे भुलूया माझार।।	नृप सम बन बैठा भुलूया दरबार।।
पूर्व पुरूष तार त्रिपुर संगे मिले।	पूर्व पुरूष थे उसके त्रिपुर राज साथ।
सेइ नाहि मिले उदय माणिक्य राज्यकाले।।	वही नहीं मिला कभी उदय माणिक्य राज।।
उदय माणिक्य होइलो राजबंश बधि।	उदय माणिक्य हुआ नृप, कर वध राजवंश।
दुर्लभ नारायण नामिलिलो अहंकारबादी।।	दुर्लभ नारायण नहीं मिला अहंकार वश।।
राजवंश मारिया तुमि उदय माणिक्य।	राजवंश वध कर तुम उदय माणिक्य।
आमिओ भुलूया राजा तुमि समकक्ष।।	मै भी भुलूया राज हूँ तब समकक्ष।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 11पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 11प

छत्र माणिक्य के वंशधर गण के हाथ रक्षित राजमाला के पाठ अन्य रुप जो मिलता है–

"दुर्ल्लभ नारायण शूर भुलुआ जमींदार।	दुर्ल्लभ नारायण शूर भुलुआ जमींदार।
राजार समान से जे तेमत संसार।।	राजा के समान वे जो वैसे ही संसार।।
प्रति पुरुष तारा त्रिपुरेते मिले।।	प्रति पुरुष जो त्रिपुरा में मिले।।
एहार पूर्वे अमरमाणिक्येकेते ना मिले।।	इससे पहले अमरमाणिक्य से मिला नहीं।।
उदयमाणिक्य राजा छिलो सेनापति।	उदयमाणिक्य राजा थे सेनापति।
सेई हेतू न मिलिलो भुलुआर पति।।	उस हेतू न मिले भुलुआ के पति।।
उदयमाणिक्य राजा पाठाइलो लिखन।	उदयमाणिक्य राजा भेजे लेखन।
ताहाके उत्तर लिखे दुर्ल्लभ नारायण।।	उसको उत्तर लिखे दुर्ल्लभ नारायण।।
सेनापति राजा होइछो उदयमाणिक्य।	सेनापति राजा हुए उदयमाणिक्य।
दुर्ल्लभ माणिक्य आमि तोमा समकक्ष।।	दुर्ल्लभ माणिक्य हम तुम्हारे समकक्ष।।
इहा सुनि उदयमाणिक्य क्राधे ज्वले।	यह सुन उदयमाणिक्य क्रोध से जले।
करिते ना पारे किछु युझे गौड बोले।।	करने न पाये कुछ समझे गौड कहकर।।
अमर माणिक्य खण्ड	अमर माणिक्य खण्ड

तृतीय लहर 140

भुलुआ राजा के व्यवहार से उदयमाणिक्य क्रोधित हुए परन्तु वे दुर्बल हाथ से राजदण्ड धारण किये हुए थे, भुलुआ राजा गौड से सहायता लाभ किये हुए थे, जानकर भयभीत नाटकीय भाव से चुपचाप यह गुरु अवज्ञा को सहन किया।

अमर माणिक्य के राज्य काल में पुनर्बार वही कलह उपस्थित हुआ। इस समय भुलुआ के अधिपति ने मजूर प्रदान कर अमर सागर को खनन कार्य में सहायता करके भी त्रिपुरा के साथ स्वतन्त्र रक्षा के प्रयासी हुए। अमर माणिक्य सेनापति के पद में नियुक्त रहते समय ही भुलुआ के विरुद्ध प्रदर्शन से क्रोधित थे। राजलाभ करके भी तद्रुप व्यवहार मिलने पर उनका क्रोधवेग प्रज्वलित हो उठा। भुलुआ राजा ने त्रिपुरेश्वर का अनुकरण कर "माणिक्य" उपाधि धारण किया। महाराजा अमर को यह सहन नहीं हुआ। यह उपाधि त्याग करने के निमित्त उन्होने भुलुआ राजा के प्रति आदेशलिपि भेज दिया। परन्तु भुलुआ अधीश्वर ये ग्राहय नहीं किया। उन्होने इसके उत्तर में कहा– "आपके राजा होने के पूर्व से ही हम "माणिक्य" उपाधि धारण करते आ रहे हैं। हम महाराजा विजय माणिक्य के जमींदार हैं तथा आप हैं उनके सेनापति अर्थात आपका इस रुप गुस्सा करना शोभा नहीं पाता– अतएव इस विषय में राजमाला के वाक्य इस स्थल में उद्धृत किया गया है।

अमर माणिक्य राजा जखोने होइलो।	अमर माणिक्य हुआ राजा जब।
दुर्लभ नारायण प्रति नृपति लिखिलो।।	दुर्लभ नारायण को लिखा पत्र तब।।
अहंकारे पूर्ण से जे भुलूया माझार।	अहंकर वश वह बैठा भुलूया दरबार।
नृपतिर पत्र उत्तर लिखे पुनर्बार।।	नृपति पत्रोतर वह लिखा पुर्नवार।।
विजय माणिक्य राजार जमिदार आमि।	विजय माणिक्य राजा के जमींदार हैं हम।
से राजार बड़ुआ होइया राजा होइला तुमि।।	उस राजा का बडूया होकर अब राजा बने हो तुम।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 11–12पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 11–12पृ

क्षत्रमाणिक्य के वंशधरगण गृह में रक्षित पूथि की भाषा अधिकतर साफ है, जो यह है–

पोरे यदि अमर माणिक्य राजा होइलो।	बाद में यदि अमर माणिक्य राजा हुए।
माणिक्य ना लिखो नाम ताहाते लिखिलो।।	माणिक्य ना लिखे नाम उसको लिखा।।
ना मानिलो आज्ञा से जे मत्तमान हय।	ना माने आज्ञा वो मत्तमान है।
तुमि ना होइते राजा मोर नाम होय।।	तुम ना हुए राजा, मेरा नाम हुआ।।
विजयमाणिक्य राजार जमींदार आमि।	विजयमाणिक्य राजा के जमींदार हम।
ताहान बड़ुआ लोक आछिला आपनि।।	तभी बड़ुआ लोक आये अपने।।
आपने होइछो राजा बड़ुआ तनय।	आप हुए राजा बड़ुआ के पुत्र।
एहाते आतंग(2) कर किवा अतिशय।।	इससे गुस्सा(2) कर क्या अतिशय।।

अमर माणिक्य खण्ड।

---

(1) बडूया– सेनापति की उपाधि (2) आंतग– आस्फालन / गुस्सा

तृतीय लहर 141

इस स्थल में एक कठिन समस्या खडी हुई। राजमाला के रचियता उदयमाणिक्य तथा अमर माणिक्य के प्रतिद्वन्द्वी भुलुआ राजा का नाम "दुर्ल्लभ नारायण राय या दुर्ल्लभ माणिक्य" नाम लिखा है। भुलुआ राजवंश में दुर्ल्लभ नारायण के नाम का अस्तित्व नहीं मिलता। अर्थात दूसरे नामधेय राजा को दुर्ल्लभनारायण नाम से अभिहित किया गया है। अवस्थानुसार यही समझा जाता है। राजमाला के उक्ति द्वारा यह अनुमान सत्यता उपलब्ध होगा। जिसमे यह मिलेगा–

भुलूआ जये राजा बाकलाते गेलो।	बाकला गए नृप पश्चात भुलूआ विजय के।
कन्दर्प राय जमींदार बाकलाय बोधिलो।।	प्राण लिए बाकला के जमींदार कन्दर्प राय के।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 13पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 13पृ

यह लिपि नितान्त ही अस्पष्ट है। किसको वध किया यह ही समझा नहीं जा रहा है। प्राचीन राजमाला में लिखा है।

"दुर्ल्लभमाणिक्य तब बाकला में गये।
कन्दर्प राय जमींदार ने उनको वध किये।। "

राजबाबू के घर में रक्षित पूथि के भाषा के सहित प्राचीन राजमाला को भाषा विशेष एकता परिलक्षित हुआ है। जिसमे मिलता है–

"दुर्ल्लभमाणिक्य तब बाकला में गये।
कर्न्दप राय जमींदार उसको मारे।। "

इन समस्त वाक्य द्वारा मिलता है कि बाकला चन्द्रद्वीप के अधिपति द्वारा भुलुआ के जो राजा मारे गये थे, राजमालाकार ने उसी को"दुर्ल्लभमाणिक्य" नाम से अभिहित किया हैं। इसी बीच भुलुआ के पूर्व विवरण से जाना गया है कि भुलुआ अधीश्वर लक्ष्मणमाणिक्य को चन्द्रद्वीप के राजा ने वध किया था अर्थात भुलुआपति लक्ष्मणमाणिक्य को राजमालाकार ने "दुर्ल्लभमाणिक्य" नाम प्रदान किया है। इसका सुस्पष्ट प्रमाण मिल रहा है। इस प्रकार के नाम विभ्राट के कारण निर्देश करने के लिए लगता है– लक्ष्मणमाणिक्य को नामान्तर दुर्ल्लभमाणिक्य था। वर्तमान काल में वह नाम विस्मृत गर्भ में विलीन हुए अथवा राजमाला रचियता के अनभिज्ञता हेतू लक्ष्मणमाणिक्य स्थल में दुर्ल्लभनारायण नाम लिखा गया है। इस नाम के विषम कारण जो भी हो लक्ष्मणमाणिक्य ही ने दुर्ल्लभमाणिक्य नाम लाभ किया था। यह स्थिर ही निश्चय है। लक्ष्मणमाणिक्य वीर पुरुष विपुल शक्ति सम्पन्न थे। उस समय त्रिपुरेश्वर की उपेक्षा करना तथा उसके न्याय वीरशाली व्यक्ति के लिए ही सम्भव था।

और एक बात भी इस स्थान में उल्लेख योग्य है। राजमाला के मतानुसार चन्द्रद्वीप के राजा कन्दर्प राय ने भुलुआ राजा का वध किया था। यह उक्ति भी प्रमाद पूर्ण है।

कन्दर्प राय के परलोक गमन के बाद, उनके पुत्र राजा रामचन्द्र द्वारा भुलुआ राजा निहत हुए थे। सम्भवतः राजमाला के लेखक को यह विवरण नहीं पता था इसलिए भुलुआ राजा के हत्याकारी का नाम 'कन्दर्प राय' निर्देश किया गया है।

भुलुआ के कौन से राजा के साथ अमर माणिक्य का संघर्ष हुआ था। यह निर्धारण करना और एक कठिन समस्या है। राजमाला के मतानुसार अमर के प्रतिद्वन्द्वी भुलुआ राजा का नाम दुर्ल्लभ माणिक्य था। राजमाला के निर्धारित नाम प्रमादमूलक है, यह पूर्व में ही कहा गया है। यह भुलुआधीश्वर लक्ष्मणमाणिक्य का नामान्तर है। ऐसा समझा जाता है। लक्ष्मणमाणिक्य को ही राजमालाकार ने दुर्ल्लभमाणिक्य के नाम से अभिहित किया है। इस विषय के विशिष्ट प्रमाण पूर्व में ही कहे गये है। अर्थात राजमाला के मतानुसार लक्ष्मणमाणिक्य के साथ महाराजा अमर माणिक्य को युद्ध हुआ था। राजमाला के संग्राहक स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय लक्ष्मण के पुत्र राजा बलराम राय को महाराजा अमर के प्रतिद्वन्द्वी निर्णित किये गये।(1) श्रद्धेय सृहृद श्रीयुक्त महिमचन्द्र चक्रवर्ती विद्याभूषण महाशय ने हम लोगों को जो विवरण प्रदान किया है, उसमें अमर माणिक्य के प्रतिपक्ष योद्धा के नाम बलराम राय लिखा गया है। इन लोगो ने अपने अपने मत के परिपोषक प्रमाण प्रदान नहीं दिये। अतएव यह मत इतिहास द्वारा समर्थित नहीं हुए। अर्थात यह वितर्कित ही रहा है।

इसी पूर्व बाकला चन्द्रद्वीप के विवरण की आलोचना के उपलक्ष में यह देखा गया है कि चन्द्रद्वीप के राजा कन्दर्प नारायण राय ने 1584 ई0 अब्द से 1598 ई0 तक राजत्व किया था।(2) कन्र्दप नारायण के परलोक गमन के बाद उनके पुत्र राजारामचन्द्र का राज्यरोहण किया गया। यही रामचन्द्र कर्तृक भुलुआ के द्वारा राजा लक्ष्मणमाणिक्य मारे गये। अर्थात चन्द्रद्वीपाधीश्वर कन्र्दप नारायण के बाद में भी(1598 ई0 अब्द के बाद) लक्ष्मणमाणिक्य कुछ दिन जीवित थे यही प्रमाणित होता है। पक्षान्तर में, त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के राजत्वकाल में 1499 शक से 1508 शक तक(1577 से 1586 ई0), मुद्रा प्रमाण द्वारा निर्णित हुआ है(3) अर्थात वे भुलुआ राजा बलराम राज तक काल में वर्तमान नहीं थे। तथा उनके साथ राजा बलराम के संग्राम होना सम्भव नहीं, यह स्पष्ट तरीके से प्रमाणित होता है। भुलुआ के युद्ध में लक्ष्मणमाणिक्य ही महाराज अमर के प्रतिपक्ष थे सम्यक अवस्था आलोचना करने से ही यही हृदयंगम होता है।

---

(1) कैलाश बाबू के राजमाला –4 भाग 1म अः 399 पृष्ठ।

(2) इस लहर के 103 पृष्ठ दृष्टव्य है। यशोहर खुलना के इतिहास प्रणेता के मत में कन्दर्प नारायण 1596 ई0 अब्द में परलोक प्राप्त किये।

(3) ''राजगण के काल निर्णय'' शीर्षक आलोचना में अमर माणिक्य का राजत्वकाल युक्ति तथा प्रमाण द्वारा निर्धारित हुआ है। तत्द्वारा इतने दिवस में सम्यक विवरण जाना जायेगा।

तृतीय लहर 143

यह युद्ध 1500 शक(1578 ई0) को संगठित हुआ था।(1) भुलुआ राज के अवज्ञासूचक व्यवहार से क्रोधित होकर महाराज अमर, छत्तीस हजार सैन्य सह स्वयं युद्ध यात्रा की थी। उजीर सिंहसरब नारायण(सर्वनारायण सिंह) सेनापति क्षत्रजीत नाजिर, राजपूत राजबल्लभ नारायण तथा दुर्लभ नारायण सेनापति राजा के सहयात्री हुए थे।

भुलुआराज लक्ष्मणमाणिक्य(राजमाला के मतानुसार दुर्ल्लभराय) तीन शत पठान जातीय अश्वारोही तथा बहुसंख्यक पैदल चलने वाले सैनिक लेकर युद्ध क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। परन्तु त्रिपुर सैन्य के आक्रमण वेग अधिक काल तक सहन करने में समर्थ नहीं हुए। लक्ष्मणमाणिक्य ने दुर्बल हाथ से तलवार धारण नहीं की थी। उनके विक्रम से मुसलमान मघ तथा फिरिंगी सभी शक्ति त्रस्त थे। उस काल में प्रबल शक्ति के प्रतिद्वन्द्वीता साधन तथा सामान्य पराक्रम या अल्प साहस के परिचायक नहीं थे। परन्तु इस युद्ध में वे पृष्ठ प्रदर्शन करने में बाध्य हुए। उसके सैन्य दल क्षेत्र भंग होकर भाग गये। भुलुआ के अनुगत तथा आश्रित कोई ब्राह्मण राजा के हस्ती चन्द के युद्ध क्षेत्र में उपस्थित थे। त्रिपुरा सैन्य गण ने भुलुआ राजज्ञान में उसका वध किया, इस दुर्घटना से महाराज अमर मर्माहत हुए। ब्रह्म वध जानकर पाप से क्षति होने के कारण प्रायश्चित किया था। युद्ध में मारे गये ब्राह्मण के नाम तथा परिचय बाद में दिया जायेगा।

भुलुआ विजय के बाद लुन्ठन शुरु हुआ। नगरवासी गण धन सम्पत्ति खोकर भी निष्कृति लाभ नहीं कर पाये। गाय, भैंस तथा मनुष्य तक लूटकर नाम मात्र मूल्य में विक्रय हुआ। जो राजमाला में मिलता है–

भुलूआ जये राजा बाकलाते गेलो।	बाकला गए नृप पश्चात भुलूआ विजय के।
कन्दर्प राय जमींदार बाकलाय बोधिलो।।	प्राण लिए बाकला के जमींदार कन्दर्प राय के।।
तथाये महाराजा हरिष होइया।	महाराजा को वहाँ पर हर्ष हुआ अगाध।
लूठिलो बाकला राज्य ससैन्य साजिया।।	लूटा बाकला को सजी सेना के साथ।।
गो, मोहिष, मनुष्य कोतो बहु लूठा गेलो।	गाय, भैंस, मनुष्य को भी लूटा जी जान से।
एइ सब बिक्रयेते राजा आदेशिलो।।	बेचने उन्हे राजाज्ञा हुई बड़ी शान से।।
गो मुल्य चारि पण छाग दुई पण।	गाय का चार पण, बकरी के दो पण।
मनुष्येर मुल्य होइलो एक एक काहण।।	मनुष्य का मूल्य हुआ एक एक काहण
श्रीहट्टेर सैन्य जतो संगे गियाछिलो।	श्रीहट्ट से साथ गए जो जत्था था सेना का
लूठेर मनुष्य निते नृपे आदेशिलो।।	लूटे हुए लोगों को राजाज्ञा हुई ले जाने का।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 13पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 13पृ

---

(1)

चौद्द श उनशत शके अमरदेब राजा।	चौदह सौ निन्यानवे शक अमरदेव राजा।
पनर श शके भुलूया आमल कोरे महातेजा।।	पंद्रह सौ शक भुलूया राजा महातेजा।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 11पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 11पृ

तृतीय लहर 144

राजार तनय राजदुर्लभ (राज बल्लभ)नारायण।	राजा के तनय राज दुर्लभ (राज बल्लभ)नारायण।
तार संगे सेनापति दुर्लभ नारायण।।	उनके साथ सेनापति दुर्लभ नारायण।।
बहु सैन्य संगे दिया थाना राखे तथा।	बहुसेना रखकर थाना बनाया वहाँ।
नृपति फिरिया आइसे राजधनी यथा।।	नृपति लौटे अपनी राजधानी जहाँ।।
राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 13—14पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक खण्ड 13—14पृ

इन सब वाक्य द्वारा स्पष्ट ही समझा जाता है कि महाराज अमर ने भुलुआ के विजय के बाद बाकला राज्य आक्रमण तथा लूट करके वहाँ पर एक थाना स्थापन किया था। इस उक्ति पर निर्भर करके स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय ने कहा है—

''तत्काल बाकला चन्द्रद्वीप अतिशय समृद्धिशाली राज्य था। यह अमरमाणिक यह श्रवण करके अर्थ संग्रह के लिए आक्रमण तथा अधिकार किया। वे जाते समय वह स्थान लूटकर असंख्य धन तथा अनेक संख्यक लोग दास दासी रुप में बन्दी करके ले गये।''

कैलाश बाबू के राजमाला— 2सरा भाग छष्ठ अध्याय 70 पृष्ठ।

यह उक्ति प्राचीन राजमाला के वाक्य द्वारा समर्थित नहीं होती, यह प्रमादपूर्ण वर्णना है ऐसा लगता है। प्राचीन राजमाला में भुलुआ विजय के विवरण में मिलता है—

दुर्लभमाणिक्य तबे बाकलाते गेलो।	दुर्लभमाणिक्य तब बाकला में गये।
कन्दर्प राय जमींदार ताहारे मारिलो।।	कन्दर्प राय जमींदार उसको भी मारे।।
तबे तो अमरदेव हर्षित होइया।	तभी तो अमरदेव हर्षित होकर।
लुटिलो सकल देश ससैन्ये साजिया।।	लूटे सकल देश ससैन्य सजाकर।।
यतो गोरु वत्स सब मनुष्य लुटिलो।	जितने गाय बछडे सब मनुष्य लूटे।
इ सकल बेचिते राजाए आज्ञा दिलो।।	ये सब बेचने राजा ने आज्ञा दिया।।
चारि पण गोरु जे छागल दुइ पण।	चार आने गाय और बकरी दो आने।
मनुष्येर दर होइलो एक एक काहण।।	मनुष्य के दर हुए एक एक रुपये।।
श्रीहट्टेर लोक सबे लोइते आज्ञा दिलो।	श्रीहट्ट लोग सब देने को आदेश दिये।
एहि मते नरनारी लुटि विक्रय करिलो।।	यह मत में नर नारी लूटे विक्रय किये।।
प्रधान तनय राजबल्लभ नारायण।	प्रधान तनय राजबल्लभ नारायण।
सेनापति संगे रणदुर्ल्लभ नारायण।।	सेनापति साथ में रणदुर्ल्लभ नारायण।।
बहु सैन्य संगे दिया राखिलेक तथा।	बहु सैन्य संग दिये रखे तथा।
आपनी चलिया आइला निजदेश यथा।।	अपने ही चले आये अपने देश यथा।।
प्राचीन राजमाला	प्राचीन राजमाला

राजा बाबू के घर में रक्षित राजमाला के पाठ इसी रुप हैं इस पूथि में लिखा है—

दुर्ल्लभमाणिक्य तबे बाकलाते गेलो।	दुर्ल्लभमाणिक्य तब बाकला में गये।
कन्दर्प राय जमींदार ताहाके मारिलो।।	कन्दर्प राय जमींदार उसे जाकर मारे।।
सुनिया अमर देवे ताहाके सुनिया(?)।	सुने अमर देव उसी को सुने(?)।

लुटिलो सकल देश हर्षित होइया।।	लुटे सकल देश हर्षित होकर।।
गो महिस आदि मनुष्य लुटिलो।	गाय भैंस आदि मनुष्य भी लूटे।
विक्रय करिते ताके राजा आज्ञा कोइलो।।	विक्रय करने उसे राजा ने आज्ञा किये।।
गो महिष बेचिलेक मूल्य चारि पण।	गाय महिष बेचकर मूल्य लिए चार आने।
मनुष्येर मूल्य होइलो जनेके काहन।।	मनुष्य के मूल्य हुए एक के जन काहन।।
श्रीहट्टेर लोक किने राजार आज्ञाय।	श्रीहट्ट के लोग खरीदे राजा के आज्ञा से।
येही मते नरनारी सब बिक्री जाय।।	इस मत नर नारी बिक गये।।
राजार प्रधान पुत्र दुर्ल्लभ नारायण।	राजा के प्रधान पुत्र दुर्ल्लभ नारायण।
सेनापति सने दुर्ल्लभ नारायणेर बल(?)।।	सेनापति के साथ दुर्ल्लभ नारायण के बल(?)।।
बड पुत्र बहु सैन्य संगे दिया तथाते।	बडे पुत्र बहु सैन्य संग में देकर तथा।
महाराजा आसिलेक उदयपुरेते।।	महाराज आये जाके उदयपुर में।।

शेष उक्त ग्रन्थ में भुलुआ राज के हत्या विवरण तथा महाराज अमर कर्तृक भुलुआ लूट की कथा एक साथ रहकर अस्पष्ट भाषा में लिखित होने पर भी तद्द्वारा यह समझा जा सकता है कि अमर माणिक्य ने भुलुआ राज्य लूटा था– बाकला राज्य नहीं। पूर्वोक्त जटिल भाषा को संसोधन करने में स्वर्गीय उजीर दुर्गामणि ठाकुर महोदय विषम भ्रम में पड़ गये थे। उन्होने भुलुआ लूट के बारे में बाकला के उपर में डाल दिया। इस यात्रा में विजय माणिक्य ने बाकला राज्य में गमन किया था, ऐसा नहीं समझा जाता परन्तु राजमाला के उक्ति के अनुसार यह ऐतिहासिक प्रसिद्ध में स्थान लाभ किया था।

इस लूट में भुलुआ राज्य भीषण दुर्दशा को ग्रस्त हुए, जो सहज ही समझा जाता है। लूटे गये द्रव्य के निर्धारित दर से जाना जाता है कि कडि मुद्रा का प्रचलन उस समय भी था। तद् समय मनुष्य लूट तथा दास दासी रुप में उन्हे बेचने की प्रथा पूर्ण रुप से चल रही थी, अर्थात लूटे गये नर नारी को बिक्री करना विचित्र बात नहीं है। तब प्रति मनुष्य का मूल्य एक काहन(एक रुपया या एक कर्षा के समान) मूल्य निर्धारित होना नितान्त आश्चर्यजनक है। नाममात्र मूल्य ग्रहण करके मनुष्यों को बाँट दिया गया था। अवस्था अनुसार यह हृदयगम हुए। यह कार्य जो आक्रोशमूलक है, वह अति सहज में जाना गया है।

श्रीयुक्त महिमचन्द्र चक्रवर्ती विद्याभूषण महाशय के सौजन्य से भुलुआ युद्ध में निहत ब्राह्मण के विस्तृत विवरण मिले हैं। महिम बाबू उन्हीं के वंश के हैं। उक्त विवरण से मारे गये ब्राह्मणों का संक्षिप्त परिचय संग्रह किया है।

---

(1) इस स्थल में ''राजबल्लभ '' या ''बल्लभ '' है।

तृतीय लहर 146

भुलुआ राज लक्ष्मणमाणिक्य विक्रमपुर के वटेश्वर गाँव से भरद्वाज गोत्र के डिंगसाई श्रोत्रीय वंश सम्भूत रामनाथ चक्रवर्ती(भट्टाचार्य) को भुलुआ ले आकर निष्कर भूमि प्रदान करने के पूर्वक बलरा गाँव में उपनिविष्ट किये। ये राजकवि तथा अमात्य के रुप में ग्रहीत हुए थे। रामनाथ ने बाद में बलरा से कल्याणपुर तथा कल्याणपुर से बिहिर ग्राम में अपना वास स्थान निर्माण किया।

रामनाथ काव्यरसिक तथा कवि थे। वे महाराज लक्ष्मणमाणिक्य के रचित वीर रसात्मक "विख्यात विजय" नाटक अभिनय के उत्साहदाता थे। इस समय भुलुआ की राजधानी कल्याणपुर में "भारती रंगशाला" प्रतिष्ठित हुई। सुविज्ञ तथा कवित्व–गुणालंकार कृत राजा ने आश्रय लाभ कराके रामनाथ के कवित्व शक्ति स्फूर्ति को प्राप्त किया था। उनके रचित "सत्कार्य रत्नाकर" नामक एक संस्कृत काव्य है।

रामनाथ के यहां रामशरण तथा रामराम नामक दो पौत्र जन्म ग्रहण किये इनमें से अनुज रामराम चक्रवर्ती जनसमाज में "रामठाकुर" नाम से परिचित थे। ये तलवार तथा लाठी चलाने में सिद्धहस्त हो उठे। विशेष बलशाली भी थे। उनके व्यवहार किये गये द्विहस्त के समान परिमित दीर्घ, सरल तथा सुई की तरह धार युक्त एक तलवार, एक सुदीर्घ बल्लम तथा अग्नि संयोग से व्यवहार किया गया, बहुत भारी विशिष्ट एक बन्दूक श्रीयुक्त महिमचन्द्र चक्रवर्ती महाशय के गृह में अनेक दिन से था। 1293 साल में गृहदाह होने से तत्काल बन्दूक तथा तलवार विनष्ट हुआ था। जीर्ण अवस्था युक्त बल्लम अब भी महिम बाबू के ग्रह में यत्न पूर्वक रखा गया है।

रामराम के अग्रज रामशरण, बाबूपुर के राजा राजेन्द्र नारायण तथा उनके भ्रातापुत्र कुमार राजचन्द्र के सदस्य थे। यह जमींदारद्वय, भुलुआ के राजवंश सम्भूत, इनमें सद्भाव नहीं था। एक दिन पिता के कार्य–कलाप के खोज लेने के निमित्त कुमार राजचन्द्र अपने अमात्य तथा सखा रामशरण को गुप्त रुप में राजा के अन्तःपुर में प्रेरण किये थे। दुर्भाग्य से ब्राह्मण, राजा के आँखों में धूल करने में समर्थ नहीं हुए, वे पकड़े गये। राजा के उनको अभय वाक्य से मुक्ति प्रदान करने पर भी, प्रतिज्ञा व्यक्त करने के कारण भयभीत रामशरण बाबूपुर के वास परित्याग करने निमित्त कृत संकल्प हुए। इसी बीच और एक घटना संगठित होने से रामशरण अपने को अधिक विपन्न समझने लगे।

कुमार राजचन्द्र एक अपूर्व सुन्दरी नट्ट–ललना रंगमाला के प्रेम में आसक्त थे। उन्होने रंगमाला के नाम एक बहुत बड़ा सरोवर खुदाई करके उसकी प्रतिष्ठा उपलक्ष में बाबूपुर के सर्वश्रेणी समाज को निमन्त्रण दिया। इस उपलक्ष भोज में रंगमाला ने स्वयं भोज में परोसने को तैयार हुई। जाँति–च्युति तथा धर्म नाश के भय से बाबूपुर के ब्राह्मण समाज से आतंकित होकर घर द्वार तथा धन सम्पत्ति की माया

परित्याग पूर्वक नाना स्थान में पलायन किये।(1) इस समय रामशरण बाबूपुर परित्याग करके इस्लाम धर्म के नवदीक्षित गोपालपुर के जमींदार का आश्रय ग्रहण किया तथा वे सुख स्वछन्द काल परिवर्तन करके छे पुत्र विद्यमान रखकर लीला संवरण किये।

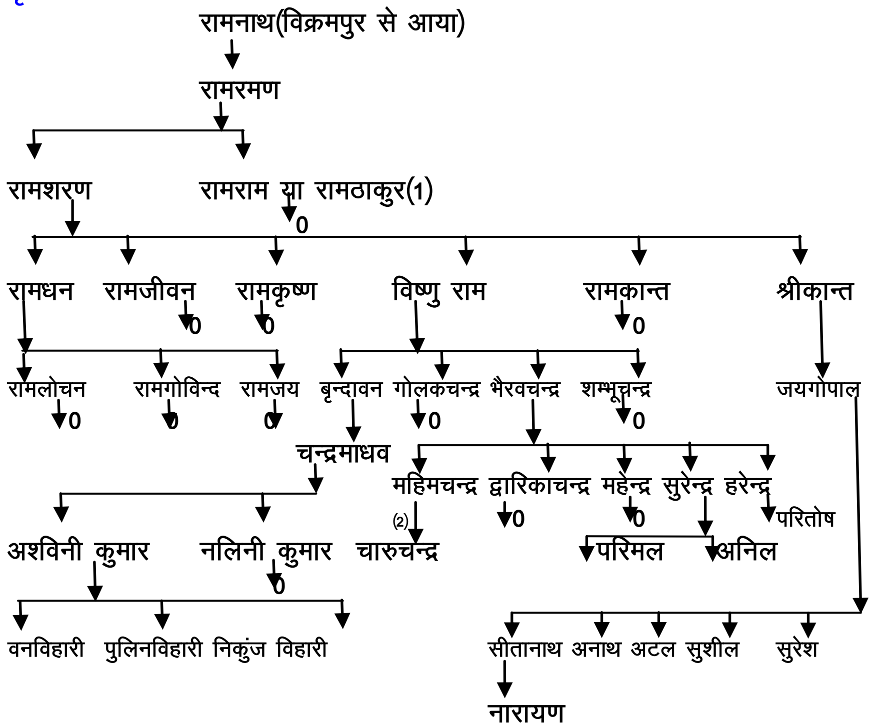
राजचन्द्र के इस प्रकार समाज विगर्हित कार्य दर्शन के लिए पिता राजेन्द्र नारायण क्रोधित हुए। उन्होनें विनष्टपात के मूलभूत कारण रंगमाला को अपने अनुचर द्वारा वध कराया। इस घटना से राजचन्द्र पिता के विरुद्ध उद्धृत हुए। उभय पक्ष में भीषण युद्ध होने के कारण राजचन्द्र भ्रातृवृन्द के साथ निहत हुए। यह युद्ध "चौधुरी की लडाई" नाम से प्रसिद्ध लाभ किया तथा इस घटना को अवलम्बन कर ग्राम के कवि द्वारा एक गीति काव्य रचित हुआ। नौवाखाली तथा त्रिपुरा जिला के वर्तमान काल में भी "चौधुरी लड़ाई" गीत होते है।

अमर माणिक्य के भुलुआ आक्रमण करने से पूर्वोक्त रामराम चक्रवर्ती(राम ठाकुर) भुलुआ राज्य के पक्षावलम्बी होकर युद्ध क्षेत्र से अवतीर्ण होकर तथा निहत हुए थे। इस दुर्घटना से मर्माहत होकर महाराजा अमर माणिक्य ने ब्रह्मवध जनित पाप विमोचन कल्प से प्रायश्चित किया तथा निहत ब्राह्मण के वंशधर गण को खोज लेने की चेष्टा की। उन लोगों के यथोचित सहायता दान करना ही महाराजा के उद्देश्य थे। परन्तु सरलचित् ब्राह्मण गणों ने इस उद्देश्य के मूल में एक भीषण विभिषिका चेहरे की छाया देखी। उन लोगों ने क्रोध से भरे अमर माणिक्य को उसका शमन ज्ञान कर के अभावनीय नये संकट के आशंका के अनुसंधान करने हेतू राज पुरुष गण के निकट आत्मगोपन किये। यहाँ तक कि पैतृक वास्तु भूमि भी उनके लिए भयजनक हो गयी। वे लोग अपने कुलगुरु बाबूपुर के ठाकुर गण के आश्रय में सपरिवार पलायन कर गये। इस घटना से उनके सहगोत्र के व्यक्ति रामठाकुर के प्रति इतने विरक्त हुए थे कि ब्राह्मण होकर भी क्षत्रिय व्यवहार से निमित्त यथापि तर्पण काल में कोई भी उनका नाम नहीं करता।

रामठाकुर के वंश विलुप्त हो गये। उसके अग्रज रामशरण के वंशधर गण अब भी विद्यमान है। उनके संक्षिप्त वंश पत्रिका इस स्थल में प्रदान किया गया।

---

(1) यह घटना महाराज बल्लाल सेन के डोम कन्या ग्रहण के विवरण को स्मरण करा देते हैं।



तरप तथा श्रीहट्ट विजय

अमर माणिक्य भुलुआपति को दमन करके पूर्नबार अमरसागर खुदाई में आराध्य काम अग्रसर के पक्ष में मनोनिवेश किये। इस समय–

एक दिन महाराजा बोइसे सिंहासने।	एक दिन महाराजा बैठे सिंहासन में।
ऐही काले कहे रणचतुर नारायण।।	इस काल में बोले रणचतुर नारायण।।
तोमार राज्येते बहु सुखे आछे प्रजा।	तुम्हारे राज्य में बहुत सुख हैं प्रजा के।
बहुदेश अधिकारी होइछो महाराजा।।	बहु देश अधिकारी हुए महाराजा।।
नाना देशी राजा तोमा करे बहु माने।	नाना देश के राजा तुमको बहु माने।
तरपेर जमींदार तोमारे ना माने।।	तरप के जमींदार तुमको ना माने।।
इहा सुनी महाराजा बड क्रोध होइलो।	यह सुन महाराजा बड़े हुए क्रोधित।
निकटे थाकिया बेटा आमा ना मानिलो।।	निकट में रहकर बेटा हमको नहीं माना।।
अमर माणिक्य राजा विश्वासेते पूछे।	अमर माणिक्य राजा विश्वास से पूछे।
दीर्धिका काटिते केवा कतो दाडि दिछे।।	दीर्धिका काटकर कोई कितना दाडि हुए।।
राजा बाबू की राजमाला अमर माणिक्य खण्ड	राजा बाबू की राजमाला अमर माणिक्य खण्ड।

....

(1) यह महाराज अमर माणिक्य के सहित युद्ध करके निहत हुए।

(2) इस ग्रन्थ के निमित्त भुलुआ के तथा अपने वंश के विवरण प्रदान किये थे। साहित्य चर्चा इनके जीवन का व्रत है। इनके मुद्रित तथा अमुद्रित कतिपय ग्रन्थ हैं।

तृतीय लहर –149

राजा के आज्ञानुसार विश्वास मजूरदाता गण के नाम सह मजूर का हिसाब प्रदान पूर्वक बोले –

अमर सागर काटिते सर्व दाडि दिछे।	अमर सागर काटने में सर्वदाडि जो दिये।
द्वादश बांगलाये दिछे तरपेर ना दिछे।।	द्वादश बंगाल ने दिये, तरप ने ना दिये।।''

यह सुनकर महाराजा अमर विशेष क्रोधित हुए तथा तरप के जमींदार को उसके अबाध्यता के लिए उपयुक्त प्रतिफल प्रदान करना एकान्त प्रयोजन सोचा। इस समय तरप के जमींदार कौन थे। निर्णय करना आवश्यक है।

तरप के प्राचीन विवरण आलोचना में प्रवृत्त होने पर जाना जाता है कि श्रीहट्‌ट के गौड, लाउड़ व जयन्ती के समान तरप भी एक प्राचीन राज्य था। आधुनिक श्रीहट्‌ट नगर के साथ उसके पूर्व तथा दक्षिण आदि स्थित विर्स्तीण भू–भाग गौड राज्य के अन्तर्गत था, गौड के पश्चिम पार्श्ववर्ती वर्तमान श्रीहट्‌ट जिला के पश्चिमांश तथा मयमन सिंह जिला के कुछ अंश लाउड़ राज्य के अन्तर्निविष्ट था तथा श्रीहट्‌ट के उत्तर पूर्वांश तक, त्रिपुरा राज्य की सीमा तक भूखण्ड जयन्तीया राज्य के शासन के अधीन था।(1) गौड राज्य के कुछ अंश लेकर प्राचीन काल से ही स्वतन्त्र तरीके से तरप राज्य प्रतिष्ठित था। यह राज्य साधारणतः गौड के अंगीभूत थे, ऐसा ही कहा जाता है। प्रकृत रुप से तरप के उपर त्रिपुरेश्वर गण का पूर्णमात्र में अधिपत्य था। पूर्वोक्त तीनों राज्य, त्रिपुरा के सामन्त राज्य में गणना होती थी।

कथोपकथन से जाना जाता है कि तरप के राजा अकस्मात् राजत्व प्राप्त होने के कारण वे ''आचाक'' ख्याति लाभ किये। अकस्मात् कोई विस्मयकर घटना घटने पर श्रीहट्‌ट के प्रचलित भाषा में ''आपेक'' या ''अचानक'' घटना कहते हैं। अज्ञात कुलशील व्यक्ति ने अचानक राजपद लाभ करने से वे 'आचाक' नारायण नाम लाभ किये थे। उनका 'नारायण' त्रिपुरेश्वर की वश्यता का चिन्ह है, ऐसा कहना है। बहुत लोग सोचते हैं कि त्रिपुरा के सेनापति तथा सामन्त गण को ''नारायण'' उपाधि थी। तरप के इतिहास प्रणेता ने आचाक नारायण को त्रिपुरा अधिनस्थ राजा कहकर स्वीकार किया–

''आचाक नारायण जो त्रिपुराधिपति करद के संसृष्ठ थे। इसमें कोई संदेह नहीं है। तत्काल जो जिस देश का शासन भार प्राप्त करे वही उस देश का राजा कहकर तथा साधारण के निकट परिचित तथा ख्यात होते थे।

तरप का इतिहास पृष्ठ 32

---

(1) There were at this time three divisions of the present District- Gor (Sylhet) Laur and Jaintia

Hunter's Statistical Accounts of Assam Voll-II(Sylhet)

उत्तर में बरबक्र नदी पूर्व में भानु गाछ के पहाड़, दक्षिण में बेजोरा परगना तथा पश्चिम में लाखाई, यही तरप राज्य की सीमा थी। राजपुर नामक स्थान में आचाक नारायण ने राजधानी स्थापना की थी। आचाक नारायण का वंश परिचय आज तक नहीं मिल पाया। कोई कोई इनको त्रिपुरा के राजवंशीय कहकर अनुमान करते हैं, किन्तु इसका प्रमाण नहीं। इस सम्बन्ध में अनेक अलौकिक प्रवाद प्रचलित है। इस स्थल में जो उल्लेख करना अनावश्यक है।

श्रीहट्ट(गौड राज्य) को जिस समय राजा गौड गोविन्द राजत्व कर रहे थे, आचाक नारायण का तत्काल में तरप के शासन कार्य में लिप्त रहे, यह जाना जाता है। इस समय तरप राज्य स्थित काजी नुरुद्दीन नाम के एक व्यक्ति को अपने पुत्र के विवाहोत्सव में गो हत्या करने के अपराध में राजा आचाक नारायण ने उनका पूर्ण दण्ड दिया था। नुरुद्दीन के भाई हेलिमुद्दीन ने, भ्रात्र वध के प्रतिशोध मन से, दिल्ली में उपनीत होकर सम्राट के दरबार में अभियोग उत्थापन किया। इस समय तुगलक वंशीय सम्राट अल्लाउद्दीन फिरोजशाह दिल्ली के सिंहासन में अधिष्ठित थे।(1) वे इस अभियोग के उपलक्ष्य में पूर्वांचल के मुसलमान शासन प्रवर्तन कल्प में अपने भांजे सिकन्दर शाह को बहुत सारे सैन्य बल सह श्रीहट्ट प्रेरण किये। सेनाध्यक्ष सैयद नासिरउद्दीन सिपा–इ–सालार को उनके सहायता के लिए प्रेरण किये थे।

सिकन्दर ने, राजा गौड गोविन्द को परास्त करना सहज बात नहीं, सोचकर सुयोग्य प्रतीक्षा में ब्रह्मपुत्र के तीर में शिविर स्थापना किया। सौभाग्यवश इस समय हजरत शाहजालाल नाम का कोई शक्तिशाली दरवेश आकर उनके साथ योगदान करने से सिकन्दर शाह ने उनके उपदेशानुसार सैन्य परिचालना द्वारा अल्प समय में ही श्रीहट्ट जय किया। राजा गौड गोविन्द ने पलायन करके अपने आत्मरक्षा की। अंग्रेज ऐतिहासिक हन्टर के मतानुसार 1384 ई0 अब्द में बंगेश्वर द्वितीय सामसउद्दीन के सिंहासन के काल में यह घटना हुई थी।(2) तद्अवधि श्रीहट्ट के हिन्दु राज्य का विलुप्त तथा मुसलमान का शासन प्रतिष्ठित हुआ।

श्रीहट्ट के विजय के बाद शाहजलाल के उपदेश के अनुसार सेनापति के नासिरउद्दीन तरप के आक्रमण के निमित्त अग्रसर हुए। तरपाधिपति आचाक नारायण, गौड गोविन्द के

---

(1) तरप के इतिहास –छेयद अब्दुल अकबर कृत, 32–33 पृष्ठ तथा श्रीहट्ट के इतिवृत्त 2 भाग 2 खण्ड 1 अः 16 पृष्ठ।

(2) **Sylhet appears to have been conquared by a small band of Muhammadans in the reign of Bengal king Shamsuddin in 1384A.D. the super natural powers of the last Hindu King. Gour Gobind, proved in effectual against the still more extraordinary powers of the Fakir Shah Jalal who was the real leader of invaders.**

Hunter's Statistical Accounts of Assam Voll-II(Sylhet)

पराजय वार्ता श्रवण से भयभीत तथा आतंकित थे। वे समझे उनके अशिक्षित अल्प संख्यक सैन्य लेकर प्रबल पाठान शक्ति के सम्मुखीन होकर सुफल की आशा नहीं है। अर्थात अयुद्ध का प्रस्ताव किया परन्तु यह प्रस्ताव भी फलप्रद नहीं हुआ। उत्तर मिला– काजी नुरुद्दीन खून के बदले इस्लाम धर्म ग्रहण अथवा युद्ध करना होगा।

अचाक नारायण ने देखा कि उक्त उभय प्रस्ताव में एक भी उनके द्वारा पालित होने वाला नहीं तो वे उपायान्तर विहीन अवस्था में परिवार वर्ग सहित राजधानी परित्याग पूर्वक त्रिपुरेश्वर के आश्रय ग्रहण किया।(1) त्रिपुराधिपति ने उसको सादर ग्रहण किये, परन्तु उनके राज्य उद्धार के लिए किसी प्रकार की चेष्टा नहीं की। कुछ काल बाद अचाक नारायण त्रिपुरा परित्याग पूर्वक तीर्थ यात्रा उपलक्ष्य में मथुरा में जाकर मानव लीला संवरण किये।

यह विजय वार्ता दिल्ली पँहुचने के बाद सम्राट अल्लाउद्दीन फिरोजशाह खुश चित्त से विजेता सेनापति नासिरउद्दीन के हस्त में तरप राज्य का शासन भार अर्पण किया। तभी से नासिरउद्दीन के वंशधरगण ने क्रमानुसार इस राज्य का शासन कुछ काल किया। नासिरउद्दीन के परलोकगमन के बाद उनके पुत्र सिराउद्दीन ने तरप के शासन भार प्राप्त किया। इनके मुसाफिर तथा फकीर नाम के दो पुत्र जन्म ग्रहण किये। तत्पश्चात मुसाफिर पितृराज्य के अधिकारी हुए। मुसाफिर के सैयद शाह खोदाबन्द, ईस्माइल, सुलेमान तथा ईब्राहिम नाम के चार पुत्र थे। सर्वज्येष्ठ खोदाबन्द ने पैतृक राज्य का लाभ किया। खोदाबन्द के पाँच पुत्र जिसमें से तृतीय पुत्र शाह इसराईल पिता द्वारा राज्य के उत्तराधिकारी मनोनीत हुए किन्तु वे विषय–वितृष्ण थे। राज्य भोग की अपेक्षा विद्या तथा धर्म चर्चा ही उन्होने अधिक श्रेय सोचा। उनके ज्येष्ठ दोनों भाई भी धर्मानुरागी थे। ये तीनों भाईयों ने विषय भोग परित्याग करके "आउलिया"/औलिया अर्थात साधु होने के कारण चतुर्थ पुत्र सैयद मिकायेल ने राज लाभ किया। मिकायेल के चार पुत्र नाजिर खाँ, अब्बास या दरवा खाँ, मूसा तथा मिना या सुल्तान थे। अब्बास खाँ अग्रज द्वारा निहत हुए। मिकायेल पुत्रों के प्रति विरक्त थे। इनमें मूसा खाँ को कुछ प्यार करने के कारण उसको ही समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी निर्वाचन किया। तदानुसार सैयद मूसा पितृ राज्य के अधीश्वर हुए थे। मूसा दृढ़ता के सहित राज्य शासन में प्रवृत्त हुए।

---

(1) हन्टर साहब के मतानुसार 1384 ई0 में श्रीहट्ट तथा तरप मुसलमान गण के हस्तगत हुए। त्रिपुरेश्वर महाराज रत्न माणिक्य के 1366 ई में राजत्व करने का प्रमाण मुद्रा के द्वारा मिला है। किन्तु उन्होंने किस समय तक कितने दिन राजत्व किया था, जाना नहीं जा रहा है। तत्परिवर्ती राजगणों के समय निर्णय करने की सुविधा नहीं हुई है। आचाक नारायण त्रिपुरेश्वर रत्नमाणिक्य के अथवा तद्परिवर्ती राजा के आश्रय ग्रहण किये थे, उसका निर्णय करना दु:साध्य है।

तृतीय लहर 152

तरप के अधिपतिगण के क्रमिक तालिका अंकन करने से निम्नलिखित मत खड़े होते हैं।

सैयद नासुरउद्दीन सिपा–ई–सालार
↓
सैयद सिराजउद्दीन
↓ सैयद मुसाफिर — ↓ सैयद फकिर

सैयद मुसाफिर
↓
शाह खोदाबन्द
↓
शाह मिकायेल
↓ नाजिर खाँ — ↓ अब्बास खां या दरवा खाँ — ↓ सैयद मूसा — ↓ मिना या सुल्तान

सैयद मूसा
↓
सैयद विराम

उक्त वंश पत्रिका आलोचना से जाना जाता है कि शाह मिकायेल के बाद उसके तृतीय पुत्र सैयद मूसा ने पिता के स्थलवर्ती होकर राज्य शासन किया था। राजमाला के मत से तरप के शासनकर्ता मूछे लस्कर ने अमर माणिक्य के विपुल वाहिनी के सहित युद्ध किया था। राजमाला के वाक्य यह है–

जिकुआ ग्रामेते सैन्य कोठ बान्धि रोइलो।	जिकया ग्राम जहाँ सेना पड़ाव डाला।
मुछे लस्कर सैद्धि राम ताते धरा गेलो।।	सिद्धिराम मुछे लस्कर ने दोनो को पकड़ डाला।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 4पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 4पृ

इस स्थल के सैयद मूसा को राजमाला के लेखक ने मूसे लस्कर(मूछे लस्कर) नाम से ख्याति किया। 'मूसा' शब्द को 'मूसे' करना अस्वाभाविक नहीं है। उस काल में त्रिपुरा के अधिनस्थ शासन कर्ता लोगों को ''लस्कर'' उपाधि दिया जाता था, इसलिए सैयद मूसा को मूसे लस्कर कहा गया है।

सैयद मूसा द्वारा अमर सागर खनन कार्य में मजूर प्रदान न करने से महाराजा अमर माणिक्य तरप आक्रमण के निमित्त अपने पुत्र तथा प्रधान सेनापति राजधर नारायण को नियोग किये। उन्होनें चन्द्रदर्प नारायण, चन्द्र सिंह नारायण, छत्र जीत नाजिर, समर भीम नारायण, सौरराष्ट्र नारायण, समर प्रताप नारायण, रणगिरि नारायण, रणभीम नारायण, रणयुझार नारायण, वीरझम्प नारायण, जगझम्प नारायण, अर्जुन नारायण, हरिचक्र नारायण, गज सिंह नारायण, त्रिविक्रम नारायण, प्रताप सिंह नारायण, शत्रुमर्दन नारायण, चन्द्रहास नारायण, सुप्रताप नारायण, हिंगुल नारायण, हैतन खाँ, रण सिंह नारायण, आशावन्त नारायण, वीर सिंह नारायण, समरवीर नारायण प्रभृति

सेनापति गण सह बाईस हजार सैन्य लेकर युद्ध यात्रा की थी। बंगाली सैन्य लोगों ने प्रताप नारायण प्रमुख सेनापति गण के अधीन में प्रेरण किया। इस दल में जाठा, खड्ग तथा धनुबाणधारी दो सहस्र ढाली सैन्य थे। अतएव गरुड व्यूह रचना करने वाले चालाक सेनापति गरुड नारायण तथा सराइल के ईषा खाँ ने इस अभियान में योगदान किया था।

सेनानायक राजधर ने जिकुआ गाँव में जाकर शिविर स्थापना किया। प्रथम युद्ध में ही तरप के अधिपति सैयद मूसा पराभूत होकर अपने पुत्र सैयद विराम के साथ(1) धृत व पिंजराबन्द हुए। उन लोगों को स्वतन्त्र बाँस के पिंजरे में भरकर उदयपुर में प्रेरण किया गया। दरबार में उपस्थित होने के बाद राजाज्ञा से पुत्र को मुक्ति मिली। सैयद मूसा(मूसे लस्कर) ने कारागार में स्थान लाभ किया।(2) श्रीहट्ट के इतिवृत्ति प्रेरणा के मत से सैयद मूसा के पुत्र का नाम सैयद आदम था। इसके शेष होने पर नामान्तर हो सकता है अथवा श्रीहट्ट के तत्कालीन शासन कर्ता आदम को भ्रम से सैयद मूसा का पुत्र कहा गया है।

इस युद्ध में श्रीहट्ट के तत्कालीन आमिल आदम बादशाह ने सैयद मूसा की सहायता की थी। इसको भी दमन करने के कर्तव्य के खातिर कुमार राजधर ने पितृ आज्ञानुसार ससैन्य श्रीहट्ट में यात्रा किया। इस समय रास्ते में आशंका के कारण रहने से सैन्यगण ने गरुड व्यूह रचना किया था।

त्रिपुरा वाहिनी ने कुछ दूर अग्रसर होने के बाद जल पथ से आश्रय ग्रहण किया। ये जिनारपुर होते हुए सुरमा नदी पथ से आश्रय लेने के लिए अग्रसर हुए। श्रीहट्ट के शासन कर्ता आदम इस वार्ता श्रवण से अपने दलबल के साथ अग्रसर हुए। त्रिपुरा वाहिनी ने सुर्म्मा नदी पार कर गोधारानी नामक स्थान के प्रतिपक्ष के सम्मुखीन हुये। इस युद्ध में गज सवारी त्रिपुरा सेनानी ऐराजीत(अरिजीत?) नारायण ने विशेष वीरत्व प्रदर्शन किया। उभय पक्ष में दीर्घ काल तक भीषण युद्ध के पश्चात त्रिपुरा की जय हुई। विजयश्री भूषित राजधर ने सुर्म्मा तीर में शिविर स्थापना किया। फते खाँ ने पठान सैन्य के साथ युद्ध क्षेत्र से पलायन किया था। उन्होनें

....

(1) सैयद विराम का नाम राजमाला के रचियता के हाथ से विकृत हुआ। उन्होनें 'सैयद' शब्द को 'सैद' में परिणत करके नाम सैद विराम किया था। हमारे सम्पादन के राजमाला में यह नाम अतिरिक्त मात्रा में मार्जित होकर 'सैद्धी राम' मूर्ति धारण किये। इसके परवर्ती संशोधन का फल है।

(2)

बाँस घरा कोरि दुई जनेरे चालाये।	बाँसघर करके दो जन चलाये।
अति कष्टे बाँसघरे उदयपुरे जाये।।	अति कष्ट से बाँसघर उदयपुर में गये।।
पुत्र निल भिन्न लोके बूडा निल आने।	पुत्र लिये भिन्न लोग बूडा लिए आये।
सैद विराम छोड़ा होइलो बूडा बन्दिखाने।।	सैद विराम छोड़कर, बूडा बन्दिखाने।।"
प्राचीन राजमाला– अमर माणिक्य खण्ड	प्राचीन राजमाला– अमर माणिक्य खण्ड

देखा, जिस अवस्था रुप में थे पलायन करने के बाद आत्मरक्षा करना असम्भव देखकर उन्होनें राजधर के हाथ आत्म समर्पण किया।

अतः कुमार राजधर ने श्रीहट्ट जाकर नगर अधिकार पूर्वक कुछ दिन वहां अवस्थान किया। इस समय उन्होनें विजय–चिन्ह स्वरुप एक सरोवर खुदाई करके उसका नाम ''आदि राजधर सागर'' रखा था।

श्रीहट्ट के शासन सम्बन्धी यथायोग्य व्यवस्था करके राजधर देव ने फते खाँ को लेकर राजधानी के प्रथम द्वार की तरफ यात्रा किया। वे ईटा गाँव से उनकोटि के तीर्थ होते हुए उदयपुर गये।

फते खाँ को दरबार में उपस्थित किया गया। महाराज अमर माणिक्य ने उनको सादर तथा ससम्मान ग्रहण किया था। दरबार में राज–जमाई के बाँयी ओर उनका उपवेशन का स्थान निर्दिष्ट किया गया। वे उदयपुर में राज सम्मान से थे। पचास जन अश्वारोही उनके अंग रक्षक की तरह सर्वदा नियुक्त रहते थे। अतः फते खाँ के अधीनता के स्वीकार करने से एक हस्ती, पाँच अश्व तथा नाना विधि वस्त्र उपहार प्रदान द्वारा उनकी विदाई की गयी। तरप के शासन कर्ता सैयद मूसा(मूसे लस्कर) ने इस तरह बन्धन दशा से मुक्ति लाभ किया। इसके बाद पठानगण पुनराधिकार न होने तक श्रीहट्ट प्रदेश त्रिपुरा के शासनाधीन थे।

राजमाला के मतानुसार 1504 शक में फते खाँ को लेकर कुमार राजधर ने श्रीहट्ट त्याग किया था।(1) अमर माणिक्य के श्रीहट्ट विजय के निदर्शन स्वरुप उत्कीर्ण एक चाँदी की मुद्रा मिला है। उस मुद्रा में निम्न उक्त वाक्य लिखे हुए हैं।



इस मुद्रा के प्रतिकृति इस स्थल में संयोजित हुआ। जो आलोचना में जाना जाता है कि महाराज अमर ने 1503 शक अब्द में श्रीहट्ट जय किया था– 1504 शक में नहीं। मुद्रा सम्बन्धी प्रमाण जो राजमाला के उक्ति की अपेक्षा प्रबल तथा निर्भर योग्य है,

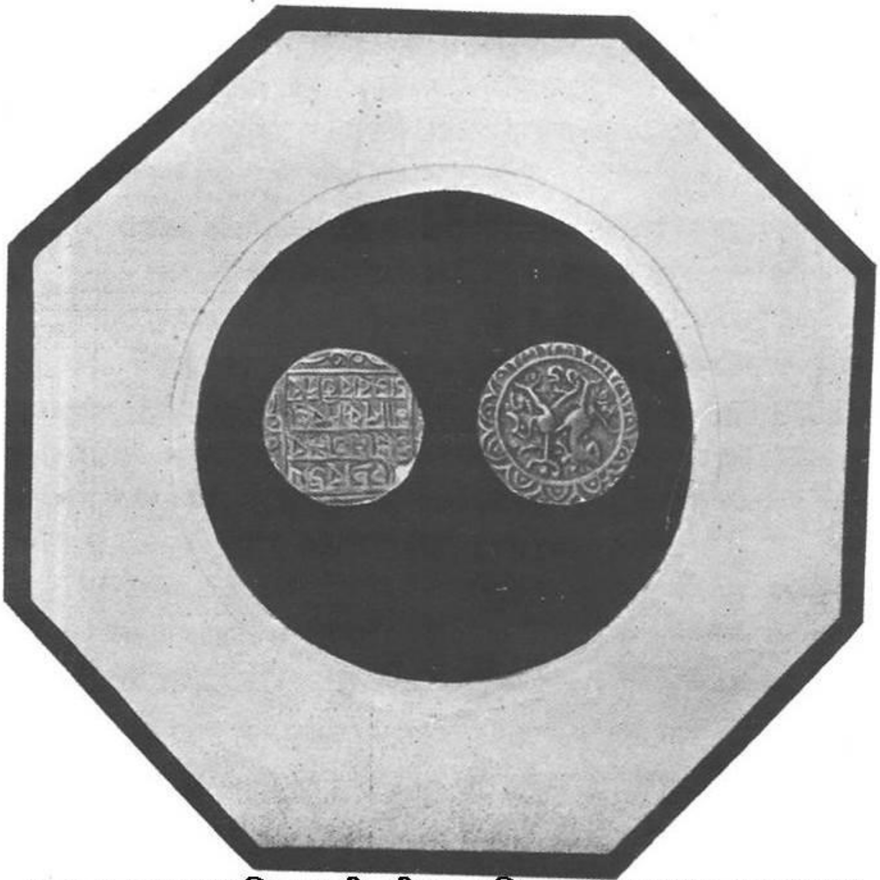
---

(1)

पनर श चारि शाक पौष मास शेषे।	पन्द्रह सौ चार शक पौष माह अंत।
माधेर पनर दिने फते खाँ लोइया आसे।।	माध के पन्द्रह दिन लाया फते खाँ को संग।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 10पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 10पृ

तृतीय लहर 154

चित्र तृतीय लहर–154



महाराज अमरमाणिक्य की श्रीहट्ट विजयसूचक मुद्रा 1503शक

यह कहना जरुरी नहीं है। राजमाला की उक्ति के साथ मुद्रा के विवरण की आलोचना करने पर समझा जाता है कि कुमार राजधर ने 1503 शक में श्रीहट्ट विजय करके कुछ काल अवस्थान करके शासन श्रृखंला तथा दीर्घीका खनन कार्य सम्पादन करने के बाद 1504 शक के माघ महीने में फते खाँ सह राजधानीकी तरफ यात्रा किये थे। उनके युद्ध जय के बाद श्रीहट्ट में अवस्थान की बातें राजमाला में मिलती हैं।

पारिवारिक कथन

राजपरिवार के पारिवारिक प्रथा के विषय में करीब करीब राजमाला के प्रथम तथा द्वितीय लहर में वर्णन प्रदान किया गया है। तृतीय लहर में जिन बातों का उल्लेख मिलता है, उनका कुछ विवरण निम्न प्रदान किया गया है।

वैवाहिक विवरण तृतीय लहर के अन्तर्गत त्रिपुरेश्वर गणों के बीच कौन कहाँ विवाह किये थे, वह निर्णय करना दु:साध्य है। महाराज अमर माणिक्य के पटमहिषी 'अमरावती' का नाम राजमाला में मिलता है। वे सैन्याध्यक्ष छत्र नाजिर के भांजी थे। पिता का नाम नहीं मिल रहा है। राजधर माणिक्य के महिषी का नाम राजमाला में नहीं लिखा गया है। उनके प्रचारित 1707 शकाब्दे में एक मुद्रा मिला है। उसमें एक मात्र राजा का नाम उत्कीर्ण हुआ है। महारानी के नाम का उल्लेख नहीं है अर्थात महाराज राजधर ने कहाँ विवाह किया था तथा उनके महिषी का नाम क्या था ? जानने का उपाय नहीं। यशोधर माणिक्य महारानी का नाम "यश रानी" नाम मिल रहा है। परन्तु परिचय नहीं मिलता। कल्याणमाणिक्य के तीन महिषी के मध्य प्रधाना महिषी का नाम 'सहरवती'(2) है। अन्य महिषी का नाम 'कलावती' और एक महिषी का नाम एवं महारानी 'सहरवती' इत्यादि के परिचय सूचक कोई कथन नहीं मिलता।

प्राचीन पद्धति की रक्षा की चेष्टा महाराज आचोंग फा के समय राजा तथा रानी के एक नाम निर्धारण की प्रथा प्रवर्तित होते हैं।(1) आचोंग फा महाराज डांगर फा के पितामह थे। आचोंग फा ने ई0 त्रयदश शताब्दी में राजत्व किया था। अर्थात राजा तथा रानी के एक नाम रक्षा करना न्यूनाधिक सात सौ वर्ष प्राचीन प्रथा

....

(1) उदयपुरस्थ जगन्नाथ देव मन्दिर में संस्थित शिलालिपि में द्वितीय श्लोक में मिलता है–

"श्री श्री कल्याणमाणिक्य देवस्यादभूत कम्मर्णः।
आसीत् श्रीसहरवती महिषीन्दुमती परा।।" इत्यादि।

आचोंग राजार नाम आचोंग मा रानी।	आचोंग राजा का नाम, आचोंग मा रानी।
तदवधि राजा रानी एक नाम जानी।।	तब से एक नाम है राजा रानी।।
राजमाला–प्रल छेंथुम फा खण्ड, 59 पृ	राजमाला–प्रल छेंथुम फा खण्ड, 59 पृ

तृतीय लहर 156

कहकर निर्धारण किया जा सकता है। अतएव कोई कोई राजा के शासन काल में यह नियम भंग हो जाने पर भी सम्पूर्ण तरीके से विलुप्त नहीं हुआ। राजमाला के तृतीय लहर के अन्तर्गत राजन्य वर्ग के बीच भी उक्त प्राचीन प्रथा रक्षा करने की चेष्टा थी। महाराज अमर माणिक्य के महारानी नाम अमरावती(1), महाराज यशोधर माणिक्य के प्रधाना महिषी का नाम 'गौरी लक्ष्मी' था। उसके राजत्व काल में प्रचारित 1522 शक की एक मुद्रा में अंकित है। –''श्रीश्री यशोमाणिक्य देव, श्रीगौरीलक्ष्मी महादेवी'' इस शक के एक और मुद्रा आलोचना से जाना जाता है कि महाराज यशोधर के ''जया'' या ''जयावती'' नाम्नी और एक जन पट्टमहिषी थी। उक्त मुद्रा में उत्कीर्ण हुआ है– ''श्रीश्रीयशोमाणिक्य देव, श्रीलक्ष्मीगौरी जया महादेवीः'' इस तरह महारानी गण के नाम 'गौरी लक्ष्मी' तथा 'जया' रहना प्रमाणित होने पर भी प्राचीन प्रथा रक्षा के अनुरोध से प्रधाना महिषी का नाम ''यशोरानी'' रखा गया है, राजमाला आलोचना से यह जाना गया है।(1) उदयपुर स्थित गोपीनाथ के मन्दिर में 1572 शक के शिलालिपि के आलोचना से जाना जाता है कि महाराज कल्याणमाणिक्य के महारानी के नाम ''कलावती'' था।(2) यह राजा के नाम के सहित रानी के नाम के सामंजस्य रक्षा के उद्देश्य से है ऐसा ज्ञात होता है। एक पारिवारिक प्राचीन प्रथा इतने दीर्घकाल प्रचलित रखना, राजगण के प्राचीन के प्रति श्रद्धा प्रदर्शन के ज्वाजल्यमान दृष्टान्त स्वरुप ग्रहण किया जा सकता है।

बहु विवाह बहु विवाह के फल अच्छे न होने से भी किसी राजा ने उसे परित्याग किया है? ऐसा प्रतीत नहीं होता है, यह एक पारिवारिक प्रथानुसार चल रहा था। महाराज यशोधर के दो महिषि थी, मुद्रा के प्रमाण द्वारा जाना जाता है। महाराज कल्याणमाणिक्य के तीन महिषि रहने के प्रमाण 'श्रेणीमाला' ग्रन्थ में मिलता है–

उपर किल्लाते कल्याण थानादार छिलो।	उपर किल्ला में कल्याण थानादार थे।
प्रथमे एक विवाह से काले कोरिलो।।	प्रथम एक विवाह वे उस काल किये।।
अमर माणिक्य राजा बोइसे सिंहासन।।	अमर माणिक्य राजा बैठा सिंहासन।।
अमराबती महादेवी सति पतिमति।	अमरावती महादेवी सती पतिमति
तान गर्भे चारिपुत्र योग्यबान अति।।	गर्भजात उनके चार सुत योग्य अति।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 2पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 2पृ

---

(1)

यशमानिक्य स्वर्ग होईलो मथुराते।	यश मानिक स्वर्ग हुए मथुरा में।
यथाविधि संस्कार होईलेक ताते।।	यथा विधि संस्कार हुए जिसमे।।
श्राद्धादि महोत्सब कोरे यश रानी।	श्रद्धाधि महोत्सव करके यश रानी।
राजमाला तृल यशोधररमाणिक्य खण्ड 63पृ	राजमाला तृल यशोधररमाणिक्य खण्ड 63पृ

(2) ''सोमन्दे कलधौत मंजूकलसं चक्रादि शोभं मठं
भक्तौवाति कलावतिपतिरसौ कल्याणदेवो ददे।। 4।।''
शिलालिपि संग्रह–18 पृष्ठ।

से रानीर गर्भे जन्में गोबिन्द माणिक।	उस रानी के गर्भ से जन्में गोबिन्द माणिक।
तद्नुज जगन्नाथ छिलो धर्माधिक्य।।	तदानूज जगन्नाथ थे धर्माधिक्य।।
॰ ॰ ॰ ॰	॰ ॰ ॰ ॰
आरेक कनिष्ठा पत्नी करिलो नृपति।	और एक कनिष्ठा पत्नी किये नृपति।
यादव राजबलाई ताहान सन्तति।।	यादव राजबलाई उनकी सन्तति।।
नृपति होइया कल्याणमाणिक्य राजन।	नृपति होकर कल्याणमाणिक्य राजन।
आर एक विवाह कोरे नृपति जेमन।	और एक विवाह किया नृपति जैसें।
से रानीर गर्भे जन्मे नकत राय।।	वह रानी गर्भ मे जन्मे नकत राय।।
छत्रमाणिक्य नाम होइलो ताहार।।	छत्रमाणिक्य नाम हुए उसके।।
श्रेणीमाला	श्रेणीमाला

राजगण के विवाह संख्या सम्यक राजमाला में उल्लेख किया गया है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। उक्त ग्रन्थ में अनुल्लेखित अनेक राज महिषि रहने की संभावना अधिक है। कथानुसार उस काल में राजगण जितने भी इच्छा, विवाह करते थे। संख्या की न्यूनाधिक प्रति भी दृष्टि नहीं रखते थे। राजमाला के लेखक ने किसी किसी राजा के महिषी की संख्या 'बूडि' हिसाब से गणना की हैं। अर्थात पाँच गान्डा में एक बूडि होते हैं।

मृत राजा की अन्त्येष्ठि क्रिया सम्पादन किसी राजा के परलोक प्राप्ति होने से उसके उत्तराधिकारी के राजा पद ग्रहण के बाद मृत राजा की अन्त्येष्ठि क्रिया सम्पादन के अनुमति प्रदान करने की प्रथा इस समय अक्षुण्ण थी। महाराज अमर माणिक्य की मृत देह राजधर माणिक्य के अनुमत्यानुसार से तथा कल्याणमाणिक्य के परित्यक्त कलेवर को महाराजा गोविन्द माणिक्य के अनुमत्यानुसार दाह किया गया। महाराज यशोधर माणिक्य ने मथुरा में देह रक्षा(मृत्यु) की थी। उनके ''सत्कार काल'' में यह पद्धति रखी गई थी कि नहीं, जानने का उपाय नहीं है जो राजमाला में मिला है'–

यशमानिक्य स्वर्ग होईलो मथुराते।	यश मानिक स्वर्ग हुए मथुरा में।
यथाविधि संस्कार होईलेक ताते।।	यथा विधि संस्कार हुए जिसमे।।
राजमाला तृल यशोधररमाणिक्य खण्ड 63पृ	राजमाला तृल यशोधररमाणिक्य खण्ड 63पृ

इस ''यथाविधि'' वाक्य द्वारा संस्कार के अनुमति के विषय में समझते हैं कि नहीं तथा यदि समझे भी तो किसने यह अनुमति प्रदान की थी। जो निर्णय करना दुःसाध्य है। महारानी के आदेश से राजा की अन्त्येष्ठि क्रिया निष्पादित करना असम्भव नहीं है। तत्काल कल्याणमाणिक्य ने सिंहासन लाभ किया, उनके ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द माणिक्य यशोधर माणिक्य के साथ थे।(1) मृत राजा के संस्कार के लिए तत्द्वारा आदेश होना विचित्र नहीं है।

---

(1) संस्कृत राजमाला के कल्याणमाणिक्य प्रसंग में मिलता है–
''पूर्व स्त्री गर्भजश्चैकः पुत्रो गोविन्द नामकः।
यशमाणिक्य निकटे स च वारानसी स्थित।।''
संस्कृत राजमाला।

तृतीय लहर 158

सहमरण प्रथा इस काल में राज परिवार में सहमरण प्रथा प्रचलित थी। महाराज अमर माणिक्य के पट महिषी महारानी अमरावती का पति के चिता रोहण करने के प्रमाण राजमाला में मिलता है।

युवराज उपाधि द्वारा भावी राजा निर्वाचन त्रिपुर राजपरिवार के चिर प्रचलित प्रथानुसार ज्येष्ठ पुत्र पैतृक सिंहासन लाभ करते थे। राजा के पुत्र न होने पर सिंहासन के हक भ्राता को सौंपने का नियम था। इस रुप स्थल में राज्य के प्रधान व्यक्तिगण तथा प्रकृति पुंज के अभिगत ग्रहण किया जाता था। अतः समय समय पर सिंहासन को लेकर विरोध उपस्थित होते हुए देखा जाता है। महाराज अमर माणिक्य ने इस अशान्ति निवारण हेतु से 'युवराज' पद की सृष्टि की। उन्होने अपने ज्येष्ठ पुत्र राज बल्लभ नारायण को युवराज अभियुक्त किया था। उसके परलोक गमन के बाद द्वितीय पुत्र राजधर नारायण को(बाद में राजधरमाणिक्य) पुनर्बार युवराज पद से प्रतिष्ठित किया जाता है। इस विषय में राजमाला में मिलता है। –

तार पौर आर छिलो बिधिर लिखन।	इसके बाद और कुछ विधि लेखन
राजपुत्र मृत्यु राजबल्लभ नारायण।।	राजपुत्र की मुत्यु नाम था राज बल्लभ नारायण।।
अमर माणिक्य राजा शोके अचेतन।	अमर माणिक्य राजा शोकाकुल अचेतन।
पोरे युवराज कोरे राजधर नारायण।।	पश्चात् युवराज हुए राजधर नारायण।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 16–17पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 16–17पृ

प्राचीन राजमाला के अमर माणिक्य के प्रसंग में लिखित है।

कतो दिने नृपतिर बड पुत्र मइलो।।	कितने दिन में नृपति के बडे पुत्र मरे।।
शोक पाइलो नरपति पुत्रेर कारण।	शोक मिला नरपति को पुत्र के कारण।
युवराज कोइलो राजधर नारायण।	युवराज किया राजधर नारायण।

राजा बाबू के घर में रखे गये राजमाला के वाक्य भी इसी रुप हैं। जो निम्न में प्रदान किया गया है।

नाना सुखे महाराज प्रजागण पाले।	नाना सुख से महाराज प्रजागण पाले।
कतो दिने नृपतिर ज्येष्ठ पुत्र मइले।।	कितने दिन नृपति ज्येष्ठ पुत्र मरे।।
शोक अतिशय पाए नृपति तखन।	शोक अतिशय मिला नृपति के तब।
युवराज कोरिलो राजधर नारायण।।	युवराज के राजधर नारायण।।

श्रेणीमाला ग्रन्थ में भी राजधर के 'युवराज' उपाधि के विषय में उल्लेख है।

उदयपुर राज्य मगले शासिलो।	उदयपुर राज्य मुगल ने शासन किये।
मनु नदी ते जाइया राजा मृत्यु होइलो।।	मनु नदी में जाकर राजा के मृत्यु हुए।।

र र र र र र र

तान पुत्र राजधर युवराज नृपति।	उनके पुत्र राजधर युवराज नृपति।
द्वादश वत्सर तिनि शासिलेन क्षिति।।	द्वादश वर्ष वे शासित किये क्षिति।।

इस समय से ही त्रिपुरा राज परिवार में युवराज नियोग कल्याणकर प्रथा परिवर्तित हुई। तद्अवधि यहाँ नियम अक्षुण्ण तरीके से भी चलने से भी इसका सुफल भोग सब राजा या युवराज के भाग्य में नहीं घट सका। तद्विवरण क्रमशः विवृत होगा।

राजमाला के संग्राहक स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय भ्रम प्रणोदित होकर, महाराज कल्याणमाणिक्य को 'युवराज' पद के प्रवर्तक बोला है, ऐसा निर्देश किया गया है, यथा।

''महाराज कल्याणमाणिक्य के राज्याभिषेक के पूर्व से जगत के साधारण विधि अनुसार ज्येष्ठ पुत्र पैत्रिक राजदण्ड धारण करते थे। कल्याणमाणिक्य के अपने ज्येष्ठ पुत्र को शास्त्रानुसार युवराज पद से अभिषिक्त किये थे।''

कैलाश बाबू की राजमाला प्रथम भाग, चतुर्थ अध्याय 37 पृष्ठ।

कल्याणमाणिक्य के उर्द्धतन तृतीय राजा अमर माणिक्य के शासन काल में 'युवराज' उपाधि में प्रवर्तित होने की बात पूर्व में ही कही गयी है। कैलाश बाबू की उक्ति भ्रम से प्रणोदित है।

राजकुमारगण को ठाकुर उपाधि महाराज कल्याणमाणिक्य ने राजकुमार तथा राजपरिवास्थ व्यक्तिगण को 'ठाकुर' उपाधि प्रवर्तन किया। तद्विधि राजपरिवार में यह उपाधि चल आ रही है।

पारिवारिक प्रथा सम्बन्धी और अनेक बात कहने को है। जो परिवर्ती लहर में वर्णित होगा।

साहित्यनुराग

त्रिपुरेश्वरगण आहवान काल में साहित्यानुरागी, बंग भाषा तथा साहित्य के पृष्ठ पोषक थे। महाराज अमर माणिक्य के शासनकाल में तथापि उनके आज्ञा से राजमाला द्वितीय लहर रचना की गई। तृतीय लहर के अन्तर्भूत राजगण सभी विद्यानुरागी तथा बंग भाषा के पक्षपाती थे। मूल ग्रन्थ की आलोचना करने पर इस विषय के विस्तरित प्रमाण मिल सकते हैं।

———

धर्म मत तथा धर्माचरण

साधारण कथा त्रिपुरेश्वर गण के धर्मानुराग तथा धर्म संरक्षण की चेष्टा स्मरणातीत काल से समान तरीके से चली आ रही है। जलाशय प्रतिष्ठा, देवयातन प्रतिष्ठा, देवता स्थापना, भूमि आदि विविध प्रकार के दान तथा यज्ञ सम्पादन प्रभृति धर्मानुमोदित सत्कार्य सम्पादन द्वारा वे वंश परम्परा धर्म की मर्यादा रक्षा करते आ रहे है। तथा इस सदनुष्ठान के निमित्त अनेक भूपति चिरस्मरणीय हुए हैं।

धर्म मत राजमाला के प्रथम लहर में कहा गया है कि त्रिपुरा के राजवंश प्रथम शैव थे। क्रमशः मत परिवर्तन के फलस्वरुप बाद में वैष्णव अवलम्बन किये थे। यह परिवर्तन अल्प समय में नहीं घटे। अनेक काल शैव धर्म आचरण के बाद वे अपन अपने पूर्व प्रवृत्ति तथा विश्वास के अनुसार कोई शिव मंत्र, कोई शक्ति मंत्र तथा या कोई विष्णु मंत्र से दीक्षित हो रहे थे। इस अवस्था में कुछ काल अतिवाहित होने के बाद उत्तरोत्तर पूर्ण मत्रा में वैष्णव मतावलम्बी हुए है।

त्रिपुरेश्वरगण शैव मतावलम्बी रहने तक सगर द्वीप से समागत दण्डिगण उनके दीक्षा गुरु थे। शैव मत के सहित शाक्त मत से प्रभावित राजपरिवार में प्रविष्ठ होने के साथ साथ किसी किसी राजा के मैथिल तथा बंगाली ब्राह्मण से दीक्षा ग्रहण के प्रमाण मिलते हैं। श्रीश्री नित्यानन्द प्रभु के वंशधर के प्रभाव से राजवंश नैष्ठिक वैष्णव हुए, एवं तभी से नित्यानन्द के सन्तानगण इस वंश के गुरु निर्वाचित हुए हैं। जिस समय जिस प्रभुसन्तानगण ने राजपरिवार के उपर प्रभाव विस्तार किया था, यथा स्थान में विवृत होगा। इस स्थल में राजगण के धर्मानुमोदित सत् कार्यावली के किंचित निदर्शन प्रदान किया जा रहे हैं।

जलाशय प्रतिष्ठा

सकल धर्म शास्त्र के मतानुसार जलाशय प्रतिष्ठा या जलदान अमोध पुण्यजनक कार्य है। आर्य शास्त्रकार गणों ने इस जीव हितकर कार्य को अति उच्च सम्मान प्रदान किया है। जिसे करने का विशिष्ठ कारण भी है। ''जल'' शब्द बहुत स्थान में ''जीवन'' शब्द मिलता है। 'राजनिर्घन्ट' ग्रन्थ के अनुसार–

''अन्नेनापि बिना जन्तुः प्राणान् धारयते चिरम्।
तोयाभावे पिपासार्तः क्षणात् प्राणोर्विमूचूत्ये।।''

जल, जीवन धारण के प्रधान उपादान अर्थात जल में तथा जीवन में अन्तर नहीं है। इस कारण ही जल को 'जीवन' कहा गया है। प्राणी लोग को विशुद्ध पानी दान करने से जीवनदान का फल का लाभ होता है। इसी कारण आर्य ऋषिगणो ने जलाशय दान को अमोघ महत्व कीर्तन किया था।

जलाशय के प्रकार भेद नाना ग्रन्थ में जलाशय के पर्याय मिलते हैं। मेदिनी कोष, अमर कोश, शब्द रत्नावली, द्विरुपकोष, प्रभृति ग्रन्थ में जलाशय के पर्याय यन्त्रकूटक, पद्माकर, तडाक, तटक, तडाग, तडग, सरोवर, सागर, पुष्करिणी, तालाब प्रभृति अनेक शब्द मिलते हैं।

वायु पुराण के मत से जलाशय अष्ठधा विभक्त हुए हैं –

''कूपवापी पुष्करिन्नयो दीर्घीका द्रोण एव च।
तडागः सरसी चैव सागरश्चाष्टोमो मतः।।''

जलाशय खनन व उत्सर्ग का फल जलाशय खनन के फल सम्बन्ध में शास्त्रीय मत बहुत हैं, जिसका मत एक यहाँ प्रदान किया गया है–

"सेतुबन्ध रता ये च तीर्थशौच रताश्च ये।
तडाग कूप कर्त्तारो मुच्यान्ते तृषाभयात्।।"

आदित्य पुराण।

जलाशयोत् सर्ग तत्वे में लिखा गया है–

"संक्षेपात्तू प्रवक्षामि जलदान फलं श्रीणु।
पुष्करिन्यादीदानेन विष्णु प्रीणाति विश्वधृक।।

पद्म पुराण में पाया जाता है।

एतान्महाराज विशेष धर्माण करोति योघ्यान्तथ शुद्ध बुद्धि।
स याति ब्रह्मालयमेक कल्पं दिवं पूनर्याति तथैव दिव्यम।।"

पद्म पुराण– सृष्टि खण्ड।

उक्त पुराण में जलदाता के काल विशेष से फल लाभ की बातें मिलती है।

"प्राबिट् काले स्थितं तोयं अग्निष्टोम समं स्मृतम्।
शरत्काले स्थितं तोयं यदुक्त फलदायकम्।।
वाजपेय फल समं हेमन्त शिशर स्थितम्।
अश्वमेध समं प्राहुर्वसन्त समय स्थितं।।"

जलाशय प्रतिष्ठा तथा जलदान सम्बन्धी और भी अनेक बात है। इस स्थल में अतिरिक्त आलोचना करने की सुविधा नहीं है।

त्रिपुर राजन्यवर्गो द्वारा जलाशय प्रतिष्ठा जलाशय प्रतिष्ठा त्रिपुर भूपति वृन्द के पुरुषानुक्रमिक पूण्यजनक अनुष्ठान है। राजमाला प्रथम तथा द्वितीय लहर में उनके इस सत्कार्य के विस्तार का निदर्शन मिला है। तृतीय लहर के आलोचना से जाना जाता है कि महाराज अमर माणिक्य ने उदयपुर का "अमर सागर" खनन किया था। यह विशाल वापी सोना मुडा मौजा में अवस्थित है। इसका दीर्घ 1228 गज तथा प्रस्थ 302 गज इसके गर्भ में 12/0 वार द्रोण एक कानि भूमि पतित हुआ है। इस सरोवर खुदाई के उपलक्ष्य में पूर्व बंग तथा आसाम प्रदेश व्यापी जो समारोह उत्सव हुए थे, वह पूर्व ही कहा गया है। अतएव अमरपुर में इसके खनित अमर सागर तथा फटिक सागर विद्यमान है। अमर माणिक्य के पुत्र महाराज राजधरमाणिक्य ने उदयपुर स्थित राजधर नगर मौजा में 360 गज दीर्घ 240 गज प्रस्थ का एक बडा तालाब खनन कराया था। यह अधुना प्रतिष्ठित नगर के पश्चिम तरफ जामजूडि छडा के पूर्वपार अवस्थित है। राजधर के पुत्र यशोधर शान्ति से राजत्व नहीं कर पाये। उनका जलाशय खननादि पूण्य कर्मानुष्ठान के अवसर घटित हुए थे, ऐसा नहीं प्रतीत होता है। यशोधर के परवर्ती राजा कल्याणमाणिक्य द्वारा प्रतिष्ठित कल्याण सागर 224 गज

तृतीय लहर 162

दीर्घ तथा 160 गज प्रस्थ है। यह सरोवर त्रिपुरसुन्दरी देवी की मन्दिर के पूर्व तरफ अवस्थित है। यह जलाशय साधरणतः "माताबाडी" के दीधि नाम से परिचित है जो राजमाला में मिलता है। देवी के प्रत्यादेशानुसार यह जलाशय खनित हुआ था। इस ग्रन्थ के 67वें पृष्ठ में तथा प्रथम लहर के 127 पृष्ठ में यह विवरण मिलेगा। इसके अलावा दक्षिण चन्द्रपुर मौजा में इसके 80 गज दीर्घ तथा 40 गज प्रस्थ विस्तृत और एक दिधि विद्यमान है। कस्बा में 'कल्याण सागर' नाम से जो सुविशालव्यापी देखने में मिलता है, इस महापुरुष के उज्जवल स्वरुप कीर्ती है। त्रिपुरा जिला बोर्डो ने इस जलाशय के पंकोद्धार उपलक्ष्य में आकार को कम करके इसकी विशालता तथा सौन्दर्यता नष्ट की है। कस्बा की मुन्सफी अदालत इस सरोवर के उत्तर तीर में संस्थापित हुए है।

देवालय तथा देवता प्रतिष्ठा

शास्त्रीय मत देवायतन गठन तथा देवी और देवता प्रतिष्ठा के अमोघ फल कथा शास्त्र ग्रन्थ समूह में कीर्तित हुए है। देवालय तथा देवता प्रतिष्ठता के फल शास्त्रीय मत से संक्षिप्त तरीके से निम्न उल्लेख किया जाता है–

"कृत्वा देवालयं सर्वं प्रतिष्ठाप्य च देवताम्।
विधाय विधिवत् चित्रं तल्लोकं विन्दते ध्रुवम।"

मठ प्रतिष्ठातत्वम्।

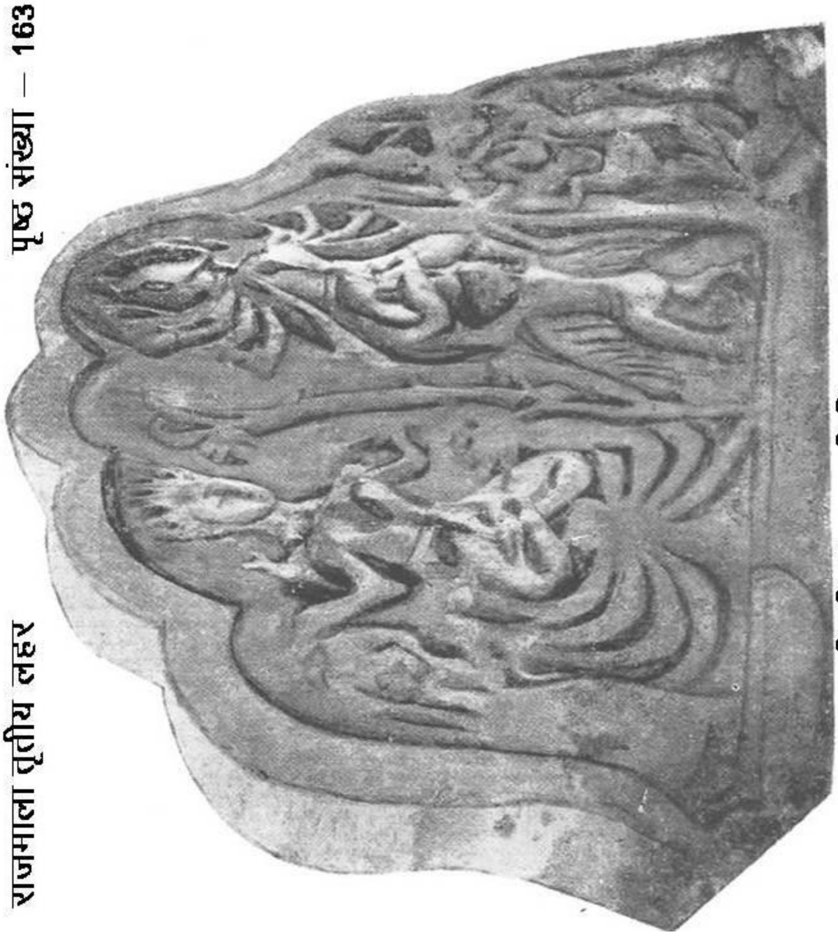
त्रिपुरेश्वरगणों के कार्य इस विषय में अधिक प्रमाण संग्रह करते जाना निष्प्रयोजन है। त्रिपुर भूपति वृन्दों इस सत्कार्यनुष्ठान को पुरुषानुक्रम से अवश्य कर्तव्य के मध्य ग्रहण किया था। राजमाला प्रथम तथा द्वितीय लहर के इस प्रकार सदनुष्ठान के विस्तार परिचय मिला है। इस स्थल में तृतीय लहर के प्राप्त विवरण समूह का संक्षिप्त सार निम्न दिया गया है।

महाराज अमर माणिक्य द्वारा स्थापित मठ व विग्रह महाराज अमर माणिक्य सिंहासन लाभ करके शान्ति से राजत्व नहीं कर पाये। उसके राजत्व के प्रारम्भ काल से मघ तथा मुसलमान प्रभृति प्रबल प्रतिद्वन्द्वी के साथ में युद्ध में लिप्त रहना पडं। अर्थात इसी सूत्र से विस्तार अशान्ति तथा उपद्रव भोग करना पड़ा। इस विवरण का बाद में विस्तार होगा। इस अवस्था में भी महाराजा अमर, पुण्य काम के पूर्व पुरुषगण के पद चिन्ह अनुसरण करके परान्मुख नहीं हुए। उन्होनें उदयपुर में प्रस्तर द्वारा एक मठ निर्माण कराके जगन्नाथ देवता की स्थापना किया था। राजमाला में मिलता है महाराज अमर सागर प्रतिष्ठा कार्य सम्पादन करने के बाद–

महाबाक्य कोरे राजा जलाशये गिया।	जाकर जलाशय में नृप ने महावाक्य किया।
प्रस्तरे निर्माइलो मठ धर्म उद्देशिया।।	धर्मादर्श हेतु मठ पत्थरों से बनाया।।
जगन्नाथ स्थापित कोरिलो सेइ मठे।	कर दिया उस मठ में स्थापित जगन्नाथ।
नृत्य गीत महोत्सब कोरे बहु ठाटे।।	नृत्य गीतादि करे महोत्सव के साथ।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 14पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 14पृ

तृतीय लहर 163

चित्र तृतीय लहर–163



राजमाला तृतीय लहर

पृष्ठ संख्या — 163

श्री श्री मंगलचण्डी विग्रह — अमरपुर

तृतीय लहर 163

इस मन्दिर में शिलालिपि था। दुख का विषय है जो विलुप्त हो गया अर्थात् तद् सहायता से प्रमाण संग्रह करने का उपाय नहीं है। राजमाला के आलोचना से यह जाना जाता हैं कि जिस वर्ष अमर सागर उत्सर्ग किया गया, उसी वर्ष यह देवालय निर्माण किया गया था। राजमाला के वाक्य ये हैं–

पनेरो श शके अमरसागर आरंभन।	पनरह सौ शक में शुरू अमरसागर खनन।
तीन वर्षें सागर खना होइलो समापन।।	तीन साल में हुआ अमर सागर समापन।।
+ + + +	+ + + +
महाबाक्य कोरे राजा जलाशये गिया।	जाकर जलाशय में नृप ने महावाक्य किया।
प्रस्तरे निर्माइलो मठ धर्म उद्देशिया।।	धर्मादर्श हेतु मठ पत्थरों से बनाया।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 14पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 14पृ

इत्यादि

इसके द्वारा जाना जाता है कि 1500 शक में खनन प्रारम्भ करके 1503 शक में अमर सागर उत्सर्ग तथा उल्लेखित मन्दिर निर्माण किया गया था। अतः इसकी 350 वर्ष के प्राचीन कीर्ति है, ऐसा निर्णित हुआ है। यह जीर्ण मन्दिर वृक्ष के विभिन्न अवस्था में विद्यमान है।

अमरपुर के महाराजा अमर माणिक्य ने एक नयी राजधानी की स्थापना की। तथापि अमर सागर के दक्षिण पश्चिम कोने की तरफ एक मन्दिर है। उपरोक्त मन्दिर के संस्थापिका प्रस्तरमयी विग्रह ''मंगलचण्डी'' नाम से अभिहित तथा मन्दिर ''मंगलचण्डी'' के बाडी नाम से परिचित है। इसकी मूर्ति मन्दिर के पार्श्ववर्ती जंगलों में गिरे हुए अवस्था में थी। स्थानीय लोग गण उसका उत्तोलन कर उक्त टूटे मन्दिर के सन्निकट एक टीन के गृह में रखकर अर्चना कर रहे थे। यह मन्दिर तथा मूर्ति महाराज अमर माणिक्य के द्वारा प्रतिष्ठित है, ऐसा कहना ही साधारण लोगों का विश्वास है।

महाराज राजधर माणिक्य क्षरा प्रतिष्ठित मठ व विग्रह महाराज राजधर माणिक्य ने उदयपुर के गोमती नदी के तीर में एक मन्दिर निर्माण करवा कर विष्णु मूर्ति स्थापना की थी। इस सम्बन्ध में राजमाला में मिलता है।

विष्णु मंदिर दिते राजार मनेर आशय।।	विष्णु मंदिर निर्माण राजा इच्छा का उदभ्व।।
निर्मिलो मंदिर एक विचित्र आकार।	हुआ निर्माण मंदिर एक विचित्र आकार।
विष्णु प्रीते उत्सर्गिलो स्वहस्ते राजार।।	विष्णु प्रीत्यर्थ उत्सर्ग किया हर्ष अपार।।
राजमाला तृल राजधर माणिक्य खण्ड 53पृ	राजमाला तृल राजधर माणिक्य खण्ड 53पृ

इस जीर्ण मन्दिर के अवशेष अब भी वर्तमान में है। संस्कार न करने से इसके और अधिक दिन स्थायी रहने की आशा नहीं है।

यशोधर माणिक्य के कार्य यशोधर माणिक्य ने कौन से मन्दिर प्रतिष्ठा किये थे, इसका निदर्शन नहीं किया जा सकता परन्तु वे प्रासाद तथा पुष्कारिणी इत्यादि के प्रतिष्ठिता थे, राजमाला के आलोचना में यह जाना जाता है। यशोधर माणिक्य खण्ड में लिखा गया है।

प्रासाद पुष्कर्णी दिधी दिलो स्थाने स्थान।	प्रासाद पुष्कर्णी जलाशय दिया हर स्थान।
विष्णुप्रीते उत्सर्गिलो होइया दिब्य ज्ञान।।	विष्णु प्रीत्यर्थ उत्सर्ग किया पाया दिव्य ज्ञान।।
राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड 58पृ	राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड 58पृ

तृतीय लहर 164

महाराज कल्याणमाणिक्य के कार्य अष्टधातु निर्मित चतुर्दश देवता के मूर्ति समूह महाराज कल्याणमाणिक्य द्वारा स्वर्ण तथा रजत मण्डित किये गए थे। एक मात्र महादेव की मूर्ति चाँदी द्वारा तथा अन्य समस्त मूर्ति स्वर्ण द्वारा मण्डित हुआ है। इस संस्कार कार्य को 'गठन कार्य' कहकर राजमाला में उक्त हुआ है। यथा–

चतुर्दश देवता मूर्ति गठाय नृपति।	चतुर्दश देवता मूर्ति गठाया नृपति ने।
सुवर्ण रजत ताते मनोहर अति।।	सुर्वण रजत मंड़ित कराया मनोहर अति।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड 67पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड 67पृ

राजमाला प्रथम लहर में चतुर्दश देवता के विस्तृत विवरण प्रदान किया गया है। इस स्थल में पुनर्ल्लेख निष्प्रयोजन है।(1)

श्री श्री त्रिपुरा सुन्दरी देवी के मन्दिर चूडा, उदयपुर आक्रमणकारी मघवाहिनी द्वारा विध्वस्त हुए थे, तथापि महाराज कल्याणमाणिक्य ने मन्दिर के संस्कार साधन किया था।(2) यह मन्दिर 1423 शकाब्द में निर्मित होने के बाद 1603 शक में महाराज उदयमाणिक्य के शासनकाल में उसके बहनोई तथा सेनापति रणागण नारायण(रंगनारायण) द्वारा एक बार संस्कृत हुए थे। मन्दिर ग्रातस्थ में शिलालिपि आलोचना में जाना गया है कि महाराज कल्याण ने द्वितीय बार संस्कार किया था। 1548 से 1582 शक के मध्य यह कार्य समाहित हुआ था।(3) इस बार के संस्कार कार्य के निदर्शन शिलालिपि द्वारा रक्षित नहीं हुए।

मघगण, अमर माणिक्य के युद्ध में परास्त होने पर, गुप्त धन के संधान के लिए अमर सागर प्रभृति उदयपुर स्थित बहुत बृहत सरोवरो को नाले कहकर सींच दिया गया। कल्याणमाणिक्य ने उन सब सरोवरों के किनारों को बाँधकर पुनर्वार जल बचाने की व्यवस्था की।

अतएव कल्याणमाणिक्य द्वारा उदयपुर में एक प्रासाद निर्माण किया गया। उस प्रसाद के सम्मुख भाग में विष्णु मन्दिर, दोल मंच तथा दुर्गा बाडी निर्माण किये गये थे।

महाराज कल्याणमाणिक्य के अन्य कीर्ति चन्द्र गोपीनाथ के मन्दिर(जो वर्तमान काल के चतुर्दश देवता के मन्दिर नाम से अभिहित हुए हैं) चन्द्र गोपीनाथ

---

(1) राजमाला प्रथम लहर 129 पृष्ठ

(2)

कालिकार मठ चूड़ा मघे भांगिछिलो।	कालिका का मठ चूड़ा भंग मघो ने किया।
पुनर्बार महाराजा निर्माण कोरिलो।।	पुनः उसका महाराजा ने किया निर्माण।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड 68पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड 68पृ

(3) द्वितीय लहर के 100वें पृष्ठ पर कल्याणमाणिक्य के राज्य लाभ का काल "1547" शक में लिखा गया है। किन्तु मुद्रा के प्रमाण द्वारा 1548 शक में राज्यभिषित हो जाना जाता है। यह विषय में विशेष रुप से आलोचित होगें।

तृतीय लहर 165

विग्रह महाराज उदयमाणिक्य के प्रतिष्ठित,(1) है। महाराजा अमर माणिक्य के शासनकाल में यह विग्रह मघ द्वारा अपहृत हुए थे। महाराज कल्याण ने चट गाँव होते हुए उस विग्रह को पुनर्उद्धार करके नव निर्मित मन्दिर की स्थापना की। इस सम्बन्ध में राजमाला में मिलता है–

सिंह द्वार समीपेते मनोरम स्थान।	सिंह द्वार समीप था एक मनोरम स्थान।
इष्टक पासाने मठ कोरिछे निर्माण।।	ईंट पत्थरों से मठ का किया निर्माण।।
चन्द्रगोपीनाथ मूर्ति चाटि ग्रामे छिलो।	चन्द्र गोपी नाथ मूर्ति थी चट गाँव।
अमर माणिक्य काले मघे निया छिलो।।	अमर माणिक्य काल में किया था मघ ने अपहरण।।
सेई देव चट्टल होइते आनिया तखन।	वह देव मूर्ति चट गाँव से लाया तत्क्षण।
सेई मठे स्थापे विष्णु कोरिया अर्चन।।	उसी मठ कर स्थापित किया फिर विष्णु अर्चन।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड 75पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड 75पृ

यह मन्दिर "महादेव के मन्दिर के उत्तर तरफ एक ही प्राचीर के घेराव के अन्दर अवस्थित है। यह चतुर्दश देवता के नाम से परिचित होने पर भी मन्दिर के गात्र के शिलालिपि के आलोचना करने से जाना जाता है कि मन्दिर गोपीनाथ विग्रह को अर्पण किया गया। " राजमाला के उद्धृत वाक्य द्वारा यही जाना जाता है। मन्दिर द्वार के उपरी भाग में संयोजित शिालिपि किस परिमाण में विनष्ट है, तथा कष्टकर पाठ्य होने पर भी भक्ति भजन विद्याविनोद महाशय ने इसका जो पाठ उद्धार किया है, उसके आलोचना से जाना जाता है कि यह मन्दिर महाराज कल्याणमाणिक्य द्वारा 1572 शक में निर्मित तथा गोपीनाथ के उद्देश्य उत्सर्गीकृत हुआ था। उक्त पंडित महाशय ने इस बन्धन के अन्दर के लुप्तांश को पूर्ण करके निम्नोक्त पाठ उद्धार किये हैं।

(यत्पादे विनता) ि(ग)रीन्द्र पवनेन्दु कादयोमौलि ि(भ)
(यं देवा अपि चिन्तय) न्ति सततं ब्रह्माण्डभान्डान्तरे।
(यत्कीर्तिं सुविनीत) कन्धतया गेगीय(माना) त्रयी
(तत्पादे भवता) रणेऽद्भूत मठं कल्याणदेवोऽभ्यदात्।।
(2) कन्दर्पकान मवलि कलितवसुश्चन्द्रवंशावतंसः
धैर्योदार्यातिशौर्यैः पृथुरघुनहुषाजेषू यो गीयमानः।
गोपीनाथाय भक्त्या निरुपमृसुमठं योऽतिबेलं मूदादतः
स श्रीकल्याण देवः सगरिममहिमा नन्दतान्नन्दनादैः।।
शाके पक्ष मुनीषु चन्द्रगणिते मासे शुचावंशके
वाणे भूमिजवासरे द्विज शुभाशीर्भिः सुवाक्येति या
सोमन्दे कलधौतमंजू कलसं चक्रादिशोभं मठं
भक्तेवाति कलावतीपतिरसौ कल्याण देवो ददे।। 4।।
शाके 1572 आषाढष्य 5 अंशके।

---

(1)

बहुल कोरिया यत्न एक मठ दिलो।	बहुत यत्न करके बनाया एक मठ।
चन्द्र गोपीनाथ नाम श्रीमुर्ति स्थापिलो।।	चन्द्र गोपीनाम नाम से मूर्ति किया स्थापित।।
राजमाला द्विल उदयमाणिक्य खण्ड 68 पृ	राजमाला द्विल उदयमाणिक्य खण्ड 68 पृ

(2) आलोच्य लहर के 75 पृष्ठ दृष्टब्य।

उद्धृत लिपि के निम्नलेख वाक्य सारे मुश्किल हैं जो यथा सम्भव उद्धार किया गया है कि नहीं इस विषय में संदेह है।

लिपि के मूल मर्म

''महादेव, पवन तथा चन्द्र प्रभृति(जिसके पादपद्म में नतमस्तक) ब्रह्माण्ड मध्य(देवगण भी जिसको) सतत(चिन्तन करते है) तथा वेद(जिसकी कीर्ति) पुनः पुनः गीत करते है। कल्याण देव(संसार परित्राण के उपाय स्वरुप उसके पादपद्म में) अद्भुत मठदान किये हैं। + + + जो चन्द्रवंश के अलंकार, धैर्यता, वीरता तथा उदारता गुण से जिसका पृथु, रघु तथा नहुष प्रभृति में कीर्तन होता है, जिसने वृद्धकाल में भक्तिपूर्वक गोपीनाथ को यह अनुपम मठ दान किया है। वह कल्याण देव गौरव तथा महिमा के साथ पुत्रादि समभिव्यवहार से आनन्द उपभोग करे। 1572 शकाब्दे के 5 आषाढ मंगलवार को कलावति के पति अति भक्तिपूर्वक चक्रादि शोभित तथा स्वर्ण कलश अंलकृत मठ ब्राह्मण लोगों के आशीर्वाद से + + + + दान किये। 1572 शकाब्द 5 वी आषाढ।''(1)

अवस्था आलोचना से स्पष्ट समझा जाता है गोपीनाथ विग्रह के उद्देश्य से निर्मित मन्दिर काल क्रम से चतुर्दश देवता के मन्दिर रुप में परिणित हुए थे। इस प्रकार परिवर्तन के कारण निर्देश करने के उपाय नहीं है। जिस कारण से विष्णु के उद्देश्य से निर्मित गृह में श्री त्रिपुरा सुन्दरी विग्रह की प्रतिष्ठा हुई थी। इस स्थल में इसके स्वरुप कोई कारण संगठित होना विचित्र नहीं।

उस मन्दिर के सामने एक चिलछत्र निर्माण करके उसका नाम दिया गया था ''जगन्मोहन'' । इसके छत इत्यादि नष्ट हुए थे। स्तम्भ के निम्न भाग अब भी दण्डायमान है। राजमाला के प्रथम लहर में 134 पृष्ठ में इस मन्दिर का चित्र प्रदान किया गया है।

वर्तमान खोवाई विभाग के अन्तर्गत खोवाई नदी के तीरवर्ती निभृत गिरिकन्द में कल्याणमाणिक्य ने एक समृद्ध नगर की स्थापना किया। वहां एक प्रसाद भी निर्मित हुआ था। महाराज समय समय इस स्थान में वास करते थे। वहां बहुत बडा जलाशय, राजबाडी के चिन्ह, प्रशस्त राजवर्त्म तथा कुन्जवन प्रभृति अति क्षीण स्मृति चिन्ह यद्यपि विद्यमान है। एक ईष्टक निर्मित देव मन्दिर दण्डायमान रहकर निर्माता की कीर्ति घोषणा कर रहा था। 1328 त्रिपुराब्द को(1918 ई0) में प्रबल भूमिकम्प से वह धराशायी तथा विचूर्णनित हुआ है। जन प्रवाद यह है कि उक्त मन्दिर में महाराज कल्याण ने काली मूर्ति स्थापना की थी अब उस देवी मूर्ति के किसी रुप का संधान नहीं मिलता। मन्दिर के गात्र में शिलालिपि संयोजित था। अनेक काल पूर्व ही वह स्थानान्तरित किया गया। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि यह शिलाखण्ड राजधानी अगरतल्ला में स्थानान्तरित किया गया था किन्तु अनेक चेष्टा के बाद भी इसका संधान नहीं मिल रहा है।

---

(1) शिलालिपि संग्रह–18–19 पृष्ठ।

तृतीय लहर 166

चित्र तृतीय लहर–166.1

राजमाला तृतीय लहर पृष्ठ संख्या – 166



श्री श्री कालिकादेवी मन्दिर – कल्याणपुर

कल्याणपुर मन्दिर के भग्न स्तूप



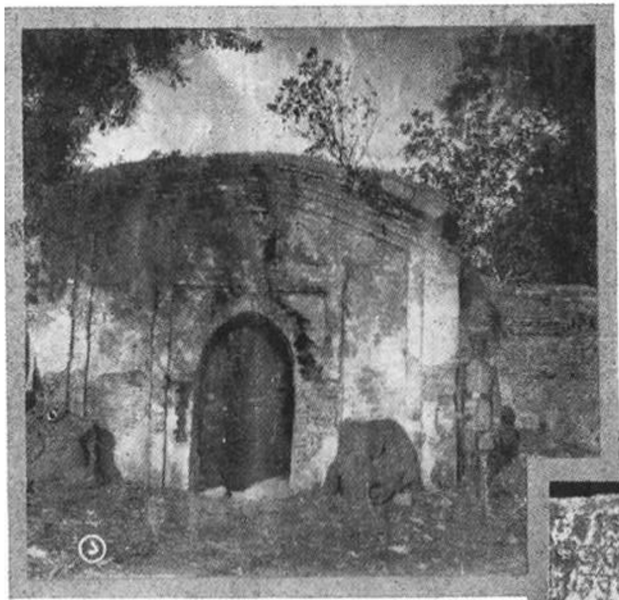




उक्त मन्दिर के व्यवहृत दो शिल्प

तृतीय लहर 166
चित्र तृतीय लहर–167

राजमाला तृतीय लहर



महादेव बाड़ी का सिंह द्वार
उदयपुर



सिंहद्वार पर संयोजित शिलालिपि

तृतीय लहर 167

उदयपुर के भैरव विग्रह(महादेव) महाराज धन्यमाणिक्य के द्वारा स्थापित है। राजमाला प्रथम लहर के 129 पृष्ठ पर यह विग्रह तथा मन्दिर का मूल विवरण प्रदान किया गया है।

महादेव बाडी सुदृढ तथा प्राचीर द्वारा घेरा गया है। सिंह द्वार के उपरी भाग में एक शिलालिपि संयोजित है। इस लिपि के अनेकांश विलुप्त होने के कारण पाठोद्धार करना विशेष कष्टसाध्य हुआ है। पूज्य पाद पंडित श्रीयुक्त चन्द्रोदय विद्याविनोद महाशय द्वारा लिपि के जो अंश अविकृत देखा गया था, वर्तमान काल में इसका भी कोई कोई अक्षर नष्ट हुआ है। अर्थात पंडित महाशय के संग्रहित लिपि ही अब एकमात्र अवलम्बनीय है, जिसका उद्धार किया पाठ निम्न प्रदान किया गया है।

तव   सुमता
वितरनो नन्दितार्थी स जीयात् श्री श्री कल्या
ण देव स्त्रिपुर नरपतिः श्रीपति बासु श
द्य प्रोद्यत प्रासादराजोभूपति तू तिल
मातः स्याच्चिराय। यावद् ब्रह्माण्ड भा
ण्डोदर रण ल ` श्रीहरि या
मण्डली   द्या
सचकित   म
प्रताप   श्रीश्रीकल्याण दे
: सन्मठाख्या सवा
दश   शाके।1 (1)

इस लिपि के दो स्थान में "श्रीश्री कल्याण देव" नामोल्लेखन रहने से समझा जाता है कि प्राचीर महाराज कल्याणमाणिक्य द्वारा निर्मित किये गए थे। इस प्राचीर के वेध आठ हस्त परिमित है। इसके उपर से सरलता से लोग आ जा सकते है। भीतर से प्राचीर के शिखर पर चढने के लिए सीढी है। अवस्था दृष्ट से स्पष्ट ही समझा जाता है। प्रहरीगण इस प्राचीर के उपर घूम कर चारों तरफ के अवस्था को लक्षण करते है। यह इतना सुदृढ है कि आपातकाल में इसके द्वारा दुर्ग के कार्य साध कर पाते थे। वर्तमान काल में प्राचीर के उपर प्रकाण्ड वट वृक्ष ने जन्म लेकर शिखर जाल विस्तार द्वारा उसको प्रबल तरीके से आक्रमण किया है। परन्तु अभी भी उसकी विशेष कोई क्षति नहीं कर पाये।

(1) शिलालिपि संग्रह– 10 पृष्ठ।

तृतीय लहर 168

उस घेराव के मध्य शिव मन्दिर सहित और दो मन्दिर वर्तमान है। शिव मन्दिर के बाद ही दो मन्दिरों का निर्माण हुआ है, एसा कहा जाता है। इस मन्दिर के गात्र में संयोजित शिलालिपि के कुछ अंश नष्ट हुए है। विद्याविनोद महाशय के विस्तार प्रयास से जो लिपि उद्धार किया गया वह निम्न में प्रदान किया गया है।

मठ मतिशयितं   धन्य मा
ति जीर्णं निरुपम महिमा
निर्माय सान्तं तुहिनगिरि
सुतावल्लभायातिबेलं प्रादात्तं कौतूकीनो हर
हरिचरणार्च्चादिभाजी प्रवीणः।। शाके रामाब्धि बा
णा बनि परिगणिते धन्य माणिक्य देव स्योच्चैः पू
न्याय नृत्यच्चतुरुदधिवधुगीत कीर्ते मठं तं। श्रीश्री
कल्याण देव स्त्रिपुर नरपतिश्चन्द्रवंशावतंसः प्रादा
दुत्सृज्य धर्म्मव्यव्यवहृतवपूषे भक्तितः शंकराय।
:।। 4।। शाके 1573।। :।। :।।

श्रद्धेय विद्याविनोद महाशय ने लिपि के लुप्तांश पूर्ण करके निम्नोक्तोरुप में पाठ निर्णय किया है। तत्कर्तृक पूर्णित अंश ( ) बन्धनी के मध्य स्थापन किया गया है।

(प्रादाद् यं शंकरार्थं) मठ मतिशयितं धन्यमा(णिक्य देवः)
(दृष्टातन्चा) ति जीर्णं निरुपममहिमा(वीरकल्याण देवः)
(भूयो) निर्म्माय सान्तं तुहिनगिरिसुताबल्लभायातिवेलं
प्रादात्तं कोतुकी नो हरहरिचरणार्च्चादिभाजी प्रवीनः
शाके रामाब्धिबाणाबनि परिगणिते धन्यमाणिक्य देव–
स्योच्चैः पूण्याय नृत्यच्चतुरुदधिवधूगीतकीर्तेमठं तम्।
श्रीश्रीकल्याण देव स्त्रिपुर नरपतिश्चन्द्रवंशावतंसः
प्रादादुत् सृज्य धर्म्म व्यवहृतवपूषे भक्तितः शंकराय।
:।। 4।। शाके 1573।। :।। :।।

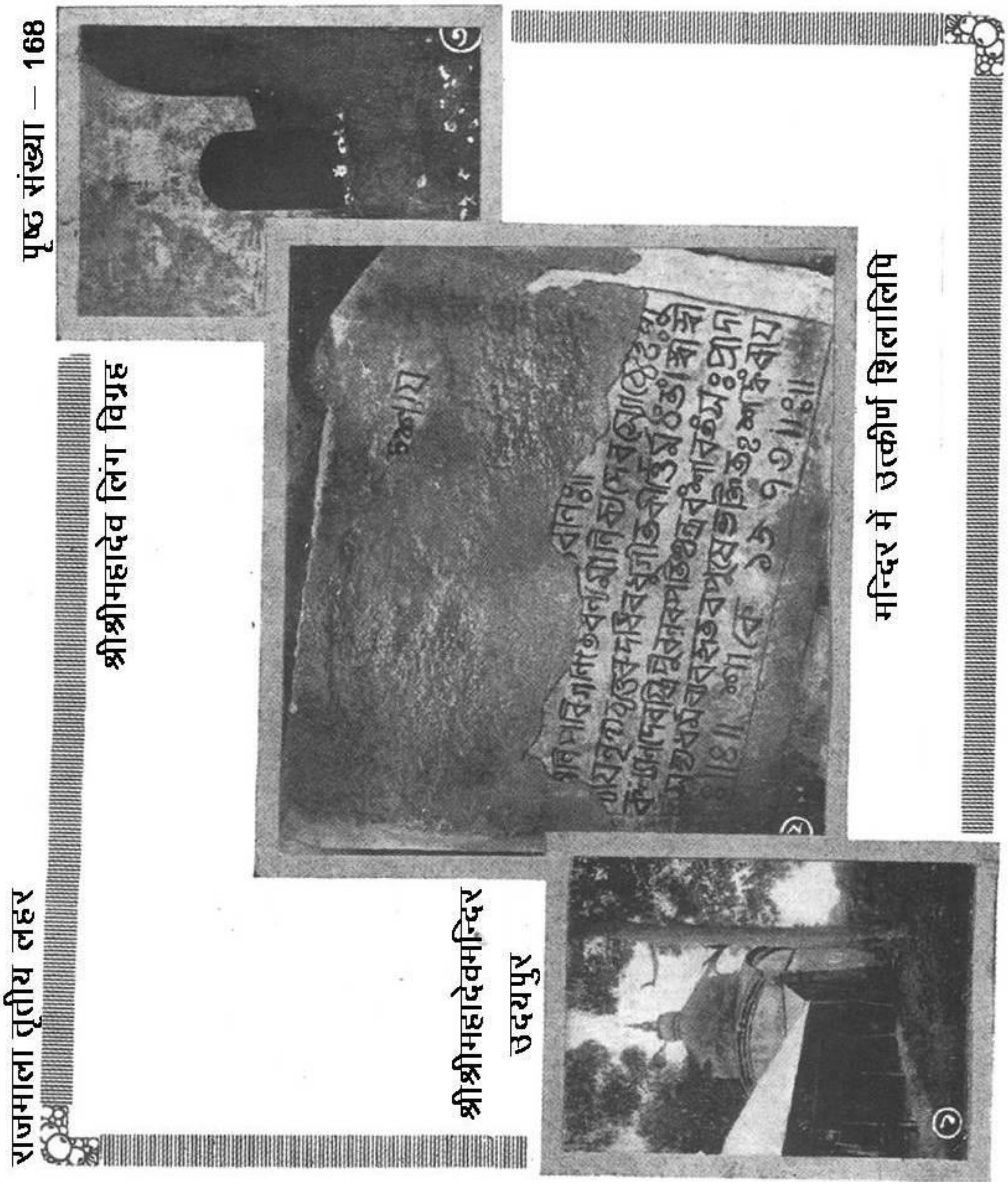
(1) लिपि के मूल मर्म यह है–

महाराज धन्यमाणिक्य ने महादेव के प्रीत्यर्थे मठ प्रदान किये थे।

वह अतिशय जीर्ण अवस्था प्राप्त होने से हरिहरचरण पूजापरायण निरुपम

तृतीय लहर 168

चित्र तृतीय लहर–168



तृतीय लहर 169

महिमान्वित वीर कल्याण देव सम्पूर्ण रुप से निर्माण करवाकर महादेव को दान किया

2. चार समुद्रवधु नाचते नाचते जिसका कीर्तीगान करते रहते है। धन्यमाणिक्य के पूर्ण्यार्थ चन्द्रवंशीय त्रिपुराधीश्वर श्रीश्री कल्याण देव 1573 शक पूण्यप्रद शंकर को भक्ति पूर्वक यह मन्दिर उत्सर्ग किया।

महाराज धन्यमाणिक्य, त्रिपुरासुन्दरी विग्रह तथा शिव लिंग के प्रतिष्ठिता है।(1) प्रथम लहर के 129 पृष्ठ में तथा द्वितीय लहर के 101 पृष्ठ में इस विषय का संक्षिप्त विवरण प्रदान किया गया है। पीठ देवी प्रतिष्ठा के समकाल से भैरव लिंग प्रतिष्ठित होना स्वाभाविक है तथा मन्दिर के गात्रस्थ शिलालिपि के पाठ आलोचना में भी जो अनुमत होगा। शिला शासन से उत्कीर्ण वाक्य द्वारा यह भी जाना जाता है, महाराज धन्य माणिक्य के निर्मित मन्दिर के जीर्ण होने से महामति कल्याणमाणिक्य, धन्यमाणिक्य के पूण्यार्थ वर्तमान मन्दिर निर्माण किया था। महाराज कल्याण अन्य साधारण की उदार भाव दर्शन को शिलालिपि के संग्राहक श्रद्धेय विद्याविनोद महाशय कहते है।

"श्लोक में देखा जाता है कि धन्य माणिक्य पूण्यार्थ महाराज कल्याणमाणिक्य मन्दिर को महादेव को दान करते है। इससे कल्याणमाणिक्य की लोकोत्तर सदाशयता प्रकाश में आती है। कारण धन्यमाणिक्य कल्याणमाणिक्य से बहुपुरुष अन्तर है तथापि वे मन्दिर को अपने पिता / पितामह के पूण्यार्थ उत्सर्ग न करके, बहुपुरुष अन्तर पर उक्त महात्मा के पूण्यार्थ उत्सर्ग किया था। धन्यमाणिक्य प्रथम मन्दिर के स्थापिता थे, ऐसा बोध होता है। उदार हृदय कल्याणमाणिक्य के हृदय में इस तरह के संचार हुया था।

शिलालिपि संग्रह– 16 पृष्ठ।

हम लोग पंडित महाशय के उक्त का सम्पूर्ण समर्थन करते है। कल्याणमाणिक्य के इस प्रकार सदाचरण द्वारा उक्त मन्दिर के प्रथम निर्माता जो धन्यमाणिक्य थे, के जानने का उपाय हुआ है। शिलालिपि में विवरण समावेश न होता तो उसका जानने का पता भी पथ रुद्ध रहता।

शिव मन्दिर पुनर्बार जीर्ण होने से महाराज राधाकिशोरमाणिक्य के शासनकाल में जीर्णोद्धार कार्य सम्पादित हुआ है। इस संस्कार के कोई रुप निदर्शन मन्दिर के गात्र में रक्षित नहीं किया गया है।

मन्दिर में कृष्णप्रस्तरमय सुबृहत बाणलिंग प्रतिष्ठित है। मेरुतन्त्र, वीर मित्रोदय, सूत संहिता, योगसार तथा हेमाद्रि धृत लक्ष्मण काण्ड में बाणलिंग के

---

(1) धन्यमाणिक्य प्रंसग में मिलता है–

आर एक मठ तबे अपूर्व गठिलो।	और एक मठ तब अपूर्व गठन।
सेइ मठ महादेव स्थापन कोरिलो।।	उस मठ में महादेव स्थापन किये।।
त्रिपुर वंशावली	त्रिपुर वंशावली

विवरण मिलते है। मूलतः नर्मदा नदी संजात लिंग ही बाणलिंग के मध्य प्रशस्त हैं, ऐसा परिगणित है। गंगा तथा यमुना नदी में भी बाणलिंग मिलता है। पुराने काल के बाणासुर के तपस्या से परितुष्ट होकर आशुतोष ने उसकी प्रार्थना पूर्ण करने निमित्त लिंगरुप में वे अवस्थान हुये थे। इसलिए इस लिंग का 'बाणलिंग' नाम हुआ है। बाणलिंग के लक्षण भेद में इन्द्रलिंग, आग्नेयलिंग, याम्यलिंग, नैऋतलिंग, बारुणलिंग, वायुलिंग, कुबेरलिंग, रौद्रलिंग, वैष्णवलिंग, स्वयम्भुलिंग, मुत्युन्जयलिंग तथा नीलकंठलिंग प्रभृति नाम भेद हुए थे। हम लोगों के आलोच्य में उदयपुर के भैरव विग्रह दण्डाकृति हैं, शास्त्रकार गणों ने इस श्रेणी के लिंग को याम्यलिंग आख्या प्रदान किया है। याम्यलिंग के लक्षण यह है।

"दण्डाकारं भवोदयाम्यमथवा रसनाकृति।
यदयदुक्त सहतैर्ण निर्निक्तं ज्ञायते तदा।
निषिक्तं निधनन्तेन क्रीयते स्थापितेन तू।।"

वीरमित्रोदय धृत कालोत्तर।

बाणलिंग में सर्वदा महादेव अवस्थान करते है तथा इस लिंग के अर्चना से करोड़ लिंग अर्चना के फल का लाभ होता है।(1) स्त्री, शूद्र सबको ही इस लिंग के अर्चना करने का अधिकार है। यह विग्रह सर्व श्रेणी भक्त मंडली समवेत के केन्द्र भूमि सुपवित्र पीठ क्षेत्र में प्रतिष्ठित होना, शैव्य, शाक्य, वैष्णव तथा बौद्ध प्रभृति सब के द्वारा ही अर्चना योग्य हुए है।

सुना जाता है इस विग्रह का अनेकांश भूगर्भ में गड़ा हुआ है। कहते है, उदयपुर के राजपाट उठने के पहले काल में लिंग स्थानान्तरित करने के लिए बहुत चेष्टा करने के पश्चात भी उत्तोलन न कर पाने के कारण वह संकल्प परित्याग करना पड़ा।

कैलारगढ़(कसबा) में श्रीश्री जयकाली का मन्दिर, महाराज कल्याण का और एक उल्लेख योग्य कीर्ती है। बांगला के राजमाला में इसका उल्लेख नहीं है। ऐसा एक प्रयोजनीय कथा बाद में देने योग्य निर्देश करना दुःसाध्य है। बांगला के पूथि में न भी हो तो संस्कृत राजमाला में इस मन्दिर के विवरण समावेष हुया है। उक्त ग्रन्थ के कल्याणमाणिक्य प्रसंग में मिलता है।

राजा सौ कसबा ग्रामें कृत्वा कल्याण सागरं।
तदन्ते दुर्ग मध्ये च स्थापयामास कालिकां।।"

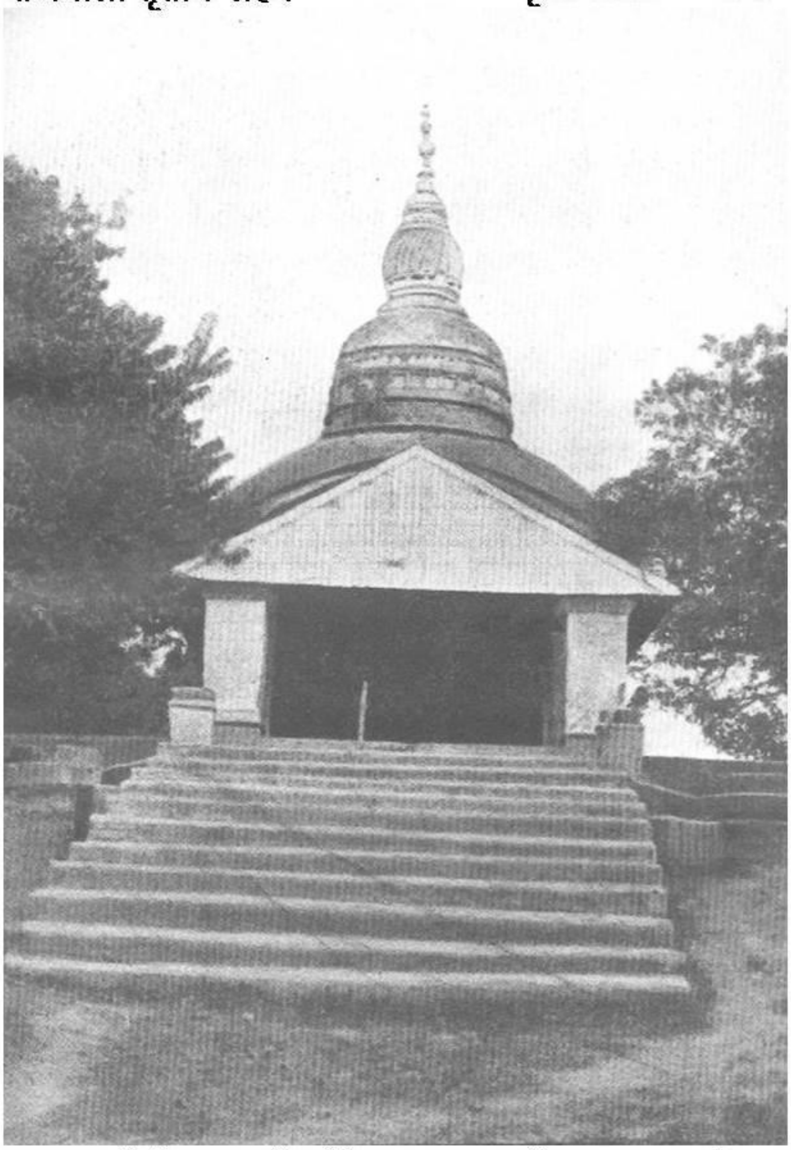
---

(1) अन्येषां कोटि लिंगानां पूजने यत् फलं लभेत्।
तत् फलं लभते मत्यो बाणलिंगयक पूजनात्।।
याज्ञवल्क्य संहिता

तृतीय लहर 170

चित्र तृितीय लहर–170

राजमाला तृतीय लहर **पृष्ठ संख्या – 170**



श्रीश्रीजयकाली मन्दिर – कस्बा {कमला सागर}

तृतीय लहर 171

श्रेणीमाला ग्रन्थ में भी इस विषय का उल्लेख मिलता है। सम्भवतः संस्कृत राजमाला से ही इस विषय को उक्त ग्रन्थ में संग्रह किया गया है। इसमें लिखा गया है–

अशंक विक्रमे छिलो ज्ञाने महामति।	असंख्य विक्रम से थे ज्ञान के महामति।
कल्याणमाणिक्य नामे होइलो नृपति।।	कल्याणमाणिक्य नाम से हुए नृपति।।
कसबाते आपन नामे सागर खनिलो।	कसबा में अपने नाम से सागर खुदाई।
उपर किल्लाते कालिका स्थापन करिलो।।	उपर किल्ला में कालिका स्थापना किये।।
श्रेणीमाला	श्रेणीमाला

यहाँ पर अल्प उन्नत पर्वत के सानू देश में दुर्ग के मध्य में महाराज विजयमाणिक्य के शासनकाल में काली मूर्ति को प्रतिष्ठित किया गया, यह मूर्ति मिट्टी की थी या पाषाणमयी थी, जानने का कोई उपाय नहीं है। देवी जी का मन्दिर भूसे तथा बाँस(1) के द्वारा निर्माण होने की खबर त्रिपुरवंशावली के आलोचना करने पर मिलती है। उक्त ग्रन्थ के विजय माणिक्य प्रसंग में लिखा गया है–

तार परे कर्मचारी प्रति आदेशिया।	उसके बाद कर्मचारी प्रति आदेश दिये।
सेनापति दुइ जन दिलो पाठाइया।।	सेनापति दो जन को दिये बेच।।
कसबा जय काली परे बान्ध एक घर।	कसबा जय काली बाद में बान्धे एक घर।
किल्ला मध्ये आछे देवी पर्वत शिखर।।	किल्ला के बीच है देवी पर्वत शिखर।।
काली पूजा हेतू एक द्विज स्थिर कोरि।	काली पूजा हेतू एक द्विज स्थिर किये।
प्रत्यः करिबे पूजा सेइ पूजा हरि।।	प्रातः करके पूजा वहाँ पूजा के हरि।।
कामला सह(1) सेनापति कसबा पँहुछिलो।	कामला सह(1) सेनापति कसबा पँहुचे।
मनोरम करि एक गृह निर्माइलो।।	मनोरम करके एक गृह निर्माण किये।।
त्रिपुरवंशावली	त्रिपुरवंशावली

इसके द्वारा समझा जाता है कि महाराज विजय 1450 से 1492 शक के मध्य(उसके शासन काल में) भूसे के गृह में विग्रह स्थापन किया था। इसके बाद महाराज कल्याणमाणिक्य ने वर्तमान इन्टों का मन्दिर निर्माण कराया। इस मन्दिर के सम्बन्ध में स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय ने कहा है–

"दक्षिण दिशा के शिलालिपि के अन्तभाग के केवल 'स 1097' अक्षर दृष्ट होता है। अवशिष्ट समस्त ही विनष्ट हुआ है। "

अतएव कैलाशबाबू ने सिद्धान्त किया है–

"महाराज कल्याणमाणिक्य इस मन्दिर के निर्माण कार्य को शेष नहीं कर पाये। कारण मन्दिर के दक्षिण तरफ खुदाई किये गये लिपि में हमारे 'स 1097' प्राप्त हुआ है। महाराज

(1) त्रिपुरा अंचल के गृह निर्माण लोग के प्रधान व्यक्ति को 'छप्परबन्द' तथा उनके सहयोगी अन्य दूसरों को 'कामला' कहा जाता है।

तृतीय लहर 172

कल्याणमाणिक्य ने 1069 त्रिपुराब्द में मानव लीला समाप्त किया, तत्पश्चात 30 वर्ष में मन्दिर का निर्माण कार्य का समाधान हुआ।

कैलाश बाबू राजमाला दूसरा भाग 7वां अध्याय 82 पृष्ठ।

कैलाश बाबू के इस सलाह के साथ एका नहीं हो रहा है। महाराज कल्याणमाणिक्य ने 1548 शक में राज्य लाभ करके 1582 शक तक(1626–1660 ई0) तक राजत्व किया था। मन्दिर के उत्तर तरफ संयोजित शिलालिपि पर इस मन्दिर के निर्माण के विषय के बारे में लिखा गया है। लिपि की अवस्था से ही यह स्पष्ट प्रतीयमान होता है। दुख का विषय है कि इस टूटे हुए प्रस्तर के फलक द्वारा वर्तमान काल में कोई तथ्य उद्धार करने का उपाय नहीं है। कल्याणमाणिक्य के शासनकाल में 1548 शक से 1582 शक के मध्य युक्त मन्दिर निर्मित हुआ था। मन्दिर के दक्षिण की तरफ लिपि में जो 'स 1097' अंक मिले है। वे त्रिपुरा सन् है, जिसमे कोई संदेह नहीं है। यह महाराज द्वितीय रत्नमाणिक्य के द्वितीय बार का राजत्व काल है। महाराज कल्याण के स्वर्गारोहण के 27 साल बाद शेषोक्त प्रस्तर लिपि में संयोजित हुआ है। इसके द्वारा यही सूझा जाता है। महाराज कल्याणमाणिक्य द्वारा मन्दिर निर्माण होने के 27 वर्ष के बाद द्वितीय रत्नमाणिक्य कर्तृक जो पुनः संस्कारित हुआ था, कैलाश बाबू के कथानुसार 1097 त्रिपुराब्द में मन्दिर के निर्माण कार्य खत्म होने पर भी एक समय में पूर्वोत्त दो खण्ड शिलालिपि योजना के हेतू नहीं होते थे। वे स्वतन्त्र स्वतन्त्र समय के संयोजित कहना ही प्रतीत होता है। मन्दिर के हर बार संस्कार निदर्शन स्वरुप स्वतन्त्र स्वतन्त्र शिलालिपि व्यवहार के नियम श्रीश्री त्रिपुरा सुन्दरी देवी के मन्दिर में परिलक्षित हो रहे है। इस स्थल में भी वही पद्धति अवलम्बित हुआ था। ऐसा समझा जाता है कि उत्तर की तरफ टूटे हुए प्रस्तर के फलक के वर्तमान अवस्था निम्न प्रदान किया जा रहा है।

....
नधीमता.......मान शूरेन ....कुन्ड शिल शि...
कालिका........पयाता......कालिका प्रतिमा रम्याः ...
दांग शिव.................कालिका आशा................
बृर्द्दि......................कीर्स्ते नगरे नरसं ....
तश.........थाः कालिका प्रीत ....
य .... रम्याः सदान ....
ध .... त वैरिनाः तथौः ....
....|ः शका ....

इस असम्पूर्ण लिपि द्वारा मुख्यतः मर्म उद्घाटन का कोई उपाय नहीं है। मन्दिर श्रीश्री कालिका देवी के उद्देश्य से निर्माण किया गया था, यही मात्र समझा जाता है। यह श्रीश्री त्रिपुरा सुन्दरी देवी के मन्दिर के अनुरुप प्रणाली से गठन किया गया परन्तु उसके अपेक्षा आकार में छोटा है। इसके बाहरी भाग की लम्बाई तथा चौडाई के परिमाप हर तरफ 12 हाथ, चारों तरफ देवालय की मोटाई चार हाथ, केवल एक मात्र 4x4 हस्त परिसर प्रकोष्ठ है। अपेक्षाकृत छोटे तथा पतले ईंट की सृदृढ गाँथनि द्वारा यह मन्दिर निर्माण किया गया है। दूर स्थित तोप की गोली से यह सहज ही विनष्ट नहीं हो सकता। इसके प्राचीनत्व कुछ अधिक ढाई शताब्दी तक है।

इस स्थान में त्रिपुरेश्वर का एक दुर्ग भी था, जो पहले ही कहा गया है। देवी के मन्दिर के सामने खड़े हुए यह देखने से लगता है कि यह स्थान के निर्वाचनकारी समर विद्या में निपुण थे। दुर्ग के पीछे भाग में सुदृढ परन्तु पर्वत प्राचीर तथा सम्मुख भाग में समतल कृषि क्षेत्र है। दुर्ग अल्प उन्नत पहाड के उच्च स्थान पर अवस्थित है। इस स्थान पर खड़े होने से इस समीप ही बहुत दूर के स्थान दृष्टिगोचर होते है। पश्चात् आश्रय ग्रहण योग्य अनेक उपतक्यका तथा गहबर है।

मन्दिर के अन्दर भाग में वर्तमान काल में प्रस्तरमयी दश भुजा मूर्ति प्रतिष्ठित है। इस मूर्ति के सम्बन्ध में कैलाश बाबू कल्याणमाणिक्य के प्रसंग में कहते है। –

''उन्होने कैलाशगढ़ दुर्ग में कृष्णवर्ण प्रस्तर से निर्मित सिंह वाहिनी, महिषासुरमर्दिनी दस भुजा भगवती की मूर्ति स्थापना की थी। इस प्रतिमा के निम्न भाग में एक शिव लिंग खुदा होने के कारण यहाँ काली मूर्ति है। ऐसा ही जान पड़ता है।''

कैलाश बाबू के राजमाला –द्वितीय भाग सप्तम अध्याय 81–82 पृष्ठ।

यह भ्रमसंकुल उक्ति है। कल्याणमाणिक्य के शासन काल के पूर्व ही(महाराज विजयमाणिक्य के समय) यहाँ पर कालिका विग्रह स्थापना, का विवरण पहले ही प्रदान किया गया है। संस्कृत राजमाला तथा श्रेणीमाला ग्रन्थ के जो वचन इसके पहले उद्धृत हुए है, वे आलोचना से जाने जाते है। कल्याणमाणिक्य ने दुर्ग में कालिका की मूर्ति प्रतिष्ठित की थी। दश भुजा मूर्ति के उल्लेख नहीं है। कल्याणमाणिक्य ने मन्दिर निर्माण करवाकर उसमें विजयमाणिक्य के स्थापित विग्रह या नये विग्रह की प्रतिष्ठा किये थे, को जानने का कोई उपाय नहीं है। परन्तु उसमें स्थापित जो मूर्ति है, वर्तमान मूर्ति नहीं है। राजमाला की आलोचना करने पर स्पष्ट ही प्रमाणित हो जायेगा। यह मूर्ति द्वितीय रत्नमाणिक्य के शासनकाल में स्थापना की गयी है। राजमाला में रत्नमाणिक्य के प्रसंग में लिखता है–

कसबाते काली मूर्ति कोरिलो स्थापन	कसबा में काली मूर्ति की स्थापना
दश भुजा भगवती पतित तारन।।	दश भुजा भगवती पतित तारन।।

इस दशभुजा मूर्ति स्थापन काल में विजयमाणिक्य या कल्याणमाणिक्य स्थापित विग्रह विद्यमान थे कि नहीं, उस प्राचीन विग्रह की क्या अवस्था घटित हुए थे कि नहीं, जो जाना नहीं जा सकता। वर्तमान मूर्ति सम्बन्धित विवरण राजमाला के चतुर्थ लहर के रत्नमाणिक्य खण्ड में प्रदान किया जायेगा।

पुण्यजनक कार्य — अमर माणिक्य ने भूमि आदि विविध दान किये हैं। उन्होने जगन्नाथ विग्रह स्थापनोपलक्ष्य में चौदह गाँव ब्राह्मण को दान करने से, तथापि चौदहग्राम नाम से एक परगना की सृष्टि हुई है। उनकी सभा में दो सौ पण्डित नियुक्त थे। वे लोग हर समय शास्त्र आलोचना करने में नियुक्त रहते थे। महाराज अमर माणिक्य ने तुला पुरुष दान, कल्पतरु दान आदि बहुत पुण्यजनक कार्य किये थे।

महाराज राजधरमाणिक्य हिंसावृत्ति से दूर, न्ष्ठिावान वैष्णव थे। वे प्रत्येक दिन पंचपात्र अन्नदान करते थे। महाराज राजधरमाणिक्य हर समय शास्त्र आलोचना करने में नियुक्त रहते थे। उसके एक पात्र राजपुरोहित सर्वभौम भट्टाचार्य, एकपात्र विरिंची नारायण नामक पुरोहित, एकपात्र चतुर्दश देवता के प्रधान पूजक(चन्ताई) तथा दो पात्र दूसरे दो पुरोहित को प्रदान किया जाता है। कपिला की सेवा भी राजा के प्रातः कार्य में भी परिगणित था। अमर माणिक्य के समान इसके समय में भी दो सौ पंडित द्वारा एक सभा गठन किया गया था। वे हर समय शास्त्रीय व्यवस्था दान करते थे। महाराज प्रतिदिन भगवत् श्रवण करते थे।(1) दिन रात्रि अष्ट प्रहर राज भवन में श्री श्री हरिनाम के कीर्तन होते थे। इसलिए वेतन भोगी आठ जन गायक नियुक्त थे। पिमृ मातृ श्राृद्ध, ब्राह्म सेवा आदि प्रतिदिन का कार्य था। इसके अलावा महादान, तुला पुरुष दान, भूमिदान इत्यादि सत्कार्य के लिए चिरस्मरणीय हुए थे। अन्तिम काल में हरि कीर्तन में ही निमग्न अवस्था में उनके स्वर्गालाभ घटित हुए।

महाराज यशोधर माणिक्य पुण्यात्मा राजधर्म प्रतिपालक तथा धार्मिक थे। उसके राजत्वकाल में राष्ट्रीय उपद्रव होने के कारण उनको राज्य रक्षा के कारण ही सर्वदा विवृत रहना पडता है अतः धर्म कार्यनुष्ठान में विशेष मन नहीं लगा पाये।

---

(1) पुराने काल में राजा तथा धनी वैश्य लोग इत्यादि गण व्यक्ति लोग पुराण श्रवण करना अवश्य कर्तव्य कह कर ज्ञान करते थे। प्राचीन ग्रन्थ में इसका विस्तर प्रमाण मिलते है। यहाँ तक किसी की व्याध जाति कालकेतू भी राजत्व लाभ करके यह नियम पालन करने के निर्देश करते थे, ऐसा मिलता है। यथा–

गुजराटे कालकेतू ख्यात होइला राजा। गुजरात के कालकेतू ख्याति हुए राजा।

आर यतो भुइआ राजा सबे कोरे पूजा।।	और जितने भुइआ राजा करे सब पूजा।।
विहान विकाले वीर सुनेन पुराण।	विहान तथा शाम वीर सुने पुराण।
कृष्णेर करेन पूजा होइया सावधान।।	कृष्ण के करे पूजा होकर सावधान।।
कवि कंकड चंडी	कवि कंकड चंडी

महाराज कल्याणमाणिक्य देव द्विज में श्रृद्धावान थे। पूर्व पुरुषगण की तरह ये भी तुला पुरुष दान, महादान, कपिला दान, भूमि तथा हस्ती घोडा इत्यादि दान द्वारा अमोघ पुण्य अर्जन करते थे। उनका तुला पुरुष दान एक बहुत बड़ा विषय है। इस उपलक्ष्य में मथुरा, बनारस, उडीसा तथा सेतुबन्ध इत्यादि दूर देश के ब्राह्मण पंडितगण निमंत्रित हुए थे। देश देशान्तर से बहु संख्यक ब्राह्मणों तथा याचकों ने उपस्थित होकर इस महोत्सव में आशा के अतिरिक्त दान प्राप्त किये थे।

तीर्थ पर्यटन तीर्थ पर्यटन में राजगण के विशेष आग्रह थे। महाराज यशोधर माणिक्य ने शेष जीवन में तीर्थवासी हुए थे तथा वृद्ध आयु में श्री वृन्दावन तीर्थ भ्रमण कर धाम में देह रक्षा किया।

सामरिक बल तथा समर विवरण

सामरिक बल

सैन्य संख्या महाराज अमर माणिक्य ने दृढहस्त से त्रिपुरा के राजदण्ड धारण किया था। उनके समय में सैन्य संख्या नितान्त कम नहीं थी। राजमाला आलोचना में इसका आभास मिलता है। महाराज अमर ने तरप देश तथा श्रीहट्ट विजय काल में एक सौ सेनापति सह बाईस सहस्र सैन्य को युद्ध के लिए प्रेरण किया था। भुलुआ के युद्ध में छत्तीस हजार त्रिपुर सैन्य युद्ध क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। सराइल के ईशा खाँ की सहायता के लिए बावन हजार सैन्य प्रेरण के प्रमाण मिलते है। जो बावन हजार सैन्य युद्ध क्षेत्र में प्रेरण करने में सक्षम हुए, उनके सैनिक बल जो नितान्त कम नहीं थे, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

सैन्यगणों का श्रेणी विभाग राजमाला आलोचना से जाना जाता है कि इस समय त्रिपुरा के सामरिक विभाग में तीरअन्दाज, गोलअन्दाज, ढाली, गजारोही तथा अश्वारोही सैन्य नियुक्त थे। महाराज विजयमाणिक्य के समय से पठानगणों ने सैनिक विभाग में प्रवेश लाभ किया। ये लोग प्रधानतः अश्वारोही दलभुक्त थे। त्रिपुरा, रियांग, जमातिया तथा कूकि इत्यादि पर्वतीय जाति, जो हर समय ही सामरिक विभाग के मेरुदण्ड स्वरुप मिलते है। बंगालीगण भी प्राचीन काल से ही इस विभाग में प्रविष्ठ हुए थे। महाराज अमर माणिक्य ने फिरिंगी(पूर्तगीज) सैन्य द्वारा और एक नया दल संगठन किया था। ये लोग प्रधानतः गोलअन्दाज के कार्य करते थे।(1)

---

(1) पूर्तगीज सैनिक ने विभाग में कार्य करने आकर उनके अनेक लोगों ने स्थानीय निम्न श्रेणी के कन्याओं के पाणिग्रहण कर अन्त में राज्य के स्थायी आदिवासी हुए थे। इनके वंशधर गण वर्तमान

तृतीय लहर 176

सभी विभागों में ही पार्वत्य सैनिक पुरुष गण के अधिपत्य रहने के परिचय मिलते है।

सेनापतिगणों की उपाधि इस समय सेनापतिगणों के मध्य नारायण, नाजिर, बड़ुआ व सेनापति इत्यादि उपाधि प्रचलित रहने के प्रमाण मिलते है। यह सब उपाधि नये नहीं है। अनेक पहले से ही प्रचलित था।

सेनापतिगणों की कार्यदक्षता द्वारा लब्ध उपाधि सेनापतिगण कार्यदक्षता द्वारा इसे पारितोषिक स्वरुप नानाविध उपाधि प्राप्त करते थे। इस समय समर भीम, समर प्रताप, रणगिरि, रणभीम, रणजुझार, वीर झम्प, गज सिंह, त्रिविक्रम, शत्रुमर्दन, सुप्रताप रण सिंह तथा समर वीर इत्यादि उपाधिधारी सेनापति विद्यमान थे। वर्तमानकाल में उनमें से अनेकों के नाम जानने के उपाय नहीं है। उस काल में ये लोग उपाधि द्वारा ही परिचित थे। नामोल्लेख करने का प्रयोजन नहीं था। यथा "समर प्रताप नारायण रणगिरि नारायण इत्यादि।

युद्धास्त्र

युद्धास्त्रों के प्रकारभेद इस समय जाठि, खड्ग(तलवार), धनुर्बाण, ढाल, बन्दूक तथा तोप की सहायता से युद्ध किया जाता था। आग्नेयास्त्र के प्रचलन आरम्भ होने पर इस काल तक जाठि तथा तीर इत्यादि युद्धास्त्र वर्जनीय नहीं था। शत्रु को मारने के लिए विष लगा हुआ तीर, बन्दूक की अपेक्षा किसी अंश में कम कार्यकारी नहीं थे। इस समय चर्म के कमान व्यवहार करने की प्रथा थी। यह केवल मात्र भीषण शब्द करके फट जाता था। शत्रु पक्ष में भय फैलाने के उत्पादन के उद्देश्य से यह व्यवहार होता था।(1)

युद्ध यान पार्वत्य प्रदेश में हस्ती तथा घोडा ही युद्ध क्षेत्र के प्रधान अवलम्बन थे। यातायात के सुविधा के लिए स्थान विशेष जलयान तथा तन्जाम व्यवहार के निदर्शन मिलते है।

रण वाद्य काडा, ढक्का, डंका, ढोल, वाँशी तथा कर्णाल इत्यादि नाना विधि यंत्र युद्धकाल में वादित होते है। रणोन्मत्त सैन्य गण का उत्साह वर्धन करते थे।

....

काल में भी अगरतला के साथ स्थित स्थान में वास करते है। स्वर्गीय महाराज वीर चन्द्र माणिक्य के शासन काल में भी इनमें से अनेक सैनिक विभाग के कार्य में नियुक्त थे। अब ये लोग कृषि कार्य द्वारा कष्ट से जीविका निर्वाह कर रहे है। पूर्तगीजगण के निवास स्थान ने 'मेरीयम नगर' आख्या लाभ किया है। अब यह नाम स्थिर है। साधारण लोग इसे मैरम/मरियम नगर कहते है।

(1) महाराज कल्याणमाणिक्य के सहित युद्ध काल में मुगलगण चर्म के कमान व्यवहार किया था। अतएव समसेर गाजी द्वारा त्रिपुरा के विरुद्ध में व्यवहार के प्रमाण मिलते है।

व्यूह रचना इस समय त्रिपुरा के सेनापति गण व्यूह रचना कार्य में सुनिपुण थे। श्रीहट्ट के युद्ध में त्रिपुरा सैन्य गण गरुड व्यूह रचना करके अग्रसर हुए थे। इस प्रकार व्यूह रचना में निपुण उन सेनापति की उपाधि, ''गरुड नारायण'' था।

दुर्ग तथा सेना निवास

दुर्ग तथा सेना निवास स्थान निर्णय इस समय मेहेरकुल दुग, चण्डीगढ, कैलारगढ, विशालगढ, छयघरियगढ, गामारियागढ तथा कल्मिगढ प्रतिष्ठित रहने के प्रमाण मिलते है। प्राचीन अन्यान्य ये दुर्ग इस काल में थे या नहीं, समझाने के उपाय नहीं है। महाराज विजय माणिक्य द्वारा आसाम तथा पूर्व बंगाल के नाना स्थान में स्थापित सेना निवास समूह के मध्य श्रीहट्ट तथा चट्ट गाँव सैन्य निवास व्यतीत अन्य कोई इस समय नहीं था।

राजा तथा राज कुमार गणों की युद्ध यात्रा

राजा तथा राज कुमार गणों का शौर्य महाराज अमर माणिक्य शौर्य वीर तथा युद्ध विद्या कुशल नरपति थे। राजत्व लाभ के पूर्व में सेनाध्यक्ष पद में नियुक्त रहकर यशस्वी हुए थे। राज्य प्राप्ति के साथ साथ उन्होंने भुलुआ राज्य आक्रमण कर इस युद्ध में शौर्य समर क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे थे। तरप तथा श्रीहट्ट आक्रमण काल में अपने ज्येष्ठ पुत्र तथा सेनापति राजधर नारायण को प्रधान नायक रुप से प्रेरण किया था। आराकान के प्रथम तथा द्वितीय युद्ध में कुमार राजधर नारायण ने प्रधान नेतृत्व ग्रहण किया। तृतीय बार के युद्ध में महाराज अमर स्वयं युद्ध क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे। यह युद्ध चट्ट गाँव में संगठित हुआ। महाराज यशोधर माणिक्य स्वयं युद्ध यात्रा करके भुलुआ राज्य को द्वितीय बार आक्रमण तथा लूट कर के समुद्र तीर तक अग्रसर हुए थे। महाराज कल्याणमाणिक्य ने कैलारगढ़ दुर्ग में स्वयं युद्ध करके मुगल गण के आक्रमण को व्यर्थ किया। इस युद्ध में ज्येष्ठ राज कुमार गोविन्द नारायण प्रधान सेनाध्यक्ष पद में नियुक्त हुए थे।

उस काल में राजा तथा राज कुमार गण हीनवीर्य या विलासी नहीं थे। सभी दुग्घफेन निभ शय्या के परिवर्तन में कन्टकाकीर्ण समर क्षेत्र में शयन करना श्लाध्य ज्ञान करते थे। त्रिपुरा राज्य के जो अवनीत घटित हुए थे, वह वीरत्व के अभाव में नहीं वरन् एकता के अभाव में, आत्मविरोध ही इस अवनति का मूल कारण था। इस बात का विवरण बाद में विचार किया जायेगा।

अभियान तथा समर

भुलुया अभियान महाराज अमर ने सेनापति पद में नियुक्त रहते हुए भुलुआ राज्य की पुनः पुनः अबाध्यता, जिससे वे क्रोधित थे, वे राज्य लाभ के साथ ही भुलुआ के गर्व चूर्ण करने को कृत संकल्प हुए। भुलुआ राजगणों ने

तृतीय लहर 178
त्रिपुरेश्वर लोगों के अनुकरण से ही 'माणिक्य' उपाधि ग्रहण की थी। इस उपाधि का परित्याग करने के लिए महाराज अमर माणिक्य ने भुलुआ राज के प्रति आदेश प्रचार किया। भुलुआपति ने इस आदेश के उत्तर में सगर्व यह विचार व्यक्त किये– 'आपके राजत्व लाभ के अनेक वर्ष पूर्व से ही माणिक्य उपाधि धारण करते आ रहे हैं। हम महाराज विजय माणिक्य के जमींदार है। आप उनके सेनापति अर्थात आपका इस प्रकार गर्व करना शोभनीय नहीं''

भुलुया विजय

भुलुआपति के इस असंगत व्यवहार से महाराज अमर नितान्त क्रोधित हुए। उन्होंने शीघ्र ही चार पुत्र उजीर सर्व नारायण तथा सेनाध्यक्ष छत्र नाजिर के साथ छत्तीस हजार सैन्य लेकर स्वयं युद्ध यात्रा की। इस बार के आक्रमण से भुलुआ राज्य की जो दुर्गति घटित हुई, वह पूर्व ही विवरण किया गया है।

भुलुआ विजय के बाद उस स्थान में अपने ज्येष्ठ पुत्र राजदुर्ल्लभ नारायण के कर्तव्य के अधीन एक सेना निवास स्थापन करके महाराज ने ससैन्य राजधानी में प्रत्यावर्तन किया। इस युद्ध 1500 शक में संगठित हुए थे।

तरप का युद्ध

तरप का युद्ध का कारण

महाराज अमर माणिक्य ने भुलुआ विजय के अल्पकाल के बाद तरप के शासन कर्ता के विरुद्ध में एक अभियान प्रेरण किया। अमर सागर खुदाई कार्य में कुलि प्रदान न करना तरप राज्य में आक्रमण का कारण हुआ था। इस समर यात्रा में एक सौ सेना नायक तत्वाधान में बाईस सहस्र सेना भेजे गये। राज कुमार राजधर नारायण(बाद मे राजधर माणिक्य) इस विपुल वाहिनी के प्रधान अधिनायक थे। सेनाध्यक्ष प्रताप नारायण ने बंगाली सेना दल का दायित्य ग्रहण किया। सराईल ईशा खाँ मसनद अली ने स्वयं दलबल के साथ इस अभियान में योगदान किया था। पथ में आशंका के कारण रहने से गरुड व्यूह रचना द्वारा सैन्य दल चलाया गया था।

त्रिपुरा वाहिनी ने जिकुआ गाँव में शिविर संस्थापन कर के तरप आक्रमण किया। इस युद्ध में तरप के शासनकर्ता सैयद आदम तथा उनके पुत्र सैयद विराम के पराजित तथा बन्दी होने से एतद उभय को बाँस के पिंजरे में भरकर उदयपुर में प्रेरण किया।(1)

---

(1) समर क्षेत्र में शत्रु पक्ष के प्रधान व्यक्तिगण धृत होने से उन लोगों को पिंजराबन्द करने की प्रथा अनेक काल से चला आ रहा था। महाराज विजय माणिक्य के शासन काज में पठान सेनापति मोमारक खाँ चटगाँव के युद्ध में धृत तथा पिंजराबन्द हुए थे। राजमाला में मिलता है–

त्रिपुरार सेनाए बोले न मारिबो तोके।	त्रिपुरा के सेना बोले न मारेगें तुम्हें।
राजार साक्षाते निबो बोलिलो ताहाके।।	राजा के पास ले चलेगें बोले उसे।।

श्री हट्ट् विजय

श्री हट्ट पर आक्रमण का कारण श्री हट्ट् के पठान शासन कर्ता फते खाँ तरप के पक्षावलम्बी थे। इस कारण महाराज अमर माणिक्य के निर्देशानुसार कुमार राजधर ने श्रीहट्ट आक्रमण किया। तत्काल जलपथ से अभियान हुआ था। त्रिपुर वाहिनी सुरमा नदी पथ से श्रीहट्ट में जाकर पँहुची। ईशा खाँ बंगाली सैन्य साथ श्रीहट्ट अभियान में कुमार राजधर के सह यात्री हुए थे। पठान गण प्रतिपक्ष के गतिरोध के अभिप्राय से सुरमा नदी पार करके अग्रसर हो रहे थे। गोधारानी गाँव में उभय पक्ष परस्पर सम्मुखीन होने से युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध में त्रिपुरा के गजारोही सेना दल के नायक ऐराजित नारायण ने प्रबल पराक्रम से विपक्ष दल पर आक्रमण तथा पराजित किया था। अस्त्र घात से उनके सर्व अंग क्षत विक्षत हुए, कवच भेद करके तीर समूह शरीर में गडने लगे। इसके प्रति नजर न डाल कर प्रतिपक्ष पर तीव्र वेग से आक्रमण किया। कुमार राजधर उनकी सहायता से स्वयं अग्रसर हुआ था। पाठान वाहिनी इस तीव्र आक्रमण में असमर्थ होकर छत्र भंग हो पडे तथा समरांगन परित्याग करने में बाध्य हुए। मध्यान्ह समय से युद्ध आरम्भ हुआ, दो घंटा शाम होने तक उसका अवसान हुआ।

समर विजयी कुमार राजधर ने सुरमा के दक्षिण तट पर शिविर स्थापना किया। पठान शासन कर्ता इस स्थान में आत्मसमर्पण करने में बाध्य हुए थे। अतएव कुमार ने श्रीहट्ट में जाकर जय–स्कन्धाबार (छावनी) स्थापना करके विजय के स्मृति चिन्ह स्वरुप ''आदिराजधर सागर'' नाम से एक बडे तालाब की खुदाई करके तथा राजा के नाम से एक चाँदी की मुद्रा प्रचलन की थी। उक्त मुद्रामें निम्नलिखित वाक्य उत्कीर्ण किये गये है।

(सिंह मूर्ति)
शक 1503

श्रीहट्ट विजयी
श्रीश्रीयूतामर
माणिक्य देव श्री
अमरावती दैव्यो

इस मुद्रा की सहायता से जाना जाता है। महाराज अमर ने 1503 शक में श्रीहट्ट जय किया था। अतएव कुमार राजधर ने कुछ काल श्रीहट्ट अवस्थान करके

....

ऐ कथा सेनिया खॉए आपने मिलीलो।।	यह बात सुन कर खां अपने आप मिला।।
लोहार पिंजर मध्ये ताहाके भरीलो।	लोहे के पिंजरे मे उसे बन्द किया।
राजमाला द्वितीय लहर विजयमाणिक्य खण्ड49 पृष्ठ	राजमाला द्वितीय लहर विजयमाणिक्य खण्ड49 पृष्ठ

मुसलमान राजत्व में भी इस प्रथा के प्रचलन रहने के निदर्शन मुसलमान इतिहास में मिलते है।

तृतीय लहर 180

शासन की सुव्यवस्था किया। उन्होंने 1504 शक के माध महीने में विजित फते खाँ को संग लेकर श्रीहट्ट परित्याग किया था।(1) कुमार ने श्रीहट्ट जिला के अन्तर्गत दुलाली गाँव के पथ में ईटा परगना के मध्य से उनकोटी तीर्थ में गमन किया। इस तीर्थ के संक्षिप्त विवरण राजमाला के द्वितीय लहर में प्रदान किया गये हैं।(2) तथापि तीर्थ कार्य सम्पन्न के अन्त में राजधर सात दिवस पथ जाने के बाद उदयपुर में जाकर पँहुचे।

विजित फते खाँ को दरबार मे उपस्थित किया गया। वीर पुरुष महाराज अमर वीर की मर्यादा जानते थे। उन्होंने फते खाँ को सादर ग्रहण किया। दरबार में जामाता तथा सेनापति दयावन्त नारायण के बाँयी तरफ उनका आसन निर्दिष्ट हुआ। पचास जन अश्वारोही उसके देह रक्षा हेतू नियोजित थे। ससम्मान से किसी तरह उदयपुर में अवस्थान के बाद फते खाँ ने त्रिपुरा के वश्यता स्वीकार करके वार्षिक पचास अश्व कर स्वरुप प्रदान के लिए शर्त मंजूर की। विदाइ काल में महाराज अमर ने उनको एक हस्ती तथा पाँच घोड़ा सह बहुमूल्य वस्त्रादि उपहार प्रदान द्वारा सम्मानित किया था। तरप के शासन कर्ता को इस समय कारामुक्त किया गया।

सराईल अभियान

सराईल के शासन कर्ता ईशा खाँ के सहायतार्थ बावन हजार सैन्य सह सर्वनारायण सिंह उजीर को दिल्ली के सैन्य दल के विरुद्ध में प्रेरण करने के विवरण पूर्व ही प्रदान किया गया। इस युद्ध में बिना युद्ध से ही दिल्ली के सैन्य गणों ने प्रस्थान किया था।

रसांग का युद्ध

महाराज अमर ने रसांग(आराकान) विजय के उद्देश्य से बहुत एक सुवृहत अभियान प्रेरण किया था। राजा के प्रधान पुत्र राजधर नारायण ने इस अभियान से सेना नेतृत्व का लाभ किया। राजधर के कनिष्ठ भाई अमर दुर्ल्लभ नारायण, सेनापति चन्द्रदर्प नारायण, चन्द्र सिंह नारायण तथा छत्रजित नाजिर आदि प्रधान सेनापति के सहकारी थे। इस युद्ध में त्रिपुर सैन्य को छोड़ बंग देशीय शासन कर्तागण से भी सहायता ग्रहण किया था। इसके भिन्न नवगठित फिरिंगी सैन्य दल अभियान के सहयात्री थे।

---

(1)

पनर श चारि शाक पौष मास शेषे।	पन्द्रह सौ चार शक पौष माह अंत।
माधेर पनर दिने फते खाँ लोइया आसे।।	माध के पन्द्रह दिन लाया फते खाँ को संग।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 10पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 10पृ

(2) राजमाला द्वितीय लहर 106 –115 पृष्ठ।

तृतीय लहर 181

त्रिपुरावाहिनी ने चट्ट ग्राम में उपनीत होकर कर्णफुली में बाँध देकर नदी पार किया था। कुमार राजधर ने उस पार जाकर रामू आदि मघराज के छह थाना(सेना निवास) हस्तगत करके रामू में शिविर संस्थापन किया। उन्होनें देयांग(डियांगा) तथा उडिया राज्य(1) पर आक्रमण का उद्योग किया था। इस अवसर में मघ सेना गण

....

(1) उडिया राजा के कथा मयनामती के गीत में मिलता है। मेहेरकुल के राजा गोपी चान्द(गोविन्द चन्द्र) अपने जननी मयनामती से कहते है–

''आर विभा कराइला खाण्डाय जिनिया।
आर विभा कराईला उरुया राजार माईया।।
दशदिन लडाई कोइल उडिया राजार सने।
चोद्दबुडि मनुष्य काटिलाम एक दिने।।
र र र र
युद्धेते हारिया निपे गेलो पलाईया।
तार बेटि विभा कोईलूम महिम(2) जिनिया।।''

मयनामती के गीत – भवानी दास।

मयनामती के गीत पुस्तिका के सम्पादक श्रीयुक्त नलिनीकान्त भट्टशाली महाशय ने अनुमान किया है। गीतिका में उल्लेखित उडिया राजा इतिहास प्रसिद्ध राजेन्द्र चोल, राजमाला में उडिया राज्य तथा उडिया राजा के उल्लेख मिलते है। यह राजा आराकान राज के सामन्त के बीच परिगणित थे। उडीसा से आए किसी व्यक्ति द्वारा स्थापित हुए थे। इसलिए राज्य का नाम 'उडिया राज्य' तथा राजा का नाम 'उडिया राजा' हुआ था, ऐसा ही लगता है। राजमाला के अमर माणिक्य खण्ड में उल्लेख मिलता है, उनके सैन्यगणों ने आराकान राज्य पर आक्रमण करके पहले ही रामू आदि छह सेना निवास पर अधिकार किया। उसके बाद देयांग तथा उडिया राज्य हस्तगत करने के कोशिश में थे। यथा–

राम्बु आदि कोरी राज्य छय थाना लय।	राज्य ने किया अधीन राम्बु आदि छह थाना।
देयांग उड़िया राज्य लोइते आशय।।	उड़िया राज्य देवांग को भी चाहा था लेना।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 26पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड26पृ

चट्ट गाँव में महाराज अमर माणिक्य के पुत्र तथा सेनापति राजधर देव के हस्त से आराकान राजा पराजित होकर युद्ध स्थगित रखने के प्रस्ताव के साथ, उडिया राजा के दूत स्वरुप त्रिपुर शिविर में प्रेरण किये थे। यथा–

मघ पराजय सुनि मगघ राजाय।	मगध राजा ने सुना जब मघ का पराजय।
उड़िया राजा नामे दूत तखने पाठाय।	उड़िया राजा नाम दूत को दिया यहाँ पठाय।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 29पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड29पृ

इसके द्वारा स्पष्ट समझा जाता है कि उडिया राज्य आराकान राज के अधीन सामन्त राज्य था। हम लोगों को लगता है कि राजमाला तथा मयनामती के गीत में उडिया राज्य अभिन्न है। परन्तु राजमाला के कथित उडिया राजा राजेन्द्र चोल के वंशधर थे। यह कोई विचित्र नहीं है। राजा के नामोल्लेख या परिचय सूचक कोई बात न रहने के कारण इस विषय के स्थिर सिद्धान्त होने में व्याघात घटा था।

(2) महिम –यह शब्द गलत है, ऐसा ही प्रतीत होता है। 'महिम' न होकर 'महिन' होगा 'महिन' शब्द का अर्थ है राज्य। श्रृद्धास्पद श्रीयुक्त नलिनीकान्त भटट्शाली महाशय ने 'महिम' एक देश का नाम अनुमान किया है तथा सुहृदय श्रीयुक्त मौलवी अब्दुल करीम साहित्य विशारद महाशय 'महिम' शब्द के अर्थ युद्ध कहते है। यह प्रमादपूर्ण उक्ति कहना ही समझा जाता है।

ने उन लोगों पर आक्रमण किया। विपुल त्रिपुर वाहिनी का दर्शन कर मघगण पहले तो भयभीत हुए थे। बाद में भेद नीति का आश्रय ग्रहण किया। उनके षडयन्त्र से बाध्य होकर त्रिपुरा के फिरिंगी सैन्य गण विजित थाना, सब बिना युद्ध के मघ लोगों के हाथ समर्पण करके हट गये। प्रतिपक्ष ने उन सब थाना में आश्रय ग्रहण करके प्रबल पराक्रम के साथ युद्ध में प्रवृत्त हुए।

मघ वाहिनी समझ गये कि त्रिपुरा सैन्य बिना माल के उनके राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। उन लोगों ने चारों से तरफ खाद्य बन्द कर दिया। एक मुठ्ठी चावल भी मिलने का उपाय नहीं है। फिरिंगी गण के व्यवहार से त्रिपुरा के सैनिक दल चावल अनाहार में कुछ दिन युद्ध करने पश्चात युद्ध पलायन करने में बाध्य हुए। मघगण द्वारा पलायित सैन्य के पीछे होकर अनेकों वध हुए अनेकों ने अनाहार में प्राण त्याग किये। अल्प संख्यक सैन्य सह सेनापति गण पर्वत में घोंगा जाति के आलू खाकर तथा चावल खाकर अति कष्ट में जीवन यापन करते थे। वे लोग चट्ट गाँव में जाने के अभिप्राय से कर्णफुली के तीर में उपस्थित हुए। यहां भी मघ गण उनके अनुसरण करने में निवृत्त नहीं हुए। अनेक सैन्यों ने चावल खाकर धोपा पत्थर के रास्ते से जल्दी नदी पार किया। जो इस स्थान को निरापद सोचकर दिन के दिन अन्न खाने के आशा से पकाने में इच्छा किये थे, मघ गणों ने उनको आक्रमण करके समस्त विनाश किया।

अत्यधिक दुर्गति सहने के बाद असहनीय जीवन से त्रिपुरा सैन्य गण चट्ट गाँव में आकर जान से बचे। कुमार राजधर प्रमुख सैन्याध्यक्ष गणों ने चट्ट गाँव में आकर सैन्य दल को श्रृखंलाबद्ध तथा पथ पथ में सैन्य समावेश करके सतर्कता सहित रात्रियापन किया।

समर विजयी उत्तेजित उन्मत्त मघ वाहिनी चट्ट गाँव में भी त्रिपुरा सैन्य के अनुसरण करने में असमर्थ नहीं हुए। दूसरे दिन प्रातः काल में वे आगमन पथ में त्रिपुरा सैन्य द्वारा से आक्रान्त हुए तथा उस प्रबल आक्रमण से अतिष्ठ होकर मघ पलायन करने में बाध्य हुए। उनके अधिकांश ही मारे गये। कुमार अमर दुर्ल्लभ नारायण, सेनाध्यक्ष प्रताप नारायण तथा सुरराष्ट्र नारायण, अश्वारोहण करके पलायित मघ गण के पीछे गये तथा पथ पथ में उन लोगों को संहार करके क्रमानुसार सात गढ़ पुनराधिकार किया। इस युद्ध में एक सहस्र मघ मारे गये।

इधर तीनो सेनापति लोगों के विशेषतः कुमार अमर दुर्ल्लभ के न मिलने पर राज शिविर में सभी उद्विग्न हुए। रण क्षेत्र में शव हिलाकर उनका अनुसंधान शुरु हुआ। एक दल सैन्य उनके अनुसंधान के लिए निकल पड़ा। समस्त दिन शत्रु

संहार करके संध्या के प्रथम समय में आकर पँहुचे। कुमार राजधर ने खुश मन से अग्रसर होकर उन लोगों को शिविर में लाये। उन लोगों की मुठ्ठी में तलवार खून से बँधी/चिपकी हुई थी कि हाथ में उष्ण पानी ढालकर उसको खोलना पडा।

आराकान राज इस पराजय से दुर्बल हो पडे। उन्होनें अपने अधीन होकर उडिया राजा को दूत स्वरुप त्रिपुरा शिविर में प्रेरण पूर्वक प्रस्ताव किया, इस बार युद्ध स्थगित रखा जाय, अगले साल पुनर्बार युद्ध में लिप्त हो सकते है। महाराज अमर ने यह प्रस्ताव अनुमोदन कर अपने शिविर उठा देने का आदेश किया। उन्होनें कुमार राजधर को लिखा था, ''दुर्गोत्सव निकटवर्ती है, तुम्हारे युद्ध में जो सब मघ सैन्य पकड़े गये थे, देवी के समक्ष बलि प्रदान के लिए उनको अपने साथ लाना।'' इस आदेश के प्राप्ति के बाद कुमार राजधर ने ससैन्य राजधानी में प्रत्यावर्तन किया।

इसके बाद राज्य में नाना प्रकार के अमंगल सूचक लक्षण परिलक्षित होने लगे। कुत्ते तथा श्रृगाल अशुभ द्योतक क्रन्दन ध्वनि, उल्कापात, भूमिकम्प, देव विग्रह के अश्रुपात, भूत का उपद्रव आदि उत्पात दर्शन से राज्य में घोर अशान्ति की छाया गिरने लगी।

त्रिपुरा वाहिनी के चट्ट गाँव परित्याग करने के अल्पकाल बाद ही कल्मिगढ से संवाद आया कि आराकान राज्य ने पर्तुगीज गण के सहायता से लाभ युद्ध स्थगित के प्रस्ताव लंघन करके चट्ट गाँव में सैन्य प्रेरण किया गया। इस वार्ता श्रवण से महाराज अमर समझे त्रिपुर वाहिनी को कपट वाक्य द्वारा हटा कर बिना विवाद के बल संचय करने के अभिप्राय से ही आराकान पति ने युद्ध स्थगित रखने के प्रस्ताव किया था। उन्होनें क्रोधित होकर उस दिन ही युद्ध यात्रा करने के आदेश प्रचार किये। कुमार राजधर ने प्रधान नेतृत्व लाभ किया। कुमार राज दुर्ल्लभ आदि सेनापति गण उनके सहयोगी हुए। कनिष्ठ राज पुत्र युझार सिंह कुछ उग्र प्रकृति के लोग थे। वे भी क्रोधान्वित होकर युद्ध यात्रा के निमित्त प्रस्तुत हुए। महाराज अमर सिंह बहुत कोशिश करके भी उसको निरस्त करने में समर्थ नहीं हुए। राजकुमार त्रय मंत्री तथा सेनापति वर्ग सह चट्ट गाँव के साथ उपनीत होकर शिविर की स्थापना किया।

त्रिपुरा सैन्य आगमन श्रवण से आराकान राज चिन्तित हुए। उन्होनें सुवर्ण मण्डित एक गज दन्त के मुकुट सह त्रिपुर शिविर में दूत प्रेरण किया। किस मात्रा में सैन्य आये थे तथा उनकी अवस्था क्या है। उनका संधान लेना ही दूत का उद्देश्य था। इसके अतिरिक्त सन्धि का प्रस्ताव भी उनके साथ था। राजकुमार के शिविर एक साथ बैठे है। इस समय सम्मुख जाकर आराकान राज के प्रदत्त मुकुट तथा पत्र प्रदान किया। उस मूल्यवान सुदृश्य मुकुट

लाभ करने के कारण भ्रातागण समस्त आग्रहान्वित हुए थे। दूत उपस्थित करने के मात्र ही कुमार राजधर मुकुट को तथा कुमार राज दुर्ल्लभ पत्र ग्रहण किया। कनिष्ठ कुमार युझार सिंह मुकुट न मिलने पर कोपाविष्ट होकर बोले– ''मघ लोगों को सियार की तरह मारकर इस प्रकार सहस्र टोप हस्तगत करेगें।''

मघ नरपति ने दूत के मुँह से कुमार युझार के युक्ति श्रवण करके क्रोधित होकर विलम्ब न करके समर क्षेत्र में अवतीर्ण होने के निमित्त सैन्य सज्जा किया। त्रिपुर वाहिनी के अश्वारोही संख्या अधिक थी। इसलिए मघ सैन्य ने खुले रुप में रास्ता न पकड़ कर जंगल के रास्ते से अग्रसर हुए। अश्व चलाने की असुविधा के उद्देश्य से वन पथ अवलम्बन किया था।

चर ने आकर कुमार राजधर को मघ के आगमन वार्ता बतायी। यह संवाद मिलने पर ही कुमार युझार सिंह प्रतिपक्ष के आक्रमण के निमित्त सज्जित हुए। मंत्री तथा सेनापतिगण बोले– ''मघ सैन्य हम लोगों पर आक्रमण हेतू आ रहे है। इस अवस्था में गढ़ में रहकर ही युद्ध करना श्रेष्ठ है। यह अग्रवर्ती होने का समय नहीं है।'' समस्त मिलकर युझार को समझाने के लिए विस्तृत चेष्टा किया परन्तु वह कार्यकारी नहीं हुए। कुमार राजधर के पास समर–निपुण 'वृन्दावन' नामक घोडा था, युझार सिंह ने ज्येष्ठ के अनुमति क्रम से वह ग्रहण किया तथा अपने व्यवहार ''जयमंगल'' हस्ती राजधर के निमित्त रख गये।

कुमार युझार रणवेश में सज्जित होकर अपने सैन्य दल सह रात को शिविर से निकल पडे। बाध्य होकर ज्येष्ठ भ्राता लोग भी समस्त दलबल सह उनका अनुसरण किया। प्रभात काल में दोनों पक्ष ने सम्मुखीन होकर युद्ध शुरु किया। अश्वारोही गण के सम्मुख मघ योद्धावृन्द अधिक काल तक खड़े होने के लिए समर्थ नहीं हुए और पीछे हटते हुए गढ़ में आश्रय ग्रहण किया। इस समय कुमार युझार, हस्ती द्वारा गढ़ तोडने के अभिप्राय से अश्व त्याग करके राजधर के हस्ती आरोहण कर रहे थे। मघ पक्ष के एक गोली के आघात से हस्ती क्रोधित हो उठा था। वह अधिक काल 'बेठ' अवस्था में 'बैठकर' नहीं रहा। कुमार युझार के पृष्ठ में आरोहण करने के उपक्रम करने के मात्र ही हस्ती खडा हो गया। कुमार पीछे से रस्सी पकड़ कर झूल रहे थे। इस समय हस्ती ने उनके सीने में लात मारकर दूर फेंक दिया तथा उस आघात से उसकी मृत्यु हुई। तुरन्त ही एक गोली के आघात से कुमार राजधर भी गुरुतर रुप से आहत हो गये।

इस दुर्घटना से त्रिपुर सैन्य गण छिन्न भिन्न हो गये। मघ वाहिनी उनके पीछे होकर संहार करने लगे। कुमार युझार के मृत देह को रास्ते के पास गिरा देखकर मघ गणों उनके मस्तक को काटकर राजा के समक्ष उपस्थित किया।

वे लोग इस असंगत कार्य के निमित्त आराकान राजा के द्वारा तिरस्कृत हुए थे। उन्होंने इसके लिए त्रिपुरेश्वर के निकट भी पत्र द्वारा दुःख प्रकाश किया था।

त्रिपुर वाहिनी ने युद्ध क्षेत्र में पलायन किया। आराकान राजा के अधिनस्थ राम्बू तथा दुकुरुया शासन कर्ता आदम शाह के साथ उस राजा के असद्भाव होने से आदम ने त्रिपुरेश्वर आश्रय ग्रहण किया था। आराकान पति ने युद्ध में जय लाभ करके महाराज अमर माणिक्य को लिखा था– ''आदमशाह को हमारे हाथ अर्पण करने से आपके साथ प्रीती संस्थापन होगा।'' महाराज अमर आश्रित को शत्रु को हस्त अर्पण करना, असंगत बोघ के इस प्रस्ताव से सम्मत नहीं हुए।

कनिष्ठ पुत्र के निधनवार्ता तथा पराजय संवाद एक साथ पाकर महाराज अमर शोक तथा क्रोध से जर्जरित हुए। राज्य में हाहाकार ध्वनि उठी। महाराज दुःख के साथ कहने लगे ''अन्य राजा के शासन काल में अनेक युद्ध में जयलाभ किया है। मेरे बाहुबल से डरते है। अनेक राजा तथा राज्य के गौरव रखे गये है। विधि बिडम्बना से अपने राजत्व काल में राज्य तथा पुत्र के रक्षा करने में सक्षम न हुए।''

महाराज अमर ने सोचा कि इस शोक में टूट जाने का समय नहीं है। शत्रु पक्ष विजयोल्लास से उत्तेजित है। पुत्र गण समर विजयी प्रबल शत्रु के सम्मुखवर्ती परिवार वर्ग तथा प्रकृति पुंज उसके मुखापेक्षी है, यहाँ तक कि आपात काल में महाराज बिना चेष्टा के नहीं रह पाये। उन्होंने पुत्र शोक में भी अपना वक्ष पकड़ कर युद्ध में यात्रा किया। महाराज शिविर में उपस्थित हुए। छत्रभंग सैन्य दल को एकत्रित किया। पाठान सैन्य दल का वेतन परिशोध हुआ। सबको उत्साहित करके पुनर्बार युद्धार्थ करने को तैयार किया।

महाराज अमर के शिविर में उपस्थित होने के तीन दिन बाद मघ वाहिनी पुनर्बार अग्रसर हुई। ईछापुरा गाँव में उभय पक्ष सम्मुखीन होने से त्रिपुरा के दो सहस्र पाठान अश्वारोही युद्धार्थ नियोजित हुए थे। मघ लोगों को आक्रमण करने तैयार होने पर पठानगणो से राज मंत्री बोले–''इसके पश्चात और सैन्य है। उन्होंने दृष्टि पथ से आगमन न करने पर आक्रमण स्थगित रखा।'' आपातकाल में दो लाख मघ सैन्य रण क्षेत्र में अग्रसर देखकर पठानगण आक्रमण करने में असम्मत हुए। वे मंत्री के आबाध्य होकर युद्ध क्षेत्र में परित्याग कर गये तथा प्रस्थान काल में ही त्रिपुर सैन्य लोगों पर प्रहार करके उनके अस्त्रालंकार आदि छीन लिये। वह पूर्व में ही कहा गया है।

इस आकस्मिक दुर्घटना से व्याकुल होकर त्रिपुर सैन्य गण चारों तरफ छूटकर भागे। राजा स्वयं शिविर में उपस्थित हैं। भागने के बाद सैन्यगणों ने उनको सूचना नहीं दी तथा राजा को निःसहाय अवस्था में शत्रुमुख में फेंककर जाने से वे असंगत

बात सोचने का भी समय नहीं मिला। सुविधा मिलने पर मघ वाहिनी प्रबल वेग से शिविर आक्रमण करने आये। महाराज अमर ने देखा कि सैन्यगण ने युद्ध आरम्भ होने के पूर्व ही पीछे रण भंग किया। उन्होंने अपने भाग्य को धिक्कार देकर चतुर्दोल आरोहण का उदयपुराभिमुख में प्रस्थान किया।

विजय से भरपूर मघ वाहिनी अत्यधिक विक्रम से राजधानी आक्रमण के निमित्त अग्रसर हुए। असमर्थ महाराज अमर ने आत्म रक्षा हेतू परिवार वर्ग सह राजधानी परित्याग पूर्वक जंगल में प्रवेश किया। प्रजा वर्ग ने आसन्न विपद के हस्त से निस्तार लाभ के निमित्त धन सम्पत्ति की ममता परित्याग करके चतुर्थ तरफ उर्द्ध श्वांस से पलायन किया। समृद्ध उदयपुर नगर ने सहसा एक भीषण अवस्था को धारण किया।

एक तरफ प्राण भय से पलायन भीड़, तो अन्य तरफ आराकान राज का ससैन्य नगर में प्रवेश। पन्द्रह दिवस तथाय अवस्थान करके लून्ठनादि द्वारा विस्तर सम्पत्ति संग्रह किया। इस समय दो जन देवडाई ने मघराज के प्ररोचना से प्रलुब्द्ध होकर गुप्त राज भण्डार दिखा दिये थे। अतः उदयपुर में एक दल सैन्य रखकर आराकान राजा ने स्वदेश में प्रत्यागमन किया।

महाराज अमर जंगलपथ मनु नदी के किनारे जाकर वास करने लगे। उस स्थान में जो घटना घटित हुई थी, वह विवरण बाद में किया जायेगा।

अमर माणिक्य के प्रतिद्वन्द्वी आराकान राजा का नाम राजमाला में ''सेकेन्दर साहा'' लिखा गया है। मुसलमान राजत्वकाल में आराकान के राजगण मुसलमान के अनुकरण के नाम तथा उपाधि ग्रहण करते थे।(1) आदम शाह, हुसैन शाह तथा सलिम शाह आदि आराकान के मघ नरपति गणों के मुसलमानी नाम ग्रहण करने के दृष्टान्त अनेक मिलते है। राजमाला के कथित सेकेन्दर शाह का नामान्तर ''मांगफुला'' चट्ट गाँव के इतिहास में मिलता है।

''1587 ई0 में आराकान के मांगफुला नाम के किसी पराक्रान्त नरपति का नाम मिलता हैं उन्होनें पर्तूगीज गण के सहायता से पूरे चट्ट गाँव पर अधिकार करके, त्रिपुरा राज्य लून्ठन किया तथा ढाका नगरी तक अपने अधिकार विस्तार करके मेघना परास्त कर आलमदिया तथा जूगदिया दुर्ग सुरक्षित किये।''

चट्ट गाँव इतिहास प्रथम भाग, चतुर्थ अध्याय, 30 पृष्ठ।

राजमाला में लिखा गया है कि 1510 शक् के चैत महीने में मघ द्वारा उदयपुर आक्रान्त हुआ था। चट्ट गाँव के इतिहास में मिलता है कि 1587 ई0(1509 शक) मघ वाहिनी ने त्रिपुरा आक्रमण किया था। मुद्रा के प्रमाण द्वारा अमर माणिक्य

---

(1) ''मुसलमान नृपति के मन संतुष्टि के लिए, आराकान के कौन कौन मघ नृपति ने मुसलमान के नाम धारण तथा मुद्रा में कलमा अंकित किया था।''

चट्ट गाँव का इतिहास प्रथम भाग तृतीय अध्याय 25 पृष्ठ।

का राजत्व 1508 शक तक स्थिर रहना निर्णीत किया गया। मघ के आक्रमण द्वारा वे राज्य त्याग करने में बाध्य हुए थे अर्थात मघ का आक्रमण उस शक की ही घटना है, यह निःसन्देह ही कहा जा सकता है।

बंगेश्वर द्वारा त्रिपुरा आक्रमण महाराज अमर माणिक्य के परलोक गमन के बाद युवराज राजधर ने माणिक्य उपाधि ग्रहण कर त्रिपुरा के सिंहासनरुढ़ हुए थे। वे राज कार्य में विरक्त होकर प्रतिनियत धर्म कार्यनुष्ठान में लिप्त तथा हरि नाम कीर्तन में मग्न रहते थे। बंगाल के शासन कर्ता ने देखा कि त्रिपुरा राज्य पर आक्रमण करने का यही उपयुक्त सुयोग है। उन्होनें एक प्रबल वाहिनी के साथ त्रिपुरा के विरुद्ध प्रेरण किया। त्रिपुरेश्वर के मंत्रीवर्ग के व्यवस्थानुसार विपक्ष के गतिरोध के निमित्त सेनापति चन्द्रदर्प नारायण के कृत्वाधीन से बहु संख्यक सैन्य द्वारा कैलागढ दुर्ग को सुरक्षित किया। यहाँ उभय पक्ष में अल्पकाल युद्ध होने पर मुगल गणों ने पृष्ठ प्रदर्शन किया। त्रिपुरा सेनापति ने अल्प दिन में ही विजयमाला से भूषित होकर राजधानी प्रत्यावर्तन किया।

1584 से 1587 ई0 अब्द तक शाहाबाज खाँ बंगाल के सुबेदार पद में नियुक्त थे। उसके बाद राजा मान सिंह उस पद में नियोजित हुए(1589ई 1014 हिजरी)। रियाज–उस–सलातिन के मत से, मान सिंह के विद्रोही उसमान खाँ के दमन करने में अक्षम होने पर, सम्राट जहाँगीर ने नियुक्ति के प्रथम वर्ष में ही उनकी छुट्टी करके कुतुबउद्दीन खाँ कोकलाताश को बंगला का निजामति प्रदान किया। ''उयाकियात–इ–जहाँगीर'' नाम के सम्राट के स्वरचित ग्रन्थ में इस अपसारण के विवरण लिपिबद्ध हुए है।(1) किन्तु मान सिंह किस कारण अपसृत हुए थे, उसका उल्लेख नहीं है। इसी कारण सलातिन/सलिम(जहाँगीर) के प्रदत्त अवसर के कारण को सब स्वीकार नहीं करते। मुगल द्वारा त्रिपुरा पर आक्रमण का सन निर्धारणापयोगी कोई अवलम्बन नहीं मिलता अर्थात पूर्वोत्त तीन व्यक्ति के बीच त्रिपुरा आक्रमणकारी को निर्धारण करना असाध्य हुआ है।

द्वितीय बार भुलुआ विजय महाराज राजधर के पुत्र यशोधर माणिक्य के राजत्व काल में पुनर्बार भुलुवापति के सहित त्रिपुरा के मोटे झगड़े संगठित हुए। इस बार महाराज यशोधर ने स्वयं युद्ध यात्रा करके, भुलुआ राज बलराम माणिक्य को विशेष तरह से अपमानित किया था। निर्मम अत्याचार तथा लूट से भुलुआ देश बहुत आहत हुआ। यह युद्ध भुलुआ राज्य के पक्ष के पतन का मूल सूत्र होकर खड़ा था।

---

(1) **"When I ascended the throne, in the first year of my reign. I recalled Man Sing who had long been the governor of the country.**

तृतीय लहर 188

बंगेश्वर द्वारा पुनः आक्रमण उसके कुछ दिन पश्चात भारत सम्राट शाह सेलिम(जहाँगीर)(1) त्रिपुरेश्वर के हस्ती वैभव को आत्मसात करने के अभिलाषी हुए। उन्होनें बंगाल के शासन कर्ता इब्राहिम खाँ(फते जंग)(2) को दिल्ली में आवहान करके त्रिपुरा आक्रमण की आज्ञा दिया। उनके सहायतार्थ दिल्ली दरबार से प्रधान उमराह तथा सेनापति ईस्पिन्दर तथा नूर उल्ला के अधीन बहु संख्यक सैन्य प्रदान किया गया। नबाब फते जंग खाँ ने ढाका में आकर दिल्ली से आगत वाहिनी सहित बंगीय सैन्य दल योग करके पूर्बोक्त दोनो सेनापति के साथ त्रिपुरा के विरुद्ध प्रेरण किया। उनकी विजय वार्ता लाभ के प्रतीक्षा में इब्राहिम ढाका में अवस्थान कर रहे थे।

उत्तर तथा पश्चिम तरफ से किसी काल में आक्रमण के अभिप्राय से सेनापति ईस्पिन्दर खाँ कैलारगढ के पथ में तथा मिर्जा नूरउल्ला खाँ मेहेरकुल के पथ में अग्रसर हुए। महाराज यशोधर ने यह संवाद पाकर प्रतिपक्ष के गतिरोध करने के निमित्त अपने सैन्य बल को दो भाग में विभक्त किया। उनके एक दल चण्डीगढ में तथा दूसरा दल छयघरियागढ में रखा गया।

मुगल गणों ने उक्त दो गढ़ों पर एक काल में आक्रमण किया। उभय पक्ष में प्रबल युद्ध आरम्भ हुए, दोनों पक्ष में ही विस्तार सैन्य आहत तथा निहत हुए। मुगल वाहिनी में सैन्य संख्या अत्यधिक होने के कारण उनके आक्रमण से आत्म रक्षा करने में असमर्थ होकर त्रिपुरा के सैन्य दल दुर्गद्वय मुसलमान के हस्त में अर्पण करके पलायन करने में बाध्य हुए। उदयपुर में पँहुचने पर महाराज यशोधर माणिक्य निरुपाय होकर राजधानी परित्याग कर पट्ट महिषी के साथ जंगल में चले गये।

इधर मुगल सेनापति ईस्पिन्दर खाँ ने छयघरियागढ हस्तगत करके द्रुतगाति से उदयपुर में उपस्थित हुए तथा तलवार को म्यान में रख कर अबाध रुप से नगर अधिकार किया। उनको लूटकर तथा अत्याचार से राजधानी वर्णनातीत दुर्दशा को घटित हुया। मुगल सैन्य ने पर्वत में प्रवेश करके महाराज को धृत तथा बन्दी किया। अतः इस उपलक्ष्य में राज्य की जो दुर्गति घटित हुई थी, वह बाद में वर्णित की जायेगी।

महाराज कल्याणमाणिक्य के शासन काल महाराज यशोधर के बाद कल्याणमाणिक्य के राजत्व काल तथा यशोधर माणिक्य के राज्यच्युति के बाद त्रिपुर सेनापति रणजीत नारायण ने सुयोग पाकर उदयपुर के पूर्व उत्तर कोण स्थित आचरंग नाम के पर्वत प्रदेश में जाकर निर्विवाद से एक नव राज्य की प्रतिष्ठा की। उसके

---

(1) यह सम्राट अकबर के पुत्र। 1605–1627 ई0 इसका राजत्व काल।

(2) रियाज–उस–सलातिन के मतानुसार, सम्राट जांहागीर का राजत्व तेरह वर्ष में(1617 ई0 अब्दे) इब्राहिम खाँ बंगाल तथा उडीसा के शासनकर्ता नियुक्त हुए थे।

परलोक गमन के बाद उनके पुत्र लक्ष्मी नारायण ने उस राज्य का शासन भार ग्रहण किया। महाराज कल्याणमाणिक्य के सिंहासन लाभ के बाद इस पर आक्रमण तथा पराभूत करके आचरंग का पुनुरुद्धार किया था।

महाराज कल्याण ने भारतेश्वर जहाँगीर के राजत्व के शेष भाग में सिंहासन लाभ किया था। इसके कुछ दिन बाद शाहजहाँ सम्राज्य के अधिकारी हुए(1628 ई0)। वे 1639 ई0 अब्दे को अपने द्वितीय पुत्र शाहसुजा को बंगाल के शासन कृतत्व नियुक्त किया। इस समय फिर हस्ती लाभ के आशा से मुगल सैन्य ने त्रिपुरेश्वर के कैलारगढ दुर्ग पर आक्रमण किया। महाराज कल्याण ने स्वयं युद्ध क्षेत्र में उपस्थित होकर इस यात्रा में मुगल लोगों को पराभूत करके विताडित किया था।

बंगाली सैन्य

साधारण कथा पूर्वकाल में बंगालीगण वर्तमान बंगाली समाज की तरह भीरु स्वभावपन के नहीं थे। उनके साहस तथा पराक्रम के प्रमाण के प्रदर्शन के निमित्त सूदूर अतीत की कहानी कहना नहीं होगा। बंगाल के भौमिक गण के इतिहास में इस विषय में उज्जवल प्रमाण है। यशोहर के प्रतापादित्य, विक्रमपुर के चाँदराय तथा केदार राय, भुलुआ के लक्ष्मणमाणिक्य, खिजिरपुर के ईशा खाँ मसनद अली, भूषण के सीताराम राय आदि बंगाली वीर के नाम इस स्थल में उल्लेख योग्य है। इनके वीर दर्प एक दिन भारत सम्राट की उपेक्षा करने के लिए उद्यत हुआ था। इनके बाहु बल से उस काल के फिरंगी आदि प्रबल दस्यु दल के हाथ से इस देश के धन प्राण रक्षा पा रहे थे। तब सहस्र सहस्र बंगाली सैन्य इनके प्रधान भरोसा थे। देशमातृ की गौरव रक्षा हेतू, देशवासी गण के सम्मान तथा सम्पत्ति अक्षुण्ण रखने के निमित्त बंगाल के वीर पुत्र गण जीवन विसर्जन करने में कुन्ठित नहीं थे। उस काल में लडकी रुप धारण करके समूत्सूक मसीजीवी मोम की गुडिया के भाषण के ताकत से बंग भूमि रंगमंच में परिणित नहीं हो रहे थे। लिखाई पढाई के साथ मल्ल विद्या की चर्चा तरवारी, लाठी तथा सरकी खेलने की चर्चा अश्वारोहण तथा अस्त्र चलाने की शिक्षा की चेष्टा उस काल की बंगाली समाज का रिवाज था। हम किशोर काल में चश्मा आवरण से चक्षु ढककर उस दूर दृष्टि से अलग हुए है।

त्रिपुरा की बंगाली सेना प्राचीन काल में कूकि, त्रिपुरा, हालाम तथा रियांग आदि नाना जातीय पार्वत्य सैन्य के प्रभाव से त्रिपुर राज्य प्रभावान्वित रहने से किसी समय भी बंगाली सैन्य उपेक्षित नहीं हुए। महाराज विजयमाणिक्य के समय से त्रिपुरा सैनिक विभाग में बंगाली प्रवेश से हानि हुई है तथा इस

श्रेणी के सैन्य संख्या नितान्त कम न थे।(1) महाराज अमर माणिक्य के तरप तथा श्रीहट्ट विजय काल में त्रिपुरा वाहिनी में बंगाली सैन्य काफी थे। राजमाला में मिलता है–

बांगालीर सेनापति आर कोतो जन।	बंगाली सेनापति और कितने ही जन।
ताहाते प्रधान चले प्रताप नारायण।।	प्रताप नारायण चले उनमें प्रधान।।
दुई हाजार ढालि चले नूपूर पोरिया।	दो हजार ढाली चले घुँघरू पहन।
जाठी खड़्ग चर्म धारी धनुर्बाण लोइया।।	चले जाठी खड्ग चर्मधारी लिए घनुर्बाण।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 5पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 5पृ

अन्यत्र मिलता है।

अमर माणिक्य आज्ञा पाइया तखन।	अमर माणिक्य आज्ञा पर तक्षण।
इछा खाँ सहिते चले बंग सेना गण।।	इछा खाँ साथ चले बंग सेना गण।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 7पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 7पृ

इस समय के बाद त्रिपुरा में बंगाली सैन्य रक्षा के बहुत प्रमाण है। परन्तु हर समय पार्वत्य सैन्य की प्रधान्य अक्षुण्ण थी। त्रिपुरा इसकी मातृ भूमि, त्रिपुरेश्वर के सहित इनके नख व मांस के सम्बन्ध थे अर्थात सैनिक विभाग में इनके अधिपत्य लाभ संगत तथा स्वभाविक व्यवस्था कहना होगा।

सैनिक दल के विश्वासघातकता

पाठान सेना त्रिपुरा के सैनिक विभाग में अश्वारोही की संख्या अधिक न थी। महाराज विजयमाणिक्य के शासनकाल में अश्व चलाने में सुनिपुण पठानगण के सहित प्रतिद्वन्द्विता की रक्षा के निमित्त अश्वारोही सैन्य के प्रयोजन हुआ है। तत्काल में दस हजार पठान द्वारा अश्वारोही दल गठन हुआ था। पठान शक्ति के साथ प्रतियोगिता की रक्षा के निमित्त की यह संख्या अधिक न थी। महाराज विजयमाणिक्य के शासनकाल में अश्व चलाना सुनिपुण पठान शक्ति के सहित प्रतियोगिता रक्षा के निमित्त पठान सैन्य के उपर निर्भर किया गया जो विषद प्रमाद पूर्ण कार्य था। महाराज विजय के न्याय राजनीति कुशल तीक्ष्ण बुद्धी भूपति वह नहीं समझे। अल्पकाल में ही भ्रमात्मक कार्य के विषय में फल फलित हुआ। पठान गणों का दो माह का वेतन बाकी पडा था। इस सामान्य भूल से उत्तेजित होकर उन्होनें मेहेरकुल दुर्ग के प्रचण्ड उजीर की हत्या कर दी। उजीर के पुत्र सेनापति प्रताप नारायण ने पलायन के बाद जीवन रक्षा की थी। पठानगण राजधानी लूटकर, राजा को वध करने के निमित्त षडयंत्र कर रहे थे। उनमें मद्यपान हेतू आत्म कलह होने से वह अभिसंन्धि प्रकाशित हो पडी। महाराज विजय तत्काल में चट्टगाँव में थे। उन्हें उजीर की निधनवार्ता मिली तथा

---

(1)

चाट्टीग्राम राजा संगे सहस्र पाठान।	चट्टग्राम राजा के साथ हजार पठान।
प्रचण्ड उजिर संगे सहरत्र बंगो जान।।	प्रचण्ड वजीर के साथ सहस्त्र बंग यान।।
राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 45 पृष्ठ	राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 45 पृष्ठ

तृतीय लहर 191

पठानगणों की दुरभिसन्धि जानकर, सेनापति के साथ एक सहस्र बहुत पठान सैन्य को चतुर्दश देवता के समक्ष में बलि प्रदान किया। अवशिष्ट सैन्य ने पलायन करके गौडेश्वर के आश्रय ग्रहण किया। इस समय सुल्तान सुलेमान गौड़ के सिंहासन में अधिष्ठित थे। वे पठानगण के दुर्गति से दुखित तथा क्रोधित होकर, सजाति को सताये गये प्रतिरोध के आकांक्षा से चट्ट ग्राम पर आक्रमण किया। गौडाधिप के साले ममारक खाँ या मौहम्मद खाँ इस आक्रमण के प्रधान नायक थे। उभय पक्ष में आठ महीने तक लगातार युद्ध हुआ। प्रथम बार त्रिपुरा की पराजय घटित हुई थी। परन्तु पठान गण बाद में विजय गौरव रक्षा करने में समर्थ नहीं हुए। विजय लक्ष्मी त्रिपुरा के अंकशायिनी हुई। पठान सेनापति ममारक खाँ धृत तथा पिंजराबद्ध अवस्था में राजधानी में पँहुच जाने पर उसका चतुर्दश देवता के समक्ष बलि प्रदान किया गया। इस घटना के साथ साथ सुलेमान दिल्लीश्वर द्वारा आक्रान्त तथा विपन्न होने पर त्रिपुरा के सहित उसका विरोध दब सा गया। राजमाला के द्वितीय लहर में इस विषय के विवरण प्रदान किये गये हैं।

महाराज अमर माणिक्य का शासनकाल इसके बाद महाराज अमर माणिक्य के शासनकाल में आराकान राज्य के साथ त्रिपुरा का जो युद्ध हुआ उस युद्ध में त्रिपुरेश्वर के कनिष्ठ पुत्र निहत तथा त्रिपुर वाहिनी पराजित होने का सन्देश पाकर महाराज ने स्वयं युद्ध यात्रा किया। उन्होनें अनेक कोशिश से छत्र भंग सैन्य लोगों को पुनर्बार संग्रह तथा सुश्रृखंलित करके सृदृढ़ गढ़ निर्माण किया। इस समय अपने पठान सैन्य गण के विश्वासघातकता के कारण सैन्य दल छत्र भंग होकर जो अनिष्ठ घटित हुआ था, वह पहले ही कहा गया है। महाराज अमर के सैन्य गण के युद्ध आरम्भ होने के पूर्व ही पलायन किया था। यह दैव्य विडम्बना थी व उपायान्तर न देखकर शिविर परित्याग पूर्वक उदयपुर में गमन किया, वहाँ भी मघ के आक्रमण से अतिष्ठ होकर वे राजधानी छोड़ कर पलायन करने में बाध्य हुए। पठान गण के आबाध्यता ही इस अनर्थ के मूल कारण हुए थे।

फिरंगी सेना महाराज अमर माणिक्य के शासनकाल में देखा गया कि आराकान मघ गण अतिशय प्रबल हो उठे। सन्द्वीप के उपनिवेशी पर्तूगीज गण अबाध दस्यु वृत्ति द्वारा अर्थ संचय के अभिप्राय से मघ लोगों के साथ योगदान करने से तथा आराकान राज के सैनिक विभाग में उन लोगों के प्रविष्ठ होने से मघ गण के शक्ति को अति मात्रा में वृद्धि मिला था। महाराज अमर ने काँटा द्वारा काँटा खोलने के अभिप्राय से नौ युद्ध विशारद एक दल पर्तूगीज फिरिंगी द्वारा सामरिक बल दृढ किया। कुछ काल बाद इन लोगों को लेकर आराकान राज्य पर आक्रमण किया गया। त्रिपुरा सैन्य मघ राज के राम्बु आदि छह थाना हस्तगत करने के बाद देयांग(डियांगा) आक्रमण का उद्योग किया था। इस समय त्रिपुरा के फिरंगी सैन्य गण

मघराज के बाध्य होकर विजित थाना सब प्रतिपक्ष के हाथ अर्पण कर पलायन किया। मघ तथा फिरिंगी के बीच पहले से ही परस्पर सद्भाव था। समय समय उभय पक्ष में कलह उपस्थित होने पर भी इस क्षेत्र में फिरंगी लोगों को हस्तगत करना मघ राज के पक्ष में दुःसाध्य नहीं हुआ। इस अभावनीय विपत्ति से त्रिपुर वाहिनी की जो दुर्गति घटित हुई थी, वह पूर्व ही कहा गया है।

उस काल में पठान तथा फिरिंगी गण सुनिपुण यौद्धा थे अर्थात उन लोगों को त्रिपुरा सैनिक विभाग में ग्रहण करना एक हिसाब में नितान्त असंगत था। युक्ति संगत न भी हो, फिर भी उन लोगों को शासन में रखना तथा वश में रखने के उपयुक्त सुयोग्य नायक का अभाव था। समग्र विषय में आलोचना करने पर यही प्रतीत होगा। परिपक्व चालक के अधीन में रहने से सैन्य गण बाद में इस रुप से उश्रृखंलता तथा अबाध्यता प्रदर्शन में साहसी नहीं हो पाते।

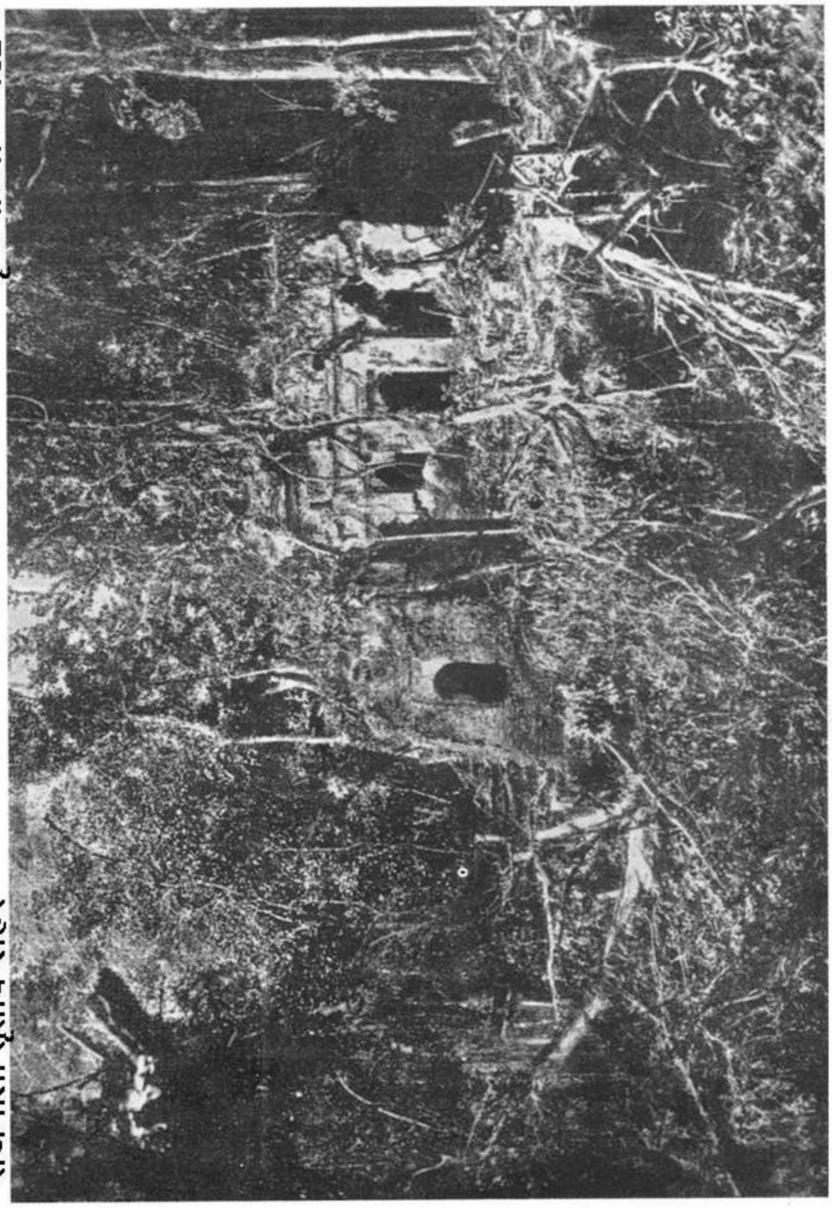
राजा तथा राज्य घटित विवरण

राजधानी प्रतिष्ठा

राजमाला के तृतीय लहर में वर्णन किये गये घटना के समसामायिक काल में त्रिपुरा की राजधानी उदयपुर में प्रतिष्ठित था। किसी किसी राजा के शासनकाल में नयी राजधानी स्थापित रहने पर भी स्थायी राज्य पाट स्थानान्तरित नहीं हुआ। इस समय में संस्थापित नूतन राजधानी का विवरण निम्न प्रदान किया जा रहा है।

अमरपुर में राजधानी उदयपुर राजधानी उत्तुंग पर्वत प्राचीर तथा नदी परिखा द्वारा प्राकृतिक विधान में सुरक्षित होने पर भी राज परिवार के आत्म विरोध तथा बार बार बंगेश्वर के सहारे ग्रहण के सुयोग से मुसलमान गणो ने उस स्थान के आक्रमण का पथ, घाट विशेष तरीके से पहचान लिये थे। उनके द्वारा पश्चिम तथा उत्तर की तरफ से बारम्बार राजधानी पर आक्रमण होते रहते थे। सुयोग मिलने पर आराकान के मघगण सन्द्वीप में उपनिविष्ठ पर्तुगीज गण के सहयोग से समय समय पर राज्य में आक्रमण करने में भी नहीं छोड़ते। महाराज अमर ने देखा कि बाहर के शत्रु के हाथ से बचने के लिए राजधानी को अधिक से अधिक सुरक्षित करना आवश्यक है। वे स्वयं युद्ध विद्या में विशारद थे तथा दीर्घ काल तक सेनाध्यक्ष का कार्य करके परिपक्वता लाभ किया था। उन्होनें अमरपुर को निरापद स्थान सोचकर गोमती नदी के किनारे एक दुर्ग तथा प्रासाद निर्माण किया थे। यह स्थान उदयपुर के पूर्व की तरफ न्यूनाधिक

तृतीय लहर 192
चित्र तृतीय लहर–192

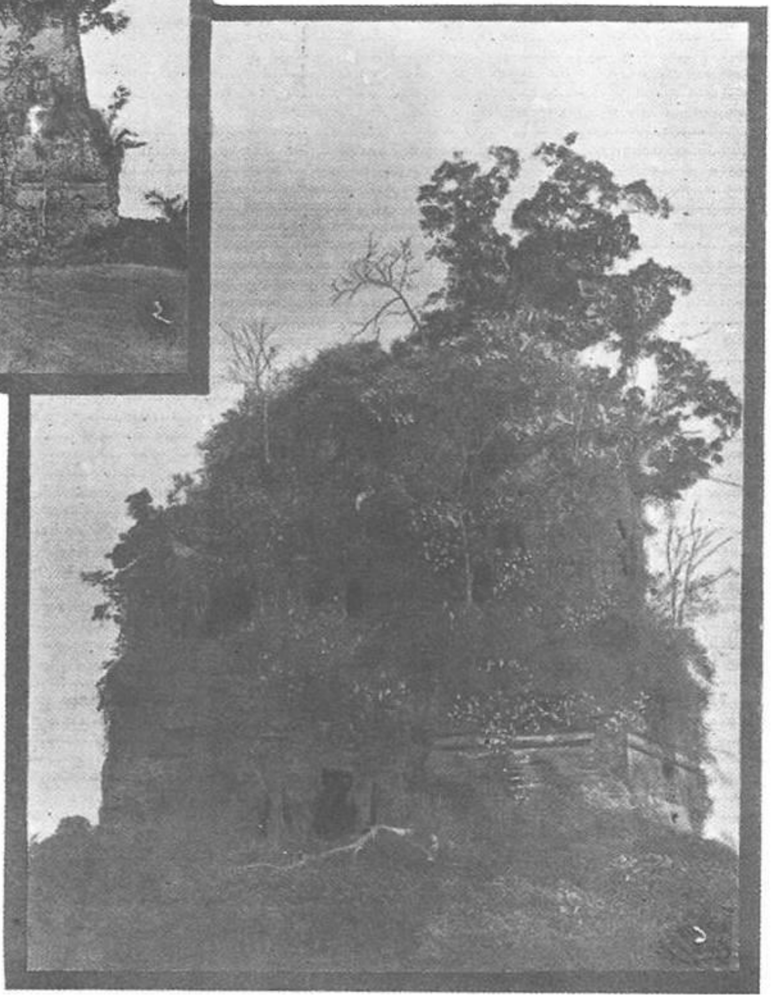


महाराज अमरमाणिक्य का प्रासाद — अमरपुर
[यह प्रासाद गोमती नदी के गर्भ में डूब चुका है।]

तृतीय लहर 193
चित्र तृतीय लहर–193(1)



अमरपुर दुर्ग



अमरपुर दुर्ग

तृतीय लहर 193
चित्र तृतीय लहर–193(2)



शिल्पयुक्त शिलास्तम्भ – अमरपुर

पाँच कोस दूरवर्ती था। दस मील दूर के मध्यवर्ती 'बडमुडा' नाम का उत्तर दक्षिण में प्रसारित समउन्नत पर्वत माला आक्रमणकारी को बाधा प्रदान के लिए दुर्लंघ्य तथा दुर्ग प्राचीर स्वरुप दण्डायमान है। शत्रु के आक्रमण से उदयपुर आरक्षित होने पर, पर्वत अतिक्रम करके अमरपुर में आश्रय ग्रहण किया जा सकता है तथा पार्वत्य चट्ट गाँव के पथ से प्रतिपक्ष द्वारा अमरपुर आक्रमण करने पर उदयपुर में रहकर आत्म रक्षा करने की सुविधा घटित होती है। नव प्रतिष्ठित राजधानी ने प्रतिष्ठिाता के नामानुसार ''अमरपुर'' आख्या लाभ किया।

अमरपुर के महाराज द्वारा अमर माणिक्य निर्मित त्रिमंजिल प्रसाद के भग्नाविशेष तथा खुदाई किये गये अमर सागर अब भी विद्यमान है। अतएव ''फटिक साागर'' नाम का विस्तृत सरोवर का पानी वर्तमान काल में भी अतिशय निर्मल तथा सुपेय है, प्रसिद्ध है।

पूर्वोत्त अमर सागर तथा फटिक सागर के मध्यवर्ती स्थान में एक जीर्ण मन्दिर है। इस मन्दिर में प्रतिष्ठित शिलामयी विग्रह निकटवर्ती एक नाले में गिरे हुए अवस्था में था। स्थानीय लोगों ने इसे उठाकर पूर्वोक्त मन्दिर के निकट एक भूसे के गृह में स्थापना किया है। वर्तमान काल में यह मूर्ति 'मंगलचण्डी' की उपाधि लाभ किये है। अष्टभुजा विशिष्ट तथा गरुड वाहन मूर्ति, दृष्टि मात्र से ही यह विष्णुमूर्ति कहकर प्रतीयमान होता है।

नानास्थान में कतिपय भग्न मन्दिर के ईट, स्तूप तथा इधर उधर के बिखरे ईट की राशि द्वारा इस स्थान में और भी बहुत सारे ईटों के घर थे, ऐसा प्रमाणित होता है। राजनिकेतन के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ दो पत्थर के स्तम्भ दण्डायमान है। दोनों स्तम्भ उत्कृष्ट कृष्णवर्ण के प्रस्तर से निर्मित तथा सुचारु कला कार्य से खुदा हुआ है। यह उस स्थान के शिल्पी है या दूसरे देशीय के दक्ष शिल्पी के निर्मित है, निर्णय करने का कोई उपाय नहीं है।

राताछडा राजधानी

महाराज अमर माणिक्य मघ द्वारा उदयपुर छोड़े गये वर्तमान कैला शहर विभाग के अन्तपाती मनु नदी के किनारे जाकर वास कर रहे थे। इस समय राज्य के दक्षिण भाग मघ द्वारा के अधिकृत होने पर भी उत्तरांश त्रिपुरेश्वर के हस्तच्युत नहीं हुए। महाराज अमर के कुछ काल यहाँ अवस्थान करने के बाद देह रक्षा करने के कारण उसके पुत्र राजधर माणिक्य इस स्थान में ही राज्याभिषिक्त हुए थे। इस उपलक्ष्य में नये भूपति के नामानुसार से स्थान के नाम ''राजधर छडा'' रखा गया। वह नाम अपभ्रंश होकर वर्तमान काल में वह स्थान 'राता छडा ' नाम से अभिहित हुआ था।

महाराज अमर ने विपन्नावस्था में इस स्थान में आश्रय ग्रहण किया था। अल्पकाल के बाद ही वे परलोक को प्राप्त होने से राजधर माणिक्य ने इस स्थान में ही राज्य भार ग्रहण

किया(1) उन्होनें राज्य लाभ करके पुनर्बार उदयपुर में प्रत्यावर्तन किया था। इसी कारण उक्त स्थान में स्थायी मकान घर के कोई चिन्ह नहीं मिलते तद्नुरुप निदर्शन न रहने पर भी इस स्थान में राजा के अवस्थान सूचक जो दो एक वस्तु मिली है उनका विवरण इस स्थान में उल्लेख योग्य है।

कैला शहर विभाग के अन्तर्गत राता छडा नामक स्थान के(राजधर छडा) साथ ही देमदुमछडा के किनारे के निवासी राम जय त्रिपुरा पुत्र व्यासमुनि त्रिपुरा 1338 त्रिपुराब्द वैशाख मास में राताछडा में मत्स्य पकड़ने के उद्देश्य गये थे। इस छडा में बाँध के निमित्त खोदाली द्वारा उक्त छडा के किनारे से मिट्टी के खुदाई काल में एक हस्त परिमित मूर्ति के निम्न भाग में एक साथ अवस्थित दो धातु निर्मित त्रिपदि प्राप्त हुए। दोनों त्रिपदि के एक एक पद भंग हुआ है। वह पुरातन व टूटा हुआ है। ऐसा ही लगता है। सम्भवतः जलमग्नवस्था में अथवा मिट्टी के गर्भ में निमाज्जित होने बाद वह भग्न

....

(1) राजधर छड़ा के अवस्थान सम्बन्ध में राजमाला चतुर्थ लहर में लिखा है।

तथा होते चराईबाड़ी मनु नदी तटे।	वहाँ से चराईबाड़ी मनु नदी के तट पर।
युबराज भ्राता हरिमणिर सहिते।।	युवराज भ्राता हरिमणि को साथ लेकर।।
पूर्ब राजधर माणिक्य पाट सेई स्थान।	पूर्व राजधर माणिक्य का पाट था वह स्थान।
नदीर नाम राजधर एईतो कारण।।	नदी का नाम राजधर हुआ इस कारण ।।
से पर्बतेर नाम राजधर मुड़ा बोले।	उस पर्वत को राजधर मुड़ा है कहते।
पर्बत नदीर नाम राजधर छिले।।	पर्वत नदी का नाम राजधर हुआ।।
राजमाला चल कृष्णमाणिक्य खण्ड 48 पृ	राजमाला चल कृष्णमाणिक्य खण्ड 48 पृ

महाराज कृष्णमाणिक्य के विस्तृत विवरण युक्त 'कृष्णमाला' ग्रन्थ में मिलता है।

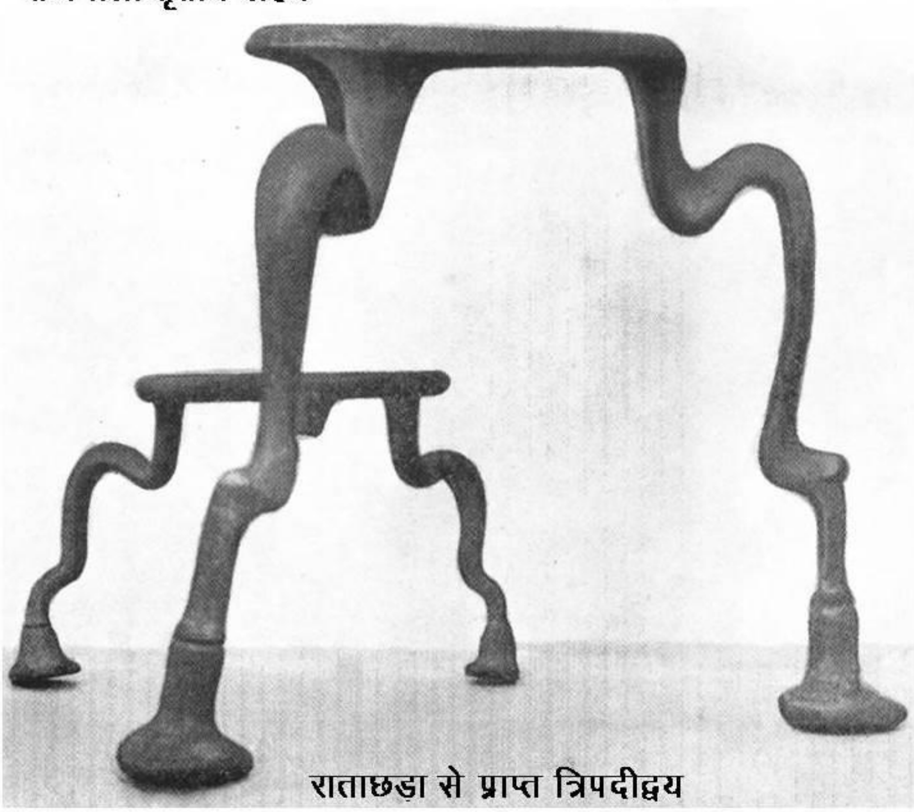
पूर्वे छिलो अमर माणिक्य नरपति।	पूर्व में थे अमर माणिक्य नरपति।
पूर्वे राजमालाते लिखीछे तार कीर्ती।।	पहले राजमाला में लिखा है उसके कीर्ती।।
राज्य भ्रष्ट होइया तिनि उदयपुर होईते।	राज्य भ्रष्ट होकर वे उदयपुर से।
आसि निर्माइलो पुरी मनु नदी तटे।।	आकर निर्माण किये पूरी नदी के तट में।।
सेई मनु नदी मध्ये जाइया विशेषे।	उस मनु नदी के बीच जाकर विशेष।
आर एक नदी आसि प्रवेश होइछे।।	और एक नदी आकर प्रवेश करके।।
सेइ दुइ नदीर त्रिवेणीते करि घर।	उस दो नदी के त्रिवेणी में किये घर।
तथाते जे आछये अमर नृपवर।।	अतः वो आकर अमर नृपवर।।
कालवश होइया तिनि सेइ स्थाने मरिलो।	कालवश होकर वे उस स्थान में मरे।
तान पुत्र राजधर तथा राजा होइलो।।	उनके पुत्र राजधर तथा राजा हुए।।
राजधर नदी बोलि कहे तद्वधि।	राजधर नहीं बोले कहे तद् पश्चात।
प्रकाश आछये नाम लोके अद्यावधि।।	प्रकाश आछय नाम लोग अन्याविध।।

इस स्थान में पक्के घाट विशिष्ट पुष्करिणी तथा प्रशस्त बाँधे रास्ते के चिन्ह यद्यपि विद्यमान है।

तृतीय लहर 194

चित्र तृतीय लहर–194

राजमाला तृतीय लहर **पृष्ठ संख्या — 194**



राताछड़ा से प्राप्त त्रिपदीद्वय

हुए है। स्थान को विशेष तरीके से अनुसंधान करने से दोनों भंग्नाश के पाने की संभावना थी। व्यासमुनि ने उस विषय के तादृश्य यत्न नहीं किया। अब संधान मिलना असंभव है।

त्रिपदीद्वय के उल्टे तरीके से(पदत्रय उपर की तरफ स्थापित अवस्था में) मिला है। बडे त्रिपदी के मध्य छोटा स्थापित था। बहुत जन के अनुमान करने पर, कि वस्तुद्वय सुवर्ण निर्मित है, व्यासमुनि ने, राजपुरुषगण द्वारा लांछित होने की आशंका से, तुरन्त आगरतल्ला में आकर राजदरबार में अर्पण किया है।

त्रिपुरेश्वरगण जिस प्रकार के त्रिपदी में भोजन रख कर आहार करते है, प्राप्त त्रिपदीद्वय तद्‌ानुरुप आकार में गठित है। इसको साधारणतः "भोजन बेड" कहते हैं।

राता छाडा के किनारे महाराज अमर माणिक्य को छोडकर युवराज कृष्णमणि(बाद में कृष्ण माणिक्य) ने मुसलमान द्वारा विताडित अवस्था में कुछ काल वास किया था। इसके भिन्न अन्य कोई राजा अथवा "भोजन बेड" व्यवहार योग्य कोई समृद्ध व्यक्ति तथा वास करने के प्रमाण अथवा प्रवाद वाक्य नहीं मिलते। इस रुप निर्जन तथा दुरधिगम्य गिरि कन्दरा में विपन्न व्यक्ति के अलावा धनशाली अन्य व्यक्ति के वास करना सम्भव नहीं होता। उस काल में त्रिपुरेश्वर गण व्यतीत(के अन्य/अलावा) धातु निर्मित त्रिपदी व्यवहार योग्य कोई धनाढय या सभ्य व्यक्ति उस अंचल में सम्भव नहीं था। कुकिगण ही उस समय सर्वेसर्वा थे। वर्तमान काल में भी उक्त स्थान के साथ कुकि राजगण निवास करते थे। जिस स्थान में त्रिपेदी मिला है, उस स्थान के छडा के पश्चिम तीर में सैनिक कुकि सरदार के घर अभी भी विद्यमान है।

वर्णित समग्र अवस्था आलोचना करने पर, छडा के मध्यवर्ती मृतिका गर्भ में प्राप्त त्रिपदीद्वय महाराज अमर माणिक्य अथवा कृष्णमणि युवराज के थे। यह निःसंकोच कहा जा सकता है। भृत्यगण उन्हे धोने के लिए लाकर असतर्कता से छडा के पानी में गिर गया था अथवा वह सुवर्ण निर्मित ज्ञान से अपहरण करके इस स्थान में छुपे अवस्था में रखा गया था। यही अनुमित होता है। महाराज अमर माणिक्य के अध्यूषित स्थान में ही कृष्णमणि युवराज ने आश्रय ग्रहण किया था। 'कृष्ण माला' में इस विषय के प्रमाण मिलते है। यथा—

तान पुत्र राजधर तथा राजा होइलो।।	उनके पुत्र राजधर तथा राजा हुए।।
राजधर नदी बोलि कहे तद्‌वधि।	राजधर नहीं बोले कहे तद् पश्चात।
प्रकाश आछये नाम लोके अद्यावधि।।	प्रकाश आछय नाम लोग अन्याविध।।
पूनि कृष्णमणि युवराजे सेइ स्थान।	पूनि कृष्णमणि युवराज उस स्थान।
कतो दिन छिलो पुरी करिया निर्माण।।	कितने दिन थे पुरी करके निर्माण।।
कृष्णमाला	कृष्णमाला

तृतीय लहर 196

महाराज राजधरमाणिक्य ने युवराज के समय में सराईल परगना के जंगल आबाद कराकर वहां पर एक आवास का निर्माण करवाया था। इस घर में समय समय निवास कर रहने पर भी वह किसी भी समय राजधानी की तरह व्यवहृत नहीं हुआ।

कल्याणपुर राजधानी

महाराज कल्याणमाणिक्य ने राज्य लाभ करके वर्तमान खोआई विभाग के अन्तर्गत खोआई नदी के तीरवर्ती उपत्यका(**Valley**) तथा अल्पोन्नत पर्वत माला के कुछ अंश लेकर एक नगर स्थापन किया। यहाँ एक वास भवन भी निर्मित हुआ था। सरोवर खनन, देव मन्दिर गठन तथा विलास कुंजादि निर्माण द्वारा इस स्थान को जो मनोरम किया गया था, वर्तमान विनष्टावस्था द्वारा भी उसका आभास मिलता है। यहाँ के कल्याण सागर का नाम उल्लेख योग्य है। महाराज के नामानुसार से इस स्थान का नाम 'कल्याणपुर' हुआ है। यह स्थान वर्तमान राजधानी से उत्तर पूर्व के कोण में कम से कम दस कोस की दूरी पर अवस्थित है। बडमूडा पर्वत श्रेणी को अतिक्रम करके यहाँ जाना पड़ता है। इस स्थान का विवरण पहले ही प्रदान किया गया है।

महाराज कल्याणमाणिक्य का उदयपुर से सुदूर कल्याणपुर जाकर राजधानी स्थापन करने का उद्‌देश्य निर्णय करना दुःसाध्य है। इस विषय में नानाविध जन प्रवाद प्रचलित है। कोई कोई कहते हैं कि महाराज कल्याण शिकार उद्‌देश्य से इस स्थान में गये थे तथा यह स्थान मनोरम देखकर समय समय वास करने के अभिप्राय से नगर स्थापना तथा पुरी निर्माण किया था। उनके मतानुसार कुकि, लुसाई तथा हालाम आदि पार्वत्य जाति को दमन करने के निमित्त इस स्थान में आवास निर्माण की जरुरत थी। फिर भी कोई कहते हैं कि महाराज कल्याण बाल्यकाल में पितृ मातृहीन होकर निराश्रय अवस्था में वाछाल जातीय किसी व्यक्ति द्वारा पालित तथा वाछाल सम्प्रदाय के यत्न तथा आधार से बडे हुए थे। इसी कारण वाछाल जाति के प्रति उनका आन्तरिक अनुराग था। उस काल में बडमुडा के साथ नाना स्थान में बाछालगण वास करते थे। समय समय उनके संग लाभ के अभिप्राय से महाराज ने यह नगर स्थापन किया था। इन सब जनरव के मध्य कौन सा ग्रहणीय है, वह निर्धारण करने का कोई उपाय नहीं है।

इस स्थल में जिन सब राजधानी की बात कही गयी है तत्‌समस्त राजगण के सामायिक वास के अभिप्राय से निर्मित हुआ था। समस्त राजाओं ने स्थायी राजधानी उदयपुर में रखकर राजा शासन किया था। नव प्रतिष्ठित राजधानी समूह द्वारा इस स्थान के गौरव बिन्दु मात्र क्षुण्ण नहीं हुए।

राजमाला द्वितीय लहर में मिला है कि पूर्ववर्ती काल में भी किसी किसी राजा ने उदयपुर के राजपाट को अक्षुण्ण रखकर अन्य नये स्थान में सामायिक राजधानी स्थापन किया था। इस तल में धर्मनगर, कैलाशहर, कैलारगढ तथा मानिक भण्डार आदि स्थान में

प्रतिष्ठित राजबाड़ी का नाम उल्लेखयोग्य है। पार्वत्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों में भी बहुत सी बाड़ियों के चिन्ह अभी भी विद्यमान है।

राज–दरबार

दरबार के गठन प्रणाली राजगण प्रतिदिन निर्दिष्ट समय में अमात्यवर्ग परिवृत होकर खुले दरबार में राजकार्य सम्पादन करते थे। चारों तरफ सैनिक प्रहरी नियुक्त होकर के दरबार गृह की शान्ति रक्षा करते थे। मन्त्री–समाज के अलावा पण्ड़ित–मण्डली भी दरबार में शामिल थी, वे लोग धर्म और शास्त्र–सम्बन्धी व्यवस्था प्रदान करते थे। पद–मर्यादा के अनुसार दरबार में बैठने का स्थान निर्धारित था, बहुत से लोगो को खड़ा रहना पड़ता था।

दरबार के कार्य राजा से करने योग्य राज्य सम्बंधीय नाना विषय की आलोचना और मीमांसा, असाधारण अपराधियों का विचार, शासन और विचार आदि विषयक नया प्रणाली निर्धारण, धर्म और समाज की श्रृंखला रक्षा की व्यवस्था आदि कार्य दरबार के द्वारा निर्वाहित होता था। राजकार्यो के अवसान में, पंडितगणों के मध्य में शास्त्र चर्चा और उस विषय की विचार वितर्क में भी बहुत सा समय अतिवाहित होता था। अपरान्ह में पुराण पाठ और हरिनाम कीर्तन की व्यवस्था थी।

शासनतंत्र और शासन प्रणाली

शासन तंत्र राजमाला प्रथम लहर में सन्निवेशित राजगणों के शासन काल में सेनापतियों के हाथ में शासनभार रहता था। सैनिकबल और शासन क्षमता एक हस्त में अर्पित होने के कारण बहुत सी जगह में कुफल देखने को मिला था, राजमाला द्वितीय लहर की आलोचना करने से इस विषय का विवरण जाना जा सकता है।(1) महाराज विजय माणिक्य ने सेनापतिगणों के हाथों से शासनभार का दायित्व लेकर नवनियोजित वजीर की हाथों में शासनभार के दायित्व अर्पण किया था। उस समय से त्रिपुरा के शासनविभाग में वजीर उपाधि प्रवर्तित हुई है। महाराज अमरमाणिक्य के समय में पात्र और मन्त्रि पद का उल्लेख मिलता है, वजीर पद इस समय भी अक्षुण्ण था। इन लोगों के द्वारा सामयिक और राष्ट्रिक अवस्था के अनुसार शासनपरिषद का गठन होता था।

शासन प्रणाली महाराज रत्नमाणिक्य ने मुसलमान शासन के आदर्श अवलम्बन से जो शासनप्रणाली निर्धारण किया था, राजमाला के तृतीय लहर के समय में भी उसमें ज्यादा परिवर्तन नही हुआ था। दूरवर्ती प्रदेश के शासनकर्तागणों में ''लस्कर'' उपाधि इस समय भी प्रचलित था, इनके अलावा महाराज अमर माणिक्य द्वारा ''थानादार'' उपाधि के प्रवर्तन का परिचय मिलता है, ये लोग भी प्रादेशिक शासनकर्ता थे। ये सब उपाधि मुसलमानों से गृहीत थी।

---

(1)राजमाला– द्वितीय लहर, 156 पृ द्रष्टव्य।

तृतीय लहर 198

इस समय में भी विचार तथा शासन कार्य सम्पादन के लिए लिखित नियमावली प्रवर्तित नहीं हुए। वे सब कार्य निर्वाह के लिए स्वतन्त्र आफिस या अदालत नहीं थे। शासन कर्ता गण न्याय तथा धर्म को प्रतिलक्ष रखकर अपने अपने विवेकानुसार विचार तथा शासन कार्य निष्पादन करते थे। विचार में जो अपराधी प्राण दण्ड के योग्य विवेचित होते, उनको सिरच्छेद करने की व्यवस्था थी।

चर नियोग — प्राचीन काल में राज्य की अवस्था, प्रकृति पुंजे के मनोभाव, शत्रु पक्ष के गतिविधि तथा दूसरे राष्ट्र के संदेश आदि गुप्त रुप से संग्रह करने के निमित्त राजगण चर नियुक्त रखते थे। वे कभी भिक्षुक वेश में कभी बनिक भेष में देश विदेश में भ्रमण करके गुप्त रुप से संदेश संग्रह करते थे। समय तथा प्रयोजन समझकर उन लोगों को नाना प्रकार के भेष धारण करने पड़ते थे। चर के कर्तव्य अतीव कठोर तथा दायित्वपूर्ण थे, राजगण इनके वाक्य के उपर निर्भर करके कार्य नियुक्ति होते थे अर्थात राज्य के प्रधान सहाय, बहु विषय में अभिज्ञ, सुचतुर तथा सत स्वभावान्वित धार्मिक व्यक्ति लोगों को चर कार्य में नियोग किया जाता था। अनभिज्ञ असत या अयोग्य चर के वाक्य के उपर निर्भर करने पर राजा को हर पल कर्तव्य भ्रष्ट तथा अप्रिय होना पडा है, यहाँ तक कि विपदापन्न होने की आशंका होती है, अर्थात विशेष विवेचना पूर्वक चर कार्य में लोगों का निर्वाचन किया जाता है। चर के योग्यता तथा धीरजशक्ति राज मंत्री की अपेक्षा न्यून न था। प्राचीन नीतिशास्त्र में चर के जिन समस्त लक्षण वर्णित हुए है। वह आलोचना करने पर सम्यक अवस्था में समझा जायेगा। (1)

....

(1) नीति शास्त्र के चर के लक्षण इस रुप में वर्णित किया गया है।

तर्केंगितज्ञः स्मृतिमान् स्वीयभाव प्रकाशकः।
क्लेशायाससहो दक्षः सर्वत्र भय वर्जितः।।
सुभक्तोराजसु तथा कार्यानां प्रतिपत्तिमान्।
नृपो निहन्याच्चारेण परराष्ट्र विचक्षणः।।
कालज्ञो मंत्रकुशलान् संवत्सर चिकित्सकान्।
तथान्यानपि युन्जीत समर्थान् शुद्धचेतसः।।
अक्रुद्धागंश्च तथालुब्धान दृष्टार्थान तत्व भाषिण।
पासन्डिनस्तापसादीन् परराष्ट्रे नियोजयेत्।।
स्वदेश परदेशज्ञान शुसीलान् सु विचक्षणान्।
वार्ता हर्यान बहुंश्चैव चरानां विनियोजयेत्।।
नैकस्य वचने राजा चारस्य प्रत्ययं बहेत्।
द्वयोः सम्बन्धमाज्ञाय तद्यूक्तं कार्यामारभेत्।।
तस्माद्राजा प्रयुन्जीत चरान् बहुमुखान् बहून्।
नीरेतो वामनाः कुब्जास्तद्विधा ये च कारवः।।
भिक्षुक्यश्चारणा दास्यो मालाकार्यः कलाविदः।
अन्तःपूरगतां वार्तां निर्हरेयुरलक्षिताम्।।

युक्ति कल्पतरु।

भोजराजकृत युक्ति कल्पतरु ग्रन्थ में चर के जो लक्षण वर्णित है, उसके स्थिर मर्म यह है– तर्क में इंगितज्ञ, प्रखर स्मृति शक्ति विशिष्ट, यथायथ भाव प्रकाश में सक्षम, कष्ट सहिष्णु, श्रम पटु, सर्व कार्य में दक्ष, निर्भीक, राजा के प्रति विशेष भक्तिमान, सर्व विषय में प्रतिपत्तिशाली, परराष्ट्र तत्वज्ञ, समय समझ कर कार्य करने में सक्षम, मंत्रणापटु, चिकित्साशास्त्र विद्, तथ्य संग्रह में समर्थवान, विशुद्ध चित्त, क्रोधहीन, निर्लोभ, तत्वज्ञ स्वदेश तथा विदेश सम्बन्ध में अभिज्ञ, सुशील, विचक्षण व्यक्ति लोगों को वार्ता संगहार्थ नियोग करना संगत है।

राजा वार्ता संग्रह के लिए बहुचर नियुक्त रखेगें। एक व्यक्ति वार्ता में, वचन में विश्वास स्थापन नहीं करेगें। अन्ततः दो जन द्वारा संगृहीत संदेश विचार पूर्वक ग्रहण करके कार्यानुवर्ती होगें। नपुंसक, वामन, कुब्ज, भिक्षुक तथा चारण प्रभृति द्वारा संदेश संग्रह करेगें। अन्तःपुर के संदेश लेने के निमित्त दासी की तरह लोक प्रेरण करेगें। इत्यादि।

युक्ति कल्पतरु मत में चर दो श्रेणी में विभक्त– प्रकाशित तथा अप्रकाशित। राजगण सन्धि विग्रहादि कार्य अथवा सन्देश प्रेरणार्थ प्रकाशित तरीके से जो चर नियुक्त किये थे वे 'दूत', तथा गुप्त तरीके से संदेश संग्रहार्थ नियोजित व्यक्तिगण 'चर' नाम से अभिहित होते है। गुप्तचर की तरह दूत की योग्यता तथा दक्षता रहना आवश्यक है। प्राचीन मत में दूतगण निम्नोक्त गुण विभूषित होगें–

''यथोक्तवादी दूतः स्याद्देशभाषाविशारदः।
शक्तः क्लेशसहो बाग्मी देशकाल विभागवित्।।
विज्ञात देश कालश्च दूतः स्यात् स महीक्षितः।
वक्ता नयस्य यः काले स दूतो नृपतेर्भवेत्।।

मत्स्य पुराण।

दूतगण यथोक्तवादी देश भाषा में अभिज्ञ अर्थात जिस स्थान में प्रेरित होगें उस स्थान के भाषा में सुपंडित, कार्यकुशल, कष्ट सहिष्णु देश तथा काल विवेचन में, कार्य प्रणाली निर्वाचन में सक्षम, नीतिशास्त्र में विशारद होना आवश्यक है।

कूटनीति पारदर्शी चाणक्य ने दूत के लक्षण निम्नलिखित तरीके से वर्णन किये है–

''मेधावी वाक्पटुः प्राज्ञः परिचित्तोपलक्षकः।
धीरो यथोक्तवादी च एष दूतो विधीयते।।''

चाणक्य नीति।

नीति कुशल भूपति भोजराज ने दूत के लक्षण विषय में और अनेक बात कही हैं। उनके मत से शत्रु गण के आकार तथा ईगिंत दर्शन में भाव समझने में सक्षम, शत्रु के वाक्य तथा व्यंगार्थ इत्यादि ज्ञातसार, प्रत्युत्पन्न मति, धीर, सभासद, सत्कुल सम्भूत, कार्यपटु, सुदृढ राजभक्त, निर्मल चरित्र, मेधावी, देशकाल समझकर कार्य

तृतीय लहर 200

करने में सक्षम, बपूष्मान, निर्भीक, वाकपटु आदि गुण सम्पन्न व्यक्ति लोगों को दूत नियोग करना कर्तव्य है व ये सब गुण विशिष्ट दूत ही प्रशस्त है।(1)

उक्त ग्रन्थ के मत से दूत तीन प्रकार के हैं– विमृष्यार्थ, मितार्थ तथा शासन हारक। जो दूत केवल प्रभु आज्ञा पालनार्थ में नियुक्त, वे विमृष्यार्थ। जो दिए कार्य संम्पन्न करके चुप रहते है– उत्तर प्रत्युत्तर नहीं करते वे मितार्थ तथा जो पत्रादि वाहक वे शासन हारक दूत नाम से अभिहित हैं।

दूत के कर्तव्य सम्बन्धी अनेक बात है। इस स्थल में उसकी आलोचना करना असम्भव तथा अनावश्यक है।

राजामाला आलोचना से जाना जाता है कि प्राचीन काल से अन्यान्य राज्य के समान त्रिपुर दरबार नें भी चर तथा दूत नियोग किया जाता था। विभिन्न राज्य से त्रिपुरा में दूत प्रेरित होने के प्रमाण भी राजमाला में है। गुप्त तरीके में संदेशादि संग्रह तथा प्रकाशित तरीके से संदेश तथा पत्रादि वहन करना इनका कर्तव्य कार्य था। सुविज्ञ तथा चौकस व्यक्तिगण द्वारा यह सब कार्य साधित होता था। गुप्तचर गण जरुरत स्थल में प्रतिपक्ष के नियोजित चर आदि को धृत तथा दरबार में उपस्थित करने के अधिकारी थे। त्रिपुरा में दूत तथा चर नियोग के तथा भिन्न राज्य से त्रिपुरा के चर प्रेरण के कतिपय निदर्शन निम्न में प्रदान किया जा रहा है।

1. पश्चाते हेडम्बपति भ्रातृके लिखिलो।	हेडम्बपति ने लिखा भाई को पश्चात।
एई सब तत्व पत्रे दूत पाठाइलो।।	ये सभी तत्वों से भरे पत्र को ले आया वहां दूत।।
राजमाला प्रल दाक्षिण खण्ड 35 पृष्ठ	राजमाला प्रल दाक्षिण खण्ड 35 पृष्ठ
2. रक्त अनिबारे दूत पाठाय स्थाने स्थान।।	रक्त हेतु दूत चले हर और हर स्थान पर।।
राजमाला प्रल तैदाक्षिण खण्ड 35 पृष्ठ	राजमाला प्रल तैदाक्षिण खण्ड 35 पृष्ठ
3. हेड़म्ब राजाये दूत पाठाये तखन।	हेड़म्ब राजा ने दूत भेजा उसी क्षण।
राजमाला प्रल प्रतीत खण्ड 46 पृष्ठ	राजमाला प्रल प्रतीत खण्ड 46 पृष्ठ
4 त्रिपुरार चर गण ताहाके देखिया।	त्रिपुरा के चरों ने उन्हें देखकर।
युद्ध हेतु सैन्य सेना गेलेक साजिया।।	युद्ध हेतु सेना हो गई प्रस्तुत।।
राजमाला प्रल युझार खण्ड 50 पृष्ठ	राजमाला प्रल युझार खण्ड 50 पृष्ठ

(1)

''परेंगितज्ञः परवागव्यंगार्थस्यापि तत्तवित्।
सदोत्पन्नमतिर्धीरो दूतः स्यात् पृथ्वी पतेः।।
दूतन्चैव प्रकुर्ब्बीत सर्वशास्त्र विशारदम्।
ईंगितज्ञं तथा सभ्यं दक्षं सत्कुलसम्भवम्।।
अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान् देशकालवित्।
वपूष्मान् वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते।। ''

युक्ति कल्पतरु।

तृतीय लहर 201

5. ऐही तो सुनिया राजा चर नियोजिलो।	यह सुन राजा ने गुप्तचर नियुक्त किया।
कुष्माण्ड सहिते सुरी धरीया आनिलो।।	कुष्माण्ड के साथ सुरी पकड़ लाया।।
राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 50 पृष्ठ	राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 50 पृष्ठ
6. पुर्नबार बादशाहे दूतके पाठाए।	बादशाह ने दूत को पुनः भेजा।
राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 52 पृष्ठ	राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 52 पृष्ठ
7. अव्यक्त गौरेर दूत आसीलो देखीते।।	गौर के गुप्तचर ने आकर देखा।।
राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 55 पृष्ठ	राजमाला द्विल विजयमाणिक्य खण्ड 55 पृ
8. रणागण भाई समरजित नारायण।	रणागण का भाई वहां था समरजित नारायण।
शीध्र एक दूत पठाई ताहार सदन।।	शीध्र एक दूत भेजा मैंने उसके सदन।।
राजमाला द्विल जयमाणिक्य खण्ड 75 पृष्ठ	राजमाला द्विल जयमाणिक्य खण्ड 75 पृ
9. सेई जने कहे गिया आमा दूत स्थाने।	कहा उसने मेरे दूत के यहां।
राजमाला द्विल जयमाणिक्य खण्ड 76 पृष्ठ	राजमाला द्विल जयमाणिक्य खण्ड 76 पृ
10. दूत मुखे सुनि उदय माणिक्य क्रोध होइलो।	दूत मूंह सुनकर उदय माणिक्य हुआ क्रुद्ध।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 11 पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 11 पृ
11. सुनिया सेकान्दर सा बोलिलो दूतेरे।	सुनकर वह सिकन्दर बोले अपने दूतों से।
अति शीघ्र दूत जाव राज सैन्य तरे।।	अतिशीघ्र जावो दूतराज सेना सपूतों में।।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 33 पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 33 पृ
12. राज धर नारायण रहिछे गड़ते।	राज धर नारायण थे अपने गढ़।
चरे आसि जानाइलो ताहार साक्षाते।।	चर आकर कहा उनसे दोनों हाथ जोड़।
राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 34 पृ	राजमाला तृल अमरमाणिक्य खण्ड 34 पृ
13. हेनो मते राज सैन्य गड़े रहे गिया।	इसी तरह राज सेना जाकर रही गढ में।
सेई काले नृप दूत दिलो पाठाइया।।	उसी समय नृप ने दूत भेजा शत्रु गढ़ में।।
राजमाला तृल यशोधरमाणिक्य खण्ड 60 पृ	राजमाला तृल यशोधरमाणिक्य खण्ड 60 पृ
14. राजार उद्देश्ये चर पाठाय पर्बते।।	राजा के लिए चर भेजा पर्वत था जहाँ।।
राजमाला तृल यशोधरमाणिक्य खण्ड 61 पृ	राजमाला तृल यशोधरमाणिक्य खण्ड 61 पृ

चर तथा दूत विषयक उक्ति और भी अनेक हैं। अधिक संग्रह करना निष्प्रयोजनीय है।

राजकर भूमि के उपर अवधारित राजस्व कर अति कम था। पार्वत्य प्रदेश में हस्ती बराह, हिरन तथा वानर आदि वन्य जन्तु के उपद्रव से शस्य क्षेत्र के विस्तर अपचय घटते थे। विशेषतः तत्काल में खाद्य शस्य अति सुलभ था। इन सबके कारण राजस्व–कर लघु किया जाता था। राजकर अवधारण काल में प्रकृति पुंज के सुख स्वच्छन्द के प्रति विशेष दृष्टि रखा जाता था। कृषक, प्रजा गण, धातु मुद्रा या कौडि द्वारा या शस्य के भाग द्वारा राजस्व कर प्रदान करते थे।

पार्वत्य प्रदेश के जूमिया/झूमिया प्रजागण नानाविध जंगली जन्तु, गजदन्त, पशु के चर्म तथा श्रृंग, धातु निर्मित विविध वस्तु तथा स्वहस्त बने नानाविध वस्त्र वार्षिक नजर

प्रदान करते, वे ही राजकर स्वरुप गृहीत होते थे। अतएव जूमोत्पन्न तिल तथा कपास के निर्दिष्ट अंश सरकार ग्रहण करते थे। किसी किसी सम्प्रदाय के व्यक्ति, राज सरकारी निर्धारित कार्य सम्पादन करके, राज कर से अव्याहित लाभ करते थे। यह नियम वर्तमान काल में प्रचलित है। सरकारी कार्य निर्वाह हेतू जो राजकर से वर्जित रहते है, उन लोगो को 'हदार लोक' कहा जाता है। राजमाला प्रथम लहर में 216–218 पृष्ठ में इस श्रेणी के प्रजा गण के विवरण प्रदान किया है।

राजा तथा राज्य की अवस्था

महाराज अमर माणिक्य का पूर्व विवरण महाराज अमर, देवमाणिक्य के पुत्र थे। त्रिपुरेश्वर देवमाणिक्य एकदा जल विहार उपलक्ष्य में नौका रोहण के लिए गोमती नदी के पथ में जा रहे थे। नदी के तीर में कालूआ छडा(कचूआछडा) नामक स्थान में त्रिपुरा के 'हाजारा' उपाधि विशिष्ट सेनापति का घर था।

उस समय की बात कही जा रही है, जिस काल में हाजरा रसांग मर्दन नारायण सेनापति के सहयोग से चट्ट ग्राम में युद्ध कार्य में मग्न थे। हाजारा को अति सुन्दरी युवती, महिला स्नानान्त अपने छोटे से घर में बैठकर भीगे हुए केश सुखा रहे थी। नौ–बिहारी राजा की उस तरफ नजर पडी। राजा भी हाजरा नन्दिनी के दृष्टि पथ देखकर रह न सके। दर्शन मात्र ही उभय के मध्य परस्पर असाक्ति ने जन्म लिया। राजा ने उस कन्या से गर्न्धव विधान से विवाह करके आसंग लिप्सा पूर्ण किये। परन्तु अन्य महिषी गण के विराग भय से वह अप्रकाश रखा गया। यथा समय हाजारा की कन्या ने राज औरस से एक सुकुमार पुत्र लाभ किया।

पाँच साल बाद हाजारा ने गृह में प्रवेश किया तो वे कमनीय कान्त दौहित्र का दर्शन करके तथा सम्यक विवरण से अवगत होकर अतिशय आन्नदित हुए। शिशु का नाम 'रामदास' रखा गया। सेनापति 'हाजारा' वाछाल जाति के थे।

देवमाणिक्य के ज्येष्ठ पुत्र विजय माणिक्य के राजत्व लाभ करने के बाद, रामदास का परिचय पाकर उसके सादर राजधानी में आने के पूर्व अपने परिवार भोगी तथा राजकुमार चित्त सुशिक्षा की व्यवस्था किया। तत्काल उनकी उम्र सोलह साल थी।

रामदास के पित्रालय में आगमन के बाद 'अमरदेव' नाम हुआ। उन्होने शास्त्र तथा शस्त्र विद्या में सुशिक्षित होकर कम समय में ही विपुल यश लाभ किया। राजदरबार तथा जन समाज में उनका प्रभाव तथा प्रतिपति उत्तरोत्तर वृद्धि पाने लगे। चरित्र गुण में वे सबके सम्मान भाजन हो उठे।

तृतीय लहर 203

रामदास के(अमरदेव) अबाल्य 'किशोर जीवन' पार्वत्य प्रदेश में अतिवाहित होने से, वे मृगया शिकार तथा कष्ट सहिष्णू हुए थे तथा अल्पकाल में शस्त्र विद्या में सुदक्ष हो उठे। यौवन में युद्ध विद्या के प्रति उनका प्रगाढ अनुराग जन्मा, असाधारण प्रतिभा के कारण उन्होने त्रिपुरा के सेनापत्य लाभ किया। वे किस राजा के शासन काल में सैनिक विभाग में प्रविष्ठ हुए थे, वह जानने का उपाय नहीं है। महाराज उदयमाणिक्य के राजत्व के समय में इसका सेनापति रुप मिलता है। तत्काल में 'भीम सेनापति' नाम से प्रसिद्ध थे।(1) चट्ट ग्राम के पठान समर में प्रधान सेनापति रणागण नारायण(रंगनारायण) के हारने व उडिया नारायण (भांगिल फा) के मरने के बाद, महाराज उदय ने अमरदेव के समर क्षेत्र में प्रेरण किया। इन्होने पठान वाहिनी के साथ क्रमान्वय से पाँच वर्ष युद्ध किया था।

उदयमाणिक्य के पुत्र जयमाणिक्य के अधिपत्य समय में भी अमरदेव सेनापतित्व में नियुक्त थे। इस समय राजा के फूफा तथा सेनापति रंगनारायण प्रतापान्बित हो उठे। राजा को दिखावे के रुप से सिंहासन संस्थापन करके कार्यतः रंगनारायण त्रिपुरा में राजत्व कर रहे थे। उन्होने सेनापति अरिभीम को चट्टग्राम के युद्ध में नियोग करके अमर देव को मेहेरकुल गढ़ में तथा कुछ काल के बाद वहाँ से कल्मिगढ़ भेज दिया।

रंगनारायण राजा तथा राज्य के प्रति अमोघ प्रभाव विस्तार करके भी तृप्त नहीं हो पाये। उत्तरान्तर उसका ह्रदय राज्य पिपासा से अधीर हो उठा तथा राजा को वध करके वह तृष्णा निवारण के अभिलाषी हुए। परन्तु अमरदेव उसके भय के कारण बने हुए थे। उसके शौर्य–वीर्य दर्शन से रंगनारायण ने सोचा अमर देव के जिवित रहते राज्य भोग करना उनके भाग्य में नहीं घटेगा व अमर को निहत करके सिंहासन अधिकार करेगें। रंगनारायण की यह भीति क्रमशः प्रबल हो उठ रही थी। प्रति मूहूर्त में अमर देव द्वारा आक्रान्त तथा निहत होने की आशंका से व्याकुलित रहते थे। अनेक चिन्ता के बाद रंगनारायण ने राजा के आदेश भेजकर अमर देव को कल्मिगढ़ से राजधानी में लाये। तथा एक दूसरे के अनिष्ट चेष्टा नहीं करेगें अतः शालग्राम चक्र तथा हरिवंश ग्रन्थ स्पर्श करके इस प्रकार प्रतीज्ञाबद्ध होने के निमित्त अमर देव को बाध्य किया। अमर के विश्वास भाजन होने के अभिप्राय से रंगनारायण ने खुद तद्रुप से प्रतीज्ञा किया। अमर को अनिष्ट चिन्ता से दूर रखना ही इस

---

(1)

विजय माणिक्यकेर भ्राता भीम सेनापति।	विजय माणिक्य के भ्राता भीम सेनापति।
अमर माणिक्य नामे होइलो ख्याति।।	अमर माणिक्य नाम के हुए ख्याति।।"
त्रिपुर वंशावली	त्रिपुर वंशावली

तृतीय लहर 204

प्रतिज्ञा का उद्देश्य था। अमरदेव के मन में किसी रुप से मन्द अभिसन्धि न था तथापि उन्होने रंगनारायण के प्रस्तावानुसार प्रतिज्ञा की। परन्तु इस प्रकार अहेतुक प्रतिज्ञाबद्ध के प्रस्ताव से उसके हृदय में सन्देह पैदा हुआ। तद्अवधि रंगनारायण के कार्यकलाप के प्रति उन्होने तीक्ष्ण दृष्टि रखी थी।

अमर देव को प्रतीक्षा के साथ आबद्ध करके रंगनारायण कुछ निश्चिन्त हुए। वे जानते थे कि प्रतिज्ञा भ्रष्ट होकर अमर उनके अनिष्ट चेष्टा नहीं करेगें किन्तु उसके विद्यमान में राज्य भोग करना जो असमभव होगा, इस भय से रंगनारायण का अन्तर सर्वदा व्याकुल रहता था। इसलिए राजा को मारने के पूर्व अमर देव का वध करना उन्होने श्रेयस्कर सोचा तथा उस उद्देश्य से साधनोद्देश्य उसको आहार के निमित्त अपने घर में सादर से आवाहन किया। अतिरिक्त मात्रा में मद्यपान से विह्वल करके संज्ञाहीन अवस्था में आमंत्रित अतिथि का वध करना स्थिरीकृत हुआ। इस कार्य साधन के निमित्त गुप्तचर नियुक्त रहे।

सेनापति अमर को, रात में निमन्त्रण रक्षा के निमित्त रंगनारायण के घर में गमन करके यथेष्ट आदर सत्कार्य मिला। इस समय किसी हितैषी व्यक्ति के ईशारे से वे जिस आसन्न खतरे के मुख में हैं, वह प्रतीत समझे। तब, वह स्थान परित्याग करना ही संगत बोध से वे 'बाह्य पीडा' की बहाना करके खडे हुए। रंगनारायाण उसके शौचालय जाने के निमित्त अनेक अनुरोध कर रहे थे। अमर ने उस बात पर कर्णपात न करके घर के बाहर आकर देखा कि द्वारदेश में रक्षित उनके आरोहण किये गये अश्व नहीं है। वह स्थानान्तरित हुआ है। घटनाक्रम में अन्य एक व्यक्ति जो एक अश्व के साथ वहाँ उपस्थित था, अमरदेव ने वह अश्व बलपूर्वक छीनकर द्रुत वेग से पलायन किया। रंगनारायण की अभिसन्धि व्यर्थ हुई।

पूर्व ही कहा गया है, अमरदेव का प्रभाव प्रतिपति यथेष्ठ था। उन्होने घर में आकर रिश्तेदार तथा दोस्तों को बुलाया तथा अगले–दिवस एक दल सैन्य–सह रंगनारायण के विरुद्ध में यात्रा किया। इधर रंगनारायण भी राज्य सैन्य लोगों को सज्जित करके युद्धार्थ अग्रसर हुए। अमरदेव ने चौहाटा ग्राम में तथा रंगनारायण ने कचुआछडा में गढ़ बाँधे। उभय पक्ष एक युद्ध हुआ। इस युद्ध में रंगनारायण के बहु सैन्य निहत हुए थे।

रंगनाराण ने देखा कि सैन्य संख्या की वृद्धि करना आवश्यक है। उन्होने अपने भ्राता समरजीत नारायण को सैन्य सह शीघ्र योगदान करने के निमित्त आवहान किया। अमरदेव ने यह सन्देश पाकर चातुरी जाल विस्तार किया। उन्होने रंगनारायण का नाम देखकर समरजीत को एक पत्र में लिखा तथा तत्कालीन वहाँ उस दूत द्वारा

प्रेरण किया। रंगनारायाण प्रेरित पत्र मिलने के पूर्व यह पत्र समरजीत के हस्तगत हुआ तथा ज्येष्ठ भ्राता के पत्र ज्ञान से वह पत्र हाथ में लेकर तदानीन्तन प्रथानुसार से मस्तक में स्पर्श करने के निमित्त सिर अवनत करने के मात्र ही, अमरदेव के दूत ने उसके मस्तक छेद करके उसका मुण्ड–सह अमरदेव के शिविर में प्रत्यावर्तन किया।

इधर रंगनारायण दर्प–सह उच्च कंठ से बारम्बार कह रहे थे – "समरजीत काफी सैन्य–सह आ रहे है। इस बार शत्रु पक्ष को समूल से विनाश करेगें।" इस वाक्य के साथ साथ ही अमरदेव के दूत ने समरजीत के मुण्ड सहित रंगनारायण के शिविर में निक्षेप किया। भ्राता के छिन्न मुण्ड दर्शन से रंगनारायाण ने सोचा कि भ्राता समरजीत उसके सहायतार्थ आगमन काल में ससैन्य मारे गये।

भ्राता के छिन्न मस्तक दर्शन से रंगनारायण भीत तथा अविलम्ब से उनके भी यह दशा घटित होगा, सोचकर शंकित हुए। उनका शिविर में अवस्थान करने का साहस नहीं हुआ। सैन्य सामन्त तथा अस्त्रादि परित्याग करके उन्होने छुपकर पलायन किया। अपने आवास में या लोगों के समीप आश्रय ग्रहण करना निरापद नहीं, सोचकर वे मत्स्य धृतार्थ(पकडने के लिए) खनित छोटे से एक तालाब के पानी में समस्त शरीर निम्मजित करके मृत्पात्र(मिट्टी का घडा) द्वारा मस्तक आवरण पूर्वक दो दिवस तद्अवस्था में रहे। इधर रंगनारायण के पलायित पुत्र को हीरापुर गाँव के एक ग्रामीण के ढेकीशाला(चावल कूटने का स्थान) से पकड करके उसका मस्तक छेदन किया।

रंगनारायण दो दिवस पानी में निमज्जित अवस्था में अशेष दुर्गति का भोग किया। परन्तु मृत्यु के आशंका से उनका चित्त इतना दुर्बल हुआ था कि वह गर्त परित्याग करके पलायन करने का यथेष्ठ समय पाकर भी वह करने में साहसी नहीं हुए। उनका समस्त शरीर ठंड से काँपने पर मस्तक का मिट्टी का घडा ठक ठक हिल रहा था। तथापि दर्शन से उनको पकडा किया गया। अमरदेव के आदेशानुसार वे पुत्र की दशा प्राप्त हुए।

महाराज जयमाणिक्य अपने फूफा तथा प्रधान सहायताकारी रंगनारायण की हत्या विवरण श्रवण से क्रुद्ध होकर अमरदेव के रिश्तेदारो को समाप्त करने हेतू प्रवृत्त हुए। इस बार अमरदेव राजा के विरुद्ध खडे हुए। अमरदेव द्वारा राजमहल आक्रान्त हुआ। महाराज जयमाणिक्य यह जानकर हस्ती पर चढ़ कर पलायन कर गये। अमर देव के ज्येष्ठ पुत्र राज दुर्ल्लभ ने त्रिपुरा सुन्दरी के मन्दिर के साथ रास्ता में राजा पर आक्रमण करके, धनुष को गले में फंसा कर, उसको हाथी की पीठ से बल पूर्वक गिरा कर मार डाला। भिन्न वंशीय उदय माणिक्य ने जो राज्य अधिकार किया था, महाराज जयमाणिक्य के निधन साधन के बाद राज्य पुनर्बार प्राचीन राजवंश के हस्तगत हुआ।

तृतीय लहर 206

महाराज अमर माणिक्य का शासन काल जयमाणिक्य मरने के बाद सेनापति अमरदेव त्रिपुर सिंहासन में समारुढ़ हुए।(1499 शक)। वे प्रबल पराक्रम के साथ शासन कार्य में प्रवृत्त हुए थे। राज्य लाभ के बाद उनका प्रथम कार्य अमर सागर खनन करना था। इस विषय के विवरण पूर्व ही प्रदान किये गये है।

महाराज अमर के राजदुर्ल्लभ, राजधर, अमर दुर्ल्लभ तथा युझार सिंह नामक चार पुत्र थे। वे सभी सुशिक्षित तथा युद्ध विद्या में निपुण हो उठे। राजा पुत्रों को सेनाध्यक्ष पद में नियुक्त करके सैनिक विभाग की मर्यादा वृद्धि तथा भित्ति सृदृढ किया। कनिष्ठ पुत्र युझार सिंह अतिशय क्रोधी तथा दाम्भिक थे। उनके इस स्वभाव के कारण अनेक समय अनिष्ट पैदा हुआ था।

उदयमाणिक्य तथा जयमाणिक्य के दुर्बलता से राजशक्ति में ग्लानि पैदा हइ थी। त्रिपुरा के चिरवश्य प्रत्यन्तवासी राजन्य वर्ग इस समय मस्तकोत्तोलन करने की सुविधा पा गये थे। इस समय भुलुआ राज्य चिर प्रचलित प्रथा उल्लंघन पूर्व त्रिपुरेश्वर के राज्याभिषेक काल में राज टीका पहनाने में असम्मत हुए। अमर माणिक्य ने स्वयं में युद्ध क्षेत्र में अवतीर्ण होकर उनको जिस तरीके से दमन किये थे तथा उस उपलक्ष्य में भुलुआ राज्य का जो दुर्गति घटित हुआ था, वह पहले भी वर्णन किया गया है। तरप के शासनकर्ता के अमर सागर खनन कार्य में सहायता न करने से महाराज अमर ने तरप राज्य तथा श्रीहट्ट विजय करके इस अबाध्यता का उपयुक्त दण्ड प्रदान किया था। उन्होने अपने बाहु बल से पूर्व बंगाल में जो विस्तार किया था, अमर सागर खनन उपलक्ष्य में उसका परिचय मिला है। राजमाला के अनान्य उक्ति में इसका आभास मिलता है।(1)

भुलुआ विजय के बाद महाराज अमर ने एक सेना निवास(थाना) स्थापन करके ज्येष्ठ पुत्र राज दुर्ल्लभ को उस स्थान में नियुक्त रखा था। भुलुआ के नमकीन पानी व्यवहार से अल्पकाल में ही वे पीडित होने से सेनापति यशोधर नारायण तथा राज पुत्र गण दुर्ल्लभ नारायण को सेना निवास रक्षार्थ प्रेरण किया। कुमार राज दुर्ल्लभ को राजधानी में आनयन किया। परन्तु यह पीडा ही राज दुर्ल्लभ मृत्यु का कारण हुए। वे पिता माता तथा समग्र राज्य को शोक सागर में निमज्जित करके अकाल में ही कालकबल में पतित हुए। इस दुर्घटना से महाराज अमर शोक से बहुत दुखी हुए थे। कुछ दिवस बाद उन्होने द्वितीय पुत्र राजधर को युवराज पद में अभिषिक्त किया।

इसके कुछ काल बाद त्रिपुरेश्वर के अनुगत सराईल के शासन कर्ता ईशा के सहातार्थ महाराज अमर ने एक अभियान प्रेरण किया। त्रिपुर सैन्य बिना युद्ध के

---

(1)

सेइ कालेते अमर माणिक्य नृपति।	उस समय अमर माणिक्य त्रिपुरा अधिपति।
बंगेर सकल प्रजा बश होइलो अति।।	सारी बंग प्रजा ने वश्यता जताई प्रणति।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड11 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड11 पृ

शान्ति स्थापन करके प्रत्यावर्तित हुए थे। इस अभियान का विवरण पहले ही प्रदान किया गया है। इस घटना द्वारा राज्य के शौर्य वीर का प्रकष्ठ परिचय मिलता है।

कुछ काल व्यतीत होने पर महाराज अमर कर्णरोग से अक्रान्त हुए। वे शय्यागत अवस्था में दीर्घकाल कष्ट भोग कर रहे थे। पिता के संकटापन्न अवस्था दर्शन से युवराज राजधर देव हस्ती, घोडा तथा सैन्यादि सह विपुल आडम्बर के साथ सिंहासनरोहण करने आये। कनिष्ठ राजकुमार युझार सिंह अग्रज के इस असंगत व्यवहार दर्शन से क्रोधित होकर नंगी तलवार हाथ में कर राजा के पास उपस्थित हुए तथा क्रोध कम्पित कंठ से बोले "पिता विद्यमान रहते हुए भ्राता सिंहासन अधिकार करने आ रहे है, यह अवैध व्यवहार नितान्त असहनीय है।" कुमार युझार स्वभावतः कोपन स्वभाव के कारण, वे अग्रज के कार्य दर्शन करके क्रोध से इतने अधीर हुए थे कि वे उस वेग को सम्वरण से असमर्थ होकर उन्मत की तरह हाथ की तलवार द्वारा गृह के एक स्तम्भ के उपर पूरे जोर एक आघात किया। खराब स्वास्थ में महाराज अमर, पुत्रगण के आचरण दर्शन से नितान्त दुखी हुए तथा सोचा इनमें सद्भाव रक्षित होने की संभावना नहीं है। राजा ने अन्य उपाय न पाकर उपस्थित उच्चश्रृखंलता के निवारण हेतू रोगक्लिष्ट देह से अतिकष्ट से जाकर सिंहासन में बैठे। युवराज राजधर अपने अकार्य को समझने पर दुखी हुए।

असह्य रोग यंत्रणा से महाराज शय्यागत थे। इसके बाद पुत्रगण के आचरण दर्शन से वे अतिशय दुःखित हुए। ऐसा कि वे मन के कष्ट तथा रोग यंत्रणा से मृत्यु कामना कर रहे थे। राजा गम्भीर रुप से पीडाग्रस्त, राजपुत्र गण परस्पर विवाद से लिप्त, राजकार्य में विश्रृखंल, इन सब कारण से राजधानी में एक विषम परिस्थिति परिलक्षित हुए। दुष्ट लोग प्रश्रय पाने लगे। उनके द्वारा दिन दिन नाना तरीके के मिथ्याजनरव(अफवाह) प्रसारित होने लगी। बात उठा –सवा सौ शिशु वध करके इस रोग से उन्मुक्ति है। इस बेकार की अफवाह से भय संत्रस्त बहुत जन अपने अपने संतान सह व्याकुल हो उठे। कब किसकी संतान पकड कर वध होगी इस भय से सभी भयभीत थे। अनेक अपने अपने संतान लेकर स्थानान्तरित हुए। अनेक दूरवर्ती स्थान के रिश्तेदार लोगों के आश्रय मे पुत्र लोगों को भेजने लगे। नगर में इस ब्याकुलता के समय फिर अफवाह उठी, उदयपुर शीघ्र ही जलप्लावित होगा, ढाई सौ प्राणी मात्र जीवित रहेगें और समस्त ही भीषण प्लावन में निमग्न होगें। सरल विश्वासी नगरवासी गण ने इस बात पर भी विश्वास किया। सारे देश में एक भीषण भयभीत छाया पतित हुआ सबके ही मुख मण्डल भय से चिन्ता से विवर्ण हो उठे। अनेक ने जीवन रक्षा करने निमित्त केला के तनों से नाव को तैयार किया। कब कौन सा विपद उपस्थित हुआ इस चिन्ता से जन साधारण आहार

तृतीय लहर 208

निद्रा परित्याग करके दिवारात्रि गुरुतर अशान्ति भोग करने लगे। अनेक लोग आत्म जीवन तथा परिवार वर्ग के प्राण रक्षा के निमित्त स्थानान्तरित हुए।

ये सब अमूलक जन आवाज तथा देशमय अशांति उद्वेग की बात महाराज अमर माणिक्य के कर्ण गोचर हुए। वे अतिशय दुखित होकर शोक ग्रस्त शय्या से आदेश किया–''अफवाह फैलाने वाले को पकड लाया जाये '' राज पुरुषगणों ने विस्तृत चेष्टा की परन्तु जनरवकारी का संधान नहीं मिला। इस आन्दोलन के फल से जन साधारण समझे कि प्रचारित जन आवाज ही समस्त अमूलक है। राजपुरुष गण के कोशिश से दिन दिन नयी बात उठने के श्रोत भी बन्द हुए। इधर राजा रोग मुक्त लाभ करके राज कार्य में मनोनिवेश हुये तब सबके अन्तर से अमूलक भीति तथा अशांति भाव दूर हुए।

अराकान राज के सामन्त राम्बू(रामू) तथा छकरुआ के शासनकर्ता आदमशाह के साथ आराकान पति मांगफुला के झगडे होने से आदम विपन्नावस्था में त्रिपुरेश्वर में शरणापन्न हुए। उनको आश्रय दान करके उदयपुर में रखा गया था। इस कारण महाराज अमर माणिक्य के साथ आराकान पति का विवाद सूत्रपात हुए। भविष्यत् सोचकर महाराज अमर, अराकान आक्रमण के लिए प्रस्तुत हुए। राजा के ज्येष्ठ पुत्र राज नारायण ने सैनिक दल का प्रधान नेतृत्व ग्रहण किया। कुमार अमर दुर्ल्लभ नारायण सेनाध्यक्ष, चन्द्रदर्प नारायण, चन्द्र सिंह नारायण, क्षत्रजित नाजिर आदि उनके सहकारी हुए। बंगाल के भौमिक गण ने इस समय महाराज अमर को सैन्य बल द्वारा सहायता किया था। फिरंगी सैन्य दल इस अभियान में अभिनव शक्ति था। कुमार राजधर ने विपुल वाहिनी सह युद्ध यात्रा किया।

फिरंगी सैन्यगण की विश्वासघातकता के कारण त्रिपुर वाहिनी के प्रथमतः पराजित तथा विपन्न होकर रहने पर भी चट्ट गाँव में आकर उन्होने मघ लोगों को विशेष तरीके से परास्त किया था। युद्ध में पराजित होकर आराकान राज्य ने अपने अनुगत उडिया राज को दूत स्वरुप प्रेरण करके कुछ काल के निमित्त युद्ध स्थगित रखने का प्रस्ताव किये। त्रिपुरेश्वर ने उस प्रस्ताव में सम्मति दान करके निश्चिन्त मन रहे।

दुर्दिन आगमन के पूर्व उसकी सूचना लक्षित रहती है। अमर माणिक्य के राजत्व काल में भी यही घटित हुआ था। आराकान का युद्ध स्थगित रहने से भी राज्य में नानाविध अमंगल सूचक दुर्घटना आरम्भ हुइ। आसन्न खतरे के संदेश ज्ञापन से, तेज आवाज की तरह कुत्ते तथा श्रृगाल के असहनीय कोलाहल से, नगर तथा बाजार अव्यवस्थित हो उठे। ग्राम देवता के रात्रि में रोने की ध्वनि से समग्र नगर मुखरित होने लगा। देव विग्रह के चक्षु से अश्रु धारा बहती हुई दिखाई दी। उल्कापात तथा

तृतीय लहर 209

भूमि कम्प से नानाविध अनिष्ट तैयार होने लगे। भूत के डर से राजधानी भयभीत हो उठी। राजा बहुत कोशिश करके भी राज्य में शान्ति स्थापना नहीं कर पा रहे थे।

उस साल फागुन के महीने कल्मि गढ़ दुर्ग से संदेश आया कि आराकान राज ने शर्त तोड़ कर युद्ध स्थगित रखने के निर्धारित समय से पहले ही अकस्मात् ससैन्य आकर चट्ट गाँव अधिकार कर लिया है। इस समय पर्तुगीजगण आराकान राज के सहायताकारी थे।

इस यात्रा में आराकान राज के प्रेरित गजदन्त निर्मित मुकुट को लेकर अमर माणिक्य के पुत्रगण के मध्य जिस प्रकार झगडे आदि घटित हुए थे तथा कुमार युझार सिंह ने इस उपलक्ष्य में आराकान राज के प्रति जिस रुप से तुच्छ ज्ञान प्रकाश किया था, तद् विवरण इसके पूर्व प्रदान किया गया है।

गजदन्त निर्मित मुकुट ग्रहण के उपलक्ष्य में कुमारगण के आपस में झगडे के सम्बन्ध में स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय कहते है

''जो एकता शून्य होकर सोने का भारत तहस नहस हो गया, जिस एकता हीनता के कारण हम लोगों को यवनों के पदानत होना पडा, इस समय उसी एकता हीनता अमर कुमार गणों के बीच हुई है, एकताशून्य होकर कुमारगणों ने केवल चट्ट ग्रामादि खोये थे, ऐसा नहीं है, इससे ही त्रिपुरा के सर्वनाश का सूत्रपात हुआ। कुमार लोग सभी मुकुट ग्रहण करगें कहकर परस्पर विरोध करने लगे। आराकान पति ने इस संदेश को सुनकर उपयुक्त समय समझकर परम आनन्द चित्त से त्रिपुर पर सैन्य आक्रमण किया।''

कैलाश बाबू के राजमाला–द्वितीय भाग 6 अध्याय 73 पृष्ठ

राजमाला के सार संकलयिता लांग साहेब (Rev James Long) इस सम्बन्ध में कहते हैं–

"On this the king of the Mugs wished to make peace and sent the brothers a crown of ivory as a present, dispute arose among them as to who should possess it, and one who lost it abused the Mugs,"

Journal of Asiatic Society of Bengal Vol-XIX.

मर्म– महाराज ने सन्धि स्थापन की इच्छा प्रकाश करके एक हस्ती दन्त का मुकुट भातृत्रय को उपहार प्रदान किया। परन्तु इसमें एक द्वन्द्व की सृष्टि हुई– भ्रातागण के मध्य यह कौन ग्रहण करेगा? जिन्हें नहीं मिला वे मघ लोगों की भर्त्सना करने लगे।

भातृत्रय के इस झगडे से जो राज्य का अनिष्ठ घटा था, वह परवर्ती राजगण पूर्ण मात्रा में सुधार नहीं कर पाये। आराकान राजा चट्ट गाँव के शिविर में थे। उन्होने सुना कि उसके प्रेरित मुकुट को लेकर त्रिपुरा के राज कुमार गण के मध्य झगडे हुए थे, इस सुयोग से वे त्रिपुर शिविर आक्रमण के निमित्त अग्रसर हुए। इस युद्ध में कनिष्ठ राजकुमार युझार सिंह मारे गये तथा कुमार राजधर के गुरुतर रुप से आहत होने के कारण युद्ध में हार हुई।

तृतीय लहर 210

अन्ततः पुत्र के शोकानल अपने दिल में रोककर महाराज अमर ने स्वयं युद्ध यात्रा की। उन्होने क्षत्र भंग सैन्य लोगों को बहुत कोशिश से एकत्र करके प्रतिपक्ष के विरुद्ध प्रेरण किया। ईछापुरा नामक स्थान में उभयपक्ष सम्मुखीन हुए। इस समय त्रिपुरा के पठान सैन्य गण के अत्यधिक बुरे तथा विश्वासघात के कारण जिन तरीको से त्रिपुरा की पराजय घटित हुई थी तथा मघगण अत्याचार तथा लून्ठन द्वारा राजधानी की जो दुर्गति घटित हुई थी। वह पहले ही वर्णित हुआ है।

उदयपुर के विजेता आराकान पति स्वराज पँहुचकर ही पुनर्बार महाराज अमर माणिक्य को पत्र द्वारा बताया– आदमशाह को उनके हस्त से अर्पण करो, वे त्रिपुरेश्वर के साथ प्रीति स्थापन करने प्रस्तुत है। महाराज अमर ने इस पत्र के उत्तर में समझाया– "क्षत्रिय के धर्म के बारे में मघ के ज्ञान नहीं है, आश्रित की रक्षा करना ही क्षत्रिय का काम है। दैव्य विडम्बना से हमारे एक पुत्र का युद्ध में प्राण त्याग करके भी और दो पुत्र विद्यमान है। वे यदि हमारे साथ मारे जायें तथापि आश्रित आदमशाह को प्रदान नहीं करेगें।"

मघ द्वारा उदयपुर विजय के काल निर्णायक निम्नोद्धृत उक्ति राजमाला में मिलती है–

पनर श दश शके चैत्र मास ताते।	पन्द्रह सौ दस शक का चैत का महीना।
प्रथमे आसिला मघ उदयपुरेते।।	पहले घुसा था मघ उदयपुर की सीमा।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड42 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड42 पृ

यह निर्धारण विशुद्ध नहीं है। मौद्रिक प्रमाण द्वारा निर्णीत हुआ है कि महाराज अमर के परलोक प्राप्त होने के बाद तत् पुत्र राजधर माणिक्य के 1508 शक में राज्याभिषेक हुए थे। राजमाला के अनन्य युक्ति सहित इस विषय में आलोचना करने से स्पष्ट ही समझा जाता है कि 1507 शक के(1585 ई0) चैत महीने में महाराज अमर ने राजधानी से भागकर मनु नदी के किनारे स्थान में आश्रय ग्रहण किया था। 1508 शक के वैशाख, ज्येष्ठ तथा आषाढ महीने के कुछ दिन तक नाना विध अशांति के सहित इस तरह से व्यतीत होने पर उस आषाढ महीने में आत्म हत्या किया था(1) तथा तत्काल महाराज राजधर माणिक्य राज्याधिकारी होकर भाद्र महीने के प्रथम भाग में उदयपुर में प्रत्यावर्तन किया।(2) 1508 शक में अमर माणिक्य की मृत्यु तथा

....

(1)

एई मते बैशाख ज्यैष्ठ आषाड़ तीन मास।	इसी तरह बैशाख, जेठ, आषाड़ तीन मास।
शोकेते बिह्बल राजा छाड़ये निश्वास।।	शोकविह्वल राजा सदा लेते दीर्घ श्वास।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड45 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड45 पृ

(2)

भाद्रेर प्रथम छिलो कृष्ण पक्ष ताते।	भादों की पहली तिथि कृष्ण पक्ष का काल।
उदयपुर चले राजा महारण्य पथे।।	उदयपुर चले राजा महारण्य पथ तत्काल।।
राजमाला तृल राजधर माणिक्य खण्ड50 पृ	राजमाला तृल राजधर माणिक्य खण्ड50 पृ

तृतीय लहर 211

राजधरमाणिक्य को राज्य प्राप्ति हुआ था, यह मुद्रा के प्रमाण द्वारा जाना जाता है। अर्थात 1510 शक के चैत्र महीने मघ द्वारा अमर माणिक्य आक्रान्त नहीं हो पाये, यह 1507 शक के चैत्र महीने की घटना है, बिना संदेह इस रुप में निर्धारण की जा सकती है।

महाराज ने कुछ काल तेतोया में अवस्थान करने के बाद मनु नदी तीरवर्ती वर्तमान राताछडा नामक स्थान में निवास स्थान निर्वाचन किया। पुत्र शोक तथा युद्ध में पराजय जनित अनुताप में उनका ह्रदय अविरत दग्ध हो रहा था। काल के कुटिल चक्रवर्तन से चतुर्दिक से अभावनीय उपद्रव आकर उपस्थित होने लगे। इस समय राजा के साला हितकामी तथा पराक्रमी सेनापति छत्रजित नाजिर के नाम से एक मिथ्या अफवाह हुई– वह विस्तर त्रिपुर प्रजा लेकर, पूर्व कुल के(कुकि प्रदेश के) प्रजा वर्ग के सहायता से एक नव राज्य की प्रतिष्ठा करने में उद्धत हुए। समय के अभाव में महाराज अमर ने यह बात सहज ही विश्वास की। नाजिर को दौ सौ सैन्य द्वारा पकडा गया तथा कारागर में बन्दी हुए। राजमहिषी, भ्राता के व्यवहार से पूर्व से ही नाराज थी। अब उनके राज्य स्थापना की कोशिश के बात सुनकर अतिशय क्रुद्ध हुई। वे राजा से बोली 'नाजिर की इच्छा अच्छी दिखाई नहीं दे रही है। हम लोगो का वध तथा पुत्र गण को भगाकर राज्य अधिकार विचित्र नहीं है। उसकी हत्या करके राज्य तथा परिवार वर्ग को निष्कन्टक करना ही श्रेय है।'' राजा ने भी वह कर्तव्य सोचा दो दिन कठोर जेल में बाध्य रखकर छत्र नाजिर को प्राण दण्ड की आज्ञा दी। उनके वध करने के निमित्त प्रथमतः सेनापति चन्द्र सिंह और तत्पश्चात आगु नारायण के प्रति आदेश हुआ। लेकिन उनके पीछे हटने पर चन्द्रदर्प नारायण के प्रति यह दायित्व दिया गया। वे नाजिर को वध्य भूमि में लेकर गये। छत्रजित नाजिर मनु नदी में स्नान करके संन्ध्यातर्पण नदी में समाप्त करके भगवान के पादपद्म में अन्तिम प्रार्थना की। बाद में घातक के अस्त्रघात ग्रहण के निमित्त राम नाम स्मरण पूर्वक सिर नत करके बैठे। खड्ग आघात से उनका मस्तक देह से अलग हुआ।

जन प्रवाद सत्य है या असत्य उस विषय का अनुसंधान संभव नहीं। छत्रजित नाजिर को वध करने से महाराज अमर, साधारण जन के अश्रृद्धा भाजन हुए थे।(1) राजमहिषी,

---

(1) महाराज अमर माणिक्य परलोकगमन करने के बाद सब कहने लगे कि अविचार से छत्रजित नाजिर को वध करना महाराजा के मृत्यु का कारण हुआ है। इस सम्बन्ध में राजमाला में लिखा है–

लोकबादे नाजिर बधे कोरि अबिचार।	फैला लोकोपवाद नाजीर वध हुआ अविचार।
अमर माणिक्य मृत्यु लोकेते प्रचार।।	अमर माणिक्य मृत्यु हेतु यहीं हुआ प्रचार।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड49 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड49 पृ

तृतीय लहर 212

ने भ्राता के प्रति असंतुष्ट रहने से उसके वध करने के पक्ष में सम्मति दान किया था। परन्तु भ्रातृ वियोग के बाद रमणी सुलभ ममता तथा शोक से उनका ह्रदय अधीर हो उठा। इस असाधारण शोक के साथ पुत्र शोक मिलने के कारण राज महिषी मोहमान होकर दिन रात्र क्रन्दन करने लग गयी। राज्य के दुरवस्था जनित आत्मग्लानि, पुत्र शोक, राज महिषी के अविराम रोने की ध्वनि, युद्ध में मृत पति व पुत्र, विभिन्न रमणी वृन्द के आर्तनाद आदि नानाविध उद्वेग से राजा का मन घोर अशांतिपूर्ण हो उठा। इसके उपर फिर चतुर्थ तरफ अमंगल सूचक लक्षण समूह परिलक्षित होने से उसकी तरफ वीर पुरुष का ह्रदय धैर्य विहीन हुआ। गुरुतर अशांति तथा अपमान से विचलित होकर उन्होने राज्य भोग की अपेक्षा मृत्यु को ही आलिंगन करना श्रेयकर समझा। महाराज ने चैत्र महीने में राजधानी त्याग किया था। वैशाख तथा ज्येष्ठ महीने व्याकुल चित्त से बिताए। आषाढ महीने में चुपके से अफीम भक्षण द्वारा शोकताप मय पंच भौतिक देह परित्याग किया। प्रतिप्राणा राज महिषी अमरावती महादेवी पति के सहगामिनी हुई।(1)

महाराज राजधर माणिक्य का शासन काल

अमर माणिक्य के परलोक प्राप्ति के बाद युवराज राजधर 'माणिक्य' उपाधि धारणकर सिंहासनरुढ हुए। मनु नदी के किनारे वे अभिषिक्त हुए थे। पिता माता के वियोग जनित शोक से तथा राजधानी परित्याग के कारण कष्ट से वे नितान्त ही अशान्ति से काल यापन करने लगे।

मघ गण राजत्व लाभ के अभिलाषी नहीं थे। शत्रुता साधन तथा लूट ही उनका अभिप्राय था। कुछ काल उदयपुर में अवस्थान करके, अत्याचार

....

राजधर्मे लिखिया छे बिचार राजार।	लिखा राज धर्म में राजा का विचार।
अबिचार कोरे राजा पतन पुनर्बार।।	अविचार करे राजा पतन होगा पुर्नवार।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड49 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड49 पृ

(1) युद्ध में पराजित तथा राज्य भ्रष्ट जनित अपमान असहनीय होने से देह पात करने के दृष्टान्त भारत में नितान्त विरल नहीं है। एक मात्र दृष्टान्त इस स्थल में प्रदान किया जा रहा है।

गजनी अधीश्वर सुल्तान महमूद के दश सहस्र सुशिक्षित अश्वारोही लेकर भारतवर्ष आक्रमण के निमित्त अग्रसर होने से काबुल के सीमान्तवर्ती शाही वंशीय वृद्ध राजा जयपाल उनके अग्र गति में बाधा प्रदान के लिए पेशावर के सन्निहत स्थान में खडे थे। राजा जयपाल युद्ध में पराजित तथा बन्दी होकर, कर प्रदान के प्रति वचन देकर मुक्ति लाभ किया। किन्तु इस दुर्विसह अपमानित होकर उनमें जीवन धारण करने की इच्छा नहीं रही, उन्होने सज्जित चिता आरोहण करके उसमें स्वहस्त से अग्नि जलाकर जीवन विसर्जन किया था। यह ईशा के दसम् शताब्दी की घटना है।

साधन तथा धन रत्न आदि का संधान किया था। प्रचार वैभव लून्ठन करके उन्होने प्रस्थान किया।

इस समय उदयपुर से दूत ने आकर राजा को बताया कि मघगण राजधानी परित्याग करके चले गये है, यह संदेश पाकर मंत्री, सेनापति, भ्राता तथा पुत्र प्रभृति सहित मंत्रणा करके, महाराज ने शुभ लग्न में उदयपुर की तरफ यात्रा की। खूटिमुडा(खूटामारा) बाँये तरफ रखकर ध्वज नगर, विशाल गढ़ तथा डोम घाटी के उपर से पार्वत्य पथ से महाराज राजधानी में गये थे। यह भाद्र महीने के प्रथम भाग की बात है। जुमियागण के जूम धान पक रहे थे। नानाविध फूल फल जूम खेत में अतुलनीय सौन्दर्य तथा ऐश्वर्य भण्डार रुप से शोभा पा रही थी। राजा उन सब मनोहारिणी शोभा सन्दर्शन करके विमुग्ध चित्त से पथ पर जा रहे थे। नवीन भूपति के आगमन से मृत कल्प नगरी में जैसे नव जीवन उज्जीवित हो उठा। सब कोई जय ध्वनि द्वारा राजा को वरण कर रहा था। सेलाम बाडी वाद्य के द्वारा उनका अभिवादन किया गया।

महाराज राजधर प्रजा वत्सल, धार्मिक दयालु तथा दानशील थे। वे निष्ठावान वैष्णव थे। हरिनाम कीर्तन पुराण श्रवण आदि धर्म कार्यानुष्ठान उनके जीवन के प्रधान व्रत थे। उनकी धर्म प्रवणता की कथा को पहले ही कहा गया है।

ऐसे धार्मिक तथा शन्ति प्रिय राजा, मुसलमानगण के उपद्रव से निष्कन्टक राज्य भोग करने में समर्थ नहीं हुए। उनका विषय– वितृष्ण भाव दर्शन देख कर बंगेश्वर ने सोचा– त्रिपुरा आक्रमण का यही उपयुक्त समय है। त्रिपुरा के हस्ती सम्पद हस्तगत करना ही उस आक्रमण को मुख्य उद्देश्य था। परन्तु त्रिपुर सेनापति चन्द्रदर्प नारायण के पराक्रम दर्शन से भीति होकर मुगल वाहिनी को कैलागढ़ से पश्चातपद् होना पडा। इस बार ठीक तरह से युद्ध का प्रयोजन नहीं घटा।

अतएव महाराज राजधर के राजत्व के समय अन्य किसी रुप में अशान्ति जनक घटना संगठित नहीं हुआ उसके द्वादश वर्ष व्यापी राजत्व में दुर्भिक्ष महामारी या अन्य किसी प्रकार नैसर्गिक उपद्रव नहीं था। राज्य सुख, शान्तिपूर्ण एवं धर्मराज्य में परिणित हुआ। धर्मप्राण राजा ने हरिनाम कीर्तन में विह्वल अवस्था में गोमती नदी के जल में डूब कर देह त्याग किया था। उनके शासन काल में देश अवस्था में किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ था।

महाराज यशोधर माणिक्य का शासन काल इनके बाद महाराज यशोधर माणिक्य का राजत्वकाल था। महाराज यशोधर माणिक्य ज्ञानी, धार्मिक, प्रजावत्सल तथा आश्रित पालक राजा थे। इसके शासन काल में आराकान राजा के सहित बन्धुत्व होने से कुछ काल राज्य में शान्ति विराजित थी। किन्तु यह सद्भाव अधिक काल स्थायी नहीं हो पाया।

इस समय फिर भुलुआ के राजा त्रिपुरा से अलग होने लगे। महाराज

यशोधर ने उसको दमन करके भुलुआ राज्य को पुनर्बार लून्ठन द्वारा दुर्दशाग्रस्त किया था। भुलुआपति ने वश्यता स्वीकार करके इस यात्रा में परित्राण लाभ किया।

भुलुआ युद्ध के अल्पकाल बाद ही आराकान राज के सहित चट्ट ग्राम को लेकर पुर्नबार विवाद उपस्थित हुआ। इस सम्बन्ध में राजमाला में लिखा गया है–

तार पर मघ राजा होसन साहा सने।	इस पर मघ राजा होसन साह संग।
तार संगे बैरी–भाव जन्मिलो तखने।।	उसके साथ बैरी भाव जन्मा उसी क्षण।।
ए सब बृतान्त सकल कहिते बिस्तार।	ये सभी वृतान्त कहने को सविस्तार।
संक्षेपे कोहिलो जाहा किछु जाहा ब्यबहार।।	कहा संक्षेप जो कुछ हुआ था व्यवहार।।
राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड59 पृ	राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड59 पृ

प्राचीन राजमाला में भी इस विवाद का फल नहीं लिखा गया। इसलिए बहुत लोग सोचते है कि इस युद्ध में त्रिपुरा की पराजय हुई थी। यह अनुमान मात्र है, प्रकृत तथा निर्णय करने के उपाय नहीं है। स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय भी इस विषय में स्थिर सिद्धान्त से उपनीत नहीं हो पाये। वे यशोधर माणिक्य के प्रसंग में कहते है–

"सिंहासन आरोहण करते ही उन मघ लोगों के उत्पात निवारण के लिए अस्त्रधारी होना हुआ था।(1)" उन्होने इस अस्त्र घारण के फलाफल सम्बन्धी कोई बात ही नहीं कही।

इसके कुछ दिन बाद त्रिपुरा के अरण्य जात हस्ती के प्रति दिल्ली के सम्राट शाह सलीम(जहाँगीर) की लोभी दृष्टि पतित हुई। उन्होने यह विपुल सम्पद हस्तगत करने के अभिप्राय से ढाका के नबाब इब्राहिम खाँ को(फते जंग) दिल्ली में बुलाकर त्रिपुरा आक्रमण के निमित्त आदेश दिया तथा ईस्पिन्दर खाँ तथा मिर्जा नूर उल्ला खाँ नामक उमरद्वय को यह कार्य साधन के निमित्त विस्तर सैन्य के साथ नवाब फते जंग के संग दिया। उन लोगों ने ढाका में आकर बंगाल के सैन्य दल सम्मेलन में सामरिक बल दृढ कर लिया था।

नवाब फते जंग ने ढाका में रहकर उमराद्वय के ससैन्य त्रिपुरा में प्रेरण किया। मुगल सैन्य त्रिपुरा के सन्निहित होकर दो भाग में विभक्त हुई। ईस्पिन्दर अर्ध सैन्य सह केलार गढ दुर्ग की तरफ एवं नुरुल्ला बाकी सेना के साथ मेहेरकुल दुर्ग की तरफ अग्रसर हुए उन्होने उभय ही दुर्ग के सन्निहित स्थान में छावनी करके आक्रमण के सुयोग की प्रतीक्षा की थी।

महाराज यशोधर ने यह वार्ता पाकर राजधानी सुरक्षित करने के निमित्त सैन्य लोगों को दो भाग करके एक भाग(मेहेरकुल से आगमन के पथ में अवस्थित) चण्डीगढ में और एक भाग(कैलारगढ़ अतिक्रम करके आगमन के पथ में स्थापित) छयघरियागढ़ में प्रेरण किया। योग्यता से सेनापतिगण के हस्त में उक्त उभयगढ़

(1) कैलाशबाबू के राजमाला द्वितीय भाग 6 अध्याय 76 पृष्ठ।

की रक्षा का भार अर्पित हुआ। इस तरीके से आत्मबल दृढ करके भी वे मुगल के हस्त से आत्म रक्षा करने में समर्थ नहीं हुए। मुगलगणों ने आकर राजधानी पर अधिकार किया। लून्ठन तथा अत्याचार से उदयपुर जन शून्य करने के बाद तथापि अवस्थान करके पलायित राजा के खोज के निमित्त पर्वतान्तर में दल दल मे चर प्रेरण किये। महाराज यशोधर जंगल में प्रवेश करके भी मुसलमान के हस्त अस्वीकार नहीं कर पाये। अल्पकाल के मध्य महाराज मुगल सैन्य के हस्त में पतित हुए। सैन्य बल के अभाव में वे विपक्ष में बाधा प्रस्तुत करने में भी असफल हुए, राजमीहषी साथ में थी अतः तीव्र गति में पलायन करने में बाधा हुई। इस अवस्था में वे मुगल द्वारा धृत तथा उदयपुर में लाए गए। सेनापति ईस्पिन्दर तथा नूर उल्ला ने राजा के साथ कुछ दिन उदयपुर में रहकर नवविजित राज्य रक्षा की व्यवस्था की। पश्चात में तथापि एक सेना निवास स्थापन करके वे राजा सह ढाका की तरफ यात्रा कर गये।

महाराज के इस प्रकार शोचनीय अवस्था में राज्य त्याग के घटना से तथा राजधानी की दुर्दशा दर्शन से एक करुण रसात्मक ग्राम गीत रचित हुआ था। उदयपुर अंचल के कृषक गण वर्तमान काल में भी खेत में धान व चारा रोपण काल में श्रम के समय सब मिलकर सम स्तर में वह सारिगीत गाते थे। दुख के बाद संगीत का समग्र भाग और कोई भी नहीं जानता। इसका जितना भी उद्धार किया गया है। वह निम्न प्रदान किया गया है।

राजा कोइ गेला रे–	राजा कहाँ गये रे–
तोमार सोनार उदयपुर कारे दिला रे!	तुम्हारे सोने का उदयपुर किसको दिया।
कतोदूरे गिया राजा	कुछ दूर जाकर राजा
फिरा फिरा चाय	घूम घूम कर ताके
(आमार) सोनार मोडान पाल्की	(हमारा) सोने से गडे पाल्की
मंगले दोडाय–	मुगल दौडाय–
दुषख रहिलो रे!	दुषरव रहे रे
पानित् कान्दे पानि काउरी	पानित रोये पानि काउरी
सुखनाय कान्दे उद्, (1)	सुखे में रोये उद, (1)
उदयपुरेर गोयाला कान्दे	उदयपुर के गोरिला सेचे
कारे दिवाम् दुध–	किसको देगें दुध
दुषख रहिलो रे!	दुषख रहे रे।

---

(1) मनुष्य के दुख दर्शन से पशु पक्षी आदि के नयन में शोकाश्रु देखने की वर्णना, यह प्रथम नहीं है। प्राचीन ग्रामीण कविगणों ने बहुत जनों के ईतर, पक्षी चक्षु में मनुष्य समाज के सहित सहानुभूति सूचक अश्रु दर्शन किये हैं । यहां तक कि वे वृक्ष के नीचे जड तक को रुलाने में

तृतीय लहर 216

सुबुद्धि राजार किवा –	सुबुद्धि राजा के ही–
कुबुद्धि होइलो,	कुबुद्धि हुए
चावलेर थैली थुइया राजा	चावल की थैली रखकर राजा
सोनार थैली लोइलो(1)–	सोना के थैली दिये(1)–
दुषख रहिलो।	दुषख रहे रे।

नवाब फते जंग के सामने राजा का साक्षात हुआ। परन्तु उन्होने नवाब से आशानुरुप सदव्यवहार नहीं मिला। अल्पकाल के मध्य ही राजा को दिल्ली में सम्राट के दरबार में प्रेरण किया गया। बादशाह जहाँगीर ने महाराज यशोधर को राजोचित सम्मान के सहित सादर ग्रहण किया तथा कहने लगे। ''आपको मुक्तिदान कर रहे हैं, आपके जो सब हस्ती है। वह हमको प्रदान करना होगा।''

....

छोड़ा नहीं। ई0 11वी शताब्दी में रचित ''माणिक चन्द्र के गीत'' आलोचना करने से मिलता है कि गोपी चन्द के सन्यास ग्रहण जनित शोकावेग के वर्णनोपलक्ष में कवि ने कहा है–

कान्दये नगरवासी राजा पाने चाइया।	नगर वासी रोए राजा के तरफ देखे।
बाल वृद्ध युवा कान्दे आर शिशु माइया।।	बाल वृद्ध युवा रोये और शिशु मां।।
रानीर क्रन्दने नदी उथले सागर।	रानी के क्रन्दन से नदी उथले सागर।
पाईसाले कान्दे अश्व जतेक कुंजर।।	पाईसाले रोये अश्व जितने कुंजर।।
सारी शुआ पक्षी कान्दे न करे आहार।	सारी शुआ पक्षी रोये न करे आहार।
दास दासी कान्दे राजार कोरि हाहाकार।।	दास दासी रोये राजा के लिए हाहाकार।।
अन्यत्र मिला है–	अन्यत्र मिला है–
गाछ कान्दे गाछानी कान्दे गाछेर कान्दे पाता।	पेड रोये पेडी रोये पेड के रोये पत्ते।
वनेर हरिणी रोये झुक जाये माथा।।	वन की हरिणी रोये झुक जाये माथा।।
घाँटियालर घाटत् कान्दे बाईश काहन नाओ।	घाँटियों की घाटत(नावचलाने वाला) रोये बाईस काहन लो।

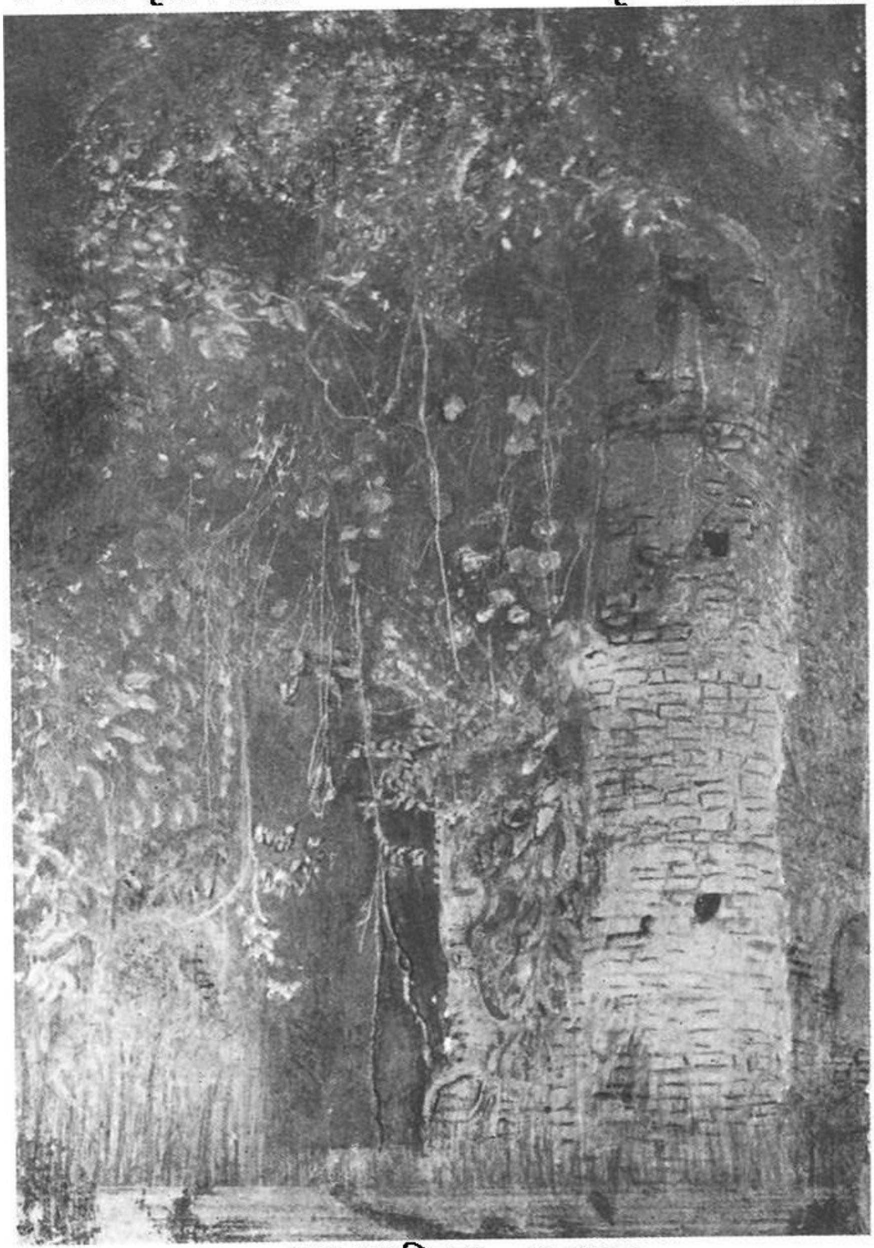
भवानी दास के रचित मयनामती के गीत में भी इस तरीके के कविता मिलती है। अन्यत्र इसका अभाव नहीं है। वैष्णव कविगण ने ईतर प्राणी के नयन में शोकाश्रु तथा प्रेमाश्रु दोनो के ही दर्शन किये थे। एक मात्र ही दृष्टान्त इस स्थल में प्रदान किया जा रहा है। नव द्वीप में कीर्तन रसोन्मत्त श्री गौरांग के कन्जनयन में प्रेमाश्रु सन्दर्शन से विह्वल होकर–

जलेर जीव कान्दे देखिया प्रतिबिम्ब	जल के जीव रोये देखकर प्रतिबिम्ब
कानने कान्देये पशु पाखी।	कानन में रोये पशु पक्षी।
तरुआ पुलकित् पाषाण दरवित्।।	तरुआ पुलकित पाषाण द्रवित।।
अन्ध कान्देए डाकि डाकि।।	अन्धा रोये बुला बुला कर।।

....

(1) पथ में जाते समय में चावल के अभाव में राजा को बहुत कष्ट भोग करना हुआ था। इसलिए इस प्रकार उक्ति किया गया है।

तृतीय लहर 217
चित्र तृतीय लहर–217



मुगल मस्जिद – उदयपुर

तृतीय लहर 217

आत्म मर्यादा रक्षण प्रयासी महाराज यशोधर इस प्रस्ताव से सम्मत नहीं हुए। उन्होने सोचा मुगलगण के कारण राज्य के नानाविध दुरवस्था घटित हुए है। आत्म मर्यादा भी अपरिसीम म्लान हुआ है। इसके उपर फिर सम्राट को हस्ती प्रदान द्वारा दुर्गति ग्रस्त राज सम्मान को और अधिकतर हेय करना होगा। इस अवस्था उन्होने सोचा कि पुनर्बार राज्य में प्रत्यावर्तन तथा राजत्व ग्रहण संगत नहीं । सम्राट के अनुमति ग्रहण से तीर्थ वास के निमित्त प्रस्तुत हुए।

महाराज ने राजमहिषी के साथ प्रथमतः काशी धाम में गमन किया। सेनापति कल्याण देव(कल्याणमाणिक्य) के ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द देव महाराज के सहयात्री हुए थे। उन्होने कुछ काल काशी में अवस्थान करने के बाद प्रयाग तीर्थ दर्शन करके मथुरा में गमन किया। उनका अवशिष्ट जीवन वृन्दावन वास में अतिवाहित हुआ। वृद्ध उम्र में तीन दिवस ज्वर भोग के बाद महाराजा श्रीवृन्दावन प्राप्त(परलोकगत) हुए।

त्रिपुरा में मुगल शासन इधर मुगल गण के लून्ठन तथा अत्याचार से समग्र राज्य जर्जरित हो उठा। उदयपुर के प्रधान व्यक्तिगण जीवन तथा सम्मान रक्षार्थ पलायन करने में बाध्य हुए। जो अनन्योपाय होकर उदयपुर रहे, मुगल गण के अत्याचार से उन लोगों को सर्वशान्त होना पड़ा। मुसलमान लोग गाँव गाँव घूमकर हिन्दु गण के धर्म कार्य में बाधा देने लगे। त्रिपुरा सुन्दरी देवी तथा चतुर्दश देवता की पूजा बन्द करा दी गयी। मघ गण के दृष्टान्त अवलम्बन से इन लोगों ने दीधि तथा सागर सींच कर गुप्त धन का अनुसंधान लिया था। इस रुप से पूर्ण ढाई साल तक राज्य वासी गण मुगल शासन के कुफल भोग करके दुःख कष्ट से काल यापन कर रहे थे।

अन्ततः दैव विचित्र विधान से मुगल गण के मध्य महामारी उपस्थित हुई। दिन दिन रोग का प्रकोप तथा मृत्यु वृद्धि पाने लगे। मुसलमान गण समझे– स्थान त्याग न करने से सम्पूर्ण विनष्ट होना अनिवार्य है, बाध्य होकर उदयपुर से छावनी उठाकर मेहेरकुल(कुमिल्ला) जाकर उपनिवेश स्थापन किया।

पूर्वोत्त ढाई साल में मुगल वाहिनी द्वारा राज्य का जो दुर्गति घटित हुआ था, वह सुधारने में बहुत समय लगा है। मुगल लोग उदयपुर में स्थायित्व लाभ की आशा किये हुए थे। दैब्य दुर्विपाक से, वहाँ न रहने से भी वे मेहेरकुल में आकर कुछ परगनों में स्थायी तरीके से दखल कर बेठे। तद् अवधि में राज्य के निम्न भू भाग का त्रिपुरा के हस्तच्युत तथा मुसलमान के कुक्षिगत होने का सूत्रपात हुआ था। तद् विवरण बाद में प्रदान किया जायेगा।

मुगल मस्जिद उदयपुर अवस्थान काल में मुगलगण ने विजय चिन्ह स्वरुप एक मस्जिद बनवाया था। उसके कार्य पूरा करने के अवसर नहीं हुए।

तृतीय लहर 218

गोमती नदी के उत्तर तीरवर्ती पुरातन राज निकेतन के सम्मुख में, समभूमि में छत विहीन मस्जिद यद्यपि मुगल विजय के साक्ष स्वरुप दण्डायमान रही है। इस ईट से बनी 'मुगल मस्जिद' नाम से प्रसिद्ध है।

बदर मुकाम मुसलमान अधिपत्य के साथ साथ उदयपुर में औलिया तथा दरवेश आदि मुसलमान धार्मिक पुरुष गणों का अविर्भाव हुआ था। सम्भवतः इस समय में ही चट्ट गाँव तथा श्रीहट्ट अंचल के प्रथितयशा औलिया बदर साहब ने उदयपुर में आगमन किया था। यह राजबाडी के समीप स्थान में दोतला गृह के आकार में विशिष्ट ईंट से निर्मित एक गृह विद्यमान है। वो 'बदर मोकाम' के नाम से विख्यात है। कहा जाता है कि आताराम तथा बुधिराम नामक नर सुन्दर जातीय भ्रातृ युगल ने बदर साहब के लोकातीत विभूति दर्शन से विमुग्ध होकर इस्लाम धर्म में दीक्षित हुए थे। बदर साहब स्वयं उनके दीक्षा गुरु थे। तद्अवधि वे इस दरगाह के खादिम(सेवाईत) नियुक्त हुए थे। वर्तमान खादिमगण उक्त भ्रातृ युगल के वंशधर हैं, ऐसा ही जन प्रवाद जाना जाता है। इस दरगाह में उजाला प्रदान के व्यय निर्वाहार्थ राज सरकार से 'चेरागी मिनाह' भूमि प्रदान की गयी थी। उस मिनाह के सनद विनष्ट होने से तथा जंगलाकीर्ण होने के कारण भूमि का परिचय विलुप्त हो गया है, ऐसा जाना जाता है। मन्दिर भी जीर्ण दशा में पतित हुआ था। कुछ काल तक अगरतल्ला के नाजिर मिस्तरी नामक एक ठेकेदार ने स्वतः प्रवृत होकर हर साल अपने व्यय से इसके संस्कार कार्य निर्वाह कर रहे है। इस क्षेत्र में उक्त ठेकेदार के सदाशयता तथा धर्म प्रवणता प्रंशनीय है।

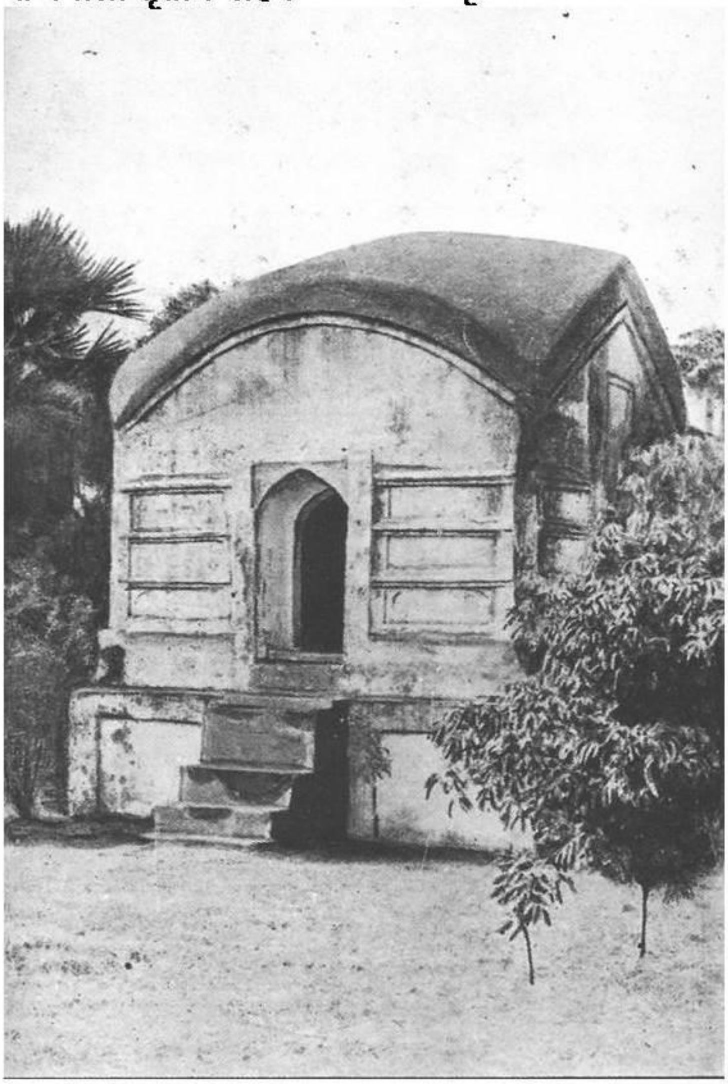
मुगलों का उदयपुर त्याग मुगलगण के उदयपुर छोड़कर जाने पर राजपारिषद वर्ग तथा प्रजा साधारण ने क्रमशः प्रत्यागत होकर अपने अपने निवास स्थान अवलम्बन किये। परन्तु बिना राजा के राज्य में शत्रु पक्ष कुछ दूर रहते है। इस अवस्था में सशंकित चित्त से काल यापन करने लगे तथा शीध्र ही राजा का निर्वाचन करना विशेष कर्तव्य माना।

महाराज कल्याण माणिक्य का परिचय महाराज यशोधर के उत्तराधिकारी पुत्र पौत्र या भ्राता न रहने पर उन्होने तीर्थ यात्रा काल में सेनापति कल्याण देव को राजत्व प्रदान का अभिप्राय व्यक्त किया था। मंत्री वर्ग तथा जनता सोचा कि इस समय दृढ हस्त से राज करना आवश्यक है। एक मात्र सेनापति कल्याण देव राजत्व लाभ के योग्य हैं, इसलिए निर्वाचित हुए। विशेषतः वे राजवंशीय तथा उनको राजा करने से महाराज यशोधर का अभिप्राय रक्षित होगें अर्थात कल्याण देव को राज्याभिषिक्त करना ही संगत है, सबने मिलकर ऐसा निर्धारण किया।

कल्याण देव के परिचय विषय में आलोचना करने से मिलता है।

महामाणिक्येर पुत्र गगन फा आर।	महामाणिक्य का पुत्र गगन फा कहाया।
तान वंशे कुचु फा नाम होइलो ताहार।।	उनके वंश में कुचुफा नाम उसका हुआ।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड18 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड18 पृ

तृतीय लहर 218
चित्र तृतीय लहर–218



बदर मुकाम – उदयपुर

तृतीय लहर 219

ताहार ज्येष्ठ पुत्र बीर राय नामेते।	वीर राय नाम पुत्र था उनका ज्येष्ठ।
ताहार कनिष्ठ भगिनी जूझार माँ पोरेते।।	बाद में बनी जूझार माँ थी उनकी ही भगिनी कनिष्ठ।।
ताहार कनिष्ठ भाई दुर्लभ नाम जार।	उसका कनिष्ठ भाई दुर्लभ नाम जिसका।
ताहार कनिष्ठ भ्राता कल्याण नाम तार।।	फिर उसका कनिष्ठ भाई कल्याण नाम इसका।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड19 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड19 पृ

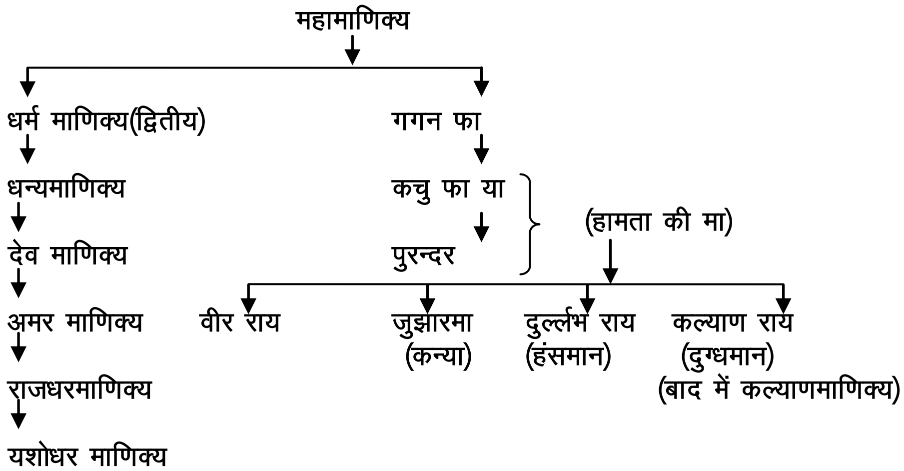
अन्यत्र मिलता है–

अतिबृद्ध रण दुर्लभ कैलागढ़े छिलो।	अतिवृद्ध रण दुर्लभ थे कैला गढ़।
थानादारी कर्मे तारे नृपे नियोजिलो।।	थानेदारी दी नृप ने किया कर्म में सुदृढ़।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड20 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड20 पृ
कल्याण देबेर सेई मातामह होय।	कल्याण देव का हुआ वही मातामह।
कैलागड़े जन्म कल्याण सेई तो समय।।	कैलागड़ में जन्मा कल्याण उस समय।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड21 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड21 पृ
कल्याण देबेर माता हाम्थारमा नाम।	कल्याण देव माता हाम्थारमा नाम।
कुचु फा ताहार पिता ज्ञान अनुपाम।।	कुचुफा उसके पिता ज्ञान गुण धाम।।
पुरन्दर आर नाम ताहार जे छिलो।	और एक नाम उसका जो था पुरन्दर।
तुलसी धाटेते तार गंगा प्राप्ति होइलो।।	तुलसी तल पर अपनी देह छोड़ा नृपवर।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड21 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड21 पृ
दुर्लभ कल्याण राय दुई शिशु काले।	दुर्लभ कल्याण राय दोनो को शिशु बेला।
मातामह दुर्लभ राय ताके जिज्ञासिले।।	मातामह दुर्लभ राय ने पूछा देख अकेला।।
तोमा दुई जना शिशु कि खाइते मोने।	तुम दोनो शिशु क्या चाहते हो खाना।
जाहा इच्छा दिबो आमि बोलो आमा स्थाने।।	जो इच्छा दूंगा मैं कहो द्विधा बिना।।
रण दुर्लभे कहे हंस पाइले खाई।	रण दुर्लभ ने हंस मांगा हित अपने भोजन।
कल्याणे बोले आमि दुग्ध जेनो चाई।।	केवल दुध मुझे चाहिए कहा था कल्याण।।
दुर्लभ नारायण ताहा सुनिया हासय।	दुर्लभ नारायण विंहसे सुन कथन।
हंसमान दुग्धमान दुई नाम राखय।	रखा, दो नाम ,हंसमान, दुग्धमान।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड21 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड21 पृ

श्रेणी माला ग्रन्थ में अतिअल्प कथा ही मिलती है। उसमे लिखा है।

राजार वंशेते छिलो कचुराय थे नामे।	राजा के वंश में कचुराय था नाम।
तस्य पुत्र कल्याण राय छिलो पराक्रमे।।	तस्य पुत्र कल्याण राज था पराक्रमी।।

राजमाला के प्रति लक्ष्य रखकर वंश पत्रिका की आलोचना करने से निम्नलिखित मत होगा।



तृतीय लहर 220

यशोधर माणिक्य के जन्म ग्रहण के आठ महीने बाद कल्याणमाणिक्य जन्में थे।(1) इनके कुण्डली के फल इस लहर के 19वें पृष्ठ में मिलेगें। यशोधर तथा कल्याण देव के लग्न पत्रिका की आलोचना से जाना जाता है कि उभय के आयु क्रम में आठ महीने का अन्तर है। वंश पत्रिका आलोचना से देखा जाता है कि महाराज यशोधर, महामाणिक्य के गणना में सप्तम स्थानीय तथा कल्याण देव चतुर्थ स्थानीय है। इस प्रकार का अन्तर सम्भव नहीं हो सकता।

राजमाला के वाक्य द्वारा भी इस विषय में संदेह उठता है। यथा–

महामाणिक्येर पुत्र गगन फा आर।	महामाणिक्य का पुत्र गगन फा कहाया।
तान वंशे कुचु फा नाम होइलो ताहार।।	उनके वंश में कुचुफा नाम उसका हुआ।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड18 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड18 पृ

इस कचू फा के पुत्र कल्याण देव है। कचू फा, गगन फा का वंशज है, ऐसा ही उल्लेख किया गया है– पुत्र नहीं कहा गया है। इसक द्वारा अनुमान होता है कि गगन फा तथा कचू फा के मध्यवर्ती दो तीन नाम लुप्त हो गये है। अब और इस विषय के प्रकृत तथ्य उद्धार के उपाय नहीं है।

कल्याण देव के मातामह सेनापति रण दुर्ल्लभ नारायण, कैलारगढ़ दुर्ग में नियुक्त रहने के समय उस स्थान में कल्याण देव का जन्म हुआ। शैशव में पितृ वियोग होने से वे मातामह के द्वारा ही पालित हुए थे। रण दुर्ल्लभ नारायण के परलोक प्राप्ति के बाद वे उदयपुर में आये थे। उदयपुर में आगमन के बाद कल्याण देव किसके तत्वाधान में थे, नहीं जाना जा रहा है। वे मौसी, बुआ द्वारा पालित हुए थे, ऐसा ही एक अभास मिलता है। एक बार महाराज अमर माणिक्य चतुदोल आरोहण के लिए प्रसाद से निकले –

कल्याण देब के सिखाय मासि पिसिगन।	मौसी और बुआएं सिखाती देव कल्याण।
राजार चौदोले जल सिचिते तखन।।	राज चतुर्दोलि जल सिचन उसी क्षण।।
पंच बत्सर बालक कल्याण दिब होय।	पंच बरस का बालक कल्याण देव।
राजार चौदोले जल सिंचे से समय।।	राजा चतुर्दोलि जल सींचे उस समय।।
देखिया अमरदेब हासिते लागिलो।	देख उसे आई अमर देब को हंसी।
काहार बालक बोलि नृपे जिज्ञासिलो।।	किसका यह बालक पूछा हंसी खुशी।।
कुचुफार पुत्र बलि कहे सर्बजन।	कुचुफा का पुत्र कहे दिया परिचय।
मासि पिसि कल्याण के निलसेई क्षण।।	मौसी और बुआएं ले गई उस समय।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड22 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड22 पृ

---

(1)

पनेर श दुई शक भाद्र मास ताते।	पन्द्रह सौ दो शक भादों में आकर।
कल्याण देवेर जन्म कैलागड़ ताते।।	कल्याण देव का जन्म हुआ कैलागढ़ जाकर।।
यशोधर जन्म होते अष्टमास पर।	यशोधर के जन्म से अष्टमास पश्चात्।
कल्याण देबेर जन्म होइयाछे तत्पर।।	कल्याण देव का जन्म हुआ है निर्विवाद।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड19 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड19 पृ

कल्याणमाणिक्य शैशव काल में पितृ मातृ हीन अवस्था में वाछाल जाति द्वारा पालित हुए थे। इस रुप में एक प्रवाद प्रचलित रहने की बात पहले ही कही गई है। प्रवाद वाक्य का मर्म रुप यह है। –कल्याणमाणिक्य के पिता कचु फा या पुरन्दर ने एक बार मृगयार्थ सैन्य सह वन गमन किया था। वे एक पलायित मृग के पीछे अश्व दौड़ाने से अपने अनुचर वर्ग से विछिन्न हो पडे। मध्याह्न काल में प्रखर रवि से उत्तापित तथा पिपासार्त होकर वे जल की खोज करते एक वाछाल के गृह में उपनीत हुए तथा वहां जलपान करके पीपासा को निवृत्त किया। वाछाल की एक रुपवती युवती कन्या थी। आगन्तुक ने तदर्शन कर लिए, रुपमुग्ध हुए, युवती ने भी राज परिवार के युवक की आकांक्षा पूर्ण करने के निमित्त आनन्द के साथ सम्मति दान किया। उभय ही गन्धर्व विधान से परिणय सूत्र से आबद्ध हुए। इस युवती के गर्भ में कचु फा के संयोग से कल्याण देव ने जन्म ग्रहण किया था। इसके कारण कल्याण देव के मातामह वाछाल जातीय थे, यही प्रमाणित होता है। इस विषय में उक्त प्रवाद वाक्य छोड़कर अन्य प्रमाण संग्रह करना सम्भव नहीं।

बाल्यकाल से ही कल्याण देव को शिष्ट, शान्त तथा धर्म्मानुरक्त देखा गया है। वे अन्य बालक गण के साथ न मिलकर अकेले ही शिव तथा विष्णु आदि देवता की पूजा में व्यस्त रहते थे। वयः वृद्धि के साथ साथ वे नाना गुण से विभूषित हो उठे। यौवन से ही वे सेनापत्य लाभ करके यशस्वी हुए थे। श्रेणी माला में मिलता है–

कसबा उपर किल्ला थाना नृपतिर।	कसबा उपर किला थाना नृपति का।
कल्याण राय सेनापति युद्धे महावीर।।	कल्याण राय सेनापति युद्ध में महावीर।।
सेइ थाना ते तिनि छिलो थानादार।।	उस थाना में वे थे थानादार।।
सैन्य सेना रक्षा कोरे युद्धेर माझार।	सैन्य सेना रक्षा किये युद्ध के मध्य।
अशंक विक्रमें छिलो ज्ञाने महामति।।	अशंक विक्रम थे ज्ञान में महामति।।"
इत्यादि।	इत्यादि।

महाराज यशोधर माणिक्य उनके शौर्य वीरता तथा बुद्धिमत्ता दर्शन से मुग्ध थे। इसी कारण तीर्थ यात्रा काल में इनको राजत्व प्रदान का अभिप्राय बताया था। प्रकृति पुंज ने उनके आदेश शिरोधार्य करके कल्याणदेव को त्रिपुरा का राजदण्ड धारण कराया। उन्होने कल्याणमाणिक्य नाम ग्रहण कर त्रिपुरा का राजदण्ड धारण किया।

कल्याण माणिक्य का शासन काल राजत्व लाभ के बाद महाराज कल्याण के प्रथम कार्य है– मुगल के भय से पलायित अमात्य, सेनाध्यक्ष तथा प्रजा वर्ग के आने के पूर्व अपने अपने स्थान में पूर्व रुप स्थापित करना, उन लोगों की यथोचित सहायता दान से दुर्गति से परित्राण करना तथा मुगलों द्वारा विध्वस्त मन्दिर तथा जलाशय इत्यादि के संस्कार करना। इस समय किसी को प्रीति प्रदर्शन द्वारा

तृतीय लहर 222

किसी को आर्थिक सहायता द्वारा तथा किसी को बल प्रयोग द्वारा बाध्य करना पडता था। पार्वत्य प्रजागण भी राज भक्ति के निदर्शन सूचक भेट सह उपस्थित होकर वश्यता स्वीकार करने लगे। इस संगठन कार्य में महाराज के विशेष नैपुण्य प्रकाश पाया गया था।

महाराज ने राज लाभ के साथ साथ ही धर्म कार्यानुष्ठान में मनोनिवेश किया। उनके सत्कार्यावली के आभास पूर्व ही प्रदान किया है। प्रजा वर्ग के सुख स्वछन्द के प्रति उनके दृष्टि सर्वदा जागरुक रहती थी। उनके सुविधा में महाराज भूमि कर कम कर दिया था। सर्व विषय में सुव्यवस्था ख्याति सुनकर दिन दिन प्रजा संख्या वृद्धि पाने लगे। अल्पकाल में ही राज्य सुख समृद्धशाली हो उठा।

मुसलमानों ने अधिकृत समय के सुयोग पाकर राज्य के जिन सब अंश पर व्यक्तिगण अधिकार कर बैठे थे, महाराज कल्याण ने वह पुनराधिकार करके राज्य के नष्टोद्धार कार्य में प्रवृत्त हुए। परन्तु महाराज अमर माणिक्य के समय कुमार गणों के न भूलने वाले कार्य के कारण जो क्षति घटा था, महाराज कल्याण उनका सम्यक पूर्ण करने में समर्थ नहीं हुए। चट्‌ट गाँव में मधगण के सहित युद्ध में लिप्त होकर इन्होने जय लाभ किया। इस यात्रा में अमर माणिक्य के समय में अपहृत चन्द्र गोपीनाथविग्रह का मघ गण के हस्त से उद्धार किया था।

महाराज कल्याणमाणिक्य के शासन काल में मणिपुर राजा द्वारा त्रिपुरा से लोग पकड़ कर लाने की बात मणीपुर के इतिहास में मिलती है। उक्त ग्रन्थ में लिखित है–

" English Era 1634-35,-(1556 Shak), Khagemba raided on Tipperah and brought 200 Captives. There was famine in this year on account of the scarcity of rain, Khagemba's wife distributed paddy on gratis amongst the poor, she also inspected the conditions of the villagers and relieved them from the difficulty."

मर्म– 1634–35 ई0, 1556 शक– खागेम्बा ने त्रिपुरा पर आक्रमण किया तथा 200 कैदी पकड़ कर लाये।

त्रिपुरा के इतिहास में यह बात उल्लेख नहीं है। इसका प्रकृत तथ्य उद्घाटन के अन्य सूत्र भी नहीं मिल रहे है अर्थात इस सम्बन्ध में किसी रुप में आलोचना करने की सुविधा नहीं मिली।

सम्राट जहाँगीर के पुत्र शाहजहां, पिता के परलोक प्राप्ति के बाद सम्राज्य के अधिकारी होने की आशा कर रहे थे। परन्तु जहाँगीर के प्रियतमा बेगम मेहेरउन्नीसा(नूरजहाँ) ने पति के उपर ऐसा अधिपत्य विस्तार किया था कि उस प्रधानता के सुयोग से जहाँ शाहजहान को वंचित करके अपने कन्या–दामाद

शाहजादा शहरयार को सिंहासन प्रदान की चेष्टा से प्रवृत्तया हुइ। साथ साथ ही शाहजाँह के अनिष्टजनक नानाविध कार्य के अनुष्ठान आरम्भ हुए। बेगम के प्ररोचना से सम्राट भी दिन प्रतिदिन पुत्र के प्रति स्थिर रोष हो रहे थे। शांहजाँह इस अनिष्टदाई गृह विवाद निवारण के निमित्त विस्तर कोशिश करके अकृत कार्य होने से, वे अनन्यान्न उपाय होकर पिता के विरुद्ध अस्त्र धारण के कृत संकल्प हुए, कुछ युद्ध भी हुआ। शाहजाँह ने बंगला देश में आकर वहां के निजाम इब्राहिम खाँ फते जंग को पत्र द्वारा बताया, ''बंग देश अधिकार करना हमारी इच्छा नहीं, हमारा उद्देश्य बहुत ही उँचा है परन्तु जब पथ में पतित हुए तब बंग देश परित्याग करने का उपाय नहीं है। आप धन प्राण बचाने की इच्छा से दिल्ली की तरफ निःसंकोच गमन कर जाये, अथवा इस देश में निवास करने को अभिप्रेत हुए, तो आपके इच्छानुसार वास भवन निर्माण करके वास कर सकते है।'' इब्राहिम खाँ ने शीघ्र बताया–''बादशाह ने हमको इस देश की रक्षा हेतू नियोजित किया है, जीवन रहते हम वह रक्षा से पीछे– नहीं होगें।''(1) अतएव उभय पक्ष में घोर युद्ध हुआ। शाहजाँह ने इब्राहिम खाँ को निहत करके कुछ काल के निमित्त बंग देश पर अधिकार किया। खाँ खानान के पुत्र दाराब खाँ को बंग के शासन कर्ता नियुक्त किया गया, परन्तु इस व्यक्ति ने समय समझकर शाँहजाँह के आबाध्य हुए थे। बाद में सम्राट के निर्देशानुसार वे महावत खाँ के हस्त निहत हुए।

शाहजाँह ने वाराणसी के समीप स्थान में सम्राट के सैन्य द्वारा हार कर दक्षिण की तरफ गमन किया। इस तरफ सम्राट ने बंगाल के शासन कार्य में क्रमन्वय खानाजाद खाँ, नवाब मुबारक खाँ तथा फेदाई खाँ को नियुक्त किया था।

इसके कुछ काल के बाद सम्राट जहाँगीर मृत हुए तथा शाहजाँह ने दक्षिण पथ से आवागमन पूर्वक उनके ससुर आसफ खाँ के सहायता से भ्राता लोगों को बुलवा कर सम्राज्य अधीश्वर हुए(1037 हि/ 1628 ई0) उन्होने सिंहासन लाभ के साथ साथ ही फेदाई खाँ के स्थल में नवाब कासेम खाँ को बंगाल के शासन भार प्रदान किया था। कासेम के परलोक गमन के बाद नवाब आजम खाँ ने भी तत्पर नवाब इस्लाम खाँ बंगाल के सुबेदारी का पदलाभ किया। शेषोक्त व्यक्ति दक्षता के साथ शासन कार्य परिचालन कर रहे थे। बादशाह ने उनको वजीर का पद प्रदान करके अपने दरबार में ग्रहण कर के तथा अपने द्वितीय पुत्र शाहजादा सुजा को बंगाल के सुबेदार के पद में अभिषिक्त किया।

---

(1) रियाज–उस–सलातिन ग्रन्थ के तृतीय उद्यान में इस विषय में विस्तृत विवरण मिलेगा।

तृतीय लहर–224

सुजा ने 1048हि में(1639 ई0) बंगाल में आगमन करके अकबर नगर में(राजमहल में) अवस्थान करके अपने ससुर तथा सहकारी शासन कर्ता नवाब आजम खाँ के जहाँगीर नगर में(ढाका) में प्रेरण किया। उन्होने आठ वर्ष काल में नैपुण्य के सहित बंग देश शासन करने के बाद, शाहजाँह के राजत्व के बीस वर्ष बाद पिता द्वारा बुलाने पर दिल्ली में गमन किया। उनको काबुल का शासन भार प्रदान करना सम्राट का उद्देश्य नहीं था इस समय नवाब ऐतेकाद खाँ बंगाल के शासन कर्ता हुए। उनका शासन काल दो साल से अधिक स्थायी नहीं हुआ। उनको पदच्युत करके पुनर्बार शाहजादा सुजा को बंगला देश में प्रेरण किया गया था।

सुजा के प्रथम बार के शासन काल में त्रिपुरा के हस्ती सम्पद के प्रति सम्राट की लोलुप–दृष्टि निपतित हुई। उन्होने त्रिपुरेश्वर से नजर स्वरुप हस्ती ग्रहण के निमित्त बंग देश के शासन कर्ता के प्रति आदेश किया तथा युद्धोपयोगी अस्त्रादि सह एक सहस्त्र अश्वारोही तथा विस्तर पदातिक सैन्य बंगाल में प्रेरण किये। उन्होने बंगेश्वर के नियोजित सैन्य दल के साथ कैलारगढ़ के समीप आकर छावनी किया। महाराज कल्याणमाणिक्य, दुर्ग रक्षा के निमित्त ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द देव, प्रमुख सैन्य दल सह स्वयं कैलारगढ़ आये। उभय पक्ष में घोर संग्राम आरम्भ हुआ। मुगल पक्ष के कामान के गोले राज दुर्ग में गिर रहे थे। राजकुमार गोविन्देव, एक गोला हाथ में लेकर पिता के पास उपस्थित होकर बोले–''अविश्राम गोली बरसात से दुर्ग अरक्षणीय प्रतीत हो रहा है, इस अवस्था में कैसे युद्ध चले?'' मुगल वाहिनी के साथ सन्धि प्रस्ताव करना ही कुमार का उद्देश्य था। महाराज पुत्र का अभिप्राय समझकर अतिशय क्षुब्ध हुए, तथा पौरुष वाक्य में बोले–''इस जीवन में बहुत युद्ध किये हैं, कभी भी भय नहीं हुआ तथा शत्रु के संग प्रतिस्थापना भी नहीं किया। सन्धि करना तुम्हारा अभिप्रेत हो तो कर सकते हो, हम इस युद्ध में अस्त्र धारण नहीं करेगें।'' राज गुरु दुर्ग में उपस्थित थे, महाराज ने समस्त अवस्था वर्णन करके उनके चरण में धर्नुबाण अर्पण किया।

पिता के व्यवहार दर्शन से गोविन्द देव भयभीत तथा लज्जित हुए। उन्होने बिना वाक्य व्यय से पुनर्बार(दोबारा) युद्ध में योगदान किया। इस बार द्विगुन उत्साह से त्रिपुर वाहिनी ने मुगल लोगों पर आक्रमण किया। वह आक्रमण असहनीय होने से मुगल सेनापति परास्त होकर पलायन करने में बाध्य हुए। मुगल गण के पुनर्बार(दोबारा) रण क्षेत्र में उपस्थित होने का साहस या सम्बल नहीं था। इस यात्रा में पराजय कलंक लेकर उन लोगों को लौट जाना पडा।

युद्धावसान पर महाराज कल्याण ने उत्फुल्ल चित से दरबार आह्वान किया तथा पात्र मित्रादि परिवेष्टित सभा में राजकुमार गोविन्द देव को युवराज अभिषेक

करने का अभिप्राय व्यक्त किया। इस प्रस्ताव में सभी आन्नदित हुए थे। तभी मांगलिक उत्सव के दिन अवधारित हुआ। शुभ दिन में शुभ समय में गोविन्द देव ने युवराज पदवी लाभ किया।

अतएव सुयोग्य पुत्र के हस्त में राज कार्य का पूरा भार अर्पण करके महाराज कल्याण निश्चिन्त मन से धर्म कार्यानुष्ठान में प्रवृत्त हुए। धर्मोद्देश्य से उन्होने जितने सब सत्कार्य सम्पन्न किये थे, उनका स्थूल विवरण पूर्व ही प्रदान किया गया है।

महाराज कल्याण ने 1502 शक के भाद्र महीने में जन्म ग्रहण किया था।(1) उन्होने 1548 शक(46 वर्ष की आयु) में राज्य लाभ किया। 1582 शक के ज्येष्ठ महीने में 7वीं तारीख में उनको परलोक प्राप्त हुआ था। महाराज वात रोग ग्रस्त होकर अचैतन्य अवस्था में तीन दिवस मात्र जीवित थे।

राजमाला तृतीय लहर के अन्तर्भूत राजगण के शासन काल में राज्य जिस अवस्था में था, पूर्वोक्त विवरण द्वारा उसका आभास मिलता है। स्थूलतः परिवार के विरोध तथा पठान तथा फिरंगी सैन्य गण के विद्रोह के कारण इस समय राज्य की विस्तर क्षति तथा कुछ परिमाण में राजनैतिक अवनति घटा था। महाराज अमर माणिक्य के कुमार गणों के मध्य परस्पर सद्भाव नहीं था। महाराज के पीडित अवस्था में कुमार राजधर के सिंहासन अधिकार करने की लालसा, तद् उपलक्ष्य में कनिष्ठ कुमार युझार सिंह का अग्रज के प्रति असंगत व्यवहार,(2) चट्ट गाँव में आराकान राज के प्रति गज दन्त के मुकुट लेकर भ्राता गण के मध्य झगडे(3) आदि विषय में आलोचना करने से कुमार गण के मध्य भातृ विरोध का उज्जवल प्रमाण मिलेगा। इनके कोई कोई कार्य द्वारा समझा जाता है कि राजा भी हर समय पुत्र लोगों को वश में रखने में सक्षम नहीं थे। इस अवस्था में राज्य तथा राजा की जो हालत होनी थी, विपुल प्रतिभा के अधिकारी बावजूद महाराज अमर के भाग्य में वही घटित हुआ था। इसके परिवर्ती राजगण भी उसके तरह सुख शान्ति से राजत्व नहीं कर पाये। मघ तथा मुसलमान दो प्रबल प्रतिद्वन्द्वी के कारण से त्रिपुरेश्वर लोग उत्तरोत्तर दुर्बल हो गये थे।

राजा और रानी का औदार्य

श्रीहट्ट पठान शासन कर्ता फते खाँ का युद्ध में पराजित तथा बन्दी होकर उदयपुर में जाने के बाद, महाराज अमर माणिक्य ने वहाँ विजित शत्रु के प्रति जो सदय व्यवहार किया था, वह आलोचना करने से महाराज के असीम औदार्य/ उदारता का परिचय मिलेगा।(4) सराईल के ईशा खाँ मुगल वाहिनी द्वारा आक्रान्त कर देने की आशंका से, त्रिपुरेश्वर के अमर माणिक्य का आश्रय

---

(1) इस लहर के 19वां पृष्ठ दृष्टब्य
(2) अमर माणिक्य खण्ड 24 पृष्ठ
(3) अमर माणिक्य खण्ड 34 पृष्ठ
(4) अमर माणिक्य खण्ड 10 पृष्ठ

तृतीय लहर–226

ग्रहण किया। इस समय ईशा खाँ ने महारानी को मातृ सम्बोधन करके राजा रानी से जो कृपा लाभ किया था, वह लोकोत्तर उदारता का परिचायक है। त्रिपुरा के राजा तथा रानी गण के इस प्रकार के कृपा लाभ से अनेकों के ही धन्य होने के दृष्टान्त पूर्व में अनेक मिला है, एवं मिलेगा।

सामाजिक अवस्था सामाजिक विवरण में ज्यादा कुछ नहीं मिलता। उस काल में सभी धर्मानुरक्त, सरल, विश्वासी, सत्यवादी, सत्साहसी तथा वीरशाली थे, यह मात्र आभास मिलता है। नानाविध अमूलक वाक्य प्रचार द्वारा जन साधारण के भीति–उत्पादन कार्यरत दुष्ट लोगों का भी अभाव नहीं था। सरल हृदय प्रकृति पुन्ज वे सब जन रव में सहज ही विश्वास करते तथा भावी विपदाशंका से व्याकुल हो पड़ते। आलोच्य तृतीय लहर में इस विषय में अनेक दृष्टान्त है।

सुरा का प्रभाव उस काल के समाज में मदिरा का प्रभाव अतिशय प्रबल था, राजमाला के प्रथम तथा द्वितीय लहर में इस विषय का विस्तार निदर्शन मिला है, तृतीय लहर में भी इस विषय के दृष्टान्त के अभाव नहीं है। इस लहर के अन्तर्निविष्ट राजा अमर माणिक्य मद्य पान करते थे, द्वितीय लहर में इस रुप आभास मिला है। महाराज जय माणिक्य के प्रधान सेनापति रंगनारायण ने मद्य पान से विह्वल करके अमर देव का वध करने की चेष्टा की थी, अमर देव स्वयं कहते हैः–

आमा डाके रणागण भोजन कोरिते।	मुझे बुलाया रणागण ने, भोजन वहां करने।
मद्य पान कोराइया चाहिलो मारिते।।	मद्यपान कराकर चाहा मुझे मारने।।
राजमाला द्विल जयमाणिक्य खण्ड74 पृ	राजमाला द्विल जयमाणिक्य खण्ड74 पृ

महाराज अमर माणिक्य के नियोजित सेनापति तथा लस्कर(प्रादेशिक शासन कर्ता) महाराज कल्याणमाणिक्य के मातुल थे। राजमाला में उनके चरित्र के सम्बन्ध में मिलता हैः–

गामारिया किल्लाय थाके कल्याण मातुल।	गामारिया किले रहते मातुल कल्याण।
गामारी लस्करी काजे कोरे अप्रतुल।।	गामारी लस्कर में कार्यरत ससन्मान।।
अन्नमांस सदाकाल तार पाके होय।	अन्न मांस पकता सदा जहाँ रसोई इनकी।
उष्ण थाकिते से जे भोजन कोरय।।	गर्म रहते भोजन की आदत थी उनकी।।
कुत्सित प्रकृति तार सिकदारी चाला।	कुत्सित प्रकृति थी उनकी और सिकदारी चाला।
प्रातःकाले बोइसे खाइते होय बहु बेला।।	प्रातः बैठता करने भोजन चढ़ जाती बेला।।
मद्यबिने जल सेई ना पिये कोखने।	मदिरा छोड़ कभी भी जल नहीं पीता।
अन्य जने जल खाइते किलाय भोजने।।	दूसरे को जल पीते देख भोजन पर पीटता।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड26 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड26 पृ

तृतीय लहर–227

सेनापति महाशय स्वयं जल स्पर्श नहीं करते थे, मद्य द्वारा जल के अभाव को पूर्ण करते थे। अन्य को जलपान करते देखने से भी उनके ह्रदय में क्रोध का संचार होता, यहां तक कि जलपीने वाले व्यक्ति को भी यथा योग्य शासन करने में दुविधा महसूस नहीं करते थे। एक दिन वे अपने दामाद के साथ बैठकर आहार कर रहे थे, इसी समय जामाता को पानी पीता देख कर श्वसुर अग्निमूर्ति हो गए तथा भोजन पात्र त्याग करके गात्रोत्थान करके दामाद के पीठ में सजोर से पाँच बार घूसा मारकर वज्र–गम्भीर स्वर से बोले– "चावल के साथ मद्य पान न करके जल पान कर रहे हो? तुम्हारी तरह अकर्मण्य लोगों के द्वारा कोई कार्य ही साधित होने की आशा नहीं है"(1)

जिस समाज में उन्नत स्तर की इस प्रकार अवस्था थी, उसके निम्न स्तर की अवस्था किस रुप था, अनायास ही समझा जा सकता है। जिस समाज में हर घर में अबाध रुप में मद्य प्रस्तुत होता हो, जिस समाज में मदिरा के उपकरण जन साधारण प्रस्तुत करने के अधिकारी हो, मदिरा बनाना जिस समाज के पारिवार का एक प्रधान कर्तव्य के मध्य परिगणित हो, परिवार के गुरु लघु सभी मिलकर एक पात्र में मद्यपान करने में जिस समाज में लोग चिर अभ्यस्त हो, उस देश मे– उस समाज में मदिरा प्रभाव कितना प्रबल हो सकता है, वह किसी को बताकर समझाना नहीं होगा। उस काल के पार्वत्य समाज विलास द्रव्य का व्यवहार नहीं जानते थे अर्थात अभाव भी नहीं था। अपने अपने झूम में उत्पन्न वस्तु लेकर वे सन्तुष्ट रहते और नाचकर गाकर तथा मद्यपान करके सर्वदा आनन्द से विभोर रहते थे।

भूत का उपद्रव भूत सम्बन्धीय विश्वास सर्व देश में, सर्व जाति में, समस्त धर्मावलम्बी के ह्रदय में ही बद्धमूल रहा है। हिन्दूगण भूत या प्रेतात्मा के अस्तित्व विशेष तरीके से मानकर रहते है, यह हिन्दूगण के मनगढन्त भाव नहीं है, बल्कि शास्त्र की बात है। त्रिपुरा राज्य में किसी समय भौतिक उपद्रव के आशंका से सभी व्याकुल

---

(1)

सुनामा कन्या तार जामाई पाठान राय।	सुनामा कन्या उसकी जामाई पाठान राय।
श्वशुर निकटे अन्न बोसि सेई खाय।।	श्वशुर निकट बैठा भोजन करने आय।।
अन्न मांस खाइया जल तृष्णा होइलो तान।	हुई जल तृष्णा उसे अन्न मांस खाकर।
श्वशुर साक्षाते तोखन जलकोरे पान।।	श्वशुर सन्मुख जल पिया वहीं पर सत्वर।।
जामातार जलपान देखिया श्वशुर।	करते जलपान उसे देखा अपने सन्मुख।
क्रोधे पंच किल मारे जेन मत्तशूर।।	क्रोधान्वित हो मारा पाँच मुक्के जैसे मत्तशूर।।
अन्न खाइते जल खाइले जामाता।	अन्न भोजन के बाद जलपान यहाँ करने पर।
तोमा होते आमा कर्म ना होबे सर्वथा।।	तुमसे मेरा काम नहीं होने का अब रहने पर।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड26 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड26 पृ

होकर पडे थे, महाराज अमर माणिक्य के शासन काल में इस विषय में विश्वास नितान्त प्रबल हुआ था तथा समग्र राजधानी भूत के भय से अधीर हो उठी थी। स्वयं महाराज ने भी भूत के अस्तित्व प्रतिपादक बहुत बातें कही है। पथ घाट में मनुष्य को भूत आक्रमण करते थे, देवालय में अत्याचार करते, पेड में चढ़ कर लुढ़कनेबाजी का खेल खेलते थे, आदि भीतिजनक भौतिक काण्ड की कथा तृतीय लहर में मिलती है।

मुद्रा — मुद्रा प्रचलन सम्बन्ध में भी प्राचीन प्रथा इस समय में भी अक्षुण्ण थी। राजा के नाम के सहित पट्टमहिषि का नाम तथा प्रचलन की शंकाक उत्कीर्ण कर मुद्रा प्रस्तुत करने के साधारण नियम थे। विशेष विशेष घटना की स्मृति रक्षा करने में भी मुद्रा निर्मित होते थे। महाराज अमर माणिक्य द्वारा श्रीहट्ट विजयोपलक्ष्य में नूतन मुद्रा प्रचलन करने का विवरण पूर्व ही प्रदान किया गया है। एक राजा के शासन काल में भिन्न विभिन्न खाँचे, विभिन्न प्रकार के मुद्रा प्रस्तुत करने के निदर्शन बहुत हैं। राजा के एकाधिक पट महिषि के नामंकित स्वतन्त्र स्वतन्त्र मुद्रा प्रचलन के भी निदर्शन मिलते हैं।

कौडिमुद्रा — इस समय में भी कौडि द्वारा मुद्रा के कार्य साधित होते थे, आलोच्य तृतीय लहर में अनेक स्थान में ही इस विषय के प्रमाण मिलते है।

महाराज अमर माणिक्य ने भुलुआ राज्य जय करके लून्ठित द्रव्य जात को जिस मूल्य में विक्रय किया था, उसकी तालिका मिलती हैः–

गो मुल्य चारि पण छाग दुई पण।	गाय का चार पण, बकरी के दो पण।
मनुष्येर मुल्य होइलो एक एक काहण।।	मनुष्य का मूल्य हुआ एक एक काहण
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड13 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड13 पृ

इसके द्वारा कडि मुद्रा प्रचलित होने के स्पष्ट प्रमाण मिलते है।

महाराज अमर, मघ द्वारा अक्रान्त तथा पराभूत होकर युद्ध क्षेत्र परित्याग करने बाध्य हुए थे। राजधानी में प्रत्यावर्तन करके भी वे पुनराक्रान्त होने से कहे थेः–

कौड़ी पुंज राखो आनि आमा विद्यमान।।	कौड़ी रखो यहाँ जहाँ से भी हो लाकर।।
उदयपुरे आसि मघ किछु ना पाइबो।	उदयपुर आकर मघ को नहीं मिलेगा कुछ भी।
धनहीन बोलि आमा मघेते कहिबो।।	धनहीन मुझे कहेगें यहाँ समझे वे तुच्छ भी।।
राजार आज्ञाय कौड़ी आने सेई क्षण।	राजाज्ञा पाकर कौड़ी आई तक्षण।
कौड़ी पुंज राखिलेक राजार भवन।।	कौड़ी पुंज को रखा अन्दर राजभवन।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड41 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड41 पृ

मुद्रा रुप से कौडि व्यवहृत होने की यह प्रकृष्ट निदर्शन है। उस काल में रुपया के भग्नांश के कार्य धातु मुद्रा के परिवर्तन में कौडि द्वारा ही निष्पादित होता था।

तृतीय लहर – 229

राज्य का विशेषत्व इस समय तक राज्य के जंगल प्राणी के मध्य हाथी की तरह घोडा अप्राप्य नहीं था। पार्वत्य प्रजागण इस समय भी राजा के उपढ़ौकन स्वरुप अनन्य वस्तु के सहित घोटक/घोड़ा प्रदान करते थे।

महाराज कल्याणमाणिक्य के राज्य लाभ करने के बादः–

पर्बतिया कुकी प्रजा आइसे सेई क्षण।	पहाड़ी कुकी प्रजा आई उसी क्षण।
घोटक गोबय वस्त्र लोइया तखन।।	घोड़ा गौ वस्त्र लेकर तत्क्षण।।
थाल घोंग गजदंत आनिलो तखन।	थाल घोंघ गजदंत ले आए तभी।
नाना भेंट लोइया आइसे नृपति सदन।।	नाना भेंट लेकर आये नृपति सदन।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड66 पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड66 पृ

इसके द्वारा खनिज सम्पदा पूर्व की तरह इस समय भी था, परन्तु उसके उद्धार का किसी रुप में अनुष्ठान होने का परिचय नहीं मिलता। त्रिपुरा के हस्ती वैभव वर्तमान काल में भी यथेष्ट थे, परन्तु प्राचीन काल की तुलना में नाना कारण से यह सम्पदा इस परिमाण से कम हुआ कि अश्व का अस्तित्व सम्पूर्ण रुप से विलीन हुआ है।

राजाओ का काल निर्णय

राजमाला तृतीय लहर में जिन सब राजा के विवरण समावेश हुए है, उनके राजत्व काल के निरुपण के लिए इस स्थल में कोशिश की जायेगी।

महाराज अमर माणिक्य के शासन काल महाराज अमर माणिक्य के शासन काल को लेकर तृतीय लहर की रचना आरम्भ हुई है। इसके बाल्यकाल के अवस्थादि पूर्व में जो प्रदान किया गया है, तद्द्वारा जाना जायेगा कि प्रथमावस्था में इसका 'रामदास' नाम था। सेनापत्य लाभ के बाद ''भीम सेनापति''(1) और ''अमरदेव'' नामकरण हुआ। उन्होने राजत्व लाभ के बाद 'माणिक्य' उपाधि धारण करके 'अमर माणिक्य' नाम से ख्यात हुए थे।

अमर माणिक्य राजत्व काल के सम्बन्ध में मतभेद है। त्रिपुर वंशावली के मत में उन्होने 1006 त्रिपुराब्द में राज्य लाभ किया था। कैलाश बाबू कहते थेः– महाराज अमर ने 1007 त्रिंग(1567 ई0) से 1021 त्रिंग(1611 ई0) तक राजत्व किया था।(2) चाकला रोशनाबाद के सेटेलमेन्ट ऑफिसर कमिंग साहब (J.G. Cumming I.C.S.) तथा History of Tripura ग्रन्थ के प्रणेता सेन्डिस साहब (E.F.Sandys)(3) ने कैलाश बाबू की तरह मत समर्थन किया है। राजमाला के समालोचक लंग साहब (Rev. James Long) ने अमर माणिक्य के

---

(1)

विजय माणिक्य भ्राता भीम सेनापति।	विजय माणिक्य के भ्राता भीम सेनापति।
अमर माणिक्य नामे होइलेन ख्याति।।	अमर माणिक्य नाम से हुए ख्याति।।
त्रिपुर वंशावली	त्रिपुर वंशावली

(2) कैलाश बाबू के राजमाला– द्वितीय भाग, 6 अध्याय, 68 पृष्ठ

(3) History of Tripura – Page 18.

राज्य लाभ के समय का निर्देशन नहीं किया। महाराज की 1582 ई0 में श्रीहट्ट विजय करने की बात कही थी।(1) इस सम्बन्ध में राजमाला में उक्त अन्य रुप में है। उक्त ग्रन्थ में लिखित है :–

चौद्द श उनशत शके अमरदेब राजा।	चौदह सौ निन्यानवे शक अमरदेव राजा।
पनर श शके भुलूया आमल कोरे महातेजा।।	पंद्रह सौ शक भुलूया राजा महातेजा।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड11 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड11 पृ

प्राचीन राजमाला में मिलता है:–

चौद्द श उनशत शके अमर देव होइलो।	चौदह सौ उन्नहत्तर शक में अमर दे हुए।
पनर शत पूरा वर्षे में भुलुआ लूटिल।।	पन्द्रह सौ पूरा वर्ष में भुलुआ लूटे।।

राजा बाबू के घर में रक्षित राजमाला की भाषा प्राचीन राजमाला के वाक्य के अनुरुप महाराज अमर, ने 1499 शक में राजत्व लाभ किया था, राजमाला के वाक्य द्वारा यही मिलता है। 1499 शक में 987 त्रिपुराब्द, 1577 ई0 था। अर्थात कैलाश बाबू आदि के मत के सहित राजमाला के मतानुसार बीस वर्ष का अन्तर खडा होता है। त्रिपुर वंशावली के मत के सहित कैलाश बाबू आदि के मत में एक वर्ष का अन्तर परिलक्षित होता है। किस कारण राजमाला के साथ उनके मत के इस प्रकार असामंजस्य घटित हुआ, उक्त व्यक्तिगणों के मध्य कोई भी वहाँ नहीं बोला।

इस विषय के आलोचना में पूर्वोक्त होने पर देखा जाता है, कि महाराज अमर माणिक्य के अमर सागर खनन काल में श्रीहट्ट के अन्तर्गत तरप के शासन कर्ता ने कुली प्रदान द्वारा सहायता न करने पर इस विद्रोही शासन कर्ता को उपयुक्त शिक्षा प्रदान के लिए महाराज अमर ने तरप राजा पर आक्रमण कर शासन कर्ता को कारारुद्ध किया। श्रीहट्ट के उस समय के आलिम आदम शाह तरप के सहायताकारी थे, इस अपराध से महाराज अमर माणिक्य द्वारा श्रीहट्ट प्रदेश आक्रान्त तथा विजित हुए, मुद्रा के प्रमाण द्वारा जाना जाता है। इस विजय 1503 शक में(1581 ई0) हुइ थी। श्रीहट्ट विजय की स्मृति रक्षा करने हेतु महाराज ने जो मुद्रा प्रचलन की थी, उनमे से निम्नलिखित वाक्य उत्कीर्ण हुए हैं।





(1) **Journal of Asiatic Society of Bengal Vol.XIX.**

मुद्रा के प्रमाण अकाट्टय है, अर्थात 1503 शक में जो श्रीहट्ट जय किया गया था, यह निःसंशयित तरीके से निर्धारित होता है। राजमाला आलोचना से यह भी जाना जाता है, श्रीहट्ट विजय के बाद, कुमार राजधर ने कुछ काल तक उस स्थान में अवस्थान किया था, तथा 1504 शक के माघ महीने में श्रीहट्ट के पराजित तथा बन्दीकृत शासन कर्ता फते खाँ के साथ श्रीहट्ट त्याग किया। राजमाला में इसके सम्बन्ध में लिखित हैः–

पनर श चारि शाक पौष मास शेषे।	पन्द्रह सौ चार शक पौष माह अंत।
माधेर पनर दिने फते खाँ लोइया आसे।।	माध के पन्द्रह दिन लाया फते खाँ को संग।।
राजधर चलिलो दुलाली ग्राम पथे।	राजधर चले दुलाली गाँव की राह।
इटा ग्राम होइया ऊनकोटि तीर्थे।।	इटा गाँव होकर चले तीर्थ उनकोटि की चाह।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड10 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड10 पृ

राजा बाबू घर में रक्षित राजमाला में 1504 शक के माघ महीने में कुमार राजधर द्वारा श्रीहट्ट त्याग करने की बात लिखित है। रेवरेण्ड लांग साहब ने श्रीहट्ट परित्याग के काल को ही तद्देश विजय समय कह निर्देश किया था। इसके वाक्य यह हैं :–

"Amar Manik resolved on Virtuous deeds by digging tanks, he ordered all the landlords of his kingdom to send coolies for this purpose, accordingly nine Zemindars sent 7300 coolies. The Zemindar of the Taraf in Sylhet refused, an army of 22,000 men was sent against him, his son was taken prisoner, put into a cage, and brought to Udayapur. The Raja, Next (A.D.1582) marched an army against the Mohammadan commander of Sylhet whom he defeated. The order of the troops in battle resembled in figure the sacred bird gaduda, the two generals in the van represented the beak, the troops on the flanks the wing, and the main army the body, during the fight both parties bacame fatigued when a suspension of arms took place by mutual agreement, they afterwards resumed the battle, when the Musalmans were defeated." **J.A.S.B. -Vol XIX**

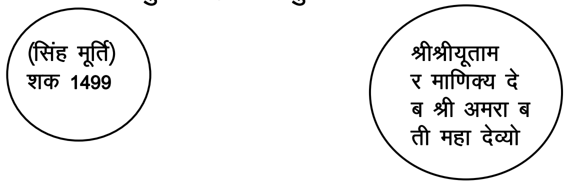
उद्धृत अंश में लिखित है 1582 ई0 तथा राजमाला में कथित 1504 शक में कोइ अन्तर नहीं है। कैलाश बाबू बोले, –"सम्भवतः 1009 त्रिपुराब्द में यही घटना हुआ था।"(1) 1009 त्रिपुराब्द में 1521 शक था। सेन्डिस साहब ने तरप के युद्ध घटना के उल्लेख करने पर भी समय सम्बन्ध में कोई बात नहीं कही।

पूर्वोक्त मत के अनुसार पूर्व कथित मुद्रा के प्रमाण मिलाने पर देखा जायेगा, जो राजत्व लाभ के बाद 1503 शक में(1581 ई0) श्रीहट्ट जय किया था, उनका

....

(1) कैलाश बाबू के राजमाला– द्वितीय भाग, 6 अध्याय, 7 पृष्ठ

राज्य लाभ के समय 1519 शक(1597 ई0) किसी रुप से निर्धारण करना नहीं जा सकता। राजमाला के निर्देशित 1499 शक में(1577 ई0) महाराज अमर माणिक्य राजा हुए थे, यही संगत है, ऐसा कहना ही हम लोग पूर्व से ही अवधारण कर आ रहे है।(1) और महाराज अमर के 1499 शक के एक चाँदी की मुद्रा हम लोगों के हस्तगत होने से, उक्त निर्धारण सुदृढ रुप से प्रमाणित प्रमाणित हुआ है। प्राप्त मुद्रा में उत्कीर्ण वाक्यावली निम्न प्रदान किया गया।



यही मुद्रा जो महाराज अमर माणिक्य के राजत्व काल की प्रथम मुद्रा है, यह निःसन्देह कहा जा सकता है, कारण, अमर माणिक्य के पूर्ववर्ती राजा जय माणिक्य द्वारा 1499 शक में कुछ काल राजत्व करना पूर्व ही प्रमाणित हुआ है।(2) अर्थात अमर माणिक्य के प्रचारित तत्पूर्वे के(1499 शक के पूर्व) मुद्रा नहीं हो सकती। इस मुद्रा द्वारा यही प्रमाणित होता है, कि 1499 शक के प्रथम भाग में जय माणिक्य के राजत्व काल में शेष होने से अमर माणिक्य ने उस शक के शेष भाग में राजा होकर यह प्रचलन की थी। 1499 शक में जो इसके राज्याभिषेक प्रकृत सम है, इस मुद्रा द्वारा वह निर्णित होता है।

कैलाश बाबू ने जो 1007 त्रिपुराब्द(1519 शक) अमर माणिक्य के राज्य लाभ का समय है, ऐसा कहकर निर्धारण किया है।, मौद्रिक प्रमाण के निकट वह नहीं टिका था। महाराज अमर 1519 शक में राजा होकर रहने पर, 1499 शक में उसके नाम से मुद्रा प्रचलन नहीं हो सकता था। राज्य लाभ के पूर्व किसी के नाम से मुद्रा प्रचलित होना नितान्त ही असम्भव तथा नियम विरुद्ध है। और भी देखा जाता है, महाराज अमर राजत्व लाभ करने के बाद 1500 शक में भुलुआ राज्य और 1503 शक में तरप राज्य जय किये थे, ऐसी अवस्था में उनके राज्य प्राप्ति जो 1500 शक के पूर्व घटित हुआ था, यह समझने में कष्ट नहीं होता है। विशेषतः राजमाला में जो उसके राज्य लाभ के समय 1499 शक लिखित हुआ है, मुद्रा के प्रमाण द्वारा वह समर्थित होना, इस उक्ति को विशुद्धता के सम्बन्ध में सन्देह दूर हुआ है।

....

(1) राजमाला– द्वितीय लहर, 85 पृष्ठ

(2) राजमाला– द्वितीय लहर, 184 पृष्ठ दृष्टब्य

तृतीय लहर – 233

अमर माणिक्य ने कितने काल राजत्व किया था, वह विषय लेकर भी मत–वाद लक्षित होता है। कैलाश बाबू, सेन्डिस साहब तथा कमिंग साहब के मतानुसार महाराज अमर ने 1591 ई0 से 1611 ई0 अब्द तक चौदह साल राजत्व किया था। किस सूत्र अवलम्बन से वे इस सिद्धान्त से उपनीत हुए हैं, वह किसी ने भी नहीं कहा है। काल परम्परा से इन लोगों ने एक अन्य के सिद्वान्त निर्विचार से ग्रहण किये है, अवस्थानुसार से यही समझा जाता है। किन्तु इस निर्धारण विशुद्ध नहीं है।

राजमाला का निर्धारित समय भी प्रमादपूर्ण है। मघ द्वारा उदयपुर आक्रमण के समय पर महाराज अमर का राजत्व काल शेष हुआ था। इस आक्रमण के सम्बन्ध में राजमाला में लिखा हैः–

पनर श दश शके चैत्र मास ताते।	पन्द्रह सौ दस शक का चैत का महीना।
प्रथमे आसिला मघ उदयपुरेते।।	पहले घुसा था मघ उदयपुर की सीमा।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड42 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड42 पृ

यहाँ हम लोगों के सम्पाद्य राजमाला के वाक्य है, प्राचीन राजमाला के सहित इस वाक्य में सामंजस्य नहीं है। उक्त ग्रन्थ में लिखित हैः–

काल नभ शर चन्द्र शक चैत्र मासे।	काल नभ शर चन्द्र शक चैत्र मास।
प्रथम आसिलो मघ उदयपुर देशे।।	प्रथम आये मघ उदयपुर देश।।

काल 3, नभ 0, शर 5, चन्द्र 1 अंक के बामागति अर्थात उक्त वाक्य द्वारा 1503 शक कहा गया है। राजा बाबू के घर में रक्षित ग्रन्थ में भी पूर्वोक्त दो पंक्ति में अविकल तरीके से लिखा गया है। अतएव उक्त ग्रन्थ में अन्यत्र अमर माणिक्य के मनु नदी के तीर में अवस्थान विषय के विवरण में लिखित हुआ है :–

एहिरुपे से तीन मास अरण्ये आछिलो।	इसी रुप से तीन महीने जंगल में थे।
पनर श छय शकाब्दा ये सब घटिलो।	प्रन्द्रह सौ छे शकाब्दा ये सब घटा।

अब देखा जाता है, हमारे सम्पादित राजमाला के मत में अमर माणिक्य के राजत्व काल 1499 शक से 1510 शक तक ग्यारह वर्ष, प्राचीन राजमाला के मतानुसार 1499 शक से 1503 शक तक चार वर्ष एवं राजाबाबू के घर में रक्षित ग्रन्थ के मत से 1499 शक से 1506 शक तक सात वर्ष निर्णित हुआ है।

महाराज अमर माणिक्य के प्रचलित 1499 तथा 1503 शक के मुद्रा के मध्य शेषोक्त मुद्रा श्रीहट्ट विजयोपलक्ष्य में मुद्रित हुए थे। उसके शासनकाल के 1503 शक के बाद उत्कीर्ण कोई भी मुद्रा अद्यापि नहीं मिलती। किन्तु महाराज अमर के परिवर्ती, महाराज राजधर माणिक्य की 1508 शक की उत्कीर्ण चाँदी मुद्रा हम लोगों के हस्तगत हुई तथा यही जो उसकी प्रथम मुद्रा है, वह भी स्थिरीकृत हुआ है।

अर्थात महाराज अमर माणिक्य के राजत्व काल 1508 शक में ही अवसान हुआ था, यह निःसन्दिग्ध रुप से निर्णय किया जा सकता है। महाराज अमर के तिरोधान के पूर्व, तत्परिवर्ती राजा के राजत्व लाभ या मुद्रा प्रचलन करना सम्भव नहीं हो सकता।

महाराज अमर माणिक्य के 1499 शक के मुद्रा द्वारा राजत्व लाभ का काल मिला है, तथा तत्परवर्ती राजा के(महाराज राजधर माणिक्य) 1508 शक के उत्कीर्ण मुद्रा द्वारा अमर माणिक्य राजत्व के शेष समय भी निर्णीत होता है। अतएव वे 1499 से 1508 शक तक(1577–1586 ई0) नौ साल मात्र राजत्व करना मौद्रिक प्रमाण द्वारा निर्धारित होता है। इस निर्धारण में प्रमाद शून्य है तथा ग्रहणीय है ऐसा गण्य/मान्य होने के योग्य है।

इस स्थल में एक बात उल्लेख करना एकान्त आवश्यक है। राजमाला द्वितीय लहर के प्राचीनत्व निर्णयोपलक्ष्य में महाराज अमर माणिक्य के राजत्व काल के सम्बन्ध में पूर्व में जो आलोचना किया गया है,(1) उस समय के, उक्त महाराज के या महाराज राजधर माणिक्य के मुद्रा हम लोगों के दृष्टिगोचर नहीं हुए। इस कारण कमिंग साहब तथा सेन्डिस साहब आदि के वाक्य के प्रति निर्भर होकर अमर माणिक्य का राजत्व काल चौदह साल माना गया था, तथा उस हिसाब से उसने परलोक गमन का काल 1513 शक(1591 ई0) निर्धारण किया गया था। पूर्वोक्त दोनो राजा द्वारा राज लाभ की प्रचारित मुद्रा लाभ के बाद यह निर्धारण भूल था ऐसा पाया गया है। उक्त गलती के द्वारा महाराज का राजत्व काल पाँच साल अधिक पाया गया था। पूर्वोक्त हिसाब द्वारा राजमाला द्वितीय लहर की उम्र सार्द्ध त्रिशत(साढे तीनसौ) साल निर्धारण किया गया था, इस सामान्य भूल के द्वारा कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मूल कथा में महाराज अमर के राजत्व काल चौदह साल न पकड़ कर, नौ साल पकड़ना होगा। उन्होनें 1499 शक के शेष भाग से 1508 शक के प्रथम भाग तक राजत्व किया था, मुद्रा की सहायता से यही प्रमाणित होता है।

महाराज राजधर माणिक्य का राजत्व काल महाराज राजधर माणिक्य, अमर माणिक्य के परवर्ती राजा हैं। कैलाश बाबू, कमिंग साहब तथा सेन्डिस साहब आदि के मत में महाराज राजधर 1021 त्रिपुराब्द(1611 ई0) में सिंहासनरुढ़ हुए है। राजमाला में इसके राजत्व काल निर्देशक कोई बात नहीं मिलती है। राजधर के पूर्ववर्ती महाराज अमर 1508 शक के(1586 ई0), कुछ काल तक राजत्व करना जाना गया है, महाराज राजधर माणिक्य की 1508 शक की मुद्रा द्वारा

---

(1) राजमाला – द्वितीय लहर, 85 पृष्ठ दृष्टब्य।

प्रमाणित होता है, उन्होनें इस शक में ही राज्य लाभ किया था। उक्त मुद्रा में निम्न लिखित वाक्य उत्कीर्ण हुए है।

(सिंह मूर्ति)
शक 1508

श्रीश्रीयूत राज
धर माणिक्य दे
ब श्रीसताब
ती महा देव्यो

यह महाराज राजधर की प्रथम मुद्रा है। राजधर माणिक्य के राजत्व के अवसान के काल निर्णय के लिए तत्परवर्ती राजा यशोधर माणिक्य की प्रचारित मुद्रा का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है। तदभिन्न अन्य प्रमाण दुर्लभ हुए है। शेषाक्त महाराज के 1522 शक की मुद्रा आविष्कृत हुई है, तथा यही उसके प्रथम प्रचारित मुद्रा है, ऐसा जाना जाता है। अर्थात 1521 शक में(1599 ई0) में राजधर माणिक्य का राजत्व शेष हुआ था, यह रुप धारण किया जा सकता है। इसके द्वारा महाराज राजधर का राजत्व काल 1508 शक के शेष भाग से 1521 शक तक कुछ हद तक 14 साल निर्णित होता है।

महाराज यशोधर माणिक्य के शासन काल महाराज यशोधर माणिक्य के प्रचारित मुद्रा की सहायता से उनके राजत्व 1522 शक में(1600 ई0) आरम्भ होने का कथा पूर्व ही कहा गया है। उक्त मुद्रा में निम्नलिखित वाक्य समूह मुद्रित है। :–

(सिंह मूर्ति
उपर वंशीधारी
श्रीकृष्ण मूर्ति एवं उनका
दोनों तरफ दो मूर्ति)
शक 1522

श्रीश्रीयुत य
शो माणिक्य दे
व श्रीगौरी ल
क्ष्मी महादेवी

राजमाला के उक्ति के साथ इस मुद्रा लिपि के सामंजस्य की रक्षा नहीं होता है। राजमाला में लिखित है:–

पनर श तेरो शक होइलो जखन।	पन्द्रह सौ तेरह शक हुआ जिस दिन।
राजधर राजपुत्र होइलो राजन।।	राजधर नामक पुत्र राजा हुए उसी क्षण।।
तान पुत्र यशोधर होइलेक राजा।	उनके पुत्र यशोधर फिर हुए राजा।
पात्र मित्र मंत्री बश करे सैन्य प्रजा।।	पात्र मित्र मंत्री वश करे सैन्य प्रजा।।
राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड57 पृ	राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड57 पृ

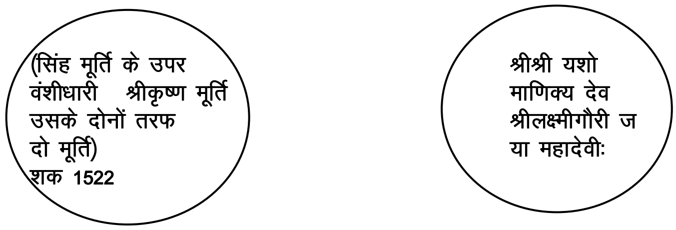
तृतीय लहर – 236

इसके थोड़े बाद ही पुनर्बार लिखा गया है:–

पनेरो श चौब्बीस शके(1) यश राजा होइलो।	पन्द्रहसौ चौबीस(1) शक में राजा हुए यश।
जेनो मत नाम राजा सेई ख्याति होईलो।।	तथा नाम तथा ख्याति फैला दिया यश।।
राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड59 पृ	राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड59 पृ

उद्धृत उभय उक्ति से परस्पर ग्यारह वर्ष का तारतम्य लक्षित होता है। विशेषतः इसका कोई वाक्य भी मुद्रा के प्रमाण के साथ नहीं मिलता। प्रथम वाक्य द्वारा मुद्रा के उत्कीर्ण समय के(1522 शक) के दस साल पूर्व, तथा शेषोक्त वाक्य द्वारा दो साल बाद महाराज के राज्य लाभ का काल निर्धारित होता है। इस प्रकार असंमजस्य के कारण अनुसंधान के लिए प्राचीन राजमाला की आलोचना किया गया है जिसमें 1524 शक में महाराजा के राजत्व आरम्भ होने के बात मिलती है,(1) 1513 शक का उल्लेख नहीं है। अवस्थानुसार से समझा जाता है, 1524 शक ही राजमाला के निर्धारित समय, लिपिकार ने प्रमाद में 1513 शक लिखा हुआ है।

कैलाश बाबू, मिस्टर कमिंग साहब तथा मिस्टर सेन्डिस साहब प्रभृति ने 1613 ई0 से 1623 ई0 अब्द तक महाराजा यशोधर का राजत्व काल निर्देश किया है। 1613 ई0 से 1535 शक था, यह निर्धारण कौन से मूल में किया गया है, जानने के उपाय नहीं है। राजमाला के उक्ति अथवा मुद्रा के प्रमाण किसी के साथ इसके निर्धारण का मेल नहीं है। मुद्रा प्रमाण सकल अवस्था में अकाट्य तथा संशय विवर्ज्जित है। विशेषतः इस प्रकार मतवैषम्य के स्थल में मुद्रा के प्रमाण ही एक मात्र अवलम्बनीय है। इससे पूर्व महाराज यशोधर के 1522 शक के उत्कीर्ण एक मुद्रा का विवरण प्रदान किया गया है। मुद्रा में राजा के नाम के सहित महारानी गौरीलक्ष्मी महादेवी को नामंकित रहा है। राजा के एकाधिक पट महिषि रहने पर राज्याभिषेक काल में प्रत्येक महिषि नामंकित मुद्रा प्रस्तुत के नियम थे। उस नियम के वशवर्ती होकर महाराज यशोधर माणिक्य ने एक ही समय में द्विविध मुद्रा प्रचलन करने का निदर्शन मिलता है। पूर्वलिखित मुद्रा के अलावा और एक मुद्रा लिपि का मर्म निम्न प्रदान किया गया है।



....

(1) प्राचीन राजमाला में यशोमाणिक्य प्रसंग में लिखा है:–

पनर श चौबीस शके त राजा होइलो।	पन्द्रह सौ चौबीस शक में तो राजा हुए।
नाना सुख भोग राजा अशेष करिलो।।	नाना सुख भोग राजा अशेष किये।।

इसके द्वारा जाना जाता है। महाराज यशोधर के गौरीलक्ष्मी तथा जयावती नाम की दो पटमहिषि थी। उक्त उभय मुद्रा के एक समय मुद्रित होने से यही जो महाराजा के राज्याभिषेक काल के मुद्रा है, वह सहज ही समझा जाता है।

उनके जन्म पत्रिका के विवरण द्वारा जाना जाता है कि 1501 शक में महाराज यशोधर का जन्म हुआ।(1) 1522 शक में राज्य लाभ काल में उनका वयः 21 वर्ष था। 1545 शक मे(1623 ई0) उन्होनें मुगल द्वारा राज्यच्युत होकर तीर्थाश्रम अवलम्बन किया। 23 वर्ष काल राज्य भोग के बाद, 44 वर्ष उम्र में महाराज तीर्थ वासी हुए थे। 28 वर्षकाल में तीर्थ क्षेत्र में अवस्थान के बाद 1573 शक मे(1651 ई0) उनका श्री वृन्दावन प्राप्त हुआ इसके द्वारा जाना जाता है कि महाराज राज्य–भ्रष्ट अवस्था में 28 वर्ष जीवित थे तथा 1522 शक(1600 ई0) से 1545 शक(1623 ई0) तक उन्होनें राजत्व किया था।

मुगल शासन काल महाराज यशोधर माणिक्य को पराभूत करके मुगल गण ने 1545 शक के शेष भाग में समग्र राज्य अधिकार किया था। वे ढाई साल काल उश्रृंखल तरीके से शासन दण्ड परिचालन के बाद महामारी के उपद्रव से अतिष्ठ होकर, पार्वत्य प्रदेश परित्याग पूर्वक समभूमि में(मेहेरकुल) में जाकर आश्रय लेने में बाध्य हुए। तद्अवधि समतल क्षेत्र के कुछ अंश स्थायी तरीके से मुगल गण के हस्त में रह गये, पार्वत्य प्रदेश पुनर्बार राजवंश के हस्तगत हुए। 1545 शक के(1623 ई0) शेष भाग से 1547 शक(1625 ई0) तक राज्य के समस्त भाग मुगल शक्ति के शासनसधीन थे।

महाराज कल्याणमाणिक्य का शासन काल महाराज यशोधर माणिक्य के अभिप्राय के अनुसार, सेनापति कल्याण देव त्रिपुर सिंहासन के अधिकारी होने पर भी, मुगल वाहिनी को भगा करके, राज्य में पुर्नाधिकार स्थापना की कोशिश में, उनको ढाई वर्ष काल तक रुकना पडा। देवानुकूल के कारण मुगल गण उदयपुर परित्याग करने से इस अवसर महाराज कल्याण राज्य अधिकार कर बैठे, परन्तु समभूमि के जो अंश लेकर मुसलमान गण मेहेरकुल में उपनिष्ट हुए थे, उस अंश को पुनर्उद्धार करने में समर्थ नहीं हुए।

मुगल गण के उदयपुर परित्याग के बाद, उनके अत्याचार से पलायित नगरवासी गण पुनर्बार अपने अपने आवास में आकर अवस्थित हुए परन्तु राजाहीन राज्य में वास करना निरापद नहीं देखकर, वे राजा निर्वाचन के निमित्त व्यग्र हो उठे। यशोधर माणिक्य राज्य में प्रत्यावर्तन नहीं करेगें, यह सभी

---

(1) अमर माणिक्य खण्ड – 18 पृष्ठ दृष्टब्य।

जानते थे।(1) इसलिए ही कल्याण देव को राजत्व प्रदान के निमित्त महाराज यशोधर ने अभिमत प्रदान किया था। प्रधान व्यक्ति वर्ग तथा प्रकृति पुंज ने वही मान लिया। 1548 शक के शेष भाग में सबने मिलकर कल्याण देव का राज्याभिषेक किया। तत्काल में जो मुद्रा प्रचलित हुआ था, उसका एक मात्र हम लोगों का दृष्टिगोचर हुआ है। उक्त मुद्रा में निम्नलिखित वाक्य उत्कीर्ण हुआ है।

(शिव लिंग तथा सिंह मूर्ति) शक 1548	श्रीश्रीयू त कल्या ण देवः

इस मुद्रा में महारानी का नाम संयोजित नहीं हुआ है। प्रचलित पद्धति का इस रुप से उल्लंघन करने के कारण वर्तमान काल में निर्धारण करने के उपाय नहीं है। इस मुद्रा में सिंह के उपरी भाग में एक शिवलिंग अंकित किया गया है। इस रुप अंकन का निदर्शन राजमाला में भी मिलता है।(1) किसी किसी राजा के मुद्रा में सिंह के उपरी भाग में एक त्रिशूल चिन्ह अंकित हुआ है। यह शैव धर्म के प्रति श्रद्धा प्रदर्शन के परिचायक है। त्रिपुरेश्वर गण पूर्व में जो शैव थे, इसके द्वारा उनका ही निदर्शन मिलता जा रहा है।

राजमाला में, महाराज कल्याण के राज्य लाभ के समय मुद्रा के प्रमाण की अपेक्षा एक वर्ष अग्रवर्ती देखा जा रहा है। हमारे सम्पाद्य ग्रन्थ में लिखित है:–

पनरे सो सातचाल्लिस शके राजा होइलो।	पन्द्रह सौ सैंतालीस शक हुए वे राजा।
शुभ दिने महाराजा मोहर मारिलो।।	शुभ दिन देख महाराजा ने मोहर छापा।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड66 पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड66 पृ

प्राचीन राजमाला के साथ इस वाक्य का कोइ मेल नही है। उक्त ग्रन्थ में मिलता है:–

पनर श पाच्चलीस शके राजा होइलो।	पन्द्रह सौ पैंतालीस शक में राजा हुए।
शुभ दिने महाराजा मोहर मारिलो।।	शुभ दिन देख महाराजा ने मोहर छापा।।

---

(1)

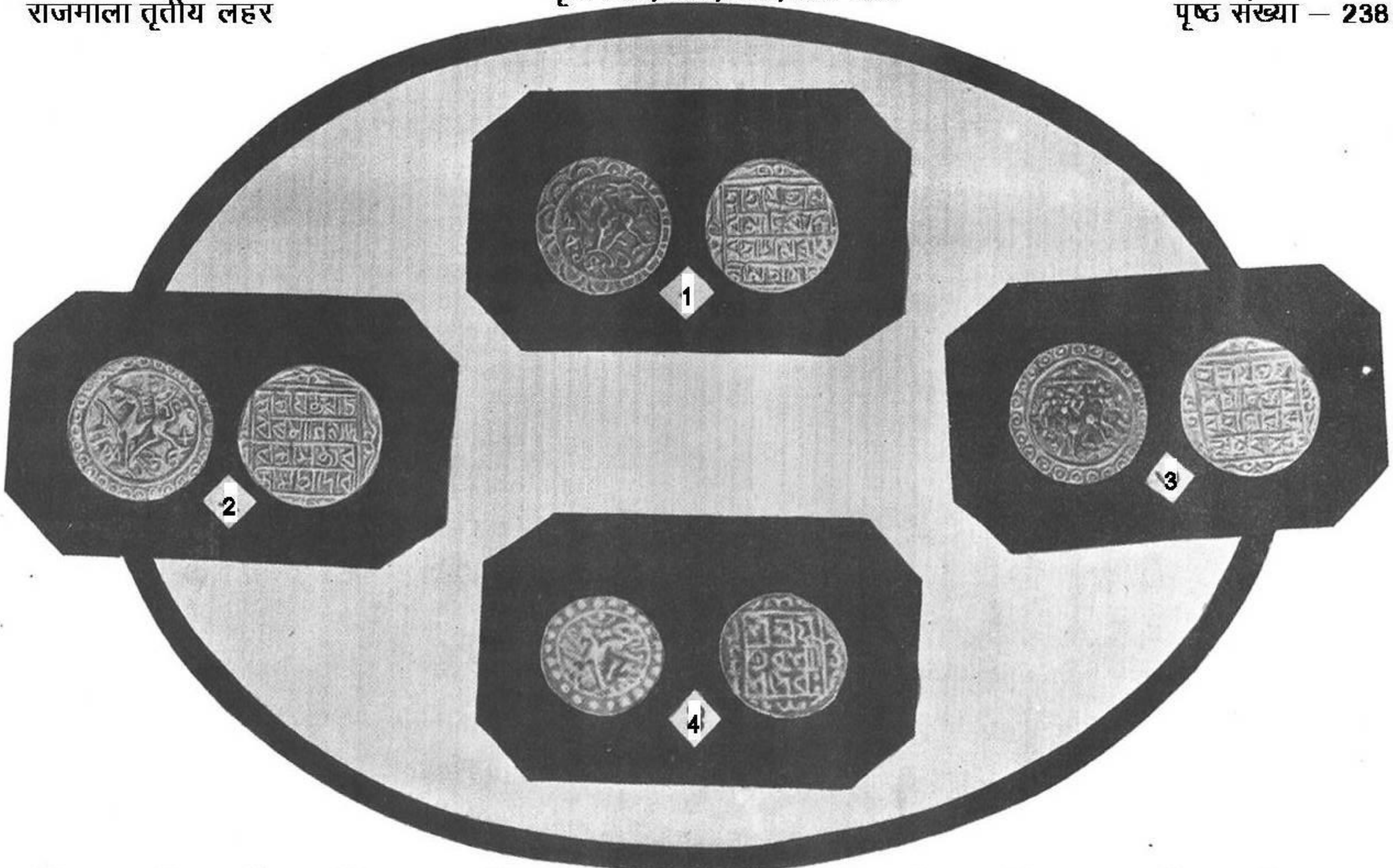
यश माणिक्य राजा मथुरा गमन।	यश माणिक्य राजा का मथुरा गमन।
राज्ये नाहि आसिबेक जानिलो तखन।।	नहीं आयेगें अपने राज खबर मिली तक्षण।।
राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड65 पृ	राजमाला तृल यशोधर माणिक्य खण्ड65 पृ

(2)

पनरे सो सातचाल्लिस शके राजा होइलो।	पन्द्रह सौ सैंतालीस शक हुए वे राजा।
शुभ दिने महाराजा मोहर मारिलो।।	शुभ दिन देख महाराजा ने मोहर छापा।।
शिव लिंग लिखिलेक मोहर पृष्ठेते।	शिवलिंग लिखा मोहर के पीठ में।
आर पृष्ठे निज नाम राजार ए हाते।।	दूसरी ओर से स्वनाम अंकित किया पृष्ठ में।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड66 पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड66 पृ

तृतीय लहर – 238
चित्र तृतीय लहर–238

पृष्ठ 232, 235, 236, 238 देखें



(1) अमरमाणिक्य की मुद्रा (2) राजधरमाणिक्य की मुद्रा (3) यशोधरमाणिक्य की मुद्रा (4) कल्याणमाणिक्य की मुद्रा
1499 शक 1508 शक 1522 शक 1548 शक

तृतीय लहर – 239

अन्यत्र मिलता है,

पनर शत पाच्चलीस शके राजा होइलो।	पन्द्रह सौ पैंतालीस शक में राजा हुए।
तद्वधि नाना सुखे राज्य भोग कोइलो।।	तद्वधि नाना सुख में राजा भोग किये।।
प्राचीन राजमाला	प्राचीन राजमाला

राजा बाबू के घर में रक्षित पुथि के वाक्य प्राचीन राजमाला की उक्ति के अनुरुप है। दोनों स्थान में महाराज कल्याण 1545 शक में राज्य लाभ करने की बात लिखित है। हम लोगों के सम्पाद्य राजमाला के सहित अनान्य ग्रन्थ के इस प्रकार असांमजस्य के विषय में आलोचना करने से स्पष्ट ही समझा जाता है, प्राचीन राजमाला तथा राजा बाबू घर के ग्रन्थ में महाराज यशोधर माणिक्य के राजत्व का अवसान काल(1545 शक) से, महाराज कल्याण के राजत्व काल की गणना किया गया है, तथा मुगल शासन काल उक्त राजा के राजत्व के मध्य पडकर राज्य लाभ के समय निर्देश किया गया है और हम लोगों के सम्पादय ग्रन्थ में मुसलमान शासन काल छोड़कर 1547 शक में राज्य लाभ के समय निर्धारण किया गया है। मुद्रा के प्रमाण के सहित शेषोक्त निर्धारण में जो एक वर्ष का अन्तर परिलक्षित होता है, वह हिसाब में गड़बड़ होगा।

कैलाश बाबू के मत में 1035 त्रिपुराब्द में, कमिंग तथा सेन्डिस साहब के मत में 1625 ई0 में कल्याणमाणिक्य का राजत्व आरम्भ हुआ है। 1035 त्रिपुराब्द, 1625 ई0 तथा 1507 शकाब्द अभिन्न है। यह हमारे सम्पादय राजमाला के निर्धारित समय को ग्रहण किया है। मुद्रा के प्रमाण द्वारा 1548 शक में महाराज कल्याण ने राज्य लाभ किया, ऐसा जाना जाता है। समग्र अवस्था आलोचना करने पर 1548 शक में(1036 त्रि) कल्याणमाणिक्य राजा हुए थे। यह निर्धारण करना ही संगत लगता है। यह 1625 ई0 के शेष में हुआ था। राजमाला द्वितीय लहर के 100वें पृष्ठ में महाराज कल्याणमाणिक्य के राजत्व 1547 शक में आरम्भ होने के विषय में लिखा गया है। तत्काल में इस राजा के मुद्रा हम लोगों के दृष्टिगोचर न होने से राजमाला के वाक्य के प्रति निर्भर करना पडा, तद् कारण मुद्रा की सहायता से निर्धारित समय के सहित एक वर्ष का अन्तर गठित हुआ है।

1582 शक में(1070 त्रि, 1660 ई0) कल्याणमाणिक्य के राजत्व का अवसान तथा महाराज गोविन्द माणिक्य का राजत्व हुआ था। राजमाला में मिलता हैः–

पनेरो श बिरासी शक ज्यैष्ठ मास शेषे।	पन्द्रह सौ बयासी शक ज्यैष्ठ का मास।
मासेर सप्तम दिन थाके अबकाशे।।	माह का सप्तम दिन रहा अवशेष।।
मंगल बासर तिथि कृष्णा नबमीते।	मंगल बासर तिथि कृष्णा नवमी।
तीन दण्ड रात्रि गते राज स्वर्ग ताते।।	तीन दण्ड रात्रि गते गये स्वर्ग छोड़ भूमि।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड76 पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड76 पृ

तृतीय लहर – 240

इसके द्वारा मिलता है कि 1582 शक के जेठ महीने के शेष भाग में महाराज बैकुण्ठ को प्राप्त हुए। राजमाला के मतानुसार महाराज ने 80 वर्ष में लीला संवरण किया। उन्होने 1502 शक के भाद्र महीने में जन्म ग्रहण किया था।(1) 1582 शक में गोलोक–गत हुए थे। अर्थात स्वाभाविक उनकी आयु 80 साल ही होगी।

महाराज के राजत्व काल निर्धारण के पक्ष में राजमालाकार भ्रम में गिर पडे थे। उनके मतानुसार महाराज कल्याण के राजत्व काल 37 वर्ष है।(2) श्रेणीमाला ग्रन्थ में भी यही मत गृहीत हुआ है। यथा :–

कल्याणमाणिक्य राजा बहु पुण्यतर।	कल्याणमाणिक्य राजा बहुत पुण्यतर।
राजत्व कोरिला तिनि सात्रीस वत्सर।।	राजत्व करके हुए सैंतीस साल।।
श्रेणीमाला	श्रेणीमाला

कैलाश बाबू के मतानुसार 1035 त्रिपुराब्द से 1069 त्रिपुराब्द तक 34 वर्ष, मिस्टर ई. एफ. सन्डिस (E.F. Sandys) तथा मिस्टर कमिंग (J.G. Cumming) साहब के मत में 1625 से 1659 ई0 तक 34 वर्ष महाराज कल्याणमाणिक्य ने राजत्व किया था। उपरोक्त व्यक्तिगणों ने कैलाश बाबू के वाक्य का अनुसरण किया था। यही समझा जाता है।

पूर्व ही निर्धारित हुआ है, कल्याणमाणिक्य के राजत्व 1548 शक के(1625 ई0) से आरम्भ तथा 1582 शक के(1560 ई0) शेष हुआ है। इसके द्वारा उनके राजत्व के स्थायित्व 34 वर्ष निर्णित होता है। राजमालाकार ने 3 वर्ष बढ़ा करके 37 साल निर्धारण किया है। कैलाश बाबू आदि परवर्ती संग्राहकगणों ने, महाराज का राजत्व काल जो 34 वर्ष अवधारण किया है, हमारे हिसाब के सहित उक्त अवधारणा की एकता परिलक्षित होती है। इस रुप अवस्था में, महाराज कल्याणमाणिक्य के राजत्व काल की मुद्रा की सहायता से ग्रहण कर जो रुप निर्धारण किया गया है(1548–1582 शक), वह प्रमाण है, ऐसा ग्रहण करने से कोइ बाधा नहीं होती है।

कल्याणमाणिक्य के तृतीय लहर के अन्तर्गत शेष राजा अमर माणिक्य से कल्याणमाणिक्य तक पाँच जन राजा के विवरण को लेकर यह लहर रचित हुआ है।

....

(1)

पनेर श दुई शक भाद्र मास ताते।	पन्द्रह सौ दो शक भादों में आकर।
कल्याण देवेर जन्म कैलागड़ ताते।।	कल्याण देव का जन्म हुआ कैलागढ़ जाकर।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड19 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड19 पृ

(2)

आशी वत्सर राजार बयक्रम छिलो।	अस्सी वर्ष थी राजा की उम्र।
सात्रिश बत्सर नृप राजत्व कोरिलो।।	नृप ने राजत्व किया सैतीस एक क्रम।।
राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड78 पृ	राजमाला तृल कल्याणमाणिक्य खण्ड78 पृ

तृतीय लहर – 241

राजाओं के शासन काल की सूची पूर्वोक्त आलोचना द्वारा इन समस्त राजा के राजत्व काल जिस रुप से निर्धारित हुआ है, उनका संक्षिप्त तालिका निम्न प्रदान किया जा रहा है।

नाम	शकाब्द	त्रिपुराब्द	ईसवी
अमर माणिक्य....	1499–1508	987–996	1577–1586
राजधर माणिक्य....	1508–1521	996–1009	1586–1599
यशोधर माणिक्य....	1522–1545	1010–1033	1600–1623
मुगल शासन....	1545–1547	1033–1035	1623–1625
कल्याणमाणिक्य....	1548–1582	1036–1070	1625–1660

उजीर भवन में रक्षित तालिका में तृतीय लहर के अन्तर्निविष्ट राजगण के जो राज्य काल निर्देश किया गया है, वह प्रमाद पूर्ण अर्थात इस तालिका में अवलम्बन की सुविधा नही हुई है। 'त्रिपुर वंशावली' पुस्तिका में इनके संसृष्ट अंश के पत्र विनिष्ट होने से, हम लोगों को तत् सहायता के लाभ से वंचित होना हुआ है।

———

फुल कुमारी

राजमाला के तृतीय लहर में अमर माणिक्य खण्ड में लिखित है:–

फुलकोयड़ी छडा नाम ताहार निकट।	फुल कोयड़ी एक सोता था वहाँ।
तारतीरे दुई बृक्ष आछिलेक बट।।	दो बट वृक्ष तट पर खडे थे जहाँ।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड22 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड22 पृ

जगहों के फुल कुमारी नामोत्पत्ति के कारणों का अनुसंधान 'फुल कुमारी' शब्दों को इस स्थल में 'फुल कोयडि' किया गया है। 1302 त्रिपुराब्द के फागुन महीने में उस समय के सहकारी राजस्व सचिव स्वर्गीय किशोरीमोहन ठाकुर महोदय के सहयात्री होकर सरकारी कार्य उपलक्ष्य में प्रथम उदयपुर दर्शन का सुयोग लाभ किया था। तत्काल में नगरी के चतुर्दिक गंभीर जंगलाकीर्ण रहने पर आस पास के प्राचीन कीर्ति सब सम्यक रुप से नहीं दिखाई पडा। परन्तु उस यात्रा से फुल कुमारी मौजा, फुल कुमारी घाट, फुल कुमारी छडा, फुल कुमारी कुन्ज आदि नाम श्रवण करके, "फुल कुमारी" नामोत्पत्ति के कारण अनुसंधान के लिए कौतूहलाविष्ट हुए थे। बहुत जन को जिज्ञासावाद के बाद जाना गया कि खिलपाडा ग्राम में अति वृद्ध एक मुसलमान वास करते थे। वे उदयपुर के अनेक पुरातन घटना के सम्वाद से अवगत थे, सम्भवतया उनको पूछने पर इस विषय पर तथ्य जाना जा सकता है। किन्तु वे शय्यारुढ़ थे।

तृतीय लहर – 242

राजस्व सचिव महोदय के अभिप्रायनुसार अनेक कोशिश के बाद, पाल्की द्वारा वृद्ध को हम लोगों की अवस्थिति स्थान में लाया गया। उनका नाम मौहम्मद हाछिम, तत्काल उनकी उम्र एक सौ वर्ष के आस पास था, वे शताधिक वर्ष जीवित रहकर मानव लीला संवरण किये है। इनके पूर्व पुरुष लाहौर देश से समागत है ऐसा कहना है, समाज में इस वंश को यथेष्ट सम्मान है। इस वृद्ध ने उदयपुर की अनेक प्राचीन कहानी बतायी, इस सुयोग में हमने कथा लिख रखा था, राजमाला सम्पादन कार्य में वह प्रयोजन में लग रहा है।

राज कन्या का नाम फुलकुमारी, फुल कुमारी के पति का कार्य

'फुल कुमारी' शब्द उद्‌भव के किसी विवरण पर बोलने के निमित्त वृद्ध को अनुरोध किया गया। वे कुछ काल विश्राम के बाद बोले, ''इस सम्बन्ध में एक किम्वदन्ती हमारे पिता के निकट सुना था, वही कहते है।'' इस भूमिका के बाद वृद्ध ने जो कहा था, वह निम्न प्रदान किया जा रहा है।

फुल कुमारी नाम की एक राज कन्या थी। उदयपुर नगरी के उपकन्ठ स्थित वर्तमान फुल कुमारी मौजा में उसका घर था। एकदा महाराज ने(उक्त कुमारी के पिता) कुमारी के वास भवन के पास के स्थान में एक दीघी खनन कार्य आरम्भ किया। खनित मिट्‌टी कुमारी के घर के सीमान्तवर्ती स्थान में डाला जा रहा था। राज जामाता अतिशय उग्र प्रकृति के लोग थे, उनके घर के उपर मृत्तिका को फेंकते देखकर क्रोध से अधीर हो उठे, खननकारी लोगों को उस स्थान में मृत्तिका फेंकने से बारम्बार मना करने लगें, अर्थात वे काम स्थगित रखने में बाध्य हुए। यह सन्देश राजा को गोचर होने पर मिला, उन्होने अपने दामाद के व्यवहार से क्रोधित होकर आदेश किया–''जिस स्थान में मिट्‌टी फेंका गया है, उस स्थान में ही फेंका जायेगा। उस विषय में किसी की आपत्ति नहीं सुना जायेगा।'' राजाज्ञा श्रवण करके तथा मृत्तिका खननकारी लोगों को पुनर्बार कार्य में प्रवृत्त होता देखकर, राज दामाद के क्रोध की मात्रा ने अतिशय वृद्धि पायी, जहाँ मिट्‌टी फेंका जाता है, वे उस स्थान में जाकर ही बैठ जा रहे थे, तथा कह रहे थे– ''यदि यहाँ मिट्‌टी फेंकना ही राजा का अभिप्रेत हो सकता है, तब हमारे माथे के उपर मिट्‌टी फेंकों, हम किसी हालत में भी यह स्थान त्याग नहीं कर सकते है''। काम फिर बन्द हो गया, राजदरबार में संदेश गया। दामाद के अबाध्यता दर्शन से महाराज ने कोपाविष्ट होकर आदेश किया, – ''दामाद को हट जाने के निमित्त विशेष करके कहा जाय, – तदानुसार से स्थान त्याग न करने पर, उसके उपर मृत्तिका फेंकना पडेगा।'' दामाद भी छोड़ने के पात्र नहीं थे, इस प्रकार आदेश से अवगत होने भी उन्होने अपना संकल्प त्याग नहीं किया, पूर्ववत् उपविष्ट रहकर मृत्तिका के दबाव में नर–लीला त्याग दिया।

इस दुर्घटना के कारण सद्यशोकसन्तप्ता, रोती हुई राज कन्या पिता के निकट उपस्थित होकर खेद करने लगी, तथा बोली–''मेरी समस्त सुख शान्ति

जीवन भर के लिए निर्मूल हुई। मैं निःसन्तान, अर्थात मृत्यु के साथ साथ ही मेरा नाम तक विलुप्त होगा, यही अधिकतर दुःख की कहानी है।''

कन्या के दुर्गति दर्शन से पिता के ह्रदय में दया का संचार हुआ, अपने विचारहीन निमित्त से विशेष अनुतप्त होकर कुमारी को प्रबोध वाक्य बोले– ''तुम्हारे स्वामी के अबाध्यता तथा अवज्ञा प्रदर्शन के फल से यह दुर्घटना घटित हुआ, इसलिए तुम दुखी मत हो, तुम्हारा नाम जिससे चिरस्मरणीय हो, मैं इसकी व्यवस्था करता हूँ।''

फुल कुमारी का परिणाम

पतिहन्ता पिता के वाक्य से राज कन्या प्रबुद्धा नहीं हो पायी और अपने भवन के पास गोमती नदी में निमज्जित होकर जीवन विसर्जन किया। इस घटना से राजा अत्यन्त दुखी तथा अपने निष्ठुर व्यवहार के लिए इतना अनर्थ घटित हुआ देखकर पश्चाताप से दग्ध होने लगे। वे कन्या का नाम स्मरणीय करने के अभिप्राय से कन्या के वास स्थान का नाम फुल कुमारी मौजा, उसके जीवन विसर्जन घाट का नाम फुल कुमारी घाट, उसके पास ही एक छडा का नाम फुल कुमारी छडा तथा एक पहाड में अवस्थित कुन्ज बन को फुल कुमारी कुन्ज नाम प्रदान किया। उस अवधि से ये सब नाम अक्षुण्ण रहकर कुमारी की स्मृति वहन करते आये थे।

वदर मुकाम के एक अन्य वृद्ध व खादिम ने भी इस किम्वदन्ती का समर्थन किया था। फुल कुमारी कौन से राजा की कन्या थी, पूर्वोक्त वृद्ध या खादिम वह नहीं कह पाये। किम्वदन्ती काल परम्परा रंजित हो सकते है, परन्तु भित्तिहीन नहीं। त्रिपुरा में प्रचलित अनेक किम्वदन्ती का इतिहास से घनिष्ट सम्बन्ध प्रमाणित होता है। स्थल में भी गाँव नदी घाट, पार्वत्य झरना आदि ''फुल कुमारी'' नामकरण द्वारा उस नाम से एक राजकुमारी रहने का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। वे कौन राजा की कन्या थी? अन्वेषण द्वारा उनका निर्धारण किया जा सकता है। पूर्वोक्त आख्यायिका में मिलता है कि राजकुमारी के घर के पास के स्थान में सरोवर खनित हुआ था तथा उनके वास स्थान सह एक भूखण्ड को ''फुल कुमारी'' गाँव नाम दिया गया था, वह नाम आज भी अक्षुण्ण रहा है। स्थानीय अनुसंधान से जाना जाता है, एक मात्र धन्यसागर या धनीसागर को छोड़कर, फुल कुमारी मौजा में अन्य कोई उल्लेख योग्य जलाशय नहीं है, वहाँ महाराजा धन्य माणिक्य के खनित सागर थे। पूर्वोक्त किम्वदन्ती पर अविश्वास न करने से यह सरोवर खननोपलक्ष्य में आख्यायिका वर्णित घटना हुआ था, तथा फुल कुमारी महाराजा धन्य माणिक्य के दुहिता(पुत्री) थी, यह रुप निर्णय किया जा सकता है। इस विषय में इसके अतिरिक्त कोई बात कहने के उपाय नहीं है।

महाराज धन्य माणिक्य की तरह सर्वगुण सम्पन्न राजा इस प्रकार निष्ठुर व्यवहार में लिप्त हुए थे। यह बात पर सहसा विश्वास नहीं कर सकते है। परन्तु राज चरित्र

नितान्त ही अविश्वासित होता है, रुप कब कैसे धारण करते है, समझ पाना सहज साध्य नहीं है, नीति शास्त्र यही कहते हैं। धन्य माणिक्य की तरह प्रतिभाशाली राजा भी, क्रोध में वशीभूत होकर, क्षण काल के निमित्त विचलित होना विचित्र नहीं।

हस्ती–विज्ञान
(द्वितीय अंश)

राजमाला के द्वितीय लहर के(215–229 पृष्ठ) में हस्ती विज्ञान सम्बन्धी जिन सब बातों को कहा गया है, उसके अलावा अनेक कथा कहने को है। इस स्थल में संक्षिप्त तरीके से उसकी आलोचना करना होगा।

हस्ती के लक्षण प्राचीन मतानुसार हस्ती के लक्षण सम्बन्धीय आलोचना पूर्व ही किया गया है। तत्काल यह कहा गया था, ''प्रादेशिक नियमानुसार हस्ती के मस्तक, कर्ण, चक्षु, शुण्ड, दन्त, नाखून तथा पूँछ आदि के लक्षणानुसार हाथी शुभ या अशुभ, यह निर्णय किया जाता है'' समस्त जगह इस प्रादेशिक जानकारी सम्बन्ध में थोड़ा सा आलोचना करना होगा, यह हस्ती विषयक जानकारी त्रिपुरा अंचल के निर्धारित नियमावलम्बन से संगृहीत हुआ है।

मस्तक

जिस हस्ती(विशेषतः गुण्डा) देह की तुलना में मस्तक अपेक्षाकृत बृहत तथा गमन काल में मस्तक उँचा करके चलते हो, वहीं सुलक्षण युक्त हस्ती है। यह ही सुदृश्य होता है। देह के तुलना में मस्तक छोटा हो तो यह हस्ती की दुर्बलता के लक्षण होते है। यह देखने में खराब भी माना जाता है।

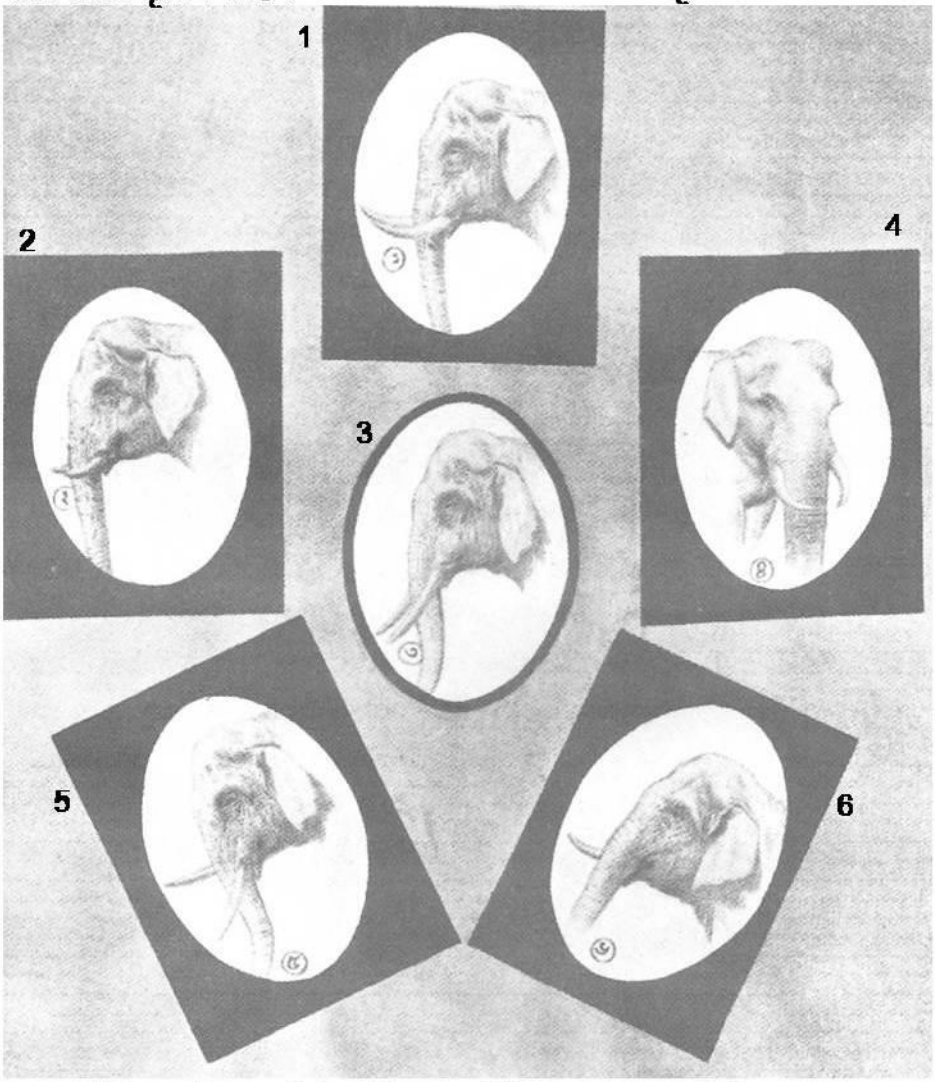
तालु या टाकरा

हस्ती के तालू या टाकरा को साधारणतः चार श्रेणी में विभक्त किया जाता है, यथा– गोलाप तालू, छिटका हुआ तालू, सिया तालू, तथा कृष्ण तालू। जिस हस्ती के तालू श्वेताभ या गुलाबी हो तथा अन्य तरह के दाग विवर्जित हो, उसको गोलाप(गुलाबी) तालू कहा जाता है। गोलाप तालू विशिष्ट हस्ती सुलक्षण युक्त तथा प्रभु के कल्याणदायक है। जो तालू श्वेताभ या गुलाबी आभायुक्त वर्ण के उपर काला छिटका(बिन्दु बिन्दु चिन्ह) विशिष्ट, उसका छिटका हुआ तालू कहा जाता है। छिटका तालू के हस्ती मध्यम(उत्कृष्ट या नितान्त अपकृष्ट नहीं) लक्षणाक्रान्त है, ऐसा ही कहना परिगण है। कृष्ण वर्ण तालू में सफेद छिटका रहने पर उसे सिया तालू कहते है। सीया तालू विशिष्ट हस्ती दुष्ट तथा प्रभु के अनिष्ट कारी होते है।

तृतीय लहर – 245

चित्र तृतीय लहर–245

राजमाला तृतीय लहर **पृष्ठ संख्या – 245**



(1) पालं दन्त (2) मगी दन्त (3) पाताल दन्त (4) शूकर दन्त
(5) स्वर्ग–पाताल दन्त (6) एक दन्त(गणेश दन्त)

जो तालू निविड कृष्णवर्ण हो, उसको कृष्ण तालू कहा जाता है। कृष्ण तालू युक्त हस्ती सर्वापेक्षा कुलक्षणाविष्ट, तथा प्रभु के अशेष अशुभकारी होते है।

चक्षु

हस्ती चक्षु सफेद आभाविशिष्ट होने से उसको 'करंजा चक्षु' कहा जाता है। इस प्रकार के चक्षु मन्द लक्षणक्रान्त के बीच परिगणित है। तद्‌भिन्न अन्य वर्ण विशिष्ट चक्षु अच्छे लक्षण युक्त ऐसा प्रतीत ही कहा जाता है। जिस हस्ती की दृष्टि सरल, वह सुलक्षण युक्त है। तीर्यक दृष्टि, तल चक्षु(निम्न दृष्टि) धूर्णायमान दृष्टि विशिष्ट हस्ती दुष्ट तथा विश्वास के अयोग्य है।

दान्त

हस्ती के दाँत साधारणतः छः भाग में विभक्त है:– पालंग दाँत, मगी दाँत, सुअर दाँत, पाताल दाँत, स्वर्ग–पाताल दाँत तथा गणेश दाँत।

हस्ती के दोनों दाँत समान, कुर्सी के हथला(हाथ) की तरह समान टेढी विशिष्ट तथा दीर्घ होने पर उसे पालंग दाँत कहते हैं। इस श्रेणी के दन्त हस्ती के सुलक्षण में परिगणित तथा सुदृश्य होता है। पालंग दाँत के अनुरुप समान रुप से टेढ़े विशिष्ट छोटे दाँत को मगी दाँत कहा जाता है, इस रुप दन्त विशिष्ट हस्ती मध्यम श्रेणी में परिगणित रहते है, यह दृश्यतः कुत्सित नहीं होते। जो दन्त परस्पर सामने की तरफ टेढ़े होते है, वह सुअर दाँत नाम से अभिहित होते है। इस प्रकार दन्त युक्त हस्ती सुदृश्य न भी हो फिर भी लक्षण सम्बन्ध में मध्यम श्रेणी में परिगणित होते है। जो दाँत नीचे की तरफ सीधे उतरते है, उसे पाताल दाँत एक नीचे तथा एक उँचा होकर तिरछे तरह से दाँत बाहर होने से उसको स्वर्ग पाताल दाँत कहते है। शेष उक्त दो श्रेणी के दन्त विशिष्ट हस्ती कुलक्षणक्रान्त तथा देखने में कुत्सित होते है। एक दन्त विशिष्ट हस्ती को 'गणेश' कहा जाता है। इस प्रकार हस्ती शुभ दायक, दन्त बाँये तरफ रहने पर अधिकतर सुलक्षण कहकर गण्य किया जाता है।

दन्त के वर्ण संबन्ध में विचार हुआ है। साधारणतः विशुद्ध श्वेतवर्ण दन्त सुलक्षणा विशिष्ट एवं लाल आभायुक्त दान्त कुलक्षण विशिष्ट माना जाता है। मोटे दन्त विशिष्ट हस्ती शक्तिशाली होते है।

गज दन्त प्रसिद्ध बिकने वाली वस्तु है। बनिकगण दाँत के भिन्न भिन्न अंश के विभिन्न नाम से परिचित होते है। इसके अग्र भागस्थ निरेट अंश 'आकाशांश' मध्य भाग के खोखले अंश "चुडिदार" तथा पीछे का पतला अंश 'पहचानने' के नाम से अभिहित होता है। दन्त के अग्र भाग ही अधिक मूल्यवान तथा समाधिक कार्य उपयोगी है।

भारतवर्ष में सुप्राचीन काल से गज दन्त का व्यवहार चला आ रहा है तथा तद् द्वारा विविध निपुण कार्य खचित वस्तु निर्मित होता रहता है। अनेक शास्त्र ग्रन्थ में उसके उल्लेख मिलते है।

भारतवर्ष के नाना प्रदेश तथा ब्रह्म देश में गज दन्त के द्वारा जिन समस्त निपुण कार्य खचित वस्तु निर्मित होते है, वह समस्त देश में तथा समस्त समाज में आदरणीय होते है। प्राचीन शिल्पीगण दन्त के परिसर को घटाने तथा वृद्धि करने के उपाय जानते थे, वर्तमान काल में वह कौशल किसी को पता नहीं है। थिओफिलोस नामक किसी प्राचीन पंडित के मतानुसार गज दन्त को क्षार, लवण, गन्धक द्रावक (Sulphuric Acid) तथा सिरका में (Vinegar) भिगोकर रखने पर वह मोम की तरह नरम होता है, तब उसका आयतन घटना वृद्धि या इच्छानुरुप आकार विशिष्ट करना सहज होता है। तथापि उसको केवल सिरका में भिगोने से पुनर्बार कठिन/कठोर हो जाता है। इस प्रक्रिया की परीक्षा हुई है कि नहीं अवगत नहीं। रासायनिक क्रिया अद्भुत रहस्यपूर्ण है, किस उपाय में वस्तु की कौन सी अवस्था घटित है, तथा निर्णय करना कठिन है। सुदृढ गज दन्त भेक के श्वास से जिस रुप घिसता है, वह दर्शन करने पर सभी विस्मयाविष्ट होना पडेगा।

त्रिपुरा के गजदन्त द्वारा नक्काशी कार्य खचित नाना प्रकार व्यवहार योग्य तथा प्रयोजनीय वस्तु निर्मित होते है। त्रिपुरा के राज सिंहासन गज दन्त खचित/निर्मित है। निरेट दन्त द्वारा बैठने के लिए आसन(कुर्सी) प्रस्तुत होता है। हस्ती दन्त के सूक्ष्म बेति द्वारा चटाई बनाया जाता है। शतरंज खेल की गोटियाँ हस्ती दाँत से निर्मित हो रहे है। हर प्रकार के खिलौने प्रतिकृति इत्यादि नाना प्रकार के सुन्दर सुन्दर वस्तु प्राचीन काल से गज दन्त द्वारा निर्मित होती आ रही है।

पृष्ठ

हस्ती पृष्ठ देश के दाँडा(मेरुदण्ड) अल्प टेडा तथा पृष्ठ देश प्रशस्त होने पर उसको ''छम्बल पीठ'' कहते है। इस प्रकार के पृष्ठ विशिष्ट हस्ती सुदृश्य तथा उसके पृष्ठ पर आरोहण करना आरामदायक है। इस श्रेणी के हस्ती उत्तम तथा सुलक्षण क्रान्त कहना विशेष आदरणीय है।

पृष्ठ के दाँडा धनुष के समान टेढा तथा पीठ अप्रशस्त होने पर उसको 'छत्र खूम' पीठ कहा जाता है। इस प्रकार पृष्ठ विशिष्ट हस्ती दृश्यतः कुत्सित तथा मन्द लक्षणक्रान्त के मध्य परिगणित है। इसके पृष्ठ में आरोहण आरामदायक नहीं है। सीधा मेरुदण्ड, हस्ती के दुर्बलता का चिन्ह है।

उदर

हस्ती के उदर के दो तरफ दाँडा(मेरुदण्ड) की तरह दो माँस पिण्ड आगे के पैर के होते हुए पश्चात भाग से पीछे के पैर के सम्मुख भाग तक लम्बमान अवस्था में रहते है, इसको ''बात्ति'' कहा जाता है। इस प्रकार दो बात्ति विशिष्ट हस्ती सुलक्षण युक्त तथा प्रभु के मंगलकारी है।

किसी किसी हस्ती के पूर्वोक्त रुप उदर के दोनों तरफ दो बात्ति न होकर, उदर के मध्य भाग में लम्बमान अवस्था में एक मात्र बात्ति रहता है। एक बात्ति युक्त हस्ती

तृतीय लहर – 246

चित्र तृतीय लहर–246(1)



गजदन्त शिल्प के उदाहरण

(1) गजदन्त निर्मित पुतली (2) गजदन्त निर्मित कुर्सी

(3) गजदन्त बेंत से बना प्रमाण पट्टी (4) गजदन्त से बनी मूर्ती

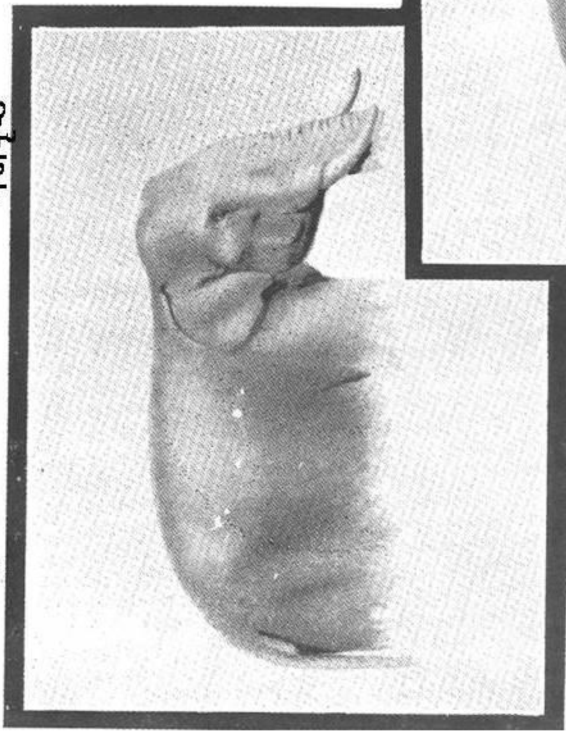
(5) गजदन्त से बना घोड़ा व सवार मुर्ती (6) गजदन्त से बना नरकंकाल

तृतीय लहर – 246

चित्र तृतीय लहर–246(2)

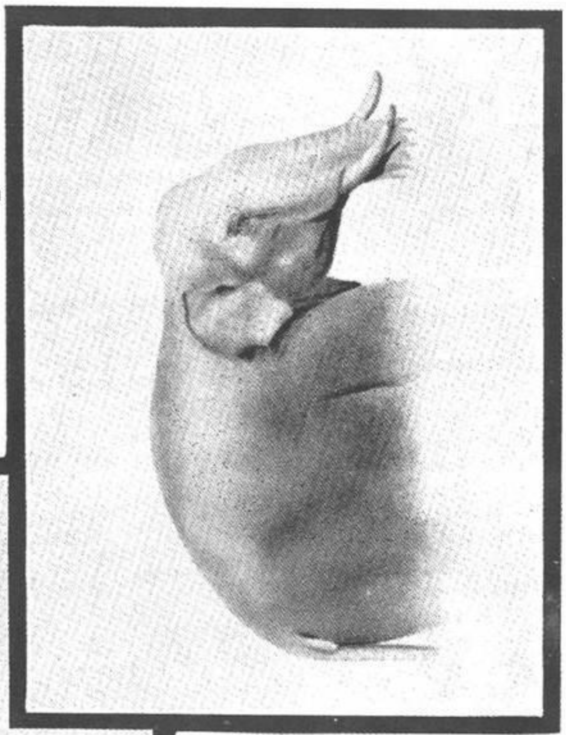
पृष्ठ संख्या — 246

राजमाला तृतीय लहर



गजपृष्ठ

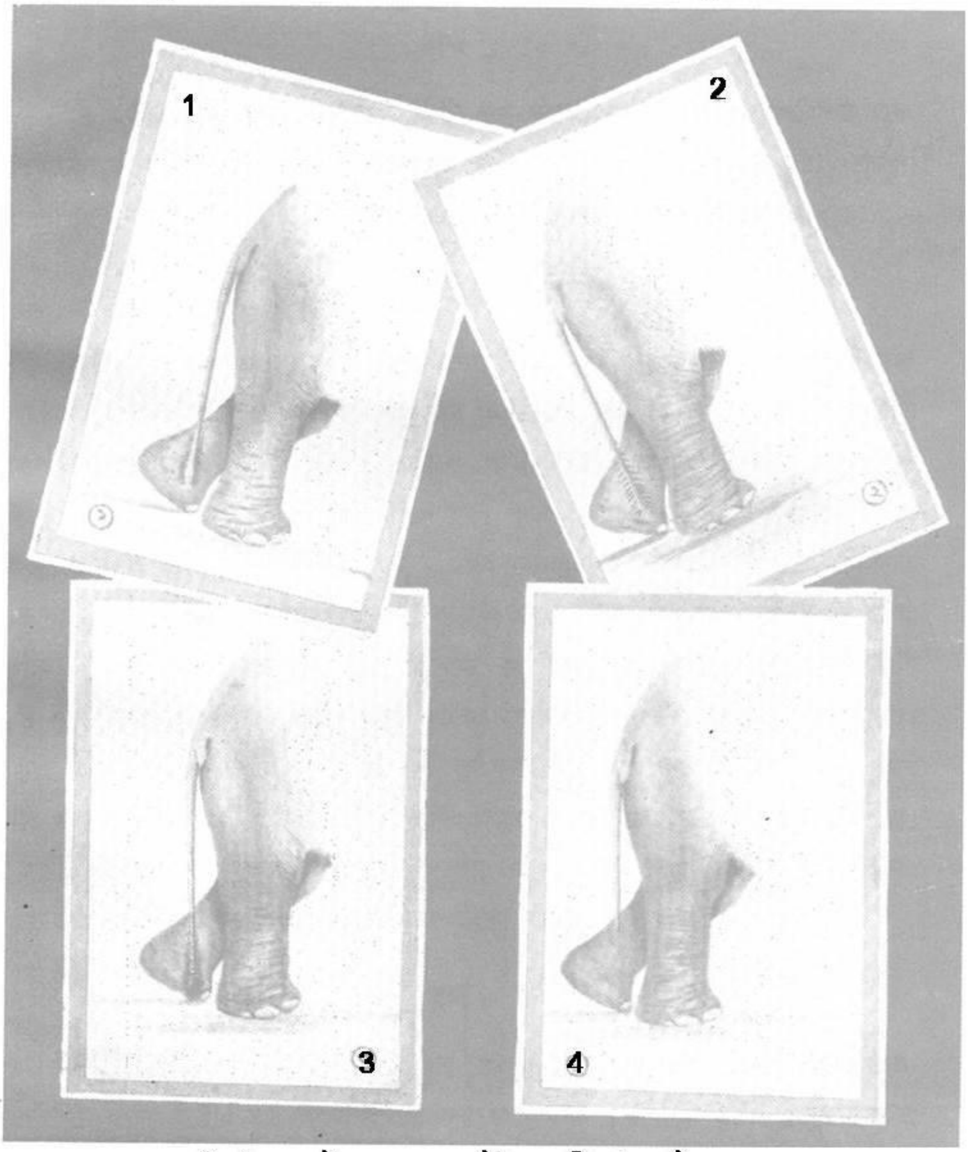
छम्बल पीठ



छत्रमुख पीठ

तृतीय लहर – **247**

चित्र तृतीय लहर–247



(लांगुल के अग्रभाग के) हाथी पूंछ के उदाहरण

(1) पांखी पूंछ (2) बालखण्डी पूंछ (3) झाड़ पूंछ (4) बड़िया

दुर्लक्षणाक्रान्त तथा प्रभु के अमंगलकारी है। इस श्रेणी के हस्ती दृश्यतः कुत्सित होते हैं

नाखून

जिस हस्ती के चारों पैर में सम्पूर्ण शुद्ध रुप से 18 नाखून रहते हैं, वह हस्ती सुलक्षण विशिष्ट तथा प्रतिपालक के श्रीवर्द्धक है। 16 या 17 नख विशिष्ट हस्ती दुष्ट श्रेणी में परिगणित होता है। श्वेतवर्ण विशिष्ट नाखून शुभ तथा काला वर्ण के नाखून अशुभ चिन्ह के मध्य परिगणित होते है।

दुम(लांगूल के अग्र भाग)

हस्ती के दुम के अग्र भाग को प्रादेशिक भाषा में ''दोम'' कहा जाता है। हस्ती के दोम आकृति भेद विविध नाम से अभिहित होता है। लांगूल के अग्र भाग के दोनो तरफ घने रोआं वाली व अग्र भाग के चपटा आकार धारण करने पर उसको ''पांखी दुम'' कहा जाता है। इस श्रेणी की दुम विशिष्ट हस्ती सुदृश्य तथा सुलक्षण युक्त कहना कथित होता है। पूँछ के अग्र भाग के पास दोनो तरफ में कम रोये रहने पर उसको ''बाल खण्डी दुम'' कहा जाता है। इस प्रकार दुम युक्त हस्ती मध्यम श्रेणी में परिगणित होता है। दुम के अग्र भाग के मिट्टी स्पर्श करने पर तथा उसको चारों तरफ बाल निकल होकर गोलाकार धारण करने पर उसको ''झाडू दुम'' कहा जाता है। इस प्रकार दुम विशिष्ट हस्ती निकृष्ट तथा दोष युक्त है, ऐसा अनादृत ही रहता है। जिस हस्ती के दुम का अग्र भाग नहीं है, उसको ''बाडिया'' कहा जाता है। बाडिया हस्ती कुदृश्य होने पर कुलक्षणाक्रान्त मध्य गणना नहीं होती है। समय समय बाँस के धार से फटे अंश के द्वारा या अन्य तरीके के कारण हस्ती के दुम के अग्र भाग कट जाता है। दो हस्ती के मध्य कलह होने पर बहुत बार एक अन्य का दुम दाँत द्वारा काट देता है, साधारणतः इन सब कारण ही हस्ती ''बाडिया'' हो रहते है।

वर्ण

साधारणतः कृष्ण वर्ण के हस्ती सुदृश्य तथा कल्याणकर कहकर गृहीत होता है। ताम्र आभाविशिष्ट वर्ण को हस्ती के मन्द लक्षण है ,ऐसा कहा जाता है। मसृण चर्म विशिष्ट हस्ती स्वस्थ्य रहते है।

गज मुक्ता

मुक्ता एक मात्र हस्ती में जन्म लेते है, ऐसा नहीं है। सचराचर शुक्ति मुक्ता भी हम लोगों के दृष्टिगोचर होते है, तथा वह यथेष्ट परिमाण में मिलता है। तद्भिन्न और भी

तृतीय लहर – 248

किसी किसी जन्तु में या उद्भिद आदि वस्तु में भी मुक्ता जन्मता है। राज निर्घन्ट के मतानुसारः–

''मातंगोरगमीन–पोत्रि शिर सस्तक्–सार–शंखाम्बूभृच्छूक्तीनामदराच्च मौक्तिक मणिः स्पष्टं भवत्यष्टधा।।''

राज निर्घन्ट।

गरुड पुराण में भी यह बात उल्लेख है, यथाः–

''द्विपेन्द्र जीमूत बराह शंख मत्स्याहि शुक्त्यु उद्भवबेनू जानि।
मुक्ता फलानि प्रथितानि लोके तेषान्तु शुक्त्यु उद्भवमेव भूरि।।''

गरुड पुराण – 69 अध्याय।

बृहतसंहिता के मत में हस्ती, सर्प, शुक्ति, शंख, अभ्र, बाँस, तिमिमत्स्य, तथा सूअर से मुक्ता का जन्म होता है। शुक्रनीति के मतानुसार मत्स्य, सर्प, सुअर, शंख, बाँस, मेघ तथा शुक्ति इन सब में मुक्ता की उत्पत्ति होता है। अग्निपुराण के मत में– शुक्ति, शंख, नागदन्त, कुम्भ, सुअर, मत्स्य, बंश तथा मेघ से मुक्ता उत्पन्न होता है।

युक्ति कल्पतरु के मत में हस्ती, सर्प, सुअर तथा मत्स्य के मस्तक में तथा बंश, झिनुक तथा शंख के उदर में मुक्ता उद्भव होता है। यथा :–

''गजाहिकोल मत्स्यानां शीर्षे मुक्ता फलोद्भवः।
त्वक्सार शुक्ति शंखानां गर्भे मुक्ता फलोद्भवः।।''

युक्ति कल्पतरु।

भाव प्रकाश आदि अन्यान्य ग्रन्थ में इस विषय में उल्लेख है। इस स्थल में एक मात्र गज मुक्ता के विषय में आलोच्य है। शास्त्र ग्रन्थ समूह के मत में हस्ती, सर्प तथा सुअर आदि के मस्तक में मुक्ता उद्भव की कथा रहने पर भी हस्ती के मस्तक में मुक्ता उद्भव की बात रहने पर भी हस्ती के मस्तक में मुक्ता जन्म होने का निदर्शन नहीं मिलता है, तथा आधुनिक पंडित गण यह बात स्वीकार नहीं करते है। गजदन्त ही मुक्ता के पैदा होने का स्थान है। यद्यपि जो कुछ गज मुक्ता देखा गया है तथा जो विवरण सुना गया है, तद् समस्त हस्ती के दन्त ही मिला है। किसी किसी ग्रन्थ के मतानुसार हस्ती के कुम्भ तथा दन्तकोष में मुक्ता उत्पत्ति का स्थान था।

चाणक्य ने कहा हैः– ''मौक्तिकं न गजे गजे'' अर्थात सब हस्ती में मुक्ता जन्म नहीं लेते है। किस प्रकार के हस्ती में मुक्ता मिलता है। युक्ति कल्पतरु ग्रन्थ में वह वर्णित हुआ है :–

''मातंगजा येतू विशुद्ध वंशास्ते मौक्तिकानां प्रभवाः प्रदिष्टाः।
उत्पद्यते मौक्तिकं तेषू वृत्तं आपीतवर्णं प्रभया विहीनम्।।
वक्षे गज परीक्षायां गजजातिश्चतुर्विधा।
मौक्तिकं तेषु जातं हि चतुर्विध मुदीस्यते।।''

तृतीय लहर – 249

"ब्राह्मण पीत शुक्लन्तु क्षत्रियं पीतरक्तकम्।
पीतश्यामन्तु वैश्यां स्यात् शूद्रंस्यात् पीत नीलकम्।।"

युक्ति कल्पतरु।

मर्म– जो हस्ती विशुद्ध वंश जाति के है, उनके मस्तक में मुक्ता उत्पन्न होता है। किसी किसी हस्ती में सुगोल, ईषत पीताभ तथा छाया(कान्ति)(1) विहीन मुक्ता जन्म लेते है। हस्ती के मध्य विभिन्न श्रेणी विद्यमान है। उसमें से हस्ती जाति चार प्रकार(ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र) के है। उनसे उत्पन्न मुक्ता भी चार श्रेणी में विभक्त–ब्राह्मण जातीय हस्ती मुक्ता पीताभ शुक्ल वर्ण, क्षत्रिय जातीय हस्ती मुक्ता पीताभ रक्त वर्ण, वैश्य जातीय पीताभ श्याम वर्ण तथा शूद्र जातीय मुक्ता पीताभ नीला वर्ण होता है।

बृहत संहिता के मत में रवि अथवा सोमवार के पुष्य या श्रवण नक्षत्र में जिन सब ऐरावत जातीय हस्ती का जन्म होते है तथा उत्तरायण काल में चन्द्र या सूर्य ग्रहण के समय जिन सब भद्र जातीय हस्ती जन्म ग्रहण करते है, उनके दन्त कोष से तथा कुम्भ में अधिक परिमाण में मुक्ता उत्पन्न होता है। उक्त ग्रन्थ में लिखित है, सिंहल, पारलौकिक, सौराष्ट्रक, ताम्रपल्ली, पारसव, कौबेर, पाण्ड्यबाटक तथा हैम प्रभृति देश में गज मुक्ता उत्पन्न होता है। देश भेद से, मुक्ता के आकार वर्ण तथा उज्जवलता के तारतम्य घटने की बात भी बृहत संहिता में उक्त हुआ है।

मुक्ता परीक्षा

यह अमूल्य रत्न शुभ तथा अशुभ लक्षणक्रान्त है। वह सब दोष या गुण तथा मुक्ता के ज्योति, वर्ण इत्यादि परिक्षणीय विषय है। वृहत संहिता, अग्निपुराण, गरुड पुराण, शुक्र नीति तथा युक्ति कल्पतरु आदि ग्रन्थ में इस रत्न परीक्षा के उपाय विस्तृत तरीके से वर्णित हुआ है। किन्तु विशेषज्ञ पण्डित को छोड कर इसके लक्षणादि निर्णय करना सब के पक्ष में सम्भव नहीं। इस स्थल में तद्विषयक विस्तृत विवरण प्रदान करना असम्भव है। सुलक्षणाक्रान्त मुक्ता धारण के शुभ फल विषय में ज्योतिष शास्त्र में अनेक कथा मिलती है। मुक्ता केवल विलास द्रव्य नहीं, उपकारी भी है।

....

(1) मुक्ता के वर्णस्फुरण(ज्योति) का नाम छाया है। शास्त्र में चार प्रकार के छाया के उल्लेख मिलते है– पीत, मधुर, शुभ्र तथा नील। पीत छाया लक्ष्मी युक्ता, मधुर छाया बुद्धिदायिका, शुक्ल छाया यशोवर्द्धनकारिणी तथा नील छाया सौभाग्यदात्री है।

"चतुर्धा मौक्तिके छाया पीता च मधुरा सिता।
नीला चैव समाख्याता रत्नतत्व परीक्षकैः।।
पीता लक्ष्मीप्रदा छाया मधुरा बुद्धि वर्द्धिनी।
शुक्ला यशस्करी छाया नीला सौभाग्यदायिनी।।"

युक्ति कल्पतरु।

तृतीय लहर – 250

अनेक समय मुक्ता व्यवासायिक गण कृत्रिम मुक्ता के द्वारा ग्राहक लोगों को ठगते है। गरुड पुराण में मुक्ता के कृत्रिमता परीक्षा प्रणाली प्रदान की गयी है, तद् द्वारा सकल जातीय मुक्ता की परीक्षा की जा सकती है। शुक्ति–मुक्ता परीक्षा के निमित्त यह प्रक्रिया सर्वदा व्यवहृत होता है। निम्न में गरुड पुराण के वाक्य प्रदान किये जा रहे हैः–

"यस्मिन कृत्रिम सन्देहः कचिद्भवति मौक्तिके।
उष्णे सलवने स्नेहे निशां तद्वासयेज्जले।।
ब्रीहिभिमद्दनीयं वा शुष्कवस्त्रोपवेष्टितम्।
यत्तूना याति वैवर्णं विज्ञेयं तदकृत्रिमम्।।"

मर्म– कोई मुक्ता कृत्रिम है, ऐसा यदि सन्देह हो, तो लवण युक्त उष्ण जल या धृत में एक रात निमज्जित अवस्था में रख कर देखे, अथवा मुक्ता शुष्क वस्त्र में रखकर धान द्वारा मलने से यदि विवर्ण न हो तब वह मुक्ता अकृत्रिम है, ऐसा ही कहा जायेगा।

युक्ति कल्पतरु के मत में– लवण तथा क्षार युक्त गोमूत्र में मुक्ता भिगो रखकर, या उसके अग्नि ताप में देकर, बाद में धान्य सहित मलने पर कृत्रिम मुक्ता टूट जायेगा तथा अकृत्रिम होने पर उसकी कान्ति उज्जवल होगा।

शुक्र नीति में मिलता है, मुक्ता को जल मिश्रित लवण तथा क्षार पूर्ण पात्र में या बकरी के मूत्र में या गो मूत्र में भिगो रखकर बाद में शाली धान के तूष द्वारा मलिए, इसमें विकृत ना होने से वहाँ मुक्ता अकृत्रिम है, ऐसा कहा जायेगा।

जो सब देश गज मुक्ता के निमित्त प्रसिद्ध है, वह पहले ही कहा गया है। त्रिपुरा पर्वत जात गज में भी मुक्ता जन्म लेता है, तथाकार उत्पन्न गज मुक्ता प्रत्येक ही स्वतन्त्र स्वतन्त्र आकार विशिष्ट देखा जाता है। तद् देश में सुगोल मुक्ता नितान्त दुर्लभ है तथा वह सहज ही मिलता भी नहीं है।

गज मुक्ता के उत्कृष्ठ तथा अपकृष्टता दोष–गुण निरुपण, मूल्य निर्धारण इत्यादि विषय में कहने की अनेक बात है, इस स्थल में उसके सम्यक आलोचना करने की सुविधा नहीं घटी। भाव प्रकाश, राज बल्लभ, युक्ति कल्पतरु, बृहत संहिता, शुक्र नीति, गरुड पुराण, अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण तथा तन्त्र सार प्रभृति अनेक ग्रन्थ में मुक्ता सम्बन्धी विवरण मिलता है।

हस्ती की उपकारिता

हस्ती द्वारा मनुष्य का अशेष उपकार साध्य होता है। प्राचीन काल से हस्ती युद्ध कार्य में व्यवहृत होता है। वर्तमान आग्नेयास्त्र बाहुल्य युग में गजारोही योद्धा के विपद शंका अधिक है इसलिए, हस्ती द्वारा युद्ध, युद्धप्रथा से उठा दिया गया है। परन्तु युद्ध में प्रयोजनीय वस्तु वहनादि कार्य में अब भी स्थल विशेष में हस्ती व्यवहृत होता है। पार्वत्य जंगल से सुबृहत काष्ठ खण्ड को खींचकर, वस्तु जात तथा मनुष्य वाहनादि कार्य हस्ती द्वारा सर्वदा ही साधित हुआ है। शिकार कार्य में हस्ती

प्रधान अवलम्बन है। पालतू हस्ती की सहायता के बिना वन्य हस्ती धृत तथा प्रथमावस्था में रक्षा करना असम्भव है। उत्सव आदि के उपलक्ष्य में हस्ती, शोभा यात्रा में प्रधान अंग है। बहुत लोग बहुत तरह के कार्य सम्पादन के लिए हस्ती भाडा देकर बहुत अर्थ उपार्जन करते हैं। अतएव हस्ती द्वारा मनुष्य समाज के कितने उपकार से लाभ होते है, लाभान्वित होते है उसे कहकर खत्म नहीं किया जा सकता।

पालतू हस्ती प्रायः समस्त जंगल से पकड़े जा रहे हैं। सामान्यतः पालतू हाथियों के के बच्चे नहीं होते, इसी कारण अनेको का विश्वास है कि हस्ती पालने से उनके बच्चे नहीं होते। यह विश्वास समूलक नहीं है। पालतू हस्ती को सर्वदा मुक्तावस्था में जंगल में चरने से उनके बच्चे जन्म लेते है। त्रिपुर राज्य में ज्यादातर ही पलितवस्था में हस्तनी बच्चा प्रसव करते देखा गया है। कोई कोई हस्तनी एकाधिक बार सन्तान प्रसव करती है।

हस्ती धृत/ हाथी पकड़ना

पालतू हस्ती के बच्चे जन्म लेने पर भी संख्या अधिक नहीं है। अर्थात तत् द्वारा मनुष्य समाज में अभाव दूर नहीं हो पाता, पालतू हस्ती अधिकतर ही जंगल के है। उन्हे पकड़ कर पालतू बनाकर व्यवस्था में लाया जाता है।

हस्ती पकड़ने की प्रणाली हर देश में एक तरह की नहीं है। अर्थात कोई देश में एक ही प्रणाली हर समय अनुसरण नहीं होती। कार्य दक्षता तथा बहुदर्शिता के फल से क्रमशः सुविधा जनक नियम अवलम्बित होता है। उसके स्वरुप पूर्व नियम में आंशिक परिवर्तन होना अनिवार्य है। आईन–इ–अकबरी ग्रन्थ में सम्राट अकबर के समय हस्ती धृत करने के चार प्रकार के प्रणाली प्रचलित थी। जो विवरण मिलते हैं, वर्तमान काल में इस देश में वे सब प्रणाली विलुप्त हुई है।

आज की 'खेदा' प्रणाली हस्ती पकड़ने के प्रधान उपाय है। हस्ती झुण्ड को दौड़ा कर उन्हे लाकर आबद्ध किया जाता है। इसलिए इस प्रणाली को 'खेदा' नाम से अभिहित किया गया है। त्रिपुरा चट्ट गाँव तथा आसाम अंचल में खेदा प्रणाली – दो तरह के होते हैं। प्रधान प्रणाली को 'मेला– खेदा' द्वितीय प्रणाली को 'बांगडि– खेदा' कहते है। इसके द्वारा फाँसी, परताला तथा फन्दा द्वारा हस्ती धृत किया जाता है। इन सब उपाय के कार्य प्रणाली का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है।

मेला खेदा

खेदा के कर्मचारी के प्रकार व संख्या

त्रिपुरा राज्य में प्रचलित नियमानुसार मेला खेदा द्वारा हस्ती धृत करने में कम से कम ढाई सौ लोगों की जरुरत होती है। फिर भी यदि अधिक लोग लिया जाये तो इससे विशेष सुविधा होती है। इसमे पंजाली, माझि, सरदार, कुली या गड्डूआ आदि है। प्रधानतः ये कई सारे श्रेणी के होते है,

जो इन लोगों के सबके उपर काम करते है। त्रिपुर राज्य के उत्तर अंचल में वे लोग मुक्ता के तथा दक्षिण अंचल के जमादार नाम से अभिहित होते है। साधारणतः एक जन जमादार या मुक्ता, 10 जन माझि, 1 जन हिसाब रक्षक तथा 1 जन मौलवी नियुक्त किया जाता है। प्रत्येक माझी के अधीन में 20 जन से 30 जन तक कुली या गड्डूआ रहते है तथा सरदार के अधीन में 10 जन सिपाही रखा जाता है। प्रत्येक खेदा में एक जन डाक्टर नियुक्त रहते है। त्रिपुर राज्य के उत्तर अंचलस्थ श्रीहट्ट जिलावासी तथा दक्षिण प्रान्त स्थित चट्ट ग्राम निवासी मुसलमान गण खेदा के काम में सुनिपुण विधाय है। साधरणतः उनके द्वारा कार्य होता है। राज्य के अभ्यान्तरस्थ कैला शहर विभाग में भी इस कार्य के लोग मिलते है।

कर्मचारी नियोग खेदा के कार्य में जिन सब लोगों को लिया जाता है, अनेक स्थल में उनको तीन महीने का वेतन अग्रिम प्रदान करना होता है। तीन महीने के मध्य खेदा के कार्य शेष होने पर उन लोगों को और वेतन नहीं देना पडता। वेतन के अलावा भोजन सामग्री प्रदान करना पड़ता है। तीन महीने के न्यून समय में खेदा के कार्य शेष होने पर कर्मचारीगण अग्रिम गृहति के अतिरिक्त रुपया वापस करने में बाध्य नहीं परन्तु तीन महीने से अधिक कार्य करने पर, अतिरिक्त काल के लिए निर्दिष्ट हिसाब से वेतन देना पडता है। प्रत्येक माझी को कबूलनामा में आबाध्य रखकर रुपया प्रदान किया जाता है।

खेदा के लिए उपयोगी वस्तु संग्रह लोक नियुक्त के साथ साथ उन लोगों के उपयोगी रसद संग्रह करके किसी भी सुविधाजनक स्थान में मौजूद रखना पडता है। चावल, दाल, तेल, लवण, हल्दी, मिर्च, पालान्डू तथा लहसुन, तम्बाकु राब गुड तथा शुष्क मत्स्य– साधारणतः ये सब वस्तु संग्रह करना पडता है। अतएव किसी किसी समय माझी को लोहा के कढाई तथा बाल्टी प्रदान करना पडता है। कार्यान्त में विदाई के समय कर्मचारीगण वहाँ लौटा देते है। रसद संग्रह के साथ साथ खेदा के कार्य उपयोगी हंसिया, कुल्हाडी, खन्ता, तथा कोदाल आदि प्रयोजनीय वस्तु भी संग्रह करना पडता है।

झाप माझि तथा पांजाली पूर्वोक्त 10 जन माझि के मध्य एक जन को उपाधि "झाप माझि" है। कोठ के झाप(दरवाजा) के समस्त काम इसके जिम्मे है। इसके अधीन में जो सब लोग नियुक्त रहते है, उनको 'पांजाली' कहा जाता है। ये सब से पहले जंगल में प्रवेश करके, हस्ती के गतिविधि के सन्धान करते रहते है। पँाजाल हस्ती यूथ के अनुसंधान कारी है। इसलिए इन्होने पांजाली आख्या लाभ किया है।

सरदार तथा सिपाही सरदार के अधिनस्थ सिपाही गण बन्दूकधारी है। प्रत्येक माझी के अधिनस्थ गड्डूआ गण के तत्वाधान के लिए एक जन सिपाही नियुक्त रहता है। कोई माझि या उसके अधिनस्थ गड्डूआ भाग कर न जाये, काम में

अवहेलना न करे, रात्रि में निद्रित न हो पडे, तथा हस्ती पातबेड भेद करके चले न जाये, यह देखना सिपाही का प्रधान कार्य है। हस्ती के बाहर जाने के लिए उद्यत होने पर सिपाही गण बन्दूक की सहायता से उसका गतिरोध करते है।

पर्वत में यात्रा

खेदा के समस्त कर्मचारी संगृहीत होने पर, उन लोगों का नाम, पिता का नाम, वास स्थान इत्यादि विवरण(प्रत्येक माझि या सरदार के अधिनस्थ लोगों के श्रृखंला रक्षा करके) रजिस्टर में लिखा जाता था। इस समय माझिगण का क्रमिक नम्बर निर्धारित हुआ रहता है। इसके बाद 7 दिवस के अथवा 10 दिवस के लिए उपयोगी रसद उसको दे दिया जाता है। वह रसद खत्म होने के पूर्व ही परवर्ती प्रति सप्ताह रसद निर्दिष्ट गोदाम से खेदा स्थान में प्रेरण करना होता है। खेदा के कर्मचारी वर्ग मिलकर देव उद्देश्य में ''सिन्नी'' करके नमाज पढ़ते है। इसके बाद श्रेणीबद्ध तरीके से बैठ कर सिन्नी ग्रहण करते है। किसी किसी समय बकडि जवाई (बकरा बलि) करके, किसी समय या गुड तथा जल द्वारा बढिया खाना पका करके सिन्नी(हलुआ) बनाया जाता है।

प्रत्येक गडूआ की दो टुकडी तथा एक एक मिट्टी का बर्तन, भांड–बाँस रहता है। वे रसद के चीज, अपने अपने वस्त्र तथा बिछौना, बर्तन, सारे टोकरी में भरकर भाड–बाँस की सहायता से स्कन्ध में वहन करते है। बाद में जमादार या मुक्ता के आदेशानुसार से प्रत्येक माझि तद् अधीनस्थ होकर गडूवागण सह नम्बर अनुसार से बार बार से श्रेणीबद्ध होकर चलते रहते थे। उनके इस अभियान दर्शन करने पर युद्ध यात्रा की बात स्वतः ही हृदय में उदित होता है। प्रकृत पक्ष में सैनिक विभाग के नियम प्रणाली सहित खेदा के कार्य कुछ परिमाण में सादृश्य है।

इस दल बल को साधारणतः ''बहर'' कहा जाता है। जिस स्थान में हस्ती रहने की सम्भावना है, उसके एक या दो मील दूरवर्ती स्थान में वे छावनी करके हस्ती के सन्देश पाने की अपेक्षा में रहते है। इस समय साधारणतः पार्वत्य पल्ली के समीप अथवा उपत्यका(**Vally**) भूमि में पत्ते के छावनी तथा बेडा के द्वारा श्रेणीबद्ध तरीके से छोटे छोटे कुटीर निर्माण करके उसमें निवास करते है।

पांजाली के कार्य

जन–बहर पर्वत में आरोहण करने के पूर्व अथवा तत् समसामायिक काल में हस्ती अनुसंधान के निमित्त पांजाली गण जंगल में प्रवेश करते है। वे छोटे छोटे दल में विभक्त होकर नाना स्थान में गमन करते रहते है। एक दल अन्य दल के संधान लेने के सुविधा के निमित, वे जिस पथ में जाते है उस पथ में दक्षिण पार्श्व से वृक्ष शाखा के छोटे छोटे अग्रभाग कर्तन करके बाँयी तरफ दूर दूर से बिछा जाते है। वे जिस तरफ से आये है, शाखा के अग्र भाग उस तरफ तथा जिस तरफ

जा रहे है, कटा भाग/खुदा (गोडा) उस तरफ रखकर स्थापन कर जाते है। पीछे आने वाले कर्मचारीगण वह चिन्ह पकड़ कर उसके साथ मिला रहता है।

इस समय उन लोगों को अति छुप छुप कर चलना–फिरना पडता है। जंगल हिलाकर चलना, उच्च रव में बात करना या बुलाना निषिद्ध है। मूलिबाँस के चूंग द्वारा निर्मित बाँसी द्वारा सांकेतिक शब्द करना मात्र है। किसी तरह उनके गतिविधि जान पाने पर हस्ती यूथ द्रुत गमन से स्थानानतर में चले जायेगे। हाथी दल की खोज पाकर पांजालिगण गोपन में पश्चात् अनुसरण करते है। जितने दिन हस्ती सब एक जगह स्थिर नहीं होते, उतने दिन पांजालिगण पीछा नहीं छोड़ते। समस्त दिन जंगल में रहकर हस्ती के गतिविधि लक्ष्य करके, रात्रि में निकटवर्ती किसी पार्वत्य पल्ली में जाकर आश्रय ग्रहण करते है। निकट में लोकालय ना रहने पर, वृक्षारुढ़ होकर रात्रि काटना पड़ता है।

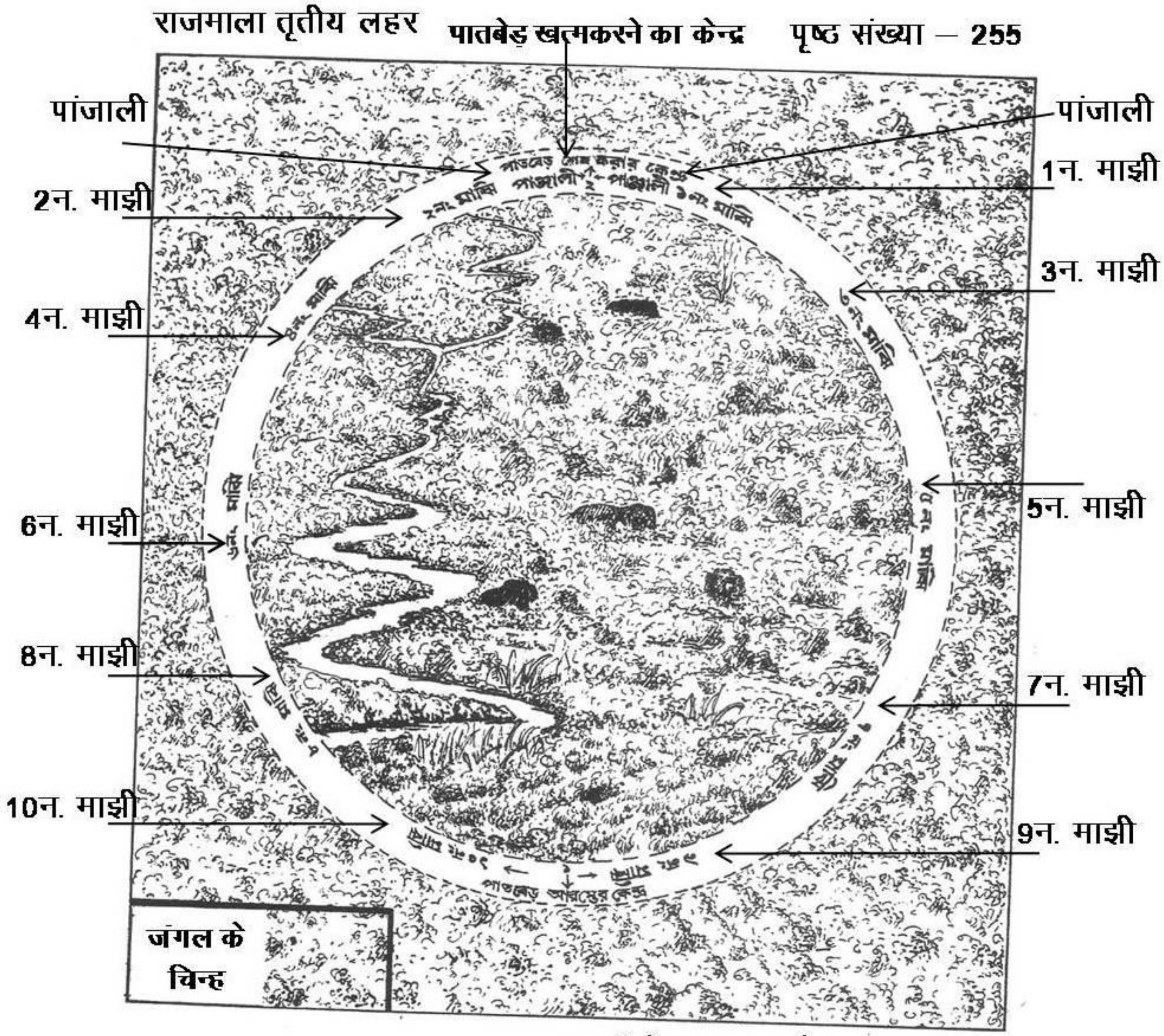
जिस स्थान में अधिक काल के लिए आहारोपयोगी खाद्य वस्तु है, शान्त जंगल से अच्छादित रहने से जो स्थान स्वभावतः सुशीतल तथा जहाँ पर पार्वत्य छडा प्रवाहित होता है, हस्ती यूथ स्वतः प्रवृत्त होकर ही कुछ दिवस के लिए उस स्थान में अवस्थान करते है। इस तरह उस स्थान में सब हस्ती पँहुचने पर, पांजालिगण उसके चारो तुर्थ तरफ घूमकर स्थानीय अवस्था पर्यावेक्षण करते है। यदि समझा जाये, उस स्थान में शीघ्र आहार अभाव नहीं होगा, हस्ती के जलपान तथा जलकेलि के सुबन्दोबस्त है, तथा खेदा के पक्ष में स्थान सुविधाजनक है, तभी पाँचाली दल के दो तीन व्यक्ति द्रुतगति से मोक्ता या जमादार के निकट जाकर वह सन्देश समझायेगा। जो सब पांजाली हस्ती यूथ के साथ रहते है, वे अति गोपनीय व सावधान तरीके से में जंगल में घूमकर, किस स्थान से घुमाव करने से सुविधा होगा, वह निर्वाचन करते है तथा छोटे छोटे वृक्ष शाखा कर्तन करके गन्तब्य पथ को चिन्हित करते है।

पात बेड

पांजाली के सन्देश प्रदान करने मात्र से जमादार या मोक्ता, जंगल में प्रवेश करने के निमित्त अपने दल के प्रति आदेश करते है। इस आदेश से अवगत होने मात्र से अविलम्ब में सबको प्रस्तुत होना पड़ता है। ऐसा कि, पका हुआ अन्न भक्षण के लिए समय न दिया जाय। दस पन्द्रह मिनट के मध्य समस्त सभांल कर भार स्कन्ध में लेकर खडे होते है, तथा माझिगण के क्रमिक नम्बर अनुसार से प्रत्येक व्यक्ति का नाम बुलाया जाता है। तदनुसार 1 नं0 माझि तथा उसके अधीस्थ गडूयागण एक के पीछे एक श्रेणीबद्ध होकर खडे होते है। उसे पीछे 2 नं0 माझि तथा उसके अधीनस्थ लोग, उसके पीछे 3 नं0 से 10 नं0 तक माझिगण एक के बाद एक खडे होते है। इस तरह सुदीर्घ एक मनुष्य श्रेणी गठित होती है। इस श्रेणी में सर्वाग्रे, जंगल से प्रत्यागत पांजालिगण पथ प्रदर्शक रुप मे गमन करते है। एक एक माझि दल बल के पीछे एकजन सिपाही रहते है। जमादार या मोक्तार सबके पीछे चलते है।

तृतीय लहर – 255

चित्र तृतीय लहर–255



हस्तीखेदा का पातबेड़

तृतीय लहर – 255

इस अभियान काल में कथा बोलना या किसी रुप शब्द करना निषिद्ध है। यह नियम लंघन करने पर ततपश्चात ही उसको वेत्राघात दण्ड भोग करना पडता है।

किस स्थान से पात बेड आरम्भ होगा, पांजालिगण पूर्व ही उसका निर्देश कर रखते है। जन बहर के उस स्थान में पँहुचने पर, पूर्व श्रृंखला स्थिर रखकर सभी खडे हो जाते है।

दाहिना तथा बाँया, दोनों तरफ से लोग जाकर हस्ती को बेड करें। इस समय जमादार अग्रवर्ती होकर, रजिस्टर के अनुसार में माझिगण के नाम पुकार कर बोले, ''1 नं0 माझि दाहिने तरफ''– ''2 नं0 माझि बांयी तरफ'' आदि। तद्नुसार 1 नं0 माझि उसके दलबल सह दक्षिण तरफ तथा 2 नं0 माझि उसके दलबल के साथ बांए की तरफ जाते है। दक्षिण की तरफ 1 नम्बर माझि के पीछे 3 नं0 माझि, बाँयी तरफ 2 नं0 माझि के पीछे 4 नं0 माझि, इस रुप से 10 नं0 माझि तक क्रमान्वय चलते रहते है। उसके पथ प्रदर्शक दो जन पांचाली दो दल के अग्रवर्ती होते है। इस समय जिस प्रणाली में लोक चालन होता है, वह साथ संलग्न चित्र में प्रदर्शित हुए है।

पात बेड काल में चित्र के ''1'' चिन्हित स्थान से दाहिना तथा बांयी दोनो तरफ लोग प्रेरित होते हैं, ''2'' चिन्हित स्थान में जाकर उभय तरफ के अग्रवर्ती पांजाली का मिलन होने पर समझा गया कि बेड खत्म हुआ है। दो तरफ लोग जाते समय, पांजाली ईशारे के अनुसार कुछ दूर दूर जाकर दो जन करके लोग खडे हो जाते है। इस प्रकार वेष्टनी रेखा के सब भाग में ही लोग रहते है, अर्थात हस्ती यूथ, लोग के बेड के भीतर पतित हुए, इस बेड को ''पात बेड'' कहते है।

पात बेड के दोनों तरफ लोग प्रेरण काल में सब को ही निःशब्द से तथा अति सतर्कता चलना पडता है। इतने सारे लोग के इस तरह की सतर्कता के साथ जंगल में प्रवेश करने से शुष्क पत्ते के मर–मर शब्द भी ज्यादा नही होते है। उभय तरफ के पांजाली, पश्चाद्वर्ती लोग सह ''2'' चिन्हित स्थान में मिलित होने मात्र से वे उल्लास भरे ''अल्ला अल्ला'' ध्वनि कर उठे, तब चतुर्दिक से बेड स्थित सभी उच्च्व रव से अल्ला नाम उच्चारण करे। अकस्मात् चारों तरफ पोषण चित्कार ध्वनि श्रवण करके हस्ती यूथ भीत तथा संत्रस्त होकर बेडे के भीतर दौडने लगेगे। उनके पैर से जंगल हिलने के सर सर शब्द से एक गहरे रव की सृष्टि होती है। कुछ काल इस तरह की दौडा दौडी करने के बाद समस्त हस्ती कमजोर तरीके से एक स्थान में एकत्र हो जायेगे।

बेड मिलने के बाद फाडि या ढाला काटने का कार्य आरम्भ हुआ। जिस पथ में बेडे के लोकगण जंगल में प्रवेश करते है, उस सीमा रेखा के जंगल काटकर चतुर्थ तरफ 20/25 हाथ चौडा करके फाडि पथ तैयार किया जाता है। इस कार्य में अधिक विलम्ब नहीं होता। प्रत्येक के हाथ में हंसिया तथा कुल्हाडी रहता है, तथा सभी अपने अपने सम्मुख स्थान के जंगल काटकर पथ बनाते है। फाडि रास्ता में छडा पडने पर, वनजात वृक्ष द्वारा तभी

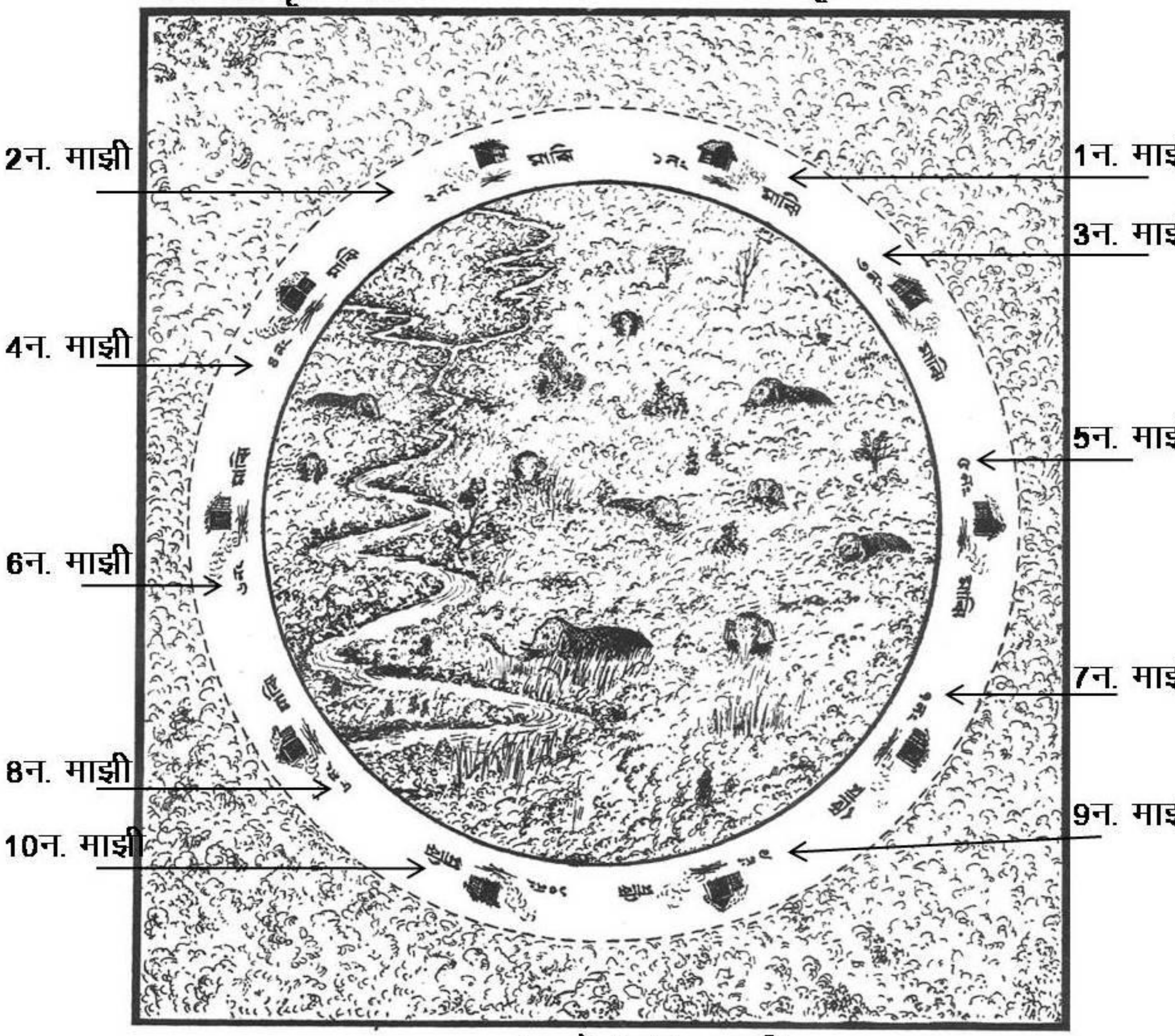
पुल प्रस्तुत किया जाता है, उँचा टीला अतिक्रम करने के लिए, उसके दोनों तरफ सीढी बाँधकर अवरोहण की सुविधा की जाती है।

''फाडि काटना'' शेष होने पर, जंगल से वृक्ष, लता तथा फूस संग्रह करके कुछ दूर दूर माझि तथा गडूआ गण के निवास के लिए बाचाडि घर प्रस्तुत किया जाता है तथा प्रत्येक घर में लोग बैठ जाते है, इस घर को ''पाता'' कहते है। प्रति घर में दिन के समय एक जन तथा रात्रि के समय दो जन करके लोग रहते है। हाथियों के फाडि पथ अतिक्रम करके बेडे से बाहर हो जाने की चाहत में बाधा प्रदान करना ही इनका कार्य है। प्रत्येक गृह के सम्मुख बृहत अग्नि के धुनि जलाये जाते है। आग देखने से हस्ती तथा व्याघ्रादि हिंसक जन्तु गण भय से निकट नहीं आते है। किसी समय हस्ती बेडे के बाहर जाने के लिए उद्धत होने पर गडूआ गण आग जलाकर तथा कोलाहल करके उनको लौटा देते है। मूलिबाँस द्वारा एक प्रकार के यन्त्र बना करके तद् द्वारा अथवा छोटे दो खण्ड बाँस के दो बाँस परस्पर आघात द्वारा ठक् ठक् शब्द किया जाता है। वह शब्द हस्ती के पक्ष में नितान्त भयप्रद है। जिस स्थल में इन सब उपाय से हस्ती गतिरोध करना असम्भव होता है, उस स्थल में बन्दूक व्यवहृत होता है। एक एक जन सिपाही, एक एक माझि के अधीनस्थ लोगों के तत्वाधान करने की बात पूर्व ही कही गयी है। वे अपने अपने इलाका खण्ड में घूमकर पहरा देते है तथा उपयोग स्थल में बन्दूक व्यवहार करते है। विशेष प्रयोजन न होने पर बन्दुकों की आवाज करना निषिद्ध है, कारण, बन्दूक का शब्द सुनते–सुनते अभ्यास हो पड़ने से हस्तीगण और उस शब्द को भय नहीं करते, तद्रुप परवर्ती काम में विशेष असुविधा होती है। प्रशस्त नदी पात बेडे के भीतर आने पर नाव तथा भेला द्वारा नदी के बीच पहरा बैठाया जाता है, नहीं तो नदी के रास्ते से हस्ती के बाहर हो जाने की आशंका रहता है।

रात्रि में प्रत्येक स्थापित पाताघर में दो जन लोग रहते है, क्रमानुसार से उनमें से एक जन जागृत रहते है, तथा एक जन सोते है, दो जन एक साथ निन्द्रित होने पर, उस स्थान से हस्ती बाहर हो जाने का आशंका रहता है, इसलिए समस्त रात्रि पात बेड में घूम घुम कर उनको जागृत रखना पड़ता है। अनेक समय, मोक्ता या जमादार के कैम्प से कोई एक वस्तु एक पाता लोक के हाथ में देकर आदेश किया जाता है, यह समग्र बेड घुमाकर लाये। जिस लोग के हाथ में वस्तु दिया जाता है वह उसके अगले पाता के लोग के हाथ में वह पँहुचा दिया जाता है। इस रुप से क्रमान्वय से एक दूसरे के हस्त में प्रदान करने से वस्तु समस्त बेड में घूमकर अल्पकाल में ही मोक्ता या जामादार के हाथ आये, तब समझा जाता है बेडे के सभी जागृत है। मध्यवर्ती किसी पाता के लोग के उक्त वस्तु लेकर निन्द्राविभूत होने पर, वस्तु अटक जाता है। तब कौन सोया, अनुसन्धान के लिए निकलते है। पाता के जागने वाले लोग का निन्द्रित होना गुरुतर

तृतीय लहर – 256
तृतीय लहर–256

राजमाला तृतीय लहर **पृष्ठ संख्या – 256**



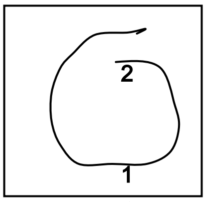
पातबेड़ रक्षा प्रणाली

द्वितीय लहर – 257

अपराध कार्य है तथा इसके लिए कठोर प्रहार दण्ड भोग करना पडता है, उसे दण्ड प्रदान में विलम्ब नहीं होता है।

पात बेड की परिधि बहुधा 4/5 मील तक होता है। इस परिधि के मध्य हस्ती यूथ इच्छानुरुप चलते फिरते है। वे इधर उधर घूमकर आहार करते है। छडा के जल में स्नान करते है। वे विपदापन्न है, वह खूब अधिक नहीं समझ पाते। आसन्न प्रसवा हस्तिनी बेडे में आने से, कई बार बेडे के भीतर प्रसव करती है। अनेक स्थल में इस रुप से 15/20 दिन तक हस्ती को पात बेड में रखना पडता है। अधिक काल बेड में रखने से हस्ती सब आबद्धावस्था में रहते रहते चंचल हो उठते है, तथा आहार्य वस्तु खत्म होने पर उनको बेडे में रखना कष्टसाध्य हो जाता है, अर्थात पात बेड होने के बाद जितना शीघ्र परवर्ती कार्य सम्पादन किया जा सकता है, उतना ही शुभ फल लाभ की आशा किया जाता है।

पात बेड के समय से साधारणतः खेदा के कार्य शुरु होते है, इस कार्य का सुफल होना सम्पूर्ण रुप से पांजालिगण के कृत कार्य के उपर निर्भर करता है। उनके त्रुटि के कारण से अनेक बार पात बेड उपलक्ष्य में ही खेदा के कार्य असफल होता देखा जाता है। वे यदि पात बेड के पास अंकित चित्र ''1'' चिन्हित केन्द्र से दाहिना तथा बाँयी ओर जाकर शेष सिरे (चित्र के ''2'' चिन्हित स्थान) से न मिलकर पर, तब पास में अंकित रेखानुरुप बेडे के सीमा



रेखा के एक सिरा भीतर प्रविष्ट होता है तथा उपर सिरा बाहर हो पडता है। अर्थात''1'' चिन्हित केन्द्र से दोनो तरफ प्रेरित लो ''2'' चिन्हित केन्द्र में जाकर नहीं मिलता है तद्नुसार उभय सिरा के मध्य भाग में खाली रहता है, उस खाली जगह से हस्ती यूथ बेडे से बाहर हो जाते है। अनेक समय कभी कभी एक दल के कुछ हस्ती बेडे के भीतर तथा कुछ बाहर चले जाते है। इस रुप अवस्था में भीतर के सब हस्ती बाहर के हस्ती के साथ मिलित होने के निमित्त सर्वदा कोशिश करते है तथा पात बेड की रक्षा करना कठिन हो जाता है बाहर के हस्ती दल भी उसको छोड़कर अधिक दूर नहीं जाते, पात बेडे के पास पास चरते घूमते है, तथा दोनो दल आपस में बुलाकर, मिलने की आकांक्षा ज्ञापन करते है तद्नुरुप बेडे के अभयन्तरस्थ हस्तीगण अधिकतर चंचल हो उठते है। बहुत समय बाद समग्र हस्ती के दल बेडे के बाहर पतित होने पर, पात बेड निष्फल हो जाता है।

दो स्वतन्त्र स्वतन्त्र दल एक बेडे में पतित होता हुआ भी देखा जाता है। वे एक बेडे के भीतर, से स्वतन्त्र स्वतन्त्र तरीके से चलते फिरते है, एकत्र नहीं मिलते, धृत होने के समय प्रायः एक साथ पकड़ में नहीं आते।

कोठ या गढ़ निर्माण

हस्ती आबाद करने के निमित्त वृक्षादि द्वारा एक सुदृढ गढ़ प्रस्तुत किया जाता है। प्रादेशिक भाषा में उसे कोठ या गढ़ कहते है।

पात बेड के कार्य शेष होने पर, कोठ प्रस्तुत के स्थान निर्वाचन किया जाता है, इस कार्य में विशेष ज्ञान का प्रयोजन है। बेडे के भीतर में किसी किसी स्थान में हस्ती–दोयाल के(यातायात के रास्ते) अंश पतित हुआ है, उस दोआल में सर्वदा यातायात के चिन्ह है कि नहीं, हस्ती को भगाने से किस तरफ भागने की सम्भावना अधिक, आदि विषय विवेचना करके कोठ के स्थान निर्वाचन करना पडता है। एक या एकाधिक दोयाल के उपर कोठ निर्माण करना ही विधेय है, कारण हस्तीगण जिस पथ में सर्वदा गमनागमन करते है, भगाने से उसी पथ में पलायन करना चाहते है। अर्थात दोआल के उपर कोठ प्रस्तुत करने से हस्ती सहज में कोठ प्रविष्ट होने की सम्भावना होता है। यह स्थान पात बेड के अभयन्तर में एक निर्वाचित होता है– बेडे के बाहर नहीं।

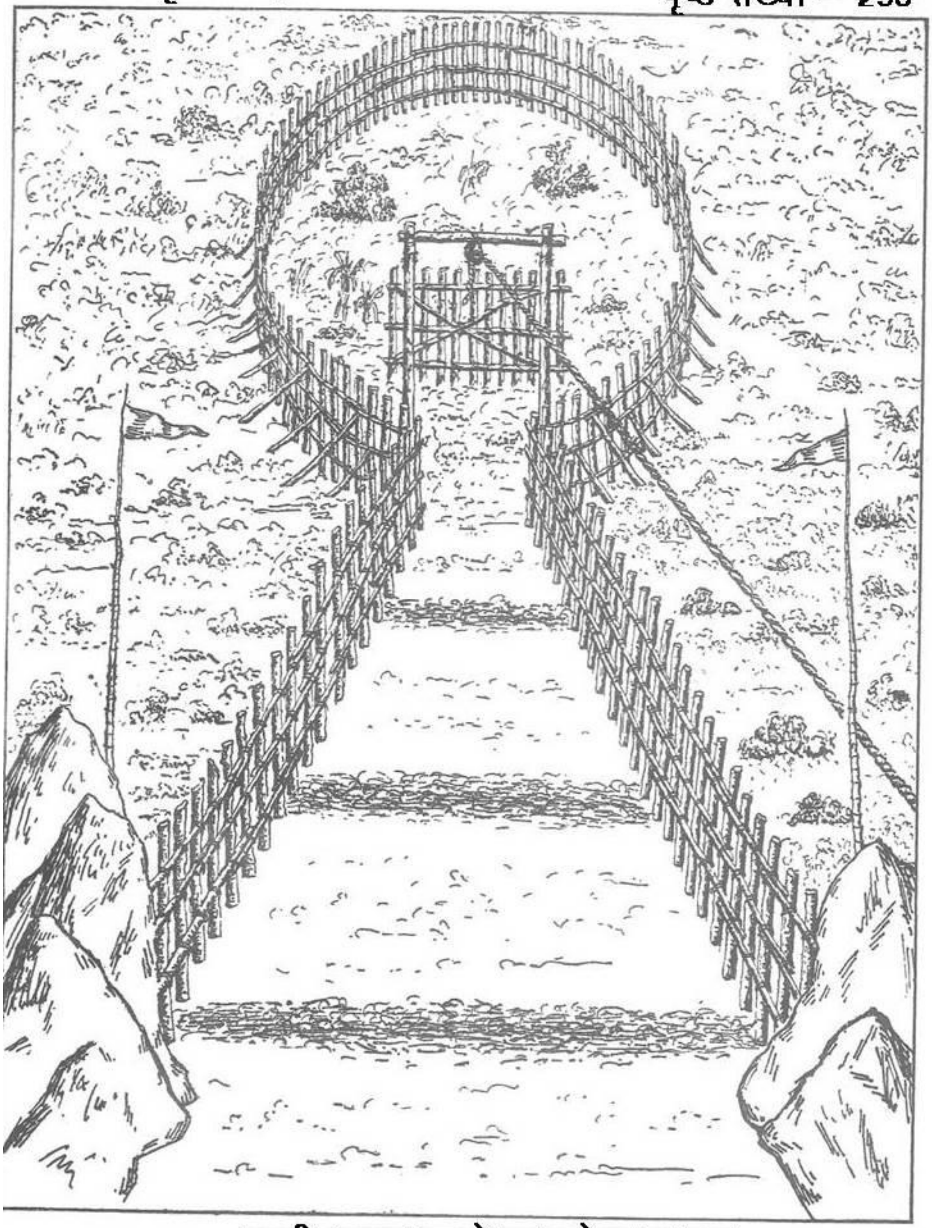
कोठ का स्थान निर्वाचित होने पर, चतुर्दिक से वृक्ष कर्तन करके, उस स्थान में संग्रह किया जाता है। पात बेड के बाहर से वृक्ष लाना आवश्यक है, बेडे के भीतर वृक्ष कर्तन करना निषिद्ध है, अन्यथा हस्ती में भीति उत्पादन की आशंका रहती है। इस समय, दिन के समय पात बेड के प्रत्येक पाता में एक एक जन लोग रखकर अन्य सब को कोठ बनाने के काम में व्यापृत करना पडता है। दिन के समय सब हस्ती बेड के मध्य दौडते हैं। घने जंगल में विचरण करते है, बेड अतिक्रम करने में कोशिश नहीं होते, अर्थात प्रत्येक पाता में एक लोग रखने से ही पता चलता है। नियोजित लोक गण समस्त दिन कठोर कार्य करके, संध्या के समय अपने अपने पाता में लौट जाते है, तथा रात्रि में नियमानुसार पाता बेड पहरा देना पडता है।

पात बेड में पतित हस्ती अनुमानिक संख्या विवेचना से कोठा अपेक्षाकृत छोटा या बडा किया जाता है। प्राचीन प्रथानुसार वृत्ताकार तथा गवर्मेन्ट के खेदा सुपरिन्टेडेन्ट सेन्डरसन के मतानुसार अष्ठ कोण आकार में कोठ प्रस्तुत किया जाता है। जितने जन माझि नियुक्त रहते है, कोठों की परिधि को उसके समान भाग विभक्त करके एक एक भाग एक एक माझि के जिम्मा दिया जाता है। वे अपने अधीनस्थ लोक जन लेकर अपने अपने अंश के समान कार्य को सम्पादन करते है। इस प्रकार सबके समवेत कोशिश से कोठा निर्मित होता है।

सरल तथा सुदृढ वृक्ष खण्ड समूह श्रेणी बद्ध तरीके से घना घना गाड़ करके कोठा प्रस्तुत किया जाता है। इन सब वृक्ष खण्ड के कम से कम 3/4 फुट परिमित अंश भूगर्भ में गाढे जाते है तथा मृत्तिका के उपर कम से कम 10 फुट परिमाण उच्च होता है।

तृतीय लहर – 258

चित्र तृतीय लहर–258



हस्ती आबद्ध करने का कोठा या गड़

इसके बाद वृक्ष खण्ड द्वारा घने घने लाईन में बाँधना पडता है। पर्वत जगत के उदाल या उजाल वृक्ष के चमडे से बनायी गयी रस्सी द्वारा बन्धन कार्य सम्पादित होता रहता है। उक्त वृक्ष के चमडे के द्वारा निर्मित रस्सी पाट(पटसन) के रस्सी की तुलना में कम मजबूत नहीं। जिस तरफ हस्ती रहता है, उस तरफ एक मात्र प्रवेश द्वार रखकर, पूर्वोत्त रुप गढ प्रस्तुत किया जाता है तथा दरवाजे के दोनो तरफ सामने तरफ क्रम विस्तृत तरीके से दो बाहु प्रसारण किया जाता है। इस बाहुद्वय को "आन्नि" या "पाईराला" कहते है। स्थान के अवस्थानुसार से आन्नि दोनो समय समय पर बहुत दूर तक विस्तृत किया जाता है। असम्भव न होने पर इसके शेष सिरे तक पार्वत्य टिला के सहित संलग्न करना ही सुविधा जनक है।

सेन्डरसन साहब के नियमानुसार से कोठे के दरवाजे के उर्द्ध भाग में कपिकल की सहायता से एक झाँप रखा जाता है, हस्ति कोठे में प्रविष्ट होने पर वह झाँप फेंककर दरवाजा बन्द किया जाता है। उस झाँप के भीतर पीठ के उपर लकडी के उपर मजबूत लोहे की कीलें घने–घने गड़ी रहती है। तद् रुप भीतर के जोर से दरवाजा टूटने के पक्ष में बाधा आता है। राज्य के दक्षिण अंचल में अब भी यह नियम ही कार्य होता है। उत्तर अंचल में झाँप के बदले में टीन का हुडका रखा जाता है। मजबूत वृक्ष द्वारा यह कुन्दा निर्मित होता है। हस्ती कोठे में प्रविष्ट होने के बाद, लोग कुन्दा खींच कर दरवाजा बन्द कर दिया जाता है। शेषोक्त प्रणाली विशेष आशंकाजनक है, किसी किसी समय असम्भव हो जाता है तथापि खेदाकारी गण उस चिर अभ्यस्त नियम में परिवर्तन करना नहीं चाहते।

कोठा बाँधने के कार्य शेष होने के बाद, पत्र विशिष्ट मूलि बाँस तथा ताजा वृक्ष पत्रादि छावनी(छाना) द्वारा कोठ तथा आन्नि के बेडा सारे समान रुप से आच्छादित किये जाते है यदि नूतन काष्ठ गाडा गया है, या गढ प्रस्तुत किया गया है, हस्ती यूथ यह समझने पर, वे कोठे में प्रवेश नहीं करना चाहते। जीजान से कोशिश करके अनेक कोठ में हस्ती प्रवेश कराने में कार्य असफल होने, स्थान परिवर्तन तथा नूतन कोठ तैयार करने का प्रयोजन होता है। हस्तिगण के लिए कोठ के निर्माण काल अवस्था मे हाथियों द्वारा दर्शन करने पर उनको उस पथ में लाया नहीं जा सकता। इसलिए कोठे के स्थान में हस्ती जाने में बाधा प्रदान के लिए रात्रि में प्रहरी रखा जाता है। दिन के समय कर्मचारी गण के कोलाहल सुनकर हस्ती अपने से ही दूर रहता है।

कोठे के भीतर प्रवेश द्वार स्थान छोड़कर अवशिष्ट स्थान में बेडा के नीचे चारों तरफ घुमाकर सामान्य परिमाण गहरा तथा दो या तीन हाथ गहरा गढ्ढा खोदा जाता है। वह देखकर भय प्रयुक्त हस्तीगण कोठा तोडने की कोशिश में लिप्त रहते है। अनेक समय गढ्ढा न देखते हुए कोठा तोडकर बाहर से ही कोशिश करते है। इस कारण जितने दूर सम्भव हो, दृढ करके कोठ बाँधा जाता है, तथा बाहर की तरफ वृक्ष खण्ड द्वारा बारम्बार टेक देकर अधिकतर दृढ किया जाता है। तद्रुप भीतर से

धक्का देकर गढ़ भग्न करना हाथी के पक्ष में असाध्य होता है। शुष्क धानफूस तथा पत्रादि द्वारा आग्नि या पाईराला के मुख में(लेने) एक तथा मध्य भाग में एक बाद एक इस तरह से छेः, एक तरफ आग्नि से अन्य तरफ आग्नि तक मेड प्रस्तुत करके, उसमे मिट्टी के तेल छिडका कर भिगो कर रखा जाता है। इन सब फूस के मेड को "आला" कहा जाता है। अनेक स्थल में इस आला के मध्य अनार तथा बम आदि आतिशबाजी भर दिया जाता है।

हस्ती भगाने(वालों) के कारीगण को आग्नि के मुख निर्देश करने की सुविधार्थ दोनों तरफ के उपरी सिरे में दो उच्च वृक्ष के सिरे में एक झण्डी बाँध दिया जाता है। कर्मचारीगण दूरवर्ती घने जंगल से वह झण्डी लक्ष्य करके, उस तरफ हस्ती भगा लेते है। उस उभय झण्डे के मध्य से जिससे हस्ती यूथ प्रविष्ट होता है। उस पर विशेष दृष्टि रखते है।

कोठे प्रस्तुत के कार्यापलक्ष्य में जो सब काष्ठ खण्ड चारों तरफ पतित होता है, वह हटाकर, खुदाई किये गये मृत्तिकादि को शुष्क पत्र द्वारा आवृत किया जाता है। मूल बात, उस पथ में आने अथवा कोठे में प्रवेश करने में हस्ती को किसी रुप से सन्देह उद्रेक नहीं होना चाहिए अतः, उसी समय ठीक करना पड़ता है।

हस्ती खेदाना/खदेड़ना

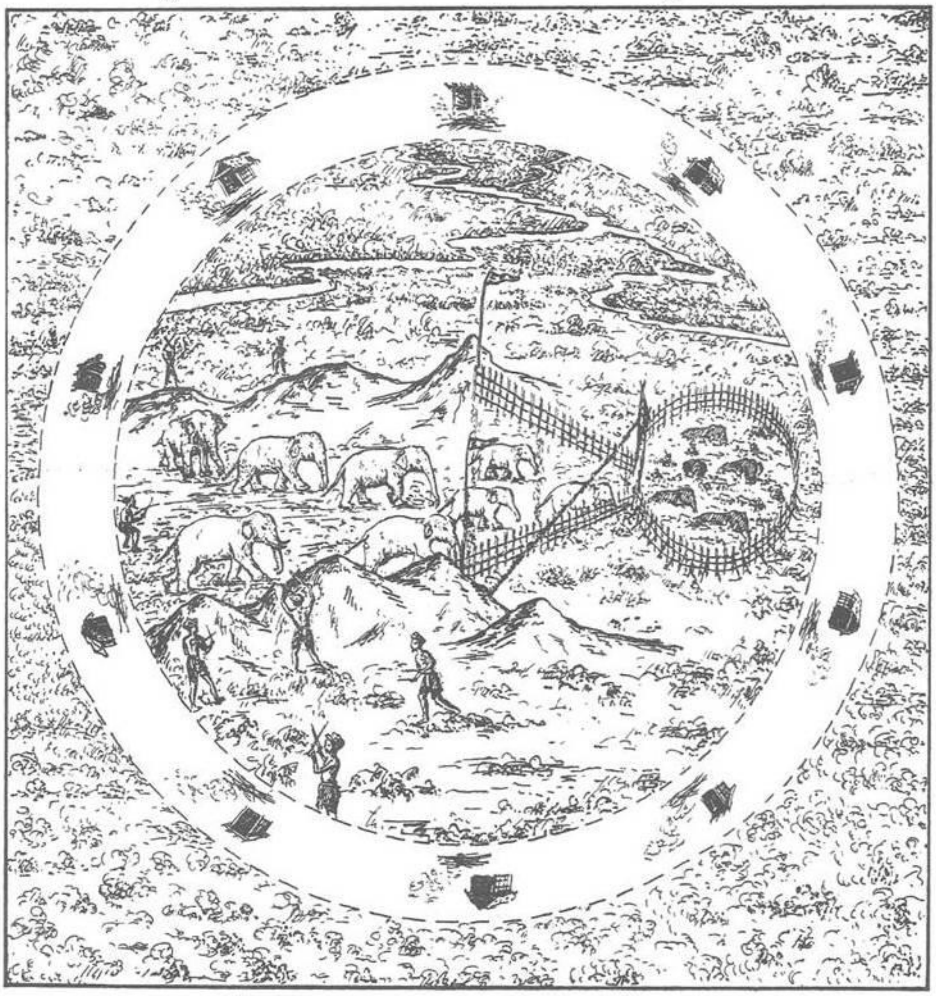
कोठे बनाने के कार्य शेष होने पर, हस्ती भगाकर कोठे के मध्य लेने की कोशिश किया जाता है, इस कार्य को "डाकि" कहते है।

"डाकि" आरम्भ करने के पूर्व, प्रत्येक पाता में दो लोग नियुक्त रखकर तथा धूनि के आग को प्रबल तरीके से जलाकर पात बेड को दृढ किया जाता है। हस्ती द्वारा लोगों के भगाने पर पात बेड अतिक्रम करके बाहर हो जाने की आशंका रहती है, इस कारण पात बेड दृढ करना एकान्त कर्तव्य है।

अतएव सब मिलते हुए नमाज करते है तथा सिन्नी ग्रहण करते है। इसके पश्चात यथायोग्य अभिवादन तथा आलिंगन करके एक अन्य के निकट शेष विदाय ग्रहण करते है। यह अन्तिम यात्रा होना विचित्र बात नहीं है। यही कारण है, इस विदाई समय में बहुत जन रो देते है।

खेदा उपलक्षित अन्यान्य कार्यापेक्षा डाकि के कार्य नितान्त विपद्जनक है। विशेष सतर्कता अवलम्बन न करने पर प्रति मूहुर्ते हस्ती द्वारा मरने की आशंका रहती है। अनेक लोगों को इस कार्य यात्रा में ही शेष होता हुआ देखा जाता है। मृत व्यक्ति गण के शेषकार्य सम्पादनोपयोगी सामान तथा नये वस्त्रादि रसद के साथ पूर्व से ही संग्रह कर रखा जाता है और संग के मौलवी के द्वारा अन्त्येष्टि क्रिया सम्पादन किये जाते है।

तृतीय लहर – 260
चित्र तृतीय लहर–260



हाथियों का भगाकर कोठे में लाने का दृष्य

पात बेडे के जिस सीमा में कोठ प्रस्तुत किया जाता है, उसके विपरीत तरफ सीमा में श्रेणीबद्ध तरीके से लोग खड़े(दण्डायमान) रहते है। उनके सबके हाथ में छोटे छोटे दो खण्ड बाँस रहता है। किसी किसी के हाथ में बन्दूक रहता है। इसके अलावा ढोल, काडा(नगाड़ा) आदि वाद्य यन्त्र तथा बम, तूवडि(अनार) आदि आतिशबाजी को साथ लिया जाता है। इसके बाद ये लोग सब उच्च स्वर में चिल्लाकर, ढोल तथा काडा बजाकर हस्त स्थित बांस के खण्ड द्वय से 'ठक् ठक्' शब्द बजाते है, व आगे की तरफ बढते है। इस आकस्मिक शोरगुल से भीत होकर हस्ती यूथ प्राण के भय से भाग कर कोठे की तरफ भाग जाते है।

इस समय का दृश्य जैसे आनन्दप्रद, वैसा ही भयावह है। हाथी का दल संत्रस्त तरीके से मूलिबाँस के वन तथा वृक्षादि समन्वित घोर जंगल को विदलित करके जब भागकर जाते है, तब बाँस और वृक्षादि टूटने के ''मुहुर्म्मूहः मर्मर'' के शब्द, पददलित बाँस के गाँठ फटने का ''पट पट'' शब्द, तथा हस्ती यूथ के गात्रघर्षण से छोटे छोटे जंगल के ''सौ सौ'' शब्द मिश्रित होकर एक भिति जनक उच्च शब्द की सृष्टि होती है। दो ट्रेन एक साथ चलने पर भी इतना उच्च तथा जोर से शब्द पैदा नहीं होता है। इसके उपर भी हस्ती के चिल्लाने की आवाज, भागने वाले कारीगण की चिल्लाहट तथा पटाके बन्दूक के शब्द मिलित होकर भीषण भयाभय उत्पादन होता है। समग्र जंगल मर्दित करके, जब हस्ती यूथ प्राण के भय से तीर की तरह भाग कर आते है, तब लगता है जैसे उनके अमित वेग से हवा की गति(अवस्था) घूम रही है। इस समय हस्ती के समक्ष की तरफ(कोठे के निकट) जो सब लोग रहते है, उन लोगों को शान्त निस्पप्द अवस्था में प्रच्छन्न तरीके से रहना पडता है। सामने के तरफ किसी रुप शब्द पाने पर अथवा किसी को हिलते ढुलते देखने से हस्ती यूथ अचानक पीछे की तरफ घूम जाते है। उनको आग्नि के मुख में प्रवेश करा देना भगाने वालों का उद्देश्य रहता है, तथा उनके अनुरोध से कभी अग्रवर्ती होकर तथा कभी पीछे हटकर भगाते है।

हस्ती के आग्नि के मुख में प्रविष्ट होने से तथा दाहिने तथा बाँये जाने की सुविधा नहीं रहती, या तो समक्ष अग्रसर होकर कोठे में प्रवेश करेगें, नहीं तो पीछे की तरफ लौट जायेगें, पीछे भाग न पाये, इसलिए तत्काल में पीछे से घोर चिल्लाहट, पटाखे तथा बन्दूक के शब्द तथा वाद्य यन्त्र से कोलाहल इतने प्रबल तरीके से चलते है, जो वह सब भितिकर कोलाहल तथा हस्ती कोठे से प्रविष्ट होने की सम्भावना जनित आनन्द से कोठे के निकटस्थ सभी के सीने ''धड धड'' करते रहते है। इस समय मानसिक चांचल उपस्थित नहीं होते, ऐसे साहसी या धैर्यवान लोग बहुत ज्यादा है, ऐसा नहीं लगता।

पहले से ही धानफूस तथा मिट्टी के तेल द्वारा जो सब आला प्रस्तुत किया जाता है, हस्ती यूथ द्वारा उसके एक एक पार हो आने से पीछे की तरफ से उस आला में अग्नि

को प्रदान किया जाता है। हस्ती के पीछे के तरफ घूमने के लिए उद्धृत होने से अग्नि देखकर भय से पुनर्बार कोठे की तरफ दौडते है। इस समय हस्तीयों को रोकने या किसी तरफ लक्ष्य करने का समय नहीं दिया जाता। हस्ती यूथ के इस तरह शीघ्रता करने से, किसी किसी समय आन्नि का बेडा तोडकर, हस्ती यूथ दाहिने या बांये भाग जाते है। यह दैव दुर्घटना कभी कभी घटित होती है। आन्नि तोडकर बाहर होने पर भी हस्ती सब पात बेड के भीतर ही रहते है तथा पुनर्बार कोठे में लाने की कोशिश किया जा सकता है। किसी किसी समय लोग कोलाहल, पटाखे, बन्दूक तथा आला की आग अग्राहय करके भी, हस्ती के दल आन्नि से पीछे की तरफ भागकर जाते हुए दिखाई देते है।

सब हस्ती के कोठे में प्रवेश करते समय प्रायः श्रेणीबद्ध तरीके से एक के पश्चात एक अन्य भाग कर जाते है तथा कोठे के बेडा को पकड़ कर चतुष्पार्श घूमकर फिर प्रवेश द्वार की तरफ आते है। समस्त हस्ती कोठे में प्रविष्ट होने के मात्र ही द्रुत हाथ से दरवाजा बन्द कर देना पडता है। दरवाजा बन्द कर देने के दो प्रणाली की बात पूर्व में ही कही गयी है। दरवाजा बन्द कर देने के समय हस्ती के दरवाजा पर आने पर, हल्की अग्नि जलाकर, उसके पक्ष में बाधा प्रदान किया जाता है। फिर भी अग्नि बाधा न मानने पर, जाठा अस्त्र से आघात तथा बन्दूक की सहायता से लौटा दिया जाता है।

इस समय कोठे के चारों तरफ वृक्ष लेकर खडे हो जाते है। किसी तरफ कोठ तोड कर हस्ती द्वारा बाहर होने की कोशिश करने पर शोरगुल करके तथा जाठा से आघात करके लौटाना पडता है। सारे हस्ती जिस पथ से प्रवेश करते है, उस पथ से ही बाहर होने के निमित्त विशेष कोशिश करते है। अर्थात द्वार देश विशेष दृढ तरीके से बन्द किया जाता है तथा अस्त्रादिसह सतर्क प्रहरी दण्डायमान रहते है।

इस समय पाल के प्रधान दो एक हाथी का कार्य देखने से स्तम्भित होता है। कोठे के दरवाजा तोडकर बाहर होना ही उनका एक मात्र लक्ष्य रहता है। दोनों कान तथा पूँछ खडी करके, सूँड समेटकर तथा चक्षु घुमाकर जो उग्र मूर्ति धारण करते है वह देखने पर नितान्त साहसी व्यक्ति का भी सीना काँप उठता है। इस भीषण मूर्ति से क्रमशः पीछे की तरफ हटकर, अचानक भागकर आकर हस्ती के मस्तक तथा शुँड के नीचे भाग द्वारा आघात करके दरवाजा तोडने में कोशिश करते है। दरवाजे के लकडी में गडे हुए सुदृढ लोह सलाका के आघात से हस्ती के मस्तक तथा सूँड के नीचे के तरफ क्षत विक्षत हो जाता है, अत्यधिक रक्तपात होता रहता है। ततप्रति न सोचकर पुनः पुनः दरवाजे दरवाजे के उपर आघात करते रहते है। अतिरिक्त परिश्रम से तथा बार बार आघात से कातर न होने तक किसी तरह से वह निरस्त नहीं होता।

यदि दो दल के हस्ती एक बेडे में पतित हुए, तो वे स्वतन्त्र तरीके से बेडे में विचरण करते है। उनको एक साथ कोठे पर लेना असम्भव होता है।

प्रथम बार में जो सब हस्ती कोठे में प्रविष्ट होते है, उन सबको बाहर करके, पुनर्बार अन्य हस्ती कोठे में लाये जाते है। एक ही दल के हस्तीयों को दो तीन बार में अल्प अल्प करके कोठे में प्रविष्ट होता देखा जाता है।

खेदा के कार्य शेष न होने तक सर्वदा पात बेड दृढ रखना पडता है। नहीं तो कोठे में प्रवेश बाकी हस्ती सब बेडा अतिक्रम करके भागने का आशंका रहता है।

हस्ती बन्धन

हस्ती यूथ कोठे में आबद्ध होने के बाद, उनको बाँधने का कार्य किया जाता है। जिस दिन हस्ती कोठे में प्रविष्ट होते है, समय रहने से उसी दिन, अथवा उसके बाद वाले दिन यह कार्य होता है। किसी किसी समय हस्ती रात्रि में भी बाँधा जाता है। परन्तु वह अत्यन्त दुःसाहसिकता कार्य है व आशंका जनक है।

जंगली हस्ती के कोठे में आबद्ध होने के पूर्व पात बेडे में किस परिमाण में हस्ती है, उसका एक अनुमानिक संख्या में निर्णय किया जाता है, तथा उसको बाँधने तथा प्रतिपालन करने में कितनी संख्या में पालित हस्ती का प्रयोजन है, वह संग्रह करके खेदा स्थान से एक या डेढ मील दूरवर्ती स्थान में रखा जाता है। खेदा के निकट पालित हस्ती रखने से जंगली हस्तीगण उनके गात्र गन्ध अनुभव करते है तथापि चंचल हो पडते है। इसलिए पुराने हस्ती दूरवर्ती स्थान में रखे जाते है। तथा बुलावा पड़ने मात्र से खेदा स्थान में उपस्थित होने के निमित्त माहुत(महावत) गण सर्वदा प्रस्तुत रहते है। इस समय वे संगृहीत, पाट के द्वारा जंगली हस्ती बाँधने की रस्सी तैयार करते रहते है।

जंगली हस्ती के कोठे में आबद्ध होने के संदेश मात्र मिलने के बाद ही माहुत गण अपने अपने हस्ती लेकर खेदा स्थान में उपस्थित होता है। हस्ती के पीठ में मोटा काछि(दोमा) तथा अपेक्षाकृत पतला काछि लिया जाता है। माहुत गण के हाथ जाठा रहता है। माहुत गण हस्ती के गर्दन तथा पृष्ठ में पेट के बल पर शायित(सुप्त/लेटे) अवस्था में रहते है।

कोठ के प्रवेश द्वार व्यतीत(छोड़) अन्य और एक अन्य स्थान काटकर पालित हस्ती के प्रवेश का रास्ता किया जाता है। प्रवेश द्वार द्वारा जंगली हस्ती बाहर होने के निमित्त सर्वदा कोशिश में रहते है, अतः वह द्वार नही खोला जाता है। जिस स्थान में पुरातन हस्ती के प्रवेश दरवाजा काटा जाता है, उस स्थान में एक या दो बलवान गुण्डा हस्ती प्रहरी स्वरुप रखा जाता है। जंगली हस्ती उस पथ में बाहर जाना चाहने पर द्वार रक्षक हस्ती उनको मारकर हटा देते है। उक्त पथ में एक एक करके पालित हस्ती कोठे में प्रवेश होते है, प्रत्येक हस्ती के पृष्ठ में दो जन लोग रहते है, वे इस रुप से लेटे रहते है, ताकि सहज ही जंगली हस्तीगण के द्वारा देखा न जाय। समस्त हस्ती प्रविष्ट होने पर, उनके प्रवेश द्वार उसी क्षण दृढ बन्द कर दिया जाता है।

कोठे भीतर पालिता कुनकी हस्ती लिया जाता है, गुण्डा हस्ती द्वारा कोठ के भीतर का कार्य साधित नहीं होता है। पुरातन हस्ती जब कोठे में प्रवेश करते रहते है, तब सब जंगली हस्ती कोठे के दूसरी तरफ खडे होकर, चकित दृष्टि से उनको देखते रहते है। कई समय सब जंगली हस्ती सिपाही की तरह श्रेणीबद्ध होकर कान तथा पूँछ खडी करके तथा शुण्ड उत्तोलन करके खडे होते है। प्रधान दो तीन हस्ती, पालित हस्तीयों पर आक्रमण करते है। सब पालित हस्ती माहुत के इंगित अनुसार से जंगली हस्ती पर दन्त शुण्ड तथा पदादि द्वारा प्रहार करते रहते है। एक एक जंगली हस्ती के साथ तीन–चार पालित हाथी द्वारा प्रहार किया जाता है। इस तरह दानों पक्ष में एक युद्ध हो जाता है तथा आक्रमणकारी जंगली हस्ती मार खाकर भयभीत तरीके से अपने दल में जाकर मिलते है। हर समय यह अवस्था नहीं घटती।

सारे हस्ती कोठे में प्रविष्ठ होने के साथ साथ वे विपन्नावस्था अनुभव करते है। कुछ काल उन्मत्त की तरह दौडा दौडी तथा कोठ तोडकर जाने की कोशिश करके असफल होने पर भय तथा असहाय अवस्था में अनेक कोशिश कर निश्चेष्ट हो पडते है तथा अश्रु धारा विसर्जन करते रहते है। बहुत अल्प उम्र वाले बच्चे जननी के पेट के नीचे छिपा हुआ होकर मात्र चिल्लाना शुरु करते है। पुरातन हस्ती के कोठे में प्रवेश होने के बाद, सब जंगली हस्ती जैसे और एक नूतन दुर्घटना की आशंका से व्याकुल हो उठते है। कुछ काल दौडा दौडी तथा पालित हस्ती के साथ युद्ध करके परास्त होने के बाद, सब एक स्थान में एकत्रित होते हैं, तथा एक दूसरे के शरीर के अन्दर छिपना चाहते है। बहुत सी सिंगी(सिंग) मछली जल पूर्ण घडे में रखने से वे जैसे आपस में उलट पलट खाते है, इस समय सारे हस्ती भी ठीक उसी रुप से एक दूसरे से शरीर ढकना चाहते है, एक दूसरे के पेट के नीचे सिर छिपाना चाहते है।

इस समय पालतू हस्ती द्वारा जंगली हस्तीयों को चतुर्थ तरफ से वृत्ताकार से घेरा जाता है तथा समस्त हस्तीयों के मस्तक ब्यूह के बाहर की तरफ रखकर पीछे के द्वारा ठूँस कर जंगली हस्तीयों को बेडे के मध्य ठूँस कर रखते है।

कोठे में प्रविष्ट पालतू हस्तीनी के मध्य जो सर्वपेक्षा बलशालीनी शिक्षित तथा सतर्क होती है, उसको हस्ती बन्धन के प्रधान सहायक रुप में ग्रहण किया जाता है। बन्धन कार्य में चालाक तथा शीघ्रस्थ हस्त दाईदार(माहुत गण के सरदार) इस हस्तीनी के पृष्ठ में रहते है तथा उनके चढने तथा उतरने के लिए हस्तीनी के पृष्ठ देश से दो रस्सी लटकाकर उसमें सीढी की तरह खण्ड खण्ड रस्सी बाँधा जाता है, इसके द्वारा पृष्ठ से उतरकर तथा पृष्ठ में चढने के लिए सीढी का कार्य किया जाता है। साधारणतः इसको ''सीढी'' तथा उक्त हस्तीनी को ''सीढी का हाथी'' कहा जाता है।

दाईदार धीरे धीरे सीढी की सहायता से मिट्टी में उतरकर कुनकी के सीने के नीचे उपविष्ट(बैठते) होते है तथा जंगली हस्ती के पीछे एक छोटा कंचि(बांस बेंत की तरह कंचि भी एक वनोपज है।) की लाठी द्वारा

धीरे धीरे आघात करके देखते हैं, कि हाथी लात मारता है या आक्रमण करना चाहते है कि नहीं। सुविधा पाने पर ही पीछे के दोनों पाँवों में घने घने बाँधकर द्रुत हस्त से बाँध लिया जाता है। इस बाँध को ''परताला'' कहते हैं।

परताला करने के समय दाईदार का जीवन नितान्त संकटापन्न तथा हर मुहुर्त जंगली हस्ती के द्वारा निहत होने की आशंका रहता है। दुर्घटना होने की संभावना देखने पर सीढी चढ़कर हस्ती के पृष्ठ पर चले जाते हैं। तद्रूप उपाय अवलम्बन की सुविधा न पाने पर ''सीढी के कुनकी'' के प्रति निर्भर करना पडता है। उक्त कुनकी आक्रमणकारी जंगली हस्ती को सूँड द्वारा धकेलकर, दाइदार को सीने के नीचे रखकर, बहुत समय सूँड द्वारा जंगली हस्ती को ढकेल कर या अचानक बैठकर, दाईदार की रक्षा करते हैं। इस समय दाईदार का जीवन रक्षा का भार अनेक परिमाण में सीढी के कुनकी के उपर निर्भर रहता है।

पूर्वोत्त रूप की तरह पीछे के पैर परताला करने से हस्ती के निकटवर्ती वृक्ष के साथ बाँध दिया जाता है तथा पालतू हस्ती की सहायता से उसके गल देश में एक मोटा काछि(दोमा) बाँध कर वह दोमा समक्ष की तरफ अवस्थित अन्य एक पेड के साथ बाँधा जाता है। बन्धन दशा में पतित होने पर हस्ती सब बँध से छुटने के निमित्त प्राणपण कोशिश करते हैं। इस समय जीवन की ममता परित्याग करके, जी जान से, वे पागल की तरह फिसल पडते हैं, मिट्टी में दन्तघात करके तथा आर्तनाद करते रहते हैं। तत्काल में इनके मुक्ति की कोशिश, अधीरता तथा अश्रुपात दर्शन करने से, निर्दय ह्रदय में भी दुःख की उत्तेजना दिखाई देती है।

एक एक करके समस्त हस्ती पूर्वोत्तरूप में बाँधा जाता है। दुग्ध पायी छोटे बच्चों को बाँधने की जरूरत नहीं होती है। वे अपने से ही जननी के साथ रहते हैं। दुग्ध पोषण बच्चों के थोडा बडे होने पर उनके गले में एक मोटी रस्सी बाँध कर माँ के साथ रखा जाता है। नहीं तो वे माँ की ममता और दुग्ध पान के आकर्षण को भूलकर होकर जंगल की तरफ भागते है।

समस्त हस्ती बाँधे रहने पर, उनको कोठे से एक एक करके बाहर किया जाता है, वह एक और मुख्य समस्या है। जिस पथ में पालतू हस्ती कोठे में प्रवेश कराया गया है, पुनर्बार उसे खोल करके जंगली हस्ती को उस पथ में बाहर किया जाता हैं। हस्ती की अवस्था, आकार तथा बल विवेचना करके किसी के गले में एक तथा किसी के गले में दो दोमा लगाया जाता है, व माथे में एक रस्सी बांध कर, एक पालतू हस्ती वक्ष में लपेट कर बाँध दिया जाता है, वे उस दोमा की सहायता से जंगली हस्ती को खींच कर ले जाते हैं। जंगली हस्ती के सामने की तरफ छूट पाकर अग्रवर्ती पालतू हस्ती को आघात करते हैं तथा बल प्रकाश करने की सुविधा पाते हैं। इसलिए पीछे के पैर में काछि बाँधकर अन्य पालतू हस्ती द्वारा पीछे की तरफ खींचकर रखा जाता है, तद्रूप सामने की हस्ती को आक्रमण अथवा सामने की तरफ अतिरिक्त बल प्रकाश नहीं कर पाते।

इस रूप से अग्र तथा पीछे भाग में काछि बाँधकर पालित हस्ती द्वारा खींचकर जब जंगली हस्ती को कोठे बाहर किया जाता है तब वे और एक अन्जान अभिनव दुर्घटना की आशंका से अधीर हो उठते है, कोठे से बाहर नहीं होना चाहते, जैसे अज्ञात अवस्था को ही ज्ञान करते हैं। बाहर करने के समय इधर–उधर होकर व सपाट होकर मिट्टी में गिरकर मिट्टी में दाँत गाडकर तथा वृक्षादि में सिर गिराकर जोर से कोठे के भीतर रहने की कोशिश करते हैं। फिर बहुत देर कोशिश से अति कष्ट से कोठे से सिर निकाल लेने से, तब दौडने के लिए ऐसे वेग से दौडते हैं जो तीन चार पालतू हस्ती जी जान से खींचकर भी सहज ही रूक नहीं पाते, भीम वेग की तरह दौडने हस्तियों को भी जंगल की तरफ खींचकर ले चलते हैं। तब पुराने हस्ति अतिरिक्त बल प्रयोग के लिए मल मूत्र त्याग के सहित चिल्लाते हैं।

कोठे से बहिष्कृत हस्ती बन्धन करने के उपयुक्त स्थान पहले ही निर्वाचन किया गया है। वह स्थान वहीं या पार्वत छडा के साथ होना आवश्यक है, नये हस्ती के पक्ष में जल एकान्त जरूरी है। हस्तियों को कोठे से बाहर करके निर्दिष्ट स्थान पर रखकर तथा श्रेणीबद्ध तरीके से स्वतन्त्र स्वतन्त्र वृक्ष के सहित बन्धन किया जाता है।

जो सब हस्ती बाँधे जाते है, पात बेडे के भीतर उनके अतिरिक्त और हस्ती रहने पर, कोठे का जो सब अंश क्षति हुआ है। वह संशोधन करके पुनर्बार पूर्वोक्त प्रणाली में उन सबको कोठे में आबद्ध तथा बन्धन किया जाता है।

यही मेला खेदा की सामान्य प्रणाली है। इसके अलावा बहुत छोटे छोटे कार्य तथा कार्य प्रणाली की बात रह गयी है, उनको पूरा उल्लेख करने से स्वतन्त्र ग्रंथ लिखने की जरूरत है। कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने पर उस सभी को जान लेना कठिन नहीं होता है। पुराने खेदाकारी गण उन सब विषय में अभ्यस्त रहते हैं।

बांगडी खेदा

इस प्रणाली में खेदा करने में, 100 से 150 तक लोग लिये जाते है। मेला खेदा प्रणाली के अनुसरण से हस्ती की खोज लेकर, पात बेड किया जाता है। इस बेडे की परिधि प्रायः ही अर्ध मील से अधिक नहीं लिया जाता है। बेडे के चतुर्थ तरफ 9 फुट प्रशस्त तथा डेढ फुट गहरा गढ्ढा खोदा जाता है, तथा उसमें वृक्ष द्वारा मेला खेदा की प्रणाली में कोठ प्रस्तुत करके हस्ती दौडाते हुए लाकर उसमें प्रवेश कराया जाता है, तथा पूर्वोत्त प्रणाली की तरह हस्ती बन्धन तथा कोठे से बाहर किया जाता है।

बांगडी खेदा में लोग, बल तथा अर्थ व्यय कम लगता है। हस्ती के छोटे छोटे दल रहने पर इस प्रणाली में धृत करना ही सुविधाजनक है। बृहत दलबद्ध हस्तीओं को बांगडी खेदा में धृत करना असम्भव है। इसलिए मेला खेदा करना ही सर्वोत्तम तरीका व श्रेयस्करः है।

बांगडी की द्वितीय प्रणाली

हस्तीगण आरोहण करने में अक्षम है, अब दो उन्नत पर्वत के मध्यवर्ती संकीर्ण निम्न भूमि के(गिरि संकट) मध्य से हस्ती दोआल(सर्वदा गमनागमन के पथ) रहने पर कोठे के प्रस्तुत की प्रणाली अनुसार उक्त गिरि संकट के मुख को दो वृक्ष के बेडे के द्वारा बन्द करना पड़ता है तथा जिस तरफ हस्ती विचरण करते हैं, उस तरफ प्रवेश द्वार रखकर कोठे की तरह पत्रादि से ढक करके बेडों को ढक दिया जाता है। अब हस्ती आगमन की प्रतीक्षा से कोठे के निकट अति अल्प संख्यक प्रहरी नियुक्त रखा जाता है। अनेक समय हस्तीयूथ पथ क्रम से अपने आप से ही कोठे में प्रविष्ठ होते है। तत्काल से प्रहरीगण के दरवाजा बन्द कर देने से ही हस्ती आबद्ध हो जाते हैं। बाद में पालतू हस्ती की सहायता से उनको बाँधना पडता है। बहुत समय तक हस्तीयूथ के स्वेच्छा से विचरण करते करते कोठे के निकटवर्ती होने के बाद सामान्य रुप से दौडाने से चिराभ्यस्त पथ पकड़ कर कोठे में जाकर पडते हैं।

फांसी शिकार

जिस स्थान पर जंगली हस्ती चढते रहते हैं, पुराने कुनकी हाथी को लेकर वहां जाकर धीरे धीरे जंगली हस्ती के साथ मिल जाते हैं। पालतू हस्ती का वक्ष घेराव करके एक सुदृढ रस्सी बाँधकर, उसके साथ फाँसी की रस्सी को दूसरे सिरे में बाँधा जाता है। तथा अन्य हस्ती की सहायता से वह फांद जंगली हस्ती के गल देश में लगा दिया जाता है। प्रथम हाथी द्वारा गले में फांद पहनाने से व द्वितीय एक हाथी की सहायता से और एक फांद जंगली हस्ती के गले देश में पहना दिया जाता है। नहीं तो कई बार गलाबन्द की रस्सी छिन्न करके जंगली हस्ती पलायन करते हैं। अथवा एक तरफ से खींचाव होने के कारण गल देश इस रूप से फाँसी ऐसा कस जाता है कि उसके फलस्वरूप श्वास रूककर आबद्ध हस्ती मृत्यु मुख में पतित होता है।

इस प्रणाली में हस्ती धृत करने के लिए पालतू हस्तीयों का विशेष बलवान रहना आवश्यक है। इस उपाय से दो चार से अधिक हस्ती धृत करने की सुविधा नहीं होती है। छोटा कुनकी अथवा बच्चा हाथी इस प्रणाली में धृत किया जा सकता है। बृहत गुण्डा या बल शालिनी कुनकियों को इस उपाय से धृत करना सहज साध्य नहीं होता।

परताला शिकार

मदमत्त जंगली गुण्डा हस्ती समय समय में यूथ भ्रष्ट होकर फालतू कुनकी की हस्तीनी के साथ आकर मिलते हैं। तब पाँच सात कुनकी के द्वारा उसको बेड करके कोठे अन्दर आबद्ध करते है। हस्ती को परताला करने के नियमानुसार पीछे के दो पांव बाँध लेते हैं। तथा तत्पर गले में दोमा पहनकर वृक्ष के साथ बन्धन करते हैं। इस कार्य में

दाईदार का विशेष विशेषता आवश्यक होती हैं, आत्म जीवन विपदापन्न करके उनको इस कार्य में प्रवृत्त होना पडता है।

फांद शिकार

यूथ भ्रष्ट वन्य गुण्डा हस्ती आकर फालतू कुनकी के साथ मिलने आने पर उस कुनकी को एक वृक्ष के साथ बाँधकर, एक सुदृढ रस्सी के एक सिरे से उक्त वृक्ष के साथ व अन्य वृक्ष से बन्धन पूर्वक दूसरी तरफ गढ़ढा प्रस्तुत करके मिट्टी में फेंककर रखा जाता है, तथा फांद के दोनो तरफ दो लटठा पतला रस्सी से बाँधकर तथा उस रस्सी के दोनों दूसरे सिरे वृक्ष स्थित मनुष्य के हाथ में रखा जाता है। फाँद के रस्सी को कूडा करकट द्वारा इस रूप से ढक दिया जाता है कि वह समागत जंगली हस्ती के दृष्टिगोचर न हो। गुण्डा हस्ती कुनकी के आसपास घूमते रहते हैं। बारम्बार यातायात करने के समय फाँद के भीतर पैर फेंकने पर ही वृक्ष के उपर अवस्थित लोग फाँद के सहित आबद्ध पतला रस्सी अचानक उपर की तरफ खींच लेते हैं। तब फाँद हस्ती के पाँव के उपर की तरफ उठकर कस जाता है। इस पतली रस्सी को ''काल–रस्सी'' कहा जाता है।

रस्सी तोड़ने के निमित्त हस्ती जितनी कोशिश करते हैं। फाँद उतनी ही ज्यादा कसती जाती है। तत्पर पालित पाँच सात हाथी को बेडे रखकर पूर्वोत्त प्रणाली में हस्ती के पीछे पदद्वय बन्धन तथा गले में दोमा पहनाया जाता है।

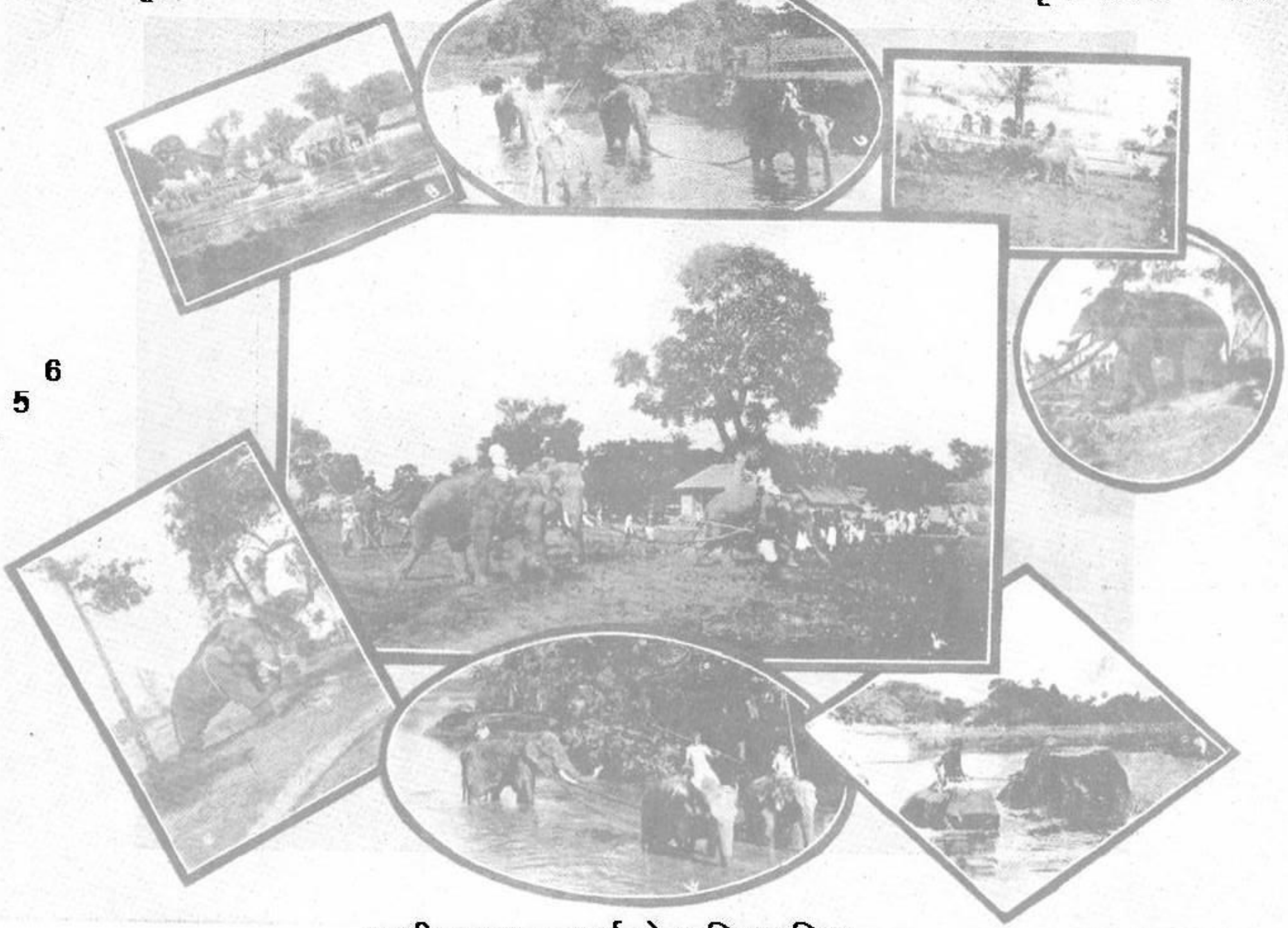
किसी किसी समय फाँसी की रस्सी टूटकर अथवा दो पैरों के परस्पर घर्षण द्वारा फाँसी खुलकर आबद्ध हस्ती पलायन करते हैं। पीछे के पदद्वय परताला न करने तक उसको आबद्ध रखने की आशा की नहीं जाती।

अकसर जिन सब प्रणाली में हस्ती धृत किया जाता है, उसका स्थूल विवरण प्रदान किया गया है। प्राचीन काल में अन्य प्रकार की प्रणाली भी अवलम्बित होता था, वर्तमान काल में वह प्रचलित नहीं है। अतः उनका विवरण उल्लेख करना निष्प्रयोजन है।

हस्ती बन्धन करने के बाद प्रतिदिन जल में लेकर स्नान कराना पडता है। उस समय ही वे जलपान करते हैं। किसी किसी समय जंगली हस्ती को जल से सहज से नहीं उठाया जा सकता, तीन चार पालित हस्ती द्वारा खींच कर उठाया जाता है। इस समय बन्धन खोलना, पुनर्बार बन्धन करना, तालाब में ले जाना तथा लौटा लेना आदि जंगली हस्ती के समस्त कार्य ही पालतू हस्ती की सहायता से साधित होता है, तथा उनके आहार्य वस्तु भी पालित हस्ती द्वारा संगृहीत होता है।

काछि के घर्षण से पकडे हस्ती के पैर तथा गले में घाव हो जाता था। वह घाव ना होने तक हस्ति बन्धन छिन्न करने के निमित्त नाना उपाय से बल प्रकाश करते हैं। क्षत होने के बाद उसके उपर रस्सी के घर्षण पडने पर अत्यन्त दुखता है। इसी कारण अधिक बल प्रयोग में समर्थ नहीं होते तथा घाव की यातना से सारे हस्ती दुर्बल हो पडते है। किसी किसी समय दुग्धपोष्य बच्चा, माँ को बन्धन मुक्त करने के निमित्त छोटे शुण्ड

6
5
4
3
2
1



हाथी साइस्ता कार्य के कतिपय चित्र

(1) सद्यधृत हस्तीबन्धन (2) सद्यधृत हस्ती स्थानान्तरण (3) नहाने हेतु नया पकड़ा हाथी
(4) नए पकड़े हाथी को पानी से उठाने की चेष्टा (5) सजाहुआ नया हाथी
(6) नए हाथी के पीठ पर चढ़ना, पानी में (7) नए हाथी को ''बैठ'' शिक्षा (8) नए हाथी का जोड़ फिराना

द्वारा बन्धन रज्जू छिन्न करने में व्यर्थ कोशिश करते है। छोटे छोटे बच्चों का यह कार्य दर्शन करने से हँसी आती है, दुख भी होता है। काफी कोशिश करके, कार्य न होने से किसी किसी समय बच्चे क्रुद्ध होकर चिल्लाते रहते हैं। अनेक बंधी कुनकी परिवार में रहकर क्रोध तथा दुख से ऐसे दुखी होती हैं, कि अपने बच्चे को दुग्ध प्रदान नहीं करती। शिशु के दुग्ध पान करने आने से ही उसे निर्दयता से लात मारकर या शुण्ड से आघात करके दूर फेंक देते हैं। इस अवस्था में अनेक बच्चे दुग्ध के अभाव में तथा गुरूतर आघात से मृत्यु मुख में पतित होते हैं। गुण्डों के क्रोध से तथा अभिमान में नितान्त प्रबल इस जातीय अनेक हस्ती बन्धन दशा में पतित होने पर, अनाहार से जीवन त्याग देते हैं। कोई कोई हस्ती क्रोधान्ध व दग्ध होकर दण्डायमान अवस्था से सजोर पतित होकर मिट्टी में दन्ताघात करते है, तथा उस आघात के साथ साथ ही उनका प्राण वायु बहिर्गत होती हैं। अनेक समय बल प्रयोग के कारण किसी किसी हस्ती के गले में दोमा कसकर फाँसी लगता है तथा इसके कारण उसकी मृत्यु होती है। इन सबके कारण जंगली हस्ती के निकट सर्वदा सतर्क प्रहरी रहते हैं तथा आकस्मिक घटना से, जरूरत कार्य सम्पादन के निमित्त कतिपय पालित हस्ती सर्वदा निकट में रखा जाता है।

साईस्ता कार्य

जंगली हस्ती को पालतू बनाने के निमित्त जो सब कार्य किया जाता है। उसको ''साईस्ता'' कहते है। साईस्ता कार्य में सुनिपुण दाईदार तथा माहुत नियुक्त करना पड़ते है। इस समय हस्ती के किसी भी तरह मन्द अभ्यास जन्म लेने से वह संशोधन करना असंभव हो उठता है, इसलिए हस्ती साईस्ता करने के समय दो संशोधन के प्रति विशेष दृष्टि रखना पडता है।

साज करना साईस्ता का प्रथम कार्य हस्ती को साज में खडा करना, आगे के दोनो पैर तथा पीछे के भाग में दो पैर परताला करके बाँधा जाता है। उसके बाद वक्ष तथा पृष्ठ लपेट करके एक गुच्छा रस्सी बाँधना पडता है। उसको ''फारा'' कहा जाता है, उसके बाद अन्य एक गुच्छा रस्सी मध्य भाग में गल देश के नीचे में झुलाकर उसके माथे तथा मस्तक के दोनों तरफ ''दोनो कन्धे के उपर देकर'' पृष्ठ में उठाकर पश्चात् की तरफ पूँछ के निम्न भाग पकड़ाकर बाँधना पडता है। इसका प्रचलित नाम ''दुबला'' है। पेट में और एक गुच्छा रस्सी बाँधना पडता है, उसकी ''पेट्टी '' कहते है। इसके बाद पीछे के दो पाँवों के उपर झुलाकर, पृष्ठ देश के रस्सी के साथ तथा एक गुच्छा रस्सी बाँधा जाता है, उसका नाम ''तूरपान'' है। गले में माला के आकार के कई पेंच रस्सी बाँधा जाता है। उसको ''दुल्शी'' कहते हैं। इसके अलावा गले में पूर्ववत दोमा बाँधा रहता है। इस कार्य को ''साज'' कहा जाता है।

तृतीय लहर – 270

खुजलाना इसके बाद एक मूली बाँस के अगले भाग के कुछ अंश को थोडा कूट कर झाडू के सांक की तरह किया जाता है तथा दूर से बंश सलाका से उस हस्ती के समस्त अंग को सहलाया जाता है। नये हस्ती के गुदगुदाहट अधिक होता है। "बंश सलाका" द्वारा अंग खुजलाना उसको असहनीय होता है, तथा शरीर नाना तरीके से टेढा करके चिल्लाते रहते हैं। अनेक समय उल्टा पल्टा होकर लेटते है। इस तरीके से दो तीन दिन खुजलाने से गुदगुदाहट कम हो जाता है।

हाथ सहलाना इसके बाद पीछे जाकर विशेष सतर्कता के साथ धीरे धीरे हाथी के शरीर को हाथ से सहलाते हैं। यह भी पहले पहले हस्ती असह्य बोध करते है। क्रमशः सह जाता है। इस समय हस्ती के पूँछ को उपर की तरफ पृष्ठ के रस्सी के साथ बाँध रखना पडता है नहीं तो मनुष्य के पीछे जाने पर पूँछ का आघात होता है। इतनी जोर से आघात करता है कि उससे मनुष्य का प्राणान्त भी हो सकता है।

पृष्ठ में चढ़ना अतएव पीछे के पैर में झूले हुए रस्सी(तूरपान) पर पद रख करके तथा पूँछ नीचे से गले तक बँधे रस्सी(दुबला) को दृढ हाथ से पकड़ कर एक आदमी पीछे के पाँव के उपर खडा होता हैं। हस्ती उसको फेंक देने के निमित्त सर्वदा ही कोशिश करते हैं। जब मनुष्य का उस अवस्था में खडा होना असम्भव होता है तब माहुत कूद जाते हैं व पुनः चढ़ खडे होते है। इस अवस्था में हस्ती के पीछे की तरफ तथा पीठ के जिस हिस्से में हाथ जा सकते हैं उस भाग में हाथ सहलाते रहते हैं। यह कार्य कितना सह गया देखकर, मनुष्य रस्सी पकड़ कर धीरे धीरे पीठ की तरफ अग्रसर होते हैं, तथा क्रमशः पीठ में चढ़ जाते हैं। इस समय सर्वदा हस्ती के शरीर में हाथ फेरना पडता है। पृष्ठ में चढ़ने में हस्ती आपत्ति न करके क्रमशः दोनों पैर लटका कर आसन(गर्दन के पीछे भाग में) जाकर बैठते है। तीन दिन के अन्दर हाथी के पीठ पर बैठा जा सकता है। हस्ती दुष्ट या अति क्रोधी होने पर, इस कार्य में कुछ अधिक समय लगता है।

जोड लौटाना हस्ती द्वारा पृष्ठ में लोग लेने में अभ्यस्त होने पर, दो पालतू हस्ती दोनों तरफ रखकर, उनके पेट में लगे रस्सी के सहित जंगली हस्ती के गलदेश में दो गुच्छे रस्सी बाँध देते हैं एवं दोनो पालतू हाथी को बीच में रखकर जंगली हस्ती लेकर मैदान में बाहर लाते है। इस समय जाठाधारी एक आदमी अग्रगामी होता है तथा पास में तथा पीछे जाठा सहित लोग रहते हैं। दोनो पालित हस्तीयों के मध्य से जंगली हस्ती के आगे या पीछे में जाना चाहने से आघात द्वारा उनको दमन किया जाता है। हस्ती बाध्य न होने तक साईस्ता समस्त कार्य में ही माहुत गण उनको निर्दयी तरीके से प्रहार करते हैं, जाठा के आघात, हंसिया

से कोप इत्यादि द्वारा सर्वांग क्षत विक्षत करते हैं। इस रूप से मार खाने के भय से सब हस्ती वशतापन्न होते हैं।

"बैठ" शिक्षादान पूर्वोत्त तरीके से दो तीन दिन मैदान में घुमाकर जंगली हस्ती पृष्ठ के बाँयी ओर मेरूदण्ड के चार उँगली परिमाण में नीचे हसिया द्वारा काटकर एक क्षत किया जाता है। इस क्षत को "घाट" कहते हैं। इसके बाद एक पालतू हस्ती की सहायता से उसको जल में उतारकर पृष्ठ स्थित माहुत पृष्ठ के घाव के उपर अंकुश के अग्रभाग द्वारा सजोर से दबाव देकर अतिशय दुःख देते हैं तथा "बैईठ–बैईठ" आवाज से चिल्लाते हैं। हस्ती यातना से अधीर होकर उलट पुलट होकर चिल्लाते रहते हैं तथा जल के भीतर बैठ जाते हैं। अनेक समय हस्ती माहुत को पीठ से झाड कर फेंक देते हैं, जल में पतित होने से, उसे चोट नहीं लगता है।

इस तरह से क्रमशः "बैईठ" शब्द सुनने से ही बैठना पडेगा, हस्ती यह समझते हैं। यह सुनकर न बैठने पर घाव में खोचा जाता है, तथा बैठने पर और खोचा नहीं जाता है, यही बैठना सीखने का "मूल" कारण है। जल के भीतर बिना आपत्ति के बैठने का अभ्यास होने पर क्रम से जमीन में बैठाया जाता है।

क्रमान्वय से 15 दिवस दो बेला घुमाने के बाद, एक पालित हस्ती परित्याग करके, एक हस्ती के साथ बाँधकर घुमाया जाता है, इसको "एक छडा" कहते हैं। इस तरह 15 दिवस चलने से अभ्यास करने के बाद, पालतू हस्ती से पृथक करके चलाया घुमाया जाता है, इस समय पालतू हस्ती साथ में रहते हैं। हस्ती को चलने फिरने की शिक्षा देने के समय पूर्व व बाद में उसके गर्दन में माहुत उपविष्ट रहते हैं, तथा ईशारा करके, माहुत के इच्छानुरूप चलने की शिक्षा देते हैं।

माहुत के ईशारे के अनुसार से हस्ती उठने, बैठने तथा चलने में विशेष तरीके से अभ्यस्त होने पर, क्रम क्रम से "बोल"(सांकेतिक शब्द) समझा जाता है। यह सब शब्दानुयायी कार्य करने में अभ्यस्त होने पर जरूरती नाना विध कार्य सिखाया जाता है। हाथियों के शान्त, अनुगत तथा कार्य क्षम होना, माहुत के यत्न तथा पटुता के उपर सम्पूर्ण निर्भर करता है।

हस्ती पालन

खाद्य निर्वाचन नव धृत हस्ती का स्वास्थ्य अच्छा रखना विशेष कष्ट साध्य तथा यत्न सापेक्ष है। खाद्य के उपर भी इस विषय में निर्भर करता है। कदली वृक्ष, डूमुर या वट के अच्छे डाल, मुलायम धान सह धान पेड, बाँस पत्ता, बाँस के करूल(नवोदगत बाँस), नल, तारा, खागडा, दल–घास, ईक्षु आदि अवस्था भेद में खाद्य प्रदान करना पडता है।

अधिक केले के पेड खाने देने से वर्षा के समय हस्ती के शरीर जल के भार होने की आशंका रहती है। अधिक वट के डाल खिलाने से बहुत समय चक्षु रोग जन्मते है।

तारा के भक्षण से हस्ती में गरम क्रिया तथा जल का भार कम होता है। बाँस के पत्ते तथा करूल विशेष पुष्टिकर तथा हस्ती के पक्ष में उपादेय खाद्य है। मुलायम धान तथा ईख विषघ्न होता है। हस्ती को क्रमान्वय रोटी और चावल खिलाने में भी अभ्यस्त किया जाता है। जिस स्थान में जंगली संकूल पर्वत या कच्चे घास आदि पाने की सुविधा नहीं है, उस स्थान में रोटी, धान्य, चावल तथा हलुवा आदि हस्ती आहार्य निर्धारण किया जाता है।

स्वास्थ्य विधान तथा रक्षणावेक्षण साईस्ता करने के समय हस्ती के पैर में, गले तथा अन्यान्य अंग में घाव करते रहते हैं, वह सब घाव सर्वदा साफ करके प्रतिकारजनक औषध प्रयोग करना पडता है, नहीं तो अनेक समय घाव में कीडे पनप तथा सड़ कर कष्टदायक हो जाते हैं। इसी कारण किसी किसी हस्ती की मृत्यु भी हो जाती है।

साफ तथा सूखे स्थान में हस्ती बाँधना पडता है। उसके उपर छाया रहना आवश्यक है तथा स्थान पक्का रखना(सीमेन्ट लगाकर, चूना सुर्खी आदि से) अच्छा होता है। हस्ती बन्धन स्थान से बचा हुआ खाना, द्रव्य तथा मल मूत्र आदि सर्वदा स्थानांतरित करना पड़ता है। मल मूत्रादि के मध्य हस्ती बाँधने पर अल्प दिन में ही पाँव के नीचे के रोग पनपता है तथा सर्वदा धूप में बाँध रखने पर उसके कारण हस्ती का स्वास्थ्य नष्ट होता है।

प्रतिदिन पानी में उतारकर हस्ती को स्नान कराना आवश्यक है। उसके समस्त अंग को झामा तथा नारियल के फूस से मांज कर साफ करना पडता है। उससें चर्म के उज्वलता की वृद्धि होती है। प्रतिदिन कम से कम अन्ततः मस्तक में तेल मर्दन की व्यवस्था रखना स्वाभाविक है, इससे हस्ती का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

हस्ती के शरीर की अवस्था समझकर उसके खाद्य की व्यवस्था करना कर्तव्य होता है। प्रतिदिन उपयुक्त परिमाण से आहार प्रदान के प्रति विशेष दृष्टि रखना पडता है। अल्पाहार से हस्ती क्रमशः दुर्बल हो जाता है तथा उसके कारण नाना प्रकार के रोग सृष्टि होते है। अधिक दिन एक प्रकार का आहार प्रदान करना भी संगत नहीं, समय समय वह परिवर्तन करना पडता है। हस्ती के द्वारा उसके साध्य के अतिरिक्त भार वहन करवाने से बडे भारी वस्तु खिंचवाने से, या तो उपयुक्त आधार तथा विश्राम प्रदान न कराके, अविश्राान्त तरीके से परिश्रम करवाने से, अल्पकाल के मध्य ही हस्ती का स्वास्थ्य भंग हो जाता है तथा वही अनेक हस्ती के मृत्यु का कारण होता है।

किसी किसी प्रदेश में अधिकांश समय हस्ती को जंगल में छोड़कर रखा जाता है। इस रूप स्थल में हस्ती के सम्मुख दो पाँव परस्पर लोहे के बेडी तथा सुदृढ रस्सी के द्वारा बाँध कर छोड़ना पडता है तथा प्रतिदिन उसके गतिविधि लक्षण करना संगत है। पूर्वोक्त रूप पाँव के बाँध को ''बाण्डा'' कहते हैं। किसी कारण बाण्डा टूट जाने पर अथवा बेडी भंग होने पर अनेक हस्ती घने जंगल में पलायन करते हैं। तथा जंगली हस्ती के दल में मिलकर जंगली भावापन्न होते हैं। इस रूप अवस्थापन्न में बहुत पुराने हस्ती, जंगली हस्ती के साथ पुनर्बार खेदा में धृत होते दिखाई दे जाते हैं।

तृतीय लहर – 273

हस्ती के समक्ष पाँव दोनो बाँधे रहने पर, जल में या कीचड मे गिरकर अथवा जंगल में आबद्ध होकर आघात प्राप्त होने पर – मृत्यु मुख में पतित होने की आशंका रहती है, इसी कारण जंगल के विचरण काल में सर्वदा हस्ती का संधान लेना आवश्यक है। इस समय जंगली गुण्डा हस्ती द्वारा उपद्रुत होने का भय रहता है। बच्चा हस्तीयों पर अनेक समय बाघ द्वारा आक्रमण तथा वधित होते हैं।

हस्ती की पीडा तथा चिकित्सा

हस्ती चिकित्सा हस्ती के व्याधि अनेक परिमाण में मनुष्य के व्याधि के अनुरूप दृष्ट होता है। आयुर्वेद शास्त्र में हस्ती चिकित्सा विधान सन्निविष्ट हुआ है। किसी किसी पुराण ग्रंथ में भी इस विषय का उल्लेख मिलता है। उनकी आलोचना से यही जाना जाता है कि साधारणतः मनुष्य के शरीर में जिन सब व्याधि का जन्म होता देखा जाता है, हस्ती के देह में भी उसी प्रकार के व्याधि जन्म लेते है, इसकी चिकित्सा भी मनुष्य के चिकित्सा प्रणाली की तरह होना चाहिए। गरूड पुराण के मतानुसार मनुष्य के चार गुणा मात्रा में हस्ती के निमित्त औषध व्यवस्था है। बृहस्पति संहिता, पराशर संहिता, अग्नि पुराण, पालकाप्य तथा युक्ति कल्पतरू आदि ग्रंथ में हस्ती चिकित्सा विषयक अनेक विवरण मिलते हैं। पाश्चात्य के मत में भी गजायूर्वेद की प्रणाली में हस्ती की चिकित्सा होती है।

जंगली हस्तीगण स्वाभाविक संस्कारवशतः अपने ही औषध संग्रह कर लेते हैं। लवण युक्त मिट्टी, चिपकती मिट्टी आदि के द्वारा इनके औषध के कार्य साधित होता है। अनेक समय फिर अतिरिक्त मिट्टी विशेषतः ढेले मिट्टी भक्षण करने पर हस्ती को अस्वस्थ होते देखा जाता है।

मनुष्य की पीडा उपशम की तरह जैसे शान्ति स्वस्तयनादि दैवकार्य किया जाता है, हस्ती के पीडा निवारण कल्प में भी तद्रूप अनुष्ठान के विधान शास्त्र ग्रंथ में मिलता है। उसका कुछ आभास निम्न प्रदान किया जाता है, –

''गजोपसर्ग व्याधिनां शमनं शान्ति कर्म च।
पुजयित्वा सुरान् विप्राण ब्राह्मणे कपिलां ददेत्।।
दन्ति दन्तद्वये मालां निवध्नीयादु पोषितः।
मंत्रनं मन्त्रिता वैद्यो वचा सिद्धार्थ कामले।।
सुर्याद्याः शिव दुर्गा श्रीर्विष्णुना रक्षसांगणः।
बलिं दद्याच्च भूतेभ्यः स्नापयेच्च चतुर्घटेः।।'' इत्यादि

गरूड पुराण – 207 अध्याय।

आयुर्वेदीय अथवा पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्रानुसार से हस्ती के रोग निर्णय तथा औषध प्रयोग विषय में जो सब विधान हैं, इस स्थल में उनका उल्लेख करना असंभव तथा निष्प्रयोजन है। इसके लिए चिकित्सक का आश्रय ग्रहण करना अनिवार्य है। हस्ती बहुल त्रिपुरा राज्य में हस्ती चिकित्सा विषय में सुनिपुण तथा बहुदर्शी व्यक्ति वर्ग के कोशिश से हस्ती रोग निर्णय तथा मुष्टि योग चिकित्सा बहुत प्रचलित हुई थी।

तृतीय लहर – 274

उस समय परीक्षा में उत्तीर्ण पशु चिकित्सक नहीं थे, वे सब अनभिज्ञ व्यक्ति के द्वारा चिकित्सा कार्य साधित होता था, उसमें सुफल भी मिलता था। अस्त्रोपचार की प्रथा भी थी। अनेक समय टूटे बोतल के टुकडे से यह कार्य निर्वाह होता था। लौहमय अस्त्र प्रयोग की प्रथा भी विरल थी।

पूर्वोक्त अनभिज्ञ व्यक्तिगण के द्वारा ''हस्ती चिकित्सा'' नाम से बंग भाषा में एक ग्रंथ लिखा गया था। हस्ती रोग निर्णय, रोग के प्रकृति, निर्वाचन तथा औषध प्रस्तुत आदि विषयक अनेक बात उसमें विवृत था। स्वर्गीय महाराज राधा किशोर माणिक्य के समय यह मूल्यवान ग्रंथ के मुद्रण का आदेश हुआ था, नामालूम कारण से वह आदेश कार्य में परिणित नहीं हुआ। तत्पर राज ग्रन्थागार से यह कहां गया, खोज खबर नहीं है। इस प्रकार मूल्यवान एक प्राचीन प्रति का विनष्ट होना नितान्त ही दुःख की बात व क्षति जनक भी है।

वर्तमान काल में त्रिपुरा अंचल में दाईदार तथा माहुत आदि द्वारा हस्ती के जिन सब रोग का मुष्ठि योग चिकित्सा होता है, उसके दो चार विवरण निम्न में प्रदान किया जा रहा है।

रोग	चिकित्सा
जहर वात – यह वात रोग विशेष है इस रोग के आक्रमण से हस्ती के कोई कोई अंग विकल तथा अवश हो जाते है। इसके द्वारा पीछे की तरफ आक्रान्त होने पर हस्ती के बचने की आशा नहीं रहती, सम्मुख की तरफ आक्रान्त होने पर प्रायः जीवन रक्षा नहीं होता। इस रोग में पाँव आक्रान्त होने पर हस्ती अचल हो जाता है, तथा मुख की तरफ आक्रान्त होने पर आहार में अशक्त होकर मृत्यु मुख में पतित होता है।	पानलता के जड(यह वनजात लता) आधा पाव 125 ग्राम रक्तचिता का जड आधा पाव 125 ग्राम इसको पीसकर चावल के साथ मिश्रित करके हस्ती को खिलाओ।
मिट्टी खाना – हस्तीगण अनेक समय पीडा मिटाने के निमित्त स्वाभाविक नियम में मिट्टी खाकर रहते हैं। चिपकते मिट्टी से अनेक समय उपकारी होती हैं। किन्तु वह अतिरिक्त मात्रा में भक्षण करने पर, अथवा ढेले मिट्टी खाने पर उदर स्फीत हो उठता है, दिन दिन दुर्बल होते रहते हैं उदर– में में कृमि जन्म तथा पतला दस्त होता रहता है।	झकरिया बीज(लाटा) छाल 5 या 6 दाना। लाल अरेंडि(भेरण) पत्ता 7 या 8 करके। लवण आधा पाव पीसा कर एक बार में खिलाया जाता है। इसके मिट्टी भक्षण से रोग निवारित होता है तथा पेट साफ होता है। एक बार में लाभ न होने पर, एकाधिक बार यह औषधी व्यवहार करना पडता है।

तृतीय लहर – **275**

रोग

जल का भार – अनेक समय हस्ती के उदर में, गले में अथवा समस्त शरीर में जल का अधिक्य हेतु किसी किसी अंग में सूजन होता है। इस कारण हस्ती आहार आदि त्याग करके सर्वदा तन्द्रावेश में चक्षु मुद्रित करके रहते हैं तथा क्रमशः दुर्बल होते हैं। नूतन धृत हस्ती में रोग जन्म लेने पर आशंका ज्यादा रहता है। दीर्घकाल अविश्रान्त तरीके से कदली वृक्ष भक्षण से रोग का जन्म होता है।

चिकित्सा

एकसा ब्रान्डि	डेढ़ पाव
चिना बारूद	एक पाव।
मूसाबर	एक पाव।

यह सब वस्तु पीस व मिलाया जाता है। इस प्रलेप का उपयोग(कर्दम की तरह) करते है तथा इसे जलभाराक्रान्त स्थान में बारम्बार प्रलेप देना पडता है।

किसी किसी अवस्था में एक मात्र मूसाबार के प्रलेप से भी फायदा होता देखा जाता है।

हस्ती शरीर में जल उतरने पर या वाताक्रान्त होने पर निम्नलिखित औषध से भी उपकार होता है।

एकसा ब्रान्डि	एक पाईन्ट
चूडा	एक सेर
ईख गुड	अर्द्ध सेर
लवण	अर्द्ध पाव

इन सब चीज को मिलाकार केले के छिलके में डाल कर खिलाना पडता है।

अन्य प्रकार

कालेश्वर(केउडता) पेड के जड	अर्द्ध पाव
मन पेड के फूल	एक छटाक।
जंगि हर्तिकी	अर्द्ध पाव
काँटा नट के मूल	एक पाव
सुहागा	एक छटाक
विष कचु	एक छटाक

सभी को पीस कर हस्ती को खिलायेगें।

प्रकारान्तर

कच्चा हरिद्रा	अर्द्ध पाव
ईखु गुड	अर्द्ध सेर।
काला लवण	अर्द्ध छटाक।

मिलाकर हस्ती को भक्षण कराने पर रोग का उपशम होता है।

रोग

चिकित्सा

शरीर में दर्द होने पर – अनेक समय हस्ती के अवस्थादि द्वारा स्पष्ट ही समझा जाता है। सवारी सह सुदीर्घ पथ भ्रमण करने पर, अतिरिक्त भार वहन या भारी वस्तु खींचने पर अथवा आघात प्राप्त होने पर हस्ती को शारीरिक दर्द अनुभूत होता है।

इस बीमारी के निवारण के निमित्त जो औषध व्यवहार किया जाता है उसको ''तातार'' कहते हैं।

गरम जल	10 दस सेर
सफेद तम्बाकू	अर्ध सेर
लाल मिर्च	एक पाव
मूसाब्बर	अर्द्ध सेर
तारपिन तेल	एक पाव
लवण	अर्द्ध सेर

इन सब वस्तु के सहित निसिन्धा पत्ता तथा धतूरा पत्ता मिलाकर सिद्ध करना है। जब राबगुड़ की तरह रंग हो जाय सहनीय रुप में गरम रहते पीडित स्थान में धारा दे। इस तरह बार बार जल डालने पर पीडा का दर्द कम होता है। एक बार उबला हुआ पानी बार बार गरम करके व्यवहार किया जा सकता है।

आग्रम्बा – पृष्ठ देश में मेरूदण्ड तथा पेट में दद्रु जातीय श्वेत वर्ण के एक प्रकार के चर्म रोग होता है। इसको प्रादेशिक भाषा में ''चाट्टा'' कहा जाता सर्वदा ही खुजली रहता है, तथा पृष्ठ में है। इस रोग में गद्दी बाँधने पर अत्यन्त यंत्रणा बोधकरते हैं,तथा पीठ से समस्त चीज फेंक देना चाहता है।

मकान के पुराने चूना जल द्वारा मर्दन करके उसके द्वारा अथवा तम्बाकु पत्ते भीगे पानी द्वारा पीडित स्थान में बारम्बार लेप देना होता है। यह औषध के कुछ दिन व्यवहार करने पर रोग ठीक हो जाता है।

<u>सान्जाप</u> – पाँव के नीचे, नाखून के फाँकें में तथा चारों तरफ चर्म्म वृद्धि होकर वह सडने लगता है। इस रोग ग्रस्त हस्ती चलने फिरने में अत्यन्त कष्ट अनुभव करते हैं।

हस्ती के मल मूत्र भरे अस्वच्छ स्थान में हस्ती बन्धन करने पर यह रोग जन्म लेने की आशंका रहता है। अर्थात हस्ती बन्धन के स्थान सर्वदा स्वच्छ रखना आवश्यक है।

तेज धार अस्त्र द्वारा सारे वर्द्धित चर्म काटना पडता है। तत्पर सम परिमाण सरसों के तेल तथा धूप मिलाकर, पीडित स्थान में मोटा करके प्रलेप प्रदान किया जायेगा। अतएव एक हसिया अथवा कास्तिया आग में जलाकर लाल करना तथा उसको प्रलेप के उपर फिर लगाकर क्षत स्थान जला देगें। उसके बाद दलान के पुराने चूने के पानी द्वारा पीसकर प्रलेप लगायेगें।

रोग	चिकित्सा
क्षत रोग – बन्धन रज्जू का धर्षण से, अस्त्राघात या अन्य कारण से हस्ती के शरीर के क्षत होता है। वह ठीक से साफ न करने पर तथा औषध प्रयोग न होने पर अनेक समय क्षत स्थान सड जाता है तथा कीड़ा लगता है। गर्दन के नस तक सडने लगता है। तथा तद् कारण हस्ती मृत्यु मुख में पतित होते हैं।	क्षत स्थान उत्तम रूप में धोकर, चिपकती मिट्टी — दो सेर। तम्बाकू पत्र — अर्द्ध पाव तारपिन तेल — एक पाव डामर या फिनाइल — अर्द्ध पाव काले कत्था — एक पाव धूप चूर्ण — अर्द्ध पाव ये वस्तु उपयुक्त परिमाण में जल के साथ उबालकर कुछ घना होने पर उतारना, तथा उत्तम रूप से मिलाकर पाट द्वारा निर्मित मोटे ब्रुश द्वारा क्षत स्थान में बारम्बार प्रलेप देना है। औषध उष्ण रहना आवश्यक है। किसी प्रकार का क्षत/सडने से या साफ न होने पर उसको साफ करने के निमित। जयपाल वृक्ष के पत्ते — अर्द्ध पाव लहसन — अर्द्ध पाव लवण — एक छटाक। पीसकर क्षत स्थान पर लगाने से समस्त गंदगी कटकर क्षत साफ होता है।
दम्बल – अनेक समय हस्ती के शरीर में दम्बल(बृहदाकार का फोडा) होता है। ज्यादातर पृष्ठ देश में ही यह रोग जन्म देते हुए दिखाई देते हैं। अतिरिक्त भार वहन या गद्दी, चारजामा के कारण आदि दीर्घ पथ भ्रमण के कारण यह रोग जन्म लेते हैं। इसमे मवाद होने पर यह अतिशय यंत्रणादायक होता हैं।	औषध आकन पत्ते — एक पाव तम्बाकू पत्ते — एक पाव तारपिन तेल — एक पाव कपडे धोने का साबुन — आधा सेर। यह समस्त औषिधि पीसकर तारपिन तेल के साथ मिलाकर मर्दन करने से दम्बल खत्म हो जाता है। तूँतिया — एक पाव श्वेत धूप — अर्द्ध सेर। दारमूज(शंख विष) — अर्द्ध तोला। मक्खन — एक पाव तिल तेल — एक सेर। एक साथ उबालकर रुग्ण स्थान में मालिश करने पर दम्बल मिट जाता है।

तृतीय लहर – 278

रोग	चिकित्सा
मुख के नीचे जल का भार :– हस्ती के मुख के निम्न भाग तथा गले के उपरी भाग में अनेक समय जल का भार होने के कारण सूजन हो उठता है। इस रोग में हस्ती दुर्बल होते हैं तथा आहार करने में कष्ट बोध करते हैं।	एकसा ब्रान्डि............ एक पाईन्ट चिना बारूद.......... एक पाव मिश्रित करके सूजित स्थान में प्रलेप देने पर रोग आरोग्य होते हैं।
बाह्य गन्दगी – हस्ती के बाह्य सफाई न होने से, उदर वृद्धि होता है, आहार की रूचि चली जाती है, तथा हस्ती क्रमशः दुर्बल हो जाते हैं।	गोलक चाँपा(गुलाचि) फूल का रस एक कच्चे परिमाण में चावल के साथ मिश्रित करके खिलाने से कब्ज साफ हो जाता है। अधिक परिमाण में कब्ज होने पर दही तथा चूडा मिलाकर खिलायेगें।
कम्पन रोग – किसी हस्ती के बात रोग से आक्रान्त होने पर सर्वदा शरीर काँपता रहता है। तथा हस्ती क्रमशः दुर्बल हो जाता है।	छाल(झगडिया गोटा) अर्द्ध पाव झगडिया गोटा लता(अग्र भाग) अर्द्ध पाव कच्चा हरिद्रा अर्द्ध पाव अप मार्ग(उत्तोत लेंगडा) का मूल अर्द्ध पाव ये सब औषध पीसकर चावल के साथ मिलाकर खिलाने से रोग ठीक होता है।
<u>पेट में कृमी होने पर</u> – पुनः पुनः गोबर के साथ कृमी निर्गत होता है, पेट के वेदना में हस्ती अस्थिर रहता है, तथा क्रमशः दुर्बल हो पडता है।	लाल अरेंडि(भेरण) पत्ता एक सेर। फिटकरी............. एक पाव इसको पीसकर, अग्नि ताप में गरम करके,चावल के साथ खिलाने पर कृमी खत्म होता है।
<u>हस्ती की दुर्बलता</u> – मिट्टी खाने के कारण या अन्य कारण से हस्ती दिन दिन दुर्बल होते रहते हैं तथा अनेक समय यही हस्ती के मृत्यु का कारण हो जाता है।	तुलसी पत्ता अर्द्ध पाव बेल पत्ता अर्द्ध पाव काला लवण एक छटांक। पीसकर चावल के साथ मिलाकर खिलाना पडता है।

तृतीय लहर – 279

रोग	चिकित्सा	
पोस्टाई – हस्ती के स्वस्थ रहने के अवस्था में पोस्टाई खिलाने से किसी रोग का सहज आक्रान्त नहीं होता, तथा हस्ती सबल रहता है।	जमानी(अजवाईन).....	एक सेर
	मेथी......	एक सेर
	धनिया.......	एक सेर
	सौंफ(मीठा जीरा)...	एक सेर
	जीरा....	एक सेर
	हरितकि	एक सेर
	कृष्ण जीरा	एक सेर
	ब्रान्डि	चार सेर
	गुड	चार सेर
	इलायची	अर्द्ध सेर
	षष्टि मधु	अर्द्ध सेर
	पिप्पली	अर्द्ध सेर
	कूचला	अर्द्ध सेर
	दाल चीनी	अर्द्ध सेर
	लौंग	अर्द्ध सेर
	हींग	अर्द्ध सेर
	मधु	अर्द्ध सेर
	जायफल	तीन पाव
	जत्रिक	एक पाव
	कूड	एक पाव
	शुन्ठि	एक पाव
	मूथा	एक पाव
	धृत	एक सेर

सब वस्तु पीसकर मिलाकर दिन में एक बार अर्द्ध सेर परिमाण में खिलायेगें।

———

बार बंगला

राजमाला में बारह बंगला का उल्लेख राजमाला तृतीय लहर के प्रारम्भ भाग में ही मिलता है, महाराज अमर माणिक्य के अमर सागर खनन कार्य में बार बंगला के राज संज्ञक जमींदारगणों ने मजदूर प्रदान द्वारा सहायता किया था। किस किस व्यक्ति से किस परिमाण में सहायता

तृतीय लहर – 280

लाभ हुआ था, महाराज अमर के वह जानने का "इच्छुक होने से" सुबुद्धि विश्वास ने इस हिसाब को प्रदान करके(1) बाद में बोले, –

केहो भोये केहो प्रीते केहो मान्ये दिलो।	कोई भय कोई प्रीति कोई मान्य वश।
बारो बांगालाय दिछे तरपे ना दिलो।।	बारह बंगला दिया, तरप न दिया बस।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड4 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड4 पृ

महाराज अमर ने आराकान आक्रमण काल में भी बार बंगला के अनुकूल लाभ किया था, इस सम्बन्ध में राजमाला में मिलता है –

सिद्धांतवागीश कहे करो अबधान।	सिद्धांतवागीश कहा, सुनो हे राजन।
रसांगरे युद्धे राजा करे अनुष्ठान।।	रसांग युद्ध हित नृप करे अनुष्ठान।।
शुभ दिन शुभ क्षण कोरिलो तखन।	तब शुभ दिन और देखा शुभ क्षण।
युद्धेर सेनापति होइलो राजधर नारायण।।	युद्ध सेनापति हुए राजधर नारायण।।
+ + + + + + + + + + +	
द्वादश बांगाला सैन्य चलिलो सहिते।	द्वादश बंगला सैन्य चली साथ साथ।
सर्ब सैन्य लोइया गेलो रसांग युद्धेते।।	सारी सेना लेकर गया रसांग युद्ध स्थल।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड27 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड27 पृ

इसके द्वारा जाना जाता है, प्रयोजन स्थल में त्रिपुरेश्वर गण को बार बंगला की सहायता मिलती थी। भारत के विशेषतः बंग देश के नाना स्थान में जो सब भू– भाग प्रसिद्ध मूमि अधिकारी गण द्वारा शासित हो रहे थे, वे "बार भूइंया" या "द्वादश भौमिक नाम से अभिहित होते थे तथा उनके शासित प्रदेश सारे "बार बंगला" या "द्वादस बंगला" नाम से परिचित थे।

बार भुइंया गण के शासित स्थान समूह "बार बंगला" नाम का लाभ करके रहने पर भी सामान्य रुप में उनके शासन बंग देश के सीमा से आगे उडीसा तक विस्तृत लाभ किया था। ऐतिहासकार विल फोर्ड ने गंगा तथा पद्मा नदी के मध्यवर्ती "ब" द्वीप को बार भूइंया गण के कार्य क्षेत्र कहकर उल्लेख किया हैं।(2) परन्तु उन्होने "ब" द्वीप के सीमा के बाहर भी हस्त प्रसारण किया था। गंगा के पूर्वोत्तर तट से, समुद्र के उपकुलवर्ती स्थानों सहित उडीसा तक विस्तृत भूभाग उनके अधिकार में आये थे, तथा यह अधिपत्य दीर्घकाल स्थायी हुआ था।

बारह भुँइयां शासन की प्राचीनता और प्रभाव

बार भूइंया या द्वादस भौमिक प्रथा कितने काल से है, का निर्णय करना दुःसाध्य होने से प्रादेशिक शासनकर्ता गण के "भूइंया" उपाधि, जो नितान्त आधुनिक नहीं है, वह जानने के उपाय नहीं है। यह विषय लेकर अनेकों ने ही आलोचना किया है। ईलियट् साहेब के अनुदित अकबर नामा, डाक्टर वाईजर के बार भुइंया शीर्षक प्रबन्ध(3)

---

(1) उक्त हिसाब इस लहर के 88 पृष्ठ प्रदान किया है।

(2) **Asiatic Researches – Vol. XIV, page 451.**

(3) **Journal of Asiatic Society of Bengal - 1873.**

तृतीय लहर – 281

कैलाश चन्द्र सिंह महाशय के भारती पत्रिका लिखित निबन्ध, श्रद्धेय सतीश चन्द्र राम बी. एल. प्रनीत ''बंगीय समाज'', सत्यचरण शास्त्री महाशय के ''प्रतापादित्य'', निखिलनाथ राय महाशय के ''ऐतिहासिक चित्र'', सतीशचन्द्र मित्र महाशय के लिखित ''यशोहर खुलना के इतिहास'', आनन्दनाथ राय महाशय के ''बार भुइंया'' तथा नलीनीकान्त भट्टशाली महाशय के बंगीय भौमिक गण के ''स्वाधीनता समर'' आदि ग्रंथ तथा निबन्ध आलोचना करने पर भुइंया गण के अनेक विवरण मिलते है। ई0 षोडश शताब्दी के भौमिक गण ही इन स्थान में आलोचना विषयीभूत है। तत् पूर्व जो भुइंया उपाधिक शासनकर्ता के अस्तित्व थे, कविकंकण मुकुन्दराम प्रभृति प्राचीन कविगण ने हम लोगों को वह खबर प्रदान की हैं। व्याध राजा कालकेतू के राज्याभिषेक उपलक्ष्य में मूकुन्दराम ने कहा हैं–

अभिषेक कराइलो बोसिलेक खाटे।	अभिषेक कराये बैठे खाट में।
आजि होइते कालकेतू राजा गुजराते।।	आज से कालकेतू राजा गुजरात में।।
निज हस्ते नरपति टिप दिला भाले।	निज हस्त से नरपति टिप दिया अच्छे।
यतो भुइंया मिलिया खाटाय तार तले।।	जितने भुइंया मिले काम करवाये उसके नीचे।।
कवि कंकन चण्डी	कवि कंकन चण्डी।

अन्यत्र मिलता है –

गुजराते कालकेतू ख्यात होइलो राजा।	गुजरात में कालकेतू ख्याती हुए राजा के।
आर यतो भुइंया राजा सबे करे पूजा।।	और कितने भुइंया राजा सब किये पूजा।।
कवि कंकन चण्डी।	कवि कंकन चण्डी।

कवि घनराम ने बार भुइंया का उल्लेख किया हैं –

रायरेंया बारभुइंया बैसे सारी सारी।	राय रेंया बार भुइंया बैठे कतार कतार।
कोले करि कागज यतेक कर्मचारी।।	गोद में करके कागज कुछ कर्मचारी।।
घनराम के श्री धर्ममंगल।	घनराम के श्री धर्ममंगल।

अन्य स्थान में लिखा है।

हाते बुके बेष्टित बोसेछे बार भुइंया।	हाथ बांधकर बैठे बार भुइंया।
रायरेंया मुगल पाठान मीर मियां।।	रायरेंया, मुगल, पाठान मीर मियां।।
घनराम के श्री धर्ममंगल।	घनराम के श्री धर्ममंगल।

मानिक गांगुली ने धर्म मंगल ग्रंथ में एकाधिकार बार भुइंया का उल्लेख किया हैं –

(1) बार भुइंया वेष्ठित बोसेछे नरपति।	''हाथ बांधकर बैठे बार भुइंया, बैठे नरपति।
(2) बार भुइंया बेष्ठित भूपति कर भुषा।	हाथ बांधे बैठे बार भुइंया, भूपति करे आनन्द।
मानिक गांगुली का धर्म मंगल।	मानिक गांगुली का धर्म मंगल।

बहुत लोग सोचते हैं कि मुसलमान शासन काल में ही बार भुइंया की शासन पद्धति प्रचलित हुइ थी, यह ठीक नहीं। हिन्दु राजत्व में भी इस प्रकार की प्रथा रहने के

निदर्शन मिलते है। मेदिनी कोष में ''द्वादस राजकम्'' शब्द मिलता है। इन सब राजा के अधिकृत प्रदेश या राज्य की विस्तृति बहुत अधिक नहीं थी। 20 योजन से 400 योजन तक विस्तृत भू–भाग के अधिकारी होने पर द्वादस राज के अन्तर्भूत माने जाते थे। भरत के मतानुसार द्वादश राज मण्डल के ईश्वर सम्राट पदवाच्य होते थे। मनु संहिता में द्वादश प्रकार के सामंत राजा की बातें मिलती हैं।(1) इन सब विषय की आलोचना करने पर समझा जाता है कि द्वादश मण्डल या बार भुइंया उपाधिक शासनकर्ता गण की शासन प्रथा आधुनिक नहीं थी।

फिर भी उनके मतानुसार, हर समय ही पूर्वोक्त प्रकार के बारह जन शासन कर्ता का अस्तित्व नहीं था। ''द्वादश'' शब्द हिन्दु गण के विशेष प्रिय, अनेक मिलकर कोई काम करने पर उनको ''बार उवारि'' नाम दिया जाता है। बहुत लोग समवेत तरीके से कोई कार्य खराब करने पर उसको ''बार भूत का कारखाना'' कहते है, सर्वदा ही सुना जाता है। इस प्रथा के वशीभूत होकर ही प्राचीन काल में, शासनकर्ता गण का ''द्वादस भौमिक'' नाम हुआ था। इनकी संख्या कभी बारह जन से अधिक तथा बारह जन के न्यून रहने पर भी वे ''बार भुइंया'' नाम से अभिहित होते थे तथा उन सभी का एक समय में अधिपत्य विस्तार करने की बात भी बहुत जन स्वीकार नहीं करते हैं। पठान तथा मुगल शासन के संधि काल में, शासन सूत्र शिथिल हो पड़ने की सुविधा पाने से छोटे बडे बहुत संख्या में भुइंया का अभ्युदय हुया था।

बार भुइंया की संख्या तथा नाम बहुत लोगों ने कहा है, परन्तु एक साथ अन्य की उक्ति सम्यक एकता परिलक्षित नहीं होती है। ई0 षोडस शताब्दी के अन्त भाग में जेसुईट सम्प्रदाय के मिशनरी डू–जारिक, बंग देश भ्रमणकारी फर्नाण्डिज द्वारा पाईमेन्टा के निकट लिखे गये पत्रावली अवलम्बन से जो ग्रंथ प्रणयन किया हैं,(2) उसमें बार भुइंया का उल्लेख है, उन्होने पठान राज्य के द्वादश भाग में विभक्त कर लेने की बात भी लिखित की है, किन्तु सब का नाम उल्लेख नहीं किया है, मात्र चार जन का नाम दिया हैं। मि0 उईल(विल) फोर्ड ने बार भुइंया का उल्लेख किया है,(3) ब्लॉक मैन साहब ने भी बार भुइंया का विवरण प्रदान किया हैं।(4) किन्तु ये लोग नामोल्लेख नहीं कर पाये हैं। डाक्टर उवाईज(वाइज) ने यह विषय लेकर बहुत गवेष्णा किया हैं, किन्तु वे 1. भाउवाल के फजल गाजि, 2. विक्रमपुर के चाँद राय तथा केदार राय, 3. भुलुआ के लक्ष्मणमाणिक्य, 4. बाकला के कन्दर्प राय, 5. खिजिरपुर के ईशा खाँ, 6. चण्डीकान के प्रतापादित्य, 7. भूष्णा के मुकुन्द राय – यह सात

(1) मनु संहिता – सप्तम् अध्याय।
(2) **Oxford History of India - V.A. Smith.**
(3) **Wilford, Asiatic Researches – Vol. XIV. p. 451.**
(4) **Blochmann's Contribution's to the History and Geography of Bengal – p. 18.**

जन को मात्र नाम प्रदान कर पाये हैं।(1) विवारिज साहब ने बार भुइंया का कुछ विवरण प्रदान किया हैं।(2) इनमें से कोई भी बारह जन के नाम नहीं दे पाये, परवर्ती जो सब लेखको ने बारह नाम पूर्ण किये हैं, उनमें से एक ने भी अन्य उक्ति स्वीकार नहीं किया है। यशोहर – खुलना का इतिहास प्रणेता ने जिस बारह जन के नाम प्रदान किये हैं, इस स्थल में उसका उल्लेख किया जाता है।

बारह भुँइयांके नामों की सूची

(1)	ईशा खां मसनद अली	....	....	खिजिरपुर या कत्राभू।
(2)	प्रतापादित्य	....	....	यशोहर या चण्डिकान्।
(3)	चाँद राय तथा केदार राय	....	....	श्रीपुर या विक्रमपुर।
(4)	कन्दर्प राय तथा रामचन्द्र राय		....	बाकला या चन्द्र द्वीप।
(5)	लक्ष्मणमाणिक्य	....	....	भुलुआ।
(6)	मुकुन्दराम राय	....	....	भूष्णा या फतेहाबाद।
(7)	फलज गाजी, चाँद गाजी	....	....	भावाल या चाँद प्रताप।
(8)	हामीर मल्ल या वीर हाम्बीर.........		....	विष्णुपुर।
(9)	कंस नारायण	....	....	ताहिरपुर।
(10)	राम कृष्ण	....	....	सातौर या सान्तोल।
(11)	पीताम्बर या नीलाम्बर	....	....	पुटिया।
(12)	ईशा खाँ लोहानी तथा उस्मान खाँ			उडिष्या या हिजली।

इस तालिका के सम्बन्ध में भी मत वैषम्य है। स्थूल कथा को आज तक सर्ववादी सम्मत भुइंया की तालिका कोई भी प्रदान करने में समर्थ नहीं हुए। वर्तमान काल में निर्विरोधी तालिका संग्रह करना असंभव है, ऐसा ही ज्ञात होता है। ''बंगीय समाज'' प्रणेता श्रद्धेय सतीशचन्द्र राय महाशय के मत में भावाल के ब्राह्मण राजवंश बार भुइंया के अन्तर्निविष्ट थे, ''बार भुइंया'' प्रणेता आनन्दनाथ राय महाशय ने यह अस्वीकार किया है। हम भी सतीश बाबू का वाक्य समर्थन नहीं कर पाये। अठारह शताब्दी के द्वितीय पाद तक भावाल प्रदेश गाजी वंश द्वारा शासित हो रहे थे, यह ऐतिहासिकार मात्र ही स्वीकार करते हैं। ब्राह्मण राजवंश का अभ्युदय उसके परिवर्ती काल में हुआ हैं, उसी समय भुइंया गण का शासन तथा भुइंया उपाधि रूपांतरित हुआ था।

और कुछ न मिलने पर सतीश बाबू की प्रदत्त तालिका ही हम ग्रहण करने में बाध्य हुए। उक्त तालिका के अन्तर्गत भुइंया गण के परिचय सूचक संक्षिप्त विवरण अपर पृष्ठ में दिया गया है।

---

(1) **Dr. J. Wise – J.A.S.B. – 1874, 1875.**

(2) **Beveridge, Backergunj – P. 29.**

तृतीय लहर – 284

1. ईशा खाँ मसनद अली – इसका संक्षिप्त विवरण इति पूर्व प्रदान किया गया है, पुनरालोचना निष्प्रयोजन है।(इस लहर में 128 – 134 पृष्ठ दृष्टब्य)।

2. प्रतापादित्य – श्री हरि(विक्रमादित्य) के 1560 ई0 या उसके कुछ बाद में एक पुत्र जन्म ग्रहण किया था। श्री हरि ने तत्पूर्व भी बंगाल के शासन कर्ता सुलेमान की कृपा से यशोहर में एक नव राज्य प्रतिष्ठा का सूत्र पात किये थे। उसके पूर्वोक्त पुत्र का नाम रखा गया – गोपी नाथ। गोपी नाथ के जन्म–कोष्ठी के फल आलोचना करके दैवज्ञ कहे थे, वे ''पितृ हंता'' होगें। दैव्य विडम्बना में, गोपी नाथ के जन्म के पंचम दिन में उसका मातृ वियोग घटा। श्री हरि ने पत्नी वियोग से बहुत मर्म पीडा पाया, इसके उपर फिर पुत्र, पितृघाती होगा जानकर, उसका मनो–कष्ट अधिकतर वर्द्धित हुआ। इन सबके कारण वे पुत्र के प्रति पूर्व से ही विरक्त भाव पोषण कर आ रहे थे।

श्री हरि ने टोडरमल की सहायता से मुगल बादशाह महामति अकबर से ''महाराज'' उपाधि लाभ किया था। उन्होने विक्रमादित्य नाम ग्रहण करके, मुगल के सामन्त के बीच परिगणित हुए। इस समय से विक्रमादित्य का राजत्व काल आरम्भ हुआ था।(1577 ई0)।

उन्होने अपने पुत्र गोपी नाथ को युवराज करके प्रतापादित्य नाम प्रदान किया। पिता के विराग भाजन होने पर भी उनके(श्री हरि के) छोटा भाई जानकी बल्लभ(बंसत राय) तथा उनकी ज्येष्ठ पत्नी, प्रताप को अत्यन्त प्यार करते थे, जानकी बल्लभ की ज्येष्ठ पत्नी निःसन्तान थी अर्थात प्रताप ही उनके असीम स्नेह के सम्यक अधिकारी थे। पितृब्य पत्नी के स्नेह ममता गुण के कारण प्रताप कभी भी माता के अभाव को अनुभव नहीं कर पाये।

प्रताप शैशव में नितान्त शांत शिष्ट थे, उम्र के वृद्धि के साथ साथ उनका तेजत्व वृद्धि पाने लगा। असाधारण बुद्धि मेधावी शक्ति के कारण अल्प काल में ही वे संस्कृत, फारसी तथा बंग भाषा में विशारद हो गये थे। शास्त्र विद्या में उनका आंतरिक अनुराग था, अनेक कृत विद्य शस्त्र विद्या द्वारा विशेषतः अपने पितृ तुल्य बसन्त राय की सहायता से शस्त्र विद्या में सुशिक्षित हुए थे। बसन्त राय विक्रमादित्य के भाई का पुत्र थे, उभय भ्राता के मध्य यथेष्ठ सद्भाव था। विद्या, बुद्धि तथा वीरत्व के निमित्त बसन्त राय की असाधारण ख्याति थी, कार्यतः वे ही यशोधर के सर्वमय कर्ता थे। बसन्त राय प्रताप को अन्दर से सहित प्यार करते थे, उनके सर्व विषयक उन्नति कल्प में यत्नवान थे। पिता के विराग भाजन होने पर भी, पिता से ज्यादा स्नेहशील पितृव्य के यत्न, कोशिश तथा उनके सुशिक्षा दान के फल से प्रताप विशेष प्रतिभाशाली हो उठे।

प्रताप अतिशय मृगया प्रिय हुए, इस काम में उनका निपुणता भी यथेष्ठ था। इस समय कायस्थ जातीय सूर्यकान्त तथा ब्राह्मण जातीय शंकर नामक दो जन युवक प्रताप के सहचर हुए थे। प्रताप सर्वदा उनके साथ रहते थे, तथा तीन बन्धु ने मिलकर नानाविध अत्याचार आरम्भ किये। विक्रमादित्य पुत्र के अत्याचार वार्ता पाकर तथा उसके कोष्ठी के फल स्मरण करके, इतने विरक्त हुए थे जो, पुत्र के विनाश साधन द्वारा उपद्रव निवारण के निमित्त कृत संकल्प हुए। उस यात्रा में बंसत राय के कोशिश से उन्होने यथेष्ठ निस्तार पाया था।

तेजवान प्रताप को लेकर विक्रमादित्य तथा वंसत राय विशेष चिन्तित हो उठे। दोनो भ्राता में परामर्श द्वारा स्थिर किया कि विवाह कराने पर प्रताप का तेज दूर होगा तथा संगी गण के संग परित्याग करेगें। पुत्र का विवाह कराया गया, किन्तु उनके चरित्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। तथापि दर्शन से विक्रमादित्य तथा बसन्त राय ने पुनर्बार परामर्श किया शायद प्रताप को कुछ काल के निमित्त आगरा के दरबार में रखना संगत रहेगा। वहाँ पर राजनीति तथा समर नीति आदि शिक्षा का विशेष सुयोग घटित होगा। अतएव दरबार में एक जन प्रतिनिधि रखने का नियम का भी रक्षा होगा। प्रताप अनिच्छा के बाद भी पिता के प्रस्ताव से सम्मत हुऐ, किन्तु उनको लगा कि बसन्त राय की प्ररोचना ही इस रूप में घटी है। राजा पुत्रोचित्त जान, उन्होने वाहनादिसह शीघ्र ही आगरा की यात्रा की, अनुचर सूर्यकान्त तथा शंकर उनके सह यात्री हुए थे।

प्रताप ने आगरा गमन के पूर्व से ही टोडरमल ने सम्राट के दरबार में विशेष प्रभाव विस्तार किया था। वे राजा उपाधि तथा वजीर का पद लाभ करके विशेष सम्मानित तथा प्रतिपतिशाली हो उठे। इस समय प्रताप, बसन्त राय के पत्र लेकर टोडरमल के निकट उपस्थित हुए, तथा उन्होने ही प्रताप को दरबार में परिचित करवा दिया। प्रताप के कमनीय कांति तथा वीरोचित अंग गठन दर्शन करके सम्राट विमुग्ध हुए, उसको आदर के साथ दरबार में ग्रहण किया गया(1578 ई0)।

प्रताप उत्तरोत्तर सम्राट द्वारा विशेष रूप से आदृत होने लगे। इस रूप में प्रवाद है कि उन्होने दरबार में कविता की समस्या पूर्ण करके यथेष्ट प्रंशसा लाभ किया था। उन्होने आगरा दरबार में पृथ्वीराज को संगी पाया था। उस काल में आगरा नगरी के सभी के मुख में राणा प्रताप के असीम प्राक्रम का विवरण अवगत पाकर, प्रतापादित्य का वीर हृदय उद्वेलित हो उठा। वे प्रताप सिंह को देवता ज्ञान से, मन मन में भक्ति अर्घ्य दान कर रहे थे। इस समय प्रताप अपने प्रधान अनुचर सूर्यकान्त तथा शंकर को लेकर तीर्थ पर्यटन में बहिर्गत हुए। चित्तौड जाकर राजपूत जाति के वीरत्व ख्याति से प्रताप का अंतर

एक नवीन प्रभा से उद्भासित हो उठा। उन्होने मन मन में प्रतिज्ञा की, –जिस उपाय से भी होगा, मुगल के अधीनता पाश छिन्न करना होगा।

राज्य हाथ में न पाने पर, स्वाधीनता घोषणा की सुविधा नहीं हो पाती है, पिता तथा चाचा को समझा कर अपने मत से लाना असंभव है, इन सब विषय की चिंता करके प्रताप यशोहर राज्य स्वहस्त में लाने की चेष्टा में प्रवृत्त हुए। आगरा के अवस्थान काल में, यशोहर द्वारा राजस्व, बसन्त राय द्वारा प्रताप के निकट आता था। प्रताप ने कुछ अंश राजकर यथास्थान में प्रदान न करके आत्मसात किया, तथा सम्राट को बताया कि, यशोहर के राजस्व लगातार प्रदान नहीं किया जा रहा है।

इस समय बंग के चारो तरफ विद्रोहानल जल उठा था, राजा टोडरमल विद्रोह दमन के निमित्त बंग देश में गमन कर गये थे। इस सुयोग से प्रताप ने बादशाह को जनाया – उनको यशोहर के राजत्व–सनद प्रदान किये जाने पर, वे बाकी राजत्व परिशोध करके मुगल चिरानुगत होये रहेंगें। बादशाह ने उनकी प्रार्थना मंजूर की। प्रताप राजत्व का सनद पाकर सम्राट दत्त खिलात तथा सैन्य सामन्त सह स्वदेश की तरफ यात्रा किया तथा अचानक तरीके से यशोहर में उपस्थित होकर दुर्ग अवरोध किया,(1582 ई0)।

प्रताप के इस आकस्मिक आक्रमण से नगर में विषम परिस्थिति उपस्थित हुई। सभी आशंका करने लगे, समझे शायद इस बार ही प्रताप के कोष्ठि का फल मिलेगा। परन्तु राजा बसन्त राय के कौशल से प्रताप शान्त मूर्ति धारण किये थे। पिता तथा चाचा एकत्रित होकर प्रताप को बोले – ''तुम्हारा बादशाह से सनद ग्रहण करना उत्तम कार्य हुआ है, हम लोग वृद्ध हुए हैं, अब राज्य शासन की शक्ति नहीं है, अर्थात तुम ही राज्य भार स्वहस्त ग्रहण करो, यह हमारी इच्छा है।'' प्रताप ने देखा, पिता या चाचा उसके उद्देश्य के विरोधी नहीं हैं। विशेषतः उनके सस्नेह तथा सदय व्यवहार से प्रताप विमुग्ध हुए, उनका विद्रोह भाव तिरोहित हुआ। वे राजत्व लाभ की संकल्प परित्याग करके, राजकुमार के तरीके से ही राज्य शासन कार्य में प्रवृत्त हुए। पिता तथा पितृत्व उसके किसी कार्य में बाधा प्रदान नहीं करते थे।

बसन्त राय के ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द राय थे। इसके साथ प्रताप का सद्भाव नहीं था। इस सूत्र से पारिवारिक झगड़े कभी कभी वृद्धि पा रहे थे। प्रताप बसन्त राय को पूर्व से ही संदेह की दृष्टि से देखते थे, अब वह संदेह क्रमशः घनीभूत होने लगा। प्रताप के पिता ने देखा समस्त सम्पत्ति प्रताप के हाथ रहने पर गृह को विवाद से जल्दी ही ध्वंस के मुख से पतित होना पडेगा। उन्होने राज्य को दो भाग मे विभाग करके दस आना अंश प्रताप को तथा छह आना अंश

बसन्त राय को अर्पण किया। बसन्त राय के पुत्र गण के इस रूप से सम्पत्ति विभाग से घोर आपत्ति रहने पर भी बसन्त राय ने स्वछन्द चित्त से वह मान लिया।

प्रताप, उभय अंश को राजधानी में एक स्थान में रखने से अनिच्छुक होकर, सुन्दर वन आबाद द्वारा धुम घाट में यमुना तथा ईच्छामति नदी के संगम स्थान में नूतन दुर्ग तथा उसके पास में राजधानी प्रतिष्ठा के अनुष्ठान में पूर्वोक्त हुए। इस समय प्रतापादित्य के पिता, राजा विक्रमादित्य परलोक गमन कर गये, यह 1583 ईसा की घटना है।

पितृ वियोग के बाद, बसन्त राय के प्रयत्न सें प्रताप राज्याभिषित हुए तथा नूतन राजधानी कार्यकुशलता के सहित अग्रसर पक्ष में विशेष कोशिश किया। इस समय जंगल के आबाद उपलक्ष्य में गहरे जंगल के मध्य जीर्ण मंदिर में अवस्थिता श्री श्री यशोहरेश्वरी देवी विग्रह की आविष्कार हुआ था।(1) इस घटना को सौभाग्य के लक्षण सोचकर प्रताप विशेष उत्साहित हुए, जन साधारण तथा देवानुगृहीत कहना बोलकर उसको यथेष्ट सम्मान करने लगे।

इस समय मुगल के विरूद्ध अभ्युत्थान के निमित्त प्रताप नाना देशीय भुइंया गण के साथ परामर्श कर रहे थे। बसन्त राय ने इस परामर्श में योगदान नहीं किया। उन्होने प्रताप को समझाया, इस रूप गुरूत्व पूर्ण कार्य में हस्तक्षेप करने का अभी भी समय नहीं हुआ। इस समय असफल कार्य होने पर भविष्यत् की आशा निर्मूल होगा। अतएव इस प्रस्ताव से निरस्त रहना ही कर्तव्य है, प्रताप वह नहीं समझे। उनके उद्देश्य में बाधा प्रदान के लिए, बसन्त राय के प्रति अत्यन्त विरक्त हुए। बसन्त राय समझ गये कि प्रताप का भविष्यत् नितान्त विपदा संकुल है तथापि वे प्रताप से सर्वदा दूर रहने की कोशिश करते थे।

प्रतापादित्य मुगल विद्वेशी होने पर भी पठान के विरूद्ध उडीष्या अभियान काल में मुगल के पक्ष अवलम्बन करने में बाध्य हुए थे। इस यात्रा में वे उडीष्या से श्रीश्रीगोविन्दजिउ विग्रह लाये थे। यह विग्रह धूम घाट के समीप गोपालपुर गाँव में प्रतिष्ठित हुई थी।

प्रतापादित्य, बचपन से ही चाचा बसन्त राय से पितृ स्नेह लाभ करके आ रहे थे। बसन्त राय की सन्तानहीना प्रधाना पत्नी ने प्रताप को अपने सन्तान ज्ञान से लालन पालन किया था। इसके स्नेह गुण से प्रताप माँ का अभाव समझ नहीं पाये। प्रताप के सुख समृद्धि तथा सम्मान के वर्द्धन के निमित्त

---

(1) यशोहरेश्वरी पीठ देवी –सत्ययुग से ही यह पीठ स्थान जागृत था। भविष्य पुराण में उक्त हुआ है, यहाँ पर देवी के बाहु तथा पदपतित हुआ था। तन्त्र में भी इसका उल्लेख है –
"यशोरे पाणिपद्मन्च देवता यशोरेश्वरी।
चण्डश्च भैरवस्तत्र सर्व सिद्धिमवाप्नूयात्।।"

तंत्र चूडामणि।

बसन्त राय सर्वदा यत्नवान रहते थे तथा उसको सदुपदेश प्रदान करने से भी कुण्ठित नहीं होते थे किन्तु ग्रह वैगुण वशतः प्रताप सर्वदा ही पितृव्य को संदेह की दृष्टि में देखते थे। उसके सदुपदेश को खराब उद्‌देश्य मूलक कहना ही सोचते थे। बसन्त राय के पुत्रगण के सहित विशेषतः ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द राय के सहित पूर्व से झगड़े आदि चल रहे थे, वह भाव उत्तरोत्तर वृद्धि पाने लगा, तथा इस सूत्र में बसन्त राय के प्रति प्रताप के विद्वेष की आग दिन दिन प्रबल हो उठ रहे थे। निम्नलिखित कतिपय विषय उसके विद्वेष के प्रधान कारण होकर खड़े हुए।

1 बसन्त राय के पुत्रगण के सहित प्रताप का सर्वदा ही कलह होता है, बसन्त राय के द्वितीय पत्नी को भी विष दृष्टि से देखते थे। इस समस्या में प्रताप सोचते थे कि चाचा बसन्त अन्तराल में रहकर यह कलह वृद्धि में ईंधन लगा रहे हैं। इस भ्रांत धारणा के वशवर्ती होकर प्रतापादित्य चाचा के प्रति कोपाविष्ट थे।

2 प्रतापादित्य को विशेष उद्‌देश्य से आगरा के दरबार में प्रेरण किया गया था, बसन्त राय इसके प्रधान उद्योत्ता थे। प्रताप ने सोचा कि चाचा ने कौशल से उसको दूर रखने के निमित्त यह व्यवस्था किये है। यह भी बसन्त राय के प्रति प्रताप के आक्रोश वृद्धि के कारण में हो खड़ा हुआ।

3 मुगल विरूद्ध में अस्त्र धारण के निमित्त प्रताप को निरस्त करने की कोशिश, बसन्त राय का खराब उद्‌देश्य है, ऐसा घटना प्रताप ने सोचा। उस सूत्र में पितृव्य के प्रति हड्‌डी–हड्‌डी से क्रोधित हुए थे।

4 चाक श्री(चक श्री) परगना के अधिकार लेकर उभय के मध्य विवाद उपस्थित होने से, प्रताप अधिकतर क्रोधित हुए थे।

इन सबके कारण से प्रतापादित्य चाचा के उपर इतने विद्वेषित हुए थे कि हत्या करके उपद्रव निवारण के लिए कृत संकल्प हुए। बसन्त राय बहुत सहन करके भी विवाद की मींमासा कर नहीं उठ पाये। भातुष्पुत्र के अहंकार तथा असद् व्यवहार से वे क्रमशः उत्तेजित हो उठने लगे। अर्थात विवाद क्रमशः घनीभूत हो उठे।

इस रूप झगडे चलने के समय में भी बसन्त राय की ज्येष्ठा पत्नी प्रतापादित्य के निकट ही रहती थी। इस समय बसन्त राय के पितृ श्राद्ध की तिथि उपस्थित हुई। वे सर्वविध धर्म कार्य सस्त्रीक सम्पादन करते थे। पितृ श्राद्ध काल में भी प्रधानपत्नी को लेकर कार्य सम्पादन करते थे। इस बार द्वितीय पत्नी के प्ररोचना से बसन्त राय प्रथम पत्नी को नहीं लाये, एक मात्र प्रतापादित्य को श्राद्धोपलक्ष में निमन्त्रण किया। इस घटना से बसन्त राय की ज्येष्ठस्त्री ने निज को नितान्त अपमानिता सोचा तथा प्रताप भी निरतिशय क्रोधित हुए।

प्रताप स्वयं युद्धावेश में सुसज्जित होकर कतिपय उत्कृष्ट शरीररक्षीसह चाचा के निमंत्रण रक्षा के निमित्त यात्रा किया। वे रायगढ दुर्ग में(बसन्त राय के घर में) प्रवेश करने के मात्र तैयार थे, उसको योद्धा वेश में आगमन करते देखकर गोविन्द राय(बसन्त राय के ज्येष्ठ पुत्र) शंकान्वित हुए, उन्होने सोचा, प्रताप उनकी हत्या करने के निमित्त आये हैं। किसी रूप वाक्य आलाप होने के पूर्व गोविन्द ने दोतला के बारान्डा से प्रताप को लक्ष्य करके क्रमानुसार दो तीर निक्षेप किये। भाग्य क्रम से तीर लक्ष्य भ्रष्ट होने से प्रताप का जीवन रक्षा हुई। इस घटना से प्रताप का कोपानल उद्धृप्त हो उठा। उन्होने उलंग तलवार हाथ में लेकर तीर वेग से जाकर गोविन्द राय को द्विखण्डित किया। चतुर्थ तरफ विषम कोलाहल उत्थित हुआ। श्राद्ध स्थान से बसन्त राय के ज्येष्ठ पुत्र निहत होने का संदेश मिला। पुत्रहन्ता के प्रति बसन्त राय असाधारण स्नेहशील होने पर भी, इस दारुण दुर्घटना से वह भूल गये। बसन्त राय वीर तथा साहसी थे, वे पुत्र हत्या प्रतिशोध लेने के निमित्त उसकी ''गंगाजल''(तलवार नाम) लाने के लिए भृत्य को बोले। भृत्य ने वह न समझकर, एक लोटे में गंगाजल लाकर उपस्थित किया। इसी वक्त प्रतापादित्य उस स्थान उपस्थित होकर, हस्त स्थित तलवार के एक आघात से बसन्त राय के मस्तक को देह च्युत किये। पिता अपेक्षा से भी अधिक स्नेहशील चाचा की नृशंस तरीके से हत्या द्वारा उनके जन्मकुन्डली का फल निकला। यह सम्भवतः 1602 ई0 की घटना है।

प्रतापादित्य, उग्र स्वभाव के कारण जैसे बहुत लोगों के अप्रिय थे, वैसे ही दानशीलता, न्याय परायणता आदि गुण से साधारण के श्रद्धा भाजन हुए थे। किन्तु इस नृशंस हत्या काण्ड साधन द्वारा उन्होने जिस न दूर होने वाले कलंक का अर्जन किया था, उसके वंशधर लोग तक को उसका कुफल भोग करना पडा। रामराम बसु के मतानुसार, प्रताप द्वारा गोविन्द राय की गर्भवती स्त्री की हत्या की गयी थी। यह बात सत्य है कि नही, वह निर्णय करना दुःसाध्य है।

प्रताप के अपने राजधानी में प्रत्यावर्तन के बाद, मातृ स्नेहानीय महारानी, पति हत्या की बात सुनकर संज्ञान खो बैठी। उन्होने शोक से, क्षोभ से व्याकुल होकर अति आर्तनाद किया। बाद में पति का छिन्न सिर लेकर चिता रोहण किया। मृत्युकाल में सती ने पतिहन्ता प्रतापादित्य को अभिसम्पात किये था ''तुम्हारे स्त्री पुत्र अन्त्यजग्रस्त(जो अन्तिम वर्ण से उत्पन्न हुआ हो–शूद्र) होगें'' उत्तेजनावश में विशेषतः बसन्त राय के हाथ से आत्म रक्षा के निमित्त प्रतापादित्य, चारों तरफ सोचने का अवसर न पाकर चाचा से हत्या किया, परन्तु इस अकार्य के कारण वे यथेष्ट अनुतप्त हुए थे, आत्मग्लानि से हृदय दग्ध हो रहा था। इस समय से राजनीति क्षेत्र में उसका विस्तर अवनति हुई थी।

तृतीय लहर – 290

प्रतापादित्य केवल आमोद प्रिय नहीं थे। वे विशेष प्रतिभाशाली थे तथा उसकी प्रतिभा सर्वोत्तमुखी था, उनका कर्ममय जीवन कथा की आलोचना करने से पल पल इस विषय का परिचय मिलता है। राजत्व लाभ के बाद प्राय दस वर्ष काल तक उन्होने युद्धविग्रहादि कार्य में व्यतीत किये थे।

बसन्त राय के मृत्यु के बाद रुपबसु नामक उसके किसी रिश्तेदार ने बसन्त राय के पुत्रों को समर्थन करने के निमित्त पठानगण के सहायता प्रार्थी हुए। उस समय पठानगण मुगल द्वारा उडीष्या से भगाने पर, सरगद्वीप के उस पार हिजली में अवस्थान करके बल संचय कर रहे थे। कुछ काल बाद, मघ तथा पर्तुगीज दस्युदल सर्वदा नदी पथ से आकर लून्ठन, नर हत्या तथा मनुष्य चोरी आदि नानाविध अत्याचार से लिप्त थे। प्रताप समझे कि जल दस्यु के अत्याचार निवारण के लिए सगर द्वीप में एक सुदृढ सेना निवास स्थापना करना आवश्यक है। परन्तु हिजली के पठान लोगों का दमन न कर पाने से यहाँ के दुर्ग निरापद नहीं होगे। इस सब प्रयोजन साधन के निमित्त उन्होने सगर द्वीप में नौवाहिनी के एक केन्द्र की स्थापना करने की जरूरत को सोचा। अल्पकाल के मध्य ही उन्होने समस्त आयोजन शेष करके स्वयं युद्ध यात्रा की थी। उन्होने प्रबल वेग से पठानगण पर आक्रमण करके युद्ध आरम्भ किया। इस युद्ध में पठान दलपति ईशा खाँ तथा उनके प्रधान सेनापति निहत हुए थे। घोरतर युद्ध के बाद प्रतापादित्य ने जय लाभ किया। इस समय से प्रताप ने हिजली में एक सेना निवास तथा सगर द्वीप में नौ विभाग के एक प्रधान अड्डे की स्थापना की थी।

पठान लोगों को पराजित करके मुगलगण के बंगदेश में अधिकार स्थापन के संधिकाल में बंग के भौमिकगण परस्पर मिलित तरीके से देशमातृकार उद्धार के लिए कृत संकल्प हुए तथा सभी आत्मबल वृद्धि के निमित्त सचेष्ट थे। इस समय अनन्य भुइंयागण के तरह प्रतापादित्य भी प्रबल हो उठे तथा स्वाधीनता की घोषणा की। कथित है उन्होने अपने नाम की मुद्रा प्रचारित की थी। साथ साथ राज्य की सीमा भी प्रसारित की थी। दक्षिण की तरफ समुद्र के उपकुल पकड़ कर उडिष्या तक प्रताप के राज्य के विस्तार करने का परिचय मिलता है। वर्तमान 24 परगना के समग्र भाग उसके हस्तगत हुए थे।

मुगलगण ने बंग देश पर अधिकार किया, किन्तु प्रभुत्व स्थापना करने में सक्षम नहीं हो रहे थे। इस समय भुइंयागण पठान लोगों के सहित मिलित होकर मुगल के विपक्ष में दण्डायमान हुए थे। 1580 ई0 में देशभर भीषण विद्रोह की अग्नि प्रज्वल्लित हो उठी। इस समय टोडरमल बंग देश में आकर, भुम्याधिकारी लोगों के मध्य किसी किसी व्यक्ति को बातों से तथा किसी को भी कौशल से बाध्य किया था। लेकिन असल रुप में इसके द्वारा कोई कार्य उद्धार नहीं हुआ। उनके द्वारा

राजस्व का हिसाब कागज में ही सीमित था। इसके द्वारा राजकोष का कोई उपकार नहीं हुआ।

खाँ आजम या सहबाज खाँ बंग देश में आकर विशेष कुछ करके नहीं उठ पाये अतएव उडीष्या विजयी मान सिंह ने 1595 ई0 अब्दे में राजमहल में आकर राजधानी स्थापना किया।(1) इस समय भौमिक समाज, पठान लोगों के साथ मिलित तरीके से मुगल के प्रतिपक्ष में खड़े हुए थे। मान सिंह प्रथम ही अपने पुत्र दुर्जय सिंह व प्रमुख मुगल वाहिनी द्वारा भुष्णा अधिकार करते है। इस समय क्रमानुसार उत्तर बंग के अधिकांश स्थान मुगल के हस्तगत हुए थे। इसके अल्पकाल बाद ही मान सिंह दक्षिणापथ में चले गये, उसके पुत्र जगत सिंह ने बंग की सुबेदारी का लाभ किया। कुछ काल के मध्य ही उसके परलोक गमन करने से, उसके पुत्र महासिंह पितृपद में अधिष्ठित हुए। ये अल्प वयस्क थे, उनके समय में भुइंयागणों ने मस्तक उत्तोलन किया। श्रीपुर में केदार राय तथा यशोहर में प्रतापादित्य इस समय विशेष प्रतापान्वित थे, भूष्णा के मुकुन्द राय भी मुगल शासन विग्रह करके चलने लगे। इस सुयोग में प्रतापादित्य स्वाधीनता घोषणा करके राज्य की सीमा प्रसारण कार्य में व्यापृत हुए।(1599 ई0) दो साल में मध्य के बहु प्रदेश अपने अधिकार में ले लिये थे।

मान सिंह ने सेरपुर आताई युद्ध में उस्मान को परास्त करके 1599 ई0 में राजधानी में गमन किया था, बंग के भौमिक लोग को दमन करने के निमित्त उसको पुनर्बार बंग देश में आना पडा। उन्होने 1603 ई0 में प्रतापादित्य पर आक्रमण करने के अभिप्राय से यशोहर की तरफ यात्रा किया।

क्रमानुसार कतिपय दिवस युद्ध होने के बाद, प्रताप पराजित होकर मान सिंह के साथ संधि करने में बाध्य हुए।

सजाति विरोध तथा साधारण के अश्रद्धा भाव ही प्रताप के इस प्रकार पराजय का प्रधान कारण था। बसन्त राय की नृशंस तरीके से हत्या करना, सामान्य दोष से स्त्रीयो के स्तन काटना आदि आदि निष्ठुर व्यवहार से सुराशक्त प्रताप के प्रति सभी विरक्त थे। विशेषतः बसन्तराय के पुत्र कचुराय के युद्ध काल में मान सिंह के सहयात्री थे। सभी उसके प्रति सहानुभूति के भाव पोषण कर रहे थे। कचुराय, पैत्रिक सम्पत्ति लाभ करके सुखी हुए, यही सबकी इच्छा थी। मान सिंह के साथ संधि के फल से कचुराय ने यशोहर राज्य का छह आना अंश लाभ किया तथा प्रताप दस आना अंश लेकर मुगल सम्राट के सामन्त राज रूप में परिगणित हुए।

---

(1) **Stewart's History of Bengal - P. 205.**

तृतीय लहर – 292

सम्राट अकबर के परलोक गमन के बाद, तत् पुत्र जहाँगीर 1305 ई0 में सिंहासन लाभ किया, बंग देश तब भी भुइंयागण के हाथ ही था। उन्होने मान सिंह के प्रयत्न में संधि किये थे, लेकिन तद्नुसार कार्य नहीं करते थे। यह जहाँगीर को सहन नहीं हुआ। वे बंग के भौमिक लोगों को निर्मूल करने के प्रयासी हुए। क्रमानुसार कुतुबउद्दीन तथा जहाँगीर कुली खाँ के बाद, इस्लाम खाँ को बंग का शासन कर्ता किया गया। इन्होने इस देश में आकर भुइंयागण का आह्वान किया। उनमें से अनेको ने नवनियोजित नवाब का साक्षातत्कार किया तथा उपढ़ौकन प्रदान किया। प्रताप ने स्वयं उपस्थित न होकर स्वयं पुत्र संग्रामादित्य को नवाब के सहित साक्षात करने भेजा, परन्तु नवाब उससे संतुष्ट न होकर, प्रताप को आने कहा। प्रताप बाध्य होकर नवाब के सहित मुलाकात किया। उसको मुगल पक्ष में जो सब कार्य करने को कहा गया, उसे सम्पादन के लिए सम्मति प्रदान कर आये, परन्तु कार्यकाल में कुछ भी नहीं किया।

प्रताप के इस प्रकार व्यवहार से क्रोधित होकर, आक्रमण मुखी होकर इस्लाम खाँ ने यशोहर राज्य पर आक्रमण के निमित्त विपुल वाहिनी प्रेरण किया। मुगलगणों के अग्रसर होने का सवांद पाकर प्रताप को चैतन्य हुआ, वे बंग देश जय के निमित्त मुगल के सहायता कल्प से 80 रणपोत के साथ अपने पुत्र को घोडा घाट में नवाब के समीप प्रेरण किया। इस्लाम खाँ इससे निरस्त न होकर, प्रताप का दमन करने के निमित्त सैन्य दल को अग्रसर होने की व्यवस्था किया।

पथ में कई युद्ध हुए। उससे प्रतापादित्य की पराजय घटित हुई। मुगल सैन्य क्रमशः यशोहर के सन्निहित हुए। इस समय प्रताप विशेष विपन्न हो पडे। भुइंयागण के मध्य बाकला के राजा रामचन्द्र संधि का प्रस्ताव करके भी मुगल द्वारा ढाका में नजरबन्दी कैदी की तरह आबद्ध हुए। केदार राय भी मुसलमान द्वारा आक्रान्त थे। दूसरे भुइंयागण कोई युद्ध में परास्त तथा कोई संधि सूत्र में आबद्ध होकर मुगल के पक्षावलम्बी हुए थे, उनसे सहायता लाभ की आशा नहीं है। अकेले ही प्रताप सबके साथ युद्ध करके सफल काम होगें, ऐसी आशा नहीं थी तथापि वे कोशिशहीन न होकर, उन्होने साध्यानुसार दुर्ग सुरक्षित किया। तथा उपायान्तर न देखकर मुगल सेनापति ईनायेत खाँ के निकट संधि प्रस्ताव किया। ईनायेत प्रताप की अवस्था समझकर, संधि प्रस्ताव अमान्य किया।

मुगलगण ने यशोहर दुर्ग में आक्रमण करके घोरतर युद्ध के पश्चात जय लाभ किया। प्रताप अपने पुत्र उदयादित्य के सह दुर्ग के अन्दर आश्रय ग्रहण किया। तब पिता और पुत्र में परामर्श स्थिर हुआ, अब और युद्ध करके सैन्यक्षय तथा प्रजा का

तृल – 293

धन प्राण विपन्न करना संगत नहीं होगा। इस समय आत्मसमर्पण करके संधि प्रस्ताव करना ही संगत है।

प्रताप दो जन मात्र मंत्री के साथ मुगल सेनापति इनायेत खाँ के शिविर में उपस्थित हुए। सेनापति ने प्रताप को सादर से ग्रहण किया। इनको हस्तगत करके, नवाब दरबार में अपने सम्मान तथा प्रतिपत्ति वृद्धि करना ही सेनापति का उद्देश्य था।

इनायेत खाँ प्रतापादित्य को लेकर ढाका गये। उसका सैन्य वास यशोहर था। प्रताप, यथा समय ढाका पँहुचकर इनायेत खाँ के साथ नवाब इस्लाम खाँ के दरबार में उपस्थित हुए। नवाब के आदेश से प्रताप श्रृखंलाबद्ध, तथा इनका राज्य, मुगल सम्राज्य के अन्तर्विष्ट हुए। इनायेत् खाँ उस जगह पर प्रथम शासन कर्ता के रूप में प्रेरित हुए।

प्रताप संधि की आशा से ढाका में जाकर कारारूद्ध हुए। इधर मुगल सेनापति मिर्जा सह प्रमुख सैन्य दल ने यशोहर राज्य लून्ठन तथा स्त्री लोक गण के प्रति अमानुषिक अत्याचार आरम्भ किये। उदयादित्य अनुनय विनय द्वारा तथा अर्थ द्वारा मुसलमान के अत्याचार से देश रक्षा के निमित्त विशेष कोशिश करने लगे, किन्तु उसमें कोई फल नहीं दर्शा। अत्याचार की मात्रा दिन दिन वृद्धि पाने लगा। इस समय प्रतापादित्य के काराबद्ध संदेश पाकर उदयादित्य क्रोध से अधीर हो उठे। वे बारम्बार मुगलों को आक्रमण तथा विनाश कार्य में प्रवृत्त हुए। बाद में, सम्मुख समर से आत्म जीवन आहुति प्रदान किया।

उदयादित्य मृत्यु संदेश दुर्ग में पँहुचने के मात्र से महारानी शरत् कुमारी, पुरमहिलागण सह गुप्त द्वार पथ से, नौका से दुर्ग से पलायन किया तथा यमुना में नौका पँहुचने से, नौका का पेंदा में छेद करके, जलमग्न होकर जीवन विसर्जन किया।

प्रतापादित्य कुछ दिन कारागार के यन्त्रणा में भोग के बाद, नबाब इस्लाम खाँ द्वारा लौह पिजंर में आबद्धावस्था में आगरा में सम्राट दरबार में प्रेरित हुए। उनको आगरा में पँहुचाया नहीं जा सका। काशीधाम में उपस्थित होने के बाद वहाँ पर ही उनका काशी प्राप्त घटित हुआ।

प्रताप के जीवनी के अनेक बातों को कहा ही नहीं गया, इस जगह में वह कहने के उपाय भी नहीं है। यह प्रताप चरित्र के रेखाचित्र मात्र है। सब ग्रंथ आलोचना करने पर इसका पूर्ण विवरण मिलेगा, वह इसके पूर्व ही कहा गया है।

3. चाँद राय तथा केदार राय :– यह भ्रातृ युगल विक्रमपुर के शासनकर्ता तथा भुइंया गण के मध्य प्रधान थे। इसका विवरण इस लहर के

तृल – 294

90–97 पृष्ठ में प्रदान किया गया है, इस ग्रंथ में इसके अतिरिक्त विवरण देना असंभव है अर्थात पूर्वोक्त विवरण के प्रति निर्भर करना पडा है।

4. कन्दर्प राय तथा राम चन्द्र राय – ये बाकला या चन्द्र द्वीप के शासन कर्ता थे। इस लहर में 97 – 104 पृष्ठ में इसका करीब करीब विवरण प्रदान किया गया है।

5. लक्ष्मणमाणिक्य – ये भुलुआ राज्य के अधिपति थे। लक्ष्मणमाणिक्य तथा उसके पुत्र बलराम माणिक्य के संक्षिप्त विवरण इस लहर में 117–128 पृष्ठ में प्रदान किया गया है। इस स्थल के पुनर्उल्लेख निष्प्रयोजन है।

6. मुकुन्द राम राय – ये भूष्णा या फतेहाबाद के शासन कर्ता थे। 1574 ईसवी अब्द तक सेनापति मुनायम खाँ ने बंग के विद्रोह के लिए आगमन किया था। इस समय मोराद खाँ नामक कोई सेनापति उनके सहयात्री थे। उन्होने भूष्णा या फतेहाबाद के विद्रोह का दमन किया।

दायुद तथा मुनायम खाँ के मध्य संधि संस्थापित होने के बाद, फतेहाबाद विजेता मोराद को जलेश्वर का शासनकर्ता का पद प्रदान किया गया। मुनायम खाँ के मृत्यु मुख में पतित होने के साथ साथ दायुद पुनर्बार विद्रोही खडे हुए। इस समय मोराद पुनर्बार फतेहाबाद में प्रेरित हुए तथा तथापि मानव लीला संवरण किया। इस सुयोग से भूष्णा के अधिपति मुकुन्द राय, मोराद के पुत्र लोगों की हत्या करके समग्र फतेहाबाद पर अधिकार कर बैठे। इस सम्बन्ध में वे वेवारिज साहब के अनुवादित अकबरनामा ग्रंथ में मिलता है –

"Murad Khan died a natural death. Mukunda the land holder of that part of the country, invited his sons as his guests and put them to death and laid hold of his estate."

Akbarnama(Beveridge) Vol 3, p. 469

1582 ईसवी में टोडरमल के बंग देश में शासन श्रृखंला के निमित्त आगमन काल में मुकुन्द राम को भूष्णा का भूस्वामी कहकर स्वीकार किया था। मुकुन्द राम सुचतुर शासन कर्ता थे। वे मूलतः बादशाह की अधीनता स्वीकार करते थे तथा समय समय सामान्य पेशकश भी भेजते थे। किन्तु कार्यतः स्वाधीन तरीके से शासन दण्ड परिचालन करते थे। सम्राट अकबर के समय जो देश व्यापी विद्रोहानल प्रज्ज्वलित हुआ था, मुकुन्द राम उसके अन्यतम नेता थे। विक्रमपुर के केदार राय तथा यशोहर के प्रतापादित्य आदि प्रबल पराक्रान्त भुइंया गण के पतन के बाद भी मुकुन्द राय कुछ काल अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए समर्थ हुए थे। सम्राट जहाँगीर के शासन काल में इस्लाम खाँ बंग के प्रधान कल्प के दौरान भुइंया लोगों का दमन किया था। परन्तु मुकुन्द राम के सहित मुकाबला कर नहीं आ पाये। इस्लाम खाँ

तृल –295

मुकुन्द राय के सहित सौहार्द स्थापन करके, उनके ही सहायता से कामरूप जय किया था। इस समय मुकुन्द ने पाण्डु तथा गोहाटी के थानादार का पद लाभ किया। कुछ काल बाद उस पद में अपने पुत्र सत्राजीत को नियुक्त करके मुकुन्द ने भूष्णा में प्रत्यावर्तन किया। अतएव उन्होने सम्राट को पेशकश बन्द कर दिये थे।

किसी किसी के मत में, इस समय मुकुन्द राम, बंग के शासन कर्ता सैयद खाँ कर्तृक पराजित तथा निहत हुए थे। यह उक्ति सर्ववादी सम्मत न होने पर भी मुकुन्द राय जो मुसलमान द्वारा पराभूत हुए थे, यह सभी स्वीकार करते हैं।

मुकुन्द राय के बाद उनके पुत्र सत्राजीत ने बंगाल के सुबेदार इस्लाम खाँ के निकट वश्यता स्वीकार किया था। अब्दुल लतीफ के भ्रमणा वृतान्त से अध्यापक सार यदुनाथ सरकार महाशय ने जो वृतान्त संग्रह किये हैं, वह आलोचना से जाना जाता है कि भूष्णा के राजा सत्राजीत,नवाब के साथ साक्षात करके कतिपय हस्ती उपढ़ौकन प्रदान किये थे।(1) कोज हाजो(कामरूप) को पुनर्बार अधिकार के प्रयोजन होने से नवाब, राज सैन्य के सहित सत्राजीत को उस जगह में प्रेरण किये थे। सत्राजीत द्वारा उस स्थान के राज भ्राता बलदेव के साथ गुप्त षडयन्त्र करके, मुगल वाहिनी के गतिविधियों की बात कह देने पर, उस अपराध में सत्राजीत अवरूद्ध हुए थे। बाद में उन्हे ढाका लेकर निहत किया गया। उसके साथ साथ ही भूष्णा राज्य का विलोप घटा था।

7. फजलगाजी तथा चाँदगाजी – भावाल के फजलगाजी का स्थिर विवरण इस लहर के 104 – 105 पृष्ठ में प्रदान किया गया है। चाँद प्रताप के चाँदगाजी तथा फजलगाजी एक ही वंश के सम्भूत हैं। फजलगाजी जब भावाल अंचल प्रभुत्व विस्तार कर रहे थे तब चाँद प्रताप का चाँद गाजी पर अधिपत्य था। बार भुइंया के तालिका में इन लोगों को गाजी वंशीय कहा गया था।

8. हामीर मल्ल या वीर हम्बीर – ये बाँकुडा जिला के अन्तर्गत विष्णुपुर के राजा थे। ये सम्राट अकबर के राजत्व काल में भुइंया गण में विशेष ख्यातिवान थे।

बृन्दावन के सन्निहत जयपुर के राजवंशीय एक शाखा से किसी व्यक्ति ने आकर विष्णुपुर में राज्य स्थापना किया, ऐसा प्रवाद है। जयपुर के राजा पुरूषोत्तम, भ्रमणोपलक्ष में राज्य से सस्त्रीक बहिर्गत होकर, विष्णुपुर के मध्य से जा रहे थे। तत्काल में विष्णुपुर निस्तब्ध जंगल संकुल तथा बागदी आदि वन्य जाति के आवास भूमि थी। राज महिषि ने इस जंगलमय प्रदेश में पन्थशाला में अवस्थान काल में एक पुत्र प्रसव किया। सद्यजात शिशु संतान महारानी को लेकर

---

(1) प्रवासी – 1326, प्रथम खण्ड, 552 पृ

पथ अतिवाहन करना असंभव था, द्विविधा में राजा ने उनको उस स्थान में रखकर तीर्थ यात्रा किया। इसके बाद रानी भी चली गई। वे किस अवस्था में कहाँ गये थे अथवा हिंस जन्तु द्वारा विनष्ट हुए थे कि नही, वह नहीं जाना गया।

इसके बाद श्रीकाश मितिया नामक बागदी(लकडी काटने या चुगने वाला) ने जंगल में सद्यजात शिशु को निराश्रय अवस्था में पाकर अपने घर में ले गये तथा सात साल तक सयत्न से लालन पालन किया। इसके बाद किसी ब्राह्मण ने बालक के रूप लावण्य से मुग्ध होकर, तथा सुलक्षणा क्रान्त देखकर अपने गृह में ले गये। ब्राह्मण की अवस्था नहीं अच्छी थी, उन्होने उस बालक को गोचराने तथा गृह के विविध कार्य में नियुक्त रखा। इस समय बागदीगण की कृपा से बालक बडा होने लगा, उसके दैनिक आहार्य बागदी लोगों से मिलता था। यह निराश्रय बालक रघुनाथ नाम से आख्यात हुए थे। कथित है, एक दिन बालक पलायित गाय के संधान में वन भ्रमण करके अतिशय क्लान्त होने पर एक वृक्ष मूल में निंद्रित हो पडा। इस समय एक विषधर साँप उसके मस्तक पर फन विस्तार करके धूप निवारण कर रहा था। तत्काल प्रतिपालक ब्राह्मण, बालक के संधान में आकर, तद्‌वस्था दर्शन से, बालक जो भविष्य में असाधारण व्यक्ति होगा, यह समझे तथा तद्‌वधि से उसको सयत्न से पालन करने लगे। भाग्यवान व्यक्तिगण के मस्तक में ही सर्प फन धारण करते है, प्रवाद वाक्य इस देश में प्राचीन काल में प्रचलित है तथा बहुतो के प्रति वह प्रवाद प्रयोग किया गया है। यह विषय लेकर अधिक आलोचना करने की कोई जरूरत नहीं है।

इसके कुछ दिन बाद उस जगह के जंगली जाती के राजा की मृत्यु हुई। उसके श्राद्ध उपलक्ष्य में राज भवन में बहुजन का समागम हुआ। बालक के प्रतिपालक ब्राह्मण ने भी उसको लेकर राजनिकेतन गमन किया। ब्राह्मणगण भोजन में बैठे। मात्र अर्द्ध भोजन होने को हुआ, उस समय मृत राजा का पट्टहस्ती, बालक रघु को सूंड द्वारा पकड़ा व ले चले। इस घटना से, बालक का जीवन संकटापन्न है, ऐसा बोल, सभी अधीर हो उठे, चारों तरफ कोलाहल उत्थित होने लगा। लेकिन हस्ती किसी तरफ लक्ष्य न करके शान्त तरीके से राज सिंहासन के निकट में जाकर बालक को उसके उपर बैठा दिया, तब विपुल जन मण्डली इस अभावनीय घटना दर्शन से विस्मित तथा स्तम्भित हो गयी। सभी कहने लगे, यह विधाता का विचित्र घटना है।

मस्तक पर सर्प के फन धारण की तरह, पाटहस्ती द्वारा राजा निर्वाचन के प्रवाद वाक्य भी बहु प्राचीन है। इस विषय की गवेष्णा न करना ही ठीक होगा।

रघुनाथ मल्ल वंशीय राजपुत्र बोलकर परिचित होने के कारण, वे विष्णुपुर के प्रथम मल्ल राजा कहकर गृहीत हुए। वे ''आदि मल्ल'' उपाधि से भूषित हुए तथा विष्णुपुर राज्य ने ''मल्ल भूमि'' नाम लाभ किया।

तृतीय लहर – 297

विष्णुपुर के मल्ल राजवंश बहु प्राचीन तथा समाज के सम्मानित है। इस वंश के महात्रऋर्षि वंशीय क्षत्रिय है, ऐसा परिचित है।

''मल्ल राजवंश'' नाम से प्राचीन हस्त लिखित ग्रंथ की सहायता से जाना जाता है कि हमारे आलोच्य हाम्बीर मल्ल या बीर हाम्बीर, आदि मल्ल रघुनाथ के अधस्तन 49वें स्थानीय है। इन्होने 868 मल्लाब्द में(1583 ई0) जन्म ग्रहण किया। 881 मल्लाब्द में(1596 ई0) ये राजा हुए थे। वीर हाम्बीर के चार महिषि तथा 22 पुत्र थे। ये सम्राट अकबर के शासन काल में बंग के भौमिक गणों के मध्य स्थान लाभ किया था। वे नाममात्र ही सम्राट के अधीन थे। प्रकृत पक्ष में स्वाधीन तरीके से शासन दण्ड परिचालन किया था। मुर्शिद कुली खाँ के समय इस वंश के साथ विष्णुपुर राज्य का प्रथम जमींदारी बन्दोबस्त हुआ।

प्रभुपाद श्रीनिवास आचार्य ठाकुर लक्ष्याधिक वैष्णव ग्रंथ लेकर जब श्रीवृन्दावन से बंग देश में आवागमन कर रहे थे, तब वीर हाम्बीर के षडयन्त्र से विष्णुपुर के जंगली पथ में वे सब ग्रंथ लून्ठित हुए। बाद में राजा ने, आचार्य गोस्वामी के प्रयत्न में उनका शिष्यत्व ग्रहण करके लून्ठित ग्रंथ समूह वापस किये थे। इस लून्ठन व्यापार में वे वैष्णव समाज के अश्रद्धा भाजन हुए थे, किन्तु स्वयं वैष्णव धर्म ग्रहण करके, वह त्रुटि संशोधन करने में समर्थ हुए थे।

विष्णुपुर के राजवंश अब भी विद्यमान है। उनकी प्राचीन समृद्धि के विस्तार लाघव हो रहने पर सामाजिक मर्यादा यद्यपि अक्षुण्ण है।

9. कंस नारायण – इन्होने बंग के भौमिक समाज में विशेष प्राधान्य लाभ किया था। कंस नारायण ने वरेन्द्र ब्राह्मण कुल के भट्ट नारायण के वंश में जन्म ग्रहण किया। ताहिरपुर जमींदार के स्थापयिता विजयलस्कर, सम्राट या बंग के किसी स्वाधीन शासन कर्ता द्वारा बंग के पश्चिम द्वार रक्षा का भार पाकर, 22 परगना तथा सिंह उपाधि लाभ किया था, यह कहा जाता है। बाराही नदी के तीरवर्ती रामबामा नामक स्थान में उनकी राजधानी प्रतिष्ठित थी। उनके पुत्र उदयनारायण के काल में इक्कीस परगना जब्त करके, एकमात्र ताहिरपुर उसके अधिकार में रखा गया। कंस नारायण इस उदय नारायण के पौत्र हैं। ये वीरेन्द्र समाज के संस्कार तथा तदानीन्तन बंगीय हिन्दू समाज का नेतृत्व लाभ करके विशेष सम्मानित हुए थे। किसी किसी मत में वे बंगेश्वर सुलेमान कर्रानी के अनुग्रह से फोजदार का पद लाभ किया। टोडरमल द्वारा ये राजा उपाधि तथा बंग तभा बिहार के दीवानी पद प्राप्त हुए थे। मुमेन खाँ के परलोक प्राप्ति के बाद कंस नारायण कुछ काल के निमित्त गौड के सुबेदारी पद में नियुक्त थे। बंग के भुइंया गण सभी ने इसके आनुगत्य स्वीकार किया। किसी किसी ऐतिहासिक मत में ये द्वादस भौमिक के अन्तर्निविष्ट थे।

तृतीय लहर – 298

10. राम कृष्ण – गौडेश्वर सामसउद्दीन/शमसुद्दीन इलियास के स्वाधीनता घोषणा काल में शिखाइ या शिखि वाहन व सुबुद्धि भादुडी नामक दो जन बरेन्द्र ब्राह्मण ने विशेष सहायता लाभ किया था। ये उभय ही खाँ उपाधिधारी तथा विस्तीर्ण जमींदारी के अधीश्वर थे। इन दोनों के मध्य सुबुद्धि भादुडी के वंशधर गण भादुडी चक्र या भातुरिया परगना जमींदारी सूत्र का लाभ किया था।

सुबुद्धि के वंशोद्भव राजा गणेश, बंग के स्वाधीन नरपति हुए थे। इन्होने ईसवी पंचदश शताब्दी के प्रथम पाद में राजत्व किया था। ''रियाज–उस–सलातीन'' तथा ''तवकात्–अकबरी'' उपाधि मुसलमान इतिहास में इसका नाम ''कान्स'' लिखित हुआ है। यह ''कान्स'' शब्द से किसी किसी इतिहासकार ने ''कंस'' तथा किसी इतिहासकार ने ''गणेश'' नाम ग्रहण किया हैं। कोई भी प्रकृत नाम स्थिर नहीं कर सके। इस पृष्ठ के पादटीका में राजा के जो आदेश दर्शाये गये है, तद् द्वारा स्पष्ट ही जाना जाता है कि उनका नाम ''गणेश'' था। ये मुसलमान विद्वेषी थे। बाद में मुसीबत में पड़कर इस्लाम धर्म ग्रहण करने में सम्मत हुए, किन्तु पत्नी के अनुरोध से स्वयं वह धर्म ग्रहण न करके, अपने पुत्र जदु को इस्लाम धर्म में दीक्षित करके, उसको राजत्व प्रदान द्वारा राज्य रक्षा किया था। उस काल के बंगीय ब्राह्मण समाज वैद्य जाति के प्रति नाना कारण से असंतुष्ट थे। किन्तु किसी भी रूप से प्रति–विधान करके उठ नहीं पा रहे थे। राजा गणेश के राजत्व समय में राजा, ब्राह्मणगण के अनुरोध से बाध्य होकर एक आदेश द्वारा बंगीय ब्राह्मण तथा वैद्य के मध्य एकत्र भोजन बन्द कर दिया था। तभी से समाज में वह आदेश प्रतिपालित होता आ रहा है।(1) राजा गणेश के कार्यो के मध्य यह एक उल्लेख योग्य घटना है।

शिखि वाहन के पुत्र बलाई ने सातौर का अधिपत्य लाभ किया। इस वंश के हमारे आलोच्य राजा राम कृष्ण को टोडरमल ने सामान्त राजा कहकर स्वीकृत तथा भुइंया श्रेणी में परिगणित हुआ था।

---

(1) राजा गणेश का उपर्युक्त आदेश कोल–ब्रुक प्रनीत **"History of the Rituals Rural Bengal"** ग्रंथ में सन्निवेशित हुआ है। वह वर्तमान काल में एसियाटिक सोसाइटी मे रखा गया है। उक्त आदेश की प्रतिलिपि निम्न प्रदान किया गया है।

''सत्य–त्रेता, द्वापरेषु वैद्यास्तपोज्ञानयुक्ता विद्यांसश्च आसन्। सम्प्रति एते शक्तिहीना आचारभ्रष्टाश्चाभवन्। अतः श्रीमन्महाराजाधिराज गणेशचन्द्र नृपतेरनुज्ञया विप्राणाम् अनुरोधात्, अद्य प्रभृति एते वैश्याचारिणो भविष्यन्ति, मूल ब्राह्मणा एभिः सह भोजनादिकंनाचरेषु। ये च ब्राह्मणा अमीभिः सह भोजनादि करिष्यन्ति, ते पतिता भविष्यन्ति।।''

मर्म – ''सत्य, त्रेता तथा द्वापर युग में वैद्यगण तपोज्ञानयुक्त तथा विद्वान थे।। अब वे शक्तिहीन तथा आचार भ्रष्ट होने से श्रीमान महाराजाधिराज गणेश चन्द्र नृपति विप्र – मण्डली के अनुरोध से आदेश करते थे कि आज से वैद्यगण वैश्याचारी होगे, मूल ब्राह्मण समाज इनके साथ सहित भोजनादि आचरण नहीं करेगें, जो ब्राह्मण इनके साथ भोजन करेंगे, वे पतित होगें''।

रामकृष्ण विद्योत्साही, दयालु तथा धार्मिक थे। राम कृष्ण की पत्नी के परलोक गमन के बाद सातौर राज्य नाटोर के रामजीवन के साथ बन्दोबस्त हुआ। सातौर के शीतल पाटी अत्युत्कृष्ट तथा विशेष आदरणीय था, गवर्नमेंट रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख मिलता है(1)।

11. पीताम्बर तथा नीलाम्बर – ये पुटिया के अधिपति थे। इस राजवंश के प्रतिष्ठा का नाम वत्साचार्य था, ये सन्यासी थे। ये बरेन्द्र ब्राह्मण समाज में कुलीन तथा बागची कुल में जन्म ग्रहण किये थे।

इस वत्साचार्य के पुत्र पीताम्बर ने सम्भवतया टोडरमल से लस्करपुर परगना की जमींदारी लाभ किया। उनके अनुज नीलाम्बर प्रथम को ''राजा'' उपाधि प्राप्त हुई थी। अब नीलाम्बर के वंशधरगण ही पुटियाँ के अधीश्वर पीताम्बर एक जन भौमिक थे, परन्तु उन्होने देश के लिए कोई काम किया हैं या नहीं इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

12. ईशा खाँ लोहानी तथा उसमान खाँ – सुलेमान कर्रानी उडीष्या विजयी के समय से कतलू खाँ लोहानी, पुरी के शासन कार्य में नियुक्त थे। उनके जाति भ्राता ईशा खाँ लाहोनी को वकील स्वरूप राजधानी में रखा गया। सुलेमान के पुत्र दायुद, स्वाधीनता घोषणा करने के बाद ''आक महल'' के युद्ध में निहत हुए। तब तक कतलू खाँ उडीष्या प्रकृत अधीश्वर होकर, ईशा खाँ को इसका प्रधान मन्त्रीत्व प्रदान किया। कतलू खाँ के परलोक गमन के बाद, उसके नाबालिग पुत्रगण के पक्ष से ईशा खाँ ने, बंगाल के शासन कर्ता राजा मान सिंह, के साथ सन्धि की थी। इसके पूर्व ईशाखाँ ने हिजली में एक नव राज्य की प्रतिष्ठा की थी। उसकी हिजली की राजधानी मेदिनीपुर जिला के अन्तर्गत थी, वर्तमान काल में वह प्रसिद्ध नगर में परिणत हुआ है।

ईशा खाँ के पुत्र उस्मान खाँ(2) उडीष्या राज्य में कतलू खाँ के प्रधान सेनापति पद में नियुक्त थे। पिता के परलोक गमन के बाद वे उडीष्या प्रदेश में मुगल शक्ति के विरूद्ध में खड़े हुए थे। मान सिंह यह विद्रोह दमन करने में समर्थ नहीं हुए। जहाँगीर के समय में, बंग के सुबेदार इस्लाम खाँ ने 1612 ईसवी में उस्मान को पराजित तथा निहत किया था।

उस्मान के पराजय स्थान निर्देश्य के उपलक्ष्य में बहुतों ने अनेक बात कही है, अब भी उस विषय का शेष मीमांसा नहीं हुआ है, अर्थात इस विषय में आलोचना में प्रवृत्त होकर निरर्थक बात नहीं बढ़ायेगें।

---

(1) **Statistical Accounts of Dacca, Faridpur and Backergunj (Hunter)**

(2) स्टुयार्ट साहब ने उस्मान को कतलू खाँ का पुत्र कहकर उल्लेख किया है। डर्न के मत में उस्मान दायुद के कनिष्ठ भ्राता थे। बंकिम बाबू ने उस्मान को कतलू के भ्रातुष्पुत्र कहा है। ईशा खाँ को कतलू के ज्ञाति भ्राता कहकर जाना गया है। अर्थात उस्मान, कतलू खाँ के भ्रातुष्पुत्र थे, यही संगत है, कहकर निर्धारण किया है।

तृतीय लहर – 300

ईशा खाँ तथा उस्मान भौमिक गण के मध्य विशेष प्रतिभाशाली तथा वीर थे, यह बात कहना काफी है। इतिहास आलोचना में इसके असीम वीरत्व का परिचय मिलता है।

शेष बातें – हमने जिन सब नाम द्वारा भौमिक गण के द्वादस संख्या पूर्ण किया है, वह सब स्वीकार करेगें, ऐसा आशा किया नहीं जा सकता है। कारण, इनका नाम लेकर जो घोर मत वैषम्य चलता है, आज भी उसका मीमांसा नहीं हुआ, कितने दिन में वह वितर्क खत्म होगा, वह अनिश्चित है। इस रूप क्षेत्र में हमारे सिद्धान्त को स्थिर सिद्धान्त कहकर गृहीत होने की सम्भावना नही, यह सहज ही बोध होता है। तथापि हम लोगो ने इस स्थल में अपने मत प्रचलन की बिन्दु मात्र भी कोशिश नहीं किया, ऐतिहासकारो के मत मात्र अनुसरण किये हैं। और एक बात है, भौमिकगण के विवरण को नितान्त ही असम्पूर्ण तरीके से प्रदान करना पड्ड्ा है। इसके विवरण विशेष ज्ञातव्य तथा ग्रहणीय होने पर भी वह लेकर राजमाला के कलेश्वर अत्यधिक पुष्ट करना हमारा अभिप्रेत नही, तथा वह संगत नहीं होगा। प्रधानतः इस कारण विस्तृत विवरण प्रदान के पक्ष में अक्षम हुए।

सोलह शताब्दी में भौमिक गण की अवस्था आलोचना करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। इस समय का इतिहास आलोचना करने पर जाना जाता है कि पठान राजत्व के शेष अवस्था के समय से नानाविध शासन विश्रृखंला के कारण भौमिकगणो ने प्रधान्य लाभ करने का सुयोग्य पाया था। मुगल राजत्व के प्रारम्भ में, पराजित पठान शक्ति के साथ मिलकर भौमिक गणो ने देश भर ने विद्रोहानल प्रज्जवलित करके, मुगल लोगों को भयभीत कर रखा था।

पठानगणो ने 300 वर्ष बंग देश शासन किया था। उनके शासनकाल में हिन्दु तथा मुसलमान के मध्य अनेक परिमाण में सद्भावना का आदान प्रदान चल रहा था। यहां तक कि धर्म क्षेत्र में भी परस्पर मध्य मिलने का नमूना देखा जाता था। हिन्दु गण पीर की सिन्नी करते थे। मुसलमानगण हिन्दु के मन्दिर में पूजा देते थे। इस रूप दृष्टान्त भी विरल नहीं है। मुगल विजय के बाद, हिन्दुगण पठान के पक्षपाती हो उठे – उन्होने मुगल शासन पसन्द नहीं किया। मुगलगण भी नाना रूप अविचार तथा अत्याचार द्वारा हिन्दु गण में विद्वेष भाव की आग में घृत की तरह छिड़क रहे थे। इसके फल से देश में अराजकता तथा विद्रोह भाव जाग उठा। जिनका शक्ति है, प्रतिभा है वे ही प्राधान्य लाभ करने लगे, भूम्याधिकारीगण स्वाधीनता प्रयासी हुए, जिनका पहले कुछ भी नहीं था, दैहिक शक्ति से वे भी खण्ड खण्ड भूभाग अधिकार करके बैठने लगे। ''जिसकी लाठी उसकी माटी'' यह प्रवाद वाक्य तत्काल सम्पूर्ण सफल हुआ था। पठान तथा मुगल शासन के संधिकाल में इस देश में कितने छोटे छोटे भौमिक का अभुद्‌य हुआ है। उनकी संख्या निरूपण करना दुःसाध्य है।

तृतीय लहर – 301

सारे देश में अत्याचार, अशान्ति तथा विप्लव में प्रजागण धन प्राण लेकर भयभीत थे। इस समय जो शक्तिशाली व्यक्ति उनको आश्रय दान करके निजउद्योग कर पाये थे, वे देश के उपर अनायास से प्राधान्य लाभ करने में समर्थ हुए हैं। यह वीरत्व का युग है। देश में अशान्ति उद्वेग के मध्य धन प्राण तथा परिवार रक्षा के निमित्त सभी को ही सम्पूर्ण कोशिश में रहना पडता है। एक दूसरे की सहायता करने में बाध्य होते हैं। इस सूत्र से देश मे एक सजीवता का शोर मचा था। भौमिकगण के मध्य में बहुत जनों ने इस समय स्वदेश की सेवा में आत्मनियोग किया था। उनके मध्य खिजिरपुर के ईशा खाँ, यशोहर के प्रतिपादित्य, विक्रमपुर के केदार राय, बाकला के कन्दर्प राय, भूष्णा के मुकुन्द राय, भुलुवा के लक्ष्मणमाणिक्य तथा हिजली के उस्मान खाँ लोहानी प्रधान थे। इनके मध्य किस का कृतित्व अधिक है, इस स्थल में वह विचार प्रकृत होना अनावश्यक है।

विजित पठान तथा बंग के भौमिक गण के प्रचेष्टा से मुगलगण अनेक काल बंग में सुशासन स्थापना नहीं कर पाये। निरुपाय होकर उनको अनेक समय भौमिक समाज की सहायता ग्रहण करना पडा है। उस काल के भौमिक गण सामरिक सम्भार से नितान्तहीन नहीं थे। ''आईन–ई–अकबरी'' आलोचना में मिलता है, सम्राट अकबर के समय, उनके सहायता के निमित्त बंग देश के जमींदारी गण के प्रति निम्नलिखित युद्ध समान प्रस्तुत रखने के निमित्त आदेश हुये थे।

अश्वारोही	....	23,330
पदातिक	....	8,01,150
हस्ती	....	170
तोप	....	4,260
युद्ध पोत	....	4,400

यह सम्राट द्वारा भूम्याधिकारीगण की शक्ति स्वीकार के परिचायक है कि नहीं ? बंगाल के अतीत वैभव को लेकर आलोचना की बहुत सी बात हैं। इस स्थल में उसकी सुविधा नहीं है।

बंगाल भौमिक समाज के सहित त्रिपुरेश्वरगण के सहृदय रहने के विस्तार प्रमाण राजमाला में मिलते हैं। भौमिकगण से त्रिपुरेश्वर के सहायता लाभ करने के प्रमाण इस आख्यायिका के प्रथम भाग में प्रदान किये गये है। भौमिक गण भी त्रिपुरा की सहायता लाभ से वंचित नहीं थे। विक्रम पुर के केदार राय त्रिपुर सैन्य थे। मान सिंह के विक्रम पुर पर आक्रमण करने के लिए आकर केदार राय को जो पत्र लिखा था। उसमें मिलता है –

त्रिपुर मघ बंगाली काक कुलि काचाली।   त्रिपुर मघ बंगाली काक कुलि काचाली।
सकल पुरूष मेतत् भाग जाओ पालायी।।   सब पुरूष जल्दी भाग जाओ पालायी।।

इत्यादि।

तृतीय लहर – 302

इस स्थल में प्रथम ही ''त्रिपुर'' नाम मिल रहा है। प्रतापादित्य के कुकी सैन्य रहने के प्रमाण मिलते हैं। त्रिपुरा तथा कुकी सैन्य जो त्रिपुरेवर के सम्पद है, इसको समझने में चिन्ता का कोई प्रयोजन नहीं है।

राज धर्म

राजमाला के आलोच्य लहर में नाना स्थान में 'राजधर्म'' वाक्य बार बार प्रयोग किया गया है। महाराज अमर माणिक्य के विवरण में मिलता है –

चतुर्दश देब बरे त्रिपुरार राजा।	चतुर्दश देव पूजें त्रिपुरा महाराजा।
राजा होइया धर्म चले ताके सहे प्रजा।।	राजा से धर्म चले उसे सहे सारीप्रजा।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड2 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड2 पृ

''राजा होकर धर्म में चले। '' इस वाक्य द्वारा राजधर्म को ही लक्ष्य किया गया है। राजधर माणिक्य प्रसंग में लिखा गया है –

राजधर्में लिखिया छे बिचार राजार।	लिखा राज धर्म में राजा का विचार।
अबिचार कोरे राजा पतन पुनर्बार।।	अविचार करे राजा पतन होगा पुर्नवार।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड49 पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड49 पृ

महाराज राजधर के राजोचित कर्तव्य पालन विषयक विवरण प्रदान के बाद कहा गया है –

एई मत राजधर्म छिलो नृपतिर।	इस तरह राजधर्म पालन करते नृपवर।
शांत दांत महाराजा प्रजा राखे स्थिर।।	शांत दांत महाराजा प्रजा राखे स्थिर।।
राजमाला तृल राजधर माणिक्य खण्ड51 पृ	राजमाला तृल राजधर माणिक्य खण्ड51 पृ

ये सब ''राज धर्म'' शब्द के प्रयोग द्वारा राजा के अनन्त कर्तव्य पालन का ईशारा किया गया है। राजा होकर राज्योचित धर्म पालन न करने से प्रकृति प्रजा को वश में नहीं रखा जा सकता तथा सुविचार के अभाव में राजा का पतन अनिवार्य है, यह बात भी कही गयी है–

राज धर्म किसको कहते हैं, इस स्थल में इस विषय में आलोचना करना शायद अप्रसांगिक नहीं होगा। मानव धर्म शास्त्र में, राजा का स्वरूप, राजा तथा प्रजा के बीच परस्पर सम्बन्ध तथा राजा के कर्तव्य विषय में जो सब बातों का उल्लेख मिलता है, इस स्थल में वही प्रदान किया जा रहा है।

राजधर्म प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः।
सम्भवश्च यथा तस्य सिद्धिश्च परमा यथा।। 1
ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेन यथाविधि।
सर्वस्यास्य यथान्यायं कर्तव्यं परिरक्षनं।। 2
अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्वतो विद्रुते भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत् प्रभुः।। 3

तृतीय लहर – 303
इन्द्रानिल यमार्काणामगनेश्च वरूणस्य च।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः।। 4
यस्मादेषां सुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्म्मितो नृपः।
तस्मादभिभवत्येष सर्वभूतानि तेजसा।। 5
तपत्यादित्यवच्चैष चक्षुंषि च मनांसि च।
न चैनं भूवि शक्नोति कश्चिदप्यभिवीक्षितूं।। 6
सोऽग्निर्भवतिवायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट्।
स कुबेरः स वरूण स महेन्द्रः प्रभावतः।। 7
बलोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य ईति भूमिपः।
महति देवता हेयष्या नररूपेण तिष्ठति।। 8
एकमेव दहत्यग्निर्नरं दुरूपसर्पिणं।
कुलं दहति राजाग्निः सपशुद्रव्य संचयं।। 9
कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिन्च देश कालौच तत्वतः।
कुरूते धर्म्मसिद्धर्थं विश्वरूपं पुनःपुनः 10
यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे।
मृतुश्च बसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः।। 11
तंग यस्तु द्वेष्टि संमोहात् स विनश्यत्यसंशयं।
तस्य हयाशु बिनाशाय राजा प्रकुरूते मनः।। 12
तस्माद्धर्म्मं यमिष्टेषु स व्यवस्येन्नराधिपः।
अनिष्टच्याप्यनिष्टेषु तं धर्मं न विचालयेत्।। 13
तस्यार्थे सर्वभुतानां गोप्तारं धर्ममात्मजं।
ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत् पूर्वमीश्वरः।। 14
तस्य सर्वाणि भूतानि स्थावराणि चारणि च।
भयाद्भोगाय कल्पन्ते स्वधर्म्मान्न चलन्ति च।। 15
तं देश कालौ शक्तिन्च विद्यान्चावेक्ष्य तत्तवतः।
यथार्हतः सम्प्रणयेन्नवेष्वन्याय वर्तिषु।। 16
स राजा पुरूषो दण्डः स नेता शासिता च सः।
चतुर्णामाश्रमाणांच धर्म्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।। 17
दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म्मं विदुर्व्वुधा।। 18
समीक्ष्य स धृतः सम्यक् सर्व्वा रंजयति प्रजाः।
असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः।। 19
यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं दण्डेष्वतन्द्रितः।
शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन् दुर्व्वालान् बलवत्तराः।। 20
अद्यात् काकः पुरोडाशं श्वावलिह्याद्धविस्तथाः।
स्वाम्यन्च न स्यात् कस्मिंश्चित् प्रवर्त्तेता धरोत्तरं।। 21

तृतीय लहर – 304
सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिनेरः।
दण्डस्य हि भयात्सर्वा जगद्भोगाय कल्पते।। 22
देवदानवगंधर्व रक्षांसि पतगोरगाः।
तेऽपि भोगाय कल्पन्ते दण्डेनैव निपीडिताः।। 23
दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन् सर्वसेतवः।
सर्वलोक प्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात्।। 24
यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरित पापहा।
प्रजास्तत्र न मूह्यन्ति नेता चेत् साधु पश्यति।। 25
तस्याहुः सम्प्रणेतारं राजानं सत्यवादिनं।
समीक्ष्यकारिणं प्राज्ञं धर्म कामार्थ कोविदं।। 26
तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते।
कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते।। 27
दण्डो हि सुमहत्तेजो दुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः।
धर्म्माद्विचलितं हस्ति नृपमेव सवान्धवं।। 28
ततो दुर्गन्च राष्ट्रन्च लोकन्च सचराचरं।
अन्तरिक्ष गतांश्चैव मुनीन् वेदांश्च पीडयेत्।। 29
सोऽसहायेन मूढेन लुब्धेनाकृत बुद्धिना।
न शक्यो न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च।। 30
सुचिना सत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारिना।
प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता।। 31
स्वराष्ट्रे न्यायवृत्तः स्याद्भृशदण्डश्च शत्रुषु।
सुहृत्स्वजिम्हः स्निगधेषु ब्राह्मणेषु क्षमान्वितः।। 32
एवं वृत्तस्य नृपतेः शिल्लोन्छेनापि जीवतः।
विस्तीर्यते यषो लोके तैलबिन्दुराविम्भसि।। 33
अतस्त विपरीतस्य नृपतेरजितात्मनः।
संक्षिप्यते यशो लोके धृतबिन्दुरिवाम्भसि।। 34
स्वे स्वे धर्मे निविष्टानं सर्व्वोषामनुपूर्वशः।
वर्णनामाश्रमानान्च राजा सृष्टोऽभिरक्षिता।। 35
तेन यद्यत् सभृत्येन कर्तव्यं रक्षता प्रजाः।
तत्तद्वोऽहं प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः।। 36
ब्राह्मणान् पर्यूपासीत प्रातरूथाय पार्थिवः।
त्रैविद्यवृद्धान् विदुषस्तिष्ठेत्तेषान्च शासने।। 37
वृद्धांश्च नित्यं सेवेत विप्रान् वेदविदः शुचीन्।
वृद्ध सेवी हि सततं रक्षोभिरपि पुज्यते।। 38
तेभ्योऽधिगच्छेद्विनयं विनीतात्मापि नित्यशः।
विनीतात्मा हि नृपतिर्नविनश्यति कर्हिचित्।। 39

वहवोऽविनयान्नष्टा राजानः सपरिच्छदाः।
वनस्था अपि राज्यानि विनयात् प्रतिपेदिरे।। 40
वेणो विनष्टोऽविनयान्नहुषश्चैव पार्थिवः।
सुदासो यावनिश्चैव सुमुखो निमिरेव च।। 41
पृथूस्त विनयाद्राज्यं प्राप्तवान् मनुरेव च।
कुबेरश्च धनैश्वर्यं ब्राह्मण्यन्चैव गाधिजः।। 42
त्रैविद्येभस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिन्च शाश्वतीं।
आन्वीक्षिकीन्चात्म विद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः।। 43
ईन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठे दिद्‌वानिशं।
जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापोयितुं प्रजाः।। 44
दश काम समुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च।
व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्ज्जयेत्।। 45
कामजेषू प्रसक्तो हि व्यासनेषू महीपतिः।
विषुज्यतेऽर्थ धर्म्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैव तू।। 46
मृगयाक्षो दिवास्वप्नः परीवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्‌य्या च कामजो दशको गनः।। 47
पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्षासुयार्थ दूषणं।
वाग्‌दण्डजन्च पारूष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।। 48
द्वयोरप्येतयोर्मुलं यं सर्वे कवयो विदुः।
तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावूभौ गणौ।। 49
पानमक्षाः स्त्रियश्चैव मृगया च यथाक्रमं।
एतत् कष्ट तमं विद्याच्चतुष्कं कामजे गणे।। 50
दण्डस्य पातनन्चैव वाक्पारूस्यार्थदुषणे।
क्रोधजेऽपि गणे विद्यात् कष्टमेतत्रिकं सदा।। 51
सप्तकस्यास्य वर्गस्य सर्वत्रैवानुषंगिणः।
पूर्व्वं पूर्व्वं गुरूतरं विद्याद्यसनमात्मवान्।। 52
व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते।
व्यसन्यधोऽधो ब्रजति स्वर्यात्य व्यसनीमृतः।। 53
मौलान् शास्त्रविदः शूरान् लब्धलक्षान् कुलोद्‌गतान्।
सचिवान् सप्त चाश्टौ वा प्रकुर्ब्बीत परीक्षितान्।। 54
अपिषत् सुकरं कर्म्म तदप्येकेन दुष्करं।
विशेषतोऽसहायेन किन्तु राज्यं महोदयं।। 55
तैः सार्द्धं चिन्तयेन्नित्यं सामान्यं सन्धिविग्रहं।
स्थानं समूदयं गुप्तिं लब्धप्रशमनानि च।। 56
तेषां स्वं समभिप्रायमूपलभ्य पृथक् पृथक्।
समस्तानान्च कार्येषू विदध्याद्धृतमात्मनः।। 57

तृतीय लहर – 306
सर्वेषान्तु विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता।
मन्त्रयेत् परमं मन्त्रं राजा षाड् गुण्यसंयूतं।। 58
नित्य तस्मिन् समाश्वस्तः सर्व कार्याणि निःक्षिपेत्।
तेन सार्द्धं विनिश्चित्य ततः कर्म्म समारभेत्।। 59
अन्यानपि प्रकुर्व्वीत शुचीन् प्राज्ञानवस्थितान्।
सम्यगर्थ समाहर्त्त नमात्यान् सुपरीक्षितान्।। 60
निर्वर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्तव्यता नृभिः।
तावतोऽतन्द्रितान् दक्षान् प्रकुर्व्वित विचक्षणान्।। 61
तेषामर्थे नियून्जीत शूरान् दक्षान् कुलोद्गतान्।
शुचीनाकरकर्माण्ते भीरूनन्तनिवेशने।। 62
दुतन्चैव प्रकुर्व्वित सर्वशास्त्र विशारदं।
ईंगिताकार चेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतं।। 63
अनुरक्तः शुचिर्द्दक्षः स्मृतिमान् देशकालवित्।
वपुष्मान् वीतभीर्वागमि दुतो राज्ञः प्रशस्यते।। 64
अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया।
नृपतौ कोषराष्ट्रे च दुते सन्धि विपर्ययौ।। 65
दूत एव हि सन्धत्ते भिनत्येव च संहतान्।
दूतस्तत् कुरूते कर्म भिद्यन्ते येन वा न वाः।। 66
स विद्यादस्य कृत्येषु निगुडेइंगित चेष्टितैः।
आकारमिंगितं चेष्टां भृत्येषु चिकीर्षितं।। 67
बुद्धा च सर्व्वं तत्वेन परराजचिकीर्षितं।
तथा प्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानं न पीडयेत्।। 68
जांगलं शस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलं।
रम्यमानतसामन्तं स्वाजीव्यं देशमावसेत्।। 69
धन्वदुर्गं महीदुर्गमव्दुर्गं वार्क्षमेव वा।
नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत् पुरं।। 70
सर्वेण तु प्रयत्नेन गिरिदुर्गं समाश्रयेत्।
येषां हि बहुगुण्येन गिरिदुर्गं विशिश्यत।। 71
त्रीण्याद्यान्याश्रितास्तेषां मृगगर्त्ताश्रयाप्सराः।
त्रीण्युत्तराणि क्रमशः प्लबंमनरामराः।। 72
यथा दुर्गाश्रितान्येतान्नोपहिंसन्ति शत्रवः।
तथारयो न हिंसन्ति नृपं दुर्ग समाश्रीं।। 73
एकः शतं योधयति प्राकारस्थो धनुर्धरः।
शतं दशसहस्रानि तस्माद्दुर्गं विधीयते।। 74
तत् स्यादायूधसम्पन्नं धनधान्येन वाहनैः।
ब्राह्मनैः शिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेन च।। 75

तृल – 307
तस्य मध्ये सुपर्याप्तं कारयेद् गृहमात्मनः।
गुप्तं सर्व्वर्त्तकं शुभ्रं जलवृक्षसमन्वितं।। 76
तदध्यास्योद्वलुप्तसद्भार्यां सवर्णां लक्षणान्वितां।
कुले महति सम्भूतां हयद्यां रूपगुणान्वितां।। 77
पुरोहितन्च कुर्व्वीत वृणयादेव चर्त्विजं।
तेऽस्य गृहयाणि कर्म्माणि कुर्युर्व्वैतानिकानि च।। 78
यजेत राजा क्रतुभिर्व्विविधैराप्तदक्षिनैः।
धर्मार्थन्चैव विप्रेभ्यो दद्यादभोगान् धनानि च।। 79
सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्वलिं।
स्याच्चाम्नापरो लोके वर्त्तेत पितृवन्नृषू।। 80
अध्याक्षान विविधान् कुर्यात्तत्र तत्र विपश्चितः।
तेऽस्य सर्वाण्यवेक्षेरन्नृणां कार्याणि कुर्ब्बतां।। 81
आवृत्तानां गुरू कुलाद्विप्राणां पूजको भवेत्।
नृपानामक्षयो हयेष निधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते।। 82
न तं स्तेना न चा मित्रा हरन्ति न च नश्यति।
तस्माद्राज्ञा निधान्तव्यो ब्राह्मणेषवक्षयो निधिः।। 83
न स्कन्दते न व्यथते न विनश्यति कर्हिचित्।
वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्यो ब्राह्मणस्य मुखे हुतं।। 84
समम ब्राह्मणे दानं द्विगुनं ब्राह्मणब्रुवे।
प्राधीते शतसाहस्रमनन्तं वेदपारगे।। 85
पात्रस्य हि विशेषेण श्रद्दधानतयैव च।
अल्पं वा बहु वा प्रेत्य जानस्यावाप्यते फलं।। 86
समोत्तमाधमै राजा त्वाहूतः पालयन् प्रजाः।
न निवर्त्तेत संग्रामात् क्षात्रं धर्ममनुस्मरन्।। 87
संग्रामेषवनिवर्त्तित्वं प्रजानान्चैव पालनं।
शुश्रुषा ब्राह्मणानान्च राज्ञां श्रेयस्करं परं।। 88
आहवेषू मिथोऽन्योन्यं जिधांसन्तो महीक्षितः।
यूध्यमानाः परंशक्त्या स्वर्गं यान्तयपरान्मुखाः।। 89
न कूटैरायुधैर्हन्यात् युध्यमानो रणे रिपून्।
न कर्णिभिर्न्नापि दिग्द्धैर्न्नाग्निज्वलिततेज नैः।। 90
न च हन्यात् स्थलारूढं न क्लीवं न कृतान्जलिं।
न मुक्तकेशं नासीनं न तवास्मीति वादिनं।। 91
न सुप्तं न विषन्नाहं न नग्नं न निरायुधं।
न युध्यमा नं पश्यन्तं न परेण समागतं।। 92
नायुधव्यसनप्राप्तं नार्त्तं नाति परीक्षितं।
न भीतं न परावृत्तं सतां धर्म्ममनुस्मरन्।। 93

तृल – 308
यस्तु भीतः परावृत्तः संग्रामे हन्यते परैः।
भर्त्तूर्यदुष्कृतं किंचित् तत्सर्वं प्रतिपद्यते।। 94
यच्चास्य सुकृतं किंचिदमुत्रार्थमुपार्ज्जितं।
भर्त्ता तत् सर्वमादत्ते परावृत्तहतस्य तु।। 95
रथाश्वं हस्तिनं छत्रं धनं ध्यानं पशून स्त्रियः।
सर्व द्रव्याणि कुप्यन्च यो यज्जयति तस्य तत्।। 96
राज्ञश्च ददयुरूद्धारमित्येषा वैदिकी श्रुतिः।
राज्ञा च सर्वयोधेभ्यो दातव्यमपृथग् जितं।। 97
ऐयोऽनुपस्कृतः प्रोक्तो योधधर्म्मः सनातनः।
अस्माद्धर्म्मान्न च्यवेत क्षत्रियोध्नन् रणे रिपून्।। 98
अलब्धन्चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत् प्रयत्नतः।
रक्षितं वर्द्धयेचैव वृद्धं पात्रेषु निक्षिपेत्।। 99
एतच्चतुर्विधं विद्यात् पुरूषार्थ प्रयोजनं।
अस्य नित्यमनुष्ठानं सम्यक्कूर्यादतन्द्रितः।। 100
अलब्धमिच्छेद्यण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया।
रक्षितं वर्द्धयेद्वृद्धया वृद्धं दानेन निःक्षिपेत्।। 101
नित्य मूद्यत दण्डः स्यान्नित्यं विवृत पौरूषः।
नित्यं संवृतसंवार्यो नित्यं छिद्रानुसार्यरेः।। 102
नित्यमुद्यतदण्डस्य कृत्स्नमुद्विजते जगत्।
तस्मात् सर्वाणि भूतानि दण्डेनैव प्रसाधयेत्।। 103
आमाययैव वर्त्तेन न कथन्चन मायया।
बुध्येतारि प्रयुक्तान्च मायां नित्यं स्वसंवृतः।। 104
नास्यच्छिद्रं परो विद्यात् विद्याच्छिद्रं परस्य तू।
गूहेत् कूर्म्म ईवांगानि रक्षेद्विवर मात्मनः।। 105
वकवच्चिन्तयेदर्थान् सिंहबच्च पराक्रमेत्।
वृकवच्चाबलुम्पेत शशबच्च विनिष्पतेत्।। 106
एवं विजयमानस्य येऽस्य स्यूः परिपन्थिनः।
तानानयेद्वशं सर्वान् सामादिभिरूप क्रमैः।। 107
यदि ते तू न निष्ठेयूरूपायैः प्रथमै स्त्रिभिः।
दण्डेनैव प्रसहैत्यान्छनकैर्ब्बशमानयेत्।। 108
सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः।
सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये।। 109
यथोद्धरति निर्द्दाता कक्षं धान्यन्च रक्षति।
तथा रक्षेन्नृपो राष्ट्रं हन्याच्च परिपन्थिनः।। 110
सोहाद्राजा स्वराष्ट्रं यः कर्षयत्यनबेक्षया।
सोऽचिराद्भ्रश्यते राज्याज्जीविताच्च सबान्धववः।। 111

शरीरकर्षनात् प्राणाः क्षियन्ते प्राणीनां यथा।
तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षियन्ते राष्ट्र कर्षनात्।।112
राष्ट्रस्य संग्रहे नित्यं विधानमिदमाचरेत्।
सुसंगृहीत राष्ट्रो हि पार्थिवः सुखमेधते।। 113
द्वयोस्त्रयानां पंचानां मध्ये गुल्ममधिष्ठितम्।
तथा ग्रामशतानान्च कुर्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम्।। 114
ग्रामस्यधिपतिं कुर्याद्दशग्राम पतिं तथा।
बिंशतीशं शतेशंच सहस्रपतिमेव च।। 115
ग्रामे दोषान् समुत्पन्नान् ग्रामिकः शनकै स्वयं।
शंसेदग्रामदशेशाय दशेशो बिंशतिशिनम्।। 116
बिंशतीशस्तु तत्सर्वंग शतेशाय निवेदयेत्।
शंसेदग्रामशतेशस्तु सहस्रपतये स्वयम्।। 117
यानि राजप्रदेयानि प्रत्यहं ग्रामवासिभिः।
अन्नपानेन्धनादीनि ग्रामिककस्तान्यवाप्नुयात्।।118
दशी कुलन्त भुन्जीत बिंशी पन्च कुलानि च।
ग्रामं ग्रामशताघ्यक्षः सहस्राधिपतिः पुरम्।। 119
तेषां ग्राम्याणि कार्याणि पृथक्कार्याणि चैव हि।
रज्ञोऽन्यः सचिवः स्निग्धस्तानि पश्येदतन्द्रितः।। 120
नगरे नगरे चैकं कुर्यात् सर्वार्थचिन्तकम्।
उच्चै स्थानं घोररूपं नक्षत्राणामिव ग्रहम्।। 121
सतानन्‍ु परिक्रामेत् सर्वानेव सदा स्वयम्।
तेषां वृत्तं परिणयेत् सम्यग्राष्ट्रेषु तच्चरैः।। 122
राज्ञो हि रक्षाधिकृताः परस्वादायिनः शठा।
भृत्या भवन्ति प्रायेण तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजाः।। 123
ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव गृहियुः पापचेतसः।
तेषां सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात् प्रवासनम्।। 124
राजकर्म्मसु युक्ताणां स्त्रीणां प्रेष्यजनस्य च।
प्रत्यहं कल्पयेद्ववृत्तिं स्थान कर्म्मानुरूपतः।। 125
पनो देयोऽवकृष्टस्य षड्डुत्कृष्टस्य वेतनम्।
षान्मासिकस्तथाच्छादो धान्य द्रोणस्तु मासिकः।।126
क्रयविक्रयमध्वानं भक्तन्च सपरिव्ययम्।
योगक्षेमन्च सम्प्रेक्ष वनिजो दापयेत् करान्।। 127
यथा फलेन युज्येत राजा कर्ता च कर्मनाम्।
तथावेक्ष नृपो राष्ट्रे कल्पयेत् सततं करान्।। 128
यथाल्पाल्पमदन्तयाद्यं वार्योको वत्स षट् पदाः।
तथाल्पाल्पो ग्रहितव्यो राष्ट्राद्राज्ञाव्दिकः करः।। 129

तृल – 310
पंचाशद्भाग आदेयो राज्ञा पशुहिरण्योः।
धान्यानामष्टमो भागः षष्ठौ द्वादश एव वा।। 130
अददीताथ षड् भागं क्रमांसमधुसर्पिषाम्।
गन्धौषधिरसानान्च पुष्पमूलफलस्य च।। 131
पत्र शाकतृणानान्च वैदलस्य च चर्म्मणाम्।
मृन्मयानान्च भाण्डानां सर्वन्याश्ममयस्य च।। 132
म्रियमाणोऽप्याददीत न राजा श्रोत्रियात् करम्।
न च क्षुधाऽस्य संसीदेच्छ्रोत्रियो विषये वसन्।। 133
यस्य राज्ञस्तु विषये श्रोत्रियः सीदति क्षुधा।
तस्यापि तत्क्षुधा राष्ट्रमचिरनैव सीदति।। 134
श्रुतवित्ते विदित्वास्य वृत्तिंधर्म्मां प्रकल्पयेत्।
संरक्षेत् सर्वतश्चैनं पिता पुत्र मिवौरसम्।। 135
संग रक्ष्यमाणो राज्ञा यः कुरूते धर्म्ममन्वहम्।
तेनायूर्व्वर्द्धते राज्ञो द्रविनं राष्ट्रमेव च।। 136
यत किंचिदपि वर्षस्य दापयेत् कर संज्ञितम्।
व्यवहारेण जीवन्तं राजा राष्ट्रे पृथग्जनम्।। 137
कारूकान् शिल्पिनश्चेव शूद्रांश्चात्मोपजीविनः।
एकैकं कारयेत् कर्म्म मासि मासि महीपतिः।। 138
नोच्छिन्द्यादात्मनो मूलं परेषांचातितृषया।
उच्छिन्दन् ह्यात्मनो मुलमात्मानं तांश्च पीडयेत्।। 139
तीक्ष्नश्चैव मृदुश्च स्यात् कार्यं वीक्ष्य महीपतिः।
तीक्ष्नश्चैव मृदृश्चैव राजा भवति सम्मतः।। 140
अमात्यमुखं धर्म्मज्ञं प्राज्ञं दान्तं कुलोदगतम्।
स्थापयेदासने तस्मिन् खिन्नः कार्येक्षणे नृणाम्।। 141
एवं सर्वं विधायेदमितिकर्त्तव्यमात्मनः।
युक्तश्चैवाप्रमत्तश्च परिरक्षेदिमाः प्रजाः।। 142
विक्रोशन्त्यो यस्य राष्ट्राध्रियन्ते दस्युभिः प्रजाः।
संपश्यतः सभृत्यस्य मृतः स न तु जीवति।। 143
क्षत्रियस्य परोधर्म्मः प्रजानामेव पालनम्।
निर्दिष्ट फलभोक्ता हि राजा धर्म्मेण यूज्यते।। 144
उत्थाय पश्चिमेयामे कृतशौचः ममाहितः।
हुताग्निर्ब्राह्मणांश्चाच्चर्य प्रविशेत् स शुभां सभाम्।। 145
तत्रस्थितः प्रजाः सर्वाः प्रतिनन्द्य विसर्जयेत्।
विसृज्य च प्रजाः सर्वा मन्त्रयेत् सह मन्त्रिभिः।। 146
गिरिपृष्ठं समारूह्य प्रसादं वा रहोगतः।
अरन्ये निःशलाके वा मन्त्रयेदविभावितः।। 147

तृल – 311
यस्य मन्त्रं न जानन्ति समागम्य पृथग् जनाः।
स कृत्स्नां पृथिवीं भूंक्ते कोषहीनोऽपि पार्थिवः।। 148
जडमूकान्धवधिरां स्तैर्यग्योनान् वयोऽभिगान्।
स्त्री म्लेच्छव्याधित व्यगांन् मंत्रकालेऽपसारयेत्।। 149
भिन्दन्त्यवमता मन्त्रं तैर्यग् योनास्तथैव च।
स्त्रीयश्चैव विशेषेण तस्मात्तत्रादृतो भवेत्।। 150
मध्यन्दिनेअर्द्धरात्रे वा विश्रान्तो विगतक्लमः।
चिन्तयेद्धर्म्मकामार्थान् सार्द्धं तैरेक ऐव वा।। 151
परस्पर विरूद्धानां तेषान्च समुपार्ज्जनं।
कन्यानां संप्रदान्च कुमाराणान्च रक्षणं।। 152
दूत सम्प्रेषणन्चैव कार्यशेषं तथैव च।
अन्तःपुर प्रचारन्च प्रणिधीनान्च चेष्टितं।। 153
कृत स्नं चाष्टविधं कर्म्म पंचवर्गन्च तत्वतः।
अनुरागापरागौ च प्रचारं मण्डलस्य च।। 154
मध्यमस्य प्रचारन्च विजिगीयोश्च चेष्टितं।
उदासीन प्रचारन्च शत्रोश्चैव प्रयत्नतः।। 155
ऐताः प्रकृतयो मूलं मण्डलस्य समासतः।
अष्टौ चान्याः समाख्याता द्वानशैव तु ताः स्मृताः।। 156
आमात्यराष्ट्रदुर्गार्थ दण्डाख्याः पंच चापराः।
प्रत्येकं कथिता ह्येताः संक्षेपेण द्विसप्ततिः।। 157
अनन्तरमरिं विद्यादरिसेविनमेव च।
अरेरनन्तरं मित्रमुदासीनं तयोः परम्।। 158
तान् सर्व्वानभिसन्दध्यात् सामादिभिरूपक्रमैः।
व्यस्तैश्चैव समस्तैश्च पौरूषेण नयेन च।। 159
सन्धिन्च विग्रहश्चैव यानमासनमेव च।
द्वैधीभावं संश्रयन्च षडगुणांश्चिन्तयेत् सदा।। 160
आसनन्चैव यानन्च सन्धिं विग्रहमेव च।
कार्यं वीक्ष्य प्रयुन्जीत द्वैधं संश्रयमेव च।। 161
सन्धिस्तु द्विविधं विद्याद्राजा विग्रहमेव च।
उभे यानासने चैव द्विविधः संश्रयः स्मृतः।। 162
समानयानकर्म्मा च विपरीतस्तथैव च।
तदात्वायति संयुक्तः सन्धिर्ज्ञेयो द्विलक्षणः।। 163
स्वयंकृतश्च कार्यार्थमकाले काल एव वा।
मित्रस्य चैवापकृते द्विविधो विग्रहः स्मृतः।। 164
एकाकिनश्चात्ययिके कार्ये प्राप्ते यदृच्छया।
सहतस्य च मित्रेण द्विविधं यानमुच्यते।। 165

तृल – 312
क्षीणस्य चैव क्रमशो दैवात् पूर्वकृतेन वा।
मित्रस्यचानुरोधेन द्विविधं स्मृतमासनम्।। 166
बलस्य स्वामिनश्चैव स्थितिः कार्यार्थसिद्धये।
द्विविधं कीर्त्तयते द्वैधं षाड्गुण गुण वेदिभिः।। 167
अर्थसम्पादनार्थन्च पीड्यमानस्य शत्रुभिः।
साधुषु व्यवदेशार्थं द्विविधः संश्रयः स्मृतः।। 168
यदावगच्छेदायत्यामाधिक्यं ध्रुवमात्मनः।
तदात्वेचाप्लिकां पीडांतदासन्धिं समाश्रयेत्।। 169
यदाप्रकृष्टामन्येतसर्व्वास्तु प्रकृतिर्भृशम्।
अत्युच्छ्रितं तथात्मानं तदाकुर्ब्बीत विग्रहम्।। 170
यदामन्येत भावेन ह्रष्टंपुष्टं बलं स्वकम्।
परस्य विपरीतन्च तदा यायाद्रिपुं प्रति।। 171
यदा तु स्यात् परिक्षीणो बाहनेन बलेन च।
तदासीत प्रयत्नेन शनकैः सान्तयन्नरीन्।। 172
मन्येतारिं यदा राजा सर्व्वाथा बलबत्तरम्।
तदा द्विधा बलं कृत्वा साधयेत् कार्यमात्मनः।। 173
यदा परबलानान्तु गमनीयतमो भवेत्।
तदा तू संश्रयेत् क्षिप्रं धार्मिकं बलिनं नृपम्।। 174
निग्रहं प्रकृतीनान्च कुर्याद् योऽरि बलस्य च।
उपसेवेत तं नित्यं सर्व्वयत्नैर्गुरूं यथा।। 175
यदि तत्रापि सम्पश्येद्दोषं संश्रयकायितं।
सुयुद्धमेव तत्रापि निर्विशंकः समाचरेत्।। 176
सर्व्वोपायैस्तथा कुर्यान्नीतिज्ञः पृथिवीपतिः।
यथास्याभ्यधिका न स्युर्मित्रोदासीन शत्रवः।। 177
आयतिं सर्व्वकार्यानां तदात्वन्च बिचारयेत्।
अतीतानान्च सर्व्वेषां गुण दोषौ च तत्तवतः।। 178
आयत्यां गुणदोषज्ञस्तस्तदात्वे क्षिप्र निश्चयः।
अतीते कार्यशेषज्ञः शत्रुभिर्नाभिभुयते।। 179
यथैनं नाभिसन्दध्युर्म्मित्रोदासीनशत्रवः।
तथा सर्व्वं संविदध्यादेष सामासिको नयः।। 180
यदा तु यानमातिष्ठेदरिराष्ट्रं प्रतिप्रभुः।
तदानेन विधानेन यायादरिपुरं शनैः।। 181
मार्गशीर्षे शुभे मासि यायाद्यात्रां महीपतिः।
फाल्गुनं वाथ चैत्रं वा मासौ प्रति यथाबलं।। 182
अन्येष्वपि तु कालेषु यदा पश्येद्ध्रुवंजयं।
तदा यायाद्विगृह्यैव व्यसने चोत्थिते रिपोः।। 183

तृल – 313
कृत्वा विधानं मूले तु यात्रिकन्च यथाविधि।
उपगृह्यास्पदन्चैव चारान् सम्यग्विधाय च।। 184
संशोध्य त्रिविधं मार्गं षड्विधन्च बलं स्वकं।
साम्परायिककल्पेन यायादरिपुरं शनैः।। 185
शत्रुसेविनि मित्रे च गूढ़े युक्ततरो भवेत्।
गतप्रत्यागते चैव स हि कष्टतरो रिपुः।। 186
दण्डव्यूहेन तन्मार्गं यायात्तु शकटेन वा।
वराह मकराभ्यां वा सूच्या वा गरूडेन वा।। 187
यतश्च भयमाशन्केत्ततो विस्तारयेद्बलं।
पद्मेन चैव व्यूहेन निविशेत सदा स्वयं।। 188
सेनापतिबलाध्यक्षौ सर्व्वादिक्षु निवेशयेत्।
यतश्च भयमाशंकेत् प्राचीन्य तां कल्पयेद्विशं।। 189
गुल्मांश्च स्थापयेदाप्तान् कृतसंज्ञान् समन्ततः।
स्थाने युद्धे च कुशलानभीरूपविकारिणः।। 190
संहतान् योधयेदल्पान् कामं विस्तारयेद्बहून्।
सुच्या बज्रेण चैवैतान् व्यूहेन बूह्य योधयेत्।। 191
स्यन्दनाश्वैः समे युध्येदनूपे नौद्विपैस्तथा।
वृक्षगुल्मावृते चापैरसिचर्म्मायूधैः स्थले।। 192
कुरूक्षेत्रांश्च मत्स्यांश्च पंचालान् शूरसेनजान्।
दीर्घान् लघुंश्चैव नरानग्रानीकेषु योधयेत्।। 193
प्रहर्षयेद्बलं व्यूह्य तांश्च सम्यक् परीक्षयेत्।
चेष्टाश्चैव विजानीयादरीन् योधयतामपि।। 194
उपरूध्यारिमासीत राष्ट्रं चास्योपपीडयेत्।
दुषयेच्चास्य सततं यवसान्नोदकेन्धनं।। 195
भिन्द्याच्चैव तडागानि प्राकार परिखास्तथा।
समबस्कन्दयेच्चैनं रात्रौ वित्रासयेत्तथा।। 196
उपजप्यानुपजपेद्बुध्येतैव च तत्कृतं।
युक्ते च दैवे युद्धेत जयप्रेप् सुरपेतभीः।। 197
साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।
विजेतुं प्रयतेतारीन्न युद्धेन कदाचन।। 198
अनित्यो विजयो यस्माद्दृश्यते युध्यमानयोः।।
पराजयश्च संग्रामे तस्माद्युद्धं विवर्ज्जयेत्।। 199
त्रयानामप्युपायानां पूर्वोक्तानामसम्भवे।
तथा युध्येत संयत्तो विजयेत रिपून् यथा। 200
जित्वा सम्पूजयेद्देवान् ब्राह्मणांश्चैव धार्मिकान्।
प्रदद्यात परिहारांश्च ख्यापयेदभयानि च।। 201

तृल – 314
सर्व्वेषान्तु विदित्वैषां समासेन चिकीर्षितं।
स्थापयेत्तत्र तद्वंश्यं कूर्याच्च समयक्रियां।। 202
प्रमाणानि च कुर्व्वीत तेषां धर्म्मयान् यथोदितान्।
रत्नैश्च पूजयेदेनं प्रधानपुरूषैः सह।। 203
आदानमप्रियकरं दानन्च प्रियकारकं।
अभीप्सितानामर्थानां काले युक्तं प्रशस्यते।। 204
सर्व्वं कर्म्मेदमायत्तं विधाने दैवमानुषे।
तयोर्द्दैवमचिन्त्यन्तु मानुषे विद्यते क्रिया।। 205
सहवापि ब्रजेद्युक्तः सन्धिं कृत्वा प्रयत्नतः।
मित्रं हिरण्यं भूमिं या सम्पश्यं स्त्रिविधं फलं।। 206
पार्ष्णिग्राहन्च संप्रेक्ष्य तथा क्रन्दन्च मण्डले।
मित्रादथाप्यमित्राद्वा यात्राफलमवाप्नुयात्।। 207
हिरण्य भूमि संप्राप्ता पार्थिवो न तथैधते।
यथा मित्रं ध्रुवं लब्धा कृशमप्यायतिक्षमं।। 208
धर्म्मज्ञन्च कृतज्ञन्च तुष्टप्रकृतिमेव च।
अनुरक्तं स्थिरारम्भं लघुमित्रं प्रशस्यते।। 209
प्राज्ञं कुलीनं शूरन्च दक्षं दातारमेव च।
कृतज्ञं धृतिमन्तन्च कष्टमाहुररिं वुधाः।। 210
आर्य्यता पुरुषज्ञानं शौर्यं करूणवेदिता।
स्थौललक्ष्यन्च सततमुदासीनगुणोदयः।। 211
क्षेम्यां शस्यप्रदां नित्यं पशुवृद्धिकरीमपि।
परित्यजेत् नृपो भूमिमात्मार्थ मविचारयन्।। 212
आपदर्थं धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि।। 213
सह सर्व्वाः समुत्पन्नाः प्रसमीक्ष्यापदो भृशं।
संयुक्तांश्च वियुक्तांश्च सर्व्वेपायान् सृजेद्वुधः।। 214
उपेतारमुपेयन्च सर्व्वोपायांश्च कृतस्नशः।
एपुत्रयं समाश्रित प्रयतेतार्थसिद्धये।। 215
एवं सर्व्वमिदं राजा सह सन्मंत्रय मंत्रिभिः।
व्ययाम्याप्लुत्य मध्याह्ने भोक्तु मन्तःपुरं विशेत्।। 216
तत्रात्मभुतैः कालज्ञैराहार्यैः परिचारकैः।
सुपरीक्षितमन्नाद्यमद्यान्मन्त्रैर्व्विषापहैः।। 217
विषघ्नैरगदैश्चास्य सर्वद्रव्याणि योजयेत्।
विषघ्नानि च रत्नानि नियतो धारयेत् सदा।। 218
परीक्षिताः स्त्रियश्चैनं व्यजनोदकधूपनैः।
वेशाभरण संशुद्धाः स्पृशेयूः सुसमाहिताः।। 219

तृल – 315
एवं प्रयत्नं कुर्व्वीत यानशय्यासनाशने।
स्नाने प्रसाधने चैव सर्व्वलंकारकेषु च।। 220
भुक्तवान् विहरेच्चैव स्त्रीभिरन्तःपुरे सह।
विहृत्य तु यथाकालं पुनः कार्याणि चिन्तयेत्।। 221
अलंकृतश्च सम्पश्येदायुधीयं पुनर्ज्जनं।
वाहनानि च सर्व्वानि शस्त्राण्याभरणानि च।। 222
सन्ध्यान्चोपास्य श्रृणुयादन्तर्व्वेश्मनि शस्त्रभृत्।
रहस्याख्यायिनान्चैव प्राणिधीनान्च चोष्टितं।। 223
गत्वा कक्षान्तरं त्वन्यत् समनुज्ञाप्य तं जनं।
प्रविशेद्भोजनार्थन्च स्त्रीवृतोऽन्तःपुरं पुनः।। 224
तत्र भुक्ता पुनः किन्चित् तुर्यघोषैः प्रहर्षितः।
संविशेत् तु यथाकालमुत्तिष्ठेच्च गतक्लमः।। 225
एतद्विधानमातिष्ठेद्रोगः पृथिवीपतिः।
अस्वस्थः सर्वमेतत्तु भृत्येषु विनियोजयेत्।। 226
इतिमानवे धर्मशास्त्रे भृगु प्रोक्तायां संहितायां राज–धर्म्मोनाम् सप्तमोऽध्यायः।

उद्धृत श्लोक समूह का मर्म्म।

ईश्वर ने जिस प्रकार से जनपद आदि प्रतिपालक, अभिषेकादि गुणयुक्त राजा की सृष्टि किया है तथा राजा के आचरण जिस रूप होना आवश्यक है, जो सब कार्यानुष्ठान राजा के अवश्य कर्तव्य है, हम ऐहिक तथा परलौकिक वह समस्त राज धर्म कह रहे हैं, श्रवण करो। क्षत्रिय शास्त्र सम्मत विधानानुयायी उपनयन संस्कृत होकर, धर्म शास्त्रानुसरण से अपने अपने अधिकारस्थ प्रकृति पुंज की रक्षणावेक्षण करेगें। जगत अराजक होने पर बलियानगण सभी भयभीत के कारण होगें, इसलिए जगदीश्वर ने सभी की रक्षा करने के निमित्त राजा की सृष्टि की हैं। अतएव जगत के रक्षणावेक्षण करना राजा का कर्तव्य है।

इन्द्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरूण, चन्द्र तथा कुबेर इन अष्टादिक पाल के सारसत्ता को लेकर ईश्वर ने राजा की सृष्टि की हैं। इन सब प्रभावशाली दिक्पाल के अंश से सृष्टि हुई है। इसीलिए राजा शौर्य वीर्य के आधिक्य द्वारा प्राणीयों को पराभव करने में सक्षम हुए। राजा, दर्शकवृन्द के चक्षु तथा मन को सूर्य के तरह दाह करते है, कोई भी व्यक्ति राजा के सम्मुखवर्ती तरीके से अवलोकन करने में समर्थ नहीं हुए है। राजा प्रताप में अग्नि, वायु, सूर्य, यम, कुबेर तथा वरूण के समतुल्य है। राजा के बालक होने पर भी उनको सामान्य मनुष्य ज्ञान से अवज्ञा नहीं करेगा। वे मनुष्य रूप में अवस्थित महान देवता है। अनवधानता प्रयुक्त जो व्यक्ति अग्नि के अति पास होते हैं, अग्नि केवल उसको ही दग्ध करते हैं किन्तु राजा रूप अग्नि, अपराधी के प्रति क्रोधित

तृल – 316
होने से वंश, पालित पशु आदि तथा संचित सम्पत्ति सह उनको विनष्ट करके रहते हैं। राजा प्रयोजनीय कार्य, अपने शक्ति तथा देशकाल का पर्यालोचन करके, धर्म कार्य सिद्धि के निमित्त बारम्बार नाना रूप धारण करते है, जिसके प्रसन्नता से महति सम्पद लाभ होता है, जिसके प्रभाव से प्रचण्ड शत्रु निहत तथा विजय लाभ होता है। जिनके क्रोधित होने पर लोग का विनाश होता हैं, वे ही समस्त जयमय तथा वे ही सूर्य चन्द्र का तेज धारण करते हैं। जो अज्ञान व्यक्ति राजा के अप्रतिकर कार्य करते हैं, उसका विनाश प्राप्त होना निश्चित है। राजा जल्दी ही उसके विनाश के निमित्त मन स्थिर करते हैं।

राजा ईष्ट लोग के(शिष्ट के) प्रति शास्त्रोक्त तथा शास्त्र के अविरूद्ध जो सब नियम करेगें उसके स्वरूप अनिष्ट(दुष्ट) के प्रति भी उपयुक्त नियम करने की उपेक्षा नहीं करेगें। ब्रह्मा ने पूर्वकाल में भूपति के प्रयोजन सिद्धि के निमित्त, प्राणी समूह के रक्षा कर्ता, धर्म स्वरूप आत्मज राज दण्ड की अपने तेज द्वारा सृष्टि की है। राज दण्ड भय से जगत के सर्व प्राणी अपने अपने धर्म परित्याग नहीं कर पाते। राजा, अपराधी व्यक्ति की शक्ति, विद्या तथा देशकाल विवेचना पूर्वक, जिस प्रकार अपराध का शास्त्र सम्मत तरीके से जिस रूप दण्ड होना उचित है, वह यथार्थ रूप में निरूपण करके दण्ड विधान करगें। यही दण्ड राजा, दण्ड ही पुरूष, दण्ड ही शासन कर्ता है तथा दण्ड को चतुराश्रम के धर्म के प्रतिभु कहा जानेगें। दण्ड प्रकृति पुंज को शासन करते हैं, दण्ड सबकी रक्षा करते हैं, निद्रित होने पर भी, दण्ड ही जागृत रहकर सबकी रक्षणावेक्षण करते हैं। पण्डित मण्डली ने दण्ड को धर्म कहकर निर्देश किये है। शास्त्रानुसार से सम्पूर्ण तरीके से विवेचना करने पर प्रजागण के देह तथा धन आदि में, वह दण्ड पतित करने पर प्रकृति पुंज राजा के प्रति अनुरक्त हुए, और विवेचना न करके लोभ के वशवर्ती होकर निरपराध प्रजा को दण्ड करने पर, उसको सर्वरूप में विनाश प्राप्ति होता है। राजा आलस्य परतन्त्र होकर, अपराधी को दण्ड विधान ना करने पर, सब बलशाली लोग, मृत मत्स्य पकाने की तरह है। दुर्बल लोगों को धैर्य से अधिक यातना प्रदान करते है। राजा यदि दण्ड विधान नहीं करते, तब यज्ञ कर्म में हव्य भोजन अयोग्य है, कौवा सर्वदा हवि भोजन करते, कुत्ते खीर आदि चाटते है, किसी का भी कोई महत्व नहीं रहता। सभी का/कायर, क्रूर आदमी एक मात्र दण्ड के भय से सुपथगामी होते हैं। राजा का भय न रहने पर, जगत में विशुद्ध स्वभाव से मनुष्य अति विरल होते है। सजा के भय से ही समग्र जगत प्रयोजनीय भोज्य आदि भोग करने में समर्थ हो रहे हैं। देवता, दानव गन्धर्व, राक्षस, पक्षी तथा सर्प आदि परमेश्वर सजा के भय से जगत के उपकार साधन कर रहे हैं। दण्ड विधान न करने से या अनुचित सजा करने पर, सब वर्ण के लोग ही नीच स्त्री के संसर्ग से संकीर्ण जाति का उत्पादन कर पायेगें, धर्म सेतू उत्पादन कर पायेगें तथा चोरी साहस आदि के द्वारा लोग समाज में

तृल – 317

क्षोभ उत्पादन कर पायेगें। जहाँ श्याम वर्ण पाप नाशक दण्ड वर्तमान है तथा जिस स्थान में दण्ड विधाता न्यायानुसार से उस दण्ड का प्रयोग करते हैं, उस जगह की प्रजा वर्ग किसी क्रम से ही कातर नहीं होते। उक्त दण्ड के प्रवर्तक राजा सत्यवादी हुए। अग्रपश्चात विवेचना पूर्वक काम करना चाहिए तथा सुबुद्धि सम्पन्न तथा धर्मार्थ काम के जानने वाले होना चाहिए। राजा यदि दण्ड के यथा योग्य व्यवहार करे तो उसका धर्म, अर्थ तथा कामना की वृद्धि प्राप्त होती है और विषय विलास जनित राज द्वेष आदि वशवर्ती होकर दण्ड प्रदान करने पर वह अधार्मिक राजा स्वकृत दण्ड द्वारा स्वयं विनष्ट हो जाता है। शास्त्रज्ञानरहित नृपति, महातेजस्वी दण्ड धारण के अयोग्य है। जिसकी सद् विवेचना करने की क्षमता नहीं है, वे दण्ड विधान नहीं करेगें। राज धर्म छोड़कर नृपति, दण्ड विधान करने पर सबान्धव विनाश को प्राप्त होते हैं। जो दोषादोष विचार के अलावा दण्ड विधान करते हैं, वह राजा प्रथम बन्धु वर्ग सहित विनष्ट होते हैं। तत्पश्चात दुर्ग, स्थावर जंगममय पृथ्वी, अन्तरिक्षगत ऋर्षि तथा देवतागण के पीडा दायक होते हैं। सहायहीन(मंत्री, सेनापति, पुरोहित आदि न रहना), मूर्ख, लोभी, शास्त्र ज्ञान विरहित नृपति शास्त्रानुसार से दण्ड विधान करने में सक्षम नहीं है। श्रद्धाचारी, सत्य प्रतिज्ञा, शास्त्र सम्मत व्यहारकार, सुयोग्य सचिवादि सहाय सम्पन्न राजा दण्ड विधान करने के योग्य होते हैं। राजा अपने राज्य में शास्त्र संगत व्यवहार करेगें, शत्रु के प्रति तीव्र दण्ड विधान करेगें। सुह्रद तथा स्नेह के पात्र के सहित सरल व्यवहार करेगें तथा ब्राह्मण के प्रति क्षमाशील होगें। राजा शिलोंचवृत्ति(अल्प धन द्वारा जीविका निर्वाहकारी) होता है व पूर्वोत्तरूप सदाचार सम्पन्न होता है, तब उनका यश जल में निक्षिप्त तेल के बिन्दी की तरह लोक समाज में विस्तीर्ण हो पडता है। और राजा के इसके विपरीत आचार विनिष्टि तथा इन्द्रिय परायण होने पर उनका यश जल में प्रक्षिप्त धृत बिन्दु की तरह लोग समाज में क्रमशः संकुचित हो जाता है। प्रजापति ने अपने अपने धर्म के अनुष्ठान वर्ग के तथा ब्रह्मचर्यादि आश्रम चतुष्टय के रक्षा कर्ता के रूप में राजा को सृष्टित किया है।

मंत्री आदि भृत्य वर्ग के सहयोग से राजा जिस तरीके से प्रजा पालन करेगें, उन सब विषय को यथायथ तरीके से क्रमशः तुम्हें बोलते है, श्रवण करो। राजा प्रतिदिन प्रातः उठ करके त्रिवेदज्ञों तथा नीति शास्त्र विशारद् पण्डित तथा वृद्ध ब्राह्मणगण की सेवा करेगें। उम्र से वृद्ध, तप से वृद्ध वेदवेत्ता तथा शुचि सम्पन्न ब्राह्मण लोगों की सर्वदा सेवा करना राजा का कर्तव्य है। हिंसक राक्षसादि भी वृद्ध सेवी राजा के सतत हित साधन करते हैं। राजा स्वाभाविक विनीत होने पर भी वृद्ध लोगों के निकट अधिकतर विनय शिक्षा करेगें, विनीतआत्मा राजा कभी भी विनाश प्राप्ति नहीं होते हैं। कितने सम्पत्तिशाली राजा अविनीत दोष से विनिष्ट हुए हैं तथा चिर वनवासी कितने लोगों ने विनय बल से राज्य लाभ किये हैं। वेण राजा, नहुष राजा, यवन कुलोद्भव

तृल – 318

सुदास, सुमुख तथा निमि, अविनय दोष से विनिष्ट हुए है। पृथु तथा मनु विनय के बल से राज्य लाभ किया था। विनय गुण से कुबेर ने धन का अधिपत्य तथा विश्वामित्र ने ब्राह्मणत्व लाभ किया था।

राजा, त्रिवेद वेत्तागण के निकट ॠग्, यजुः, तथा साम वेदत्रय अध्ययन करेगें। अर्थशास्त्र विधि से आय, व्यय तथा स्थिति के विषय में अभ्यास करेगें। सुयोग्य पंडित से तर्क शास्त्र तथा ब्रह्म विद्या शिक्षा प्राप्त करेगें। इन्द्रिय गण जिससे विषययुक्त न हो, तद् विषय में यत्नवान होगें। जितेन्द्रिय राजा ही प्रकृति पुंज को वशीभूत रख पायेगें। क्रोधज आठ प्रकार तथा कामज दस प्रकार, इन अष्टादश प्रकार, दुरन्त व्यसन को राजा अवश्य त्याग करेगें। महिपाल कामज–व्यसना–शक्त होने पर धर्म तथा अर्थ से वंचित होते है तथा क्रोधज–व्यसना–शक्त होने पर धर्म तथा अर्थ से वंचित होते है तथा क्रोधज–व्यासना–शक्त राजा विनाश प्राप्त हो रहते हैं।

मृगया, पाश क्रीडा, दूसरों को दोषी, कभी भी कामिनी सम्भोग, मद्य पान आदि द्वारा मत्तता, नृत्य, गीत, वाद्य, वृथा पर्यटन, सुस्वेच्छाधीन, ये दस कामज, पैशुन्य(ना जानकर दूसरों को दोष देना), साहस(निरपराध साधु व्यक्ति को बन्धन आदि द्वारा अपमानित करना), द्रोह(छल क्रम में वध करना), ईर्ष्या(किसी के गुण के प्रति मन मन ईर्ष्या करना), असूया(अन्य के गुण में दोष निकालना), अर्थ दूषण(दूसरों का धनापहरण करना या हाथ उठाने में अग्रसर होना या अवश्य देय धन न देना), वाक् पारुष्य(दूसरे के प्रति क्रोधित होना या हाथ उठाने में अग्रसर होना), दण्ड पारूष्य(दूसरों को प्रहार करना), इस अष्टाविध व्यसन क्रोध से उत्पन्न होता है। पण्डितगणों ने, लोभ को पूर्व कथित कामज तथा क्रोधज व्यसन के उत्पादक कहकर निर्देश किये थे। यत्न सहकार से उस लालच को जय करना कर्तव्य है। लालच का जय करने से अष्टादश प्रकार के पाप को जय किया जायेगा। कभी धन के लालच में या कभी अन्य चीजों के लालच में पतित होकर, बहु जन वे सब पाप करते हैं। मद्य पान, पास क्रीडा, स्त्री सम्भोग, पशु हनन, कामज व्यसनगण के मध्य ये चार अतिशय दुष्य तथा दुखदायक है, क्योंकि, इससे अनेक प्रकार की शोचनीय घटना घट सकती है। क्रोधज व्यासनागण के मध्य निष्ठुर तरीके से प्रहार, कर्कश वाक्य प्रयोग तथा प्राप्य धन न देना ये तीन नितान्त अनर्थ के कारण है, ऐसा ही सतत निन्दाजनक हैं, सोचते है। मद्य पान, अक्ष क्रीडा, स्त्री सम्भोग, मृगया, दण्ड पातन, वाक् कलह, दूसरे का धन हरण, ये ही सात काम क्रोधज व्यसन, प्रायः समस्त राज मण्डल में व्याप्त होते हैं। इसके पूर्व पूर्वव्यसन समूह अतिशय क्लेशदायक होते हैं, यह राजा जानेगें। व्यसन तथा मृत्यु, इन दोनों के भय के मध्य व्यसन अधिकतर दुखदायक होते हैं, कारण, व्यसनी व्यक्ति मृत्यु के बाद परलोक में दुख भोग करते हैं।

जो वंशानुक्रम से राजकार्य में दक्ष, नाना शास्त्र में विशारद्, शौर्य सम्पन्न, आयुद्ध विद्या में सुनिपुण, सद्वंश जात, देवता स्पर्शनादिरूप शपथ द्वारा परिक्षित,

तृल – 319

राजा लोगों को, इस प्रकार सात आठ मंत्री रखना पडेगा। आसानी से बना हुआ कार्य भी किसी किसी समय एक के द्वारा सम्पादन दुष्कर हो उठता है। विशेष रूप से असहाय के पक्ष में अकेले राज्य पालन करना संभव नहीं हो पाता है। राजा, सन्धि विग्रह, यान वाहन आदि विषय में सर्वदा मंत्री गण के सहित मंत्रणा करेगें। निर्ज्जन स्थान में प्रत्येक मंत्री की तरह पृथक पृथक तरीके तथा मिलकर अवगत होकर, जो हित जनक सोचेगें, वही अनुष्ठान करेगें, सचिवगण के मध्य धार्मिक तथा विद्वान ब्राह्मण सचिव के सहित सन्धि विग्रह, यान, आसन द्वैध तथा आश्रय रूप षडगुणयुक्त मंत्रणा करेगें। राजा जो सब कार्य करेगें, वह उक्त ब्राह्मण को विश्वास पूर्वक अर्पण करेगें अर्थात उनके साथ निर्धारण पूर्वक कार्य आरम्भ करेगें। इसके अलावा अर्थादि विषयक कार्य में शुद्धात्मा, सुबुद्धिसम्पन्न कार्य कुशल, धर्मादि परीक्षा में परीक्षित अन्य मंत्री नियोग करेगें। राजा के राज कार्य जितने संख्यक कर्मचारी द्वारा सुचारू रूप से सम्पन्न हो सकता है, उतने संख्यक आलस्य शून्य, कार्य कुशल स्वपदोचित कार्य के मर्मवेता लोग नियुक्त रखेंगे। उसमें से पराक्रमशाली, चतुर, सद्वंश जात व विशुद्ध स्वभाव चार जन को धन की उत्पत्ति स्थान में(राजत्व विभाग) में नियोग करेगें। ईक्षु तथा धन्यादि संग्रह कार्य में तथा अपने भवन के निभृत स्थान में धर्म भीरू लोगों को नियुक्त करेगें।

दौत्य कार्य में सर्वशास्त्रविद्, नयन ईशारा आदि के द्वारा समझने में सक्षम, तालियाँ या उँगली संकेत से मनोभाव समझते हों, विशुद्ध स्वभाव, कार्य में सुनिपुण तथा महत् वंशजात लोग को नियुक्त करेगें। सबके प्रति अनुरक्त, विशुद्धात्मा, कार्यदक्ष, स्मृति शक्ति सम्पन्न, देश तथा काल की अवस्था ज्ञातसार, रूपवान, निर्भीक, वाक्पटु दूत प्रशंसनीय होते हैं। हस्ती, अश्व, रथ तथा पदाति स्वरूप सेनापति के पास में रहते हैं, उन सब दण्ड की शिक्षा कार्य उसके ही हाथ रहेगा। नृपति के पास कोष तथा राष्ट्र रहते हैं, यह दो कभी भी दूसरों के हाथअर्पण नहीं करेगें। सन्धि तथा विपर्याय(विग्रह) दूत के पास में रहते हैं, अतएव सेनापति दूत को तादृश्य/अपने तरह गुणशाली करेगें। दूत ही परस्पर विरोधी राजगण के मध्य सन्धि स्थापन कराने तथा मित्र भावापन्न राजगण के मध्य भेद जन्मा सकता है। दूत, शत्रु राजा के अनुचर के ईशारे तथा चेष्टा/कोशिश द्वारा शत्रु राजा के अभिप्राय को जानेगें। उक्त लक्षणाक्रान्त दूत द्वारा शत्रुराजा के अभिप्राय यथार्थ रूप से अवगत होकर, राजा इस रूप सतर्क रहेगें, जिससे किसी भी प्रकार से भी आत्म पीडा की आशंका न रहे।

जिस स्थान में जल तथा तृण अल्प है, विशुद्ध वायु तथा काफी धूप की तेज मिलता है, बहुत परिमाण में धान्यादि शस्य उत्पन्न होता है, अनेक धार्मिक लोगों का वास, प्रजा वर्ग रोग शोक विवर्जित्त, फल पूर्ण तथा वृक्ष लतादि द्वारा सुशोभित, जिस स्थान में प्रजागण

तृल – 320

राजानुरक्त तथा जिस स्थान में कृषि वाणिज्यादि सुविधा है, राजा उस रूप स्थान में वास करेगें। धन्व दुर्ग(जिसके चतुर्दिक पंच योजन तक जन शून्य मरूमय), मही दुर्ग(जो पत्थर या ईंट आदि के द्वारा द्वादस हस्त चौडा विशिष्ट दीवार द्वारा निर्मित, चौबीस हाथ से भी अधिक उच्च तथा कपाट तथा गवाक्षादि युक्त प्राचीर से घिरा हुआ), जल दुर्ग(जिसके चारों तरफ गहरे जलपूर्ण तालाब द्वारा वेष्ठित), वार्क्ष दुर्ग(जिसके चारों ओर एक योजन परिमाण स्थान कन्टकमय गुल्मादि द्वारा परिव्याप्त), नृदुर्ग(जिसके चारों तरफ हस्ती, अश्व तथा रथादिसह बहुसैन्यादि द्वारा सुरक्षित), गिरि दुर्ग(मनुष्य के दुर्गम्य पर्वत के उपरी भाग में एक मात्र दुर्गम्य तथा निभृत पथ विशिष्ट) इस प्रकार किसी दुर्ग में आश्रय करके राजा निवास करेगें। राजा सर्वतो यत्न सहकार से गिरि दुर्ग आश्रय करेगें, अन्य दुर्गापेक्षा गिरिदुर्ग अनेक गुण विशिष्ट है। उक्त छः प्रकार दुर्ग के मध्य धन्व दुर्ग, मृग द्वारा आश्रित, मही दुर्ग मूषिकादि द्वारा आश्रित, जल दुर्ग कुम्भीरादि द्वारा आश्रित, वृक्ष दुर्ग वानरादि द्वारा आश्रित, नृदुर्ग मनुष्य द्वारा आश्रित, तथा गिरि दुर्ग देवतादि द्वारा आश्रित हैं। इन सब दुर्गाश्रित मृगादिक को जैसे व्याधादि शत्रुगण हिंसा करने में अक्षम है, इसके स्वरूप दुर्गाश्रित राजा को शत्रु राजगण किसी तरह से हिंसा करने में समर्थ नहीं होते हैं। प्राकार स्थित(दुर्गाश्रित) एक जन योद्धा शत्रुपक्ष के एक सौ सैन्य के सहित युद्ध करने में सक्षम है एवं एक शत यौद्धा दस सहस्र सैन्य के सहित युद्ध करने में सक्षम है। अतएव राजा अवश्य दुर्ग निर्माण करेगें। निर्मित दुर्ग बहुशास्त्रादि सम्पन्न सुवर्ण तथा धन धान्यादि समृद्धि युक्त, हस्ती तथा अश्वादि वाहन पूर्ण होना आवश्यक है। उसमें ब्राह्मण, विविध प्रकार के शिल्पी तथा नानाविध यन्त्र रहेंगे, तथा पशु आदि के भक्ष्य घास तथा जल के प्राचुर्य रहेंगें। राजा उक्त दुर्ग के मध्य पृथक पृथक तरीके से महिलागण के वास भवन, देवालय, अस्त्रागार तथा अग्नि गृह निर्माण करायेगें। परिखा तथा उच्च प्राकारादि द्वारा वह सुरक्षित होगा, तथा फल पुष्प तथा वापी कूप आदि द्वारा सुशोभित होगें।

इस तरह के गृह में वास करके राजा सवर्णा, सुलक्षणान्विता, महाकुल प्रसूता सुरूपा तथा गुणान्विता महिला से विवाह करेगें। मारणोच्चाटन तथा वशीकरणादि, अर्थव वेदोक्त कर्म सम्पादनार्थ पुरोहित को तथा यज्ञादि कर्मानुष्ठान के लिए ऋृत्विक को वरण करेगें। पुरोहित तथा ऋत्विक अपने अपने कर्तव्य सम्पादन करेगें। राजा दक्षिणक–अश्वमेधादि विविध यज्ञ करेगें तथा ब्राह्मणादि लोगों को नानाविध भोग्य वस्तु तथा धन्यादि दान करेगें।

राजा, प्रजा वर्ग से शास्त्रानुमोदित तरीके से सांगवत्सरिक(प्रति वर्ष) कर ग्रहण तथा उनके प्रति पितृवत् व्यवहार करेगें। हस्ती, अश्व, रथ तथा पदाति आदि तत्वावधान के लिए राजा कार्य कुशल व्यक्ति लोगों को नियुक्त करेगें। वे निम्न पदस्थ कर्मचारी समूह के कार्यादि पर्यावेक्षण करेगें। उपनयन संस्कृत से जो गुरू गृह

तृल – 321
रहकर कृतविद्य होकर गृहस्थाश्रम ग्रहण करे, राजा धन धान्यादि द्वारा उनकी पूजा करेगें। सामान्य धन की तरह ब्राह्मण को अर्पित भूम्यादिरूप धन चोर चोरी नहीं कर पाते है, शत्रु गण अपहरण नहीं कर पाते, तथा सामान्य धन की तरह काल में विनष्ट या स्थान भ्रम से अदृश्य नहीं होते, उसके द्वारा विनष्ट नहीं होते, यह अक्षय फलदायक होता है। अग्नि में होम करते समय किसी किसी समय घी नीचे गिरता है किन्तु ब्राह्मण द्वारा जो हवि अर्पण किया जाता है, वह कभी भी नष्ट नहीं होता है, दाह आदि से भी विनष्ट नहीं होता है। ब्राह्मण के अलावा अन्य को जो दान किया जाता है, उसका समफल लाभ होता है, अर्थात जिस वस्तु दान का जो फल शास्त्र में दिया गया है, वह लाभ होता है। ज्ञानहीन ब्राह्मण को दान करने पर उसकी अपेक्षाद्विगुण फल होता है। अध्यनरत ब्राह्मण को दान करने पर लाख गुण फल तथा सर्व वेद पारगंत ब्राह्मण को दान करने पर अनन्त फल लाभ होता है। विद्या, तपस्या तथा वृत्ति भेद में दान योग्य पात्र का मेल घटित होता है। यह मेल तथा श्रद्धा के मेल से परलोक में अल्प या महत फल लाभ होता है, दान के वस्तु कम या अधिक हो उसमें कोई हानि नहीं होता है।

अपने तुल्य बलशाली, अपने की अपेक्षा प्रबल या हीनबल अन्य राजा द्वारा युद्धार्थ में आहवान करने पर, क्षात्र धर्मानुसरण पूर्वक राजा कभी युद्ध कार्य सें निवृत्य नहीं होगें। युद्ध में विमुख ना होना, सर्व तरीके से प्रजा का पालन करना तथा ब्राह्मणगण की सेवा करना राजागण के श्रेस्यकर धर्म हैं। राजागण युद्ध में परान्मुख न होकर स्पर्द्धा सहित परस्पर के हनन के लिए प्रवृत्त होगें। यथा शक्ति युद्ध करके मृत होने पर स्वर्ग लाभ होता है। युद्ध में जय लाभ करने पर राज्यादि लाभ रूप दृष्ट फल तथा युद्ध में हारने पर राजा स्वर्गरूप अदृष्ट फल लाभ कर रहते हैं। कूटास्त्र(गुप्ति) द्वारा युद्ध नहीं करेगें। कण्याकार फलक युक्त बाण, विषाक्त बाण, अग्नि द्वारा दीप्त–फलक बाण द्वारा युद्ध करना निषिद्ध है। रथी रथ परित्याग करके, अपने स्थान में अवस्थित शत्रु को हिंसा नहीं करेगें। नपुसंक, कृतांजलि बद्ध शत्रु, मुक्त केश– व्यक्ति, युद्ध में निवृत्त होकर आसन में समासीन व्यक्ति तथा आत्म समर्पणकारी को विनष्ट नहीं करेगें। निद्रित, वर्म्मविहीन, उलंग, निःशस्त्र, जो केवल युद्ध दर्शनार्थ आगत तथा जो व्यक्ति अन्य के सहित युद्ध करते हैं, उनकी हिंसा नहीं करेगें। जिनका अस्त्र भग्न हुआ है, जो युद्ध में निहत पुत्र के शोक में कातर, शत्रु के अस्त्र से जिसका सर्वांग क्षत विक्षत हुआ है, वो भयभीत होकर युद्ध में परान्मुख हुआ है, उनका हत्या करना राजा के पक्ष में अधर्म है। जो संग्राम में भयभीत होकर पलायन करते हैं, वह व्यक्ति शत्रु द्वारा हत होने पर, वह हन्ता उसके पोषण कर्ता की पाप राशि प्राप्त होते हैं। युद्ध में भयभीत तथा पलायित व्यक्ति शत्रु द्वारा निहत होने पर, उसके संचित पुण्य राशि उसके भर्ता के लभ्य होते हैं। रथ, हस्ती, अश्व, क्षत्र, वस्त्रादि, धन धान्य, गवादि पशु, स्त्री लोग, गुड लवणादि वस्तु, तैजस आदि जो सब वस्तु युद्ध में जय होती है, जो व्यक्ति

तृल – 322
पायेंगे, वह उसका ही होगा। परन्तु लब्ध वस्तु में सुवर्ण तथा रजतादि तथा हस्ती अश्वादि राजा को अर्पण करेगें तथा पृथक पृथक रूप में विजित द्रव्य, राजा, योद्धागण के मध्य बन्टन कर देगें। यौद्धागण का यह सनातन धर्म तुमको कहा गया। क्षत्रिय राजा अथवा राज धर्माक्रान्त व्यक्ति गण इस धर्म से कभी नहीं हटेगें।

राजा अलब्ध भूमि, हिरण्यादि धन लाभ करने में इच्छा करेगें। लब्ध धन की सयत्न रक्षा करेगें। उसकी वृद्धि करेगें तथा वर्द्धित धन सत्पात्र में अर्पण करेगें। इस चतुर्विद् विद्या में पुरूषार्थ लाभ होता है। अतएव राजा निरलस होकर सर्वदा इसका अनुष्ठान करेगें। राजा दण्ड द्वारा अलब्ध जनपद लाभार्थ इच्छुक रहेंगें, प्रत्यवेक्षन द्वारा लब्ध धन की विघ्न होने से रक्षा करेंगें। रक्षित धन वृद्धि करेगें तथा वर्द्धित धन सत्पात्र को अर्पण करेगें। प्रतिदिन हस्ती, अश्व आदि को सुशिक्षा प्रदान की व्यवस्था प्रदान करेगें। सर्वदा अपने पौरूष प्रकाश करेगे। मंत्रणा तथा चरकार्य को गोपन रखेंगें, शत्रु के साथ छिद्रानुसंधान करेगें। प्रतिदिन हस्ती अश्वादि को शिक्षा दान करने पर, शिक्षा से उसके भय से सभी उद्विग्न रहते है। अतएव राजा समस्त प्राणी को दण्ड द्वारा वशीभूत करेगें।

राजा अपने आमत्य के सहित अकपट व्यवहार करेगें तथा फिर भी वे सबके अविश्वस्त रहेगें। चर द्वारा गोपन में शत्रु के छिद्रानुसंधान करेगें। अपने प्रकृति भेदादि छिद्र अन्य न जान पाये, उस विषय में यत्नवान होगें। कूर्म्म(कछुआ) के अपने मुख तथा चरणादि छिपाने जैसे मत को, राजा अमात्यादि अंग को दान मान द्वारा, आत्मसात करेगें, दैवात प्रकृति आघात पडने पर शीघ्र ही उसकी क्षमता से विधान करेगें। बगुला जैसे मछली को पकड़ने के लिए एकान्त मन से निश्चल तरीके से अवस्थान करते हैं, उसकी ही तरह राजा एकाग्र चित्त से दूसरे के राज्य को ग्रहण करने की चिंता करेगें। सिंह जैसे वृहत्काय हस्ती को वध करने के निमित्त आक्रमण करते हैं, उसी रूप अपने क्षीण बल होने पर भी, शत्रु को सर्व शक्ति प्रयोग द्वारा आक्रमण करेगें। भेड़िया जैसे पाल(बकरी का झुण्ड) में असतर्कता समझकर पाल स्थित पशु विनाश करते हैं, उसी तरह दुर्गादि में अवस्थित राजा को किचिंत असतर्क देखने पर ही विनाश करेगें। खरगोश जैसे सशस्त्र शिकारी द्वारा घिरने पर भी कुटिल गमन से पलायन करते हैं, उसी रूप राजा बलहीन होकर, बलवन्त द्वारा परिवृत्त(घिरा) होने पर आत्म रक्षा के लिए पलायन करेगें। राजा विजयार्थ प्रवृत्त होने पर जो सब व्यक्ति उसके विपक्षताचरण करेगें, उसको साम, दाम, भेद तथा दण्ड ये चार प्रकार के उपाय में वशीभूत करेगें। यदि वे साम, दाम, भेद इन त्रिविध उपायों से निरस्त न होये, तब राजा युद्ध द्वारा दण्ड विधान करके उसको अपने वश में लायेगें। साम, दाम, दण्ड, भेद इन चार प्रकार के उपाय के मध्य पण्डित गण साम तथा दण्ड इन दोनों की प्रशंशा करते हैं, कारण साम में प्रयास नहीं तथा

तृल – 323
अर्थ व्यय तथा सैन्य क्षय नहीं होता, दण्ड(युद्ध में) इन सब के आशंका के रहने से उसके द्वारा अतिशय कार्य सिद्धि होता है।

जिस रूप से धान्य तथा तृण के एक साथ जन्म लेने से भी कृषक धान की रक्षा करके तृणादि का विनाश करते हैं, उसी रूप राजा दुष्ट को विनष्ट करके शिष्ट की रक्षा करेगें। जो राजा, दुष्ट तथा शिष्ट की अज्ञानता हेतु अशास्त्रीय उपाय से सम्पत्ति ग्रहण तथा शारीरिक कष्ट द्वारा प्रकृति पुंज को पीड़ित करते है, वे प्रकृति–कोप में पतित होकर राज्य भ्रष्ट तथा सबान्धव निधन प्राप्त होते हैं। प्राणी जैसे आहार के बिना क्षीण होते हैं, तद्रूप राष्ट्र पीडक राजा प्रकृति पुंज के कोप में विनष्ट होते हैं। राजा राज्य सुरक्षा के विधान करेगें। राजा छोटे बडे ग्राम के अनुसार दो, तीन, पाँच अथवा सात ग्राम के मध्य किसी निर्दिष्ट स्थान में सैन्यादि सह एक जन प्रधान राजपुरूष प्रतिष्ठित करेगें। इस निर्धारित स्थान को गुल्म कहा जाता हैं प्रत्येक ग्राम के एक एक जन को अधिपति(सरदार) करेगें। उसके बाद एक प्रबल व्यक्ति को 10 ग्राम का अधिपति बनायेगें। इस प्रकार 20 ग्राम में, 100ग्राम में, व 1000ग्राम में अधिपति नियुक्त करेगें। ग्राम में चोरी आदि किसी प्रकार दोष घटित होने पर ग्रामपति उसका प्रतिकार करेगें। वे उस विषय में अक्षम होने पर, दश ग्राम के अधिपति को वह बताया जाता है, उस रूप एक अधिपति के प्रतिकार से दूर न होने पर उसको उर्द्धतन अधिपति को बताया जायेगा। उसके द्वारा राज्य से उपद्रव दूर होगा।

अब ग्रामाधिपति के वृत्ति के बारे में कहा जा रहा है। गाँव के लोग प्रतिदिन एक गाँव के राजा को जो अन्न पान ईधंनादि प्रदान करेगें, ग्रामाधिपति वह प्राप्त होगें। दश ग्रामाधिपति कुल परिमित भूमि(1) तथा विशंति ग्रामाधिपति उसके पाँच गुण भूमि वृत्ति स्वरूप प्राप्ति करेगें। शत ग्राम के अध्यक्ष एक ग्राम तथा सहस्र ग्राम के अधीश्वर एक पुर(नगर) पायेगें।

नक्षत्र मण्डल के मध्य ग्रह जिस रूप में भयंकर है, उसी रूप, नगर नगर में सर्वोपरि प्रधान तथा सर्व विषय में तत्वाधानक्षम भंयकर तेजस्वी एक जन नगराधिपति नियुक्त करेगें। उक्त नगरपति परिभ्रमण करके ग्रामाधिपति आदि का कार्य परिदर्शन करेगें तथा राजाचर द्वारा ग्रामधिपति तथा नगराधिपति आदि कार्य के विषय में अवगत होगें। कारण, प्रजा के रक्षणवेक्षण निमित्त नियुक्त राज–भृत्यगण के मध्य अनेक परधन ग्राहक तथा वंचक होते हैं। राजा विशेष यत्न पूर्वक उस श्रेणी के भृत्य वर्ग से प्रजादि आदि लोगों की रक्षा करेगें। रक्षा कार्य नियोजित जो सब पाप बुद्धि

....

(1) आठ गौ द्वारा हलकर्षण को धर्मय कहा जाता है, जीविका के लिए ही छह गौ द्वारा हुए हलकर्षण वैध है।, गृहस्थ व्यक्ति चार गौ द्वारा कर्षण करेगें। दोगाय द्वारा कर्षण निन्दनीय है। दो गाय द्वारा कर्षित होने पर दो हल से जितनी भूमि कर्षित होगा उसे भूमि कुल कहा जाता है।

तृल – 324

भृत्य लोभ परवश होकर अर्थी–प्रत्यर्थी के निकट से अर्थ ग्रहण करते हैं, राजा उसको सर्वस्व हरण पूर्वक–स्वदेश से बहिष्कृत करेगें।

राजा उपयुक्त कार्य में नियोजित भृत्य, दासी आदि स्त्री लोग, साधारण भृत्य के उत्कृष्ट/अकृष्ट कर्मानुसार से दैनन्दिन वेतन निर्धारण करेगें। अकृष्ट भृत्य का वेतन प्रतिदिन एक पण हिसाब से देगें, छः महीने में एक जोडा वस्त्र तथा एक महीने में एक द्रोण धान्य देगें।(1)

वाणिज्य द्रव्य का क्रय तथा विक्रय का मूल्य, वह कितने दूर से लाते है, रास्ते का खर्च, तथा रक्षणावेक्षण व्यय, विषय में अनुसंधान करके लाभांश निर्णय कर, तदनुसार से राजा वणिक गण के निकट से कर ग्रहण करेगें। राजा तथा बनिक अपने अपने कार्य में यथार्थ फल लाभ कर पायेगें, राजा वह विशेष तरीके से विवेचना पूर्वक कर निर्धारण करेगें।

जैसे जलौका धीरे धीरे खून पान करता है, बच्चा दुग्धपान तथा भ्रमर मधुपान करता है, उसके स्वरूप राजा प्रजा साधारण के मूल धन का व्यघात न करके अल्प अल्प वार्षिक कर ग्रहण करेगें। पशु तथा सुवर्ण सम्बन्धीय कर, लाभ के पचास भाग के एक भाग, धन्यादि शस्य संबंधीय कर अवस्था विवेचना में षष्ठ, अष्ठम या द्वादश अंश के एक अंश राजा लेगें। वृक्ष, मांस, मधु, धृत, गन्ध द्रव्य, औषधि, वृक्षादि रस, पुष्प, मूल, फल, पत्र, शाक, तृण, बांस निर्मित पात्र, चर्म पात्र, मृन्मय पात्र, प्ररस्तरमय द्रव्य, इन सत्रह प्रकार के द्रव्य के क्रय विक्रय से जो लाभ होगा राजा उसका षष्ठ भाग ग्रहण करेगें। राजा धन के अभाव में मरणापन्न होने पर भी श्रोत्रिय ब्राह्मण(2) से कर ग्रहण नहीं करेगें, तथा श्रोत्रिय के क्षुन्निवारण से कभी भी त्रृटि नहीं करेगें। जिस राजा के राज्य में वेद वक्ता ब्राह्मण भूख से आसन्न रहते हैं, वह राजा

---

(1) आठ मुट्ठी धान में एक कुंजी, आठ कुंजी में एक पुष्कल, चार पुष्कल में एक आढक, चार आढक में एक द्रोण होता है।

(2) श्रोत्रीय लक्षण विषय में शास्त्रीय मत :–

1. जन्मणा ब्राह्मणो ज्ञायः संस्कारैर्द्विज उच्यते।
विद्याभ्यासी भवेदिविप्रः श्रेत्रिय स्त्रिभिरेव हि।।
पद्म पुराण – उत्तर खण्ड, 116 अध्याय

2. एकां शाखां संकल्पं या षड तिरंगैरधीत्य च।
षट् कर्मनिरतो विप्रः श्रोत्रियो नाम धर्मावत्।।
दान कमलाकर।

मनु संहिता तथा मार्कण्डेय पुराण में श्रोत्रिय लक्षण वर्णित हुआ है।

तृल – 325
जठरानल(दुर्भिक्षादिरूप में) में पतित होते हैं। राजा श्रोत्रिय के शास्त्र में ज्ञानादि विवेचना रूपक उपयुक्त वृत्ति प्रदान करेगें तथा पिता जैसे पुत्र को रक्षा करते हैं, तद्स्वरूप चोर आदि से उसको रक्षा करेगें। कलाकृति कार, शिल्पाकार, शूद्र(जिनका दास पद वाच्य) तथा जो शारीरिक परिश्रम में जीविका निर्वाह करते हैं, राजा उसको कर के बदले में प्रतिमाह एक दिन कार्य करायेगें। राजा अपने प्राप्त कर तथा शुल्क, स्नेहवश परित्याग करके आत्ममूलोच्छेदन नहीं करेगें तथा लोभवश में समाधिक तथा शुल्क ग्रहण करके दूसरों के मूलोत्पाटन नहीं करेगें।

राजा कार्य विशेष में तीक्ष्ण अर्थात भयंकर तथा किसी कार्य में मृदु अर्थात कोमल स्वभाव होगें। इस प्रकार के राजा सभी के प्रिय हुए है। राजा स्वविचार कार्य में असमर्थ होने पर, वे धर्मज्ञ, पण्डित तथा सत्कुलजात किसी श्रेष्ठ अमात्य को इस कार्य में नियुक्त करेगें। उक्त प्रकार के अपने कर्तव्य सम्पन्न करके राजा उत्साह के साथ तथा अप्रमाद से सर्वरूप से प्रजा लोगों की रक्षा करेगें। प्रजागण चोर तथा दस्यु द्वारा उत्पीडित होकर आर्तनाद करने पर भी जो राजा उसके प्रति प्रतिविधान नहीं करते, वह राजा और उसके आमात्य वर्ग जीवित रहते ही उनको मृत कहा जा सकता है। राजा के अन्यान्य धर्म की अपेक्षा प्रजा पालन परम धर्म है, राजा शेष प्रहर में शय्या त्याग करके, शौच कार्य सम्पन्न करके अग्निहोत्रीय यज्ञ तथा ब्राह्मण सत्कार करके सभा में प्रवेश करेगें। उक्त सभा में समागत प्रजा सकल को सादर से विदाई करके मंत्री वर्ग सहित मंत्रणा में प्रवृत्त होगें। पर्वत के पीछे प्रसाद में, निर्जन स्थान में या तो जंगल में बैठ कर मंत्रणा करेगें। जिससे राजा की मंत्रणा अन्य व्यक्ति नहीं जान पाते हैं, वे अल्प धनशली होने पर भी समग्र पृथ्वी का भोग करता है। जड़, मूक, अन्धा, बधिर, सुक सारिकादि पक्षी, अति वृद्ध, स्त्री, म्लेच्छ, रोगी, अधिकांग तथा अंगहीन लोगों को मंत्रणा के समय में दूर हटा देंगें। जडादि भावापन्न व्यक्ति लोग, अवमानित अवस्था में रहने पर तथा पक्षी तथा स्त्री लोग आदि स्वभाव दोष से मंत्रणा भेद कर लेते हैं। दिन में दो प्रहर काल में अथवा अर्द्धरात्र को पवित्रस्थान में अमात्य वर्ग के साथ या तो अकेला धर्मार्थ काम सोचेगें। उक्त धर्मार्थ काम, परस्पर विरूद्ध धर्माक्रान्त, उक्त विरोध परिहार पूर्वक चिन्ता करेगें। कन्याओं को सच्चे पात्र को सम्प्रदान तथा कुमार लोगों का रक्षण करेगें। दूत द्वारा किस रूप संदेश संग्रह किया जाता है, आरब्ध कार्य किस प्रकार से शेष किया जाय, अन्तःपुरे निगुढ संवाद दासी प्रभृति द्वारा किस प्रकार से जाना जाय, उस विषय में चिन्ता करेगें। अष्ट काम के प्रति(आय, व्यय, करादि ग्रहण, भृत्यादि को वेतन, मंत्री लोगों को यथा योग्य कार्य नियोग, विरूद्ध कार्यानुष्ठान निवारण, संदिग्ध विषयादि में शास्त्र सम्मत कर निरूपण, पाप के

तृल – 326
प्रयाश्चित) राजा का विशेष मनोयोग से रहना आवश्यक है। पंच वर्ग के(1) कर्तव्य के विषय में राजा यथार्थ रूप से चिन्ता करेगें। मध्यम, विजिगीषू, उदासीन तथा शत्रु राजगण के कार्यादि का अनुसंधान करेगें।

मध्यम, विजिगीषु, उदासीन तथा शत्रु इन चार को मूल प्रकृति कहा जाता है। मित्र, अरिमित्र, मित्रमित्र, अरिमित्र मित्र, पार्षणी ग्राह्य, आक्रन्द, पार्षणी ग्प्रहासार, आक्रन्दासार यह आठ प्रकृति, सर्व समेत प्रकृति द्वादस है।। इनके अलावा अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, अर्थ तथा दण्ड यह समस्त प्रकृति वाच्य है। पूर्वोक्त बारह सह प्रकृति की संख्या द्विसप्तति है।

युद्धार्थी राजा के राज्य के अव्यावहितान्तरवर्ती राजा को शत्रु कहा जाता है। अरिसेवी को कृत्रिम शत्रु कहते हैं। अरिभूमि के अग्रवर्ती को मित्र कहा जाता है एवं अरिराजा व युद्धार्थी राजा के भूमि के अनन्तरवर्ती राजा को उदासीन कहते हैं। इन सब नृपति को साम, भेद, दाम, दण्ड इन चारों उपायों में किसी एक के द्वारा अथवा समस्त द्वारा वशीभूत करेगें। सन्धि, विग्रह, यान(युद्धार्थ शत्रु राजा के प्रति यात्रा), आसन(उपेक्षा करके गृह में अवस्थान करना), द्वैध(अपने सैन्य को द्विधा करना), आश्रय(शत्रु द्वारा पीडित होकर बलवान राजा के शरणापन्न होना), यह छः नृपतिगण के उपकारक है, इसलिए गुण शब्द वाच्य हुआ है। इन सब गुण के मध्य जिसके आश्रय से अपने उपकार तथा शत्रु राजा की हानि हो उसे आश्रय दें। अपनी समृद्धि अथवा शत्रु राजा की हानि, अथवा शत्रु राजा की समृद्धि देखकर समयोचित आसन, यात्रा, सन्धि, युद्ध, द्वैधीकरण या अन्य राजा के आश्रय ग्रहण करेगें। सन्धि, विग्रह, यान आसन द्वैधी भाव तथा आश्रय, इसके हर एक दो प्रकार के है। उपस्थित समय में फल लाभार्थ अथवा भविष्य में फल के लिए मित्र राजा के साथ मिलकर शत्रु राजा के प्रति अभियान के लिए जो सन्धि किया गया उसको समानयान–कर्मा सन्धि कहते हैं। तथा परस्पर भिन्न तरीके से युद्ध यात्रा करने के निमित्त जो सन्धि है उसको असमान यान–कर्म्मा सन्धि कहा जाता है, अतएव सन्धि द्विविध है। विग्रह दो प्रकार के हैं – स्वयं कृत युद्ध तथा मित्र राजा के रक्षार्थ युद्ध। शक्तिशाली होने पर अकेले ही युद्ध यात्रा करेगें, तद् विषय में अशक्त होने पर अन्य राजा के साथ मिलकर अभियान करेगें। इस कारण से यान द्विविध है– पूर्व जन्मार्जित दुष्कृत द्वारा।

---

(1) पंच वर्ग – कापाटिक, उदास्थित, गृहपति व्यंजन, वैदेहिक व्यंजन तथा तापस व्यंजन यह पाँच चर का नाम पंच वर्ग है।

प्रगल्भ व्यक्ति कपट व्यवहारी है, इसलिए उसको कापाटिक कहा जाता है, भ्रष्ट सन्यासी को उदास्थित कहते हैं। कृषक क्षीण वृत्ति प्रजा शौचयुक्त होने पर, उसको गृहपति व्यंजन कहते हैं। क्षीण वाणिज्य वृत्ति लोगों का वैदेहिक कहा जाता है। भ्रष्ट ब्रम्हचारी प्रज्ञादी सम्पन्न होने पर तापस व्यंजन कहते है। यह पाँच वर्ग चर द्वारा शत्रुगणों के मनोभाव आदि जान सकते है।

तृल – 327

अथवा दैवदुर्विपाक में हस्ती, अश्व तथा कोषादि क्षय जनित आसन, तथा मित्र राजा के अनुरोध से उनका कार्य रक्षार्थ आसन, यह दो प्रकार आसन निर्दिष्ट है। षटगुणवेत्तागण कहते हैं, प्रयोजन सिद्धि के निमित्त सेनापति सह सैन्य के एकत्र अवस्थान तथा कुछ सैन्य लेकर दुर्गाभ्यान्तर में स्वय राजा के अवस्थान, यह दो प्रकार के द्वैधी भाव है। शत्रु द्वारा पीडित होकर अन्य राजा के आश्रय ग्रहण करना, तथा पीडित होने की आशंका से ग्रहण करना, ऐसा ही द्विविध आश्रय है। जब जानेगें कि युद्ध के प्रति निवृत्त में अपना प्राबल्य होना निश्चित है, किन्तु सम्भवतः क्षति की संभावना है, तब युद्ध न करके सन्धि करेगें और जब अपने अमात्यादि समस्त बलिष्ठ तथा अपना शक्ति सम्पन्न होगा, तब युद्ध करेगें। जब यथार्थरूप जानेगें कि आपके अमात्यादि प्रकृति हर्षयुक्त तथा धनादि द्वारा पुष्ट तथा शत्रु राजा के तद्विपरीत अवस्था देखेंगें, तब शत्रु राजा के प्रति अभियान करेंगें। और जब अपना वाहन तथा सैन्य लोगों की क्षीण देखेंगे, तब क्रम क्रम से उपदौकनादि द्वारा शत्रु राजा को सांत्वना पूर्वक आसन अवलम्बन करेगें। जब सर्वत्र तरीके से बलवान राजा भी सन्धि के अयोग्य होंगे, तब आत्म बल के दो भाग करके, कुछ सैन्य सह राजा दुर्ग आश्रय करेगें, अवशिष्ट द्वारा सयुद्ब परिचालन पूर्वक स्वकार्य साधन करने में कोशिश करेगें। शत्रु सैन्य दमन में असमर्थ होने पर आत्म रक्षा के निमित्त शीघ्र धार्मिक तथा बलवान राजा के आश्रय ग्रहण करेगें। जो राजा दुष्ट प्रकृति के लोगों को निग्रह करने में सक्षम हैं। इस रूप गुणशाली तथा बलवन्त राजा को गुरू की तरह सेवा करेगें। यदि उपर का आश्रय ग्रहण करना दुष्य ज्ञात होता हो तो निर्भर चित्त से घोर संग्राम करेगें। जिसमें मित्र तथा उदासीन शत्रु राजा प्रबलनही हो सकते हैं, नितिज्ञ राजा दानादि सर्वविधि उपाय के द्वारा तत्पक्ष में यत्नवान होगें।

समस्त काल के ही शेष काल में क्या दोष या गुण होगा, यह विचार करेगें। कर्तव्य कार्य में भविष्यत में क्या दोष गुण घटेगा, यह जो समझेगा, वे गुणशाली कार्य में प्रवृत्त होते हैं तथा जिस कार्य में दोष घटेगा उसमें विरत रहते हैं। जो सत्वरता के सहित उपस्थित कार्य सम्पादन करते है, तथा अतीत कार्य के गुणागण चिन्ता करते है, वे सब कार्य का ही फल लाभ करते हैं। भूत, वर्तमान तथा भविष्यत इस काल त्रय में सावधान राजा कभी भी शत्रु द्वारा पीडित नहीं होते। मित्र भी उदासीन शत्रु राजगण को पीडा न दें पायें, विजिगीषु राजा इस रूप में उपाय करेगें। बिजिगीषु राजा जब शत्रु राजा के प्रतिकूल में युद्ध यात्रा करेगें तब श्लोकोक्त प्रकार में वह यात्रा आरम्भ करेगें। शुभ मार्गशीर्ष महीने में या फाल्गुन, चैत्र महीने में यात्रा करेगें और शत्रु राजा के गमन करने के मात्र ही जय होगा, इस तरह जानने पर, ग्रीष्मादिकाल में भी यात्रा करेगें। शत्रु राजा के अमात्य वर्ग के परस्पर

तृल – 328
व्यसन उपस्थित होने पर, या उस राज्य के प्रजा के आत्म पक्ष होने पर, राजा किसी भी काल में युद्ध के लिए परराज्य में गमन कर पायेगें।

यात्रा काल में अपने दुर्ग तथा राज्य का अनिष्ट न हो पाये, इस रूप से प्रधान सेनापति के अधीन में बहुत सारे सैन्य दुर्ग में संस्थान करके तथा यात्रा के उपयुक्त वाहन तथा अस्त्रादि यथा शास्त्र यात्रा करवाकर, तथा दूसरे राज्य में अवस्थान के लिए शय्या तथा खाट आदि वस्तु ग्रहण करके तथा शत्रु राजा भृत्य लोगों को कौशल से स्वपक्ष करके, पूर्वोक्त कापटिकादि पचंवर्ग की सहायता से प्रतिपक्ष की वार्ता संग्रह व्यवस्था करके, जंगल, अनूप, आटविक, त्रिविध पथ के वृक्ष–लतादि छेदन तथा उच्च निम्न पथ के समीकरण रूप शोधन करके तथा हस्ती अश्व पदाति तथा भृत्य वर्ग के यथा योग्य आहार, औषध तथा सम्मानादि दान की व्यवस्था कर के, युद्ध शास्त्रों विधान के अनुसार उत्तरोत्तर शत्रु देश में यात्रा करेगें। जो व्यक्ति बाहर से रिश्तेदारी प्रकाश करके, अन्तर में शत्रु पक्षावलम्बी होते है तथा भृत्य किसी कारण से एक बार अन्तरित होकर पुर्नबार आगत हुए हैं। उनको सम्पूर्ण विश्वास नहीं करेगें।

यात्रा काल में चतुर्दिक से भय उपस्थित होने पर दण्ड व्यूह रचना पूर्वक यात्रा करेगें। आगे बलाध्यक्ष(प्रधान सेनापति), मध्य स्वयं राजा, पश्चाद्भाग में सेनापति, उभय पार्श्वे में हस्ती यूथ, हस्ती के निकट अश्व, तत्पर पदाति वर्ग इस प्रकार रचना को दण्ड व्यूह कहा जाता है। पीछे से भय उपस्थित होने पर, आगे का भाग सूच्याकार पीछे का स्थूल व्यूह रचना करेगें, इसका नाम सकट व्यूह है। अग्र तथा पश्चात उभय की तरफ भय होने पर वाराह व मकर व्यूह रचना में अभियान करेगें। अग्र तथा पश्चात भाग सूक्ष्म मध्य भाग स्थूल होने पर उनको वाराह व्यूह कहा जाता है, उक्त व्यूह अतिशय स्थूल मध्य होने पर उसको गरूड व्यूह कहा जाता है। वराह व्यूह के उल्टा अर्थात अग्र तथा पश्चात भाग स्थूल, मध्य भाग सूक्ष्म होने पर उनको मकर व्यूह कहा जाता हे। अग्र तथा पश्चात उभय की तरफ भय होने पर मकर व्यूह रचना में अभियान करेगें। आगे भय उपस्थित होने पर सूची व्यूह रचना करेगें। अग्र तथा पश्चात भाग में चींटी पक्ति की तरह अतिशय निस्तब्ध रूप में गमनशील सैन्य समूह, अग्र भाग में प्रवीर पुरूष रहने पर उसको सूची व्यूह कहते हैं। जिस तरफ का भय उपस्थित होगा, उस तरफ आत्म सैन्य विस्तार करेगें अथवा पद्मव्यूह रचना में अवस्थान करेगें। समान तरीके से विस्तृत मण्डलाकार सैन्य स्थापन करके मध्य भाग में राजा के अवस्थान करने को पद्म व्यूह कहा जाता है। राजा पुर से यात्रा करके सर्वदा प्रच्छन्न तरीके से रहेगें।

हस्ती, अश्व, रथ, पदाति दशक के अध्यक्ष को पत्तिक कहा जाता है। पत्तिक दशक के पति को सेनापति, सेनापति दशक के अध्यक्ष को बलाध्यक्ष कहा जाता है। उक्त सेनापति तथा बलाध्यक्ष को चतुर्दिक नियोग करेगें तथा जिस तरफ से भय उपस्थित होगा उस तरफ को अग्र कहकर कल्पना करेगें।

तृल – **329**

सेनापति अधिष्ठित कुछ सैन्य युद्धार्थ, कुछ भेरी पटहादि वाद्य द्वारा संकेत करने के लिए, उक्त उभय कार्य कुशल, कुछ सैन्य अकूतो भय से चतुर्दिक प्रतिपक्ष में प्रवेश निवारणार्थ तथा कुछ शत्रु के कार्य के प्रति लक्ष्य रखने के निमित्त नियुक्त करेगें। कुछ कम योद्धा युद्धस्थल में सैन्य लोगों को संहत करके युद्ध करेगें। योद्धा की संख्या अधिक होने पर इच्छारूप सेना लोगों को विस्तार करके युद्ध करेगें अथवा सूची व्यूह या वज्र व्यूह रचना कर के युद्ध करेगें। तीन श्रेणी के बल द्वारा जो व्यूह होता है उसको वज्र ब्यूह कहते हैं।

समतल क्षेत्र में अश्व या रथ द्वारा, जल के मध्य नाँव या हस्ती द्वारा, वृक्ष लतादि द्वारा, आवृत स्थान में धर्नुबाण द्वारा, गर्त, कन्टक तथा पाषाणादि रहित स्थल में खड्ग चर्म तथा भल्लादि अस्त्र द्वारा युद्ध करेगें। कुरूक्षेत्र देशीय, विराट देशीय तथा कान्यकुब्ज अहिच्छत्र देशीय तथा मथुरा वासी लोग प्रायः ही दीर्घकार, अनतिस्थूल देही तथा शौर्य अहंकारशाली होते है। इन सब देशोम्भव मनुष्य को अग्रसर करके युद्ध करेगें। स्वपक्ष के योद्धागण हर्षयुक्त या क्रोधित, यह परीक्षा करेगें, तथा शत्रु के साथ यथार्थ रूप में युद्ध करते हैं या छलयुद्ध करते हैं। वह भी देखेंगे।

दुर्ग स्थित या अन्यत्रावस्थित शत्रु को सर्वदा सैन्य द्वारा आवृत अवस्था में रखेगें तथा शत्रु राजा के देश उत्सन्न करेगें। शत्रु के अन्न, घास, उदक तथा ईधनादि समस्त द्रव्य में अपद्रव्य मिश्रित करेगें। शत्रु जिस जलाशय के जल में स्नान पानादि करते हैं, वह नष्ट करेगें। दुर्ग प्रकारादि भेद करेगें, परिखादि छेदन तथा पूरनादि द्वारा जल शून्य करेगें। इस प्रकार शत्रु राजा को व्यतिव्यस्त करेगें।

राज्य लाभाकांक्षी राज वंशीय गण तथा क्षुब्ध अमात्य वर्ग के मध्य भेद पैदा करेगा। भेद द्वारा जो आत्म पक्ष हुए हैं, उनके कार्यादि संधान रखेगें। शुभ ग्रह, शुभ दशादि द्वारा उत्तम समय जानकर निर्भय से युद्ध करेगें। प्रथमतः प्रीति तथा हित वाक्यादि साम प्रयोग, अथवा हस्ती, अश्व तथा सुवर्णादि दान, या तो शत्रु राजा के राज्य लालसा युक्त अमात्य वर्ग के साथ भेद, इसके एक एक अथवा समस्त प्रयोग से शत्रु राजा को जय करने में कोशिश करेगें। इसके द्वारा जय करना संभव होने पर, युद्व द्वारा जयाकांक्षी नहीं होगें, जबकि, युद्धरत पक्ष द्वय के मध्य बहु सैन्य समस्तशाली को भी पराजित होता देखा जाता है, तथा अल्पबल हैं इसलिए जय लाभ घटित होता हैं। अतएव अचानक युद्ध में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए। जिस स्थल में साम, दाम, भेद इन तीन प्रकार के उपाय प्रयोग लाये, और जयलाभ–संबन्ध में संदेह रहता है, उस स्थल में जी जान से इस रूप युद्ध करेगें, जिससे शत्रु की पराजय घटित हो, इस प्रकार से पर राष्ट्र जय करने के बाद, शत्रु राज्य में संस्थापित देवता समूह तथा धार्मिक ब्राह्मण लोगों को जीत वस्तु के कुछ अंश को दान तथा सम्मान सहकार से पूजा करेगें। तथा इसके पश्चात सबको अभय दान करेगें। जीते राज्य के अमात्य वर्ग के अभिप्राय से अवगत होकर, निहत राजा के

तृल – 330
वंश के उद्‌भव उपयुक्त व्यक्ति को उस राज्य में अभिषिक्त करेगें, तथा अमात्य वर्ग के कर्तव्या–कर्तव्य निर्धारण कर देगें। उस राज्य के वासीगणों के जो देशाचार गुरू परम्परा चला आया है, वह धर्म विरूद्ध नहीं होने पर स्थिरतर रखेगें। तथा अभिषिक्त राजा को, उसके अमात्य वर्ग सह रत्नादि दान द्वारा पूजा करेगें। अभिलाषित वस्तु को अन्य द्वारा ग्रहण करना अप्रिय तथा अन्य से प्राप्त दान– प्रिय जनक है, यह प्रसिद्ध होने पर भी जय काल में अभिलाषित वस्तु के दान तथा ग्रहण उभय ही प्रंशसनीय होते हैं। समस्त कार्य ही पूर्व जन्मार्जित, सुकृत दुष्कृत रूप, दैव तथा मनुष्य व्यापाराधीन होने पर भी दैव दृष्टि के अगोचर तथा अचिन्तनीय है, पौरूष व्यापार दृष्ट व चिन्तनीय है। अतः इन दोनो के मध्य में पौरुष द्वारा कार्य सम्पादन करेगे। शत्रु राजा युद्ध न करके, युध्यमान राजा के साथ मित्रता करना चाहने से अथवा रत्नदान या राज्य के कुछअंश अर्पण करने पर, योद्धाराजा उसके साथ सन्धि बन्धन करके युद्ध से निवृत्त होगें।

शत्रु राजा के प्रति गमनोद्‌यत बिजिगीषू राजा के राज्य के पश्चादवर्ती पार्षणी ग्रह तथा उनका उत्साहवर्धक पार्षणी ग्रह के राज्यानन्तरवर्ती आक्रन्द नृपति यदि यात्राकारी के देश आक्रमनादि का आचरण करते हैं, तब उसको निकट अग्र यात्रा करके सम्मति ग्रहण करेगे, उनके प्रति उपेक्षा करने पर, वे दोषारोपण करेगें।

स्थिर मित्र लाभ में राजा जिस रुप में लाभ प्राप्त होता है, हिरण्य या भूमि लाभ में उस स्वरूप में वर्द्धित नहीं होते है। स्थिर मित्र के कुछ समय हीनबल होने से भी बाद में वृद्धि लाभ होता है, जो मित्र धर्मज्ञ तथा प्रत्युपकार स्मरण करते हैं, एवं जिसके पति उसकी सेना और अमात्यगण जो संतुष्ट व अनुरक्त रहते हैं, जिसकी कार्यारम्भ के प्रति निश्चय बुद्धि है, इस प्रकार मित्र अन्ततः अल्पबल होने पर भी प्रशंसनीय होते हैं।

विद्वान तथा महत् कूल में जन्मित, महाबल पराक्रान्त, अति चतुर, दाता, कृतज्ञ तथा सुख दुःख में समभावापन्न शत्रु अतिशय कष्ट दायक है, इनको सहज से पराजय नहीं किया जा सकता है। जो अति साधू हैं, जो महापुरूष के दृष्टि मात्र से उनका स्वभाव समझ पाते हैं, जो महाबल पराक्रान्त, दयालु तथा दाता, बिजिगीशू भूपति हैं, इस प्रकार के राजा का आश्रय ग्रहण करेगें।

यदि प्रकारान्तर से आत्म रक्षा करने में सक्षम होते है, तब उत्कृष्ठ जल–वायु तथा स्वास्थ्य सम्पन्न, सर्व शस्य शालिनी तथा गवादि पुष्टिवर्द्धक बहु तृणादि–मण्डिता भूमि का त्याग द्वारा भी आत्म रक्षा करेगें। आपातस्थिति के प्रतिकार के निमित्त धन संचय करेगें। तथा उक्त धन तथा पत्नी इन दोनों को परित्याग करके भी आपातकाल में आत्म रक्षा करेगे। धन क्षय, अमात्यादि के कोप तथा मित्र के वासनादि आपदा एक साथ उपस्थित होने पर, उसमें मोहयुक्त ना होकर प्रतिकार के निमित्त सामादि उपाय

तृल – 331

प्रयोग करेगें। स्वयं तथा राज्य के लाभांश तथा साम आदि उपाय इन तीनों को अवलम्बन करके प्रयोजन सिद्धि के निमित्त यथा शक्ति यत्न करेगें।

इस प्रकार के राजा मंत्री वर्ग के साथ सर्वविषय में सम्यक प्रकार से मंत्रणा करके अस्त्र शिक्षादि द्वारा व्यायाम करके मध्याह्न समय में मध्यानिक स्नान तथा संध्या वन्दनादि समापन कर आहार के निमित्त अन्तःपुर में प्रवेश करेगें। परमात्मीय भोजनकाल ज्ञाता तथा अन्य के अभेद्य सुपकार आदि द्वारा प्रस्तुत, चकोर पक्षी दृष्ट से(1) तथा विषघ्न मन्त्र द्वारा परिक्षित अन्न व्यन्जन आदि भोजन करेंगे। यत्न करके विषध्न औषध सारे खाद्य द्रव्य में मिश्रण करायेगें तथा विषघ्न रत्न शरीर में धारण करेगें। गूढचर द्वारा जो सब स्त्रीयां परीक्षित हुए हैं, तथा जो नियमित वेष भूषा युक्ता हैं, वे चामर व्यजन, जल तथा धूपन द्वारा नृपति की परिचर्या करेगें। इस रूप वाहन, शय्या, आसन, भोजन, गन्धानुलेपन, तथा स्नानादि विषय में परीक्षा प्रणाली में विशेष यत्नवान रहेगें। अन्तःपुर में भोजन के अन्त में श्रान्ति दूर करके महिषीगण सहित आमोद प्रमोद करके आठ भाग में विभक्त दिन में सात अंश उपयोग करके, आठवें अंश में दोबारा स्वकार्य चिन्ता करेगें।

बाद में अलंकृत होकर, अस्त्र शस्त्र जीवी सभी योद्धा, हस्ती अश्वादि वाहन खड्गादि अस्त्र शस्त्र का दर्शन करेगें। कौन सी वस्तु किस रूप में है उसका अनुसंधान करेगे। बाद में गृह में जाकर संध्या पूजा आदि कर, अन्त में निर्जन प्रकोष्ठ में गमन करके, गुप्त संदेशीय चर के निकट श्रवण करेगें। तत्पश्चात समस्त स्त्री परिचारिका के साथ पुनर्बार भोजनार्थ अन्तपुर में जायेगें। अन्तःपुर में सुखकर वाद्य ध्वनि द्वारा संतुष्ट होकर डेढ़ प्रहर के मध्य किंचित भोजन करके शयन करेगें। अनन्तर श्रान्ति दूर करके रात के शेष प्रहर के मध्य किचिंत भोजन करके शयन करेगें। अनन्तर थकान दूर करके रात्रि के शेष प्रहर में गात्रोत्थान करेगें। राजा स्वस्थ अवस्था में स्वयं शास्त्रोक्त प्रकार से प्रजा पालनादि कार्य करेगें तथा अस्वस्थ होने पर अमात्यादि भृत्य के उपर समस्त कार्य का भारार्पण करेगें

पूर्वोद्धृत श्लोकावली का यही स्थूल मर्म है।

''योग यात्रा'' ग्रंथ से राज धर्म सम्बधीय दो अंश इस स्थल में प्रदान किया जा रहा है :–

(1) ''दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य पालो न्यायेन कोषस्य च संप्रवृद्धि।
अपक्षपातोऽप्यरिराष्ट्रपीडा पन्चैव यज्ञा कथिता निपानां।। ''

(2) महीनो दययाहीनो निष्कृपोऽश्लीलवाक् सदा।
परस्त्री निरतोऽसूयारिष्टचित्तेऽतिलुब्धकः।।
दुर्ज्जनालाप सततं साधुलोक प्रपीडकः।
अन्यायोत्पत्ति वित्ताच्य श्चेति विनष्ट धर्म्मिणः।। ''

---

(1) विषाक्त वस्तु दर्शन से चकोर पक्षी के चक्षुद्वय रक्तवर्ण होता है।

तृल – 332

राज धर्म या राज्य का कर्तव्य निर्धारक शास्त्रीय वाक्य बहुत हैं। महाभारत शान्ति पर्व, काली पुराण –85/86 अध्याय तथा पद्म पुराण –स्वर्ग खण्ड, 138 अध्याय में राजधर्म संबंधीय अनेक बात मिलती है। चाणक्य आदि नीति शास्त्रविद् पण्डित गणों ने इस प्रयोजनीय विषय का अल्पाधिक परिमाण में आलोचना किया हैं। इस स्थल में उनके सम्यक विवरण प्रदान करना असम्भव है। काल परिवर्तन में शास्त्रोक्त समस्त बात का पालन करके चलना राजगण के पक्ष में असम्भव है तथा कोई कोई अंश अनुसरण करना निष्प्रयोजन होने पर भी ये सब मूल्यवान व हित की बात है, उनके आलोचना के योग्य है, ऐसा ही ज्ञात होता है। चुन कर लेने पर इसके मध्य वर्तमान काल के राजनीति की पुष्टि तथा उन्नतिजनक अनेक बात मिलेगें। सम्भवतः इसलिए ही राजमाला के रचियता ने बारम्बार राजधर्म का उल्लेख किया है।

———

सामुद्रिक विवरण

महाराज कल्याणमाणिक्य के अंग के सुलक्षण व चिन्हादि विषय में राजमाला में जो लिखा गया है, वह निम्न उद्धृत हुआ है।

रक्त वर्ण दुई हस्त मध्ये उर्द्धरेखा।	रक्त वर्ण दोनो हाथ, बीच उर्द्ध रेखा।
मध्यम अंगुली सीमा रेखा जाय देखा।।	मध्यम अंगुली तक फैली सीमा रेखा।।
हस्तेर आंगुल छोटो नख छोटो होय।	हस्तांगुली छोटी सी, नाखुन भी था छोटा।
तर्जनी ताहार छोटो ग्रासे कष्ट नोय।।	तर्जनी भी छोटी सी, ग्रासालुदन नहीं बाधा।।
आर विलक्षण वाम हस्तेर अंगुली।	और बिलक्षण थी वामांगुली।
मध्यम अंगुली होईते अनामिका बली।।	मध्यमा से अनामिका थी कुछ बली।।
ध्वज रेखा हस्तेते त्रिकोण दण्ड समें।	ध्वज रेखा हाथों में साथ त्रिकोण दण्ड।
मध्यम अंगुली जिनि रेखा छिलो क्रमें।।	मध्यमा अंगुली तक फैली रेखा अखण्ड।।
अपूर्व बृष स्कन्ध बृष पृष्ठ जेनो।	अपूर्व वृष स्कन्ध वृष पृष्ठ जैसा।
कमनीय सम अंग कामदेब हेनो।।	कमनीय सभी अंग कामदेव ऐसा।।
उच्च दीर्घ हनु गंड किछु पुष्ट छिलो।	उच्चदीर्घ हनुगंड थोड़ा सा पुष्ट ।
दीर्घ ललाट नासा स्थुल दीर्घ होईलो।।	पुष्ट नासा और था ललाट चौड़ा सा।।
पदतले चिन्ह आर अन्य हने भिन्न।	पदतल चिन्ह थे दुसरे से भिन्न।
वृद्धांगुष्ठ हृस्व अति सुलक्षण चिन्ह।।	वृद्धांगुष्ठ हृस्व अति सुलक्षण चिन्ह।।
पदेर तर्जनी दीर्घ बृद्धांगुष्ठ जिनि।	चरण अंग तर्जनी दीर्घ, वृद्धागुष्ठ छोटा।
उर्द्धरेखा दुई पदे अछिलो अमनि।।	उभय पदतल सुशोभित थी उनकी उर्द्ध रेखा।।
राजमाला तृल, अमरमाणिक्य खण्ड 20पृ	राजमाला तृल, अमरमाणिक्य खण्ड 20पृ

तृल – 333

<u>ध्वज ब्रज्रांकुश चिन्ह छिलो पदतले।</u>	ध्वज ब्रज्राकुंश चिन्ह था उनके पदतल।
अति सूक्ष्तर होए पर्बकर स्थले।।	अति सुक्ष्मतर था उनके पर्ब का स्थल।।
<u>ब्रह्मरन्ध्रे नाहि केश नितम्ब शोभन।</u>	ब्रह्मरन्ध्र नहीं केश नितम्ब शोभन।
<u>स्व हस्तेत चारि हात दीर्घजे आपन।।</u>	स्वहस्त से चार हाथ दीर्घ था बदन।।
राजमाला तृल, अमरमाणिक्य खण्ड 20पृ	राजमाला तृल, अमरमाणिक्य खण्ड 20पृ

उद्धृत पंक्ति समूह के मध्य में, रेखा के द्वारा चिन्हित लक्षण या चिन्ह समूह का फल के विषय में सामुद्रिक शास्त्र में जो उक्त है, उसका इस जगह में, वह संक्षिप्त तरीके से आलोचित होगा। किसी किसी विषय का प्रमाण संग्रह करने से अक्षम होने से, तत्समस्त के आलोचना करने की सुविधा नहीं हुई।

करतल रक्त वर्ण होने पर उसके फल के विषय में सामुद्रिक ग्रन्थ में मिलता है। –

1. पाणिपदतलौ रक्तौ नेत्रान्तर नखानि च।
   तालुकोऽधर जिह्वा च सप्तरक्तं प्रशस्यते।।

हस्त तथा पद तल, चक्षु के अन्त भाग, नाखून, तालू, अधरजिह्वा ये सात रक्त वर्ण होने पर वह प्रशस्त होता है।

2. ताल्वोष्ठदन्तपाली जिह्वा नेत्रान्त पायुकर चरणैः।
   रक्तैस्तु रक्तसारा बहुसुख वनितार्थ पुत्रयुताः।

जिनका तालू, ओंठ, दन्त, कर्ण रन्ध्र, जिह्वा, नेत्र प्रान्त, पायु, हस्त तथा पद रक्तवर्ण हो, उनके शरीर में रक्ताधिक्य जाना जाता है। ये सब मनुष्य बहुत सुखशाली श्रीसमन्वित धनी तथा पुत्रवान होते है।

3. यस्य पाणितलौ रक्तौ तस्य राज्यं विनिर्दिशेत्।

जिन लोग का करतल रक्तवर्ण, वे निश्चय ही राज्य लाभ करेगे।

मध्यामांगुली के मूल तक हाथ में उर्द्ध रेखा देखने का फल

मध्यमा मूल पर्यन्तमूर्दर्धरेखा च दृश्यते।
पुत्र पौत्रादि सम्पन्नो धनवान स सुखी नरः।।

मध्यमा अंगुली के मूल तक जिसका उर्ध्व रेखा देखने को मिलता है, वह व्यक्ति सुखी, वैभवशाली तथा पुत्र पौत्र आदि समन्वित होता है।

हस्त में ध्वज अंकित रहने का फलः–

1. मकरध्वज गोष्ठागार सन्निभभिर्म्महा धनोपेताः।।।

जिसके करतल में मकर ध्वजा, गोष्ठ तथा गृहाकार चिन्ह दृष्ट होता है वह व्यक्ति धनवान होता है।

तृल – 334

2. ''चक्रशंखध्वजाकारो माषाकारश्च दृष्यते।
सर्वविद्या प्रदानेन बुद्धिमान् स भवेन्नरः।। ''

जिसके करतल में शंख, चक्र, ध्वज तथा माषाकार चिन्ह देखा जा रहा है। वह व्यक्ति सकल शास्त्र में पारदर्शी तथा ज्ञानी कहकर परिगणित होगा।

हस्त में त्रिकोण चिन्ह रहना का फल :–

1. वापी देवगृहाद्यौर्धर्म्मं कुर्वन्ति च त्रिकोणभिः।

करतल में पुष्करिणी, मन्दिर तथा त्रिकोणाकार चिन्ह दृष्ट होने पर धर्मानुष्ठायी होता है।

2. सूर्यचन्द्रलतानेत्र कोण त्रिकोणकम्।
मन्दिराश्व गजेन्द्राणां चिन्हं स्यात् स सुखी नरः।।

करतल में सूर्य, चन्द्र, लता, चक्षुः, अष्टकोण, त्रिकोण, मन्दिर, घोटक या गजेन्द्र चिन्ह रहने पर वह मनुष्य सुखी होता है।

3. वापी देव कुल्याभाश्च त्रिकोणाभाश्च धार्मिके।।

तडाग देवपदी या त्रिकोण रेखा(हस्त में) रहने पर धार्मिक होते हैं।

वृषस्कन्ध विशिष्ट पुरूष के भाग्य फल –

वृषस्कन्धो गजस्कन्धः कदलीस्कन्ध ऐव च।
महाभागो महाधन्यः स सर्व पार्थियवोपमः।। ''

जिस मनुष्य के स्कन्ध द्वय वृष या गज स्कन्ध की तरह अथवा कदली स्कन्ध के तुल्य है, वह पुरूष महाभाग्यधर, धन्य तथा सर्व राज तुल्य होते है।

हनु दीर्घ होने पर उसका फल :–

बाहुनेत्रद्वयं कुक्षिः(हनुः) द्वौतु नासा तथैव च।
स्तनद्वयोरन्तरन्चैव पंच दीर्घ प्रशस्यते।।

बाहु युगल, नयनयुगल या उदर गण्डदेश के उपरिभाग, नासापुट तथा स्तनद्वय के मध्य स्थल में यही पंच अंग यदि दीर्घ हो, ऐसा होने से प्रशस्त होता है।

गण्ड देश पुष्ट होने का फल :–

भोगीत्वनिम्नगण्डे मंत्री सम्पूर्णमांसगण्डो यः।

जिस मनुष्य के गण्ड निम्न नहीं, वह भोगशाली है। जिसका गण्ड सम्पूर्ण मांस विशिष्ट है, वह मंत्री होगा।

तृल – 335

ललाट दीर्घ(प्रशस्त) होने पर उसका फल :–

1. उरोललाटं बदनं च पुंग सां विस्तीर्णमेतत्रितयं प्रशस्तम्।।

पुरूष का वक्ष स्थल, ललाट तथा मुख, यह स्थान त्रय विस्तृत होने पर वह शुभदायक होता है।

2. उन्नतैर्व्विपुलैः शंखैर्ललाटेर्विषमैस्तथा।
निर्धना धन्वन्तश्च अर्द्धेन्दुसदृशैर्नराः।।

जिस व्यक्ति का कपाल उन्नत तथा विशाल शंखाकृति, उच्च्य नीच या अर्द्ध चन्द्रकार होता है। वह व्यक्ति निर्धन होने पर भी वैभवशाली होता है।

3. उरः शिरो ललाटन्च त्रिविस्तीर्ण प्रशस्यते।

वक्ष स्थल, शिरोदेश तथा ललाट ये तीनों अंग विस्तृत होना शुभ दायक है।

नासिका दीर्घ होने से उसका फल :–

"छिन्नानुरूपयागम्यगामिनो दीर्घया तू सौभाग्यम्।

जिनका नासिक छिन्न की तरह देखा जाता है, वह अगम्यागामी, जिसकी नासिका दीर्घ वह सौभाग्यशाली होता है।"

पाँव में उर्द्ध रेखा रहने का फल :–

1. यस्य वृद्धांगुलेर्मूलात् पदे रेखा च दृश्यते।
स राज्यां लभेतन्यूनं भूंगते विकन्टकां महिम।।

जिस व्यक्ति का चरण के वृद्धागुंल मूल से पद तल तक विस्तृत रेखा दृष्ट होता है। वह व्यक्ति राजा होता है तथा निष्कन्टक राज्य भोग करता है।

2. चक्रं छत्रषवांकुशं ध्वजकुलीजम्बुर्द्धरेखाम्बुजम्।
विभ्राणो हरिरून विंशति महालक्ष्मयृर्च्चितांघ्रिर्भवेत्।।

पद तल में चक्र, छत्र, यब, अंकुश, ध्वज, वज्र, जम्बु, उर्द्ध रेखा तथा पद्म चिन्ह इत्यादि 19 चिन्ह रहने पर महा लक्ष्मी उनकी पद सेवा करते हैं।

पद तल में ध्वज वज्राकुंश चिन्ह रहने का फल – उक्त उद्धृत श्लोक में इसका फल सन्निवेशित हुआ है और एक वचन निम्न में दिया जा रहा है।

यस्य पदतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरनम्।
अंकुशं कुलिशं वापि स राजा भवति ध्रुवम्।।

जिसके पद तल में पद्म, चक्र, तडाग, तोरण, अंकुश या वज्र चिन्ह रहने से वे निश्चय ही राजा होगें।

तृल – 336

करांगुलि का पर्व सूक्ष्म होने पर उसका फल –

1. सूक्ष्माणि पंच दशनांगुलि पर्व्व केशाः साकं त्वचाकररूहाश्च नः दुःखितानाम्।

दन्त, अँगुली पर्व, केश, चर्म तथा नाखून में पाँचो सूक्ष्म होने पर वह व्यक्ति सुखी होगा।

2. सूक्ष्मान्यगुंलिपर्व्वाणि दन्तकेश नखत्वचः।
पंचसुक्ष्माणि येषां हि ते नरा दीर्घजीविनः।।

उँगली के पर्व, केश अथवा लोम, नाखून तथा चर्म, ये पाँचो अंग जिसके सूक्ष्म है वे दीर्घजीवी होते हैं।

केश शून्यता का फल –

विरला मधुराः केशाः स्निग्धा भ्रमरसन्निभाः।
मेघवर्णाश्च ये केशा स्ते नराः सुखभागिनः।

जिसका केश विरल, सुदृश्य, स्निग्ध, भ्रमरवत् कृष्णवर्ण या मेघवत् वर्ण विशिष्ट है, वे सर्वदा सुख भोग करते हैं।

नितम्ब सुशोभन(मांसल) होने पर उसका फल –

1. निःन्वोऽतिस्थूलस्फिक् समांसलस्फिक् सुखान्बितो भवति।
रोगी मध्यम स्फिग्मण्डूकास्फिग्नराधिपतिः।।

नितम्ब स्थूल होने पर निर्धन, मांसल होने से सुखी, मध्यविध होने पर पीड़ित तथा मण्डूक सदृश होने पर नराधिपति होता है।

2. आशीध्र मैथुन्यल्पायः स्थूलस्फिक् स्याद्वनोजझितः।
मांसलस्फिक् सुखी स्याच्च सिंहस्फिक् भूपतिः स्मृतः।।

नितम्ब स्थूल होने पर पुरूष निर्धन, मांस होने पर सुखी तथा सिंह के न्याय सुदृढ होने राजा होते है।

नर देह स्वहस्त के चार हस्त(96 अंगुली) परिमित दीर्घ होने पर उसका फल –

1. अष्टशतं षन्नवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम्।
उत्तम स महीनानामंगूल संख्यास्व मानेन।।

जिसका शरीर उसके अपने उँगली के परिमाण में 108 एकशत अष्ट अँगुली उंचा होगा वह व्यक्ति श्रेष्ठ, 96 (छिआनब्बे) उँगली होने पर मध्यम तथा 84 (चौरासी) उँगली परिमित होने पर अधम होगा।

तृल – 337

2. रतिसम्भसि शुक्रसारता द्विगुणाचाष्टशतैः पलैर्मितिः
परिमाणमथास्य षडयुता नवतिः सम्परिकीर्त्तिताबुधै।।

हंस पुरूष जल विहाराशक्त, शुक्रसार विशिष्ट तथा उसके गुरूता आठ सौ के द्विगुन पल अर्थात 1600 पल परिमित है। इसके देह के दीर्घ की परिमाण 96 अंगुल(चार हस्त) होता है। पण्डित गण द्वारा इसके संबंध में इस तरह वर्णित होता है।

———

त्रिपुरा के सामन्तगण।

भुलुआ राज

त्रिपुरा राज्य के अधीनस्थ सामन्त राजा तथा जमींदार वर्ग के मध्य भुलुआ के राजवंश का नाम सबसे पहले उल्लेख योग्य है। कायस्थ शूर वंशीय विश्वम्भर राय के वंशधर लक्ष्मणमाणिक्य बंग के द्वादश भौमिक के मध्य उल्लेखयोग्य है। ये बाकला(चन्द्रद्वीप) के राजा कन्दर्प नारायण राय के समसामायिक है, डाक्टर वाईज के (Dr. J. Wise) के मत में लक्ष्मणमाणिक्य 1586 ईसवी में जीवित थे।(1) इस राजवंश का संक्षिप्त विवरण पूर्ववर्ती 117–128 पृष्ठ में तथा 138–148 पृष्ठ में प्रदान किया गया है।

भुलुआ राज्य के वंशजों ने त्रिपुरेश्वर के सामन्त नरपति के मध्य सर्वपेक्षा प्रधान्य लाभ किया था। इसके सम्बन्ध में स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय कहते हैं–

"विश्वम्भर के उत्तर पुरूष गण, त्रिपुर राज दण्ड की अधीनता स्वीकार करने में बाध्य हुए हैं। त्रिपुरा के सामन्त श्रेणी में भुलुआ राज सर्व प्रधान थे, ऐसा ही आख्यात हुआ था। प्राचीन त्रैपुर नरपति गण के अभिषेक काल में ये ही उनके ललाट में राज टीका प्रदान करते थे। त्रिपुरेश्वर के सिंहासन में उपवेशन करने पर भुलुआ पति सर्वप्रथम "नजर" प्रदान करते थे, तत् पश्चात् अन्यान्य सामन्त तथा अमात्य वर्ग नजर दान करने सक्षम होते थे"

कैलाश बाबू की राजमाला, – चतुर्थ भाग, प्रथम् अ, 394 पृष्ठ।

भुलुआ के राजगण, जो त्रिपुरेश्वर के सामन्त में परिगणित थे, वह विषय हम लोग पूर्व ही आलोचना कर चुके हैं, इस स्थल में पुनः आलोचना करने की जरूरत नहीं है, भुलुआ पति

....

(1) **J. Wise - On the Barah Bhuyas of Bengal.**
J.A.S.B. – No. 3, 1874, P.P . 203-205.

तृल – 338
लक्ष्मणमाणिक्य के समय से इस अधीनतापाश को छिन्न करने की चेष्टा शुरू करते है। त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के बाहुबल से अपमानित हुए थे। अमर माणिक्य के परवर्ती काल में भी भुलुआ के राजगण सिर उठा करके बार बार त्रिपुरेश्वर द्वारा अपमानित हुए हैं। अमर माणिक्य के परवर्ती द्वितीय स्थानीय महाराज यशोधर माणिक्य के शासन काल तक भुलुआ राज्य का त्रिपुरा के राजदण्ड के अधीन रहने का प्रमाण मिलता है। इसके बाद मघ तथा मुसलमान गण के सहित हर समय संघर्ष से त्रिपुरेश्वर के अपेक्षाकृत दुर्बल हो जाने पर भुलुआपति ने उनको कर, नजर तथा राज टीका प्रदान के लिए मना किया, अतएव भुलुआ राज्य त्रिपुरा के हस्तच्युत होकर, मुगल गण के अधिनस्थ जमींदारी में परिणत हुए। तब से त्रिपुरेश्वर को राज टीका प्रदान का अधिकार, महाराज द्वारा खत्म कर दिया गया था। राजमाला तृतीय लहर के समकाल में ये राज्य त्रिपुरा के वशीभूत थे। उक्त लहर के समय के मध्य हस्तच्युत हुआ था।

सराइल के अधिपति

ईशा खाँ नामक व्यक्ति सराईल के शासनकर्ता थे। ये बंग के द्वादश भौमिक के अन्तर्भूक्त ईशा खाँ मसनद अली से स्वतन्त्र व्यक्ति थे। उक्त व्यक्ति की तरह इसके भी ''मसनद अली'' उपाधि थी। यह उपाधि त्रिपुरेश्वर से प्राप्त थी। बरदाखात परगना भी इसके शासनसधीन था।

ईशा खाँ के विवरण, पूर्ववर्ती 213–217 तथा 132–134 पृष्ठ में प्रदान किया है, इस स्थल में पुनः उल्लेख नहीं किया गया।

तरप के अधिपति

तरप राज्य के प्रथम राजा आचाकनारायण थे। यह ''नारायण'' उपाधि त्रिपुरा के सामन्त द्योतक थी। ईसवी चतुर्दश शताब्दी के तृतीय पद तक श्रीहट्ट तथा तरप आदि प्रदेश में हिन्दु का राजत्व था, बंगेश्वर द्वितीय सामसउद्दीन द्वारा श्रीहट्ट विजित होकर मुसलमान के हस्तगत हुआ तथा विजेता सेनापति नासिरउद्दीन के हस्त में तरप राज्य का शासन भार अर्पित हुआ। यह प्रदेश मुसलमान के अधिकृत होने पर भी, उसके प्रति त्रिपुरेश्वर गण का प्रभाव विलुप्त नहीं हुआ।

नासिरउद्दीन के अधस्तन पंचम स्थानीय सैयद मूसा(राजमाला के अनुसार मूछे लस्कर) को त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य को, अमर सागर खनन काल में सहायता न करने पर, महाराज अमर ने उसको युद्ध में हरा कर बन्दी किया था। मूछे लस्कर ने त्रिपुरेश्वर के आनुगत्य स्वीकार करके उस यात्रा में परित्राण लाभ किया।

तरप के विवरण पूर्ववर्ती 148–153 पृष्ठ में प्रदान किया गया है, अतः इस स्थल में अधिक आलोचना करना अनावश्यक है।

तृल – 339

गौड या श्रीहट्‌ट

वर्तमान में श्रीहट्‌ट नगर का कुछ अंश लेकर एक राज्य की प्रतिष्ठा हुआ था। बंगाल के सुप्रसिद्ध गौड़ नगर के अनुकरण में श्रीहट्ट में गौड़ नाम दिया जो इस राज्य में स्थापित हुआ है। प्रधानतः श्रीहट्‌ट के उत्तरांश इस राज्य के अन्तर्निविष्ट था।(1) इसका प्रख्यात नाम शासन कर्ता का नाम गौडगोविन्द था। गोविन्द नामक राजा, गौड के राजत्व लाभ करके गौड गोविन्द नाम से ख्यात हुए थे। यह नाम नाना रूप से रूपांतरित हुआ है। राज काम में इसका "गोविन्द देव" नाम व्यवहृत होता था, इसके सम्पादित ताम्र शासन द्वारा यह बात प्रमाणित होता है।

श्रीहट्‌ट का इतिहास प्रणेता सुहृदय श्री युक्त अच्युत चरण चौधरी भक्तितत्वनिधि महाशय कहते हैं–

गोविन्द के पिता का नाम क्या था, जाना नहीं जाता। किम्वदन्ती के मतानुसार वे समुद्र के तनय थे। कथित है कि पूर्वकाल में त्रैपुर राजवंशीय किसी राजा के सौ सौ रानीयां थी। समुद्र देव(वरूण देव) उसमें से किसी एक महिषी के साथ मनुष्यकार में सम्मिलित हुए। उन्ही की कृपा से रानी ने गर्भ धारण किया। + + + इस महिषी के पुत्र ही गोविन्द है।

यह बात समर्थन नहीं की जा सकती। त्रिपुरा के इतिहास आलोचना से जाना जाता है, त्रिपुरेश्वर के महाराज त्रिलोचन ने शिल्प के उन्नति कल्प में, शिल्प कार्य में सुनिपुणा 240 महिषी किये थे, यह कलियुग के प्ररम्भ काल की कथा है। इसके बाद उदयमाणिक्य ने 240 विवाह किए थे। महाराज उदय ने ईसवी सौलह शताब्दी के तृतीय पाद में राजत्व किया था। इन दो जन के अलावा अन्य राजगण के एक से अधिक विवाह कर रहने पर भी "शत शत महिषि" करने के प्रमाण नहीं हैं। गौड गोविन्द या गोविन्द देव ने ईसवी तेरह शताब्दी के अन्त भाग में अथवा चतुर्दश शताब्दी के प्रारम्भ में गौड का राज पाट लाभ किया था। अर्थात वे बहु विवाहकारी त्रिपुरेश्वर उदयमाणिक्य के प्रायः दो शत वर्ष पूर्ववर्ती राजा कह निर्णित हुए हैं। इस रूप अवस्था में गोविन्द, त्रिपुर राजमहिषी का पुत्र कहकर निर्धारण नहीं किया जा सकता।

गौड गोविन्द के पिता का नाम इतिहास में अगोचर नहीं है। इन्होने श्रीहट्‌ट नाथ शिव की सेवा पूजा के लिए ताम्र पत्र द्वारा 375 हल भूमि तथा 296 वास्तु दान किये थे। उक्त ताम्र शासन में उत्कीर्ण विवरण की आलोचना से जाना गया है कि गोविन्द के पिता का नाम नारायण देव, पितामह गोकुल देव तथा प्रपितामह खर बाण देव थे, अर्थात त्रिपुर राज वंश के सहित गोविन्द देव का किसी रूप में संबन्ध

---

(1) **Gaur was the old name of northern Sylhet**
Blochmann's Geography and History of Bengal.

तृल – 340

परिलक्षित नहीं हो रहा है। परन्तु त्रिपुरा के साथ इसका राजनैतिक सम्बन्ध रहने का प्रमाण मिलता है।

स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सिंह महाशय कहते हैं –

प्राचीन काल में श्रीहट्ट तीन सूक्ष्म राज्यों में विभक्त था। –1. गौड या श्रीहट्ट 2. लाउड 3. जयन्तीया पुर। इन तीन राज्यों के मध्य गौड या श्रीहट्ट के अधिपति अधिक बलशाली थे। किन्तु सभी को त्रिपुर राज दण्ड के निकट मस्तक अवनत करना पड़ता था। त्रिपुरेश्वर इन तीन राज्य के अधिपतिगण को अपने को सामंत श्रेणी में स्थान प्रदान करते थे।

कैलाश बाबू के राजमाला– तीसरा भाग, तृतीय अः 287 पृष्ठ।

ये सब सामंत राज्य छोड कर वर्तमान श्रीहट्ट जिला के दक्षिण–पश्चिमांश में, साक्षात संबंध में त्रिपुरा के शासनाधीन तथा पूर्वांश काछार राज्य के अन्तर्भूक्त था। ईसवी चतुर्दश शताब्दी के मध्य भाग में श्रीहट्ट प्रदेश पठान द्वारा विजित होने पर भी(1) दीर्घकाल तक वे शासक–दण्ड परिचाालन में समर्थ नहीं हुए। अतएव जो सब मुसलमान प्रतिनिधि श्रीहट्ट प्रदेश शासन कर रहे थे, उनके कुछ परिमाण में त्रिपुरा के आनुगत्य स्वीकार करने में बाध्य होते थे।

महाराज अमर माणिक्य अमर ने अमर सागर खनन के निमित्त सामन्त राजा तथा जमींदार गणों से कुली माँगे थे। तत्काल में तरप के शासन कर्ता सैयद मूसा(मूछे लस्कर) ने त्रिपुरेश्वर के आदेश अमान्य करके कुली प्रदान न करने के कारण, त्रिपुरेश्वर ने उसके विरूद्ध एक दल सैन्य प्रेरण किया था। सैयद मूसा ने कोई उपाय न देखकर तदानीन्तन श्रीहट्ट के आलिम आदम बादशाह का आश्रय ग्रहण किया। त्रिपुर वाहिनी ने तरप जय करके श्रीहट्ट आक्रमण किया। आदम बादशाह, त्रिपुर सेनानी कुमार राजधर देव द्वारा पराजित तथा धृत होकर उदयपुर पँहुचने के बाद आदम बादशाह ने कर प्रदान करने में सम्मत होकर मुक्ति लाभ किया। तत्पश्चात श्रीहट्ट पुनर्बार त्रिपुरा के सामन्त के मध्य परिगणित हुआ था तथा मुसलमान गण के पुनराधिकार न करने तक इस प्रदेश में त्रिपुरा का करप्रद था। कितना काल यह अवस्था चला था, जानने की सुविधा न रहने पर भी राजमाला तृतीय लहर के समकाल के मध्य वह त्रिपुरा के हस्तच्युत हुआ था। इतिहास के आलोचना में ऐसा आभास मिलता है।

ईटा राज्य के अधिपति

वैदिक यज्ञ कार्य में सुदक्ष निधिपति नामक ब्राह्मण ने त्रिपुरेश्वर महाराज धर्मधर के यज्ञ सम्पादन द्वारा विशेष प्रतिपत्ति लाभ किया था। इसका

---

(1) **Hunter's Statistical Accounts of Assam -Vol II**

इस ग्रंथ में श्रीहट्ट के अंश में लिखा हुआ है– श्रीहट्ट प्रदेश 1384 ईसवी तक मुसलमान द्वारा विजित हुआ था।

तृल – 341

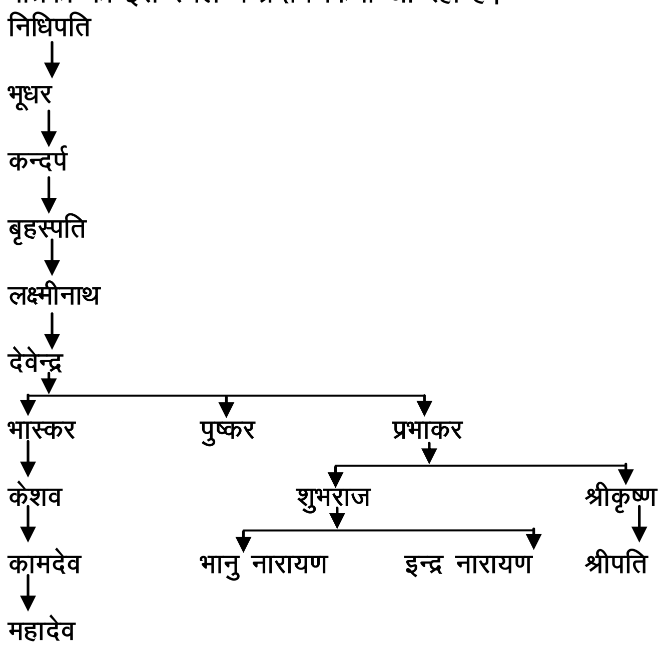
ब्राह्मण प्रभाव दर्शन से धर्मधर विमुग्ध तथा देशस्थ में सभी लोग ही विस्मित हुए थे। मजःफर नामक किसी ग्राम्य कवि ने इस ब्राह्मण के तेज सम्बन्ध में कहा थाः–

"अग्निहोत्री महाशय नाम निधिपति।
मुख द्वारा अग्नि आनि दिये आहुति।। "

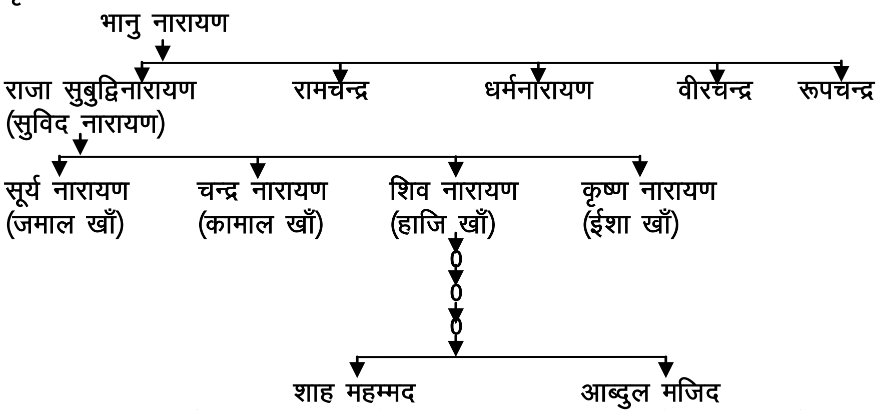
इसका विवरण राजमाला प्रथम लहर में 105–109 पृष्ठ में विवृत हुआ है। त्रिपुरेश्वर से एक विस्तीर्ण भूभाग ब्रह्मोत्रसूत्र से प्राप्त हुआ था। उक्त स्थान पूर्व में "मनुकूल" नाम से प्रसिद्ध था। वर्तमान ईन्दानगर, इन्देश्वर, छयचिरि, भानुगाछ, बरमचाल, चौबालीस, सातगाँव तथा बालिशिरा, ये छह बृहत परगना उक्त मनुकूल प्रदेश के अन्तर्वर्ती थे।

इस सुबृहत भूभाग का लाभ करके निधिपति ने स्वजातीय बहुत व्यक्तियों को पंच खण्ड से लाकर उनके सहित एक साथ निवास किया। तत्काल यह स्थान "इटा" नाम से अभिहित होता है। कथित है, निधिपति अपने वास भवन निर्माणार्थ स्थान निर्धारण करने जाकर, एक स्थान मनोनीत किया था। गहरे जंगलाकीर्ण रहने पर उस स्थान में अग्रसर होने में अक्षम होकर, ईंटे(ढेला) मारकर वह स्थान देखा था, ततपश्चात स्थान का नाम "ईटा" हुआ है। अल्प काल के मध्य ईटा समृद्ध जनपद में परिणित हुए, यह एक छोटे राज्य की संस्थापन की भित्ति हुआ था। निधिपति ने "भूमि उडा–एउलातली", नामक स्थान में अपनी राजधानी स्थापन की।

निधिपति के पूर्व पुरूष का परिचय नहीं मिलता। उसके अधस्तन वंशधर गण के वंश पत्रिका को इस स्थल में प्रदान किया जा रहा है।



तृल– 342



कामदेव के पुत्र महादेव ने पैतृकवास भूमि परित्याग करके स्थानान्तर में गमन किया, उनका वास भूमि ''महादेवी बड कापन'' नाम से विख्यात थी। इसके वंशधर गण ने ''शिकदार'' आख्या लाभ किया था।

प्रभाकर के पुत्र शुभराज पारसी भाषा में विशेष ज्ञानवान, नानाविध गुणशाली थे। उन्होने बहुत जनहित कार्य करके ''खाँ'' उपाधि लाभ किया। उन्होने जिस स्थान में अपना वास भवन निर्माण किये थे, उस स्थान का नाम दिया गया है –''राज खला'' तत प्रतिष्ठित दीर्धिका शुभराज या शुराज खाँ के दिधि के नाम से परिचित हुआ है।

प्रभाकर के अन्य पुत्र श्री कृष्ण के पुत्र का नाम श्रीपति था, इटा के अन्तर्वर्ती ''श्रीपाड़ा'' इसी के नाम के स्मृति रक्षा कर रहे हैं।

शुभ राज के पुत्र भानु नारायण विशेष विक्रमशाली थे। त्रिपुरेश्वर के अधीन सामन्त सरदार, राजा चन्द्र सिंह ने त्रिपुरेश्वर के विरूद्ध में विद्रोह घोषणा करवाई, यही भानु नारायण ने उसको युद्ध में हराकर तथा बन्दी करके त्रिपुरा के दरबार में प्रेरण किया तथा पुरूस्कार स्वरूप त्रिपुरेश्वर से चन्द्र सिंह के अधिकृत भूभाग के कुछ अंश को प्राप्त किया। इस नव–अधिकृत भूखण्ड को भानुनारायण के नामानुसार से ''भानु कच्छ'' या ''भानुगाछ'' (गाछ, पेड को कहते है।) नाम से जाना जाता है। भानुगाछ परगना के अन्तर्गत ''रामेश्वर'' गाँव में वर्तमान काल में चन्द्रसिंह के गढ़ के भग्नावशेष चिन्ह के रुप में विद्यमान हैं।

भानु नारायण ने त्रिपुरेश्वर से ''राजा'' उपाधि लाभ करके ''एवलातली'' के पास पूर्ववर्ती स्थान में नूतन राजधानी प्रतिष्ठा करके, उसका नाम 'राजनगर'' रखा। इनके भ्राता इन्द्र नारायण पूर्व वासस्थान में ही थे, आज भी उनके वंशधर गण उस स्थान में ही वास करते हैं। भानु नारायण ने ही इटा अधिपतिगणों के मध्य प्रथम ''राजा'' उपाधि लाभ किया था।

तृल– 343

भानु नारायण के बाद सुबुद्धि नारायण या सुविद नारायण ने राजत्व प्राप्त किया था। ये त्रिपुरेश्वर के आश्रित होने पर भी परोक्ष रूप से दिल्लीश्वर का आनुगत्य स्वीकार करने में बाध्य होते थे। परन्तु तत्काल में भी त्रिपुरेश्वर के आश्रित हैं, ऐसा कहकर ही वह विशेष प्रभावशाली थे।

ईटा के पूर्व दिग्वर्ती ''बडुआ पहाड'' के प्रधान श्रृंग पागडिया शिखर पर सुविद नारायण का सुदृढ गढ़ था। उनका प्रधान दुर्ग पर्वतपुर में था। इस दुर्ग में बहुत सुशिक्षित सैन्य रखा जाता था।

सुविद नारायण धर्म परायण तथा जन हितैषी थे। ये समाज संस्कार कार्य में हस्तक्षेप करने पर, तदुपलक्ष में मतपरिवर्तन के फल से बहुत से ब्राह्मण ढाका, दक्षिण आदि स्थान से भागे थे। इसके बाद राजा ने नाना स्थान से बहु संख्यक ब्राह्मण लाकर अपने राज्य में संस्थापित किये थे।

राजा सुविद नारायण के महिषी का नाम कमला देवी था। इनके चार पुत्र तथा तीन कन्यायें थी। ज्येष्ठा कन्या खंज(लंगड़ी) थी। कात्यायन गोत्रीय गोविन्द चक्रवर्ती के पुत्र रघुपती को वह कन्या सम्प्रदान करके, राजा सुविद नारायण ने उसको पंच गाँव, भूमिउड़ा, श्रीपाड़ा, सुरानन्द तथा पश्चिम भाग, ये पाँच गाँव दान किये।

मुसलमान द्वारा नियोजित युद्ध में, श्रीहट्ट के दीवान के सहित राजा सुविद नारायण के द्वारा विरोध उपस्थित करने व उस कारण से, दिल्लीश्वर के आदेशानुसार पठान वंश संभूत खोयाज उस्मान ने ईटा राज्य पर आक्रमण किया। इस युद्ध के पांचवे दिन में राजा सुविद नारायण समरशायी हुए। राज महिषी ने पति के चिता में आरोहण करके तथा कनिष्ठा कन्या के विषपान द्वारा जाति कुल रक्षा करने पर, राज भ्रातागणों ने नाना तरफ पलायन किया तथा राज पुत्रगण पकड़े गये व दिल्ली में भेज दिया। दिल्लीश्वर के आदेशानुसार इस्लाम धर्म में दीक्षित होकर पैतृक सम्पत्ति को प्राप्त किया था।

इस घटना से ईटा राज्य सम्यक रूप में मुसलमान के हस्तगत होने पर शीघ्र वे निर्विवाद से शासन दण्ड परिचालन करने में समर्थ नहीं हुए। फिर भी तत्काल में उस अंचल के उपर त्रिपुरा का प्रभाव भी पूर्ण मात्रा में विलुप्त नहीं हुआ था। मुसलमान लोगों के विद्रोह दमन के कारण अनेक काल परेशान रहना पडा। अतएव खोआजउस्मान नामक एक व्यक्ति विद्रोही हुए। कतिपय जमींदारों के उसके साथ योगदान करने से, मुसलमान गण के पक्ष में विषम संकटापन्न अवस्था पैदा हो गई थी। श्रीहट्ट के शासन कर्ता लोदी खाँ ने उस्मान को मारकर यह विद्रोह दमन किया था। यह 1548 ईसवी अब्द की घटना है।(1) इस समय से ही ईटा राज्य के प्रति त्रिपुरा का प्रभाव विलुप्त हुआ है। इस रूप का निर्धारण किया जा सकता है। अर्थात राजमाला के तृतीय

---

(1) श्रीहट्ट दपर्ण, –मौलवी मौहम्मद अहमद प्रणीत।

तृल– 344
लहर के अल्पकाल पूर्व या तृतीय लहर के प्रारम्भ काल तक उस प्रदेश के उपर त्रिपुरा का प्रधान्य रहना परिलक्षित हो रहा है।

त्रिपुरा के और सामंत राजा थे। जयंतिया, बाणियाचंग, लाउड़, सिंहेरगाँव(सिंह का गाँव) आदि प्रदेश के अधिपत्य में थे। राजमाला तृतीय लहर के पूर्ववर्ती काल में तिरोहित होने पर, इस स्थल में समस्त प्रदेश का नामोल्लेख नहीं किया गया।

इन्हे छोड़ कर कुकि तथा लुसाई राजगण, रियांग, त्रिपुरा, हालाम आदि पार्वत्य सरदार गण, त्रिपुरा शासनकाल में, त्रिपुरा के सामंत श्रेणी में परिगणित होते रहे हैं। उनका विवरण यथा स्थान उल्लेख होगा।

———

राजमाला तृतीय लहर में उल्लेखित व्यक्ति गण
नाम तथा संक्षिप्त परिचय
(वर्णमालानुक्रमिक)

अमर दुलर्भ नारायण :–(2 पृष्ठ, 7 पंक्ति) ये महाराज अमर माणिक्य के तृतीय पुत्र थे। प्रथम उम्र में पिता के सैन्यपत्य पद में नियुक्त थे, इसके बाहुबल से अनेक देश त्रिपुर राज्य के अन्तर्निविष्ट होने का निदर्शन मिलता है। इनके शेष जीवन का इतिहास नितान्त ही दुष्प्राप्त है।

अमर माणिक्य :–(2 पृष्ठ, 3 पंक्ति) ये त्रिपुर सिंहासन के 159 संख्यक भूपति थे। राजमाला तृतीय को इसका विवरण लेकर आरंभ किया गया है। यह लहर आलोचना करने पर महाराज अमर के शौर्य, वीर तथा महत्व का परिचय मिलेगा। इन्होने राजमाला द्वितीय लहर रचना कराकर, जो स्मृति चिन्ह की रक्षा की है, वह अविनश्वर तथा अतुलनीय कीर्ति है।

अमरावती महादेवी :–(2 पृष्ठ, 4 पंक्ति) ये महाराजा अमर माणिक्य की मुख्य महिषी है, त्रिपुर राज्य में राजा तथा रानी के एक नाम रखने का निदर्शन इस समय मिलता है। महाराज अमर माणिक्य के मनु नदी के तीर स्थित आवास में गोलोक प्राप्त होने कारण, महारानी पति के साथ सहमृता हुई थी।

अर्जुन नारायण :–(5 पृष्ठ, 7 पंक्ति) ये अमर माणिक्य के सेनाध्यक्ष थे। महाराज अमर के आदेशानुसार, उनके ज्येष्ठ कुमार राजधर नारायण ने तरप तथा श्रीहट्ट विजय किया था। इस अभियान में अर्जुन नारायण का

तृल– 345

ससैन्य उसके सहयात्री होने का निदर्शन मिलता है। वर्तमान काल में अर्जुन नारायण के वंशधर का किसी रूप में संधान नहीं मिलता।

आगुयान नारायण :–(44 पृष्ठ, 5 पंक्ति) ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनाध्यक्ष थे। महाराज अमर के राज्य भ्रष्ट होकर मनु नदी किनारे गमन काल में राजा के सहचर थे।

आदम बादशाह :–(38 पृष्ठ, 23 पंक्ति) ये आराकान राज्य के अधीन में राम्बू तथा छयकड़िया के शासन कर्ता थे। आराकान राजा के साथ उनका झगड़ा होने के कारण, इन्होने राज्य परित्याग करके, त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य का आश्रय ग्रहण किया। आराकान पति ने, आदम बादशाह को उसके दरबार में भेज देने के निमित्त त्रिपुरेश्वर को अनुरोध किया, महाराज अमर आश्रित व्यक्ति को शत्रु हाथ में अर्पण करने में असम्मत हुए। पूववर्ती 208 पृष्ठ में इसका विवरण दिया गया है।

आशावंत नारायण :–(5 पृष्ठ, 17 पंक्ति) ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति हैं। तरप तथा श्रीहट्ट के युद्ध में ये प्रधान सेनापति तथा राजधर देव के सह यात्री होकर जय लाभ किया था।

ईस्पिन्दर :–(59 पृष्ठ, 15 पंक्ति) ये दिल्लीश्वर शाह सलीम के उमराह तथा सेनाध्यक्ष थे। बादशाह के आदेशानुसार से ये बंगाल के शासन कर्ता नवाब फतेह जंग के तथा उमराह नूरउल्ला के सहयोग से त्रिपुरा आक्रमण तथा जय लाभ करके, महाराज यशोधर माणिक्य को बन्दी किया था। सम्राट दरबार में महाराज ने मुक्ति लाभ करने पर वे राज्य में न लौट करके तीर्थ यात्रा किया तथा कुछ काल बाद उनका श्रीवृन्दावनप्राप्ति(मृत) हुआ।

ईशा खाँ :–(3 पृष्ठ, 19 पंक्ति) ये सराईल के शासन कर्ता तथा त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के सामंत के मध्य परिगणित थे। त्रिपुराधिपति से ''मसनद अली'' उपाधि लाभ करके ये विशेष सम्मानित हुए थे। इसका विवरण पूर्ववर्ती 114–117 पृष्ठ में प्रदान किया गया है।

उड़िया राजा :–(29 पृष्ठ, 26 पंक्ति) उड़ीसा से समागत किसी व्यक्ति ने आराकान राज के अधीन में देयांग(Dianga) में एक राज्य स्थापन किया था। राजा उड़ीसावासी थे, इसलिए उनका ''उड़िया राजा'' की ख्याति था। इसका प्रकृत नाम जानने का उपाय नहीं है। ये आराकान के राजा मांगफूला तथा त्रिपुरेश्वर के अमर माणिक्य समसामायिक थे। त्रिपुरा तथा आराकान के मध्य परस्पर युद्ध काल में उड़िया राजा को आराकान के दौत्य कार्य में लिप्त रहते देखा गया है।

तृल– 346

ऐराजित नारायण :–(अरिजीत्) (7 पृष्ठ, 17 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के शासन काल में युद्ध के हस्ती चालक थे। श्रीहट्ट के युद्ध में इन्होने अशेष वीरत्व तथा विश्वस्तता प्रदर्शन पूर्वक पुरूस्कार लाभ किये थे।

कचु फा :–(21 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। ये त्रिपुरा के 148 संख्यक राजा महामाणिक्य के पौत्र तथा 162 संख्यक राजा कल्याणमाणिक्य के पिता थे। कचु फा–इनका अन्य नाम पुरन्दर है। इन्होने तुलसी घाट में परलोक गमन किया।(पूर्ववर्ती 218– 129 पृष्ठ दृष्टब्य)।

कन्दर्प राय :–(13 पृष्ठ, 4 पंक्ति)। ये बाकला व चन्द्रद्वीप राज्य के अधिपति थे। पूर्ववर्ती 97–104 पृष्ठ में यह विवरण मिलेगा।

कल्याण :–(19 पृष्ठ, 4 पंक्ति)। इन्होने महाराज महामाणिक्य के वंश में जन्म ग्रहण किया था, पिता का नाम कचु फा या पुरन्दर था। इनके मातामह रण दुर्ल्लभ नारायण कैलारगढ़ में थानादार पद में नियुक्त थे। कल्याण का उस स्थान में मातामह गृह में जन्म हुआ। इनके जन्म पत्रिका का फल इस लहर के 19 पृष्ठ में विवृत हुआ है। ये शैशव से ही शान्त शिष्ट तथा अन्यान्य बालको की अपेक्षा स्वतन्त्र प्रकृति विशिष्ट थे। यशोधर माणिक्य के राजत्व काल में ये सेनापति थे। राजा के मृत्यु के बाद राजत्व लाभ करके ''कल्याणमाणिक्य'' नाम से अभिहित हुए।

कल्याणमाणिक्यः–(65 पृष्ठ, 11 पंक्ति)। पूर्वोक्त व्यक्ति राजा होकर ''कल्याणमाणिक्य'' नाम ग्रहण किया था।

कामोदकावः–(44 पृष्ठ, 27 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के पौत्र तथा उनके कनिष्ठ कुमार युझार सिंह के पुत्र थे। इनके पिता चट्ट गाँव में आराकान राज के सहित युद्ध करके निहत होने पर, ये पितामाह द्वारा सयत्न प्रतिपालित हो रहे थे। इसके परवर्ती जीवन की घटना जानने का उपाय नहीं है।

कूड़ामघि :–(42 पृष्ठ, 4 पंक्ति)। ये आराकान राजा सेकेन्दर शाह के सैनिक विभाग में सेनापत्य पद में नियुक्त थे। महाराज अमर माणिक्य को युद्ध में पराजित करके, मघगणों के राजधानी उदयपुर पर अधिकार करने के बाद, इनको वहां के सेना निवास का दायित्व प्रदान कर आराकान राजा स्वराज्य को प्रस्थान कर गये थे।

गजझम्प नारायण :–(5 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। तरप तथा श्रीहट्ट के युद्ध में इनके उपस्थित रहने का निदर्शन राजमाला में मिलता है। ये सेनापति वीरझम्प नारायण के पुत्र थे।

तृल–347

गजसिंह नारायण :–(5 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। ये भी अमर माणिक्य के सेनाध्यक्ष थे। कुमार राजधर नारायण के सहित इनके तरप तथा श्रीहट्ट के युद्ध में उपस्थित रहने का प्रमाण मिलता है।

गन्धर्व नारायण :–(58 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। राजमाला के मतानुसार ये भुलुआ के राजा थे। इस नाम से जो गलत लिखा गया है, पूर्ववर्ती ''भुलुआ'' शीर्षक आख्यान आलोचना में वह जाना जायेगा।

गरूड़ नारायण :–(6 पृष्ठ, 1 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के नामी सेनापति थे। गरूड़ व्यूह रचना में विशेष पारदर्शी/पारगंत थे। इसलिए इन्होने ''गरूड़ नारायण'' उपाधि लाभ किया। इस उपाधि द्वारा ही ये परिचित थे। नामोल्लेख की जरूरत नहीं होती थी। राजमाला में इनका नामोल्लेख नहीं किया गया है। श्रीहट्ट अभियान काल में इन्होने गरूड़ व्यूह के सहायता से सैन्य लोगों को बिना झंझट के समर क्षेत्र में भेजा था।

गोविन्द नारायण :–(69 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। ये महाराज राजधर माणिक्य के ज्येष्ठ पुत्र थे। ये पिता के सेनापत्य पद में नियुक्त रहकर विशेष कृतीत्व का प्रदर्शन किया था। पिता के परलोक गमन के बाद राज्य लाभ किया।

गोविन्द माणिक्य :–(1 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। पूर्वोक्त गोविन्द नारायण राजत्व ग्रहण करके इस नाम से अभिहित हुए थे। ये त्रिपुर सिंहासन के 163 संख्यक भूपति थे। एक साल राजत्व करने के पश्चात् महाराज गोविन्द ने, उनके सौतेला भ्राता नक्षत्र राय(छत्र माणिक्य) द्वारा खदेड़ने पर कुछ काल चट्ट गाँव तथा आराकान आदि प्रदेश में भ्रमण किया था। छत्र माणिक्य के परलोक गमन के बाद पुनर्बार राज्य में आकर सिंहासन ग्रहण किया। राजमाला चतुर्थ लहर में इसका विवरण मिलेगा। इनके आदेशानुसार राजमाला तृतीय लहर रचा गया।

चन्द्रदर्प नारायण :–(4 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के महान सेनापति थे। तरप तथा श्रीहट्ट युद्ध में ये उपस्थित थे। रसांग युद्ध में भी इनके योगदान का निदर्शन मिलता है।

चन्द्र सिंह नारायण :–(4 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। तरप तथा श्रीहट्ट युद्ध में ये सेना नायक युद्ध क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे। रसांग के युद्ध में भी इन्होने योगदान किया था।

चन्द्रहास नारायण :–(5 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। इन्होने महाराज अमर माणिक्य के पक्ष में श्रीहट्ट अभियान में योगदान किया था। इनके वीरत्व की विशेष ख्याति थी।

तूल–348

चाँद राय :–(3 पृष्ठ, 11 पंक्ति)। इन्होने विक्रमपुर के ख्यात भूमि अधिकारी थे, द्वादस भौमिक के मध्य विशेष प्रधान्य लाभ किया था। इनके राजधानी का नाम श्रीपुर था। पूर्ववर्ती 90–93 पृष्ठ में इसका स्थूल विवरण प्रदान किया गया है।

छत्रजित नाजिर :–(4 पृष्ठ, 14 पंक्ति)। ये अमर माणिक्य के साले तथा सेनापति थे। भुलुआ युद्ध में तथा श्रीहट्ट अभियान में इनके अशेष वीरत्व प्रकाश का परिचय मिलता है। रसांग के युद्ध में भी ये उपस्थित थे। छत्रजित, राजा के एकान्त हिताकांक्षी थे। महाराज अमर, मघ द्वारा पराजित होकर, राजधानी परित्याग करने के काल में छत्रजित ने उसके सहयात्री होकर विस्तर कष्ट भोग किये थे। वे राजा से अलग होकर एक खण्ड राज्य के प्रतिष्ठा के लिए कोशिश में हैं, इसी मिथ्या अपवाद होने के कारण, राजा ने उस बात पर विश्वास करके, छत्रजित को मार डाला था। राजा द्वारा दौत्य कार्य में नियोजित व्यक्ति उस असद् अभिप्राय में अथवा असावधान महाराज को मिथ्या संदेश देने के कारण ही, यह शोचनीय घटना संगठित हुआ था।

छोट राय :–(38 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। ये सेनापति चन्द्र सिंह नारायण के पुत्र तथा सेनाध्यक्ष थे। चट्ट गाँव में आराकान राज्य के सहित महाराज अमर माणिक्य के साथ जो युद्ध हुआ था, उस युद्ध में बहु संख्यक मघ सैन्य निहत करके ये समर शैय्या पर शायित हुए।

जगन्नाथ नारायण :–(77 पृष्ठ, 11 पंक्ति)। ये महाराज कल्याणमाणिक्य पुत्र तथा गोविन्द माणिक्य के कनिष्ठ भ्राता थे। तिष्णा परगना में अवस्थित चट्ट गाँव गमन के रास्ते के पार्श्ववर्ती सुविख्यात जगन्नाथ दीधि और उदयपुर स्थित जगन्नाथ दीधि या पुरातन दिधि, इसका समुज्जवल कीर्ति है। राजमाला चतुर्थ लहर में इसका विस्तार पूर्ण विवरण मिलेगा।

जय ध्वज :–(33 पृष्ठ, 18 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। आराकान युद्ध में कुमार राजधर नारायण के सहयात्री होकर इन्होने विशेष विक्रम प्रकाश तथा आराकान का कुछ अंश अधिकार किया था।

जय माणिक्य :–(1 पृष्ठ, 12 पंक्ति)। इनका अन्य नाम था – लोकतर फा। ये महाराज उदय माणिक्य के पुत्र थे। सुवा गोपी प्रसाद ने अपने दामाद अनन्त माणिक्य को मारकर सिंहासन पर अधिकार किया। उसके परलोक गमन के बाद उसके पुत्र ने ''जय माणिक्य'' नाम ग्रहण पूर्वक सिंहासन आरोहण किया। कुछ काल सेनापति ''अमर देव'' बाद में ''अमर माणिक्य'' द्वारा ये निहत हुए थे। इसका विवरण राजमाला द्वितीय लहर के 72 तथा 254 पृष्ठ में मिलता है।

तृल–349

ताज खाँ :–(15 पृष्ठ, 23 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के राजत्व काल में अश्वारोही पठान सैन्य के अधिनायक थे।

त्रीविक्रम नारायण :–(5 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। तरप तथा श्रीहट्ट युद्ध में ये प्रधान सेनापति कुमार राजधर नारायण के सहयात्री हुए थे। श्रम सहिष्णुता के लिए इनकी विशेष ख्याति थी।

दयावन्त नारायण :–(10 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के दामाद तथा पार्श्वचर थे। श्रीहट्ट के पठान शासनकर्ता फतेह खाँ युद्ध में हार कर तथा अवरूद्ध होकर उदयपुर पँहुचने पर, महाराज अमर ने उसको ससम्मान से ग्रहण करके, दरबार में दयावन्त के पार्श्व में आसन प्रदान किया था।

दुग्धमान :–(21 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। महाराज कल्याणमाणिक्य ने शैशव काल में उसके मातामह द्वारा यह नाम लाभ किया था।

दुर्ल्लभ राय :–(19 पृष्ठ, 3 पंक्ति)। ये पूर्वोक्त कचु फा या पुरन्दर के पुत्र तथा महाराज कल्याणमाणिक्य भ्राता थे। ये शैशव में मातामह दुर्ल्लभ नारायण द्वारा ''हंसमान'' नाम से अभिहित हुए थे।

दुर्ल्लभ नारायण :–(13 पृष्ठ, 14 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनाध्यक्ष थे। महाराज अमर माणिक्य के द्वारा भुलुया विजय के बाद अपने पुत्र राज दुर्ल्लभ नारायण के साथ इस सेनापति को भुलुया सैन्य आवास में नियुक्त रखा था। बाद में कैलारगढ दुर्ग इनके हाथ में अर्पित हुआ। ये महाराज कल्याण माणिक्य के मातामह थे।

दुर्ल्लभ नारायण सुर :–(11 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। राजमाला रचियता के मत से, भुलुआ के राजा थे। यह नाम जो प्रमाद पूर्ण था, वह पूर्व में ही कहा गया है। पूर्ववर्ती 123 तथा 141 पृष्ठ में लिखित विवरण दृष्टब्य है। इनका प्रकृत नाम लक्ष्मणमाणिक्य है।

नूर उल्ला :–(59 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। ये भारत सम्राट शाह सलीम के उमराह तथा सेनापति थे। महाराज यशोधर माणिक्य के शासन काल में इन्होने फते जंग नवाब की सहायता से, अन्यतर उमराह ईस्पिन्दर के सहयोग से त्रिपुरा पर आक्रमण तथा महाराज को अवरूद्ध किया। ये मिर्जा नूर उल्ला नाम से परिचित थे।

नौगतर :–(68 पृष्ठ, 18 पंक्ति)। ये महाराज कल्याणमाणिक्य के मध्यमा महिषी के गर्भजात कुमार थे। नामान्तर नक्षत्र राय। बाद में छत्र माणिक्य नाम ग्रहण कर राजा हुए थे।

तृल–350

पाठान राय :–(26 पृष्ठ, 13 पंक्ति) ये कल्याणमाणिक्य के मामा के भांजी के स्वामी थे। कल्याणदेव के मामा गामारिया किला के लस्कर पद में नियुक्त थे, पठान राय ससुर के आश्रय में उस स्थान में वास करते थे।

प्रताप नारायण :–(40 पृष्ठ, 3 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेना नायक थे। आराकान राज्य के विरूद्ध में चट्ट गाँव के युद्ध में ये उपस्थित थे। श्रीहट्ट के युद्ध में भी इसको समर क्षेत्र में देखा गया है। इस स्थल में ये ''प्रताप सिंह नारायण'' नाम से अभिहित हुए हैं।(पूर्ववर्ती 5 पृष्ठ, 11 पंक्ति दृष्टब्य) रसांग के युद्ध में भी ये थे।

फते खाँ :–(7 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। महाराज अमर माणिक्य के समकाल में ये श्रीहट्ट के पठान शासन कर्ता थे। इनका प्रकृत नाम आदम बादशाह था। राजमालाकार ने इसको फते खाँ नाम से अभिहित किया हैं। इनका विवरण पूर्ववर्ती 153–154 पृष्ठ में मिलेगा।

फते जंग नवाब :–(59 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। इनका प्रकृत नाम नवाब इब्राहिम खाँ था। ये बंगाल के शासन कर्ता होकर, ढाका राजधानी में अवस्थान कर रहे थे। भारत सम्राट शाह सलीम के(जहाँगीर) अनुमत्यानुसार, इन्होने ईस्पिन्दर तथा नूर उल्ला नामक दिल्ली के दो उमराह की सहायता से, त्रिपुर यशोधर माणिक्य पर आक्रमण तथा युद्ध में पराभूत करके बन्दी किया था। इस युद्ध में ये उपदेष्टा तथा सहायककारी थे। स्वयं युद्ध क्षेत्र में गमन नहीं किया। पूर्वोक्त उमराहद्वय के द्वारा त्रिपुरा जय हुआ है। सम्राट दरबार से त्रिपुरेश्वर के मुक्ति लाभ तथा राज्य पुनः प्राप्त करके भी तद्वधि राज्य भोग न करके, तीर्थाश्रमी हुए थे।

बाज खाँ :–(15 पृष्ठ, 23 पंक्ति)। ये पठान जातीय लोग हैं। महाराज अमर माणिक्य के अश्वारोही दल के अन्यतर अध्यक्ष थे।

विजय माणिक्य :–(12 पृष्ठ, 1 पंक्ति)। राजमाला द्वितीय लहर में इनका विवरण विवृत हुआ है। इस स्थल में पुनः आलोचना निष्प्रयोजन है।

बिरिंचि नारायण :–(50 पृष्ठ, 17 पंक्ति)। ये महाराज राजधर माणिक्य के समय में राज पुरोहित थे। महाराज प्रतिदिन पंच पात्र अन्न दान करते थे। उनके एक पात्र बिरिंचि नारायण को प्राप्त होते थे।

वीरझम्प नारायण :–(5 पृष्ठ, 4 पंक्ति)। तरप तथा श्रीहट्ट के युद्ध में इनकी सेनापति के रूप में उपस्थिती मिलती है। ये तथा इनके पुत्र गजझम्प नारायण महाराज अमर माणिक्य के सेनाध्यक्ष थे। वीरझम्प, केशरी सदृश विक्रमाशाली थे।

तृल–351

वीर राय :–(19 पृष्ठ, 1 पंक्ति)। महामाणिक्य के पुत्र गगन फा के वंशधर, कचु फा के पुत्र थे। कल्याण माणिक्य के वैमात्रेय भ्राता कहकर जाना जाता है।(पूर्ववर्ती 219 पृष्ठ दृष्टब्य)।

वीर सिंह नारायण :–(5 पृष्ठ, 17 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। तरप तथा श्रीहट्ट अभियान में ये त्रिपुर वाहिनी के मध्य थे। इनके समर निपुण रहने का परिचय मिलता है।

मुछे लस्कर :–(4 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। इनका प्रकृत नाम सैयद मूसा, ये तरप के शासन कर्ता थे। पूर्ववर्ती 151–152 पृष्ठ में इसका विवरण मिलेगा।

यश रानी :–(62 पृष्ठ, 17 पंक्ति)। महाराज यशोधर माणिक्य की महारानी थी। मुसलमान द्वारा पति के बन्दी के समय में वह साथ में थी एवं उनके साथ तीर्थाश्रम में गयी थी

यशोधर माणिक्य :–(57 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। ये त्रिपुर सिंहासन के 161 संख्यक भूपति है। इस लहर में 57 तथा 213 पृष्ठ में इसका विवरण प्रदान किया गया है।

यादव :–(68 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। ये महाराज कल्याणमाणिक्य के कनिष्ठा रानी के गर्भजात कुमार थे।

युझार मा :–(19 पृष्ठ, 2 पंक्ति)। ये महामाणिक्य वंश उद्भव कचु फा की कन्या थी।(पूर्ववर्ती 219 पृष्ठ दृष्टब्य)।

युझार सिंह :–(2 पृष्ठ, 7 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के कनिष्ठ पुत्र तथा सेनाध्यक्ष थे। इनका स्वभाव नितान्त उग्र था तथा इस चरित्र के लिए अनेक समय अनिष्ट हुआ था। आराकान राज के सहित चट्ट गाँव के युद्ध काल के समय शत्रु पक्ष के प्रदत्त उपढ़ौकन गज दन्त निर्मित मुकुट को लेकर भ्रातागण के सहित उनका झगड़ा हुआ था। इस युद्ध में ये अपने हस्ती के पदाधात से मारे गये। पूर्ववर्ती 209 पृष्ठ में इसका विवरण दृष्टब्य है।

रणगिरि नारायण :–(5 पृष्ठ, 1 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। ये अशेष प्रतापशाली योद्धा थे, कहकर परिचय मिला है। श्रीहट्ट अभियान में त्रिपुर वाहिनी में योगदान किया था।

रणजीत नारायण :–(68 पृष्ठ, 28 पंक्ति)। ये महाराज यशोधर माणिक्य के सेनापति थे। मुगल वाहिनी का उदयपुर राजधानी अधिकार करके महाराज को अवरूद्ध करने के बाद ढाई वर्ष काल त्रिपुर राज्य मुगल के कर कवलित

तृल–352

अवस्था में था। वे शासन श्रृंखला के प्रयासी न होकर, केवल लून्तन तथा अत्याचार से राज्य को तहस नहस कर रहे थे। इस सुयोग से सेनापति रणजीत ने आचरंग जाकर एक खण्ड राज्य की प्रतिष्ठा किया। उक्त स्थान वर्तमान काल में पार्वत्य चट्ट गाँव के अन्तर्निविष्ट हुआ है। ये जीवित काल तक उस स्थान में राजत्व करके, अपने पुत्र लक्ष्मी नारायण को उत्तराधिकारी रखकर परलोक गमन कर गये।

रण भीम नारायण :–(5 पृष्ठ, 2 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। इसके वीरत्व से शत्रु पक्ष में दुःख उपस्थित होता था। श्रीहट्ट अभियान की तालिका में इनका नाम मिलता है।

रणयुझार नारायण :–(5 पृष्ठ, 3 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। राजमाला कहता हैं, ''रण युझार नारायण रण में महावीर'' ये बात ही सेनापति के वीरत्व का परिचायक है। उन्होने श्रीहट्ट अभियान में योगदान किया था।

रण सिंह नारायण :–(5 पृष्ठ, 16 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के सेनाध्यक्ष थे। श्रीहट्ट के युद्ध में इनकी उपस्थित परिलक्षिति होता है।

राज दुर्ल्लभ नारायण :–(2 पृष्ठ, 6 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के ज्येष्ठ पुत्र तथा सेनाध्यक्ष थे। महाराज अमर ने भुलुआ विजय करके इस पुत्र को उस जगह के सेना निवास का भार अर्पण किया था। कुछ काल बाद भुलुआ में लू लगने से वे पीड़ित हो पड़े, उस पीड़ा से कुमार मृत्यु मुख में पतित हुए थे।

राजधर नारायण :–(2 पृष्ठ, 6 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के द्वितीय पुत्र थे। ज्येष्ठ सहोदर राज दुर्ल्लभ के परलोक गमन के बाद, ये पिता द्वारा युवराज में अभिषिक्त हुए, बाद में ''राजधर माणिक्य'' नाम से त्रिपुर राज्य के अधीश्वर हुए थे। ये पिता के अधीनता में प्रतापशाली प्रधान सेना नायक थे। इसके बाहुबल से, मघ तथा मुसलमान गण सर्वदा संत्रस्त रहते थे। वे भुलुआ, तरप तथा श्रीहट्ट विजेता थे। आराकान राज्य के कुछ अंश इनके शौर्य बल से अधिकृत हुए थे। पूर्ववर्ती 49, 212 पृष्ठ में इनके राजत्व काल का विवरण मिलेगा।

राजबल्लभ :–(68 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। ये महाराज कल्याणमाणिक्य के कनिष्ठा महिषी के गर्भजात कुमार थे।

राम माणिक्य :–(1 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। ये महाराज गोविन्द माणिक्य के पुत्र तथा त्रिपुर सिंहासन के 165 संख्यक नृपति थे। इनके आदेश से राजमाला के

तृल–353

तृतीय लहर(आलोच्य खण्ड) रचित हुआ है। इस महाराज के विस्तृत विवरण राजमाला के चतुर्थ लहर में सन्निवेशित होगा।

लक्ष्मी नारायण :–(69 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। ये सेनापति रणजीत नारायण के पुत्र थे। रणजीत आचरंग में नवराज्य की प्रतिष्ठा करके परलोक प्राप्त होने पर, लक्ष्मी नारायण उस राज्य के अधिकारी हुए थे। महामारी के भय से मुगल वाहिनी के उदयपुर परित्याग करके चले जाने के बाद, महाराज कल्याणमाणिक्य के राजत्व लाभ करते ही, आचरंग में नूतन राज्य स्थापन का सन्देश मिला। कल्याणमाणिक्य ने उस जगह के राजा लक्ष्मी नारायण के विरूद्ध में अपने ज्येष्ठ पुत्र तथा सेनापति गोविन्द नारायण को ससैन्य प्रेरण किया। गोविन्द नारायण ने आचरंग जय करके तथापि सेना निवास स्थापन कर, लक्ष्मी नारायण को बन्दी बनाकर उदयपुर लाये थे। महाराज कल्याण ने इसको राज पुत्र की तरह सम्मान से सुख स्वच्छन्द दे रखे थे। राजमाला प्रथम लहर के 239 पृष्ठ में इस विषय में विवरण सन्निविष्ट हुआ है।

शत्रुमर्दन नारायण :–(5 पृष्ठ, 12 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। ये विक्रम में केशरी तुल्य वीर थे। श्रीहट्ट अभियान में शत्रुमर्दन योगदान किया था।

समर प्रताप नारायण :–(4 पृष्ठ, 16 पंक्ति)। अमर माणिक्य के सेनापति गण के मध्य समर प्रताप अन्यतम थे। तलवार युद्ध में इसका विशेष कृतित्व था। तरप तथा श्रीहट्ट के संग्राम में ये उपस्थित थे।

समर वीर नारायण :–(5 पृष्ठ, 18 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के ''अपार प्रतापशाली'' सेना नायक थे। तरप तथा श्रीहट्ट अभियान काल में ये कुमार राजधर नारायण के सहयात्री हुए थे।

समर भीम :–(4 पृष्ठ, 14 पंक्ति)। श्रीहट्ट अभियान में नियोजित सेनाध्यक्ष गण के मध्य ये भी एक जन थे। राजमाला में इसका नाम महाराज अमर माणिक्य के श्यालक(साला) तथा सेना नायक – छत्रजीत् नाजिर के साथ उल्लेख किया गया है। यह उसके प्राधान्य की निदर्शन कहा जा सकता है।

शाह सलिम :–(59 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। यह सम्राट जहाँगीर के नामान्तर है। सम्राज्य प्राप्त करने के बाद, त्रिपुरा के हस्ती वैभव के संदेश से लुब्ध होकर इन्होने उक्त राज्य पर आक्रमण तथा जय लाभ किया था। उस समय महाराज यशोधर माणिक्य त्रिपुर सिंहासन पर अधिष्ठित थे। इस विषय में विवरण पूर्ववर्ती 214 पृष्ठ में मिलेगा।

सिद्धांतवागीश :–(1 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। ये महाराज रामदेव माणिक्य के पूर्व काल से द्वारपंडित पद में नियुक्त थे। उक्त महाराज

तृल–354

के आज्ञानुसार से सिद्धांतवागीश के तृतीय लहर(आलोच्य खण्ड) की रचना किया हैं। इनका नाम था गंगाधर सिद्धांतवागीश। पूर्ववर्ती 83–86 पृष्ठ में इसका विवरण प्रदान किया गया है।

सिंह सरब नारायण :–(12 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। सरब सिंह नारायण इसका नाम था। ये महाराज अमर माणिक्य के प्रधान उजीर पद में नियुक्त थे। महाराज के भुलुआ अभियान काल में ये भी सहयात्री हुए थे।

सुनामा :–(26 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। ये गामारिया किला के लस्कर के(कल्याणमाणिक्य के मातुल) कन्या, तथा पठान राय की स्त्री थी। इसके अतिरिक्त परिचय मिलने का उपाय नहीं है।

सुप्रताप नारायण :–(5 पृष्ठ, 14 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनाध्यक्ष थे। ये सर्वदा वीर दर्प में उन्मत्त रहते थे। श्रीहट्ट के अभियान में इनके योगदान करने का प्रमाण मिलता है।

सुबुद्धि नारायण :–(3 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। इनको "विश्वास" उपाधि था। ये महाराज अमर माणिक्य के हिसाब रक्षक थे। इनके पिता का नाम था–हरीश चन्द्र, ये "कवि चन्द्र" उपाधि से भूषित थे, यह मात्र परिचय मिलता है।

सेकेन्दर शाह :–(32 पृष्ठ, 6 पंक्ति)। ये आराकान राजा तथा महाराज अमर माणिक्य समसामायिक थे। ये जाति से मघ व इनका जातीय नाम मांग फूला था। आराकान पतिगण कुछ काल मुसलमान के नाम ग्रहण कर रहे थे। "सेकेन्दर शा" नाम उस पद्धति का परिचायक है। इनके साथ महाराज अमर माणिक्य का घमासान युद्ध संगठित हुआ। आराकान राज प्रथम बार पराजय होकर रहने पर भी बाद में त्रिपुरा जय करके उदयपुर राजधानी पर आक्रमण तथा लून्ठन किया था। पूर्ववर्ती 208–211 पृष्ठ में सन्निवेशित विवरण दृष्टव्य है।

सैद्धि राम :–(4 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। इनका प्रकृत नाम सैयद विराम था। पूर्ववर्ती 153 पृष्ठ में विवृत विवरण आलोचना करने पर इस विषय में स्पष्टतर तरीके से हृदयंगम होगा। सैयद विराम, तरप के शासन कर्ता सैयद मूसा पुत्र थे। कुमार राजधर नारायण, इसके पिता को युद्ध में हरा करके, पिता पुत्र दो जन को ही बन्दी तरीके से उदयपुर लाये थे।

सौर राष्ट्र नारायण :–(4 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। ये कोई कोई स्थान में "सुर राष्ट्र" नाम से भी अभिहित हुए हैं। महाराज अमर माणिक्य के सेनाध्यक्ष गण के मध्य, ये अकेले ही शत्रु के सम्मुखीन होने में समर्थ थे। श्रीहट्ट के युद्ध में तथा आराकान राज्य के साथ समर में इन्होने योगदान किये हैं।

तृल–355

हंसमान :–(21 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। रण दुर्ल्लभ के शैशव काल का नाम है, मातामह दुर्ल्लभ नारायण द्वारा यह नाम रक्षित किया गया। ये पूर्व कथित कचु फा के(पुरन्दर) के पुत्र तथा महाराज कल्याणमाणिक्य के भ्राता है। पूर्ववर्ती 219 पृष्ठ में इसका विवरण दृष्टब्य है।

हरिचक्र नारायण :–(5 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति थे। राजमाला में इसको ''विक्रम नारायण'' विशेषण से भूषित किया गया है। ये श्रीहट्ट के संग्राम में उपस्थित थे।

हरिश चन्द्र :–(3 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के हिसाब रक्षक थे। सुबुद्धि विश्वास के पिता तथा राज सभासद थे। राजमालाकार इसको ''अनर्गल कवि'' कहते हैं। कवित्व शक्ति प्रभाव से इन्होने ''कवि चन्द्र'' उपाधि लाभ किया था।

हामतार फा :–(21 पृष्ठ, 11) पंक्ति। ये महाराज कल्याणमाणिक्य के मातुल थे। इनके भांजी का नाम था – हामतार माँ।

हामतार माँ :–(21 पृष्ठ, 7 पंक्ति)। ये कचु फा या पुरन्दर की पत्नी तथा महाराज कल्याणमाणिक्य की माता थी।

हिंगुल नारायण :–(5 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के अन्यतम सेनापति हैं। तरप तथा श्रीहट्ट के समर में ये उपस्थित थे।

हैतन नारायण :–(5 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। ये महाराज अमर माणिक्य के सेनाध्यक्ष के रूप में तरप तथा श्रीहट्ट अभियान में कुमार राजधर नारायण के सहयात्री थे।

होसेन शाह :–(58 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। ये आराकान राज्य के अधीश्वर तथा महाराज यशोधर माणिक्य के समसामायिक थे। उभय राजा के मध्य प्रथमतः विशेष सम्प्रीती था, परन्तु कुछ काल बाद दोनो के मध्य बैर भाव पोषित होने का प्रमाण मिलता है। किस कारण से यह दुश्मनी हुआ था, वह जानने का उपाय नहीं है।

———

तृल–356

राजमाला तृतीय लहर में उल्लेखित स्थानादि
नाम तथा संक्षिप्त विवरण।
(वर्णमालानुक्रमिक)

अष्टग्राम :–(3 पृष्ठ, 16 पंक्ति)। यह वर्तमान मयमन सिंह जिला के अन्तर्गत, जयनसाही परगना के मध्यवर्ती एक स्थान है। उक्त स्थान का विवरण इस लहर के 105 पृष्ठ में प्रदान किया गया है। इस स्थल मे पुनरूल्लेख करना निष्प्रयोजन है।

आचरंग :–(68 पृष्ठ, 23 पंक्ति)। राजमाला के प्रथम लहर में 239 पृष्ठ में इस स्थान का स्थूल विवरण प्रदान किया गया है।

इछापुर :–(39 पृष्ठ, 27 पंक्ति)। यह चट्ट गाँव के समीप एक स्थान है। आराकान से चट्ट गाँव में आगमन का पथ, इस स्थान से हो कर जाता था।

इटाग्राम :–(10 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। राजमाला द्वितीय लहर के 270 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण मिलेगा।

उदयपुर :–(4 पृष्ठ, 12 पंक्ति)। यह त्रिपुरा की प्राचीन राजधानी है। कुमिल्ला से पूर्व तरफ गोमती नदी के दक्षिण किनारे अवस्थित है। पहले इस स्थान का नाम रांगामाटी था। महाराज उदय माणिक्य के राजत्व काल में उसके नामानुसार उदयपुर नाम प्रदान किया गया है। यह एक पीठ स्थान है। राजमाला चतुर्थ लहर में इस स्थान का विस्तृत विवरण प्रदान किया जायेगा।

उड़िया राज्य :–(27 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। उड़िष्या से समागत एक व्यक्ति, आराकान राज्य के सामन्त स्वरूप राजत्व कर रहे थे। उस राजधानी देयांग(डियांगा– Dianga) नामक स्थान में स्थापित था। वह स्थान चट्ट गाँव के दक्षिण में, मोहना में कर्णफुली नदी के दूसरे पार में अवस्थित था। ब्लाकमैन साहब के मतानुसार ''दक्षिण डांगा'' शब्द अपभ्रंश होकर ''डियांगा'' नाम हुआ था। त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के आराकान अभियान में वर्णन उपलक्ष में राजमाला में लिखा गया है :–

चाटिग्रामें गिया सैन्य शीघ्र उत्तरिलो।	चटगाँव में शीघ्र उतरी जाकर।
कर्णफुली बाँध दिया सैन्य पार होइलो।।	कर्ण फुली बाँध दी, सेना पार हुई आकर।।
राम्बु आदि कोरी राज्य छय थाना लय।	राज्य ने किया अधीन राम्बु आदि छह थाना।
देयांग उड़िया राज्य लोइते आशय।।	उड़िया राज्य देवांग को भी चाहा था लेना।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 27पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 27पृ

तृल–357

इसके द्वारा जाना जा रहा है कि महाराज अमर माणिक्य के शासन काल में देयांग प्रदेश ''उड़िया राज्य'' नाम से अभिहित था। उडिष्या देशीय राजा द्वारा शासित होने के कारण जिस राज्य का इस रूप नाम हुआ था, वह सहज ही समझा जाता है। महाराज अमर माणिक्य के सहित युद्ध में पराजित होकर, आराकान राजा ने कुछ काल के लिए निमित्त युद्ध स्थगित रखने के प्रस्ताव के साथ, उड़िया राजा को दूत रूप में त्रिपुर शिविर में प्रेरण किया था।

राजमाला में वह मिलता है :–

मघ पराजय सुनि मगघ राजाय।	मगध राजा ने सुना जब मघ का पराजय।
उड़िया राजा नामे दूत तखने पाठाय।	उड़िया राजा नाम दूत को दिया यहाँ पठाय।
दूते आसि कहिलेक राजधर स्थाने।।	कहा दूत ने आकर राजधर के सम्मुख।।
समुख बत्सरे युद्ध होबे तोमासने।।	अगले वर्ष तुम संग होगा भयानक युद्ध।।
राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 29पृ	राजमाला तृल अमर माणिक्य खण्ड 29पृ

उद्धृत वाक्य के ''उड़िया राजा'' जिस पूर्व कथित उडिया राज्य के अधीश्वर हैं, यह बात समझने में कष्ट नहीं होता। यह राजा आराकान राज के अधीन थे, उसके दूत भाव कर्म के द्वारा ये भी प्रमाणित होता है।

मयनामती के गीत में उड़िया राज्य का उल्लेख मिलता है। राजमाला का उडिया राज्य तथा यह उडिया राज्य अभिन्न ही सोचा जाता है। इस लहर में 181 पृष्ठ पाद टीका में उडिया राज्य को जो विवरण प्रदान किया गया है। वह आलोचना करने से अवस्था जाना जायेगा। इस स्थल में पुनरूल्लेख नहीं किया गया है।

आराकान राज्य ''मिन राजा गाँइया'' अधिकार के रहने से, पर्त्तूगीजगणों ने उडिया राज्य को खत्म कर तथा देयांग पहाड़ पर अधिकार करके, उसमें प्रधान अड्डा स्थापित किया था। चट्ट गाँव अंचल के मध्य इस स्थान में पर्त्तूगीजगण का प्रथम गिर्जा निर्मित हुआ। बाद में यह स्थान मुसलमान गण के कुक्षिगत(हस्तगत) हुए। 1722 ईसवी में मुर्शिद कुली खाँ, ''कामेल तोमरि'' प्रस्तुत काल में, देवांग को ''चाकला इस्लामाबाद'' के अधीन चाटिगाँव के साथ मिला करके, 4401 रूपये राजस्व अवधारण किया था। उस समय से यह स्थान मुसलमान गण के अधिकार में रहे है।

उनकोटी तीर्थ :–(10 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। राजमाला द्वितीय लहर के 107 तथा 272 पृष्ठ में इस तीर्थ का विवरण प्रदान किया गया है।

कर्णफुली नदी :–(27 पृष्ठ, 18 पंक्ति)। यह नदी पर्वत से उत्पन्न होकर, नाना जनपद के उपर से आकर, चट्ट गाँव के दक्षिण प्रान्त को धोते हुए बंग सागर में पतित हुई है।

कल्मीगड :–(32 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण राजमाला के द्वितीय लहर के 273 पृष्ठ में प्रदान किया गया है।

तृल–358

कैलागड :–(17 पृष्ठ, 6 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण राजमाला द्वितीय लहर के 275 पृष्ठ में दृष्टब्य है।

खुटि मुडा :–(50 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण राजमाला के प्रथम लहर के 251 पृष्ठ में प्रदान किया गया है।

गामरिया किल्ला :–(26 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। यह स्थान उदयपुर टाउन से दक्षिण तरफ अवस्थित है। इस स्थान में महाराज विजय माणिक्य तथा ठाकुर परिवार के अनेक व्यक्ति का वास स्थान तथा सेना निवास था। गामारिया किल्ला के अवस्थान विषय में, हस्तलिखित "चम्पक विजय" ग्रंथ में नरेन्द्र माणिक्य द्वारा सेनापति का उपदेश प्रदान उपलक्ष्य में कहा गया है :–

दक्षिणेर दिके तुमि होइला सेनापति।	दक्षिण तरफ के तुम हुए सेनापति।
दक्षिणेर गड़ यतो तोमार यावति।।	दक्षिण के गड़ जितने तुम्हारा दायित्व।।
चौद्दो ग्रामेर गड़ धरिया सावहिते।	चौदहग्राम गड़ पकड़ा एक साथ में।
भालो यत्ने गड़ ये राखिबा सहासत्ते।।	अच्छे यत्न से गड़ जो रखो खुशी में।।
कोन पाके आसि यदि लय सेई गड़।	कौन विपद् में आकर लेगा ये गड़।
गामारियार गड़े आसि उठियो सत्वर।	गामारिया गड में आना जल्दी।
गामारिया गड़ेर पथ बड़हि दुगर्म।	गामारिया गड़ पथ बड़े ही दुगर्म।
एक हाथ पाश पथ चलिते विषम।।	एक हाथ पाश पथ चलने में विषम।।
आकाश समान मूड़ा देखिते भय करे।	आकाश समान मूड़ा, देखने में भय ।
आछुक उठिबो, देखि मुण्डे घात पड़े।।	आकर देखेगें तो मुण्ड आघात पड़े।।
चम्पक विजय।	चम्पक विजय।

इस उक्ति द्वारा स्पष्ट हो जाता है, उदयपुर से चौदह ग्राम तक जिस रास्ता के भग्नावेश अभी विद्यमान रहे थे, गामारिया किला उस रास्ते पर तृष्णा पर्वत के श्रृंग देश में प्रतिष्ठित था।

गोधा रानी :–(7 पृष्ठ, 12 पंक्ति)। ये श्रीहट्ट जिला के अन्तर्गत सूरमा नदी किनारे अवस्थित एक ग्राम है। महाराज अमर माणिक्य के श्रीहट्ट आक्रमण काल में सूरमा नदी पार होने के बाद, इस स्थान में प्रथम युद्ध हुआ था।

गोप ग्राम :–(23 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। यह उदयपुर टाउन के साथ एक गाँव है। ग्वालों का वास स्थान था, इसलिए इस रूप नामकरण हुआ था। वर्तमान काल में यह नाम विलुप्त हुआ है।

घोंगी मूडा :–(28 पृष्ठ, 4 पंक्ति)। यह स्थान कर्ण फुली नदी के दक्षिण किनारे अवस्थित है। महाराज अमर माणिक्य के सैन्य गण, आराकान आक्रमण करके, रसद के अभाव में विपन्न होने पर, जूम खेत में उत्पन्न घोंगा आलू भक्षण किया था और इस स्थान को "घोंगीमुड़ा" नाम प्रदान किया था। अब वह नाम विलोप के साथ साथ स्थान का परिचय से लोग विस्मृत हुए है।

तृल–359

चण्डीगड़ :–(60 पृष्ठ, 3 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण राजमाला द्वितीय लहर के 278 पृष्ठ में प्रदान किया गया है।

चाटिग्राम :–(27 पृष्ठ, 17 पंक्ति)। इस स्थान के स्थूल विवरण द्वितीय लहर के 279 पृष्ठ में मिलता है।

छकडिया :–(60 पृष्ठ, 3 पंक्ति)। इसका अपर नाम छय घरिया गड़ है। द्वितीय लहर के 279 पृष्ठ में विवृत विवरण दृष्टब्य है।

जिकुया ग्राम :–(4 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। यह श्रीहट्ट जिला के अन्तर्गत(तरप परगना) एक ग्राम है। महाराज अमर माणिक्य के सैन्यगण ने तरप अभियान काल में इस स्थान में जाकर शिविर संस्थापन किया था तथा यहाँ से तरप राज्य जय कर तथा वहां के अधिपति को धृत किया।

डोमघाट :–(41 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। यह डोमघाटी नाम से भी अभिहित होता है। इस स्थान का विवरण द्वितीय लहर के 282 पृष्ठ में लिखित हुआ है।

ढाका :–(61 पृष्ठ, 27 पंक्ति)। यह बुड़ि गंगा के तीर स्थित वर्तमान ढाका नगरी है। इसका प्राचीन नाम जहाँगीर नगर था। सम्राट जहाँगीर के शासन काल में इस स्थान में बंग की राजधानी स्थापित हुई थी तथा उस समय से सुदीर्घ काल तक इस स्थान में बंग शासनकर्तागण वास करते आये हैं। प्राचीन काल से ढाका सूक्ष्म वस्त्र के निमित्त प्रसिद्ध है।

तरप :–(4, पृष्ठ, 4 पंक्ति)। राजा आचाक नारायण तरप राज्य के प्रतिष्ठाता थे। इस स्थान का विवरण, पूर्ववर्ती 148–153 पृष्ठ में प्रदान किया गया है।

तुलसी घाट :–(21 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। इस स्थान में त्रिपुरा के सेना निवास रहने का परिचय मिलता है। कल्याणमाणिक्य के पिता कचु फा(नामान्तर पुरन्दर) इस स्थान में गंगाप्राप्त (परलोकगत) हुए थे। काल क्रम से स्थान का नाम परिवर्तित होने के कारण वर्तमान समय में उनका अवस्थान निर्णय करना दुःसाध्य है।

तेतैया :–(42 पृष्ठ, 23 पंक्ति)। यह स्थान खोयाई नदी के तीरवर्ती था। महाराज अमर माणिक्य युद्ध में हार कर राजधानी परित्याग कर इस स्थान में आये थे, बाद में मनु नदी के किनारे स्थान में जाकर अवस्थान किया।

दाउदपुर :–(17 पृष्ठ, 8 पंक्ति)। यह स्थान तितास नदी के किनारे अवस्थित है। महाराज अमर माणिक्य ने तितास नदी के रास्ते से सराईल में, मृगया यात्रा काल में, दाउदपुर के जमींदार के साथ साक्षात किया था।

दिल्ली :–(15 पृष्ठ, 10 पंक्ति)। यह पंजाब प्रदेश के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध जिला था। हिन्दू राजत्व काल में इस स्थान में कोई कोई अंश इन्द्रप्रस्थ, वारणावत इत्यादि नाम से प्रसिद्ध था। उस समय से यह स्थान राजधानी जैसा

तृल–360

गौरव लाभ करती आ रही थी। फेरिस्ता के मत अनुसरण करके ऐतिहासिकार कनिंगहाम साहब कहते थे, राजा दिलु से दिल्ली का नामकरण हुआ है। दिलु, मयूर वंशीय शेष राजा थे, उन्होने ईसा के अर्द्ध शताब्दी पूर्व राजत्व किया है। स्थान के नामोत्पत्ति के सम्बन्ध में अन्य मत भी है। यह स्थान हिन्दू राजत्व विलोप के बाद, मुसलमान गण की राजधानी के रूप में परिणत हुआ था। अंग्रेज राजत्व में भी कुछ काल तक इस स्थान में नया राजधानी प्रतिष्ठित हुआ था। दिल्ली के स्थापत्य शिल्प का गौरव पृथ्वी में घोषित है। फार्गुसन साहब ने उनके **History of India and Eastern Architecture** नामक ग्रंथ में इस स्थान के प्राचीन प्रासाद समूह की प्रशंशा सूचक वर्णना प्रदान किया है। दिल्ली का विस्तृत विवरण लिखने के लिए स्वतन्त्र ग्रंथ का प्रयोजन है, इस स्थल में सम्यक आलोचना करना असंभव है।

दुलालीग्राम :–(10 पृष्ठ, 7 पंक्ति)। यह उत्तर के श्रीहट्ट के अन्तर्गत एक परगना है। वर्तमान काल में 118 मौजा इसके अन्तर्गत है। इस परगना का राजस्व 4029 रूपया निर्धारित है।

देवांग :–(27 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। यह कर्ण फुली नदी के मोहना में अवस्थित है। इससे पहले ''उडिया राज्य'' शीर्षक निबन्ध में इस स्थान का विवरण प्रदान किया गया है।

धोपा पत्थर :–(28 पृष्ठ, 7 पंक्ति)। यह स्थान कर्ण फुली नदी के दक्षिण किनारे अवस्थित है। राजमाला प्रथम लहर में 258 पृष्ठ में इस स्थान का स्थूल विवरण प्रदान किया गया है।

ध्वज नगर :–(50 पृष्ठ, 5 पंक्ति)। यह वर्तमान काल में त्रिपुर राज्य के सदर विभाग में अवस्थित है। द्वितीय लहर के 288 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण मिलेगा।

पूर्बकुल :–(42 पृष्ठ, 26 पंक्ति)। यह स्थान कुकि प्रदेश के अन्तर्गत है। राजमाला द्वितीय लहर के 297 पृष्ठ में इस स्थान का स्थूल विवरण दृष्टब्य है।

प्रयाग :–(62 पृष्ठ, 30 पंक्ति)। राजमाला प्रथम लहर के 260 पृष्ठ पर इस स्थान का विवरण सन्निवेशित हुआ है।

फुल कोयरि छड़ा :–(22 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। यह छड़ा उदयपुर के वर्तमान नगरी के पूर्व तरफ गोमती नदी के बाँये तरफ अवस्थित है। यह पर्वत से निर्गत होकर गोमती नदी में पतित हुआ है। इस लहर के 241 पृष्ठ के ''फुल कुमारी'' शीर्षक विवरण में इस छड़ा के विषय में आलोचित हुआ है।

बरबक्र नदी :–(46 पृष्ठ, 9 पंक्ति)। इसका अपभ्रंश नाम बराक है। यह नदी मणीपुर के उत्तर तरफ आंगामी नागा पहाड़ से निर्गत होकर मणीपुर राज्य के वक्ष में बह कर, कछाड़ जिला में पतित हुई है। वहाँ से प्रवाहित होकर

तृल–361

बदरपुर के पास के स्थान में श्रीहट्ट जिला में प्रवेश पूर्वक दो शाखा में विभक्त हुई है। उसके उत्तर तरफ की शाखा सूरमा तथा दक्षिण शाखा कुशियारा नाम से विख्यात है। श्रीहट्ट जिला में बरबक्र प्रधान नदी है। शास्त्र ग्रंथ में इस नदी का तीर्थ जनित सम्मान का परिचय भी मिलता है। वायु पुराण में उक्त हुआ है :–

समुद्रस्योत्त्रे देशे ततो मनु नदी स्मृतः।
यं गत्वापि महाराजन् पित्वा पानीय मुत्तमं।।
मनुनद्यां महाराज बरबक्रेन संगमं।
तत्र स्नात्वा नरोयाति चन्द्रलोक मनुत्तमः।।

बाकला :–(3 पृष्ठ, 13 पंक्ति)। यह बाखर गंज का प्राचीन नाम है। पूर्व बाकला एक स्वतन्त्र राज्य था। इस लहर के 97–104 पृष्ठ के राज्य के विवरण से प्राप्त किया गया है।

बाणिया चुंग :–(3 पृष्ठ, 18 पंक्ति)। यह स्थान "बाणियाचंग" नाम से प्रसिद्ध है। पूर्ववर्ती 106–112 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण दिया गया है।

विक्रमपुर :–(3 पृष्ठ, 11 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण पूर्ववर्ती 90–97 पृष्ठ तथा राजमाला द्वितीय लहर के 302 पृष्ठ में दिया गया है।

बारबांगला :–(4 पृष्ठ, 4 पंक्ति)। पूर्ववर्ती 279–302 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण दिया गया है।

विशालगढ़ :–(50 पृष्ठ, 6 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण प्रथम लहर के 262 पृष्ठ में, द्वितीय लहर के 303 पृष्ठ में पाया गया है।

वृन्दावन :–(63 पृष्ठ, 2 पंक्ति)। यह मथुरा जिला के अन्तर्गत एक सब डिविजन है। हिन्दु लोगों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यह वैष्णवगणों का विख्यात तीर्थ है।

बयालिश :–(17 पृष्ठ, 23 पंक्ति)। यह त्रिपुरा जिला स्थित सराईल परगना के अन्तर्गत है। पूर्ववर्ती 115 पृष्ठ में इस स्थान का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। त्रिपुरेश्वर अमर माणिक्य के शासन काल में, उनके बडे पुत्र राजधर देव ने जंगली जगह को आबाद करके उस स्थान में एक नगर स्थापन किया था।

भावाल :–(3 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। इस लहर के 104 पृष्ठ में लिखित विवरण दिया गया है।

भुलुया :–(3 पृष्ठ, 20 पंक्ति)। पहले 117 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण दिया गया है।

मथुरा :–(62 पृष्ठ, 30 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण राजमाला प्रथम लहर के 263 पृष्ठ में दिया गया है।

मनु नदी :–(44 पृष्ठ, 6 पंक्ति)। इस नदी का विवरण द्वितीय लहर के 309 पृष्ठ में मिलेगा।

तृल–362

मिलन घाट :–(17 पृष्ठ, 11 पंक्ति)। महाराज अमर माणिक्य, कैलागढ़ से सराईल जाने के रास्ते में तितास नदी के जिस घाट में दाउदपुर के जमींदार के सहित मुलाकात हुआ था, वह घाट "मिलन घाट" नाम से विख्यात हुआ है। यह नाम आज भी विलुप्त नहीं हुआ है।

मेहेरकुल :–(59 पृष्ठ, 26 पंक्ति)। राजमाला प्रथम लहर के 265 पृष्ठ में विवरण मिलेगा।

यशपुर :–(23 पृष्ठ, 15 पंक्ति)। यह उदयपुर नगरी के समीप एक बड़ा गाँव है।

रण भावाल :–(3 पृष्ठ, 18 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण पूर्ववर्ती 112 पृष्ठ में मिलता है।

रसांग :–(27 पृष्ठ, 14 पंक्ति)। राजमाला द्वितीय लहर में 312 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण दिया गया है।

राईपुर :–(29 पृष्ठ, 1 पंक्ति)। यह स्थान चट्टगाँव से आराकान जाने के रास्ते में अवस्थित है। महाराज अमर माणिक्य के शासन काल में यह जनपद आराकान राज्य के शासन के अधीन था।

रांगामाटी :–(68 पृष्ठ, 24 पंक्ति)। राजमाला के प्रथम लहर के 267 पृष्ठ में इस स्थान के विषय में मिलेगा।

राजधर छड़ा :–(49 पृष्ठ, 11 पंक्ति)। इस स्थान का विवरण पूर्ववर्ती 193 पृष्ठ में मिलता है। इसका दूसरा नाम राताछड़ा है।

राम्बू :–(27 पृष्ठ, 19 पंक्ति)। यह आराकान राज्य के अन्दर पड़ता है, वर्तमान काक्स बाजार के साथ एक स्थान है। यह पहले रामक्षेत्र या रामटेक नाम से प्रसिद्ध था। यह एक तीर्थ स्थान है। यहाँ पर राम सीता की मूर्ति प्रतिष्ठित है।

श्रीहट्ट :–(7 पृष्ठ, 3 पंक्ति)। राजमाला द्वितीय लहर के 315 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण मिलेगा।

सलैगोयाल पाड़ा :–(3 पृष्ठ, 14 पंक्ति)। पहले 104 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण मिलेगा।

सराईल :–(3 पृष्ठ, 19 पंक्ति)। पूर्ववर्ती 113 पृष्ठ में इस स्थान का विवरण मिलेगा।

सुरमा :–(7 पृष्ठ, 7 पंक्ति)। यह श्रीहट्ट जिला के मध्य से प्रवाहित एक नदी है व बरबक्र नदी की विशेष शाखा है। इस नदी से बाहर निकलकर, मारकलि के निकट, बरबक्र के अन्य शाखा "विवियाना" में जा गिरी है। सुरमा की और एक शाखा मयमन सिंह जिला के भीतर से होकर धलेश्वरी में जा गिरी है।

———

तृल–363

अनुक्रमणिका

(य)

(ल)

तृल–381

राजमाला सम्बन्धी कतिपय अभिमत।

''विश्वकोष' सम्पादक तथा ''बंगाल का जातीय इतिहास'' आदि ग्रंथ प्रणेता प्रत्नतत्वविद् श्रीयुक्त नगेन्द्र नाथ वसु प्राचीन विद्यार्णव महाशय ने राजमाला के प्रथम लहर की आलोचना करके लिखा था –

"The book has given me entire satisfaction and I hope that the 2nd part will also be executed with the same excellence and finish. The work is calculated to remove a long – felt want by throwing light on the history of the great Raj family of Tippera".

———

त्रिपुरा के राजपंडित, काव्य शास्त्र विशारद श्रीयुक्त रेवतीमोहन काव्यरत्न महाशय ने राजमाला के सम्पादक को लिखा था –

कल्याणवरेयू–

वर्तमान में इस ऐतिहासिकता के युग में शिक्षित व्यक्ति मात्र ही इतिहास के संबंध में चर्चा करने में बहुत आनन्द अनुभव करते हैं। इस समय अपने धर्म के प्रति विश्वास, साहित्य के प्रति दिलचस्पी तथा कला विद्या में विशेष पारदर्शी, वर्तमान भारत के प्राचीनतम् त्रिपुर राजवंश की घटित कहानियाँ यथोचित तरीके से आलोचना होना, विशेष सार्थकता अनुभव होता है। इस समय महाशय के सम्पादकता में त्रिपुर राज वंश का इतिहास ''राजमाला'' प्रकाशित होने से गवेषणाशील पंडित मण्डली निश्चित ही आनंदित होगें।

ग्रंथ की भाषा की सुगमता तथा विषय की नियमता प्रशंशा करने योग्य है। इस ग्रंथ को किसी झंझट के मुक्ति तथा ग्रन्थकार निरामय सुदीर्घ जीवन प्रकृत के लिए भगवान के पास प्रार्थना करते हैं। अतएव यह शेष करते हैं।

आशीर्वादक
श्री रेवती मोहन शर्म्मण
राज पंडित

———

''हितवादी'' पत्रिका के प्रतिष्ठा करने वाले सम्पादक तथा राजमाला सम्पादन के प्रथम अनुष्ठाता श्रीयुक्त पंडित चन्द्रोदय विद्याविनोद महाशय राजमाला के सम्पादक को लिखते हैं –

दीर्घ जीवेषु–

''श्री राजमाला'' के दो खण्ड मिले है। इतने दिन तक विचार प्रकाश नहीं किया था क्योकि इसका कारण शारीरिक अस्वस्थता थी। दूसरे के निकट होता तो लज्जित होता। आपके निकट मुझे लज्जा का कोई कारण नहीं है, आप मेरी बात का अवश्य विश्वास करेगें, इसलिए विशेष कारण दिखाने की जरूरत नहीं है।

तृल–382

''श्री राजमाला'' हमारी ह्दयकर वस्तु है। इसके द्वारा केवल जो त्रिपुरा के राज वंश ही सुशोभित – यह नही, इसकी प्रंशशा से त्रिपुरावासी भी जीवन भर आनंदित हैं। हमारी तरह के लोगों के उपर एक समय में ''राजमाला'' के संस्करण का भार देकर स्वर्गीय महाराज राधा किशोर माणिक्य बहादुर ने हमारा गौरव बढ़ाया था, परन्तु उस गौरव की मर्यादा हमारे द्वारा रक्षा नहीं किया गया। उपकरण संग्रह करके कार्य में हस्तक्षेप करने के पहले ही विधाता के विधान के कारण हमें अगरतल्ला छोड़कर चले जाने में बाध्य होना पड़ा था, यह आप जानते हैं। आज हमें बहुत आनन्द हो रहा है क्योंकि हमारे संकल्प कार्य को आप उत्थापन करने में समर्थ हुए हैं, अपितु प्रार्थना करते हैं, कि भगवान आपके संकल्प कार्य को उद्यापित कराये।

''श्री राजमाला'' के नये संस्करण में आपने जिस यत्न पूर्वक अध्यावसाय का परिचय दिया है, तथापि वह वास्तविक रुप में दूसरों से असाधारण है। हमें आपका ''मध्यमणि'' को पढ़कर बहुत ही उत्साहित हुए हैं। अपना ''मध्यमणि'' प्रकाशमय हो, उसके प्रभाव से ''राजमाला'' सर्व रूप से उज्ज्वल हुआ है। यही मध्यमणि जीवन भर आपके इस असाधारण गवेषणा का प्रचार करेगें।

आपके साथ किसी किसी विषय में ऐसा भी है जो मत से परे है अर्थात यह स्वाभाविक ही है। मैने आपका ''मध्यमणि'' मनि पाठ कर मुग्ध हुआ हूँ। आपका ''मध्यमणि'' उज्जवल हो, उसके उज्ज्वलता से ''राजमाला'' सर्व रूप से प्रकाशमय हो उठा है। ''मध्यमणि'' जीवनभर आपके असाधारण गवेषणा को फैलायेगा।

आपके साथ किसी किसी विषय में मत भेद नहीं है, ऐसा नहीं है। प्राचीन विषय के इतिहास को लेकर मत भेद न रहना ही अस्वाभाविक महसूस होता है, मत भेद रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

आपके गवेषणा के विषय में बहुत सारी बातें कहना आवश्यक है। आपने जिस तरीके से परिश्रम तथा अध्ययन के साथ ''मध्यमणि'' के विषय वस्तु की खोज किया है। वह स्वाभाविक ही पात्र के प्रंशशा की बात है।

''श्री राजमाला'' जिस रूप सुदृश्य से मुद्रित तथा प्रचारित हुआ है। वह भी अत्यधिक प्रंशशा योग्य बात है।

उपसंहार में भगवान से हमारी एक ही प्रार्थना है, कि वे आपको स्वस्थ रखकर 'श्रीराजमाला'' संस्करण कार्य को सठीक रूप से शेष करवाये इति।

लेसियाडा — आशीर्वादक–

10वी फागुन, 1338 त्रिपुरा — श्री चन्द्रोदय विद्याविनोद

———

कलकत्ता विश्वविद्यालय के अध्यापक महामहोपाध्याय श्रीयुक्त गुरूचरण तर्क–दर्शनतीर्थ महाशय के विचारानुसार –

राजमाला प्रथम तथा द्वितीय लहर को पाकर, इसको पढ़कर विशेष आनंदित हुआ है। इसमें त्रिपुरा के राज वंश तथा त्रिपुरा राज्य की कहानी की बात हुआ है। इसके द्वारा द्रुहयु से

तृल–383

वर्तमान त्रिपुरा के राजा तक के वंश धारा का परिचय तथा त्रिपुरा राज्य के पहले फैले हुए राज्य के सम्बन्ध में अनेक अज्ञात तत्व के विषय में जाना जा सकता है। जिन युक्ति के प्रमाण द्वारा उन तत्वों को उज्जवलित किया गया है, उसमें से सम्पादक के कोशिश किये गये प्रत्नतत्वों के चर्चा का परिचय पाकर, उनको आन्तरिक धन्यवाद प्रदान करता हूं। ईश्वर उनको लम्बी आयु दे।

इस ग्रंथ में सारसंकलन पूर्वक, युक्ति तर्क के अंश को छोड़कर, विद्यालय के पाठ्य योग्य त्रिपुरा की एक कहानी लिखने पर साधारण में त्रिपुरा के राज वंश का विवरण प्रकाशित होगा, तथा ऐसा होना ही वास्तव में ठीक है, यही सोचा जाता है। इति। 12 जनवरी, 1932।

श्री गुरूचरण तर्कदर्शन तीर्थ
विश्वविद्यालयाध्यापक, कलिकाता

———

स्वनाम धन्य साहित्यिक डाक्टर श्रीयुक्त राय दिनेशचन्द्र सेन बहादुर बी. ए., डी–लिट्, राजमाला सम्पादक को लिखते हैं, –

प्रियवरेषु –

आपके भेजे गये एक युवा दोस्त ने आपकी कीमती द्वितीय खण्ड राजमाला पुस्तक दे गये हैं, इस पुस्तक को तैयार करने में आपने जान से अधिक परिश्रम किया है। हम लोग सभी चले जायेगें, ऐसा भी है कि, त्रिपुरा राज्य का कोई भी आजीवन नहीं रहेगा – परन्तु त्रिपुरा का यह राजमाला अमर रहकर गौरव प्रदान करेगा, यह छिपाने का कोई विषय नहीं है। राजा की अनुकम्पा से इनके साथ साथ, आपका नाम भी चिरस्मरण होगा। कालीदास की कृपा से मल्लीनाथ ने स्थायी यश कणिका को पाया है, शुक्रेश्वर – बाणेश्वर आदि कवि गणों के महल में आपकी प्रतिष्ठा स्थायी होगी। इच्छा है, इस पुस्तक की विस्तृत समालोचना की जाये – परन्तु सुना जाता है, आपका तृतीय भाग खत्म हुआ है तथा शेष भाग के छपाई का काम चल रहा है, अर्थात यदि पूरी पुस्तक मिलती है, तब दिल खोलकर एक विस्तृत समालोचना करने की सुविधा प्राप्त होगी।

\+ \+ \+ \+ \+

शुभार्थी
श्री दिनेशचन्द्र सेन

———

तृल–384

"स्थापत्य–विशारद " नाम से ख्याति अर्जन किये इंजीनियर तथा भारतीय प्राचीन स्थापत्य के उद्धार प्रयासी श्री युक्त श्रीश चन्द्र चट्टोपाध्याय **A. M. A. E. M. R. A. S. (London)** महाशय कहते हैं –

"त्रिपुरा का प्राचीन इतिहास तथा राज कहानी "राजमाला" ग्रंथ, त्रिपुर राज वंश के पुरावृत्त के हिसाब से, और बहु प्राचीन बंगला साहित्य के हिसाब से अमूल्य है। यह बोलने से भी त्रुटि नही होगी। इसके सम्पादक, सुपंडित श्री युक्त कालीप्रसन्न सेन विद्याभूषण महाशय हैं। इसके लिए समस्त भारतवासी धन्यवाद के पात्र हैं। "राज रत्नाकर" नामक त्रिपुर राज वंश के धारावाहिक संस्कृत इतिहास पाठ करने का समय नहीं हुआ, परन्तु श्रद्धेय विद्याभूषण महाशय के सुन्दर सम्पादित "राजमाला" पाठ करके भारत के बहुत प्राचीन एक राज प्रतिष्ठा का एक उज्जवल लेखन मिला है, उस लेखन को देखकर, बहुत आशा पोषण करके, हमने त्रिपुरा के प्राचीन महिमामयी राजधानी रंगामाटी या उदयपुर तीर्थ के लिए यात्रा किया था।

\+ \+ \+ \+ \+

रवि – 5वां वर्ष, द्वितीय संख्या

———

ज्योतिः – 5वीं पौष, 1335 साल

बहुत व्यय के बाद सुनिपुण लेखक द्वारा त्रिपुरा राज वंश का "राजमाला" नाम से एक खण्ड इतिहास प्रकाशित हुआ है। त्रिपुरा राज्य भारत का बहुत पुराना राज्य है, इसके इतिहास के साथ भारत का स्वार्थ सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। हमने इस ग्रंथ को यत्न पूर्वक आदि से अन्त तक पढ़ा है। ग्रन्थाकार श्री युक्त कालीप्रसन्न सेन महाशय ने इस ग्रंथ के बंधन में कठोर परिश्रम किया हैं। उनका परिश्रम तथा लग्न साधना सार्थक हुआ है। ग्रंथ में छोटे छोटे फुटनोट गवेषणा पूर्ण हैं, बहु सारयुक्त, मूल्यवान कथन व अनेक जानने के विषय हैं। पुस्तक में प्राचीन भारत के चार बहुत सुन्दर मानचित्र हैं, वह देखने पर कितनी ही बातें याद आती हैं। इस इतिहास के मुद्रांकन के लिए त्रिपुरा के राज दरबार ने खुले हाथ से अर्थ व्यय किया हैं। पुस्तक आकार में बहुत बड़ा है।

\+ \+ \+ \+ \+

त्रिपुर राज वंश का और चार इतिहास हमने देखा है। उसमे से संस्कृत राजमाला ही विशेष उल्लेखनीय है। कालीप्रसन्न बाबू ने प्राचीन हाथ की लिखी पाँच राजमाला मिलाकर ग्रंथ को लिखा हैं। कोई भी बात उन्होने गुप्त रखने की कोशिश नहीं की। यह ठीक है, उन्होने त्रिपुरा का इतिहास नहीं लिखा है – राज वंश का इतिहास ही लिखा है। तथापि प्रसंग क्रम से त्रिपुरा के इतिहास के विषय में जो उल्लेख किया है, वह कम मूल्यवान नहीं है?

तृल–385

स्वाधीन त्रिपुरा का एक इतिहास लिखने के लिए स्वर्गीय विद्योत्साही महाराज वीर चन्द्र माणिक्य बहादुर की आकांक्षा थी। स्वर्गीय दानशील, उदार महाराजा राधा किशोर माणिक्य बहादुर ने इसलिए ''हितवादी'' सुयोग्य सम्पादक पंडित श्रीयुक्त चन्द्रोदय विद्याविनोद महाशय को नियुक्त किया था। विद्याविनोद महाशय ने पहले इसके उपकरण संग्रह में ''शिलालिपि'' संग्रह में हस्तक्षेप किया। खेद की बात है, इस समय महाराजा बहादुर काशीधाम में आकस्मिक तरीके से स्वर्ग गमन करने पर, राजमाला प्रकाश का कार्य बन्द हो गया था। तत्पश्चात श्रील श्रीयुक्त महाराज कुमार ब्रजेन्द्र किशोर देवबर्मन मंत्री बहादुर के आग्रह से पुनः ''राजमाला'' प्रकाश करने की कोशिश हुई। उसी की कोशिश के फलस्वरूप बहुत बाधा विपत्ति अतिक्रम करके कालीप्रसन्न बाबू ने राजमाला के प्रथम खण्ड जन साधारण के निकट उपस्थित करने में सक्षम हुए। हमने पता चला है कि ''राजमाला'' शीघ्र मुद्रित हो, इसलिए मंत्री सभा के द्वारा राज्य शासन के शुरू में, वर्तमान महाराज माणिक्य बहादुर ने विशेष आग्रह प्रकाश किया हैं। इस ग्रंथ सम्पादन से कालीप्रसन्न बाबू ने पुराण, तन्त्र, उपनिषद, संहिता, रामायण, महाभारत आदि बहुत ही शास्त्र ग्रन्थ तथा हिन्दी अंग्रेजी, बंगला भाषा के नाना ग्रंथ की आलोचना किया है। उनका प्रयास सर्व प्रकार से सफल हुआ है।

\+ + + + +

\+ + + + +

———

चुन्टा प्रकाश

आश्विन – 1338 बंगला

श्री राजमाला(द्वितीय लहर), पंडित श्रीयुत कालीप्रसन्न सेन विद्याभूषण द्वारा सम्पादित तथा त्रिपुरा राज्य की राजधानी अगरतल्ला ''राजमाला'' कार्यालय से प्रकाशित है। प्रथम लहर की आलोचना हम लोगों ने यथा समय प्रकाश किया था। द्वितीय लहर ग्रंथ भी बहुत दिन हुए हम लोगों को उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ है। परन्तु इस विशाल ग्रंथ का आदि से अन्त तक पाठ करके, आलोचना करने का समय नहीं मिला। हम, हमारी यह कर्तव्य हानि के लिए त्रुटि स्वीकार करते हैं। राजमाला(द्वितीय लहर) स्वर्गीय महाराज अमर माणिक्य के शासन के समय रचित किया गया। महाराजा अमर माणिक्य 1577 से 1591 ईस्वी तक राजत्व किया अर्थात राजमाला द्वितीय लहर तीन सौ वर्ष पुराना ग्रंथ है। पंडित काली प्रसन्न विद्याभूषण ने कई पुराने ग्रंथ संग्रह करके, कई पाठ पाठों को पढ़ व उद्धार करके, इस लहर का सम्पादन

तृल–386

किया है। महाराज अमर माणिक्य के आदेश से वृद्ध सेनापति रण चतुर नारायण से सुनकर किसी राज कवि ने इस लहर की रचना किया था, ऐसा ग्रंथ भाग में उल्लेखित है। परन्तु दु:ख का विषय है, कि उस कवि का नाम नहीं मिल रहा है। मूल ग्रंथ भाग –78 पृष्ठ, उसके साथ पूर्वभाष –49 पृष्ठ, मध्यमणि व टीका –342 पृष्ठ, सम्पूर्ण पृष्ठ के चित्र –40, मानचित्र –01 तथा राज वंशतालिका एक पूर्ण मेज के आकार की –01, को सम्मिलित कर ग्रन्थ ने विशाल आकार धारण किया है।

ग्रंथ के पूर्वभाष में त्रिपुर नरपति गण के पूर्व पुरूष ययाति नन्दन द्रुहयु, जो पिता द्वारा निर्वासित होकर सुन्दर वन के समीप सगर द्वीप में उपनिवेश स्थापन किये थे, उनके समर्थक तथा त्रिपुर राज वंश के प्राचीनत्व ज्ञापक कई प्रमाण हैं। मध्यमणि या टीका खण्ड जैसा विस्तृत है – वह अवश्य ही ज्ञात विषय में पूर्ण है।

अंश संकलन में विद्याभूषण महाशय ने जिन अगाध पाण्डित्य का परिचय दर्शाते हैं, वह स्वाभाविक ही प्रशंशनीय है। उन्होने इन समस्त तत्व संग्रह में गहरी गवेष्णा के अलावा किसी भी विषय को ग्रहण नहीं किया था – त्याग भी नहीं किया था। हर विषय में उनकी विचार शक्ति तथा धैर्यता का प्रमाण मिलता है। मूल ग्रंथ समूह के पाठान्तर स्थल में उन्होने मूल व पाद टीका उसमें उल्लेख करके दोनों पाठ ही दिखा दिये हैं तथा प्रत्येक दुरूह तथा देशज शब्द का अर्थ प्रकाश करके पाठ को सुविधायुक्त कर दिया हैं।

समस्त चित्र समूह प्रायः दुष्प्राप्य और विशेष कौतूहल दीपक है। पुस्तक पूर्ण रूप से राजोचित तरीके से मुद्रित, छपाई, कागज तथा प्रच्छदपट उपयुक्त आदि ऐसे सुन्दर हैं जिसे देखने मात्र से ह्रदय में आनन्द संचार होता है।

———

सराइल ??????

(1) सिद्धांतवागीश – ये सभा पण्डित तथा राज पुरोहित थे। राजमाला की अमोच्य लहर उन्हीं की रचना है। हस्ती दान करके ये समाज में निन्दित भी हुए थे। इनका विस्तृत विवरण मध्यमणि के प्रारम्भ में मिलेगा। चैक करे

गोयाल पाड़ा ????????

चाँद राय

ईसवी सन् सौलह सौ सदी में चाँद राय और केदार राय चमके। अमर सागर का खनन 1500 शकाब्द में आरम्भ होकर तीन सालों में खत्म हुआ था। पेज 127 100 साल का ????? चैक करें

सम्दीप – सन्द्वीप ??

भवयाल भावयाल भवआल भावआल ?????

मसनद

पुत्तगीज पुर्तगीज

श्रीयूत श्रीयुत श्रीयूक्त श्रीयुक्त ??????

बाजूहार बजुहार बाजूहा ?????

द्वारा कतृक कर्तृक ??????

निहित निहत ????

समबन्ध सम्बन्ध ????

हाजारा/हाजरा ????

घोटक/घोड़ा ????

पाईराला'' पाईशला ????

बरबक्रू बरबक्र ????

ढाका का नाम ''जहाँगीर नगर''

'बाकला' बाखरगंज का प्राचीन नाम है।

बाकला का नामान्तर है चन्द्रद्वीप।

वर्तमान नारायण गंज के उत्तरांश का नाम खिजिरपुर था।

पोण्ड्र वर्द्धन के(गौड़ के) राजा थे।

चतुर्दोल पालकी

1589ई या 1014 हिजरी

2011ई 1432 हि 579 का अन्तर

+ ? .... के नीचे के भाग को पुनः देखें

लेखक की अन्य पुस्तके

1	1 RAJMALA Royal Size 462 page With fotoF page isbn to upload 220826
2	2 RAJMALA Royal Size 454 page With fotoF page isbn to upload 220826
3	3 RAJMALA Royal Size 457 page With fotoF page isbn to upload 220826
4	4 RAJMALA Royal Size 182 page With fotoF page isbn to upload 220826
5	book tripura at a glance HINDI fin NOV21 ISBN
6	
7	Banda History 00 front page bnd hist
8	Banda History 00.0 Banda History Index addhyay
9	Banda History 1.01 Etihasik Sanrachana o atihas
10	Banda History 1.02 Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc
11	
12	Banda History 2.01 Bhaugolic
13	Banda History 2.02 Nadi Bandh Dam
14	Banda History 2.03 Minrals Soil
15	Banda History 2.04 Mitty Soil Bhumi prakar
16	Banda History 2.05 Patha Pahad ke Prakar
17	Banda History 2.06 Talab Nahar Nale
18	Banda History 2.07 Rain Jal Samasya
19	Banda History 2.08 Muhalle Namkaran
20	Banda History 2.09 Mandir and other Religious places
21	Banda History 2.10 Jansankhya Census 1901 1961
22	Banda History 2.11 Animal, Birds, Trees, Shrubs, Herbs Forests
23	
24	Banda History 3.01 Aarthik Sanrachana Economic Structure
25	Banda History 3.02 Krashi Agricultural Structure
26	Banda History 3.03 Mahua chirongi
27	Banda History 3.04 Tourism Paryatan mandir musium forest jungle
28	Banda History 3.05 Lok Hast shilp Kausal bazar Vyapaar Handicraft & trade

29	Banda History 3.06 Transport Yatayaat Sadak Rail Jal
30	Banda History 3.07 pichhadapau Backwardness Reason and Solutions
31	Banda History 3.08 pichadapan Backeardness - Industry, Causes & solution
32	Banda History 3.09 Pichhadapan Aatmhatya Backeardness Causes & solution
33	Banda History 3.10 Akal sukha Drought, Femine- Causes & solution
34	
35	Banda History 4.01 Bhaasha Sthaniya Boliya Language & Local Dialects
36	Banda History 4.02 NEWSPAPER Hist
37	
38	Banda History 5.01 Raaja va Rajnaitik Parivesh Kingdom & Political Scenario
39	Banda History 5.02 Fort Durg kile garh makaan Fort & Selected Building
40	
41	Banda History 6.01 aavaas gramin Rural Housing, LifeStyle
42	Banda History 6.02 Saanskratik Sanrachana Cultural Cunstruct
43	Banda History 6.03 gramin devata Reti Revaz
44	Banda History 6.04 Reti Revaz Rasm lokjeevan
45	Banda History 6.05 Sanskar 16 Sacred Rites
46	Banda History 6.06 16 sringar 16 Traditional Adornments
47	Banda History 6.07 Aabhushan Gudana Metal Craft Ornament Tattoo
48	Banda History 6.08 Veshbhusha Pahnava Attire
49	
50	Banda History 7.01 manoranjan cinema kavi Enterainment
51	Banda History 7.02 Tyohar Festival Celebration
52	Banda History 7.03 Lok chitra kala Folk Painting Art
53	Banda History 7.04 Lok Geet Folk Song
54	Banda History 7.05 Lok Natya Folk Theatre
55	Banda History 7.06 Lok Nratya Folk Dance
56	Banda History 7.07 Lok Sangeet Folk Music